नवीन महावीर कीर्त्तन

जैसी महिमा तुम विषैं, और धरे नहीं कोय।
जो सूरज में ज्योति है, नहीं तारागण सोय॥

प्रकाशकः—

"सेठी बन्धु"

श्री वीर पुस्तक मन्दिर

श्री महावीरजी (जयपुर स्टेट)

तीयवार } दीपमालिका २४७१ { मूल्य ५)

मुद्रक:—
प० भंवरलाल जैन,
श्री वीर प्रेस, जयपुर

विषय सूची

संख्या विषय पृष्ठ

नित्य नियम पूजाएँ

जैन व्रत कथाएँ

जाप्य

संख्या विषय पृष्ठ

भजन आरती संग्रह

संख्या	विषय	पृष्ठ
५१	भव २ के दुखड़े करले	४२१
५२	श्री वीर भजन	,,
५३	भगवन्त भजन क्यों भूलारे	४२२
५४	समझ उठ चेत रे चेतन	,,
५५	क्यों जीवन वृथा गमाये	४२३
५६	छोड़ गये स्वामी	,,
५७	प्रभु वीतराग हितकारी	,,
५८	शिवपुर पथ परिचायक	४२४
५९	सुनो २ ऐ दुनिया वालो जैन धर्म	४२५
६०	भव २ रुला हूं	४२६
६१	मैंने छोड़ा सभी	,,
६२	यह विधि मंगल आरति	४२८
६३	मोरे मन मन्दिर	४२८
६४	वीरा २ मैं पुकारूँ	,,
६५	एक प्रेम पुजारी	४२९
६६	वीर स्वामी का सुन्दर	,,
६७	क्यों ना ध्यान लगाये वीर से	४३०
६८	मैं क़दम २ पर पद्म	,,
६९	पुजारी ! हृदय के पट खोल	४३१
७०	ए वीर तू संसार का	४३१
७१	जब तेरी डोली निकाली	४३२
७२	चांदनपुर महावीर	४३३
७३	तेरे दर को छोड़कर	,,
७४	महावीर स्वामी मैं क्या चाहता	४३४
७५	नयनो में जिसके समागई	४३४
७६	नेमी पियाने जो लिया	४३५

संख्या	विषय	पृष्ठ
१०३	श्री महावीर भक्ति में	४५०
१०४	जय २ जग तारक देव	४५१
१०५	वीर प्रभू आना	”
१०६	वीर तुम्हारा ध्यान	४५२
१०७	मुझे छेडो न छेडो	४५३
१०८	आओ वीर गुण गाय	४५४
१०९	दुखियारा हूँ २	”
११०	क्यों न प्रभु गुण गाये	”
१११	क्यों फूल रहा है	४५५
११२	धन्य वाद तेरा गाये	”
११३	हम करके सदा	४५६
११४	आरती श्री जिनराज	”
११५	करो आरती वर्द्धमान की	४५७
११६	आरती कीजे महावीर	४५८
११७	मैं तो आरती उतारु आदिनाथ	”
११८	आरती श्री जिन पद्म तुम्हारी	”
११९	आरती श्री महावीर	४५९
१२०	जय अम्बे वाणी	४६०
१२१	ॐ जय प्रभु कष्ट हरो	”
१२२	मैं तो आरती उतारुँ महावीर की	४६१
१२३	जय जिनवर देवा	”
१२४	प्रभू देखा तुम्हारा आज	४६२
१२५	सुनो २ महावीर की अमर कहानी	”
१२६	” ” की प्यारी वाणी	४६३
१२७	सुनो २ वर्णीजी की अमर कहानी	४६४
३०२	चांदनपुर महावीर पूजा	४६६

वृहद् अर्घावली

संख्या	विषय		पृष्ठ
३२७	श्री अनंत नाथ का अर्घ		४६६
३२८	श्री धर्म नाथ	,,	४६६
३२६	श्री शांतिनाथ	,,	४६६
३३०	श्री कुंथ नाथ	,,	४६६
३३१	श्री अरह नाथ	,,	४६७
३३२	श्री मल्लि नाथ	,,	४६७
३३३	श्री मुनिसुव्रत नाथ	,,	४६७
३३४	श्री नमि नाथ	,,	४६७
३३५	श्री नेमी नाथ	,,	४६८
३३६	श्री पार्श्व नाथ	,,	४६८
३३७	श्री महावीर	,,	४६८
३३८	श्री चौबीस तीर्थंकर	,,	४६८
३३६	श्री पंच परमेष्ठि	,,	४६६
३४०	श्री निर्वाण क्षेत्र	,,	४६६
३४१	श्री पंचबालयति	,,	४६६
३४२	श्री सप्त ऋषि	,,	४६६
३४३	श्री पंचमेरू	,,	५००
३४४	श्री नंदीश्वर द्वीप	,,	५००
३४५	श्री सोलह कारण	,,	५००
३४६	श्री दशलक्षण	,,	५०१
३४७	श्री रत्नत्रय	,,	,,
३४८	श्री जिनवाणी	,,	,,
३४६	श्री जम्बू स्वामी	,,	,,
३५०	श्री सोनागिर	,,	,,
३५१	श्री पटनापुर	,,	५०२
३५२	श्री पांवापुर क्षेत्र	,,	,,
३५३	श्री गुणावा ,,	,,	,,

नैमित्तिक पूजा

संख्यां	विषय	पृष्ठ
३७८	श्री चंपापुर सिद्ध क्षेत्र पूजा	५७५
३७६	श्री अकृत्रिम चैत्यालय पूजा	५७७
३८०	श्री सहस्रकूट जिन चैत्यालय पूजा	५८३
३८१	श्री रक्षा बन्धन पूजा	५८६
३८२	श्री हस्तिनागपुर क्षेत्र पूजा	५६०
३८३	श्री अनन्त व्रत पूजा	५६ः
३८४	श्री तीस चोवीसोजी की पूजा	५६६
३८५	श्री महाव्रतों का अर्घ	६०३
३८६	श्री महामुनियों का अर्घ	,,
३८७	शान्ति पाठ	,,
३८८	विसर्जन पाठ	६०४
३८६	बारह मासा मुनिराज का	,,
३६०	,, ,, वज्र दन्त चक्रवर्तिका	६०८
३६१	पखवाडा	६१६
३६२	वैराग्य भावना	६१७
३६३	भावना (भावना दिनरात मेरी)	६१६
३६४	पद्मावती स्तोत्र	६२०
३६५	शास्त्र भक्ति	६२३
३६६	श्री महावीर क्षेत्र परिचय	३६१
३६७	श्री पद्मपुरा क्षेत्र परिचय	३६३
३६८	श्री पद्मपुरा क्षेत्र नाटक	३६४
३६६	श्री महावीर क्षेत्र विस्तृत परिचय प्रारंभ में)	क.

संख्या विषय पृष्ठ

श्री सिद्ध क्षेत्र पूजाएं

श्री महावीर क्षेत्र विस्तृत परिचय

दि० जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी भारतवर्ष की धर्म प्राण जैन समाज की श्रद्धा का केन्द्र स्थल बना हुआ है। इस क्षेत्र की यात्रार्थ प्रतिदिन ही सैंकड़ो यात्री आते रहते हैं, और श्रद्धा एवं भक्ति से भगवान श्री महावीर प्रभु की पूजा एवं दर्शन कर अपना मानव जीवन सफल करते हैं। यह क्षेत्र मात्र जैन बन्धुओं की ही श्रद्धा का स्थल नहीं हैं, अपितु सैंकड़ों वर्षों से जयपुर, करोली, भरतपुर, अलवर आदि रियासतों के मीणा गूजर ब्राह्मण वैश्य आदि सभी जातियों की श्रद्धा का केन्द्र रहता आ रहा है। प्रति वर्ष चैत्र शुक्ला १३ से ५ दिन तक लगातार उक्त सभी जातियों के व्यक्ति आकर वीर प्रभु के दर्शन कर अपना जीवन सफल बनाते रहे हैं। यह मेला राजस्थान के सबसे बड़े मेले के रूप में होता है।

इस प्रकार के महत्त्व वाला यह स्थान जयपुर राज्य की हिण्डौन निजामत का एक प्रमुख स्थान है। बी० बी० एण्ड सी० आई० रेल्वे (बडी लाईन) पर २० वर्ष पूर्व पटुंदा महावीर रोड और अब श्री महावीरजी के नाम से प्रख्यात स्टेशन है। आज से ७० वर्ष पूर्व जब कि इधर रेलवे लाईन नहीं बनी थी उस समय लोग छोटी लाइन से मंडावर स्टेशन (बांदीकुई भरतपुर के मध्य) उतर कर गाडी तांगों आदि से यहां आया करते थे। उस समय तक यहां बहुत थोडे लोग आते थे किन्तु गत २० वर्षों से जब से इस

क्षेत्र की व्यवस्था का भार जयपुर जैन पंचायत द्वारा निर्मित कमेटी ने अपने हाथ में लिया है यहां की शोभा दिन दूनी रात चौगुणी बढती जा रही है और क्षेत्र सम्पूर्ण भारत में प्रख्यात हो गया है। क्षेत्र कमेटी ने अपनी सुन्दर व्यवस्था से क्षेत्र को मनोरम और सुख सुविधा सम्पन्न बना दिया है। इस क्षेत्र का प्राचीन इतिहास बहुत प्रयत्न करने पर भी प्रामाणिक रूप में उपलब्ध नहीं हुआ। अतः कथा भाग को हमने भी केवल उन्हीं किंवदन्तियों के आधार पर रखा है जो अब तक चला आ रहा था। परन्तु कुछ अंश इतिहास के छपे पृष्ठों में से कल्पना के आधार पर तैयार किया है साथ ही यहां के वृद्ध पुरुषों से भी जानकारी प्राप्त की है। उसी आधार पर हम यहां के इतिहास को ३ भागों में बांट सकते हैं:—

चांदनगांव का समृद्ध रूप।

१. महाराणा सांगा और बाबर का फतेहपुर सीकरी के मैदान में १५२७ में युद्ध।

२. १७०७ में अन्तिम मुगल सम्राट् औरंगजेब का निधन होने के पश्चात् मराठा काल का आगमन और पुनः यहां के प्रमुख निवासियों का स्वधर्म को बेरोकटोक पालन करना। इस समय मूर्ति का प्रकट होना और अतिशय होना। कालान्तर में सेठ अमरचन्द का आगमन मन्दिर निर्माण। पुनः परमभक्त जोधराज का तोप के गोलों से बचना। विश्वस्त रूप से ज्ञात हुआ है कि मन्दिर १८२६ के पूर्व ही बन चुका था।

३. १८२६ से सं० २००७ तक का काल सं० १८१६ में

क्षेत्र को जयपुर राज्य की ओर से नोरंगावाद ग्राम सेवा पूजा के लिए अर्पित किया जाना। .

विस्तृत वर्णन।

यह क्षेत्र चांदन महावीर के नाम से प्रख्यात है। आज से ५०० वर्ष पूर्व चांदनपुर एक अच्छी व्यापारिक मंडी थी। यहां पर बाजार लगता था और मलूक (मुसलमान व्यापारी) बालदें (बैलों पर सामान लादकर, सामान बेचने एवं खरीदने आया करते थे। उस समय ऐसा कहा जाता है कि हिण्डौन निजामत पर भी मुसलमान बादशाहों का अधिकार था। फिर ग्वालियर भरतपुर के अधिकार में भी यह प्रदेश रहा है। चांदन गांव व अकबरपुर, नौरंगाबाद ये तीनों वर्तमान गांव एक ही गांव के नाम थे। चांदन गांव के पास एक बांध भी था और गंभीर नदी गांव के नीचे होकर ही बहती है। कहा जाता है कि पास ही के एक गांव केमला और चांदनगांव के निवासियों में किसी कारण झगड़ा होगया था। फल स्वरूप केमला वालों ने चांदनगांव पर हमला किया और उसे लूट खसोट कर वहां से सरकारी पचरंगा झंडा भी उठा ले गये, जो आज भी केमला में मौजूद है और वहां के निवासी इस बात की पुष्टी करते हैं। अस्तु! जाते समय गांव के बाहर जो बड़ा बांध था उसे भी तोड़ दिया गया। परिणाम स्वरूप चांदनगांव जल प्रवाह में बह गया। इसकी साक्षी गांव के बीच में पड़े हुए बड़े २ गहरे गर्त और भग्नावशेष एवं नदी में पड़ी हुई पत्थर की पट्टियां दे रही है। धीरे २ गांव भाइयों में बंटता २ तीन भागों में विभाजित हुआ। बड़ा हिस्सा

बड़ा गांव (चांदनपुर) कहलाया दूसरा भाग अकबरपुर, तीसरा भाग नौरंगाबाद। उक्त नाम ही घोषित करते हैं कि मुगल काल में उनका नाम वहां के शासकों के नामानुकूल हुआ है। चांदन-गांव और अकबरपुर खालसा (सरकारी गांव) हैं एवं तीसरा गांव नौरंगाबाद (महावीरजी) क्षेत्र को दिया हुआ है। इस ग्राम की वार्षिक आय प्राय: ५–६ हजार रुपया है।

नदी के बहाव को देखने से यह भी प्रतीत होता है कि पहले नदी का बहाव गांव से दूर था पर उसके बाद बांध टूटने पर नदी का बहाव गांव की ओर गया है और बाढ के समय गांव की बसापत पर भी असर किया और बहुत से घर बह गये हों। आज भी जब नदी में बाढ आती है तो पानी चांदनपुर अकबरपुर में भर जाता है और आने जाने के मार्ग रुक जाते हैं। अत: निश्चित है कि उक्त ग्राम का समृद्ध स्वरूप नष्ट किया गया है।

फतेहपुर सीकरी, बयाना। ये दोनों ही स्थान भारतीय इतिहास के प्रधान स्थान हैं। इन्हीं दो स्थानों ने मुगलों का राज्य देहली से बढा कर राजस्थान की ओर बढाया है। बाबर और महाराणा संग्राम सिंह का युद्ध इसी प्रदेश में हुआ था। १५२७ के मार्च में बाबर को आगरा से खदेड़ने के लिए राजपूतों का अग्रणी राणा संग्रामसिंह अपने दल बल के साथ आगे बढ़ता हुआ बयाना तक जा पहुँचा था। इसी स्थान के पास बाबर ने राणा का मुकाबला किया। स्वयं बाबर ने कहा था कि राणा का वेग वायु वेग था। परन्तु अन्त में तोपखाने की सहायता से एवं राणा की राजनीतिक भूल से बाबर की विजय हुई थी। बयाना में जो खून खच्चर हुआ

और मुगल सेना का नाश हुआ उसका प्रमाण वहां की कब्रें दे रही हैं। कहा जाता है कि बयाना में ३ कब्र की कमी न होती तो यह स्थान मक्का बन गया होता। बयाना की इंच इंच भूमि कब्रों से पटी हुई है। इसी लिए वर्तमान में वहां के जितने घर हैं सब कब्रों पर निर्मित हैं। स्मरण रहे बयाना महावीरजी से केवल २० २१ मील की दूरी पर है। इस भयानक युद्ध के प्रभाव से चांदनपुर भी न बच पाया और राजपूत सेना का पीछा करती हुई मुगल सेना विजय मद में आकर चांदनपुर को भी नष्ट भ्रष्ट कर डाला। उसी समय यहां की समृद्धि का भी लोप हो गया और हमारा अनुमान है इसी समय किसी भगवद्भक्त ने हमारे परम पूज्य वीर प्रभु की मूर्ति को भी रक्षा के निर्मित भूमि में गाड दिया। हमारे महावीर क्षेत्र नाटक का प्रारंभ भी इसी कल्पना पर आधारित है। २०० वर्षों तक ऐसा ही चलता रहना भी अस्वाभाविक नहीं कहा जा सकता। मुगल काल में एक ही ऐसा धर्म सहिष्णु बादशाह हुआ है जिसका नाम अकबर है। अन्तिम बादशाह औरंगजेब इतिहास में जितना कुख्यात है बतलाने की आवश्यकता नहीं, उसके पश्चात् हिन्दुओं को सांस लेने का अवसर मिला और अपने धर्म पालन की स्वतंत्रता पाकर पुनर्निर्माण करना प्रारंभ किया १७२० के आस पास ही भरतपुर और जयपुर के राज्य पर वहाँ के राजवंशों का वास्तविक अधिकार कहा जा सकता है॥ उसी काल में भगवान की मूर्ति एक चमत्कारिक घटना के साथ एक भगवद्भक्त चमार के द्वारा प्रकट हुई। शनैः २ मूर्ति का चमत्कार आस पास सारे प्रदेश में फैला और वर्षों बाद बसवा निवासी सेठ अमरचन्दजी बिलाला ने यहां आकर प्रभु

का एक छोटा तीन शिखर का मन्दिर निर्माण कराया। उसके १०० वर्ष पश्चात् सन १८२० के करीब जोधराजजी ने मन्दिर को विशाल रूप दिया। जोधराज दीवान के सम्बन्ध में जयपुर और भरतपुर दोनों ही स्थानों के इतिहास से कोई जानकारी प्राप्त नहीं होती। जोधराज हुआ भी एक नहीं। इस सम्बन्ध में खोज की काफी आवश्यकता है। जम्बू स्वामी के क्षेत्र से भी डीग भरतपुर निवासी जोधराजजी श्रावक का नाम जुडा हुआ है। अतः यह घटना भी किंवदन्तियों के आधार पर ही चलती आ रही है। जोधराज की रक्षा का सजीव वर्णन आपको नाटक पढ़ने पर ही विदित होगा। इसी घटना के पश्चात् नाटक का अन्त हो जाता है।

वतमान युग में यहां के परम भक्त और क्षेत्र की उन्नति में गुप्त सहायक ला० महावीरप्रसादजी बिजली वाले प्रमुख हैं। कहा जाता है कि इनको स्वप्न में वीर प्रभु के दर्शनों का सौभाग्य मिला था और उसी के आधार पर इन्होंने आज से ३४ वर्ष पूव सन् १९१८ में श्री महावीर भगवान की अन्दर की वेदी बनाई थी इसमें कोई सन्देह नहीं कि लालाजी महावीर भगवान के पूर्ण भक्त थे। उनने ही यहां बिजली और नल की स्कीम को मूर्त रूप दिया। उनने विना स्वार्थ के तन मन लगाकर अपनी देख भाल में शीघ्र से शीघ्र दोनों कार्य पूरे कराये और जब तक जीवित रहे प्रति महीने यहां आते रहे।

ला० महावीर प्रसादजी ने जो वेदी बनाई थी वह भट्टारकजी महेन्द्रकीर्त्तिजी के प्रबन्ध के दिनों में ही बनी थी। वर्तमान

भट्टारकजी के पूर्व गुरू श्री महेन्द्रकीर्तिजी के आसाढ़ सुदि ६ सं० १९७५ को स्वर्गवास हो जाने के बाद श्री चन्द्रकीर्तिजी आसोज सुदी १० सं० १९७५ में गद्दी पर बैठे, सन् १९२३ से १९३० तक क्षेत्र की व्यवस्था कोर्ट आफ वार्डस के द्वारा हुई। उसमें भी क्षेत्र की कोई उन्नति नहीं हुई। बडे प्रयत्नों के पश्चात् कमेटी के भूतपूर्व सभापति स्व० श्री मुंशी प्यारेलालजी कासलीवाल बी. ए. रेवेन्यू मेम्बर, स्व० श्री जमनालालजी साह, स्व० श्री दरोगा मोतीलालजी स्व० श्रीकपूरचन्दजी पाटणी आदि जयपुर समाज के प्रमुख व्यक्तियों और पंचों के सहयोग से जयपुर पंचायत को राज्य सरकार द्वारा कार्य भार संभलाया गया। श्री जमनालालजी साह ने पंचायत के अधिकारी की हैसियत से यहां के कार्य की देखभाल की। १ अप्रेल सन् १९३० को कोर्ट आफ वार्डस से जयपुर पंचायत द्वारा निर्मित कमेटी ने राज्य में प्रार्थना-पत्र देकर क्षेत्र का कार्य संभाला उस समय १९)) जयपुरी म्होर १)) गिन्नी और ९७८॥⌐। नकद एवं ९२५ उपकरण तथा ⅂३।≡॥ छटांक चांदी रोकड बाकी थी।

कमेटी के भूतपूर्व सभापति स्व० श्री मुंशी प्यारेलालजी कासलीवाल बी. ए. भूतपूर्व मेम्बर कौंसिल आफ स्टेट जयपुर एवं मंत्री स्व. श्री रामचन्द्रजी खिन्दूका तथा कमेटी के सभी सदस्यों ने पूर्ण लगन के साथ क्षेत्र का कार्य किया जिसके फल स्वरूप आज क्षेत्र का वर्तमान रूप दिखाई दे रहा है।

कमेटी के कार्य-काल के प्रमुख कार्य एवं घटनाएँ

क्षेत्र की प्रबन्ध व्यवस्था अपने हाथ में लेने के ६ महीने पश्चात् ही वर्तमान राजस्थान के राज प्रमुख जयपुर नरेश सवाई

मानसिंहजी १४ जनवरी सन् १६३१ को अपने उच्चाधिकारियों सहित श्री महावीरजी दर्शनाथ पधारे थे और अपने कर कमलों से श्री १००८ भगवान महावीर स्वामी की आरती उतारी थी।

सन् १६४२ में मेले को बन्द रखने का सरकारी आर्डर हो चुका था। परन्तु १० दिन में ही सरकार ने अपना दूसरा आदेश निकाल कर मेला यथावत जारी रखा। इतना ही नहीं उसी मेले में जयपुर के तत्कालीन प्रधान मंत्री सर् मिर्जास्माइल स्वयं आये, और खेडा ग्राम से स्टेशन महावीर तक के कच्चे रास्ते के स्थान पर पक्की सडक बनवाने में आधी सहायता राज्य की और से देना घोषित किया। तथा उसी समय गंगापुर हिण्डौन निजामतों में रथयात्रा के दिन की सरकारी कार्यालयों की छुट्टी भी घोषित की।

सम्वत् १६८७ में स्व० सेठ बनजीलालजी ठोलिया जौहरी के सुपुत्रों ने सर्व प्रथम एक सुन्दर विशाल धर्मशाला बनवाई।

सम्वत् १६६१ में स्व० श्री सेठ सन्तलालजी गोधा जौहरी देहली निवासी ने एक विशाल धर्मशाला बनवाई।

सम्वत् १६६३ में श्री ला० लक्ष्मीचन्दजी मनोहरलालजी रिवाडी वालों ने 'रिवाडीवाली' धर्मशाला का निर्माण कराया।

नं० ३ की धर्मशाला एक बहुत बडी धर्मशाला है। इस धर्मशाला का विभिन्न व्यक्तियों ने निर्माण कराया है। उसमें ऊपर नीचे १०८ कोठरिया एवं बरामदे हैं।

इसी प्रकार कटला में भी विभिन्न व्यक्तियों द्वारा नये २ निर्माण कार्य कमेटी की देख रेख में ही हुए हैं।

सम्बत् १९९६ में औषधालय भवन श्री ला० द्वारकादासजी ताराचन्द्रजी सोनीपत निवासी द्वारा बनाया गया।

सम्बत् २००० में मन्दिर की परिक्रमा का बड़ा एवं सुन्दर रूप श्री मुसद्दीलालजी देहली निवासी ने कराया।

सम्बत् २००५ में श्री बधीचन्दजी गंगवाल जयपुर निवासी ने एक सुन्दर धर्मशाला का निर्माण कराया। इसी धर्मशाला में आज कल श्री महावीर दि० जैन मिडिल स्कूल चल रहा है। इसी प्रकार कमेटी के प्रबन्ध काल में ही मन्दिर में मकराणे का कार्य एवं वेदियों का जीर्णोद्धार होकर मंदिर मनोहर एवं दर्शनीय बन गया है। सम्वत् २००४ में श्री सेठ जौहरीलालजी कन्हैयालालजी काला जियागंज निवासी ने एक सुन्दर मान स्तंभ बनाया है। जिसकी प्रतिष्ठा होकर ४ सुन्दर मूर्तियाँ विराजमान हो गई हैं।

सम्बत् २००६ में फाल्गुण शुक्ला ५ वी. नि. २४७६ सं० २००६ दिनाङ्क-२२-२-५० को श्रीमान् सेठ बधीचन्दजी गंगवाल जयपुर निवासी ने (वर्तमान मंत्री प्र० का० कमेटी श्रीमहावीरजी) मूल नायक भगवान महावीर स्वामी की तीन शिखर की संगमरमर की सुन्दर वेदी बनाई है।

क्षेत्र की विभिन्न धार्मिक प्रवृत्तियां

पाठशाला—

क्षेत्र पर तथा आस पास के गांवों में रहने वाले बालकों को प्रारम्भिक शिक्षा देने के लिये दो पाठशालायें चल रही हैं। क्षेत्र पर चलने वाली पाठशाला में ७ श्रेणियां हैं तथा स्टेशन वाली

पाठशाला में चार कक्षायें हैं। दोनों पाठशालाओं में हिन्दी, अंग्रेजी गणित, धर्म आदि विषयों की शिक्षा दी जाती है।

पुस्तकालय वाचनालय—

क्षेत्र पर एक सुव्यवस्थित पुस्तकालय है। जहां नवीन से नवीन तथा उत्तम से उत्तम पुस्तकों का संग्रह है। इस पुस्तकालय में धर्मिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक, साहित्यिक, कथा कहानी नाटक उपन्यास आदि विषयों की पुस्तकों को पढकर यात्रीगण साहित्यिक ज्ञान की वृद्धि करते हैं। पुस्तकालय में ही वाचनालय है जहां दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक पत्र पत्रिकायें मंगाई जाती हैं।

छात्रवृत्ति—

आर्थिक सहायता के अभाव में समाज के कितने ही होनहार विद्यार्थी विद्याध्ययन से वंचित रह जाते हैं। इसलिये कुछ वर्षो से साधारण उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को क्षेत्र की ओर से छात्रवृत्तियां दी जा रही हैं। इस कोश से डाक्टरी, इन्जीनियरिंग, वाणिज्य, विज्ञान, दर्शन, अर्थशास्त्र, आयुर्वेद, संस्कृत, जैन दर्शन आदि सभी विषयों के पढने वाले विद्यार्थी लाभ उठा रहे हैं।

महावीर चेयर—

क्षेत्र की ओर से हिन्दू विश्वविद्यालय बनारस में जैन दर्शन की महावीर चेयर स्थापित है। इससे विश्वविद्यालय में पढने वाले जैन अजैन विद्यार्थियों ने अत्यधिक लाभ उठाया है। विश्वविद्यालय के अधिकारियों ने भी इसकी प्रशंसा की है। इस

चेयर की देख भाल आदि की कुल जुम्मेवारी प्रबन्ध कारिणी की ओर से स्थानीय श्री सन्मति ज्ञान प्रचारणी समिति को दी हुई है।

अनुसंधान विभाग—

संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश तथा हिन्दी के प्राचीन साहित्य के अनुसंधान तथा नवीन साहित्य सर्जन के कार्य का कितना महत्व है इसे सब कोई जानते हैं। आमेर का प्रसिद्ध तथा प्राचीन शास्त्र भंडार जो वर्षों से बन्द पडा था उसे खुलवा कर एक बृहद् सूची पत्र तैय्यार करा कर प्रकाशित कराया जा चुका है। एक बृहत् प्रशस्ति संग्रह भी छप चुका है। अनुसंधान विभाग की ओर से वीर वाणी आदि पत्रों में समय २ पर खोज पूर्ण सामग्री प्रकाशित होती रहती है।

औषधालय—

यहां एक व्यवस्थित औषधालय है-जहां औषध निर्माणशाला भी है। औषधालय से यात्री गए ही नहीं; अपितु ग्रामीण जनता भी पूरा लाभ उठाती है। आयुर्वेदिक औषधियों के अतिरिक्त मुख्य २ एलोपैथिक औषधियाँ भी यहाँ से दी जाती हैं।

श्री मन्दिरजी का प्रधान द्वार—

मन्दिरजी का प्रधान द्वार एवं इसके दोनों ओर के विशाल कमरे श्री सिद्धोमलजी कागजी देहली (२) श्री हीरालालजी कपूर-चन्दजी गोधा देहली (३) श्री सेठ सुन्दरलालजी ठोलिया जयपुर (४) श्री सेठ छदामीलालजी फीरोजाबाद निवासी सम्मिलित रूप से बनवा रहे हैं। इसमें करीब २ लाख रुपये की लागत है।

महावीर पार्क—

स्व० सेठ हीरालालजी के सुपुत्र श्री पन्नालालजी मानकचन्दजी पांड्या गुना निवासी ने चैत्र शुक्ला १३ वीर निर्वाण सं० २४७५ में बनवाया है।

महावीर क्षेत्र के इतिहास सम्बन्धी तथ्यों की खोज हो रही है, पूर्ण होते ही शीघ्र ही प्रकाश में लाया जायगा।

श्री भट्टारक पट्टावली

यह पट्टावली मूल संघ सरस्वती गच्छ बलात्कार गण दि० जैन भट्टारकों की है। सर्व प्रथम वि सं० ४ में श्री भद्रबाहु भट्टारक इस गण के संस्थापक हुए। नीचे सं० १७२२ से शुरू करते हैं।

विक्रम सं० १७२२ सावन सुदी ८ श्री सुरेन्द्रकीर्तिजी
" १७३३ सावन वदी ५ श्री जगतकीर्तिजी
" १७७० " श्री देवेन्द्रकीर्तिजी
" १७६० " श्री महेन्द्रकीर्तिजी
" १८१५ " श्री क्षेमेन्द्रकीर्तिजी

(जयपुर गद्दी)

" १८२२ फागुन सुदी ४ श्री सुरेन्द्रकीर्तिजी
" १८५२ " श्री सुखेन्द्रकीर्तिजी
" १८८० " श्री नरेन्द्रकीर्तिजी
" १८८३ " श्री देवेन्द्रकीर्तिजी

„ १६३६ „ श्री महेन्द्रकीर्तिजी
श्री चन्द्रकीर्तिजी
(वर्त्तमान भट्टारक)

श्री दि० जैन मुमुक्षु महिलाश्रम

यह संस्था ब्र० पं० कृष्णाबाईजी कलकत्ता द्वारा मिती फागुन सुदी १२ सं० २००० में स्थापित की गई थी। अनेक दानी महानुभावों द्वारा दिये गये द्रव्य से संस्था का विशालकाय भवन श्री महावीरजी मन्दिर से पश्चिम दिशा में करीब एक फर्लाङ्ग पर तैयार हो गया है।

श्री दि० जैन कीर्तिसागर आश्रम

यह स्थान मन्दिरजी से पूर्व दिशा में स्टेशन से आने वाली सड़क के किनारे पर है। यहाँ श्री जिन चैत्यालय है। ब्रह्मचारी जी रहते हैं। यह स्थान सुन्दर और रमणीक है। इसकी व्यवस्था भी यदि क्षेत्र कमेटी के हाथ में आजाय तो अच्छा उपयोग हो सकता है।

वर्तमान युग में इस क्षेत्र की उन्नति प्रायः सन् १६३१ से प्रारंभ होती है। इसी समय क्षेत्र की व्यवस्था का भार पूर्ण रूप से जयपुर की दिगम्बर जैन पंचायत ने संभाला। प्रारंभ में श्री स्व० जमनालालजी साह ने अपने अथक परिश्रम और व्यक्तित्व द्वारा क्षेत्र सम्बन्धी सभी झगड़ों को निमटाकर कार्य को व्यवस्थित रूप देने का प्रयत्न किया। इस सारी सुव्यवस्था और प्रगति में श्री सेठ स्व० रामचन्द्रजी खिन्दूका मंत्री प्र० का० कमेटी श्री महावीरजी की

चतुर्मुखी प्रतिमा दृष्टि गोचर होती है। स्कूल कालेजों की उच्च शिक्षा बिना पाये भी खिन्दूकाजी जयपुर जैन समाज के स्तम्भ थे। जैन समाज के प्रत्येक कार्य में तो उनका सहयोग रहना आवश्यक था ही किन्तु अन्य समाजों में भी उन का आदर था। वे अपनी दूरदर्शिता के लिए प्रसिद्ध थे। वे हर विषय पर गहराई से विचार करने के पश्चात् ही निर्णय करते थे। इसीलिए जयपुर पंचायत ने क्षेत्र के मंत्रित्त्व का भार भी उन्हीं के विशाल कंधों पर डाला और वे जीवन पर्यंत उस कार्य को करते रहे।

क्षेत्र का कार्य वे ४–५ घंटे नियमित रूप से करते थे। मंत्रित्व के कार्य के साथ ही वे क्लर्क का कार्य भी स्वयं करते थे। प्रत्येक पत्र का उत्तर अपने हाथ से लिखते थे। इस निःस्वार्थ सेवा के कारण ही यह क्षेत्र प्रतिदिन उन्नति करता गया। क्षेत्र पर जमीन सम्बन्धी सैंकडों झगडों को निमटा कर उन्होंने सदा के लिए उनका अन्त कर दिया। आज जो महावीरजीं का बाजार और उसका नया रूप दिखाई देता है वह सब उन्हीं के मस्तिष्क की उपज है। अतः महावीर क्षेत्र के साथ उनका नाम सदा जुडा रहेगा और एक वार भी जिसका उनके साथ प्रत्यक्ष परिचय हो चुका है वह उन्हें सादर याद करेगा। श्री खिन्दूकाजी के स्वर्गवास के पश्चात् क्षेत्र के मंत्रित्व का भार खिन्दूकाजी के अभिन्न मित्र श्री सेठ बधीचन्दजी गंगवाल जयपुर को सोंपा गया है। वे भी उन्हीं के समान तन, मन, धन से क्षेत्र की उन्नति में संलग्न हैं। हमारी महावीर प्रभु से कामना है कि सम्पूर्ण जैन समाज के सहयोग से यह क्षेत्र दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करता हुआ वीर प्रभु के उपदेशों का प्रचारक बने।

श्री महावीर क्षेत्र का उक्त परिचय तैयार करने में जिन २ सज्जनों का सहयोग मिला है मैं उनका आभार मानता हूँ। साथ ही इसमें रही भूलों के लिए क्षमा चाहता हूँ।

अन्त में प्रार्थना है कि वीर प्रभु के भक्त इस क्षेत्र की उन्नति के लिए सदा सचेष्ट रहेंगे।

दीपावली —महावीरप्रसाद जैन 'भूषण'
वी० सं० २४७६

श्री १०८ आचार्य सूर्य सागरजी महाराज

जन्म	मुनि दीक्षा
कार्तिक शुक्ला ९	मंगसर कृष्णा ११
वि० सं० १९४०	सं० १९८१

स्वर्गवास—

श्रावण कृष्णा ८

सं० २००६

दर्शन पाठ तथा दर्शन विधि

प्रातः काल उठकर शुद्ध जल से स्नान कर, सादे शुद्ध साफ वस्त्र पहिन, चांवल लोंग बादाम आदि सामग्री लेकर नंगे पांव दर्शन के लिये मन्दिर में जावे और वहां हाथ पांव धोकर समवशरण में प्रवेश करते समय, जय निःसहि ३ वार उच्चारण करे। फिर भगवान के सामने खड़े होकर नीचे लिखा पाठ पढ़े।

ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॐ जय जय जय नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।

णमोकार मंत्र

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं॥

नोट—इस णमोकार मन्त्र को ९ या ३ बार पढ़े।

मंगल पाठ

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलि-पण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।

चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलि-पएणत्तं, धम्मं सरणं पव्वज्जामि ।

वर्त्तमान २४ तीर्थंकरों के नाम

१. श्री आदिनाथजी २. अजितनाथजी ३. सम्भवनाथजी अभिनन्दननाथजी, ५. सुमतिनाथजी ६. पद्मप्रभजी ७. सुपार्श्व-नाथजी ८. चन्द्रप्रभजी ९. पुष्पदन्तजी १०. शीतलनाथजी ११. श्रेयांसनाथजी १२. वासुपूज्यजी १३. विमलनाथजी १४. अनन्त-नाथजी १५. धर्मनाथजी १६. शांतिनाथजी १७. कुंथुनाथजी १८. अरनाथजी १९. मल्लिनाथजी २० मुनिसुव्रतनाथजी २१. नमिनाथजी २२. नेमिनाथजी २३ पार्श्वनाथजी २४. महावीर स्वामीजी को नमस्कार हो ।

२० विद्यमान तीर्थङ्करों के नाम

श्री सीमंधरजी, युगमंधरजी, बाहूजी, सुबाहूजी, संजातकजी, स्वयंप्रभजी, वृषभाननजी, अनन्तवीर्यजी, सूरिप्रभजी, विशाल कीर्तिजी, वज्रधरजी, चन्द्राननजी, चन्द्रबाहुजी, ईश्वरजी, नेमीश्वरजी वीरसेनजी, महाभद्रजी, भुजङ्गमजी, देवयशजी, अजितवीर्यजी, को नमस्कार हो ।

भूतकाल २४ तीर्थकरों के नाम

निर्वाण, सागर, महासाधु, विमलप्रभ, शुद्धाभ, श्रीधर, सुदत्त, अमलप्रभ, उद्धर, अङ्गिर, सन्मति, सिन्धु, कुसुमांजलि, शिवगण उत्साह, ज्ञानेश्वर, परमेश्वर, विमलेश्वर, यशोधर, कृष्णमति, ज्ञानमति, शुद्धमति, श्रीभद्र, शांत ।

भविष्यतकाल २४ तीर्थंकरों के नाम

महापद्म, सुरदेव, सुपार्श्व, स्वयंप्रभ, सर्वात्मभूत, देवपुत्र, कुलपुत्र, उदङ्क, प्रौष्ठिल, जयकीर्ति, मुनिसुव्रत, अर, निष्पाप, निष्काय, विपुल, निर्मल, चित्रगुप्त, समाधिगुप्त, स्वयंभू, अनुवृत्तिक, जय, विमल, देवपाल, अनन्तवीर्य।

[फिरलाई हुई प्राशुक सामग्री को नीचे लिखे अनुसार छन्द पढ़कर चढ़ावे।]

(चांवल चढ़ाने का छन्द)

तंदुल धवल पवित्र अति, नाम सुअक्षत तास।
अक्षत सों प्रभु पूजिये, अक्षय गुण परकाश॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्योऽक्षयपदप्राप्तयेऽक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

(लौंग बादाम फल चढाने का छन्द)

जो जैसी करनी करे, सो तैसा फल लेय।
फल पूजा महाराज की, निश्चय शिव फल देय॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा॥

(अर्घ चढाने का छन्द)

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाथमहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्राय गर्भ जन्म तप ज्ञान निर्वाण कल्याणक प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(फिर नीचे लिखा पाठ पढ़े)

मैं तुव चरण कमल गुण गाय, बहु विधि भक्ति करी मन लाय।

जनम जनम प्रभु पाऊं तोहि, यह सेवा फल दीजे मोहि ॥
कृपा तिहारी ऐसी होय, जामन मरन मिटावो मोय।
बार बार मैं विनती करूं, तुम सेये भवसागर तरूं ॥
नाम लेत सब दुःख मिट जाय, तुम दर्शन देख्यो प्रभु आय।
तुम हो प्रभु देवन के देव, मैं तो करूँ चरण तव सेव ॥
मैं आयो दर्शन के काज, मेरो जन्म सफल भयो आज।
पूजा करके नवाऊं शीस, मुझ अपराध क्षमहु जगदीश ॥

दोहा—सुख देना दुख मेटना, यही तुम्हारी बान।
मो गरीब की बीनती, सुन लीज्यो भगवान ॥
दर्शन करते देव का, आदि मध्य अवसान।
स्वर्गन के सुख भोगकर, पावै मोक्ष निदान ॥
जैसी महिमा तुम विषै, और धरै नहिं कोय।
सूरज में जो ज्योति है, तारन में नहिं सोय ॥
नाथ तिहारे नामतैं, अघ छिनमांहि पलाय।
ज्यों दिनकर प्रकाशतैं, अंधकार विनशाय ॥

दर्शन पाठ संस्कृत

दर्शनं देवदेवस्य दर्शनं पापनाशनम्।
दर्शनं स्वर्गसोपानं दर्शनं मोक्षसाधनम् ॥ १ ॥
दर्शनेन जिनेन्द्राणां साधूनां वन्दनेन च।
न चिरं तिष्ठते पापं छिद्रहस्ते यथोदकम् ॥ २ ॥
वीतरागमुखं दृष्ट्वा पद्मरागसमप्रभम्।
जन्मजन्मकृतं पापं दर्शनेन विनश्यति ॥ ३ ॥

दर्शनं जिनसूर्यस्य संसारध्वान्तनाशनम् ।
बोधनं चितपद्मस्य समस्तार्थप्रकाशनम् ॥ ४ ॥
दर्शनं जिनचन्द्रस्य सद्धर्मामृतवर्षणं ।
जन्मदाहविनाशाय वर्धनं सुखवारिधेः ॥ ५ ॥
जीवादितत्त्वप्रतिपादकाय सम्यक्त्वमुख्याष्टगुणार्णवाय ।
प्रशांतरूपाय दिगम्बराय देवाधिदेवाय नमोजिनाय ॥ ६ ॥
चिदानंदैकरूपाय जिनाय परमात्मने ।
परमात्मप्रकाशाय नित्यं सिद्धात्मने नमः ॥ ७ ॥
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ।
तस्मात् कारुण्यभावेन रक्ष रक्ष जिनेश्वर ॥ ८ ॥
नहि त्राता नहि त्राता नहि त्राता जगत्त्रये ।
वीतरागात्परो देवो न भूतो न भविष्यति ॥ ९ ॥
जिने भक्तिर्जिने भक्तिर्जिने भक्तिर्दिने दिने ।
सदामेऽस्तु सदामेऽस्तु सदामेऽस्तु भवे भवे ॥ १० ॥
जिनधर्मविनिर्मुक्तो मा भवेच्चक्रवर्त्यपि ।
स्याच्चेटोऽपि दरिद्रोऽपि जिनधर्मानुवासितः ॥ ११ ॥
जन्म जन्म कृतं पापं जन्मकोटिमुपार्जितम् ।
जन्ममृत्युजरातंकं हन्यते जिनदर्शनात् ॥ १२ ॥

चैत्य वंदना

सात करोड़ वहत्तर लाख पाताल विषै जिन मन्दिर जानो ।
मध्यलोक में चारसौ अट्ठावन व्यंतर ज्योतिषके अधिकानो ॥
लाख चौरासी हजार सत्तानवे तेईस ऊरध लोक वखानो ।
इक २ में प्रतिमाशत आठ नमों कर जोड़ त्रिकाल सयानो ॥

(फिर अष्टांग नमस्कार दण्डवत करे और ३ परिक्रमा (फेरी) देवे। उस समय नीचे लिखी विनती पढ़े)

नोट—कहीं कहीं समवशरण में प्रवेश करके पहले परिक्रमा करने का विधान है।

विनती बुधजन

प्रभु पतित पावन मैं अपावन चरण आयो शरण जी।
यो विरद आप निहार स्वामी मेट जामन मरणजी॥
तुम ना पिछान्या आन मान्या देव विविध प्रकारजी।
या बुद्धिसेती निज न जान्यो भ्रम गिन्यो हितकारजी॥
भव विकट बन में कर्म वैरी ज्ञान धन मेरो हरो।
तब इष्ट भूल्यो भ्रष्ट होय अनिष्टगति धरत फिरो॥
धन घड़ी यो धन्न दिवस योही धन जनम मेरो भयो।
अब भाग मेरो उदय आयो दरश प्रभु को लखलयो॥
छवि वीतरागी नग्न मुद्रा, दृष्टि नासा पै धरै।
वसु प्रातिहार्य अनन्त गुण युत कोटि रवि छवि को हरै॥
मिट गयो तिमिर मिथ्यात्व मेरो उदय रवि आतम भयो।
मो उर हरष ऐसो भयो मनु रङ्क चिंतामणि लयो॥
मैं हाथ जोड़ नमाय मस्तक वीनऊँ तुव चरणजी।
सर्वोत्कृष्ट त्रिलोकपति जिन सुनहु तारन तरनजी॥
जाचूं नहीं सुरवास पुनि नर राज परिजन साथजी।
'बुध' जाचहूं तुम भक्ति भव भव दीजिये शिवनाथजी॥

नोट—फिर भगवान के सन्मुख खड़ा होकर आगे लिखी विनती पढ़े।

विनती भूधरदास कृत

अहो जगत गुरु एक, सुनियो अरज हमारी।
तुम हो दीन दयालु, मैं दुखिया संसारी ॥
इस भव बन में वादि, काल अनादि गमायो।
भ्रमत चतुर्गति मांहि, सुख नहीं दुख बहु पायो ॥
कर्म महारिपु जोर, एक न कान करैं जी।
मन मानो दुख देय, काहूँ सो नाहीं डरै जी ॥
कबहूँ इतर निगोद, कबहूँ नरक दिखावे।
सुर नर पशु गति मांहि, बहु विधि नाच नचावें।
प्रभु इनको परसंग, भव भव मांहि बुरो जी।
जो दुख देखे देव! तुम से नांहि दुरोजी ॥
एक जनम की बात, कहि न सकों सुन स्वामी।
तुम अनन्त परजाय, जानत अन्तरजामी ॥
मैं तो एक अनाथ, ये मिलि दुष्ट घनेरे।
कियो बहुत बेहाल, सुनियो साहिब मेरे ॥
ज्ञान महानिधि लूट, रङ्क निबल कर डारयो।
इन ही तुम मुझ मांहि, हे जिन! अन्तर पारयो ॥
पाप पुण्य कि दोय, पायनि बेडी डारी।
तन कारागृह मांहि, मोहि दियो दुख भारी ॥
इनको नेक बिगार, मैं कछु नांहि कियो जी।
बिन कारण जगबन्धु! बहुविधि वैर लियो जी ॥
अब आयो तुम पास, सुनके सुजश तिहारो।
नीति निपुण महाराज, कीजे न्याय हमारो ॥

दुष्टन देहु निकार, साधुन को रख लीजे।
विनवै "भूधरदास", हे प्रभु ढील न कीजे॥

विनती पढ़कर भगवान की प्रतिमा का ध्यान करे और विचारे कि 'धन्य है इस ध्यान को, धन्य है इस वीतरागमुद्रा को, इन्होंने राज-पाट तज कर आत्म-ध्यान के द्वारा केवल ज्ञान प्राप्त किया। वह दिन कब हो कि मैं भी इनकी तरह आत्म-कल्याण करूं,' इत्यादि विचार कर अष्टांग नमस्कार करे। फिर और वेदियों पर जाकर इसी प्रकार दर्शन करे।

११ दर्शन पाठ (पं० दौलतरामजी कृत)

दोहा

सकल ज्ञेय ज्ञायक तदपि निजानन्द रस लीन।
सो जिनेन्द्र जयवन्त नित, अरि रज रहस विहीन॥

पद्धड़ी छन्द

जय वीतराग विज्ञान पूर, जय मोह तिमिर को हरन सूर।
जय ज्ञान अनन्तानन्त धार, दृग सुख वीरज मंडित अपार ॥२॥
जय परम शान्ति मुद्रा समेत, भवि जनको निज अनुभूति देत।
भवि भागनवश जोगे वशाय, तुम ध्वनिह्वै सुनि विभ्रम नशाय॥
तुम गुण चिन्तत निज पर विवेक, प्रगटे विघटे आपद अनेक।
तुम जगभूषण दूषण वियुक्त, सब महिमा युक्त विकल्प मुक्त ॥४॥
अविरुद्ध शुद्ध चेतन स्वरूप, परामात्म परम पावन अनूप।
शुभ अशुभ विभाव अभाव कीन, स्वाभाविक परणति मय अछीन
अष्टादश दोष विमुक्त धीर, सुचतुष्टय में राजत गंभीर।
मुनि गणधरादि सेवत महन्त, नव केवल लब्ध रमा धरन्त ॥६॥

तुम शासन सेय अमेय जीव, शिव गये जाहिं जैहैं सदीव।
भवसागर में दुख छार वारि, तारण को और न आप टारि ॥७॥
यह लख निज दुखगद हरण काज, तुम ही निमित्त कारण इलाज।
जाने ताते मैं शरण आय, उचरों निज दुख जो चिर लहाय ॥८॥
मैं भ्रम्यो अपनपो विसरि आप, अपनाये विधि फल पुण्य पाप।
निज को परको कर्ता पिछान, पर में अनिष्टता इष्ट ठान ॥९॥
आकुलित भयो अज्ञान धारि, ज्यों मृग मृगतृष्णा जान वारि।
तनपरणती में आपो चितार, कबहून अनुभवो स्वपद सार ॥१०
तुम को जाने विन जो कलेश, पायो सो तुम जानत जिनेश।
पशुनारक गति सुर नर मझार, धर धर भव मरयो अनन्त वार ॥
अब काल लब्धि बल ते दयाल, तुम दर्शन पाय भयो खुशाल।
मन शान्त भयो मिट सकलद्वन्द, चाख्यो स्वातम रस दुख निकंद ॥
ताते ऐसी अब करो नाथ, बिछुडे न कभी तुम चरण साथ।
तुम गुणगण को नाछेव देव, जगतारण को तुम विरद एव ॥१३॥
आतम के अहित विषय कषाय, इन मे मेरी परणति न जाय।
मैं रहूं आप में आप लीन, सो करो होउं जो निजाधीन ॥१४॥
मेरे न चाह- कछु और ईश, रत्नत्रय निधि दीजे मुनीश।
मुझ कारज के कारण ही आप, शिव करो हरो मनमोह ताप ॥१५॥
शशि शांति करण तप हरण हेत, स्वयमेव तथा तुम कुशल देत।
पीवत पियूष ज्यों रोग जाय. त्यों तुम अनुभव ते भव नशाय॥
त्रिभुवन तिहू काल मझार कोय, नहिं तुम विन निज सुखदाय होय।
मो उर यह निश्चय भयो आज, दुःखजलधि उतारन तुम जहाज॥

दोहा

तुम गुणगण मणि गणिपती, गणत न पायो पार।
"दौल" स्वल्पमति किम कहें, नमो त्रियोग सम्हार ॥

गंधोदक का श्लोक

निर्मलं निर्मलीकरणं, पावनं पापनाशनं।
जिनचरणोदकं वंदे, चाष्टकर्म विनाशकं ॥

अथवा

तुम पद पंकज धूलिको, जो लावें निज अंग।
ते निरोग शरीर लहि, छिन में होय अनंग।

फिर बाहर आकर शास्त्र भण्डार के सामने खडे होकर नीचे लिखे छन्द पढ़ जिनवाणी को नमस्कार करे और शास्त्र सुने अथवा स्वाध्याय करे।

शास्त्र स्तुति

वीर हिमाचल तैं निकसी गुरु गौतम के मुख कुण्ड ढरी है।
मोह महाचल भेद चली जग की जडता तप दूर करी है॥
ज्ञान पयोनिधि मांहि रली बहु भंग तरंगनि सों उछरी है।
ता शुचि शारद गंगनदी प्रति मैं अंजुलि निज शीश धरी है ॥
या जग मन्दिर में अनिवार अज्ञान अन्धेर छयो अति भारी।
श्री जिनकी धुनि दीप शिखासम जो नहिं होत प्रकाशनहारी॥
तो किहिं भांति पदारथ पांति कहां लहते रहते अविचारी।
या विधि सन्त कहे धन हैं धन हैं जिन बैन बडे उपकारी॥

दोहा—जा वानी के ज्ञानतें, सूझे लोकालोक।
सो वानी मस्तक चढ़ो, नित प्रति देतहुं धोक॥

नोटः-विद्यार्थीगण मन्दिरजी से आकर, ताजा भोजन करके पाठशाला में जावें, गुरुजी को प्रणाम करें और पाठशाला के आरम्भ में मिलकर प्रार्थना करें।

अभिषेक पाठ

नोटः-यदि श्री जी को दूसरे स्थान पर विराजमान कर अभिषेक करना हो तो यह श्लोक पढना चाहिए।

यं पांडुकामलशिलागतमादिदेवमस्नापयन्सुरवराः सुरशैलमूर्ध्नि।
कल्याणमीप्सुरहमक्षततोयपुष्पैःसंभावयामि पुर एव तदीय बिंबं॥६॥

जल अक्षत पुष्प क्षेपणकर श्रीकार लिखित पीठपर जिन-बिंबकी स्थापना करना चाहिये।

दूरावनम्रसुरनाथकिरीटकोटीसंलग्नरत्नकिरणच्छविधूसरांघ्रिं।
प्रस्वेदतापमलमुक्तमपि प्रकृष्टैर्भक्त्या जलैर्जिनपतिं बहुधाभिषिंचे॥१॥

ओंह्रीं श्रीमंतं भगवंतं कृपालसंतं वृषभादिमहावीरपर्यंत-चतुर्विंशतितीर्थंकरपरमदेवं आद्यानां आद्ये जंबूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखंडे नाम्नि नगरे मासानामुत्तमे मासे मासे पक्षे शुभदिने मुनि आर्यिका श्रावकश्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं जलेनाभिषिंचे नमः॥

(इसे पढकर श्रीजिनप्रतिमापर जल के कलशसे धारा छोडनी चाहिये। धारा के बाद "उदकचंदन" आदि श्लोक बोल कर अर्घ चढाना चाहिये।

पंचमंगल पाठ

ये पांचों मङ्गल अभिषेक के समय न बोलकर सामग्री बनाते समय बोल लेना चाहिये।

पणविवि पंच परमगुरु गुरु जिनशासनो।
सकलसिद्धिदातार सु विघन विनासनो॥
शारद अरु गुरु गौतम सुमति प्रकासनो।
मंगल कर चउ संघहि पापपणासनो॥
पापहि पणासन गुणहि गरुआ, दोष अष्टादश—रहिउ।
धरि ध्यान करमविनाशि केवल-ज्ञान अविचल जिन लहिउ॥
प्रभु पञ्चकल्याणक विराजित, सकल सुरनर ध्यावहीं।
त्रैलोक्यनाथ सुदेव जिनवर, जगत मङ्गल गावहीं॥ १॥

१ गर्भ कल्याणक—

जाके गर्भ कल्याणक, धनपति आइयो।
अवधिज्ञान—परवान, सु इंद्र पठाइयो॥
रचि नव बारह जोजन, नयरि सुहावनी।
कनकरयणमणिमंडित, मंदिर अतिवनी॥
अति बनी पौरि पगारि परिखा, सुवन उपवन सोहिये।
नरनारि सुंदर चतुर भेख सु, देख जनमन मोहिये॥
तहँ जनकगृह छहमास प्रथमहिं रतन धारा बरसियो।
पुनि रुचिकवासिनी जननि—सेवा करहिं सबविधि हरसियो ॥२॥

सुरकुंजरसम कुंजर, धवल धुरंधरो ।
केहरि-केशरशोभित, नखशिख सुंदरो ॥
कमलाकलश-न्हवन, दुइ दाम सुहावनी ।
रविशशि मंडल मधुर, मीन जुग पावनी ॥
पावनि कनक घट जुगम पूरन, कमलकलित सरोवरो ।
कल्लोलमालाकुलितसागर, सिंहपीठ मनोहरो ॥
रमणीक अमर विमान फणिपति-भुवन रवि छवि छाजई ।
रुचि रतनराशि दिपंत, दहन सु तेजपुंज विराजई ॥ ३ ॥

ये सखि सोरह सुपने सूती सयनहीं ।
देखे माय मनोहर, पच्छिम रयनहीं ॥
उठि प्रभात पिय पूछियो, अवधि प्रकाशियो ।
त्रिभुवनपति सुत होसी, फल तिहँ भासियो ॥
भासियो फल तिहिं चिंत दंपति परम आनंदित भये ।
छहमासपरि नवमासपुनि तहँ, रैन दिन सुखसों गये ॥
गर्भावतार महंत महिमा, सुनत सब सुख पावहीं ।
भणि'रूपचन्द' सुदेव जिनवर जगत मङ्गल गावहीं ॥४॥

२ जन्मकल्याणक

मतिश्रुतअवधिविराजित, जिन जब जनमियो ।
तिहूंलोक भयो छोभित, सुरगन भरमियो ॥
कल्पवासि घर घंट, अनाहद वज्जियो ।
जोतिषघर हरिनाद, सहज गल गज्जियो ॥

गज्जियो सहजहिं संख भावन; भुवन सवद सुहावने।
विंतरानिलय पटु पटह बज्जहि, कहत महिमा क्यों वने॥
कंपित सुरासन अवधिवल जिन जनम निहचै जानियो।
धनराज तब गजराज माया-मयी निरमय आनियो॥५॥

जोजन लाख गयंद, वदन सौ निरमये।
वदन वदन वसुदंत, दंत सर संठये॥
सरसर-सौ पनवीस, कमलिनी छाजहीं॥
कमलिनि कमलिनि कमल पचीस विराजहीं॥

राजहीं कमलिनी कमलऽठोतर सौ मनोहर दल वने।
दल दलहिं अपछर नटहिं नवरस; हाव भाव सुहावने॥
मणि कनककिंकणि वर विचित्र, सु अमरमण्डप सोहिये।
घन घंट चंवर धुजा पताका, देखि त्रिभुवन मोहिये॥ ६॥

तिहिं करि हरि चढि आयउ, सुरपरिवारियो।
पुरिहि प्रदच्छन दे त्रय, जिन जयकारियो॥
गुप्तजाय जिन-जननिहिं, सुखनिद्रा रची।
मायामयि शिशु राखि तौ, जिन आन्यो सची॥

आन्यो सची जिनरूप निरखत, नयन तृपित न हूजिये।
तव परम हरषित हृदय हरिने सहस लोचन पूजिये॥
पुनि करि प्रणाम जु प्रथम इंद्र, उछंग धर प्रभु लीनऊ।
ईशान इंद्र सु छंद्र छविसिर, छत्र प्रभु के दीनऊ॥ ७॥

सनतकुमार महेंद्र, चमर दुइ ढारहीं।
शेष सक्र जयकार, सवद उचारहीं॥

उच्छवसहित चतुरविधि, सुर हरषित भये ।
जोजन सहस निन्यानवे, गगन उलँघि गये ॥
लँघिगये सुरगिर जहां पांडुक, वन विचित्र बिराजहीं ।
पाण्डुक शिला तहँ अर्द्धचंद्र समान, मणि छवि छाजही ॥
जोजन पचास विशाल दुगुणा याम वसु ऊंची गनी ।
वर अष्ट-मङ्गल-कनक कलशनि सिंहपीठ सुहावनी ॥ ८ ॥

रचि मणिमंडप शोभित, मध्य सिंहासनो ॥
थाप्यो पूरव दिशि मुख तहँ, प्रभु कमलासनो ॥
बाजहिं ताल मृदंग, वेणु वीणा घने ।
दुंदुभि प्रमुख मधुरधुनि, अवर जु बाजने ॥
बाजने बाजहिं सची सब मिलि, धवल मङ्गल गावहीं ।
पुनि करहिं नृत्य सुरांगना सब देव कौतुक धावहीं ॥
भरि क्षीरसागर जल जु हाथ हिं हाथ सुरगिरि ल्यावहीं ।
सौधर्म अरु ईशान इंद्र सु कलश ले प्रभु न्हावहीं ॥ ९ ॥

वदन उदर अवगाह, कलशगत जानिये ।
एक चारु वसु जोजन मान प्रमानिये ।
सहस-अठोतर कलशा, प्रभुके सिर ढरैं ।
पुनि सिंगार प्रमुख, आचार सबै करैं ॥
करि प्रगट प्रभु महिमा महोच्छव, आनि पुनि मातहिं दये ।
धनपतिहिं सेवा राखि सुरपति, आप सुरलोकहिं गये ॥
जनमाभिषेक महंत महिमा, सुनत सब सुख पावहीं ।
भणि 'रूपचंद' सुदेव जिनवर जगत मङ्गल गावहीं ॥ १० ॥

पंचामृत अभिषेक पाठ

(घृत दुग्ध दधि आदि से पंचामृत अभिषेक करना हो तो यह बोलना चाहिये। अगर संस्कृत पाठ पढ़ना नहीं आता है तो आगे छपा हुआ भाषा पंचामृत अभिषेक पाठ बोलकर करना चाहिये।)

श्रीमज्जिनेंद्रमभिवंद्य जगत्त्रयेशं,
स्याद्वादनायकमनंतचतुष्टयार्हम्
श्रीमूलसंघसुदृशां सुकृतैकहेतु
जैनेंद्रयज्ञविधिरेष मयाभ्यधायि ॥१॥

(इस श्लोक को पढ़कर जिनचरणों में पुष्पांजलि छोड़नी चाहिये।

श्रीमन्मंदरसुन्दरे शुचिजलैर्धौतैः सदर्भाक्षतैः
पीठे मुक्तिकरं निधाय रचितं त्वत्पादपद्मस्रजः।
इंद्रोऽहं निज- भूषणार्थकमिदं यज्ञोपवीतं दधे
मुद्राकंकणशेखरान्यपि तथा जैनाभिषेकोत्सवे ॥२॥

(इस श्लोक को पढ़कर अभिषेक करने वालो को यज्ञोपवीत तथा अनेक (सच्चे वा चन्दन के) आभूषण धारण करना चाहिये।

सौगंध्यसंगतमधुव्रतझंकृतेन, संवर्ण्यमानमिव गंधमनिंद्यमादौ।
आरोपयामि विबुधेश्वरवृंदवंद्यपादारविंदमभिवंद्य जिनोत्तमानां॥

इसे पढ़कर अभिषेक करने वालों को अंग में चन्दन के नव जगह तिलक करना चाहिये।

ये संति केचिदिह दिव्यकुलप्रसूता, नागाः प्रभूत-बलदर्पयुता विबोधाः । संरक्षणार्थममृतेन शुभेन तेषां, प्रक्षालयामि पुरतः स्नपनस्य भूमिम् ॥४॥

(इस श्लोक को पढ़कर अभिषेक के लिए भूमि या चौकी का प्रक्षालन करना चाहिये ।)

क्षीरार्णवस्य पयसां शुचिभिः प्रवाहैः, प्रक्षालितं सुरवरैर्यदनेकवारम् । अत्युद्धमुद्यतमहं जिनपादपीठं, प्रक्षालयामि भवसंभवतापहारि ॥५॥

(जिस सिंहासन पर श्रीजी को विराजमान करें उस सिंहासन का प्रक्षालन करें ।)

श्रीशारदासुमुखनिर्गतबीजवर्णं, श्रीमंगलीकवरसर्वजनस्य नित्यं । श्रीमत्स्वयं क्षयति तस्य विनाशविघ्नं, श्रीकारवर्णलिखितं जिनभद्रपीठे ॥६॥

(इस श्लोक को पढ़कर सिंहासन पर श्रीकार लिखना चाहिये ।)

इंद्राग्निदंडधरनैर्ऋतपाशपाणि, वायूत्तरेशशशिमौलि फणींद्रचंद्राः । आगत्य यूयमिह सानुचराः सचिन्हाः, स्वं स्वं प्रतीच्छत बलिं जिनपाभिषेके ॥७॥

(नीचे लिखे मंत्रों को पढ़कर क्रम से दशदिक्पालों के लिये अर्घ चढ़ावे ।)

१ ओं आं क्रौं ह्रीं इन्द्र आगच्छ आगच्छ इंद्राय स्वाहा ।

२ ओं आं क्रौं ह्रीं अग्ने आगच्छ आगच्छ अग्नये स्वाहा ।

३ ओं आं क्रौं ह्रीं यम आगच्छ आगच्छ यमाय स्वाह ।

४ ओं आं क्रौं ह्रीं नैरृत आगच्छ आगच्छ नैरृताय स्वाहा ॥
५ ओं आं क्रौं ह्रीं वरुण आगच्छ आगच्छ वरुणाय स्वाहा ।
६ ओं आं क्रौ ह्रीं पवन आगच्छ आगच्छ पवनाय स्वाहा ।
७ ओं आं क्रौं ह्रीं कुवेर आगच्छ आगच्छ कुवेराय स्वाहा ।
८ ओं आं क्रौं ह्री ऐशान आगच्छ आगच्छ ऐशानाय स्वाहा ।
९ ओं आं क्रौं ह्रीं धरणींद्र आगच्छ आगच्छ धरणींद्राय स्वाहा ।
१० ओं आं क्रौं ह्रीं सोम आगच्छ आगच्छ सोमाय स्वाहा ।

इति दिक्पालमंत्राः

दध्युज्ज्वलाक्षतमनोहरपुष्पदीपैः पात्रार्पितैः प्रतिदिनं महतादरेण । त्रैलोक्यमंगलसुखानलकामदाह—मारार्तिकं तव विभोरवतारयामि ॥ ८ ॥

(दधि अक्षत पुष्प और दीप रकावी में लेकर मंगल पाठ तथा अनेक बादित्रों के साथ त्रैलोक्यनाथ की आरती उतारनी चाहिये ।)

यं पांडुकामलशिलागतमादिदेव-मस्नापयन्सुरवराः सुरशैलमूर्ध्नि । कल्याणमीप्सुरहमक्षततोयपुष्पैः, संभावयामि पुर एव तदीय बिंबं ॥ ९ ॥

(जल अक्षत पुष्प क्षेपणकर श्रीकार लिखित पीठपर जिनविवकी स्थापना करना चाहिये ।

सत्पल्लवार्चितमुखान्कलधौतरूप्यान् , ताम्रारकूटघटितान्पयसा सुपूर्णान् । संवाह्यतामिव गतांश्चतुरः समुद्रान्, संस्थापयामि कलशान् जिनवेदिकांते ॥ १० ॥

(जलपूरित सुन्दर पत्तों से ढके हुए सुवर्णादि धातु के चार कलश चौकी या वेदी के चारों कोनों में स्थापन करना चाहिये ।)

आभिः पुण्याभिरद्भिः परिमलबहुलेनामुना चंदनेन, श्रीदृक्पेयैरमीभिः शुचिसदलचयैरुद्गमैरेभिरुद्धैः, हृद्यैरेभिर्निवेद्यैर्मखभवनमिमैर्दीपयद्भिः प्रदीपैः, धूपैः प्रायोभिरेभिः पृथुभिरपि फलैरेभिरीशं यजामि ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाय श्री अर्हत्परमेष्ठिनेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

दूरावनम्रसुरनाथकिरीटकोटीसंलग्नरत्नकिरणच्छविधूसरांघ्रिं ।
प्रस्वेतापमलमुक्तमपि प्रकृष्टैर्भक्त्या जलैर्जिनपतिं बहुधाभिषिंचे ।

ओं ह्रीं श्रीमंतं भगवंतं कृपालसंतं वृषभादि महावीर-पर्यंत-चतुर्विंशतितीर्थंकरपरमदेवं आद्यानां आद्ये जंबूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखंडे ... नाम्नि नगरे मासानामुत्तमेमासे ... मासे ... पक्षे ... शुभदिने मुनिआर्यिका-श्रावक-श्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं जलेनाभिषिंचे नमः ॥ १३ ॥

(इसे पढ़कर श्रीजिनप्रतिमा पर जल के कलश से धारा छोड़नी चाहिये । यहाँ प्रत्येक धारा के बाद "उदकचंदन आदि श्लोक बोलकर अर्घ चढाना चाहिये ।)

उत्कृष्टवर्णनवहेमरसाभिराम—देहप्रभावलयसंगमलुप्त-दीप्तिं । धारां घृतस्य शुभगंधगुणानुमेयां, वंदेर्हतां सुरभिसंस्नपनोपयुक्तां ॥ १४ ॥

(ऊपर लिखा पूरा मंत्र पढकर मंत्र में "जलेनाभिषिंचे" को जगह 'घृतेनाभिषिंचे' पढकर घृत के कलश से स्नपन करना चाहिये ।)

संपूर्ण शारदशशांकमरीचिजाल,-स्यंदैरिवात्मयशसामिव सुप्रवाहैः । क्षीरैर्जिनाः शुचितरैरभिषिंच्यमानाः,संपादयंतु मम चित्तसमीहितानि ॥ १५ ॥

(ऊपर के मंत्र में जलेनाभिषिंचे की जगह 'क्षीरेणाभिषिंचे' पढकर दुग्ध के कलश से अभिषेक करना चाहिये)

दुग्धाब्धिवीचिपयसंचितफेनराशिपांडुत्वकांतिमवधारयतामतीव । दध्ना गता जिनपतेः प्रतिमा सुधारा, संपाद्यतां सपदि वांछितसिद्धये नः ॥ १६ ॥

ऊपर लिखे मंत्र में 'जलेन' की जगह 'दध्ना' पढ़कर दधि के कलश से अभिषेक करना चाहिये ।

भक्त्या ललाटतटदेशनिवेशितोच्चैः, हस्तैश्च्युताः सुरवराऽसुरमर्त्यनाथैः । तत्कालपीलितमहेक्षुरसस्य धारा, सद्यः पुनातु जिनबिंबगतैव युष्मान् ॥ १७ ॥

ऊपर के मंत्र में 'जलेन' की जगह 'इक्षुरसेन' पढ़कर इक्षुरस के कलश से अभिषेक करना चाहिये ।

संस्नापितस्य घृतदुग्धदधीक्षुवाहैः सर्वाभिरौषधिभिरर्हतउज्ज्वलाभिः । उद्वर्तितस्य विदधाम्यभिषेकमेलाकालेयकुंकुमरसोत्कटवारिपूरैः ॥ १८ ॥

ऊपर के मंत्र में 'जलेन' की जगह 'सर्वौषधेन' पढ़कर सर्वौषधी के कलश से अभिषेक करना चाहिये ।

द्रव्यैरनल्पघनसारचतुः समाद्यै-रामोदवासितसमस्तदिगंतरालैः। मिश्रीकृतेन पयसा जिनपुंगवानां, त्रैलोक्य-पावनमहं स्नपनं करोमि ॥ १६ ॥

यहाँ 'जलेन' की जगह 'सुगन्धजलेन' पढ़कर केशर कर्पूरादि सुगन्धित पदार्थों से बनाये जल से स्नपन करना चाहिये।

इष्टैर्मनोरथशतैरिव भव्यपुंसां, पूर्णैः सुवर्णकलशैर्निखिलैर्वसानैः। संसारसागरविलंघनहेतुसेतुमाप्लावये त्रिभुवनैकपतिं जिनेंद्रं ॥ २० ॥

(ऊपर लिखे मंत्र से बचे हुए समस्त कलशों से अभिषेक करें)

मुक्तिश्रीवनिताकरोदकमिदं पुण्यांकुरोत्पादकं।
नागेंद्रत्रिदशेंद्रचक्रपदवीराज्याभिषेकोदकं ॥
सम्यग्ज्ञानचरित्रदर्शनलतासंवृद्धिसंपादकं।
कीर्तिश्रीजयसाधकं तव जिन ! स्नानस्य गंधोदकं ॥ २१॥

(इस श्लोक को पढ़कर गन्धोदक अपने अंग में लगाना चाहिये।)

॥ इति श्री लघु अभिषेकविधि समाप्त ॥

अथ लघुपंचामृताभिषेक भाषा

घृत दुग्ध आदि से पंचामृत अभिषेक करना हो तो यह पाठ बोलना अथवा पंचामृत के अभाव में सिर्फ जलधारा से काम लेना।

श्रीजिनवर चौबीस वर, कुनयध्वांतहर भान।
अमितवीर्य दृगबोधसुख, युत तिष्ठो इहि थान ॥

नाराच छन्द

गिरीश शीस पांडुपै, सचीश ईश थापियो।
महोत्सवो अनंदकंदको, सबै तहाँ कियो॥
हमें सो शक्ति नाहिं, व्यक्त देखि हेतु आपना।
यहां करैं जिनेंद्रचंद्रकी सुबिंब थापना॥ २॥

(पुष्पांजलि क्षेपण करके श्रीवर्ण पर जिनविम्ब को स्थापना करना)

सुन्दरी छन्द

कनकमणिमय कुंभ सुहावने, हरि सुछीर भये अति पावने।
हम सुवासित नीर यहां भरैं, जगतपावन-पांय तरैं धरैं॥३॥

(पुष्पांजलि क्षेपण करके वेदी के कोनों में चार कलशों की स्थापना;)

हरिगीतिका छन्द

शुद्धोपयोग समान भ्रमहर, परम सौरभ पावनो।
आकृष्टभृंगसमूह गंग समुद्भवो अति भावनो॥
मणिकनककुम्भनिसुंभकिल्विष, विमलशीतल भरिधरौं।
श्रम स्वेद मल निरवारजिन त्रय धार दे पांयनि परौं॥४॥

(मंत्र से शुद्ध जल की तीन धारा जिनबिम्ब पर छोडना)

अति मधुर जिनधुनि सम सुप्राणित प्राणिवर्ग सुभावसों।
बुधचित्तसम हरिचित्त नित, सुमिष्ट इष्ट उछावसों॥
तत्काल इक्षुसमुत्थप्रासुक रतनकुंभविषै भरौं।
यमत्रासतापनिवार जिन त्रयधार दे पांयनि परौं॥५॥

(ऊपर का मंत्र पढकर इक्षुरस की धारा देना)

निष्तप्तिप्तसुवर्णमदद्मनीय ज्यौं विधि जैनकी।
आयुप्रदा वलबुद्धिदा रच्चा, सु यों जिय सैनकी॥
तत्कालमंथित, चीर उत्थित, प्राज्य मणिझारी भरौं।
दीजै अतुलवल मोहि जिन, त्रयधार दे पांयनि परौं॥६॥

(घृतरस की धारा देना)

शरदभ्र शुभ्र सुहाटकद्युति, सुरभि पावन सोहनो।
क्लीवत्वहर वल धरन पूरन, पयसकल मनमोहनो॥
कृतउष्ण गोथनतैं समाहृत घट जटितमणिमैं भरौं।
दुर्वल दशा मो मेट जिन त्रयधार दे पांयनि परौं॥७॥

(दुग्ध की धारा देना)

वर विशदजैनाचार्य ज्यों मधुराम्लकर्कशता धरैं।
शुचिकर रसिक मंथन विमंथन नेह दोनों अनुसरैं॥
गोदधि सुमणिभृंगार पूरन लायकर आगैं धरौं।
दुखदोष कोष निवार जिन त्रयधार दे पांयनि परौं॥८॥

(दही की धारा)

सर्वौषधी मिलायके, भरिकंचन भृंगार।
जजौं चरण त्रयधारदे, तारतार भवतार॥६॥

(सर्वौषधि की धारा देना)

दूसरा अध्याय

नित्य नियम पूजा

पूजन प्रारंभ करने के समय नौ वार णमोकार मन्त्र पढ़कर नीचे लिखा नियम पाठ बोल कर पूजा आरम्भ करना चाहिये।

[केवल णमोकार मंत्र पढ़कर भी पूजा कर सकते हैं]

❀ विनय पाठ दोहावली ❀

इह विधि ठाडो होयके, प्रथम पढै जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्मजु आठ ॥ १ ॥
अनंत चतुष्टयके धनी, तुमही हो सिरताज।
मुक्तिवधूके कंथ तुम, तीन भुवन के राज ॥ २ ॥
तिहुँ जगकी पीडाहरन, भवदधि शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्वके, शिवसुख के करतार ॥ ३ ॥
हरता अघअंधियार के, करता धर्म प्रकाश।
थिरतापद दातारहो, धरता निजगुण राश ॥ ४ ॥
धर्मामृत उर जलधिसों, ज्ञानभानु तुम रूप।
तुमरे चरण सरोज को, नावत तिहुं जग भूप ॥ ५ ॥
मैं वंदौं जिनदेवकों, कर अति निर्मल भाव।
कर्मबंध के छेदने, और न कछु उपाव ॥ ६ ॥
भविजनको भवकूपतैं, तुमही काढनहार।
दीनदयाल अनाथपति, आतमगुणभंडार ॥ ७ ॥
चिदानंद निर्मल कियो, धोय कर्मरज मैल।
सरल करी या जगत में भविजनको शिवगैल ॥ ८ ॥
तुम पदपंकज पूजतै, विघ्न रोग टर जाय।
शत्रु मित्रताको धरै विष निरविषता थाय ॥ ९ ॥
चक्रीखगधरइंद्रपद, मिलै आपतैं आप।
अनुक्रमकर शिवपद लहैं, नेमसकल हनि पाप ॥ १० ॥
तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन।
जन्मजरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन ॥ ११ ॥

पतित वहुत पावन किये; गिनती कौन करेव ।
अंजनसे तारे प्रभु, जय जय जय जिनदेव ॥ १२ ॥
थकी नाव भवदधिविषै, तुम प्रभु पार करेय ।
खेवटिया तुम हो प्रभू, जय जय जय जिनदेव ॥ १३ ॥
रागसहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव ।
वीतराग भेटयों अवै, मेटो राग कुटेव ॥१४॥
कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यंच अज्ञान ।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान ॥१५॥
तुम को पूजै सुरपति, अहिपति नरपति देव ।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव ॥१६॥
अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार ।
मैं डूबत भवसिंधु में, खेओ लगाओ पार ॥१७॥
इन्द्रादिक गणपति थके, कर बिनती भगवान ।
अपनो विरद निहारकै, कीजे आप समान ॥ १८ ॥
तुमरी नेक सुदृष्टितैं, जग उतरत है पार ।
हा ! हा ! डूब्यो जात हों, नेक निहार निकार ॥ १९ ॥
जो मैं कहहूँ और सों, तो न मिटै उरझार ।
मेरी तो तोसों बनी, तातै करौं पुकार ॥ २० ॥
वंदों पांचौ परमगुरु, सुर गुरु बंदत जास ।
विघनहरन मंगलकरन, पूरन परम प्रकाश ॥ २१ ॥
चौबीसों जिनपद नमों, नमों शारदा माय ।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यो पाठ सुखदाय ॥२२॥

पूजाप्रारंभ

ओं जय जय जय । नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु ।

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं ।
णमो उवज्झायाणं, णमोलोये सव्वसाहूणं ॥१॥

ओं ह्रींअनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः । (पुष्पांजलि क्षेपण करना) चत्तारि मंगलं—अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो, धम्मो मंगलं । चत्तारि लोगुत्तमा—अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहूलोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मोलोगुत्तमो । चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहूसरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मंसरणं पव्वज्जामि॥ ओं नमोऽर्हते स्वाहा ।

(यहां पुष्पांजलि क्षेपण करना)

अपवित्रः पवित्रो वा सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा ।
ध्यायेत्पंचनमस्कारं सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ १ ॥
अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत्परमात्मानं स बाह्याभ्यंतरे शुचिः ॥ २ ॥
अपराजितमंत्रोऽयं सर्वविघ्नविनाशनः ।
मंगलेषु च सर्वेषु प्रथमं मंगलं मतः ॥ ३ ॥
एसो पंचणमोयारो सव्वपावप्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं होइ मंगलं ॥४॥

अर्हमित्यक्षरं ब्रह्मवाचकं परमेष्ठिनः ।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहं ॥५॥
कर्माष्टकविनिर्मुक्तं मोक्षलक्ष्मीनिकेतनं ।
सम्यक्त्वादिगुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहं ॥६॥
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति शाकिनी भूतपन्नगाः ।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे ॥७॥

पंचकल्याणक का अर्घ

(पुष्पांजलि)

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः ।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे कल्याणमहं यजे ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्री भगवान के गर्भजन्मतप ज्ञान निर्वाण पंचकल्याणकेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

पंचपरमेष्ठी का अर्घ

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः ।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिनइष्टमहं यजे ॥ २ ॥

ओं ह्रीं श्री अरिहंतसिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्योऽर्घं०

यदि अवकाश हो, तो यहां पर सहस्रनाम पढकर दश अर्घ देना चाहिये। नहीं तो नीचे लिखा श्लोक पढ कर एक अर्घ चढाना चाहिये।

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः ।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाम अहं यजे ॥३॥

ओं ह्रीं श्री भगवज्जिनसहस्रनामेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

स्वस्ति मंगल

श्री मज्जिनेंद्रमभिवंद्यजगत्त्रयेशं, स्याद्वादनायकमनंतचतुष्टयार्हं । श्री मूलसंघसुदृशां सुकृतैकहेतुर्जैनेंद्रयज्ञविधिरेष मयाऽभ्यधायि ॥ १ ॥ स्वस्ति त्रिलोकगुरवे जिनपुंगवाय, स्वस्ति स्वभावमहिमोदयसुस्थिताय । स्वस्ति प्रकाशसहजोर्ज्जितदृङ्मयाय, स्वस्ति प्रसन्नललिताद्भुतवैभवाय ॥ २ ॥ स्वस्त्युच्छलद्विमलबोधसुधाप्लवाय, स्वस्ति स्वभावपरभावविभासकाय, स्वस्ति त्रिलोकविततैकचिदुद्गमाय, स्वस्ति त्रिकालसकलायतविस्तृताय ॥ ३ ॥ द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्य यथानुरूपं, भावस्य शुद्धिमधिकामधिगंतुकामः । आलंबनानि विविधान्यवलंब्यवल्गन्, भूतार्थयज्ञपुरुषस्य करोमि यज्ञं ॥ ४ ॥ अर्हत्पुराणपुरुषोत्तमपावनानि, वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेकएव । अस्मिन् ज्वलद्विमल केवल बोध वह्नौ, पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि ॥ ५ ॥

ओं विधियज्ञप्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

श्रीवृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अजितः ।
श्रीसंभवः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अभिनन्दनः ।
श्रीसुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री पद्मप्रभः ।
श्रीसुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री चन्द्रप्रभः ।
श्रीपुष्पदंतः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शीतलः ।
श्रीश्रेयांसः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः ।
श्रीविमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अनन्तः ।

श्रीधर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शांतिः ।
श्रीकुंथुः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अरनाथः ।
श्रीमल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री मुनिसुव्रतः ।
श्रीनमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री नेमिनाथः ।
श्रीपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवर्द्धमानः ।

(पुष्पांजलि क्षेपण)

इति जिनेन्द्र स्वस्ति मङ्गल विधानं ।

नित्याप्रकंपाद्भुतकेवलौघाः स्फुरन्मनः पर्ययशुद्धबोधाः ।
दिव्यावधिज्ञानवलप्रबोधाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः ॥१॥

यहां से प्रत्येक श्लोक के अंत में पुष्पांजलि क्षेपन करना चाहिये ।

कोष्ठस्थधान्योपममेकबीजं संभिन्नसंश्रोतृपदानुसारि ।
चतुर्विधं बुद्धिवलं दधानाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः ॥२॥
संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादनघ्राणविलोकनानि
दिव्यान् मतिज्ञानवलाद्वहंतः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः ॥३॥
प्रज्ञाप्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः प्रत्येकबुद्धा दशसर्वपूर्वैः ।
प्रवादिनोऽष्टांगनिमित्तविज्ञाःस्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः ॥४॥
जंघावलिश्रेणिफलांबुतंतु प्रसून बीजांकुर चारणाह्वाः ।
नभोऽगणस्वैरविहारिणश्च स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः ॥५॥
अणिम्नि दक्षाः कुशला महिम्नि लघिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि । मनोवपुर्वाग्वलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः ॥६॥ सकामरूपित्ववशित्वमैश्य प्राकाम्य मंतर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः । तथाऽप्रतीघातगुणप्रधानाः

स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः ॥७॥ दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः । ब्रह्मापरं घोरगुणाश्चरंतः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः ॥८॥ आमर्षसर्वौषधयस्तथाशीर्विषंविषादृष्टिविषंविषाश्च । सखिल्ल विड्जल्लमलौषधीशाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः ॥९॥ क्षीरं स्रवंतोऽत्रघृतं स्रवंतो मधुस्रवंतोऽप्यमृतं स्रवंतः । अक्षीणसंवासमहानसाश्च स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः ॥१०॥

देव शास्त्र गुरु की भाषा पूजा ।

अडिल्ल छंद ।

प्रथमदेव अरिहंत सुश्रुत सिद्धांतजू । गुरुनिरग्रंथ महंत मुकतिपुरपंथजू । तीन रतन जगमांहि सो ये भवि ध्याइये । तिनकी भक्ति प्रसाद परम पद पाइये ॥१॥

दोहा:—पूजौं पद अरहंत के, पूजौं गुरुपदसार ।
पूजौं देवी सरस्वती, नित प्रति अष्ट प्रकार ॥

ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुसमूह ! अत्रावतरावतर । संवौषट् ।

ओं ह्रीं देवशास्त्र गुरुसमूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।

ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुसमूह अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

गीता छंद

सुरपति उरगनरनाथ तिनकर, वंदनीक सुपदप्रभा ।
अति शोभनीक सुवर्ण उज्ज्वल, देखि छवि मोहित सभा ॥

वर नीर चीरसमुद्रघट भरि अग्र तसु बहुविधि नचूं ।
अरहंत श्रुतसिद्धांत गुरु निरग्रंथ नित पूजा रचूं ॥१॥
दोहा:—मलिन वस्तु हरलेत सब, जल स्वभाव मलछीन ।
जासों पूजों परमपद, देव शास्त्र गुरुतीन ॥
ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्व० ।
जे त्रिजग उदर मँझार प्राणी, तपत अति दुद्धर खरे ।
तिन अहितहरन सुवचन जिनके, परम शीतलता भरे ॥
तसु भ्रमर लोभित घ्राण पावन सरस चंदन घसि सचूं । अरहंतः।
दोहा—चंदन शीतलता करै, तपत वस्तु परवीन ।
जासों पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरुतीन ॥ २ ॥
ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदन निर्व० ॥२॥
यह भवसमुद्र अपार तारण—के निमित्त सु विधि ठई ।
अति दृढ परमपावन जथारथ भक्ति वर नौका सही ॥
ज्ज्वल अखंडितसालि तंदुल पुंजधरि त्रयगुण जचूं । अरहंतः।
दोहा:—तंदुल सालि सुगंध अति, परम अखंडित बीन ।
जासों पूजौ परम पद, देव शास्त्र गुरुतीन ॥ ३ ॥
ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः अक्षपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा
जे विनयवंत सुभव्य उर अंबुज प्रकाशन भान है ।
जे एक मुख चारित्र भाषत त्रिजगमाहिं प्रधान है । लहि कुंद
कमलादिक पहुप, भव २ कुवेदनसों बचूं । अरहंत० ॥४॥
दोहा—विविध भांति परिमलसुमन, भ्रमर जास आधीन ।
जासौं पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व० ॥४॥

अतिसबल मदकंदर्प जाको क्षुधाउरग अमान है।
दुस्सह भयानक तासु नाशनको सु गरुड समान है।
उत्तम छहोंरसयुक्त नित, नैवेद्यकरि घृत मेंपचूं। अरहंत॥५।

दोहा—नानाविधि संयुक्तरस, व्यंजनसरस नवीन।
जासों पूजौं परमपद देव शास्त्र गुरु तीन ॥५॥

ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व० ॥५॥

जे त्रिजगउद्यम नाश कीने, मोहतिमिर महाबली।
तिहि कर्मघाती ज्ञानदीपप्रकाशजोति प्रभावली॥
इहभांति दीप प्रजाल कंचनके सुभाजन में खचूं अरहंत॥६॥

दोहा—स्वपरप्रकाशक ज्योति अति, दीपक तमकरि हीन।
जासों पूजौं परमपद, देवशास्त्र गुरुतीन ॥६॥

ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्व० ॥६॥

जो कर्म—ईंधन दहन अग्निसमूह सम उद्धत लसै।
वर धूप तासु सुगंधताकरि, सकल परिमलता हंसै॥
इहि भांति धूप चढाय नित भवज्वलनमाहिं नहीं पचूं। अरहं। ।७।

दोहा—अग्निमांहि परिमलदहन, चंदनादि गुणलीन।
जासों पूजौं परमपद देव, शास्त्र गुरु तीन ॥ ७ ॥

ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्योऽष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्व० ॥ ७ ॥

लोचन सु रसना घ्रान उर, उत्साह के करतार हैं।
मोपैं न उपमा जाय वरणी, सकलफलगुणसार हैं॥
सो फल चढावत अर्थपूरन, परम अमृतरस सचूं। अरहंत।

दोहा—जे प्रधान फल फलविषैं, पंचकरण-रस लीन।
जासों पूजों परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ॥ ८ ॥

ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

जल परम उज्ज्वल गंध अक्षत, पुष्प चरु दीपक धरूं।
वर धूप निरमल फल विविध, बहु जन्म के पातक हरूं ॥
इहभांति अर्घ चढाय नित भवि, करत शिवपंकति मचूं ।अर०।

दोहा:—वसुविधि अर्घ सँजोयके, अति उछाह मन कीन।
जासों पूजों परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ॥ ९ ॥

ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ जयमाला।

देवशास्त्रगुरु रतन शुभ, तीनरतन करतार।
भिन्न भिन्न कहुँ आरती, अल्प सुगुण विस्तार ॥

पद्धरिछंद।

कर्मनकी त्रेसठ प्रकृति नाश, जीते अष्टादश दोषराशि।
जे परम सुगुण हैं अनंत धीर, कहवत के छयालिस गुण गंभीर ॥२॥
शुभ समवसरन शोभा अपार, शत इंद्र नमत कर सीसधार।
देवाधिदेव अरहंत देव, वंदों मनवचतनकरि सु सेव ॥ ३ ॥
जिनकी धुनि ह्वै ओंकार रूप, निर अक्षरमय महिमा अनूप।
दश अष्ट महाभाषा समेत, लघुभाषा सात शतक सुचेत ॥ ४ ॥
सो स्याद्वादमय सप्त भंग, गणधर गूथे बारह सु अंग।
रवि शशि न हरैं सौ तम हराय, सो शास्त्र नमों बहु प्रीति ल्याय ॥५॥

गुरु आचारज उवझाय साध, तन नगन रतन त्रयनिधि अगाध।
संसारदेह -वैराग धार, निरवांछि तपै शिवपद निहार ॥ ६ ॥
गुण छत्तिस पच्चिस आठबीस, भवतारन तरन जिहाज ईस।
गुरु की महिमा बरनी न जाय, गुरु नाम जपों मनवचन काय ॥७॥

सोरटा:—कीजै शक्ति प्रमान, शक्ति विना सरधा धरै।
'द्यानत' सरधावान, अजर अमरपद भोगवे ॥

ओं ह्रीं देवशास्त्र गुरुभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सूचना.—आगे जिस भाई को निराकुलता हो, वह नीचे लिखे अनुसार बीस तीर्थंकरों की भाषा पूजा करे। यदि स्थिरता न होतो इस पूजा के आगे जो अर्घ लिखा है उसको पढ़कर अर्घ चढ़ा देवे।

श्री बीस तीर्थंकरपूजा भाषा।

दीप अढाई मेरु पन, अरु तीर्थंकर वीस।
तिन सबकी पूजा करूं मनवचतन धरि सीस ॥

ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरा: ! अत्र अवतर अवतर सवौषट्।
ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरा. ! अत्र तिष्ठत तिष्ठत। ठः ठः।
ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरा: ! अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट्।

इंद्र फणींद्र नरेंद्र वंद्य, पद निर्मल धारी।
शोभनीक संसार, सारगुण हैं अविकारी ॥
क्षीरोदधि सम नीरसो (हो), पूजों तृषा निवार।

सीमंधर जिन आदि दे, बीस विदेह मँझार।
श्री जिनराज हो भव, तारणतरण जिहाज ॥ १ ॥

ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थकरेभ्यो जन्ममृत्यु विनाशनाय जलं०

(इस पूजामें बीस पुंज करना हो, तो इस प्रकार मंत्र बोलना)

ओं ह्रीं सीमंधर—युगमंधर—बाहु-सुबाहु-संजातक-स्वयंप्रभ-ऋषभानन-अनंतवीर्य—सूरीप्रभ—विशालकीर्ति—वज्रधर-चंद्रानन-भद्रबाहु-भुजंगम—ईश्वर—नेमिप्रभ—वीरसेण—महाभद्र-देवयशोऽजितवीर्येति विंशतिविद्यमान तीर्थङ्करेभ्यो जन्ममृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

तीन लोक के जीव, पाप आताप सताये।
तिनकों साता दाता, शीतल वचन सुहाये॥
बावन चंदनसों जजूं (हो) भ्रमन-तपन निरवार। सीमंधर०॥२॥

ओं ह्रीं विद्यामनविंशतितीर्थङ्करेभ्यो भवातापविनाशनाय चंदनं नि०

(इसके स्थान में यदि इच्छा हो, तो बड़ा मंत्र पढ़े)

यह संसार अपार महासागर जिनस्वामी।
तातैं तारे बडी, भक्ति-नौका जगनामी॥
तंदुल अमल सुगंधसों (हो) पूजों तुम गुणसार। सीमंधर०॥३॥

ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०

भविक-सरोज-विकाश, निंद्यतमहर रविसे हो।
जति श्रावक आचार, कथनको तुमही बडे हो॥
फूलसुवास अनेकसों (हो) पूजों मदन प्रहार। सीमंधर० ॥४॥

ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्यः कामबाण विनाशनाय पुष्पं नि०

काम नाग विषधाम, नाशको गरुड कहे हो ।
छुधा महादवज्वाल, तासको मेघ लहे हो ॥
नेवज बहुघृत मिष्टसों (हो), पूजों भूखविडार। सीमंधरः ।५।
ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं०
उद्यम होन न देत, सर्व जगमाहिं भर्‍यो है—
मोह महातम घोर, नाश परकाश कर्‍यो है ॥
पूजों दीप प्रकाशसों (हो) ज्ञानज्योति करतार । सीमंधरः ।६।
ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं०।
कर्म आठ सब काठ,-भार विस्तार निहारा ।
ध्यान अगनि कर प्रकट, सरब कीनो निरवारा ॥
धूप अनूपम खेवतैं (हो), दुःखजलैं निरधार । सीमंधरः ।७।
ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्योऽष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं ।
मिथ्यावादी दुष्ट, लोभऽहंकार भरे हैं ।
सबको छिनमें जीत, जैनके मेरु खरे हैं ॥
फल अति उत्तमसों जजों (हो) वांछितफलदातार । सीमं. ।८।
ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व०।
जल फल आठों दर्व, अरघकर प्रीति धरी है ।
गणधर इंद्रनहूतैं, थुति पूरी न करी है ॥
'द्यानत' सेवक जानके (हो) जगतैं नेहुनिकार । सीमं. । ९ ।
ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि० ।

अथ जयमाला आरती ।

सोरठा—ज्ञान सुधाकर चंद, भविकखेतहित मेघ हो ।
भ्रमतमभान अमंद, तीर्थंकर बीसों नमों ॥

चौपाई १६ मात्रा ।

सीमंधर सीमंधर स्वामी, जुगमंधर जुगमंधर नामी ।
बाहु बाहु जिन जगजन तारे, करम सुबाहु बाहुबल दारे ॥ १ ॥
जात सुजातं केवल-ज्ञानं, स्वयंप्रभू प्रभु स्वयं प्रधानं ।
ऋषभानन ऋषि भानन दोषं, अनंतवीरज वीरजकोषं ॥ २ ॥
सौरीप्रभ सौरी गुण मालं, सुगुण विशाल विशाल दयालं ।
वज्रधार भव रिवज्जर हैं, चंद्रानन चंद्रानन वर हैं ॥ ३ ॥
भद्रबाहु भद्रनिके करता, श्रीभुजंग भुजंगम हरता ।
ईश्वर सबके ईश्वर छाजैं, नेमिप्रभु जस नेमि विराजैं ॥ ४ ॥
वीरसेन वीरं जग जानै, महाभद्र महाभद्र बखाने ।
नमो जसधर जसोधरकारी, नमो अजित वीरज बलधारी ॥ ५ ॥
धनुष-पांचसौ काय विराजै, आव कोडिपूरव सब छाजै ।
समवसरण शोभित जिनराजा, भव जलतारनतरन जिहाजा ॥ ६ ॥
सम्यक रत्नत्रयनिधिदानी, लोकालोक प्रकाशक ज्ञानी ।
शतइंद्रनिकरि वंदित सोहैं, सुरनर पशु सबके मन मोहैं ॥ ७ ॥

दोहा—तुमको पूजैं वंदना, करै धन्य नर सोय ।
'द्यानत' सरधा मन धरै, सो भी धरमी होय ॥

ॐ ह्रीं विद्यमान विंशति तीर्थंकरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(विद्यमान बीस तीर्थ करों का अर्घ)

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः ।

धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिनराजमहं यजे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरयुग्मंधरबाहुसुबाहुसंजातकस्वयंप्रभऋषिभानन अनन्तवीर्यसूर्यप्रभविशालकीर्तिवज्रधरचंद्रानन भद्रबाहुभुजंगम ईश्वर नेमिप्रभवीरसेनमहाभद्रदेवयशअजितवीर्येति विंशतिविद्यमानतीर्थ-ङ्करेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अकृत्रिम चैत्यालयों के अर्घ ।

कृत्याकृत्रिमचारुचैत्यनिलयान् नित्यं त्रिलोकीगतान् ।

वंदे भावनव्यंतरान् द्युतिवरान् स्वर्गामरावासगान् ॥

सद्गंधाक्षतपुष्पदामचरुकैः, सद्दीपधूपैः फलैः,

द्रव्यैर्नीरमुखैर्यजामि सततं दुष्कर्मणां शांतये ॥१॥

ओं ह्रीं कृत्रिमाकृत्रिमचैत्यालयसंबंधिजिनबिंबेभ्योऽर्घ्यं निर्व०

वर्षेषु वर्षांतरपर्वतेषु नंदीश्वरे यानि च मंदरेषु ।

यावंति चैत्यायतनानि लोके सर्वाणि वंदे जिनपुंगवानां ॥ २ ॥

अवनितलगतानां कृत्रिमाकृत्रिमाणां,

वनभवनगतानां दिव्यवैमानिकानां ।

इह मनुजकृतानां देवराजार्चितानां,

जिनवरनिलयानां भावतोऽहं स्मरामि ॥ ३ ॥

जंबूधातकिपुष्करार्द्ध वसुधाक्षेत्रत्रये ये भवा-

श्चंद्रांम्भोजशिखंडिकंठकनकप्रावृड्घनाभा जिनाः ।

सम्यग्ज्ञानचरित्रलक्षणधरा दग्धाष्टकर्मेन्धनाः,

भूतानागतवर्तमानसमये तेभ्यो जिनेभ्यो नमः ॥ ४ ॥

श्रीमन्मेरौ कुलाद्रौ रजतगिरिवरे शाल्मलौ जंबूवृक्षे,
वक्षारे चैत्यवृक्षे रतिकररुचिके कुंडले मानुषांके।
इष्वाकारेऽजनाद्रौ दधिमुखशिखरे व्यंतरे स्वर्गलोके,
ज्योतिर्लोकेऽभिवंदे भुवनमहितले यानि चैत्यालयानि ॥५॥
द्वौ कुंदेंदुतुषारहारधवलौ द्वाविंद्रनीलप्रभौ,
द्वौ बंधूकसमप्रभौ जिनवृषौ द्वौ च प्रियंगुप्रभौ।
शेषाः षोडश जन्ममृत्युरहिताः संतप्तहेमप्रभा,
ते संज्ञानदिवाकराः सुरनुता सिद्धिं प्रयच्छंतु नः ॥ ६ ॥
ओं ह्रीं त्रिलोक संबंधि-कृत्याकृत्रिमचैत्यालयेभ्योऽर्घं निर्वपा०

इच्छामि भंते चेइयभत्ति काओसग्गो कओ तस्सालोचेओ। अहलोय तिरियलोय उड्ढलोयम्मि किट्टिमाकिट्टिमाणि जाणि जिण चेयाणि ताणि सव्वाणि, तीसुवि लोयेसु भवणवासिय वाण-वितरंजोयसियकप्पवासियत्ति चउविहा देवा सपरिवारा दिव्वेण गंधेण दिव्वेण पुप्फेण दिव्वेण धुव्वेण दिव्वेणचुण्णेण दिव्वेण वासेण दिव्वेण ह्लाणेण णिच्चकालं अच्चंति पुज्जंति बंदंति णम-स्संति। अहमवि इहसंतो तत्थसंताइ णिच्चकालं अच्चेमि पुज्जेमि बंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ॥

(इत्याशीर्वादः। पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

अथ पौर्वाह्णिक-माध्याह्निक-अपराह्णिकदेववंदनायां पूर्वाचार्या-नुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजावंदनास्तवसमेतं श्री पंचमहा-गुरुभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहम्,

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं णमो आइरीयाणं।

णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।
तावकायं पावकम्मं दुच्चरियं वोस्सरामि।

अथ सिद्धपूजा द्रव्याष्टक।❀

ऊर्ध्वाधोरयुतं सबिंदु सपरं ब्रह्मस्वरावेष्टितं।
वर्गापूरितदिग्गतांबुजदलं तत्संधितत्त्वान्वितं॥
अंतः पत्रतटेष्वनाहतयुतं ह्रींकारसंवेष्टितं।
देवं ध्यायति यः स मुक्तिसुभगो वैरीभकंठीरवः॥

ओं ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये ! सिद्धपरमेष्ठिन् ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ओं ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये ! सिद्ध परमेष्ठिन् ! अत्रतिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ओं ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये ! सिद्धपरमेष्ठिन् ! अत्रमम सन्निहितो भव भव वषट्।

निरस्तकर्मसंबंधं, सूक्ष्मं नित्यं निरामयम्।
वंदेऽहं परमात्मानममूर्तमनुपद्रवम्॥ १॥

(यहां सिद्धयंत्रकी स्थापना करना)

जिन त्यागियों को बिना द्रव्य चढाये भावों के द्रव्यों से ही पूजा करना हो, वे आगे भावाष्टक है, उसको बोलकर करै। अष्टद्रव्य से पूजा करने वालों को भावपूजा का अष्टक कदापि नहीं बोलना चाहिये।

नोटः—सिद्ध पूजा भाषा द्यानतराय कृत भी आगे दी गई है। विसर्जन के अन्त में देखें।

द्रव्याष्टक ।

सिद्धौ निवासमनुगं परमात्म्यगम्यं, हान्यादि भावरहितं भववीतकायं । रेवापगावरसरोयमुनोद्भवानां नीरैर्यजे कलशगैर्वरसिद्धचक्रं ॥ १ ॥

ओं ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने जन्ममृत्युविनाशनाय जलंनि०

आनंदकंदजनकं घनकर्ममुक्तं, सम्यक्त्वशर्मगरिमं जननार्तिवीतं । सौरभ्यवासितभुवं हरिचंदनानां, गंधैर्यजे परिमलैर्वर सिद्धचक्रम् ॥ २ ॥

ओं ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने संसारतापविनाशनाय चंदनं

सर्वावगाहनगुणं सुसमाधिनिष्ठं, सिद्धं स्वरूपनिपुणं कमलं विशालं । सौगंध्यशालिवनशालिवराक्षतानां, पुंजैर्यजे शशिनिभैर्वरसिद्धचक्रम् ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं०

नित्यं स्वदेहपरिमाणमनादिसंज्ञं, द्रव्यानिपेक्षममृतं मरणाद्यतीतम् । मंदारकुंदकमलादिवनस्पतीनां, पुष्पैर्यजे शुभतमैर्वरसिद्धचक्रम् ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं

ऊर्ध्वस्वभावगमनं सुमनोव्यपेतं, ब्रह्मादिबीजसहितं गगनावभासम् । क्षीरान्नसाज्यवटकै रसपूर्णगर्भैर्नित्यं यजे चरुवरैर्वर सिद्धचक्रम् ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने क्षुद्रोगविध्वंशनाय नैवेद्यं०

आतंकशोकभयरोगमदप्रशांतं,—निर्द्वंद्वभावधरणं महिमा-

निवेशं । कर्पूरवर्तिबहुभिः कनकावदातैर्दीपैर्यजे रुचि-
वरैर्वरसिद्धचक्रम् ॥६॥

ओं ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मोहांधकारविनाशनाय दीपं

पश्यन्समस्तभुवनं युगपन्नितांतं, त्रैकाल्यवस्तुविषये
निविडप्रदीपम् । सद्द्रव्यगंधघनसारविमिश्रितानां, धूपैर्यजे
हरिमलैर्वरसिद्धचक्रम् ॥ ७ ॥

ओं ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अष्टकर्मदहनाय धूपं०

सिद्धासुरादिपतियक्षनरेंद्रचक्रैर्ध्येयं शिवं सकलभव्यजनैः
सुवंद्यं । नारिंगपूगकदलीवरनारिकेलैः सोऽहं यजे वरफलैर्वर
सिद्धचक्रम् ॥ ८ ॥

ओं ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मोक्षफलप्राप्ताय फलं

गंधाढ्यं सुपयोमधुव्रतगणैः संगं वरं चंदनं ।
पुष्पौघं विमलं सदक्षतचयं रम्यं चरुं दीपकं ॥
धूपं गंधयुतं ददामि विविधं श्रेष्ठं फलं लब्धये ।
सिद्धानां युगपत्क्रमाय विमलं सेनोत्तरं वांछितं ॥ ६ ॥

ओं ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

ज्ञानोपयोगविमलं विशदात्मरूपं, सूक्ष्मस्वभावपरमंयदनंतवीर्यं
कर्मौघकक्षदहनं सुखशस्यबीजं वंदे सदा निरुपमं वरसिद्धचक्रं

ओं ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्ध परमेष्ठिने महार्घं निर्व० स्वाहा।

त्रैलोक्येश्वरवंदनीयचरणाः प्रापुः श्रियं शाश्वतीं ।।
यानाराध्य निरुद्ध चंडमनसः संतोऽपि तीर्थकराः ॥

सत्सम्यक्त्वविबोधवीर्यविशदाऽव्याबाधताद्यैर्गुणैर्-
युक्तांस्तानिह तोष्टवीमि सततं सिद्धान् विशुद्धोदयान् ॥

(पुष्पांजलि)

अथ जयमाला ।

विराग सनातन शांत निरंश, निरामय निर्भय निर्मल हंस।
सुधाम विबोधनिधान विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥१॥
विदूरितसंसृतिभाव निरंग, समामृतपूरित देव विसंग।
अबंधकषाय विहीनविमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥ २ ॥
निवारितदुष्कृतकर्मविपास, सदामल केवलकेलिनिवास ।
भवोदधिपारक शान्त विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥ ३ ॥
अनंतसुखामृतसागर धीर, कलंकरजोमलभूरिसमीर ।
विखंडितकाम विराम विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥४॥
विकारविवर्जित तर्जितशोक, विबोधसुनेत्रविलोकितलोक ।
विहार विराव विरंग विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥५॥
रजोमलखेदविमुक्त विगात्र, निरंतर नित्य सुखामृतपात्र ।
सुदर्शनराजित नाथ विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥६॥
नरामरवंदित नर्मल भाव, अनंत मुनीश्वरपूज्य विहाव ।
सदोदय विश्वमहेश विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध समूह ॥ ७ ॥
विदंभ वितृष्ण विदोष विनिद्र, परापरशंकरसार वितंद्र ।
विकोप विरूप विशंक विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥ ८ ॥
जरामरणोज्झित वीतविहार, विचिंतित निर्मल निरहंकार ।
अचिंत्यचरित्र विदर्प विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥ ९ ॥
विवर्ण विगंध विमान विलोभ, विमाय विकाय विशब्द विशोभ ।
अनाकुल केवल सर्व विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥ १० ॥

घत्ता—

असमसमयसार चारुचैतन्यचिह्नं, परपरणतिमुक्तं पद्मनंदींद्रवंद्यं।
निखिलगुणनिकेतं सिद्धचक्रं विशुद्धं, स्मरति नमति यो वा स्तौति
सोऽभ्येति मुक्तिम्॥ ११॥

ओं ह्रीं सिद्धपरमेष्टिभ्यो महार्घं निर्वपामिति स्वाहा।

अथाशीर्वाद —अडिल्लछंद।

अविनाशी अविकार परमसधाम हो,
समाधान सर्वज्ञ सहज अभिराम हो।
शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध अनादि अनन्त हो,
जगत शिरोमणि सिद्ध सदा जयवंतहो॥ १ ॥
ध्यान अगनिकर कर्म कलंक सबै दहे,
नित्य निरंजनदेव सरूपी ह्वै रहे।
ज्ञायक के आकार ममत्वनिवारिकै,
सो परमातम सिद्ध नमौ सिर नायकैं॥ २॥

दोहा:—अविचलज्ञानप्रकाशतैं, गुण अनंत की खान।
ध्यान धरै सो पाइये, परम सिद्ध भगवान॥

सिद्ध पूजा का भावाष्टक भाषा

मोहि तृषा दुख देत, सो तुमने जीती प्रभू।
जल से पूजूं मैं तोय, मेरो रोग निवारियो॥ जलं॥
हम भव आतप मांहिं, तुम न्यारे संसार से।
कीज्यो शीतल छांह, चन्दनसे पूजा करूं॥चन्दन॥
हम अवगुन समुदाय, तुम अक्षय गुण के भरे।

पूजूं अक्षत ल्याय, दोष नाश गुण कीजिये ॥अक्षतं॥
काम अग्नि है मोहि, निश्चय शील स्वभाव तुम ।
फूल चढ़ाऊँ मैं तोय,. मेरो रोग निवारियो ॥ पुष्पं ॥
मोहि क्षुधा दुख भूर, ध्यान खड्ग करि तुम हती ।
मेरी बाधा चूर, नेवजसे पूजा करूं ॥ नैवेद्यं ॥
मोहतिमिर हम पास, तुमपै चेतन ज्योति है ।
पूजों दीप प्रकाश, मेरो तम निरवारियो ॥ धूपं ॥
अष्टकर्म बन जाल, मुक्ति माहिं स्वामी सुख करो ।
खेऊँ धूप रसाल, अष्ट कर्म निरवारियो ॥ धूपं ॥
अन्तराय दुख टाल, तुम अनन्त थिरता लही ।
पूजूं फल दरशाय, विघन टाल शिव फल करो ॥फलं॥
हममें आठों दोष, जजहु अर्घ ले सिद्धजी ।
दीज्यो वसु गुण मोय, कर जोड्यां 'द्यानत' खडो ॥ अर्घं ॥

सिद्ध चक्र पूजा ।

अडिल्ल छंद ।

अष्टकरमकरि नष्ट अष्ट गुण पायकैं ।
अष्टमवसुधा माहिं विराजे जायकैं ।
ऐसे सिद्ध अनन्त महन्त मनायकैं ।
संवौषट् आह्वान करूं हरषायकैं ॥
ओं ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिन् । अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ओं ह्रीं सिद्धपरमेष्टिन् । अत्रतिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ओं ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिन् । अत्र ममसन्निहितो भव भव । वषट्

छंद त्रिभंगी

हिमवनगतगंगा आदि अभंगा, तीर्थ उतंगा सरवंगा।
आनिय सुरसंगा सलिल सुरंगा, करिमनचंगा भरि भृंगा॥
त्रिभुवनके स्वामी त्रिभुवनामी, अन्तरजामी अभिरामी।
शिवपुरविश्रामी निजनिधि पामी, सिद्धजजामी सिरनामी॥

ओं ह्रीं श्री अनाहतपराक्रमाय सर्वकर्मविनिर्मुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

हरिचन्दन लायो कपूर मिलायो, बहु महकायो मनभायो।
जलसंग घसायो रंगसुहायो, चरन चढायो हरषायो। त्रि.।२।

ओं ह्रीं श्री अनाहतपराक्रमाय सर्वकर्मविनिर्मुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

तंदुल उजियारे शशिदुतिहारे, कोमल प्यारे अनियारे।
तुषखंडनिकारे जलसुपखारे, पुंज तुम्हारे ढिगधारे। त्रि ॥३॥

ओं ह्रीं श्री अनाहतपराक्रमाय सर्वकर्मविनिर्मुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

सुरतरु की बारी, प्रीतिविहारी, किरिया प्यारी गुलजारी।
भरि कन्चन थारी फूलसँवारी, तुम पदढारी अतिसारी।त्रि०॥४॥

ओं ह्रीं श्री अनाहतपराक्रमाय सर्वकर्मविनिर्मुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

पकवान निवाजे, स्वाद विराजे, अमृत लाजे, क्षुत भाजे।
बहु मोदक छाजे, घेवरखाजे, पूजन काजे करिताजे। त्रि० ॥५॥

ओं ह्रीं श्री अनाहतपराक्रमाय सर्वकर्मविनिर्मुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

आपापरभासै ज्ञान प्रकाशै, चित्तविकासै तम नासै ।
ऐसे विध खासे दीप उजासे, धरि तुम पासे उल्लासे ।त्रि. ॥६॥

ओं ह्रीं श्री अनाहतपराक्रमाय सर्वकर्मविनिर्मुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

चुम्बक अलिमाला गन्धविशाला, चन्दनकाला गुरु वाला ।
तस चूर्ण रसाला करि ततकाला अग्निज्वाला में डाला । त्रि. ।७।

ओं ह्रीं श्री अनाहतपराक्रमाय सर्वकर्मविनिर्मुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

श्रीफल अतिभारा, पिस्ता प्यारा, दाख छुहारा सहकारा ।
ऋतु ऋतुका न्यारा सत्फलसारा, अपरम्पारा लै धारा ।त्रि.।८।

ओं ह्रीं श्री अनाहतपराक्रमाय सर्वकर्मविनिर्मुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जल फल वसुवृन्दा अरघ अमन्दा, जजत अनन्दा के कंदा ।
मेटो भवफन्दा, सब दुखदन्दा, 'हीराचन्दा' तुव बन्दा ।त्रि. ।९।

ओं ह्रीं अनाहतपराक्रमाय सर्वकर्मविनिर्मुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

अथ जयमाला

दोहा:—ध्यानदहनविधिदारुदहि, पायो पद निरवान ।
पंचभावजुतथिर थये, नमों सिद्ध भगवान ॥

—त्रोटकछंद:—

सुख सम्यक्‌दर्शन ज्ञान लहा, अगुरु-लघु सूक्षमवीर्य महा ।
अवगाह अबाध अघायक हो, सब सिद्ध नमों सुखदायक हो ॥ २ ॥

असुरेन्द्र सुरेन्द्र नरेन्द्रजजै, भुवनेन्द्र खगेन्द्र गणेन्द्र भजै।
जर जामनमरण मिटायक हो, सब० ॥ ३ ॥
अमलं अचलं अकलं अकुलं, अछलं असलं अरलं अतुलं।
अरलं सरलं शिवनायक हो, सब० ॥ ४ ॥
अजरं अमरं अधरं सुधरं, अडरं अहरं अमरं अधरं।
अपरं असरं सब लायक हो, सब० ॥ ५ ॥
वृषवृंद अमंद न निंद लहैं, निरदंद अफंद सुछंद रहैं।
नित आनंदवृंद विधायक हो, सब० ॥ ६ ॥
भगवंत सुसंत अनंत गुणी, जयवंत महंत नमंत मुनि।
जगजंतु तणे अघघायक हो, सब० ॥ ७ ॥
अकलंक अटंक शुभंकर हो, निर डन्क निशंक शिवंकर हो।
अभयंकर शंकर त्तायक हो, सब० ॥ ८ ॥
अतरंग अरंग असंग सदा, भवभंग अभंग उतंग सदा।
सरवंग अनंग नसायक हो, सब० ॥ ९ ॥
ब्रह्मण्ड जु मन्डलमन्डन हो, तिहुँदंडप्रचन्ड विहन्डन हो।
चिद पिंड अखण्ड अकायक हो, सब०॥१०॥
निरभोग सुभोग वियोग हरे, निरजोग अरोग अशोग धरे।
भ्रमभंजन तीक्षण सायक हो, सब० ॥११॥
जय लक्ष्य अलक्ष्य सुलक्ष्यक हो, जय दक्षक पक्षक रक्षकहो।
पण अक्ष प्रत्यक्ष खपायक हो, सब० ॥१२॥
निरभेद अखेद अछेद सही, निरवेद अवेदन वेद नहीं।
सबलोक अलोकहि ज्ञायक हो, सब० ॥१३॥
अमलीन अदीन अरीन हने, निजलीन अधीन अछीन बने।
जमको घनघात बचायक हो, सब० ॥१४॥

न अहार निहार विहार कबै, अविकार अपार उदार सबै ।
जगजीवन के मन भायक हो, सब० ॥१५॥

अप्रमाद अनाद सुस्वादरता, उनमाद विवाद विषादहता ।
समता रमता अकषायक हो, सब० ॥ १६ ॥

असमंध अधंद अरन्ध भये, निरबन्ध अखन्ध अगन्ध ठये ।
अमनं अतनं निरवायक हो, सब० ॥१७॥

निरवर्ण अकर्ण उधर्ण बली, दुखहर्ण अशर्ण सुकर्ण भली ।
बलि मोहकी फौज भगायकहो सब० ॥ १८ ॥

अविरुद्ध अक्रुद्ध अजुद्ध प्रभू, अति शुद्ध प्रबुद्ध समृद्ध विभू ।
परमातम पूरन पायक हो, सब० ॥१६॥

विरूप चिद्रूप स्वरूप द्युती, जसकूप अनूपम भूप भुती ।
कृतकृत्य जगत्त्रयनायकहो० सब ॥ २० ॥

सब इष्ट अभीष्ट विशिष्ट हितू, उतकिष्ट वरिष्ट गरिष्ट मितू ।
शिवतिष्ठत सर्व सहायक हो, सब० ॥२१॥

जय श्रीधर श्रीधर श्रीवर हो, जय श्रीकर श्रीभर श्रीभर हो ।
जय रिद्ध सुसिद्धि-बडायक हो, सब० ॥२२॥

दोहा:—सिद्धसुगुण को कहि सकै, ज्यों विलस्त नभ मान ।
'हिराचन्द' तातै जजै, करहु सकल कल्यान ॥२३॥

ओं ह्रीं श्रीअनाहतपराक्रमाय सकलकर्मविनिर्मुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये अनर्घ्यपदप्राप्ताय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा ।

(यहां पर विसर्जन भी करना चाहिये)

अडिल्ल—सिद्ध जजैं तिनको नहिं आवै आपदा ।
पुत्र पौत्र धन धान्य लहै सुख सम्पदा ॥
इन्द्र चन्द्र धरणेंद्र नरेन्द्र जु होयकैं ।

जावें मुक्तिमझार करम सब खोयकैं ॥२४॥

(इत्याशीर्वादाय पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

सोलह कारण का अर्घ

जल फल आठों द्रव्य चढाय' द्यानत वरद करों मन लाय ॥
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ॥
दरश विशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर पद पाय।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ॥१॥

ओं ह्रीं दर्शनविशुद्धि, विनयसम्पन्नता, शीलव्रतेष्वनतीचार, अभीक्ष्णज्ञानोपयोग, संवेग, शक्तितस्त्याग, शक्तितस्तप, साधुसमाधि वैयावृत्यकरण, अर्हद्भक्ति, आचार्यभक्ति, बहुश्रुतभक्ति, प्रवचनभक्ति, आवश्यकापरिहाणि, मार्गप्रभावना, प्रवचन वात्सल्य षोडश कारणेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

पंच मेरु का अर्घ

आठ दरवमय अर्घबनाय, द्यानत पूजौं श्री जिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥
पांचों मेरु असी जिन धाम, सबप्रतिमा को करों प्रणाम।
महा सुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥ २ ॥

ओं ह्रीं पंचमेरु संबंधी अस्सी जिन चैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

नंदीश्वर द्वीपका अर्घ

यह अर्घ कियो निज हेत तुमको अरपत हों।
'द्यानत' कीनो शिव हेत भूमि समरपतु हों ॥
नंदीश्वर श्रीजिनधाम बावन पुंज करों।
वसुदिन प्रतिमा अभिराम आनंदभाव धरों ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं नंदीश्वर द्वीपे पूर्व पश्चिमोत्तरदक्षिणे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमाभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति०

दशलक्षण धर्म का अर्घ

आठों द्रव्य संवार, 'द्यानत' अधिक उछाह सों ।
भवाताप निवार, दशलक्षण पूजौं सदा ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग आकिंचन, ब्रह्मचर्य दशलक्षणधर्मेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रत्नत्रय का अर्घ

आठ द्रव्य निरधार, उत्तम सों उत्तम लिये ।
जन्म रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भजों ॥५॥

ओं ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शनाय, अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय, त्रयोदश प्रकार सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

समुच्चय चौबीसी पूजा

वृषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिनराय ।
चन्द पुहुप शीतल श्रेयांस नमि, वासुपूज्य पूजितसुरराय ॥
विमल अनन्त धर्मजस उज्ज्वल, शान्तिकुंथु अर मल्लिमनाय ।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्वप्रभु, वर्द्धमान पद पुष्प चढाय ॥१॥

ओं ह्रीं श्रीवृषभादिमहावीरांतचतुर्विंशतिजिनसमूह ! अत्र अवतर अवतर, संवौषट् आह्वाननं ।

ओं ह्रीं श्री वृषभादिमहावीरांतचतुर्विंशतिजिनसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।

ओं ह्रीं श्रीवृषभादिमहावीरांतचतुर्विंशतिजिनसमूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्, सन्निधिकरणम् ।

मुनिमन सम उज्ज्वलनीर, प्रासुक गंध भरा ।
भरि कनक कटोरी धीर दीनी धार धरा ॥
चौबीसों श्रीजिनचंद, आनंदकंद सही ।
पद जजत हरत भवफंद, पावत मोक्षमही ॥२॥

ओं ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यो जन्ममृत्युविनाशनाय जलं०

गोशीर कपूर मिलाय, केशर रंगभरी ।
जिनचरनन देत चढाय, भवआताप हरी ॥ चौबीसों चंद० ॥
तंदुल सित सोमसमान, सुन्दर अनियारे
मुक्ता फलकी उनमान, पुंज धरों प्यारे ॥ चौ० अक्ष० ॥
वरकंज कदंब कुरंड, सुमन सुगंध भरे ।
जिन अग्रधरों गुनमंड, कामकलंक हरे ॥ चौ० पुष्प० ॥
मनमोहनमोदक आदि, सुन्दर सद्य बने ।
रसपूरित प्रासुक स्वाद, जजत क्षुधादि हने चौ० नैवे०॥
तमखंडन दीप जगाय, धारों तुम आगे ।
सब तिमिर मोहक्षयजाय, ज्ञानकला जागे ॥ चौ० दीपं ॥
दशगंध हुताशनमांहि, हे प्रभू खेवत हों ।
मिस धूमकरम जरिजाहिं, तुमपद सेवत हों ॥ चौ० धूपं ॥
शुचि पक्व सुरस फल सार, सब ऋतु के ल्यायो ।
देखत दृगमनको प्यार, पूजत सुख पायो ॥ चौ० फलं ॥
जलफल आठों शुचिसार, ताको अर्घ करों ।
तुम को अरपों भवतार, भवतरि मोक्ष वरों ॥ चौ० अर्घ्यं॥

जयमाला ।

दोहा:—श्रीमत तीरथनाथपद, माथ नाय हित हेत ।
गाऊं गुणमाला अबै, अजर अमरपद हेत ॥ १ ॥

घत्ता—

जय भवतपभंजन जनमनकंजन, रंजन दिनमनि स्वच्छ करा।
शिवमगपरकाशक अरिगन नाशक, चौबीसों जिनराज वरा॥

पद्धरि छन्द

जय ऋषभदेव ऋषिगन नमंत, जय अजित जीत वसुअरि तुरंत।
जय संभव भवभय करत चूर, जय अभिनंदन आनंदपूर॥ ३॥
जय सुमति सुमतिदायक दयाल, जय पद्म पद्मदुतितनरसाल।
जय जय सुपास भवपासनाश, जय चंद चंद तनदुतिप्रकाश॥ ४॥
जय पुष्पदंत दुतिदंत सेत, जय शीतल शीतलगुन निकेत।
जय श्रेयनाथ नुतसहसभुज्ज, जय वासवपूजित वासुपुज्ज॥ ५॥
जय विमल विमलपददेनहार, जय जय अनंत गुनगन अपार॥
जध धर्म धर्म शिवशर्म देत, जय शांति शांति पुष्टी करेत॥ ६॥
जय कुंथ कुंथवादिक रखेय, जय अर जिन वसु अरि चय करेय॥
जम मल्लि मल्ल हत मोहमल्ल, जय मुनिसुव्रत व्रतशल्ल दल्ल॥ ७॥
जय नमि नित वासवनुत सपेम, जय नेयनाथ वृषचक्र नेम॥
जय पारसनाथ अनाथनाथ, जय वर्द्धमान शिवनगर साथ॥ ८॥

चौवीस जिनंदा, आनंदकंदा पापनिकंदा, सुखकारी।
तिनपदजुगचंदा, उदय अमंदा वासव वंदा, हित धारि॥९॥

ओं ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतिजिनेभ्यो महार्घं निर्व० स्वाहा॥

सोरठा—मुक्ति मुक्ति दातार, चौवीसों जिनराज वर।
तिनपद मनवचधार, जो पूजै सो शिव लहै॥

(इत्याशीर्वादः। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

नोटः—इनपूजाओं को करलेने के पश्चात् वेदी में विराजमान मूलनायक भगवान तथा महावीर भगवान की पूजा करना चाहिये।

व्रतों का अर्घ

उदकचंदनतंदुल पुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः ।
धवलमंगलगानरवाकुले जिन गृहे जिनव्रतमहं यजे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनभावितव्रतेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति ॥ १ ॥

समुच्चय अर्घ

प्रभुजी अष्ट द्रव्यजु ल्यायो भावसों,
प्रभू थां का हरष २ गुण गाऊं महाराज ।
यो मन हरख्यो प्रभू थांकी पूजा जी रे कारणे,
प्रभूजी थाकी तो पूजा भवि जन नित करै,
ताका अशुभ कर्म कटजाय महाराज । यो मन० ॥ १ ॥
प्रभूजी थांकी तो पूजा भवि जीव जो करै,
सो तो सुरग मुकतिपद पावै महाराज । यो मन० ॥ २ ॥
प्रभूजी इन्द्र धरणेंद्रजी सब मिलि गाय,
प्रभू का गुणांको पार न पायो महाराज । यो मन० ॥ ३ ॥
प्रभूजी थे छो जी अनन्ताजी गुणवान,
थांने तो सुमरयां सकट परिहरै महाराज । यो मन० ॥ ४ ॥
प्रभूजी थे छोजी साहिब तीनों लोकका ।
जिनराज मैं छूं जी निपट अज्ञानी महाराज । यो मन० ॥५॥
प्रभूजी थां का तो रूपजो निरखन कारणे ।
सुरपति रचिया छै नयन हजार महाराज ! यो मन० ॥६॥
प्रभूजी नरक निगोद में भव भव में रुल्यो ।
जिनराज सहिया छै दुःख अपार महाराज । यो मन० ॥७॥
प्रभूजी अब तो शरणोजी थारो मैं लियो ।
किस विध कर पार लगावो महाराज । यो मन० ॥ ८ ॥

प्रभूजी म्हारो तो मनडो थामेंजी घुल रह्यो ।.

ज्यों चकरी विच रेशमकी डोरी महाराज। यो मन० ॥ ६ ॥

प्रभूजी तीन लोक में है जिन विम्ब ।

कृत्रिम अकृत्रिम चैत्यालय पूजस्यां महाराज । यो मन० ॥१०॥

प्रभूजी जल चंदन अक्षत पुष्प नैवेद ।

दीप धूप फल अर्घ चढ़ाऊं महाराज ।

जिनचैत्यालय महाराज, सब चैत्यालय जिनराज । यो मन० ॥११॥

प्रभूजी अष्ट द्रव्य जु ल्यायो बनाय ।

पूजा रचाऊं श्रीभगवानकी महाराज। यो मन० ॥ १२ ॥

ॐ ह्रीं भावपूजा भावबंदना त्रिकालपूजा त्रिकालवंदना करै करावै भावना भावै श्री अरहंतजी सिद्धजी आचार्यजी उपाध्यायजी सर्वसाधुजी पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः प्रथमानुयोगकरणानुयोगचरणानुयोगद्रव्यानुयोगेभ्यो नमः दर्शनविशुद्धयादिषोडश कारणेभ्यो नमः, उत्तमक्षमादि दशलाक्षणिकधर्मेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान सम्यक् चारित्रेभ्यो नमः जल के विषै थलके विषै आकाश के विषै गुफा के विषै पहाड के विषै नगर नगरी विषै ऊर्ध्वलोक मध्यलोक पाताललोक विषै विराजमान. कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यालय जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्रे विद्यमान बीस तीर्थङ्करेभ्यो नमः। पांच भरत पांचऐरावत दशक्षेत्र सम्बन्धी तीस चौबीसी के सातसौ बीस जिनालयेभ्यो नमः नंदीश्वर द्वीप सम्बन्धी बावन जिन चैत्यालयेभ्यो नमः पंचमेरु सम्बन्धी अस्सी जिन चैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर कैलाश चंपापुर पावापुर गिरनार आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री मूलबद्री राजगृही शत्रुंजय तारंगा चमत्कार महावीर स्वामी पद्मपुरी आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारण ऋद्धिधारी सप्त परमर्षिभ्यो नमः।

ओं ह्रीं श्रीमंतं भगवन्तं कृपालसन्तं श्रीवृषभादि महावीर पर्यन्त चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बू द्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे .... नाम्नि नगरे मासानामुत्तमे मासे .... मासे शुभे पक्षे शुभ तिथौ वासरे मुनि आर्यिकानां श्रावक श्राविकानां क्षुल्लक क्षुल्लिकानां सकल कर्म क्षयार्थं (जलधारा) अनर्घपद प्राप्तये महार्घं सम्पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

भाव पूजा वंदनास्तव समेतं श्रीपंचमहागुरु भक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

यहां पर कायोत्सर्ग पूर्वक नौ बार णमोकार मंत्र जपना चाहिये।

शांतिपाठ भाषा

शांतिपाठ बोलते समय पुष्प क्षेपण करते रहना चाहिये।

चौपाई १६ मात्रा

शांतिनाथ मुख शशि उनहारि, शीलगुणव्रतसंयमधारी।
लखन एक सौ आठ विराजै, निरखत नयन कमलदल लाजैं॥ १॥
पंचम चक्रवर्ति पदधारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी।
इन्द्र नरेन्द्र पूज्य जिन नायक, नमो शांतिहित शांति विधायक
दिव्य विटप पुहुपन की वरषा, दुन्दुभि आसन वाणी सरसा।
छत्र चमर भामण्डल भारी, ये तुव प्रातिहार्य मनहारि॥३॥
शांति जिनेश शांति सुखदाई, जगतपूज्य पूजौं शिरनांई।
परमशांति दीजै हम सबको, पढ़ैं तिन्हें पुनि चार संघको॥४॥

बसन्ततिलका

पूजैं जिन्हें मुकुट हार किरीट लाके।
इन्द्रादि देव अरु पूज्य पदाब्ज जाके॥

सो शांतिनाथ वरवंश जगत्प्रदीप।
मेरे लिये करहिं शांति सदा अनूप ॥५॥

इन्द्रवज्रा

संपूजकों को प्रतिपालकों को, यतीनको औ यतिनायकों को।
राजाप्रजा राष्ट्र सुदेश को ले, कीजै सुखी हे जिन शांति को दे ॥६॥

स्रग्धरा छन्द

होवै सारी प्रजा को सुख वलयुत हो धर्म धारी नरेशा।
होवे वर्षा समै पै तिलभर न रहे व्याधियों का अन्देशा।
होवै चोरी न जारी सुसमय वरतै हो न दुष्काल भारी।
सारे ही देश धारैं जिनवर वृषको जो सदा सौख्यकारी ॥७॥

दोहा—घातिकर्म जिन नाश करि, पायो केवलराज।
शान्ति करो सब जगतमें, वृषभादिक जिनराज ॥

मन्दाक्रान्ता

शास्त्रोंका हो पठन सुखदा लाभ सत्संगतीका।
सद्वृत्तों का सुजस कहके, दोष ढांकूं सभीका।
बोलूं प्यारे वचन हित के, आपका रूप ध्याऊं।
तौलौं सेऊं चरण जिनके मोक्ष जौलौं न पाऊं ॥

आर्य्या

तव पद मेरे हियमें, मम हिय तेरे पुनीत चरणों में।
तबलौ लीन रहौं प्रभु, जबलौं पाया न मुक्ति पद मैंने ॥१०॥
अक्षर पद मात्रा से, दूषित जो कुछ कहा गया मुझ से।
क्षमा करो प्रभु सो सब, करुणा करि पुनि छुडाहु भवदुखसे ॥११॥
हेजगवन्धु जिनेश्वर, पाऊं तव चरण शरण बलिहारि।
मरण समाधि सुदुर्लभ, कर्मोंका क्षय सुबोध सुखकारी ॥१२॥

(परिपुष्पांजलि क्षेपण)

यहां पर नौ बार णमोकार मंत्र जपना चाहिये।

भजन

नाथ ! तेरी पूजा को फल पायो, मेरे यों निश्चय अब आयो ।।टेक।।
मेंढक कमल पांखड़ी मुख में, वीर जिनेश्वर धायो ।
श्रेणिक गज के पगतल मूवो, तुरत स्वर्गपद पायो ।। नाथ ।। १ ।।
मैनासुन्दरी शुभमन सेती, सिद्धचक्र गुणगायो ।
अपने पति को कोढ़ गमायो, गंधोदक फल पायो ।। नाथ ।। २ ।।
अष्टापद में भरत नरेश्वर, आदिनाथ मन लायो ।
अष्टद्रव्य से पूज्या प्रभूजी, अवधि ज्ञान दरशायो ।। नाथ ।। ३ ।।
अन्जन से सब पापी तारे, मेरो मन हुलसायो ।
महिमा मोटी नाथ तुम्हारी, मुक्तिपुरी सुखपायो ।। नाथ ।। ४ ।।
थकी थकी हारे सुर नर पति, आगम सीख जितायो ।
देवेंद्र कीर्ति गुरु ज्ञान मनोहर, पूजा ज्ञान बतायो ।। नाथ ।। ५ ।।

भाषा स्तुति ।

तुम तरणतारण भवनिवारण, भविकमन आनन्दनो ।
श्री नाभिनन्दन जगतवंदन, आदिनाथ निरंजनो ।। १ ।।
तुम आदिनाथ अनादि सेऊं सेय पदपूजा करूं ।
कैलाश गिरिपर ऋषभजिनवर, पदकमल हिरदै धरूं ।। २ ।।
तुम अजितनाथ अजीत जीते, अष्टकर्म महाबली ।
यह विरद सुनकर शरण आयो, कृपा कीज्यो नाथजी ।। ३ ।।
तुम चन्द्रवदन सु चंद्रलच्छन चंद्रपुरि परमेश्वरो ।
महासेननन्दन, जगतवंदन चंद्रनाथ जिनेश्वरो ।। ४ ।।
तुम शांति पांचकल्याण पूजों, शुद्धमनवचकाय जू ।
दुर्भिक्ष चोरी पापनाशन, विघन जाय पालय जू ।। ५ ।।
तुम बालब्रह्म विवेकसागर, भव्यकमल विकाशनो ।
श्रीनेमिनाथ पवित्र दिनकर, पापतिमिर विनाशनो ।। ६ ।।

जिन तजी राजुल राजकन्या कामसेन्या वश करी ।
चारित्र रथ चढ़ि भये दुलह, जाय शिवरमणी वरी ॥ ७ ॥

कंदर्प दर्प सुसर्पलच्छन, कमठ शठ निर्मल कियो ।
अश्वसेननंदन जगतवंदन सकलसंघ मंगल कियो ॥ ८ ॥

जिनधरी बालकपणे दीक्षा, कमठ मान विदारकै ।
श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्रके पद, मैं नमों शिरधारकैं ॥ ९ ॥

तुम कर्मघाता मोक्षदाता, दीन जानि दया करो ।
सिद्धार्थनंदन जगतवंदन, महावीर जिनेश्वरो ॥ १० ॥
छत्र तीन सोहैं सुरनर मोहैं, वीनती अब धारिये ।
करजोडि सेवक वीनवैं प्रभु आवागमन निवारिये ॥ ११ ॥
अब होउ भव भव स्वामी मेरे, मैं सदा सेवक रहों ।
करजोड यो वरदान मांगूं, मोक्षफल जावत लहों ॥ १२ ॥
जो एक मांही एक राजै एक मांहि अनेकनो ।
इक अनेककी नहीं संख्या नमूं सिद्ध निरंजनो ॥ १३ ॥
चौ०–मैं तुम चरण कमल गुणगाय, बहुविधि भक्तिकरौं मनलाय ।
जनम जनम प्रभु पाऊं तोहि, यह सेवाफल दीजे मोहि ॥ १४ ॥
कृपा तिहारी ऐसी होय, जामन मरन मिटावो मोय ।
बार बार मैं विनती करूं, तुम सेयां भवसागर तरूं ॥ १५ ॥
नाम लेत सब दुःख मिटजाय, तुम दर्शन देख्यो प्रभु आय ।
तुम हो प्रभु देवन के देव, मैं तो करूं चरण तव सेव ॥ १६ ॥
जिन पूजा तैं सब सुख होय, जिन पूजा सम अवर न कोय ।
जिन पूजा तै स्वर्ग विमान, अनुक्रम तैं पावैं निर्वाण ॥ १७ ॥
मैं आयो पूजन के काज, मेरो जनम सफल भयो आज ।
पूजा करके नवाऊं शीश, मुझ अपराध क्षमहु जगदीश ॥ १८ ॥
दोहा:–सुख देना दुख मेटना, यही तुम्हारी बान
मो गरीब की वीनती, सुन लीज्यो भगवान ॥१९॥

पूजन करतं देवकी, आदि मध्य अवसान ।
सुरगन के सुख भोगकर, पावै मोक्ष निदान ॥२०॥
जैसी महिमा तुमविषै, और धरै नहीं कोय ।
जो सूरज में ज्योति है, नहिं तारागण सोय ॥२१॥
नाथ तिहारे नामतैं, अघ छिनमांहि पलाय ।
ज्यों दिनकर परकाशतैं, अंधकार विनशाय ॥२२॥
बहुत प्रशंसा क्या करूं मैं प्रभु बहुत अजान ।
पूजाविधि जानूं नहीं, शरण राखि भगवान ॥२३॥

इति भाषास्तुति ।

विसर्जन

दोहा:-बिन जाने वा जानके रही टूट जो कोय ।
तुव प्रसाद तें परमगुरु, सो सब पूरन होय ॥१॥
पूजनविधि जानौं नहीं, नहिं जानौं आह्वान ।
और विसर्जन हूं नहीं, क्षमा करो भगवान ॥२॥
मंत्रहीन धनहीन हूं, क्रियाहीन जिनदेव ।
क्षमा करहु राखहु मुझे, देहु चरण की सेव ॥ ३ ॥
आये जो जो देवगन, पूजे भक्ति प्रमान ।
ते सब जावहु कृपाकर, अपने अपने स्थान ॥ ४ ॥

इत्याशीर्वादः ।

आशिका लेने का मन्त्र

दोहा:—श्री जिनवरकी आशिका, लीजे शीश चढ़ाय ।
भव भवके पातक कटे, दुःख दूर हो जाय ॥ १ ॥

सिद्ध पूजा भाषा

(द्यानतराय विरचित)

परम ब्रह्म परमात्मा, परम ज्योति परमीश ।
परम निरंजन परम शिव, नमों सिद्ध जगदीश ॥१

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ॥

निरस्त कर्म सम्बन्धं सूक्ष्मं नित्यं निरामयम् ।
वन्देऽहं परमात्मानममूर्त्तीमनुपद्रवम् ॥ ॥ यंत्र स्थापनं ॥

अथाष्टकं

सोरठा—मोहि तृषा दुःख देहि, सो तुमने जीती प्रभू ।
जलसों पूजों नेह, मेरो रोग मिटाइयो ॥१

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्ध परमेष्ठिभ्यो सम्यक्त्व, ज्ञान, दर्शन, वीर्य, सुमत्त, अवगाहण, अगुरुलघु, अव्यावाधाय जन्मजरामृत्युविनाशाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

हम भव आतप माहिं, तुम न्यारे संसार तैं ।
कीजै शीतल छाँहि, चन्दन सों पूजा करों ॥चंदनं॥२॥
हम औगुण समुदाय, तुम अक्षत सब गुण भरे ।
पूजों अक्षत लाय, दोष नाश गुण कीजिये ॥अक्षतं ॥३॥
काम अगिन है मोह, निश्चय शील स्वभाव तुम ।
फूल चढ़ाऊं तोय, सेवक की पावक हरो ॥पुष्पं ॥४॥
हमें क्षुधा दुख भूरि, ज्ञान खड़ग सों तुम हती ।
मेरी बाधा चूरि नेवज सों पूजा करों ॥ नेवैद्यं ॥५॥
मोहि तिमिर हम पास, तुप पर चेतन ज्योति है ।
पूजूं दीप प्रकाश, मेरो तम निर्वारिये ॥ दीपं ॥६॥

दोहा—अविचल ज्ञान प्रकाशतें, गुण अनन्त की खान ।
ध्यान धरै सो पाइये, परम सिद्ध भगवान ॥३

इत्याशीर्वाद:

निर्वाणक्षेत्र पूजा

सोरठा—

परम पूज्य चौबीस, जिहँ जिहँ थानक शिव गये ।
सिद्धभूमि निशदीस, मनवचतन पूजा करौं ॥१॥

ओं ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थङ्कर निर्वाणक्षेत्राणि ! अत्र अवतर अवतर, संवौषट् आह्वाननं ।

ओं ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थकर निर्वाण क्षेत्राणि ! अत्र तिष्ठत तिष्ठत, ठः ठः स्थापनं ।

ओं ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थरनिर्वाणक्षेत्राणि ! अत्र मम सन्निहितानि भवत भवत वषट् सन्निधिकरणं ।

गीता छन्द

शुचि क्षीरदधि सम नीर निरमल, कनकझारी में भरों ।
संसार पार उतार स्वामी, जोरकर विनती करौं ॥
सम्मेदगिर गिरनार चंपा, पावापुरि कैलासकों ।
पूजों सदा चौबीसजिन निर्वाण भूमि निवासकों ॥१॥

ओं ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो जलं निर्व. स्वाहा

केशर कपूर सुगंध चंदन सलिल शीतल विस्तरौं ।
भवताप को संताप मेटो, जोरकर विनती करौं । सम्मेद.॥२॥

ओं ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थङ्करनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो चंदनं नि०.।२॥

मोती समान अखंड तंदुल, अमल आनन्दधरि तरौं । औगुन

हरौ गुन करौ हमको, जोरकर विनती करौं ॥ सम्मेद. ॥३॥

ओं ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थङ्करनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो अक्षतान् नि. ॥३॥

शुभ फूलरास सुवासवासित, खेद सब मन की हरौं।
दुखधामकामविनाश मेरो जोरकर विनती करौं ॥सम्मेद॥४॥

ओं ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो पुष्पं नि. ॥४॥

नेवज अनेक प्रकार जोग, मनोग धरि भय परिहरौं।
यह भूखदूखन टार प्रभुजी, जोरकर विनती करौं ॥सम्मेद॥५॥

ओं ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो नैवेद्यं नि.॥५॥

दीपक प्रकाश उजास उज्ज्वल, तिमिरसेती नहिं डरौं।
संशयविमोहविभ्रम तमहर, जोरकर विनती करौं॥ सम्मेद॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो दीपं नि० ॥ ६ ॥

शुभधूप परम अनूप पावन, भावपावन आचरौं। सब
करमपुंज जलाय दीज्यौ, जोरकर विनती करौं ॥सम्मेद०॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो धूपं नि० ॥ ७ ॥

बहुफल मँगाय चढाय उत्तम, चारगतिसौं निरवरौं।
निहचै मुकति फल देहुमोकौं जोरकर विनती करौं ॥स०॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाण क्षेत्रेभ्यो फलं नि० ॥ ८ ॥

जल गंध अक्षत पुष्प चरुफल, दीप धूपायन धरौं। 'द्यानत'
करो निरभय जगतसौं जोर कर विनती करौं ॥ स. ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं नि० ॥ ९ ॥

अथ जयमाला।

श्री चौबीसजिनेश, गिरिकैलाशादिक नमौं।
तीरथ महाप्रदेश, महापुरुष निरवाणतैं ॥

चौपाई १६ मात्रा ।

नमों ऋषभ कैलासपहारं, नेमिनाथ गिरनार निहारं ।
वासुपूज्य चंपापुर बंदौं, सनमति पावापुर अभिनंदौं ॥ २ ॥
बंदौं अजित अजित पददाता, बंदौं संभव भवदुखघाता ।
बंदौं अभिनंदन गणनायक, बंदौं सुमति सुमति के दायक ॥ ३ ॥
बंदौं पदमसुकति पदमाधर, बंदौं सुपास आशपासाहर ।
बंदौंचंद्रप्रभु प्रभुचंदा, बंदौं सुविधि सुविधिनिधि कंदा ॥ ४ ॥
बंदौं शीतल अघतपशीतल, बंदौ श्रेयांस श्रेयांस महीतल ।
बंदौं विमल विमल उपयोगी, बंदौं अनंत अनंत सुखभोगी ॥ ५ ॥
बंदौं धर्म धर्म–विस्तारा, बंदौं शांति शांतिमनधारा ।
बंदौं कुंथु कुंथु–रखवालं, बंदौं अर अरिहर गुणमालं ॥ ६ ॥
बंदौं मल्लि कामसलचूरन, बंदौं मुनिसुव्रत व्रतपूरन ।
बंदौं नमि जिन निमितसुरासुर, बंदौं पास पास भ्रमजगहर ॥ ७ ॥
बीसों सिद्धभूमि जा ऊपर, शिखर सम्मेद महागिरि भूपर ।
एक बार बंदै जो कोई, ताहि नरकपशुगति नहिं होई ॥ ८ ॥
नरगतिनृप सुरसक्र कहावै, तिहुं जग भोग भोगि शव जावै ।
विघनविनाशक मंगलकारी, गुणविशाल बंदै नरनारी ॥ ९ ॥
घत्ता–जो तीरथ जावै पापमिटावै, ध्यावै गावै भगति करै ।
ताको जस कहिये संपति लहिये, गिरिके गुण को बुध उचरै ।१०
ओं ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थङ्करनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो पूर्णार्घं नि० ॥१०॥

इत्याशीर्वादः ।

सप्तऋषि पूजा

छप्पय

प्रथम नाम श्रीमन्व दुतिय स्वरमन्व ऋषीश्वर ।
तीसर मुनि श्रीनिचय सर्वसुन्दर चौथो वर ॥

पंचम श्रीजयवान विनयलालस षष्ठम भनि।
सप्तम जयमित्राख्य सर्व चारित्रधाम गनि॥
ये सातों चारणऋद्धिधर, करूं तासपदथापना।
मैं पूजूं मनवचकायकरि, जो सुख चाहूं आपना॥

ओं ह्रीं चारण ऋद्धिधर श्रीसप्तऋषीश्वर ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट् सन्निधिकरणम्!

अष्टक-गीता छन्द।

शुभतीर्थउद्भव जल अनूपम मिष्ट शीतल लायकैं।
भवतृषा कंदनिकंदकारण, शुद्ध घट भरवायकैं॥
मन्वादिचारणऋद्धिधारक, मुनिन की पूजा करूं।
ता करें पातिक हरें सारे सकल आनन्द विस्तरूं॥१॥

ओं ह्रीं श्रीमन्व, स्वरमन्व, निचय, सर्वसुन्दर, जयवान, विनय लालस जयमित्र ऋषिभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

श्रीखंड कदलीनंद केशर, मंद मंद घिसायकैं।तसुगंध
प्रसरित दिगदिगंतर, भरकटोरी लायकैं। मन्वादि. ॥२॥

ओं ह्रीं श्रीमन्वादि चारण ऋद्धिधारी सप्तऋषिभ्यो चंदनं नि०

अति धवल अक्षत खंड-वर्जित, मिष्ट राजन भोगके।
कलधौत थारा भरत सुन्दर चुनित शुभ उपयोग के॥म.॥४॥

ओं ह्रीं श्रीमन्वादि चारण ऋषिभ्यो अक्षतान् ०

बहु वर्ण सुवरण सुमन आछे अमल कमल गुलावके।
केतकी चंपा चारु मरुआ, चुने निज कर चावके॥ मन्वादि० ।४।

ओं ह्रीं श्रीमन्वादि चारण ऋद्धिधारी सप्तऋषिभ्यो पुष्पं नि०

पकवान नानाभांति चातुर, रचित शुद्ध नये नये।
सद्‌मिष्टलाडूआदिभरबहु, पुरटके थाग लये। मन्वादि० ॥५॥

ओं ह्रीं श्रीमन्वादि चारण ऋद्धिधारी सप्तऋषिभ्यो नैवेद्यं नि०

कलधौत दीपक जडित नाना. भरित गोघृतसारसों।
अति ज्वलितजगमग ज्योतिजाकी, तिमिरनाशनहारसों।मन्वादि०

ओं ह्रीं श्रीमन्वादि चारण ऋद्धिधारी सप्तऋषिभ्यो दीपं नि०

दिक्‌चक्र गंधित होत जाकर, धूप दश अंगी कही।
सोलाय मनवचकाय-शुद्ध, लगायकर खेऊं सही॥ मन्वादि०

ओं ह्रीं श्रीमन्वादि चारण ऋधिधारी सप्तऋषिभ्यो धूपं नि०

वर दाख खारक अमित प्यारे, मिष्ट चुष्ट चुनायकैं।
द्रावडी दाडिम चारु पुंगी, थाल भर भर लायकैं॥ मन्वादि०

ओं ह्रीं श्रीमन्वादि चारण ऋद्धिधारी सप्तऋषिभ्यो फलं नि०

जलगंधअक्षतपुष्पचरुवर, दीप धूप सु लावना।
फल ललित आठों द्रव्यमिश्रित, अर्घ कीजे पावना। मन्वादि०

ओं ह्रीं श्रीमन्वादि चारण ऋद्धिधारी सप्तऋषिभ्यो अर्घं नि०

अथ जयमाला। छन्द त्रिभंगी।

वंदू ऋषिराजा, धर्मजहाजा, निजपरकाजा, करत भले।
करुणाके धारी, गगन विहारी, दुख अपहारी, भरम दले॥
काटत जमफंदा, भविजन वृंदा, करत अनंदा चरणनमें।
जो पूजै ध्यावैं मंगल गावैं, फेरन आवैं भववन मैं॥ १॥

छन्द पद्धरी।

जय श्रीमनु मुनिराजा महंत, त्रस थावरकी रक्षा करंत।
जय मिथ्यातम नाशक पतंग, करुणारसपूरित अंग अंग॥२॥

जय श्रीस्वरमनु अकलंकरूप, पद सेव करत नित अमर भूप।
जय पंच अक्ष जीते महान, तप तपत देह कंचनसमान ॥ ३ ॥
जय निचय सप्त तत्त्वार्थ भास, तप-रमातनों तन में प्रकाश।
जय विषयरोध संबोध भान, परणतिके नाशन अचल ध्यान ॥
जय जयहि सर्वसुन्दर दयाल, लखि इंद्रजालवत जगत जाल।
जय तृष्णाहारी रमण राम, जिन परणतिमैं पायो विराम ॥ ५ ॥
जय आनंदघन कल्याणरूप, कल्याण करत सबको अनूप।
जय मद नाशन जयवान देव, निरमद विरचित सब करत सेव ॥६॥
जय जयहि विनयलालस अमान, सब शत्रु मित्र जानत समान।
जय कृशितकाय तपके प्रभाव, छवि छटा उडति आनंद दाय ॥७॥
जय मित्र सकल जग के सुमित्र, अनगिनत अधम कीने पवित्र।
जय चंद्रवदन राजीव—नैन, कबहूँ विकथा बोलत न बैन ॥ ८ ॥
जय सातों मुनिवर एकसंग, नित गगन गमन करते अभंग।
जय आये मथुरापुर मँझार, तहं मरी रोग को अति प्रचार ॥ ९ ॥
जय जय तिन चरणनिके प्रशाद, सब मरी देवकृत भई वाद।
जय लोक करै निर्भय समस्त। हम नमत सदा नित जोड़ हस्त ॥१०
जय ग्रीषमऋतु परवत मँझार, नित करत अतापन योगसार।
जय तृषापरीषह करत जेर, कहुं रंच चलत न्हीं मनसुमेर ॥११॥
जय मूल अठाइस गुणनधार, तप उग्र तपत आनंदकार।
जय वर्षाऋतु में वृक्षतीर, तहँ अति शीतल झेलत समीर ॥१२॥
जय शीतकाल चौपट मँझार, कै नदी सरोवर तट विचार।
जय निवसत ध्यानारूढ़ होय, रंचक नहिं मटकत रोम कोय ॥१३
जय मृतकासन वज्रासनीन, गोदूहन इत्यादिक गनीय।
जय आसन नाना भांति धार, उपसर्ग सहत ममता निवार ॥१४॥
जय जपत तिहारो नाम कोय, लख पुत्र पौत्र कुलवृद्धि होय।
जय भरे लक्ष अतिशय भंडार, द्रारिद्र तनों दुख होय जार ॥१५॥

जय चोर अग्नि डाकिन पिशाच, अरु ईति भीति सब नसत सांच
जय तुम सुमरत सुख लहत लोक, सुर असुर नवत पद देत धोक ॥१६

छन्द रोला ।

ये सातों मुनिराज, महातप लछमी धारी ।
परम पूज्य पद धरे, सकल जग के हितकारी ॥
जो मन वच तन शुद्ध होय सेवै औ ध्यावै ।
सौ जन मनरंगलाल अष्टऋद्धिनकौं पावै ॥ १७ ॥

दोहा—नमन करत चरनन परत, अहो गरीबनिवाज ।
पंच परावर्तननितैं, निरवारो ऋषिराज ॥१८॥

ओं ह्रीं श्रीमन्वादि चारण ऋद्धिधारी सप्तऋषिभ्यो पूर्णार्घं नि०

सोलहकारण पूजा

अडिल्ल

सोलहकारण भाय तीर्थंकर जे भये,
हरषे इन्द्र अपार मेरुपर ले गये ।
पूजा करि निज धन्य लखो बहु चावसों,
हम हूं षोडश कारण भावैं भावसों ॥

ओं ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणानि अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् आह्वाननं, अत्र तिष्ठत ठः ठः स्थापनं, अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट् सन्निधीकरणं ।

अथाष्टक

कंचन झारी निर्मल नीर, पूजूं जिनवर गुण गंभीर ।
परम गुरु हो, जै जै नाथ परम गुरु हो ॥

दर्श विशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर पद पाय।
परम गुरु हो, जै जै नाथ परम गुरु हो ॥

ओं ह्रीं दर्शनविशुद्धि १, विनयसम्पन्नता २, शीलव्रतेष्वनतीचार ३, अभीक्ष्णज्ञानोपयोग ४, संवेग ५, शक्तितस्त्याग ६, शक्तितस्तप ७, साधुसमाधि ८, वैयावृत्यकरण ९, अर्हद्भक्ति १० आचार्यभक्ति ११ बहुश्रुतभक्ति १२, प्रवचनभक्ति १३, आवश्यकापरिहाण १४, मार्गप्रभावना १५, प्रवचनवात्सल्य १६, इति षोडशकारणेभ्यो नमः जलं ॥१७॥

चंदन घसों कपूर मिलाय, पूजूं श्रीजिनवर के पांय।
परमगुरु हो जै जै नाथ परम गुरु हो ॥ दर्शवि० ॥२॥

ओं ह्रीं दर्शनविशुद्धिष्यादिषोडशकारणेभ्यो चंदनं।

तंदुल धवल अखंड अनूप पूजूं जिनवर तिहुं जग भूप।
परमगुरु हो जय जय नाथ। परमगुरु हो ॥ दरशवि०

ओंह्रीं दर्शनविशुद्धध्यादिषोडशकारणेभ्यो अक्षतं नि०।

फूल सुगन्ध मधुप गुंजार पूजूं जिनवर जग आधार
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ॥ दरशवि०

ओं ह्रीं दर्शनविशुद्धध्यादिषोडशकारणेभ्यो पुष्पं०।

सद नेवज बहु विधि पकवान, पूजूं श्रीजिनवर गुणखान
परमगुरु हो जय जय नाथ परमगुरु हो ॥दरशवि० ॥५॥

ओं ह्रीं दर्शनविशुद्धध्यादिषोडशकारणेभ्यो नैवेद्यं०।

दीपक ज्योति तिमिर क्षयकार, पूजूं श्रीजिनकेवलधार।
परमगुरु हो, जय जय नाथ परमगुरु हो ॥ दरशवि० ॥६॥

ओं ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो दीपं० ।

अगर कपूर गन्ध शुभ खेय, श्री जिनवर आगे महकेय ।
परमगुरु हो, जय जय नाथ परमगुरु हो ॥ दरशवि० ॥७॥

ओं ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो धूपं निर्व० ।

श्रीफल आदि बहुत फल सार, पूजूं जिन वांछितदातार ।
परमगुरु हो, जय जय नाथ परमगुरु हो ॥ दरशवि० ॥८॥

ओं ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो फलं निर्व० ।

जल फल आठों द्रव्य चढाय, 'द्यानत' वरत करो मनलाय ।
परमगुरु हो, जय जय नाथ परमगुरु सो ॥ दरशवि० ॥९॥

ओं ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो अर्घं० ।

जाप—ओं ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यै नमः । ओं ह्रीं विनयसम्पन्नताय नमः, ओं ह्रीं शीलव्रताय नमः । ओं ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगायनमः ओं ह्रीं सम्वेगाय नमः, ओं ह्रीं शक्तितस्त्यागाय नमः, ओं ह्रीं शक्तितस्तपसे नमः, ओं ह्रीं साधुसमाध्यै नमः, ओं ह्रीं वैयावृत्यकरणाय नमः, ओं ह्रीं अर्हद्भक्त्यै नमः, ओं ह्रीं आचार्यभक्त्यै नमः, ओं ह्रीं बहुश्रुतभक्त्यै नमः, ओं ह्रीं प्रवचनभक्त्यै नमः, ओं ह्रीं आवश्यकापरिहाण्ये नमः, ओं ह्रीं मार्गप्रभावनायै नमः ओं ह्रीं प्रवचनवत्सलत्वाय नमः ॥ १६ ॥

जय माला

दोहा—षोड्ष कारण गुण करै, हरै चतुरगति वास ।
पाप पुण्य सब नास कै, ज्ञान भानु परकास ॥

चोपाई

दर्श विशुद्ध धरे जो कोई, ताको आवागमन न होई ।
विनय महा धारे जोप्राणी, शिव वनिताकी सखी वखानी ॥ २ ॥

शील सदा दृढ़ जो नर पाले, सो औरनकी आपद टाले।
ज्ञान अभ्यास करे मन माहीं, ताके मोह महातम नाहीं ॥ ३ ॥
जो संवेग भाव विस्तारै, स्वर्ग मुक्ति पद आप निहारै।
दान देइ मन हर्ष विशेषै, इह भव यश परभव सुख देखै ॥ ४ ॥
जो तप तपै खपै अभिलाषा. चूरे कर्म शिखरगुरु भाषा।
साधुसमाधि सदा मन लावै, तिहुं जग भोग भोगि शिव जावै ॥ ५ ॥
निश दिन वैयावृत्य करैया, सो निश्चय भवनीर तरैया।
जो अरहन्त भक्ति मन आनै, सो जन विषय कषाय न जाने ॥ ६ ॥
जो आचारज भक्ति करै हैं, सो निरमल आचार धरै हैं।
बहुश्रुतवन्त भक्ति जो करई, सो नर संपूरण श्रुत धरई ॥ ७॥
प्रवचन भक्ति करै जो ज्ञाता, लहै ज्ञान परमानन्द दाता।
षट्आवश्य काल जो साधै, सोही रत्नत्रय आराधै ॥ ८ ॥
धर्म प्रभाव करे जो ज्ञानी, तिन शिव मारग रीति पिछानी।
वात्सल अंग सदा जो ध्यावै, सो तीर्थंकर पदवी पावै ॥ ९ ॥

दोहा:—ये ही षोड़श भावना, सहज धरै व्रत जोय।
देव इन्द्र नागेंद्र पद, 'द्यानत' शिव पद होय ॥

ओं ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो अर्घं निर्वपामीति०

सवैया तेईसा

सुन्दर षोडशकारण भावना निर्मल चित्त सुधारक धारै,
कर्म अनेक हने अति, दुर्धर जन्म जरा भय मृत्यु निवारै।
दुःख दरिद्र विपत्ति हरै भव सागरको पर पार उतारै।
'ज्ञान' कहे यहि षोडशकारण कर्म निवारण सिद्धि सुधारै ॥

इत्याशीर्वादः।

पंचमेरु पूजा।

गीता छन्द।

तीर्थंकरोंके न्हवन जलतैं, भये तीरथ सर्वदा।
तातैं प्रदच्छन देत सुरगन, पंचमेरनकी सदा॥
दो जलधि ढाईद्वीपमें सब, गनत मूल विराजहीं।
पूजों असी जिनधाम प्रतिमा, होंहिं सुख दुख भाजहीं॥१॥

ओं ह्रीं पंचमेरुसम्बंधीजिनचैत्यालयस्थजिनप्रतिमासमूहअत्राव-तरावतर। संवौषट्। ओं ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयस्थजिन-प्रतिमासमूह अत्र तिष्ठतिष्ठ। ठःठः। ओं ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थजिनप्रतिमासमूह! अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट्

अथाष्टक। चौपाई आंचलीबद्ध (१५ मात्रा)

सीतल मिष्ट सुवास मिलाय। जलसौं पूजौं श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय॥
पांचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमाको करों प्रणाम॥
महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय॥१॥

ओं ह्रीं सुदर्शनमेरु, विजयमेरु, अचलमेरु, मंदिरमेरु विद्युन्माली-मेरु, पंचमेरु सम्बन्धी अस्सी जिन चैत्यालयेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

जल केसर कर्पूर मिलाय। गंधसों पूजौं श्री जिनराय।
महासुख होय, देखेनाथ परमसुख होय॥ पांचों० ॥२॥

ओं ह्रीं पंचमेरुसम्बंधीजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो चदनं निर्व०

अमल अखण्ड सुगंध सुहाय। अच्छतसौं पूजौं जिनराय।
महासुख होय, देखेनाथ परमसुख होय॥पांचों०॥३॥

ओं ह्रीं पंचमेरुसम्बंधीजिनचैत्यालयस्थजिन बिम्बेभ्यो अक्षतान्०

बरन अनेक रहे महकाय, फूलनसों पूजौं जिनराय।

महासुख होय, देखेनाथ परमसुखहोय ॥ पांचों० ॥४॥

ओं ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धीजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो पुष्पं निर्व०

मनवांछित बहु तुरत बनाय। चरुसों पूजौं श्रीजिनराय।

महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय ॥पांचों० ॥५॥

ओं ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धीजिनचैत्यालयस्थजिन बिम्बेभ्यो पुष्पं निर्व०

मनवांछित बहु तुरत बनाय। चरुसों पूजौं श्री जिनराय।

महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय ॥ पांचों० ॥५॥

ओं ह्रीं पंचमेरुसम्बंधीजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्व०

तमहर उज्वल जोति जगाय। दीपसों पूजौं श्रीजिनराय।

महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय ॥ पांचों०॥६॥

ओं ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धीजिनचैत्यालयस्थजिन बिम्बेभ्यो दीपं निर्व

खेऊं अगर परमिल अधिकाय।धूपसौं पूजौं श्रीजिनराय।

महासुख होय, देखे नाथपरम सुख होय ॥ पांचों० ॥७॥

ओं ह्रीं पचमेरुसम्बन्धीजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो धूपं नि०

सुरस सुवर्ण सुगंध सुहाय। फलसों पूजौं श्रीजिनराय।

महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥ पांचों०॥८॥

ओं ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धीजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो फलं नि०

आठ दरबमय अरघ बनाय। 'द्यानत' पूजौं श्रीजिनराय।

महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥पांचों० ॥९॥

ओं ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धीजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अर्घं नि०

जयमाल सोरठा ।

प्रथम सुदर्शन स्वामी, विजय अचल मंदिर कहा ।
विद्युन्माली नाम, पंचमेरु जगमै प्रगट ॥१०॥

वेसरी छन्द

प्रथम सुदर्शन मेरु विराजै । भद्रशाल वन भूपर छाजै ।
चैत्यालय चारों सुखकारी । मनवचतन कर वंदना हमारी ॥२॥
ऊपर पांच शतक पर सोहै । नंदनवन देखत मन मोहै ॥चैत्या०३॥
साढे बासठ सहस उंचाई । वन सुमनस शोभै अधिकाई॥चै०॥४॥
ऊंचा योजन सहस छत्तीसं । पांडुकवन सोहै गिर सीसं ॥चै०॥५॥
चारों मेरु समान बखानो । भूपर भद्रसाल चहुं जानो ॥
चैत्यालय सोलह सुखकारी । मनवचतनकर वंदना हमारी ॥६॥
ऊंचे पांच शतक परभाखे । चारों नन्दनवन अभिलाखे ।
चैत्यालय सोलह सुखकारी । मन वचतन कर वंदना हमारी ॥७॥
साढे पचपन सहस उतंगा । वन सौमनस चार बहुरंगा ।
चैत्यालय सोलह सुखकारी । मनवचतनकर वंदना हमारी ॥८॥
उच्च अट्ठाइस सहस बताये । पांडुक चारों वन शुभ गाये ।
चैत्यालय सोलह सुखकारी । मनवचतनकर वंदना हमारी ॥९॥
सुर नर चारन वंदन आवैं । सो शोभा हम किस मुख गावें ।
चैत्यालय अस्सी सुखकारी । मनवचतनकर वंदना हमारी ॥१०॥
दोहा:- पंचमेरुकी आरती, पढै सुनै जो कोय ।
'द्यानत' फल जानै प्रभू, तुरत महा सुखहोय ॥११॥

ओं ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिजिन चैत्यालयस्थजिन बिम्बेभ्यो अर्घं निर्व०

नंदीश्वर द्वीप (अष्टान्हिका) पूजा

अडिल्ल छन्द

सर्व पर्व में बडो अठाई पर्व है।
नन्दीश्वर सुरजांहि लिये वसु दरब हैं ॥
हमें सकति सो नांहि इहां करि थापना।
पूजों जिनगृह प्रतिमा है हित अपना ॥

ओं ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमा समूह! अत्र अवतर अवतर, संवौषट्। अत्र तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव वषट्।

कंचन मणिमय भृंगार, तीरथ नीर भरा।
तिहुं धार दई निरवार, जामन मरन जरा ॥
नंदीश्वर श्रीजिनधाम, बावन पुंज करों।
वसु दिन प्रतिमा अभिराम, आनंदभाव धरों ॥ १ ॥

ओं ह्रीं मासोत्तमे मासे ....मासे शुभे शुक्लपक्षे अष्टाहिकायां महामहोत्सवे नंदीश्वरद्वीपे पूर्वदक्षिणपश्चिमोत्तरे एक अंजनगिरि चार दधिमुख आठ रतिकर प्रतिदिशि तेरह तेरह बावन जिन चैत्यालयेभ्यो जन्म जरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

भवतपहर शीतल वास, सो चन्दन नाहीं।
प्रभु यह गुन कीजै सांच, आयो तुम ठाहीं ॥ नंदी० ॥२॥

ओं ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पूर्वदक्षिणपश्चिमोत्तरे चंदनं निर्व०

उत्तम अक्षत जिनराज, पुंज धरे सौहैं।
सब जीते अक्षसमाज, तुम सम अरु को है। नं. ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पूर्वदक्षिणपश्चिमोत्तरे अक्षतान् निर्व०

तुम काम विनाशक देव, ध्याऊं फूलनसौं।
लहि शील लक्ष्मी एव, छूटूं सूलनसौं ॥ नंदी० ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पूर्वदक्षिणपश्चिमोत्तरे पुष्पं निर्व०

नेवज इन्द्रियबलकार, सो तुमने चूरा।
चरु तुम ढिग सौहै सार, अचरज है पूरा ॥ नं० ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पूर्वदक्षिणपश्चिमोत्तरे नैवेद्यं निर्व०

दीपक की ज्योति प्रकाश, तुम तन माहिं लसै।
टूटै करमन की राश, ज्ञानकणी दरसै ॥ नं० ॥ ६ ॥

ओं ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पूर्वदक्षिणपश्चिमोत्तरे दीपं निर्व०

कृष्णागरुधूप सुवास, दशदिशि नारि वरे।
अति हरषभाव परकाश, मानों नृत्य करे ॥ नं० ॥ ७ ॥

ओं ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पूर्वदक्षिणपश्चिमोत्तरे धूपं निर्व०

बहुविधफल ले तिहुंकाल, आनन्द राचत हैं।
तुम शिवफल देहु दयाल, सो हम जाचत हैं ॥ नंदी०॥८॥

ओं ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पूर्वदक्षिणपश्चिमोत्तरे फलं निर्व०

यह अर्घ कियो निज हेतु, तुमको अरपत हों।
'द्यानत' कीनो शिवखेत, भूप सरमपतहों ॥ नंदी ॥ ९ ॥

ओं ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पूर्वदक्षिणपश्चिमोत्तरे अर्घं निर्व०

जयमाला, दोहा।

कार्तिक फागुन साढ़के, अंत आठ दिनमांहि।
नंदीश्वर सुर जात हैं, हम पूजैं इह ठांहि ॥ १ ॥

छन्द ।

एकसौ त्रेसठ कोड़ि जोजन महा । लाख चौरासिया एकदिशिमें लहा ॥ आठमों द्वीप नंदीश्वरं भास्वरं । भौन बावन्न प्रतिमा नमों सुखकरं ॥२॥ चारदिशि चार अंजनगिरी राजहीं । सहस चोरासिया एकदिशि छाजहीं । ढोलसम गोल ऊपर तले सुन्दरं ॥ भौन० ॥ ३ ॥ एक इक चार दिशि चार शुभ बावरी । एक इक लाख जोजन अमल जलभरी ॥ चहुंदिशा चार बन लाख जोजन वरं ॥ भौन० ॥ ४ ॥ सोल वापीन मधि सोल गिरी दधिमुखं । सहस दस महा-जोजन लखत ही सुखकरं ॥ बावरी कौण दोमांहि दो रतिकरं ॥ भौन. ॥५॥ शैल बत्तीस इक सहस जोजन कहे । चार सौले मिले सर्व बावन लहे ॥ एक इक सीसपर एक जिनमंदिरं ॥ भौन० ॥ ६ ॥ बिंब आठ एकसौ रतनमय सोह ही । देव देवी सरव नयन मन मोहही॥ पांचसै धनुष तन पद्मआसन परं । भौन० ॥ ७ ॥ लाल नख मुख नयन स्याम अरु स्वेत हैं । श्याम रंग भौंह सिर केश छवि देत हैं । वचन बोलत मनों हंसत कालुषहरं । भौन० ॥ ८ ॥ कोटिशशि भानु दुति तेज छिप जात है । महा वैराग्य परिणाम ठहरात है ॥ वचन नहिं कहैं लखि होत सम्यकधरं । भौन० ॥ ९ ॥

सोरठा ।

नन्दीश्वर जिनधाम, प्रतिमा महिमा को कहै ।
'द्यानत' लीनों नाम, यहै भगति सब सुख करै ॥

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदक्षिणपश्चिमोत्तरे पूर्णाऽर्घ्यं निर्व०

दशलक्षणधर्म पूजा

उत्तम छिमा मार्दव आर्जव भाव है ।
सत्य शौच संयम तप त्याग उपाव है ॥

आकिंचन ब्रह्मचर्य धरम दश सार है।
चहुं गति दुखतैं काढि मुकति करतार है ॥ १ ॥

ओं ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्रावतरावतर। संवौषट्
ओं ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः।
ओं ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट्।

सोरठा।

हेमाचल की धार, मुनिचित सम शीतल सुरभि।
भवआताप निवार, दशलक्षण पूजौं सदा ॥ १ ॥

ओं ह्रीं उत्तमक्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य, ब्रह्मचर्यादिदशलक्षणधर्माय जलं नि० ॥ १ ॥

चन्दन केशर गार, होय सुवास दशों दिशा।
भव आताप निवार, दशलक्षण पूजौं सदा ॥ २ ॥

ओं ह्रीं उत्तम क्षमादिदशलक्षणधर्माय चंदनं नि० ॥ २ ॥

अमल अखंडित सार, तंदुल चंद्र समान शुभ।
भव आताप निवार, दशलक्षण पूजौं सदा ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं उत्तम क्षमादिदशलक्षणधर्माय अक्षतान् नि० ॥ ३ ।

फूल अनेक प्रकार, महकै ऊरधलोक लों।
भवआताप निवार, दशलक्षण पूजौं सदा ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय पुष्पं नि० ॥ ४ ॥

नेवज विविध निहार, उत्तम षटरस संजुगत।
भवआताप निवार, दशलक्षण पूजौं सदा ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय नैवेद्य नि० ॥ ५ ॥

वाति कपूर सुधार, दीपक जोति सुहावनी ।
भव आताप निवार, दशलच्छण पूजों सदा ॥ ६ ॥

ओं ह्रीं उत्तमच्छमादिदशलच्छणधर्माय दीपं नि० ॥ ६ ॥

अगर धूप विस्तार, फैले सर्व सुगन्धता ।
भवआताप निवार, दशलच्छण पूजौं सदा ॥ ७ ॥

ओं ह्रीं उत्तमच्छमादिदशलच्छणधर्माय धूपं नि० ॥ ७ ॥

फलकी जाति अपार, घ्राण नयन मनमोहनो ।
भवआताप निवार दशलच्छण पूजौं सदा ॥ ८ ॥

ओं ह्रीं उत्तमच्छमादिदशलच्छणधर्माय फलं नि० ॥ ८ ॥

आठों दरब संवार, 'द्यानत' अधिक उछाहसों ।
भवआताप निवार, दशलच्छण पूजौं सदा ॥ ९ ॥

ओं ह्रीं उत्तमच्छमादिदशलणधर्माय अर्घ नि० ॥ ९ ॥

अंग पूजा

सोरठा

पीड़ै दुष्ट अनेक, बांधि मार बहु विधि करैं ।
धरिये छिमा विवेक, कोप न कीजै पीतमा ॥ १ ॥

चौपाई मिश्रित गीता छन्द ।

उत्तम छिमा गहो रे भाई, इहभव जस परभव सुखदाई ।
गाली सुनि मन खेद न आनो, गुनको औगुन कहै अयानो ॥
कहिहै अयानो वस्तु छीने, बांध मार वहुविधि करैं ।
घरतै निकारै तन विदारै, वैर जो न तहां धरैं ॥
तैं करम पूरब किये खोटे, सहै क्यों नहीं जीयरा ।
अतिक्रोध अगनि बुझाय प्रानी, साम्य जल ले सीयरा ॥१॥

ओं ह्रीं उत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।१।।

मान महाविषरूप, करहिं नीचगति जगतमें ।
कोमल सुधा अनूप, सुख पावै प्राणी सदा ।।२।।

उत्तम मार्दवगुन मन माना, मान करनको कौन ठिकाना ।
वस्यो निगोदमाहिंतैं आया, दमरी रूकन भाग विकाया ।।
रूकन विकाया भाग वशतैं, देव इकइन्द्री भया ।
उत्तम मुआ चांडाल हुआ, भूप कीडों में गया ।।
जीतव्य-यौवनधन गुमान, कहा करे जल बुदबुदा ।
करि विनय बहुगुन बड़े जनकी, ज्ञानका पावै उदा ।
ओं ह्रीं उत्तममार्दवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।२।।

कपट न कीजै कोय चोरन के पुर ना वसे ।
सरल सुभावी होय, ताके घर बहु संपदा ।। ३ ।।

उत्तम आर्जवरीति बखानी, रञ्चक दगा बहुत दुखदानी ।
मनमें होय सो वचन उचरिये, वचन होय सो तन सौं करिये ।।
करिये सरल तिहु जोग अपने देख निरमल आरसी ।
मुख करै जैसा लखै तैसा, कपट प्रीति अंगारसी ।।
नहिं लहै लछमी अधिक छलकर, करमबंध विशेषता ।
भय त्यागि दूध बिलाव पीवै, आपदा नहिं देखता ।।२।।
ओं ह्रीं उत्तमआर्जवधर्मांगाय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

कठिन बचन मति बोल, पर निन्दा अरु झूठ तज ।
सांच जवाहर खोल, सतवादी जगमें सुखी ।। ४ ।।

उत्तम सत्यवरत पालीजै, पर विश्वासघात नहिं कीजै ।
सांचे झूठे मानुष देखो, आपन पूत स्वपास न पेखो ।।
पेखो तिहायत पुरुष सांचेको, दरब सब दीजिये ।
मुनिराज श्रावककी प्रतिष्ठा, सांचगुन लख लीजिये ।।

ऊँचे सिंहासन बैठि वसुनृप, धरमका भूपति भया।
वसु झूठसेती नरक पहुंचा, सुरगमें नारद गया ॥ ४ ॥
ओं ह्रीं उत्तमसत्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥
धरि हिरदै संतोष, करहु तपस्या देहसौं।
शौच सदा निरदोष, धरम बड़ो संसार में ॥ ५ ॥
उत्तम शौच सर्व जग जानो, लोभ पापको बाप बखानो।
आसा फास महा दुखदानी, सुख पावे सन्तोषी प्रानी ॥
प्रानी सदाशुचि शील जप तप, ज्ञानध्यानप्रभावतैं।
नित गंगजमुन समुद्रन्हावे अशुचिदोष सुभावतैं ॥
ऊपर अमल मल भरयो भीतर, कौन विधि घट शुचि कहैं।
बहु देह मैली सुगुनथैली, शौचगुन साधू लहैं ॥ ५ ॥
ओं ह्रीं उत्तमशौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
काय छहों प्रतिपाल, पंचेन्द्री मन वश करो।
संजमरतन संभाल, विषयचोर बहु फिरत हैं ॥ ६ ॥
उत्तम संजम गहु मन मेरे, भवभवके भाजें अघ तेरे।
सुरग नरकपशुगति में नाहीं, आलस हरन करन सुख ठाही ॥
ठाहीं पृथ्वी जल अग्नि मारुति, रूख त्रस करुना धरो।
सपरसन रसना घ्रान नैना, काम मन सब बस करो ॥
जिस बिना नहिं जिनराज सीझे, तू रुलो जग कीचमें।
इक घरी मत विसरो करो नित, आयु जमसुख बीचमें ॥६॥
ओं ह्रीं उत्तमसंयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
तप चाहैं सुर राय, करमशिखर को वज्र है।
द्वादशविधि सुखदाय, क्यों न करे निज शकतिसम ॥ ७ ॥
उत्तम तप सब माहिं बखाना करमशिखरको वज्र समाना।
बस्यो अनादि निगोद मंझारा, भूविकलत्रय पशुतन धारा ॥

धारा मनुष तन महादुर्लभ, सुकुल आयु निरोगता।
श्रीजैनवानी तत्वज्ञानी, भई विषयपयोगता ॥
श्रीजैनवानी तत्वज्ञानी, भई विषयपयोगता ॥
अति महादुरलभ त्याग विषय, कषाय जो तप आदरै।
नरभव अनूपम कनक घरपर, मणिमयी कलसा धरै ॥७॥

ओं ह्रीं उत्तमतपधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दान चार परकार, चार संघको दीजिये।
धन्न बिजली उनहार, नरभव लाहो लीजिये ॥ ८ ॥

उत्तम त्याग कह्यो जग सारा, औषधि शास्त्र अभय आहारा।
निहचै रागद्वेष निरवारे, ज्ञाता दोनों दान संभारै।
दोनों संभारै कूप जलसम, दरब घरमें परिनया ॥
निज हाथ दीजे साथ लीजे खाया खोया बह गया।
धनि साध शास्त्र अभयदिवैया, त्याग राग विरोध को।
विन दान श्रावक साध दोनों, लहैं नाहीं बोधको ॥

ओं ह्रीं उत्तम त्याग धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

परिग्रह चौबिस भेद, त्याग करैं मुनिराजजी।
तिसनाभाव उछेद, घटती जान घटाइये ॥ ८ ॥

उत्तम आकिंचन गुण जानो, परिग्रह चिन्ता दुखही मानो।
फांस तनकसी तनमें सालै, चाह लंगोटी की दुख भालै।
भालैं न समता सुख कभी नर, बिना मुनि मुद्रा धरै।
धनि नगनपर तन नगन ठाडे, सुर असुर पायनि परैं ॥
घरमांहि तृष्णा जो घटावै, रुचिनहीं संसारसौं।
बहु धन बुरा हू भला कहिये, लीन पर उपकारसौं ॥ ९ ॥

ओं ह्रीं उत्तमआकिंचन्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाह

शील बाडि नौ राख, ब्रह्मभाव अन्तर लखो।

करि दोनों अभिलाख, करहु सफल नर भव सदा ॥ १० ॥

ाम ब्रह्मचर्य मन आनौ, माता बहिन सुता पहिचानौ ।
ई बानवर्षा बहु सूरे, टिकैं न नयन-बान लखि क्रूरे ॥
ि तियाके अशुचितन में, कामरोगी रति करैं ।
ु मृतक सडहिं मसानमाहीं, काक ज्यों चोंचें भरैं ॥
सारमें विषबेलि नारी, तजि गये जोगीश्वरा ।
ानत' धरम दशपैंडि चढिके, शिवमहलमें पग धरा ॥ १० ॥

ओं ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

ोहा:—दशलच्छन बन्दौं सदा, मनवांछित फलदाय ।
कहों आरती भारती, हमपर होय सहाय ॥ १॥

बेसरी छंद ।

उत्तम छिमा जहां मन होई, अन्तर बाहर शत्रु न कोई ।
उत्तम मार्दव विनय प्रकासैं, नाना भेद ज्ञान सब भासैं ॥२॥
उत्तम आर्जव कपट मिटावै, दुरगति त्यागी सुगति उपजावे ॥
उत्तम सत्य वचन मुख बोलै, सो प्रानी संसार न डोलै ॥ ३ ॥
उत्तमशौचलोभ परिहारी, संतोषी गुण रतन भंडारी ॥
उत्तम संयम पालै ज्ञाता, नरभव सफल करै ले साता ॥ ४ ॥
उत्तम तप निरवांछित पाले, सो नर करम शत्रु को टाले ॥
उत्तम त्याग करै जो कोई, भोगभूमि सुर शिवसुखहोई ॥ ५ ॥
उत्तम आकिंचन व्रतधारै, परमसमाधिदशा विस्तारै ॥
उत्तमब्रह्मचर्य मन लावै, नरसुर सहित मुकतिफल पावै ॥ ६ ॥

दोहा:—करे करमकी निरजरा, भवपींजरा विनाशि ।
अजर अमरपदको लहैं, 'द्यानत' सुखकी राशि ॥

ओं ह्रीं उत्तमक्षमा, मार्दव आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य,ब्रह्मचर्यदशलक्षण धर्माय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रत्नत्रय पूजा

दोहा:— चहुंगतिफणिविषहरनमणि, दुख पावक जलधार ।
शिवसुख सुधासरोवरी, सम्यक्त्रयी निवार ॥१॥

ओं ह्रीं सम्यग्रत्नत्रय ! अत्रावतरावतर ! संवौषट् । ओं ह्रीं सम्यग्रत्नत्रय ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । ओं ह्रीं सम्यग्रत्नत्रय ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

सोरठा

क्षीरोदधि उनहार, उज्जवल जल अति सोहनो ।
जनम रोग निरवार, सम्यक्रत्नत्रय भजों ॥ १ ॥

ओं ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय जन्मरोगविनाशनाय जलं नि० ।

चन्दनकेशरगार, परिमल महा सुगन्धमय ।
जनम रोग निरवार, सम्यक्रत्नत्रय भजों ॥ २ ॥

ओं ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय भवातापविनासनाय चन्दनं नि० ।

तंदुल अमल चितार, वासमति सुखदाय के ।
जनम रोग निरवार, सम्यक्रत्नत्रय भजों ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि० ।

महकैं फूल अपार, अलि गुंजै ज्यों थुति करैं ।
जनम रोग निरवार, सम्यक्रत्नत्रय भजों ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय कामवाणविध्वंशनाय पुष्पं नि० ।

लाडू बहु विस्तार, चीकन मिष्ट सुगंधयुत ।
जनम रोग निरवार, सम्यक्रत्नत्रय भजों ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि० ।

दीप रतनमय सार, जोत प्रकाशै जगत में ।
जनम रोग निरवार, सम्यक्रत्नत्रय भजों । ६ ॥

ओं ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि० ।

धूप सुवास विथार, चन्दन अगर कपूर की ।
जनम रोग निरवार, सम्यक्रत्नत्रय भजों ॥७॥

ओं ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय अष्टकर्मविनाशनाय धूपं नि० ।

फल शोभा अधिकार, लोंग छुहारे जायफल ।
जनम रोग निरवार, सम्यक्रत्नत्रय भजों ॥८॥

ओं ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०

आठ दरब निरधार, उत्तमसों उत्तम लियो ।
जनम रोग निरवार, सम्यक्रत्नत्रय भजों ॥ ९ ॥

ओं ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि० ।

सम्यक्दर्शनज्ञान, व्रत शिवमग तीनों मयी ।
पार उतारण जान, 'द्यानत' पूजों व्रत सहित ॥

ओं ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय पूर्णार्घ्यं नि० ।

दर्शन पूजा

दोहा

सिद्ध अष्टगुनमय प्रगट, मुक्तजीवसोपान ।
ज्ञानचरित्र जिहं बिन अफल, सम्यग्दर्श प्रधान ॥१॥

ओं ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शन ! अत्र अवतर अवतर ! संवौषट्
ओं ह्रीं आंष्टगसम्यग्दर्शन । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ओं ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शन ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट्

सोरठा ।

नीर सुगन्ध अपार, त्रिषा हरै मल छय करै ।
सम्यक्दर्शनसार, आठ अङ्ग पूजौं सदा ॥१।
ओं ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय जलं नि०

जल केशर घनसार, ताप हरै शीतल करै ।
सम्यक्दर्शनसार, आठ अङ्ग पूजौं सदा ॥ २ ॥
ओं ह्रीं सम्यग्दर्शनाय चदनं नि०।

अछत अनूप निहार, दारिद नाशै सुख करै ।
सम्यक्दर्शनसार, आठ अङ्ग पूजौं सदा ॥३॥
ओं ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अक्षतान् नि० ।

पुहुप सुवास उदार, खेद हरै मन शुचि करै ।
सम्यक्दर्शनसार, आठ अङ्ग पूजौं सदा ॥ ४ ॥
ओं ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय पुष्पं नि० ।

नेवज विविध प्रकार, छुधा हरै थिरता करै ।
सम्यक्दर्शनसार, आठ अङ्ग पूजौं सदा ॥ ५ ॥
ओं ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय नैवेद्यं नि० ।

दीप ज्योति तमहार, घटपट परकाशै महा ।
सम्यक्दर्शनसार, आठ अङ्ग पूजौं सदा ॥६॥
ओं ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय दीपं नि० ।

धूप घ्रानसुखकार, रोग विघन जड़ता हरै।
सम्यक्दर्शनसार, आठ अङ्ग पूजौं सदा ॥ ७ ॥

ओं ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय धूपं नि०।

श्रीफल आदि विथार, निहचै सुरशिवफल करै।
सम्यक्दर्शनसार, आठ अङ्ग पूजौं सदा ॥ ८ ॥

ओं ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय फलं नि०।

जल गन्धाक्षत चारु, दीप धूप फल फूल चरु।
सम्यक्दर्शनसार, आठ अङ्ग पूजौं सदा ॥ ९ ॥

ओं ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनायअर्घ्यं नि०।

जयमाला दोहा।

आप आप निहचै लखै, तत्वप्रीति व्योहार।
रहित दोष पच्चीस है, सहित अष्टगुन सार ॥ १० ॥

चौपाई मिश्रित गीता छन्द।

सम्यकदरसन रतन गहीजै, जिनवच में संदेह न कीजै।
इहभव विभव चाह दुखदानी, पर भव भोग चहैं मत प्रानी ॥
प्रानि गिलान न करि अशुचि लखि, धरम गुरु प्रभु परखिये।
परदोष ढ़किये धरम डिगते को, सुथिर कर हरखिये ॥
चउसंघ को वात्सल्य कीजै, धरम की परभावना।
गुण आठसों गुन आठ लहि कै, इहां फेर न आवना ॥ २ ॥

ओं ह्रीं अष्टांगसहितपञ्चविंशतिदोषरहिताय सम्यग्दर्शनाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान पूजा ।

दोहा ।

पंचभेद जाके प्रकट, ज्ञेय प्रकाशन भान ।
मोह-तपन-हर-चंद्रमा, सोई सम्यकज्ञान ॥१॥

ओं ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञान अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ओं ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञान अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ओं ह्रीं अष्ट विधसम्यग्ज्ञान अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

सोरठा ।

नीर सुगंध अपार, तृषा हरै मल छय करै ।
सम्यक्ज्ञान विचार, आठभेद पूजौं सदा ॥१॥

ओं ह्रीं अष्टविधसम्यक्ज्ञानाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

जलकेशर घनसार, ताप हरे शीतल करे ।
सम्यक्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा ॥ २ ॥

ओं ह्रीं अष्टविधसम्यक्ज्ञानाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अछत अनूप निहार, दारिद नाशै सुख भरै ।
सम्यक्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं अष्टविधसम्यक्ज्ञानाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

पुहुप सुवास उदार, खेद हरे मन शुचि करै ।
सम्यक्ज्ञान विचार, आठभेद पूजौं सदा ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं अष्टविधसम्यक्ज्ञानाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा

नेवज विविध प्रकार छुधा हरै थिरता करै ।
सम्यक्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा ॥५॥

ओं ह्रीं अष्टविधसम्यक्ज्ञानाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाह।

दीपज्योति तमहार घटपट परकाशै महा।

सम्यक्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा॥ ६॥

ओं ह्रीं अष्टविधसम्यक्ज्ञान दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप घ्रानसुखकार, रोगविघन जडता हरै।

सम्यक्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा॥ ७॥

ओं ह्रीं अष्टविधसम्यक्ज्ञानाय धूपं निर्वपामीतिस्वाहा।

श्रीफलआदि विथार, निहचै सुरशिवफल करै।

सम्यक्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा॥ ८॥

ओं ह्रीं अष्टविधसम्यक्ज्ञानाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गन्धाच्छत चारु, दीप धूप फल फूल चरु।

सम्यक्ज्ञान विचार आठ भेद पूजौं सदा॥९॥

ओं ह्रीं अष्टविधसम्यक्ज्ञानाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला। दोहा।

आप आप जानै नियत, ग्रन्थपठन व्योहार।

संशय विभ्रम मोह बिन, अष्टअङ्ग गुनकार॥१॥

चौपाई मिश्रित गीता छन्द।

सम्यकज्ञानरतन मन भाया। आगम तीजा नैन बताया॥

अच्छर अरथ शुद्ध पहिचानौ। अच्छर अरथ उभय संग जानौ॥

जानौ सुकाल पठन जिनागम, नाम गुरु न छिपाइये।

तपरीति गहि बहु मान दैकै, विनय गुन चित लाइये॥

ए आठ भेद करम उछेदक ज्ञानदर्पण देखना।

इस ज्ञानहीसों भरत सीजा, और सब पटपेखना॥१॥

ओं ह्रीं अष्टविधसम्यक्ज्ञानाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

चरित्र पूजा

दोहा

विषयरोग औषधि महा, दवकशाय जलधार ।
तीर्थंकर जाकों धरै, सम्यक्‌चारितसार ॥ १ ॥

ओं ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्
ओं ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ:ठ: ।
ओं ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र ! अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट

सोरठा ।

नीर सुगन्ध अपार, तृषा हरै मल छय करे ।
सम्यक्चारित सार, तेरहविध पूजौं सदा ॥ १ ॥

ओं ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय जलं निर्व०

जलकेसर घनसार, ताप हरै शीतल करै ।
सम्यक्‌चारित सार, तेरहविध पूजौं सदा ॥२॥

ओं ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय चंदनं ।

अछत अनूप निहार दारिद नासै सुख भरै ।
सम्यक्‌चारित सार तेरहविध पूजौं सदा ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय अक्षतान् नि०

पुहुप सुवास उदार, खेद हरै मन शुचि करै ।
सम्यक्‌चारित सार, तेरहविध पूजौं सदा ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय पुष्पं नि०

नेवज विविधप्रकार, छुधा हरै थिरता करै ।
सम्यक्चारित सार तेरहविध पूजौं सदा ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय नैवेद्यं नि०

दीपजोति तमहार, घटपट परकाशै महा ।
सम्यक्‌चारित सार, तेरहविध पूजौं सदा ॥ ६ ॥

ओं ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय दीपं नि०

धूप घ्राण सुखकार, रोग विघन जडता हरै ।
सम्यक्‌चारित सार, तेरहविध पूजौं सदा ॥ ७ ॥

ओं ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय धूपं नि०

श्रीफलआदि विथार, निश्चय सुरशिवफल करै ।
सम्यक्‌चारित सार, तेरहविध पूजौं सदा ॥ ८ ॥

ओं ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय फलं निर्वपामीति

जल गन्धाक्षत चारु, दीप धूप फल फूल चरु ।
सम्यक्‌चारित सार तेरहविध पूजौं सदा ॥ ९ ॥

ओं ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय अर्घं निर्व०

जयमाला—दोहा ।

आप आप थिर नियत नय, तपसंजम व्योहार ।
स्वपर दया दोनों लिये, तेरहविध दुखहार ॥ १० ॥

चौपाई मिश्रित गीता छन्द ।

सम्यक्‌चारित रतन संभालो । पांच पाप तजिकै व्रत पालो ॥
पंचसमिति त्रय गुपति गहीजे । नर भव सफल करहु तन छीजै ॥१॥

छीजै सदा तनको जतन यह, एक संयम पालिये ।
बहु रुल्यो नरक निगोद मांहीं, विषय कषायनि टालिये ॥
शुभ करम जोग सुघाट आया, पार हो दिनजात है ।
'द्यानत' धरम की नाव बैठो, शिवपुरी कुशलात है ॥ १ ॥

ओं ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय महार्घं निर्व०

समुच्चय जयमाला ।

सम्यंक दरशन ज्ञानव्रत, इन बिन मुकत न होय ।
अन्ध पंगु अति आलसी जुदे जलें दवलोय ॥ १ ॥

चौपाई ।

जापै ध्यान सुथिर बन आवै, ताके करमबंध कट जावै ।
तासौं शिवतिय प्रीति बढावै, जो सम्यक् रतनत्रय ध्यावै ॥ २ ॥
ताकौं चहुँ गति के दुःख नाहीं, सो न परै भवसागर माहीं ।
जनम जरामृतु दोष मिटावै, जो सम्यक् रतनत्रय ध्यावे ॥ ३ ॥
सोई दशलच्छनको साधै, सो सोलह कारण आराधे ।
सो परमातम पद उपजावै, जो सम्यक्रतनत्रय ध्यावै ॥ ४ ॥
सोई शक्रचक्रिपद लेई, तीन लोकके सुख विलसेई ।
सो रागादिक भाव बहावै, जो सम्यक् रतनत्रय ध्यावै ॥ ५ ॥
सोई लोकालोक निहारै, परमानन्द दशा विसतारै ।
आप तिरै औरन तिरवावै, जौ सम्यक् रतनत्रय ध्यावै ॥ ६ ॥

दोहा ।

एकस्वरूप प्रकाश जिन, वचन कह्यो नहीं जाय ।
तीनभेद व्योहार सब, द्यानतको सुखदाय ॥ ७ ॥

ओं ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयाय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

आदिनाथ पूजा ।

अडिल्ल छन्द ।

कर्मभूमिकी आदि ऋषभ जिनवर भये,
धर्मपंथ दरशाय सकल जगसुख दये ।

तिनके पद उर ध्याइ हरष मन में धरूं,
अत्र तिष्ठ जिनराज चरण हिरदे धरूं ॥

ओं ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्र अत्रावतरावतर सवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट्। सन्निधिकरणं।

सुन्दरी छन्द।

परम पावन उज्ज्वल लायके, जल जिनेश्वर चरण चढ़ायके।
जन्म मरण त्रिदोष सबै हरूं, ऋषभदेव चरण पूजा करूं ॥

ओं ह्रीं श्री आदिनाथजिनेंद्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस चन्दन गन्ध सुहावनो, परम शीतल गुण मन भावनो।
जन्मतापतृषादुखको हरूं, ऋषभदेव चरण पूजा करूं ॥

ओं ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेंद्राय चंदनं निर्व०

सरदइन्दु समान सुहावनो, अमल अक्षत स्वच्छ प्रभावनों।
सहजरूप सुधी रमनी वरूं, ऋषभदेव चरण पूजा करूं ॥

ओं ह्रीं आदिनाथजिनेंद्राय अक्षतं निर्व०।

कुसुमरत्न सुवर्णमई करों, कनक भाजन में बहुते भरों।
मदनवान महा दुखको हरूं, ऋषभदेव चरन पूजा करूँ ॥

ओं ह्रीं श्री आदिनाथजिनेंद्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस मोदन पावक लीजिये, चरु अनेक प्रकार सु कीजिये।
असदवेद्य क्षुधा दुखको हरूं, ऋषभदेव चरन पूजा करूं ॥

ओं ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेंद्राय नैवेद्यं निर्व०

रतन दीप अमोलिक लीजिये, जिन सुयोग्य मनोहर कीजिये।
अतुल मोहमहातमको हरूं, ऋषभदेव चरन पूजा करूं ॥

ओं ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेंद्राय दीपं निर्व०

सरस धूप सुगंध सुहावनी, अगरआदिक द्रव्य सुपावनी।
धूप खेय दुखद विधिको हरूं ऋषभदेव चरन पूजा करूं॥

ओं ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेंद्राय धूपं निर्व०।

सरस मिष्ट फलावली लीजिये, चरण जिनवर भेट करीजिये।
सहज रूप सुधि रमणी वरूं ऋषभदेव चरन पूजा करूं।

ओं ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेंद्राय फलं निर्व०.

जल फलादि द्रव्य मिलायके, कनकथाल सु अर्घ बनायके।
निज स्वभाव अरी विधको हरूं, ऋषभदेव चरन पूजा करूं

ओं ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेंद्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्व०-

पंचकल्याणक।

मोतियादाम छंद।

असाढ वदी द्वितीया दिन जान, तजो सरवारथसिद्धि विमान।
भयो गरभागम मंगल सोय, नमूं जिनकों नित हर्षित होय॥

ओं ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेंद्राय अषाढवदीद्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सुचैतवदी नवमी दिन जान, भयो शुभ तादिन जन्मकल्यान।
सुरासुर इन्द्र शचीजुत आय, करो गिरशीस महोत्सव जाय॥

ओं ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेंद्राय चैतवदीनवम्यां जन्मकल्याणक प्राप्ताय अर्घं निर्व०

वदी नवमी शुभ चैत बताय, प्रभूढिंग देवऋषीश्वर आय।
करी वहुभक्तिनवाय सुभाल, लयौ तप तादिन श्रीजिन हाल॥

श्री सुकौशल स्वामी
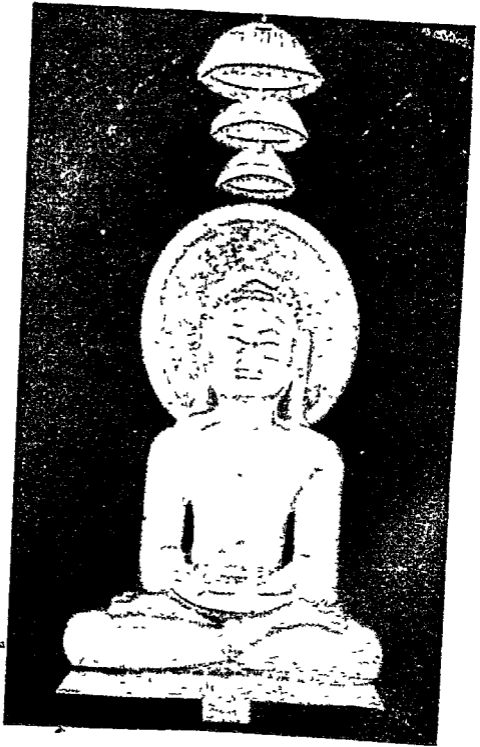
श्री १००८ पद्मप्रभु भगवान (बाड़ा)

ओं ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेंद्राय चैतवदीनवम्यां तपकल्याणक प्राप्ताय अर्घ निर्व० ।

वदी शुभ ग्यारस फाल्गुण जान, सु तादिनघाति हने भगवान ॥
करौ वरकेवल ज्ञान प्रकाश, हरे जगको भ्रममोहविलास ॥

ओं ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेंद्राय फाल्गुणवदी एकादशम्यां ज्ञान-कल्याणक प्राप्ताय अर्घ निर्व० ।

वदी शुभ माघ चतुर्दसि जान, लयौ प्रभूने शिवनाथ महान।
करै बहु उत्सव इन्द्रमहिन्द्र, भरौ मम आस सदा जिनचंद्र ॥

ओं ह्रीं ह्रीआदिनाथजिनेंद्राय माघवदी चतुर्दश्यां मोक्षमंगल-प्राप्ताय अर्घ निर्व० ।

जयमाला—दोहा ।

आदि धर्म करता प्रभू, आदि ब्रह्म जगदीश ।
तीर्थंकर पद जिहि लयौ, प्रथम नवाऊं शीस ॥

भुजंगप्रयात छन्द ।

नमों देव देवेंद्र तुम चर्ण ध्यावैं, नमों देव इन्द्रादि सेवक रहावैं । नमोंदेव तुमको तुम्हीं सुक्खदाता, नमो देव मेरी हरो दुख असाता ॥ १ ॥ तुम्हीं ब्रह्मरूपी सुब्रह्मा कहावौ, तुम्हीं विष्णु स्वामी चराचर लखावौ । तुम्हीं देव जगदीश सर्वज्ञ नामी, तुम्हीं देव तीर्थेश नामी अकामी ॥ २ ॥ सुशंकर तुम्हीं हौ तुम्हीं सुक्ख-कारी, सुजन्मादि त्रयपुर तुम्हीं हौ बिदारी । धरै ध्यान जो जीव-जगके मझारी, गरे नास विधिकौ लहे ज्ञान भारी ॥ ३ ॥ स्वयंभू तुम्हीं हौ महादेव नामी, महेश्वर तुम्हीं हो तुम्ही लोकस्वामी । तुम्हें ध्यान में जो लखै पुन्यवंता, वही मुक्तिको राज विलसै अनंता ॥ ४ ॥ तुम्ही हो विधाता तुम्ही नंददाता, नमै जो तुम्हें सो

सदानंद पाता। हरौ कर्मके फंद दुख कंद मेरे, निजानंद दीजै नमों चर्णं तेरे॥ ५॥ महा मोहको मारि निजराज लीनौ, महाज्ञानको धारि शिव वास कीनौ। सुनों अर्ज मेरी ऋषभदेव स्वामी, मुझे वास निजपास दीजे सुधामी॥ ६॥

दोहा।

नाभिराय मरुदेवि सुत, सदा तुम्हारी आस।
मनवचकायलगायके, नमैं 'जिनेश्वरदास'॥ १॥

ओं ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं नि०

अडिल्ल छन्द।

वर्तमान जिनराय भरतके जानिये,
पंचकल्यानक धारि गये शिव थानिये।
जो नर मनवचकाय प्रभू पूजै सही,
सो नर दिवसुख पाय लहै अष्टम मही॥

इत्याशीर्वादः। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

पद्मप्रभजिनपूजा।

छन्द रोडक (मदावलिप्तकपोल)।

पदमरागमनिवरनधरन, तनतुंग अढ़ाई।
शतक दंड अघखंड, सकल सुर सेवत आई॥
धरनि तात विख्यात सुसीमाजूके नंदन।
पदमचरन धरि राग सु थापों इतकरि वंदन॥ १॥

ओं ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर। संवौषट्।

ओं ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ, ठः ठः ।

ओं ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

अष्टक ।

चाल होलीकी

पूजों भावसों, श्रीपदमनाथपद सार, पूजों भावसों ॥टेक॥
जंगाजल अति प्रासुक लीनों, सौरभ सकल मिलाय ॥
मनवचतन त्रयधार देत ही, जनमजरामृत जाय ।
पूजों भावसो, श्रीपद्मनाथपद सार, पूजों भावसों ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रींपद्मप्रभजिनेन्द्राय जन्ममृत्युविनायशाय जलं निर्व०

मलयागर कपूर चन्दन घसि केशर रंग मिलाय ।
भवतपहरन चरनपर वारों, मिथ्याताप मिटाय ॥ पू० ॥२॥

ओं ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्व०

तंदुल उज्ज्वल गंधअनीजुत, कनकथार भर लाय ।
पुंज धरों तुव चरनन आगें. मोहि अखयपद दाय ॥पू०॥३॥

ओं ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्व०

पारिजात मंदार कलपतरुजनित सुमन शुचि लाय ।
समरशूल निरमूलकरनकों, तुम पद पद्म चढाय ॥पू०॥४॥

ओंह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व०

घेवर बावर आदि मनोहर, सद्यसजे शुचि भाय ।
छुधारोगनिर्नाशन कारन, जजों हरष उर लाय ॥पू०॥५॥

ओं ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय छुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व०

दीपकजोति जगाय ललित वर, धूमरहित अभिराम ।

तिमिरमोह नाशनके कारन, जजों चरन गुनधाम ॥पू०॥६॥

ओं ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्व०

कृष्णागर मलयागर चंदन, चूर सुगन्ध बनाय ।
अगनिमाहिं जारो तुम आगें, अष्टकर्म जरि जाय ॥पू०॥७॥

ओं ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व०

सुरस-वरन रसना मनभावन, पावन फल अधिकार ।
तासौं पूजों जुगम चरन यह, विघन करमनिरवार ॥पू०॥८॥

ओं ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं० निर्व०

जल फल आदिमिलाय गाय गुण, भक्ति भाव उमगाय ।
जजों तुमहिं शिवतियवर जिनवर, आवागमन मिटाय ॥पू०॥९॥

ओं ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व०

पंचकल्याणक ।

छंदद्रुतविलंबित-तथा सुन्दरी (मात्रा १६)

असित माघ सु छट्ठ बखानिये, गरभमंगल तादिन मानिये ।
उरधग्रीवकसौं चय राजजी, जजतइंद्र जजैं हम आजजी॥१॥

ओं ह्रीं माघकृष्णषष्ठीदिने गर्भावतरणमंगलप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

सुकलकार्तिकतेरसको जये, त्रिजगजीव सु आनंदको लये ।
नगर, स्वर्गसमान कुसंबिका, जजतु हैं हरिसंजुत अंबिका २॥

ओं ह्रीं कार्तिकशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अघं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

सुकलतेरसकार्तिक भावनी, तप धर्‍यो वनषष्टम पावनी।
करत आतमध्यान धुरंधरो, जजत हैं हम पाप सबै हरो॥३॥

ओं ह्रीं कार्तिकशुक्लत्रयोदश्यां निःक्रमणकल्याणकप्राप्ताय श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ६॥

सुकलपूनमचैत सुहावनी, परमकेवल सो दिन पावनी।
सुरसुरेश नरेश जजैं तहाँ, हम जजैं पदपंकजको इहां॥ ४॥

ओं ह्रीं चैत्र शुक्ल पूर्णिमायां केवल ज्ञानप्राप्ताय श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ ४॥

असित फागुन चौथ सुजानियो, सकलकर्ममहारिपु हानियो।
गिरिसमेदथकी शिवको गये, हम जजैं पदध्यानविषैं लये॥५॥

ओं ह्रीं फाल्गुनकृष्णा चतुर्थीदिने मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ ५॥

जयमाला।

जय पद्मजिनेशा शिवसद्मेशा, पापपद्म जजि पद्मेशा।
जय भवतमभंजन मुनिमनकंजन, रंजनको दिवसाधेशा॥ १॥

छन्द रूपचौपाई।

जय जय जिन भविजनहितकारी, जय जय जिन भव सागरतारी।
जय जय समवसरन धनधारी, जय जय वीतराग हितकारी॥ २॥
जय तुम सातत्वविधि भाख्यौ, जय जय नवपदार्थ लखि आख्यौ।
जय षटद्रव्य पंच जुतकाया जय सब भेदसहित दरशाया॥ ३॥
जय गुनथान जीव परमानो, जय पहिले अनत जिय जानो।

जय दूजे सासादनमाहीं, तेरहकोड़ि जीव थितआंहीं ॥ ४ ॥
जय तीजे मिश्रितगुणथाने, जीव सु बावनकोड़ि प्रमाने ।
जय चौथे अविरति गुन जीवा; चारअधिक शतकोड़ि सदीवा ॥५॥
जय जय देशवरतमें शेषा, कोड़ि सातसौ है थिति वेशा ।
जय प्रमत्त षटशून्य दोय वसु, पांच तीन नव पांच जीव लसु ॥ ६ ॥
जय जय अपरमत्तगुन कोरं, लच्छ छानवै सहस बहोरं ।
निन्यानवे एकशत तीना, ऐते मुनि तित रहहिं प्रवीना ॥ ७ ॥
जय जय अष्टम में दुई धारा, आठशतक सत्तानों सारा ।
उपशममें दुइसो निन्यानों, छपकमाहिं तसु दूने जानों ॥ ८ ॥
जय इतने इतने हितकारी, नवें दशें जुगश्रेणी धारी ।
जय ग्यारें उपसममगगामी, दुइसै निन्यानों अध आमी ॥ ९ ॥
जय जय छीनमोह गुनथानों, मुनि शतपांच अधिक अट्ठानों ।
जय जय तेरह में अरहंता, जुग नभ पन वसु नव वसु तंता ॥ १० ॥
एते राजतु हैं चतुरानन, हम बंदै पद थुतिकर आनन ।
हैं अजोग गुनमें जे देवा, पनसोठानों करों सुसेवा ॥ ११ ॥
तित तिथि अइउऋलृ लघु भाषत, करि थिति फिर शिवआनंद चाखत ।
ए उतकृष्ट सकल गुण थानी, तथा जघन मध्यम जे प्रानी ॥ १२ ॥
तीनों लोकसदन के वासी, निज गुनपरजभेदमय राशी ।
तथा और द्रव्यन के जेते, गुनपरजाय भेद हैं तेते ॥१३॥
तीनों कालतने जु अनंता, सो तुम जानत जुगपत संता ।
सोई दिव्यवचन के द्वारे, दै उपदेश भविक उद्धारे ॥१३॥
फेरि अचलथलबासा कीनों, गुन अनंतनिजआनंदभीनो ।
चरमदेहतें किंचित ऊनो, नरआकृति तित हैं नित गूनो ॥१४॥
जय जय सिद्धदेव हितकारी, बार बार यह अरज हमारी ।
मोकों दुखसागरतें काढो, 'वृन्दावन' जांचतु हैं ठाडो ॥१६॥

छन्द घत्ता ।

जय जय जिनचंदा पद्मानंदा, परमसुमतिपद्माधारी ।
जय जनहितकारी दयाविचारि, जय जय जिनवर अधिकारी ॥

ओं ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय महार्धं निर्वपामीति स्वाहा !

छन्द रोडक ।

जजत पद्मपदपद्मसद्म ताके सुपद्मअत,
होत वृद्धि सुतमित्र सकल आनंदकंद शत ।
लहत स्वर्गपदराज, तहांते चय इत आई,
चक्रीको सुख भोगि, अंत शिवराज कराई ॥८॥

इत्याशीर्वाद ।

इति श्रीपद्मप्रभजिनपूजा समाप्त ।

चन्द्रप्रभु भगवान की पूजा

चारुचरन आचरन, चरन चितहरनचिहनचर ।
चंदचंदतनचरित, चंदथल चहत चतुर नर ॥
चतुक चंड चकचूरि, चारि चिदचक्र गुनाकर ।
चंचल चलितसुरेश, चूलनुत चक्र धनुरहर ॥
चरअचरहितू तारनतरन, सुनत चहकि चिरनंद शुचि ॥
जिनचंदचरन चरच्यो चहत, चितचकोर नचि रचि रुचि ॥१॥

दोहा—धनुष डेढसौ तुङ्ग तन, महासेन नृपनंद
मातुलछमनाउर जये, थापों चंदजिनन्द ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट्
ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।

ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट्

गंगाहृदनिरमलनीर, हाटकभृंगभरा ।
तुम चरन जजों वरवीर, मेटो जनमजरा ॥
श्रीचंदनाथद्युति चंद, चरनन चंद लगै ।
मनवचतन जजत अमंद–आतमजोति जगै ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं०

श्रीखंड कपूर सुचंग, केशररंग भरी ।
घसि प्रासुकजलके संग, भवआताप हरी ॥ श्रीचंद्र०

ॐ ह्री श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं।

तंदुल सित सोमसमान, सम लय अनियारे ।
दिश पुंज मनोहर आन, तुम पदतर प्यारे ॥ श्री चन्द्र०

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ।

सुरद्रुमके सुमन सुरंग, गंधित अलिआवै ।
तासों पद पूजत चंग, कामविथा जावै ॥ श्रीचन्द्र०

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ।

नेवज नानापरकार, इन्द्रियबलकारी ।
सो लै पद पूजों सार आकुलताहारी ॥ श्रीचन्द्र०

ओं ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय क्षुधा रोगविनाशनाय नैवेद्यं नि० ।

तमभंजन दीप सँवार, तुमढिग धारतु हों ।
मम तिमिरमोह निरवार, यह गुन धारतु हों ॥ श्रीचन्द्र०

ओं ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि०

दशगंधहुतासनमाहिं, हे प्रभु खेवतु हौं।
मम करम दुष्ट जरि जांहि, यातैं सेवतु हौं ॥ श्री चन्द्र०

ओं ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं०

अति उत्तमफल सु मँगाय, तुम गुनगावतु हौं।
पूजों तन मन हरषाय, विघन नशावतु हौं ॥ श्री चन्द्र० ॥

ओं ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं०

सजि आठों दरव पुनीत, आठों अंग नमों।
पूजों अष्टमजिन मीत, अष्टम अवनि गमों ॥ श्री चन्द्र० ॥

ओं ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ ०

पंचकल्याणक

कलिपंचमचैत सुहात अली। गरभागममंगल मोद भली ॥
हरि हर्षित पूजत मातु पिता। हम ध्यावत पावत सर्मसिता ॥१

ओं ह्रीं चैत्रकृष्णपञ्चम्यां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ.

कलि पौषइकादशि जन्म लियो। तब लोकविषै सुखथोक भयो।
सुर ईशजजैं गिरशीश तबै। हम पूजत हैं नुतशीश अबै ॥२

ओं ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घं.

तप दुद्धर श्रीधर आप धरा। कलिपौष इकादशि पर्व वरा।
निज ध्यानविषैं लवलीन भये। धनि सो दिन पूजत विघ्न गये ॥३

ओं ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां निःक्रमणमहोत्सवमण्डिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ ॥३॥

वर केवल भानु उद्योत कियो। तिहुं लोकतणों भ्रम मेट दियो।
कलि फाल्गुनसप्तमि इन्द्र जजे। हम पूजहिं सर्व कलंक भजे ॥४

ओं ह्रीं फाल्गुनकृष्णसप्तम्यां केवलज्ञानमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घं ॥४॥

सित फाल्गुन सप्तमि मुक्ति गये । गुणवंत अनंत अबाध भये ।
हरि आय जजे तित मोदधरे । हम पूजत ही सब पाप हरे ॥५

ओं ह्रीं फाल्गुनशुक्लसप्तम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ ॥५॥

जयमाला

दोहा—हे मृगांक अंकित चरण, तुम गुण अगम अपार ।
गणधरसे नहिं पार लहिं, तौ को वरनत सार ॥१॥
पै तुम भगति हिये मम, प्रेरै अति उमगाय ।
तातैं गाऊं सुगुण तुम, तुम ही होउ सहाय ॥२॥

जय चन्द्र जिनेन्द्र दयानिधान । भवकानन हानन दवप्रमान ॥
जय गरभ जनम मंगल दिनन्द । भव जीवविकाशन शर्म कन्द ॥३॥
दशलक्षपूर्व की आयु पाय । मनवांछित सुख भोगे जिनाय ॥
लखि कारण ह्वै जगतैं उदास । चिंत्यो अनुप्रेक्षा सुखनिवास ॥४॥
तित लौकांतिक बोध्यो नियोग । हरि शिविका सजि धरियो अभोग । तापै तुम चढ़ि जिनचन्दराय । ताछिनकी शोभा को कहाय ॥५॥ जिन अंग सेत सित चमर ढार । सित छत्र शीस गलगुलकहार । सित रतनजड़ित भूषण विचित्र । सित चन्द्रचरणचरचै पवित्र ॥ ६ ॥ सित तनद्युति नाकाधीश आप । सित शिवका कांधे धरि सुचाप ॥ सित सुजस सुरेश नरेश सर्व । सित चित में चिन्तत जात पर्व ॥ ७ ॥ सित चंदनगरतैं निकसि नाथ । सित बन में पहुंचे सकल साथ । सितशिलाशिरोमणि स्वच्छछांह । सित तप नित धार्यो तुम जिनाह ॥ ८ ॥

सित पयको पारण परमसार। सित चंद्रदत्त दीनों उदार ॥ सित कर में सो पयधार देत। मानों बांधत भवसिन्धु सेत ॥ ६ ॥ मानों सुपुण्यधारा प्रतच्छ। तित अचरज पन सुर किय ततच्छ ॥ फिर जाय गहन सित तपकरंत। सित केवलज्योति जग्यो अनन्त ॥ १० ॥ लहि समवसरणरचना महान। जाके देखत सब पापहान॥ जहँ तरु अशोक शोभै उतंग। सब शोकतनो चूरै प्रसंग ॥ ११ ॥ सुर सुमनवृष्टि नभतैं सुहात। मनु मन्मथ तज हथियार जात॥ बानी जिन मुखसों खिरत सार। मनु तत्वप्रकाशन मुकुरधार ॥१२॥ जहँ चौंसठ चमर अमर दुरंत। मनु सुजस मेघझरि लगिय तंत ॥ सिंहासन है जहँ कमलजुक्त। मनु शिवसरवर को कमलशुक्त ॥१३॥ दुंदभि जित बाजत मधुर सार। मनु करम जीत को है नगार॥ सिर छत्र फिरै त्रय श्वेतवर्ण। मनु रतन तीन त्रयताप हर्ण ॥१४॥ तन प्रभातनों मंडल सुहात। भवि देखत निजभव सातसात॥ मनु दर्पणद्युति यह जगमगाय। भविजन भव मुख देखत सुआय ॥१५॥ इत्यादि विभूति अनेक जान। बाहिज दीसत महिमा महान ॥ ताको वरणत नहीं लहत पार। तौ अन्तरंग को कहै सार ॥१६॥ अनअंत गुणनिजुत करि बिहार। धरमोपदेश दे भव्य तार॥ फिर जोगनिरोधि अघाति हान। सम्मेदथकी लिय मुकतिथान ॥१७॥ 'वृन्दावन' बन्दत शीश नाय। तुम जानत हो मम उर जु भाय ॥ तातै का कहौं सु बार बार। मनवांछित कारज सार सार ॥१८॥

घत्ता—जय चंदजिनंदा आनंदकंदा, भवभय भंजन राजै हैं॥
रागादिकद्वंदा हरि सब फंदा, मुकुतिमांहि थिति साजैं हैं ॥१६

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों दरब मिलाय गाय गुण, जो भविजन जिनचन्द जजैं॥
ताकै भव भवके अघ भाजैं, मुक्तसार सुख ताहि सजैं ॥ २०॥

जमके त्रास मिटै सब ताके, सकल असंगल दूर भजैं ॥
"वृन्दावन" ऐसो लखि पूजत, जातैं शिवपुरि राज रजैं ॥२१॥

इत्याशीर्वादः

इति श्रीचन्द्रप्रभजिनपूजा समाप्त ॥

शान्तिनाथ भगवान की पूजा

छन्द—या भवकानन में चतुगनन, पापपनालन घेरि हमेरी ।
आतमजान न मान न ठान न, वान न हो न दई सठ मेरी॥
तामद भानन आपही हो, यह छान न आन न आननटेरी ।
आनगही शरनागत को, अब श्रीपतजीपत राखहु मेरी ॥१

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ॥१
ॐ ह्रीं शान्तिनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ॥२
ॐ ह्रींश्रीशान्तिनाथजिनेंद्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव ॥वषट् ॥३

छन्द—हिमगिरिगतगंगा धार अभंगा, प्रासुक सङ्गा, भरिभृङ्गा ।
जरमरनमृतंगा, नाशिअघंगा, पूजि पदङ्गा मृदुहिंगा
श्रीशांतिजिनेशं, नुतचक्रेशं वृषचक्रेशं, चक्रेशं ।
हनि अरिचक्रेशं, हे गुनधेशं, दयामृतेशं, मक्रेशं, ॥१

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेंद्राय जन्म जरामृत्युविनाशनाय जल. नि०

वर बावन चंदन, कदलीनंदन, घनआनन्दन सहित घसों ।
भवतापनिकंदन ऐरा-नंदन, वंदि अमंदन चरन वसों ॥ श्री०।२

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेंद्राय भवातापविनाशनाय चंदनं नि०

हिमकरकरि लज्जत, मलयसुसज्जत, अच्छत जज्जत, भरि थारी ।
दुख-दारिद गज्जत, सतपदसज्जत, भवभयभज्जत, अति भारी॥ श्री

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि० ।

मंदार सरोजं, कदली जोजं, पुंज भरोजं, मलयभरं।
भरि कंचन थारी, तुमढिग धारी, मदनविदारी, धीरधरं ॥श्री०

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि० ।

पकवान नवीने, पावन कीने, षटरस-भीने, सुखदाई।
मनमोदनहारे, छुधा-विदारे, आगैं धारे, गुन गाई ॥ श्री०

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय-क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि० ।

तुम ज्ञान प्रकाशे, भ्रमतम नाशे, ज्ञेय विकाशे सुखरासे।
दीपक उजियारा, यातैं धारा, मोह निवारा, निज भासे ॥ श्री०

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि० ।

चन्दन करपूरं, करि वर चूरं, पावक भूरं माहि जुरं।
तसु धूम उड़ावै नाचत आवै, अलि गुंजावै, मधुर सुरं ॥ श्री०

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि० ।

बादाम खजूरं, दाड़िम पूरं निंबुक भूरं, लै आयो।
तासों पद जज्जौं, शिव फल सज्जौं, निजरस रज्जौं उमगायो ।श्री०

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० ।

वसु द्रव्य संवारी तुम ढिंग धारी, आनन्दकारी दृगप्यारी।
तुम हो भवतारी, करुनाधारी, यातैं थारी, शरनारी ॥श्री० ६

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि० ।

पंचकल्याणक

असित सातँय भादव जानिये, गरभ-मंगल तादिन मानिये।
शचि कियो जननी पद चर्चनं, हम करैं इत ये पद अर्चनं ॥

ॐ ह्रीं भाद्रपदकृष्णसप्तम्यां गर्भमङ्गल मण्डिताय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

जनम जेठ चतुर्दशि श्याम है, सकलइंद्र सु आगत धाम है।
गजपुरै गज साजि सबैं तबै, गिरि जजे इत मैं जजि हौं अबै ॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्ण चतुर्दश्यां जन्ममङ्गलप्राप्ताय श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

भव शरीर सुभोग असार हैं, इमि विचार तबै तप धार हैं।
भ्रमर चोदश जेठ सुहावनी, धरमहेत जजों गुन पावनी ॥

ॐ ह्रीं जेष्ठकृष्णचतुर्दश्यां निःक्रमणमहोत्सवमण्डिताय श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

शुकल पौष दशे सुखराश है, परम-केवलज्ञान प्रकाश है।
भवसमुद्रउधारन देवकी, हम करैं नित मंगल सेवकी ॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लदशम्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

असित चौदश जेठ हनें अरी, गिरि समेदथकी शिव-तियवरी।
सकलइन्द्र जजैं तित आइकैं, हमजजैं इत मस्तक नाइकैं ॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमङ्गलप्राप्ताय श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

जयमाला

छन्द दशोद्धता

शान्ति शान्तिगुनमंडिते सदा। जाहि ध्यावत सुपंडिते सदा ॥
मैं तिन्हें भगतमंडिते सदा। पूजि हौं कलुषखंडिते सदा ॥ १ ॥
मोच्छहेत तुम ही दयालहो। हे जिनेश गुनरत्नमाल हो।
मैं अबै सुगुन-दाम ही धरों। ध्यावतें तुरित मुक्ति-तियवरों ॥२

छन्द पद्धरी

जय शान्तिनाथ चिद्रूपराज। भवसागर में अद्भुत जहाज॥
तुम तजि सरवारथसिद्धथान। सरवारथजुत गजपुर महान॥१
तित जनम लियौ आनन्द धार। हरि ततछिन आयो राजद्वार॥
इन्द्रानी जाय प्रसूत-थान। तुमको कर में लै हरष मान॥२
हरि गोददेय सो मोदधार। सिर चमर अमर ढारत अपार॥
गिरराज जात तिय शिला पांड। तापै थाप्यौ अभिषेक मांड॥
तित पंचम उदधितनों सु वार। सुर कर कर करि ल्याये उदार॥
तब इंद्रसहसकर करि अनंद। तुम सिर धारा ढारयौ सुनन्द॥
अघ घघ घघ घघ धुनि होत घोर। भभ भभ भभ धध धध कलश शोर॥ द्रमद्रम द्रमद्रम बाजत मृदंग। झन नन नन नन नन नूपुरंग॥५॥ तन नन नन नन नन तनन तान। घन नन नन घंटा करत ध्वान। ताथेई थेई थेई थेई थेई सुचाल। जुत नाचत नावत तुमहि भाल॥६॥ चट चट चट अटपट नटत नाट। झट झट झट हट नट शट विराट। इमि नाचत राचत भगत रंग। सुर लेत जहां आनंद संग॥७॥ इत्यादि अतुल मंगल सुठाट। तित बन्यौ जहाँ सुरगिरि विराट॥ पुनि करि नियोग पितु सदन आय। हरि सौंप्यौ तुम तित वृद्ध थाय॥८॥ पुनि राजमाहिं लहि चक्ररत्न। भोग्यो छखंड करि धरम जत्न॥ पुनि तप धरि केवल-रिद्धि पाय। भवि जीवन को शिवमग बताय॥६॥ शिवपुर पहुंचे तुम हे जिनेश। गुनमंडित अतुल अनन्त भेष॥ मैं ध्यावतु हों नित शीश नाय। हमरी भवबाधा हरि जिनाय॥१० सेवक अपनों निज जान जान। करुना करि भौभय भान भान॥ यह विघन-मूल-तरु खंड खंड। चितचिन्तित आनन्द मन्ड मन्ड॥११॥

श्रीशान्ति महंता, शिवतिय कन्ता, सुगुन अनंता, भगवन्ता ॥
भवभ्रमन हनन्ता, सौख्यअनन्ता, दातारं तारनवन्ता ॥१
ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१
शान्तिनाथ जिनके पदपंकज, जो भवि पूजैं मनवचकाय ।
जनम जनम के पातक ताके, ततछिन तजिकैं जाय पलाय ॥
मनवांछित सुख पावै सो नर, वाँचै भगतिभाव अतिलाय ।
तातैं 'वृन्दावन' नित वन्दे, जातैं शिवपुरराजकराय ॥ १

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

श्री शांतिनाथ जिनपूजा ।

(कवि रामचन्द्र कृत)

अडिल्ल

शांति जिनेश्वर नमूंतीर्थ वसुदुगुण ही,
पंचमचक्री अनंग दुविध षट् सुगुण ही ।
तृणवत रिधि सब छारि धारि तप शिव वरी,
आह्वाननविधि करूं वारत्रय उच्चरी ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर ! संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव, वषट् ।

नाराच छन्द ।

सैल हेमतैं पतंत आपिका सुव्यौमही ।
रत्नभृङ्गधारि नीर सीत अङ्ग सोमही ॥
रोग शोक आधि व्याधि पूजते नसाय हैं ।
अनंत सौख्यसार शांतिनाथ सेय पाय हैं ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय जन्म मृत्युविनाशनाय जलं०

चंदनादि कुंकमादि गन्धसार ल्यावही ।
भृङ्ग वृन्द गुंजतै समीर संग ध्यावही ॥ रोग ॥ २ ॥
ओं ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं ० ।
इन्दु कुंद हारतैं अपार स्वेत साल ही ।
दुति खंडकार पुंज धारिये विसाल ही ॥ रोग० ॥ ३ ॥
ओं ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्० ।
पंचवर्ण पुष्पसार ल्याइये मनोग्य ही ।
स्वर्ण थाल धारिये मनोज नास जोग्य ही ॥ रोग० ४ ॥
ओं ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय कामवाणविध्वंशनाय पुष्पं० ।
खण्ड घृतकार चारु सद्य मोदकादि ही ।
सुष्ठु मिष्ट हेमथाल धारि भव्य स्वादि ही ॥ रोग० ॥ ५ ॥
ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं० ।
दीप ज्योतिको उद्योत धूम होत ना कदा ।
रत्नथाल धारि भव्य मोहध्वांत ह्वै विदा ॥ रोग० ॥ ६ ॥
ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनशानाय दीपं० ।
अगर चंदनादि द्रव्य सार सर्व धार ही ।
स्वर्ण धूप दानमैं हुतास संग जार ही ॥ रोग० ॥ ७ ॥
ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं० ।
घोटकेन श्रीफलेन हेमथालमैं भरै ।
जिनेशके गुणौघ गाय सर्व एनकूं हरै ॥ रोग० ॥ ८ ॥
ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं० ।

छप्पय ।

शरद इन्दुसम अंबुतीर्थ उद्भव तृपहारी ।
चंदन दाह निकन्द सालि शशितैं दुति भारी ॥
सुर तरुके वर कुसुम सद्य चरु पावन धारैं ।
दीप रतनमय जोति धूपतैं मधु झंकारैं ॥
लहि फल उत्तम करि अरघ शुभ 'रामचंद' कनक थाल भरि ।
श्री शाँतिनाथ के चरण जुग वसु विधि अरचैं भाव धरि ॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्य पदप्राप्तये अर्घ्यं० ।

पंचकल्याणक ।

दोहा ।

सर्वारथ सिधितैं चये, भादव सप्तमि स्याम ।
ऐरादे उर अवतरे जजूं गर्भ अभिराम ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं भाद्रपद कृष्ण सप्तम्यां गर्भ मंगल मंडिताय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घं० ।

जेठ चतुरदसि कृष्णाही, जनमे श्री भगवान ।
शतनयन करि सुरपति जजे, मैं जजहुं धरि ध्यान ॥२॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घं० ।

जेठ असित चउदसि धन्यो, तप तजि राज महान ।
सुर नर खगपति पद जजैं, मैं जजहुं भगवान ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घं० ।

पौष सुकल दशमी हने, घाति कर्म दुखदाय ।
केवल लहि वृष भाखियो, जजूं शांति पद ध्याय ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्ल दशम्यां ज्ञानमंगलमंडिताय श्री शांतिनाथ जिनेंद्राय अर्घं०

कृष्ण चतुरदसि जेठकी, हनि अघाति शिवथान ।

गये समेदाचल थकी, जजूं मोक्ष कल्यान ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्री शांतिनाथ जिनेंद्राय अर्घं० ।

जयमाला ।

सोरठा—शांति जिनेश्वर पांय, बंदू मन वच कायतैं ।
देहु सुमति जिनराय, ज्यौं विनती रुचिसौं करौं ॥

चाल—संसार असारियो ।

शांति करम वसुहानिकै, सिद्ध भये शिवजाय ।
शांति करो सब लोक में, अरज यहै सुखदाय ॥
शांति करो जगशांतिजी ॥ १ ॥

धन्य नयरि हथनापुरी, धन्य पिता विश्वसेन ।
धन्य उदर अयरा सती, शांति भये सुखदेन ॥ शांति० ॥ २ ॥

भादव सप्तमि श्यामही, गर्भकल्याणक ठानि ।
रतन धनद वरषाइयो, षट नव मास महान ॥ शांति० ॥ ३ ॥

जेठ असित चउदस विषै, जनम कल्याणक इन्द ।
मेरु कर्यो अभिषेककैं, पूजि नचे सुरवृन्द ॥ शांति० ॥ ४ ॥

हेम वरन तन सोहनो, तुङ्ग धनुष चालीस ।
आयुवरसलख नरपती, सेवत सहस बतीस ॥ शांति० ॥ ५ ॥

षटखंड नवनिधि तियसवै, चउदह रतन भंडार ।
कछु कारण लखिकैं तजे, सणाचव असिय अगार ॥ शांति० ॥

देव ऋषी सब आयकैं, पूजि चले जिन बोधि।
लेय सुरा शिविका धरी, बिरछ नन्दीश्वर सोधि॥ शांति०॥ ७॥
कृष्ण चतुरदसि जेठकी, मनपरजैलहि ज्ञान।
इन्द्र कल्याणक तप कर्यो, ध्यान धर्यो भगवान॥ शांति०॥ ८॥
पञ्चम करि हित असनकै, पुर सा मनस मभार।
गये दयो पय मित्तजी, बरषे रतन अपार॥ शांति०॥ ९॥
मौनसहित वसु दुगुणही, बरस करे तप ध्यान।
पौष सुकल दशमी हने, घाति लह्यौ प्रभुज्ञान॥ शांति०॥ १०॥
समवसरन धनपति रच्यौ, कमलासनपर देव।
इन्द्र नरा षट्द्रव्य की, सुनि तिथि थुति करि एव॥ शांति०॥ ११॥
धन्य जुगलपद मोतनौ, आयौ तुम दरबार।
धन्य उभै चखि ये भये, वदन जिनन्द निहारि॥ शांति०॥ १२॥
आज सफल कर ये भये, पूजत श्रीजिन पाय।
शीस सफल अब ही भयो, धोक्यो तुम प्रभु आय॥ शांति०॥ १३॥
आज सफल रसना भई, तुम गुणगान करंत।
धन्य भयौ हिय मो तनो, प्रभुपदध्यान धरंत॥ शांति०॥ १४॥
आज सफल जग मो तनौ, श्रवण सुनत तुम वैन।
धन्य भये वसु अंग ये, मतन लयो अति चैन॥ शांति॥ १५॥
रामकहैं तुम गुणतणा, इन्द्र लहै नहीं पार।
मैं अति अलप अजान हूं, होय नहीं विस्तार॥ शांति०॥ १६॥
वरष सहस पच्चीस ही, षोडस क्रम उपदेश।
देय समेद पधारिये, मास रहे इक शेष॥ शांति०॥ १७॥
जेठ असित चउदसि गये, हनि अघाति शिवथान।
सुरपति उत्सव अति करे, मगल मोक्ष कल्यान॥ शांति०॥ १८॥

सेवक अरज करै सुनो, हो करुणानिधि देव।
दुखमय भवदधि, तैं मुझै, तारि करूं तुम सेव ॥ शांति० ॥ १६ ॥

घत्ता छन्द।

इति जिन गुणमाला, अमल रसाला, जो भविजन कंठै धरई।
हुय दिवि अमरेश्वर, पुहमि नरेश्वर, शिवसुंदरि ततछिन वरई ॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इत्याशीर्वादः।

श्रीपार्श्वनाथ पूजा।

गीताछन्द।

वर स्वर्ग प्राणतको विहाय, सुमात वामा सुत भये।
अश्वसेनके पारस जिनेश्वर, चरन जिनके सर नये ॥
नवहाथ उन्नत तन विराजै, उरग लच्छन पद लसैं।
थापूं तुम्हें जिन आय तिष्ठो, करम मेरे सब नसैं ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्र! अत्र अवतर अवतर, संवौषट्।
ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः।
ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्र अत्रमम सन्निहितो भव भव वषट्।

अथाष्टक-नाराच छन्द।

क्षीरसोमके समान अंबुसार लाइये।
हेमपात्र धारकैं सु आपको चढ़ाइये ॥
पार्श्वनाथदेव सब आपकी करूं सदा।
दीजिये निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा ॥ १ ॥

ओंह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्रायजन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं०

चंदनादि केशरादि स्वच्छ गन्ध लीजिये ।
आप चर्न चर्च मोहताप को हनीजिये ॥ पार्श्व० ॥ २ ॥

ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं।

फेन चंदके समान अक्षतान् लाईकैं ।
चर्ण के समीप सार पुञ्जको रचाईकैं ॥ पार्श्व० ॥

ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं०

केवडा गुलाब और केतकी चुनायकैं ।
धार चर्ण के समीप कामको नसाइकैं ॥ पार्श्व० ॥

ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं०

घेवरादि बावरादि मिष्ट सद्य मैं सने ।
आप चर्ण चर्चते क्षुधादिरोगको हनै ॥पार्श्व०॥

ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्रायक्षुद्रोगविनाशनाय नैवेद्यं०

लाय रत्नदीपको सनेहपूरकै अरूं ।
वातिका कपूर वारि-मोह ध्वांतकूं हरूं ॥ पार्श्व० ॥

ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं० ।

धूपगन्ध लेयकैं सु अग्निसंग जारिये ।
तास धूपके सुसंग अष्ट कर्म वारिये ॥ पार्श्व० ॥७॥

ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं०

खारिकादि चिरभटादि रत्नथालमैं भरूं ।
हर्षधारिकैं जजूं सुमोक्ष सुक्खको वरूं ॥ पार्श्व ॥ ८ ॥

ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं० ।

नीरगंध अक्षतान् पुष्प चारु लीजिये ।
दीप धूप श्रीफलादि अर्घतैं जजीये ॥ पार्श्व० ॥ ९ ॥

ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं० ।

पंच कल्याणक ।

शुभप्राणत स्वर्ग विहाये, वामा माता उर आये ।
वैशाखतनी दुतिकारी हम पूजैं विघ्न निवारी ॥१॥

ओं ह्रीं श्रीवैशाखकृष्णद्वितीयायां गर्भमंगलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय अर्घं० ।

जनमे त्रिभुवन सुखदाता, एकादशि पौष विख्याता ।
श्यामा तन अद्भुत राजै, रवि कोटिक तेज सु लाजै ॥२॥

ओं ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां जन्ममङ्गलप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय अ०

कलि पौष इकादशि आई, तब बारह भावना भाई ।
अपने कर लोंच सु कीना, हम पूजैं चरन जजीना ॥३॥

ओं ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय अ०

कलि चैत चतुर्थी आई, प्रभु केवलज्ञान उपाई ।
तब प्रभु उपदेश जु कीना, भवि जीवनको सुख दीना ॥४॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णचतुर्थीदिने केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्राय अर्घं० ।

सित सातैं सावन आई, शिवनारि वरी जिनराई ।
सम्मेदाचल हरि माना, हम पूजैं मोक्ष कल्याना ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लसप्तम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्राय अर्घं० ।

जयमाला ।

पारसनाथ जिनेन्द्रतने वच, पौनभखी जरतें सुन पाये ।
कर्यरो सरधान लह्यो पद आन भयो पद्मावति शेष कहाये ॥

नाम प्रताप टरै संताप सु भव्यनको शिवशरम दिखाये।
है विश्वसेनके नंद भले, गुणगावत हैं तुमरे हरखाये॥ १॥

दोहा—केकी-कंठ समान छवि, वपु उतंग नव हाथ।
लक्षण उरग निहारपग, वंदों पारसनाथ॥

पद्धरि छन्द।

रची नगरी छहमास अगार, वने चहुँगोपुर शोभ अपार।
सुकोटतनी रचना छवि देत, कंगूरनपैं लहकैं वहुकेत॥ २॥
बनारसकी रचना जु अपार, करी वहुभांति धनेश तैयार।
तहां विश्वसेन नरेंद्र उदार, करै सुख वाम सु दे पटनार॥ ३॥
तज्यो तुम प्रानत नाम विमान, भये तिनके वर नंदन आन।
तवै सुरइन्द्र नियोगन आय, गिरिंद करी विधि न्हौन सु जाय॥४॥
पिता घर सौपि गये निज धाम, कुवेर करै वसु जाम सु काम।
वढै जिन दोज मयंक समान, रमै वहु वालक निर्जर आन॥६॥
भये जब अष्टम वर्ष कुमार, धरे अणुव्रत्त महासुखकार।
पिता जव आनकरी अरदास, करौ तुम व्याह वरै मम आस॥७॥
करी तव नाहिं रहे जगचंद, किये तुम काम कषाय जुमंद।
चढे गजराज कुमारन संग, सु देखत गंगतनी सु तरंग॥ ८॥
लख्यो इक रंग करै तप घोर, चहुंदिशि अगनि वलय अति जोर।
कहै जिननाथ अरे सुन भ्रात, करै वहु जीवन की मत घात॥६॥
भयो तब कोप कहै कित जीव, जले तव नाग दिखाय सजीव।
लख्यो यह कारण भावन भाय, नये दिव ब्रह्मऋषीसुर आय॥१०॥
तवहि सुर चार प्रकार नियोग, धरी शिविका निज कंध मनोग।
कियो वनमांहि निवास जिनंद, धरे व्रत चारित आनंद कंद॥११॥
गहे तहं अष्टम के उपवास, गये धनदत्त तने जु अवास।

दियो पयदान महा-सुखकार, भई पनवृष्टि तहां तिहिं बार ॥१२॥
गये तब काननमाहिं दयाल, धरयो तुम योग सबहिं अघटाल।
तबै वह धूम सुकेत अयान, भया कमठाचरको सुर आन ॥१३॥
करै नभगौन लखे तुम धीर, जु पूरब वैर विचार गहीर।
कियो उपसर्ग भयानक घोर, चली बहु तीक्षण पवन झकोर ॥१४॥
रह्यो दसहूँ दिशि मैं तम छाय, लगी बहु अग्नि लखी नहिं जाय।
सुरुंडन के बिन मुंड दिखाय, पडै जल मूसलधार अथाय ॥१५॥
तबै पद्मावती कंथ धनिंद, चले जग आय जहां जिनचंद।
भग्यो तबरंक सु देखत हाल, लह्यो तब केवल ज्ञान विशाल ॥१६॥
दियो उपदेश महा हितकार, सुभव्यन बोधि समेद पधार।
सुवर्णभद्र जहँ कूट प्रसिद्ध, वरी शिव नारि लही वसुरिद्ध ॥ १७ ॥
जजूं तुम चरन दुहूं कर जोर, प्रभू लखिये अब ही मम ओर।
कहै 'बखतावर' रत्न बनाय, जिनेश हमें भवपार लगाय ॥ १८ ॥

घत्ता।

जय पारस देवं सुरकृत सेवं वंदत चरण सुनागपती।
करुणा के धारी परउपकारी, शिवसुखकारी कर्महती ॥ १९ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अडिल्ल।

जो पूजै मनलाय भव्य पारस प्रभु नितही,
ताके दुख सब जांय भीत व्यापै नहिं कितही।
सुख संपति अधिकाय पुत्र मित्रादिक सारे,
अनुक्रमसों शिव लहै 'रतन' इमि कहै पुकारे ॥ २० ॥

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलि)।

श्री महावीर जिन पूजा

श्रीमत वीर हरै भवपीर भरै सुखसीर अनाकुलताई ।
केहरि अङ्क अरीकरदंक नये हरिपंकति मौलि सुआई ॥
मैं तुमको इतथापतु हौं प्रभु भक्ति समेत हिये हरषाई ।
हे करुणाधन धारक देव ! इहां अब तिष्ठहु शीघ्रहि आई ॥

ॐ ह्रीं श्रीवर्धमान जिनेन्द्र ! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

छीरो दधि सम शुचि नीर कञ्चन भृङ्ग भरौं,
प्रभु वेग हरो भवपीर यातैं धार करौं ।
श्री वीर महा अतिवीर सन्मति नायक हो ।
जय वर्धमान गुण धीर सन्मति दायक हो ॥ १ ॥ जलं
मलयागिर चन्दन सार केसर संग घसौं ।
प्रभु भवआताप निवार पूजत हिय हुलसौं । श्रीवीर० । चं०
तन्दुल सित शशि सम शुद्ध लीने थार भरी ।
तसु पुञ्ज धरौं अविरुद्ध पाऊं शिवनगरी । श्रीवीर० । अ०
सुरतरु के सुमन समेत सुमन सुमन प्यारे ।
सो मनमथ भञ्जन हेत पूजौं पद थारे । श्री वीर० । पु०
रस रज्जत सज्जत सद्य मज्जत थार भरी ।
पद जज्जत रज्जत अद्य भज्जत भूख अरी । श्रीवीर० । नैवे०
तम खण्डित मंडित नेह दीपक जोवत हौं ।
तुम पदतर हे सुख गेह भ्रमतम खोवत हौं । श्रीवीर० । दी०
हरिचन्दन अगर कपूर चूर सुगन्ध करा ।
तुम पदतर खेवत भूर आठों कर्म जरा । श्रीवीर० । धूपंम्

ऋतु फल कलवर्जित लाय कञ्चन थार भरों।
शिवफल हित हे जिनराय तुम ढिग भेंट धरों। श्रीवीर०। फ०
जल फल वसु सजि हिम थार तन मन मोद धरों।
गुण गाऊं भवदधि पार पूजत पाप हरों। श्रीवीर०। अर्घ्यम् ॥६॥

पंच कल्याणक

मोहि राखो हो शरना, श्रीवर्धमान जिनरायजी, मोहि०
गरभ षाढ सित छट्ठलियो तिथि, त्रिशलाउर अघहरना,
सुर सुरपति तित सेवककरी नित, मैं पूजों भवतरना, मोहि०
ओं ह्रीं आषाढशुक्लाषष्ठ्यांगर्भमंगलमंडिताय श्रीमहावीरायऽर्घ्यं।
जनम चैतसित तेरस के दिन कुण्डलपुर कनवरना,
सुरगिरि सुरगुरु पूज रचायो मैं पूजों भव हरना मोहि०
ओं ह्रीं चैत्रशुक्लात्रयोदश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीमहावीरायऽर्घ्यं।
मंगसिर असित मनोहर दशमी ता दिन तप आचरना,
नृपकुमार घर पारण कीनो मैं पूजों तुम चरना। मोहि०
ओं ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णादशम्यांतपोमंगलमंडिताय श्रीमहावीरायऽर्घ्यं।
शुक्ल दशैं वैशाख दिवस अरि घाति चतुक छय करना।
केवल लहि भवि भवसर तारे जजों चरन सुखभरना।मोहि०
ओं ह्रीं वैशाखशुक्लादशम्यां केवलज्ञानमंडिताय श्रीमहावीरायऽर्घ्यं।
कार्तिक श्याम अमावस शिव तिय, पावापुरतैं बरना,
गणफणिवृन्द जजैं नितबहुविध मैं पूजों भय हरना। मोहि०
ओं ह्रीं कार्तिक कृष्णामावश्यायां मोक्षकल्याणकमंडिताय श्रीमहावीर जिनायअर्घ्यं०।

जयमाला

गनधर अशनिधर चक्रधर हर धर गदाधर वरवद।
अरु चाप धर विद्यासुधर त्रिशूल धर सेवहिं सदा॥
दुःख हरन आनंद भरन तारन तरन चरन रसाल है।
सुकुमाल गुनमनिमाल उन्नत भाल की जयमाल है ॥१॥
घत्ता–जय त्रिशलानन्दन हरिकृतवन्दन जगदानन्दन चन्दवरं,
भवतापनिकन्दन तनमनवन्दन रहित सपन्दन नयनधरं ॥२॥

त्रोटक छन्द ।

जय केवल भानुकला सदनं, भवि कोक विकासन कंजवनं।
जग जीत महारिपु मोह हरं, रजज्ञान दृगांवर चूर करं ॥ १ ॥
गर्भादिक मङ्गल मण्डित हो, दुःख दारिद को नित खण्डित हो।
जगमांहि तुम्हीं सत पण्डित हो, तुमही भव भावविहण्डित हो ॥२॥
हरिवंश सरोजनकों रवि हो, बलवन्त महन्त तुमही कवि हो।
लहि केवल धर्म प्रकाश कियो, अवलों सोइ मारग राजति यो ॥३॥
पुनि आप तने गुनमांहि सही, सुरमग्न रहे जितने सब ही।
तिनकी वनिता गुनगावत है, लय ताननि सों मन भावत हैं ॥४॥
पुनि नाचत रङ्ग उमङ्ग भरी, तुव भक्ति विषैं पग एम धरी।
झननं झननं झननं झननं, सुर लेत तहां तननं तननं ॥ ५ ॥
घननं घननं घन घण्ट बजे, दम दम दम दम मरदङ्ग सजै।
गगनांगन गर्भ गता सुगता, ततता ततता अतता वितता ॥ ६ ॥
धृगतां धृगतां गति बाजत है, सुरताल रसाल जु छाजत है।
सननं सननं सननं नभ में, इक रूप अनेक जु धारि भ्रमैं ॥ ७ ॥
केई नारि सुवीन बजावति हैं, तुमरो जस उज्ज्वल गावति हैं।
करताल विषैं करताल धरैं, सुरताल विशाल जु नाद करैं ॥ ८ ॥
इन आदि अनेक उछाह भरी, सुर भक्ति करै प्रभु जी तुमरी।
तुम ही जगजीवन के पितु हो, तुम ही बिनकारन के हितु हो ॥९॥

तुम ही सब विघ्न विनाशन हो, तुम ही निज आनन्द भासन हो।
तुम ही चित चिंतित दायक हो, जग मांही तुम्हीं सब लायक हो ।१०
तुमरे पन मङ्गल मांही सही, जिय उत्तम पुण्य लियो सब ही।
हम तो तुमरी शरनागत हैं, तुमरे गुनमें मन पागत हैं ॥ ११ ॥
प्रभु मो हिय आप सदा वसिये, जब लौं वसु कर्म नहीं नसिये।
तबलों तुम ध्यान हिये बरतो, तबलों श्रुतचिंतन चित्त रतो ॥१२॥
तबलों व्रत चारित चाहत हों, तब लों शुभ भाव सुगाहत हो।
तबलों सत सङ्गति नित्त रहो, तबलों मम संजम चित्त गहो ॥१३॥
जबलों नहिं नाश करों अरिको, शिवनारि वरों समता धरिकों।
यह द्यो तबलों हमको जिनजी, हम जाचतु हैं इतनी सुनजी ॥१४॥
घत्ता श्रीवीर जिनेशा, नमत सुरेशा, नाग नरेशा, भगति भरा।
'वृन्दावन' ध्यावै, विघन नशावै वांछित पावै, शर्मवरा ॥
ओं ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय महार्घं निर्व०
दोहा—श्रीसन्मति के जुगलपद, जो पूजै धर प्रीत।
'वृन्दावन' सो चतुर, नर लहै मुक्ति नवनीत ॥
इत्याशीर्वादः।

अथ महार्घं।

गीता छन्द।

मैं देव श्री अर्हंत पूजूं सिद्ध पूजूं चाव सों।
आचार्य श्री उवज्झाय पूजूं साधु पूजूं भाव सों ॥
अर्हंत भाषित वैन पूजूं द्वादशांग रची गनी।
पूजूं दिगम्बर गुरुचरन शिवहेत सब आशा घनी ॥
सर्वज्ञ भाषित धर्म दश विधि दया मय पूजूं सदा।
जजि भावना षोडशरतनत्रय जा बिना शिव नहिं कदा ॥

त्रैलोक्यके कृत्रिम अत्रिम चैत्य चैत्यालय जजूं ।
पंचमेरु नंदीश्वर जिनालय, खचर सुर पूजित भजूं ॥
कैलाश श्री सम्मेद गिर गिरनार मैं पूजूं सदा ।
चंपापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा ॥
चौबीस श्री जिनराज पूजूं बीस क्षेत्र विदेह के ।
नामावली इक सहस वसु जयहोय पति शिव गेहके ॥

दोहा ।

जल गन्धाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय ।
सर्व पूज पद पूजहूं, वहु विध भक्ति बढाय ॥

ओं ह्रीं अर्हन्तजी सिद्धजी आचार्यजी उपाध्यायजी सर्वसाधुजी द्वादशांग जिनवाणी, दशलाक्षणिक धर्म, सोलहकारण भावना सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्ररत्नत्रय, तीनलोक संबंधि कृत्रिम अकृत्रिम चैत्यालय, नंदीश्वर द्वीप संबंधि बावन जिन चैत्यालय श्री सम्मेदशिखर कैलाशगिर गिरनारी चंपापुर पावापुर आदि सिद्ध क्षेत्र अतिशय क्षेत्र, विद्यमान बीस तीर्थंकर, भगवान के एक हजार आठ नाम श्री वृषभादि महावीर पर्यन्त चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जलाद्यर्घं महार्घं निर्वपामीति स्वाहा

स्वयंभू स्तोत्र भाषा ।

चौपाई ।

राजविषै जुगलनि सुख कियो, राज त्याग भवि शिवपद लियो ।
स्वयं बोध स्वभू भगवान, वंदौं आदिनाथ गुणखान ॥ १ ॥
इन्द्र क्षीरसागर जल लाय, मेरुन्हवाये गाय बजाय ।
मदन विनाशक सुख करतार, वंदौं अजित अजितपदकार ॥ २ ॥

शुक्ल ध्यानकरि करम विनाशि, घाति अघाति सकल दुखराशि।
लह्यो मुकतिपदसुख अविकार, बंदौं संभव भवदुख टार ॥ ३ ॥
माता पच्छिम रयनमंझार, सुपने सोलह देखे सार।
भूप पूछि फल सुनि हरषाय, बंदौं अभिनंदन मनलाय ॥ ४ ॥
सर्व कुवादवादी सरदार, जीते स्यादवादधुनिधार।
जैनधरम परकाशक स्वामि, सुमतिदेवपद करहुँ प्रणामि ॥ ५ ॥
गर्भ अगाऊ धनपति आय, करी नगर शोभा अधिकाय।
बरसे रतन पंचदश मास, नमौं पदमप्रभु सुखकी रास ॥ ६ ॥
इंद फनिंद नरिंद त्रिकाल, बानी सुनि सुनि होहिं खुस्याल।
द्वादशसभा ज्ञानदातार, नमौं सुपारसनाथ निहार ॥ ७ ॥
सुगुन छियालिस हैं तुम मांहिं, दोष अठारह कोऊ नाहिं।
मोह महातमनाशक दीप, नमौं चंद्रप्रभु राख समीप ॥ ८ ॥
द्वादश विध तप करम विनाश, तेरह भेद चरित परकाश।
निज अनिच्छ भवि इच्छकदान, बंदौं पहुपदंत मनआन ॥ ९ ॥
भविसुखदाय सुरगतै आय, दशविध धरम कह्यो जिनराय।
आप समान सबनि सुख देह, बंदौं शीतल धर्मसनेह ॥ १० ॥
समता सुधा कोपविष नाश, द्वादशांग बानी परकाश।
चारसघ-आनंद-दातार, नमौं श्रेयांस जिनेश्वर सार ॥ ११ ॥
रतनत्रयचिरमुकुट विशाल, सोभै कंठ सुगुन मनिमाल।
मुक्तिनार भरता भगवान, वासुपूज्य बंदौं धर ध्यान ॥ १२ ॥
परम समाधि-स्वरूप जिनेश, ज्ञानी ध्यानी हित उपदेश।
कर्मनाशि शिवसुख विलसंत, बंदौं विमलनाथ भगवन्त ॥ १३ ॥
अन्तर बाहिर परिग्रह डारि, परम दिगम्बरव्रतको धारि।
सर्वजीवहित-राह दिखाय, नमों अनंत वचनमनकाय ॥ १४ ॥
सात तत्त्व पंचासतिकाय, अरथ नवों छ दरव बहुभाय।
लोक अलोक सकल परकास। बंदौं धर्मनाथ अविनाश ॥ १५ ॥

पंचम चक्रवर्ति निधिभोग, कामदेव द्वादशम मनोग।
शांतिकरन सोलम जिनरांय, शांतिनाथ वंदौं हरपाय ॥ १६ ॥

बहुथुति करे हरष नहिं होय, निंदे दोष गहैं नहिं कोय।
शीलवान परब्रह्मस्वरूप, वंदौ कुंथु नाथ शिवभूप ॥ १७ ॥

द्वादशगण पूजै सुखदाय, थुति वंदना करै अधिकाय।
जाकी निजथुति कबहुं न होय, वदौं अरजिनवर-पद दोय ॥ १८ ॥

परभव रतनत्रय-अनुराग, इह भव व्याह समय वैराग।
बालब्रह्मपूरनव्रतधार, वंदौ मल्लिनाथ जिनसार ॥ १६ ॥

बिन उपदेश स्वयं वैराग, थुति लौकांत करै पगलाग।
नमः सिद्ध कहि सब व्रत लेहि, वंदौं मुनिसुव्रत व्रत देहिं ॥ २० ॥

श्रावक विद्यावंत निहार, भगतिभावसौं दियो अहार।
बरसी रतनराशि ततकाल, वंदौं नमिप्रभु दीनदयाल ॥ २१ ॥

सब जीवन की बन्दी छोर, रागद्वेष द्वै बंधन तोर।
रजमति तजि शिवतियसौं मिले, नेमिनाथ वंदौं सुख मिले ॥ २२ ॥

दैत्यकियो उपसर्ग अपार, ध्यान देखि आयो फनिधार।
गयो कमठ शठ मुख कर श्याम, नमों मेरुसम पारसस्वाम ॥ २३ ॥

भवसागरतैं जीव अपार, धरमपोत में धरे निहार।
डूबत काढे दया विचार, वर्द्धमान वन्दौं बहुवार ॥ २४ ॥

दोहा:—चौबीसौं पदकमलजुग, वन्दौं मनवचकाय।
'द्यानत' पढ़े सुनै सदा, सो प्रभु क्यों न सहाय ॥

शांतिपाठ संस्कृत।

(शांतिपाठ बोलते समय दोनों हाथों से पुष्पवृष्टि करते रहें।)

दोधकवृत्तं।

शांतिजिनं शशिनिर्मलवक्त्रं, शीलगुणव्रतसंयमपात्रं।
अष्टशतार्चितलक्षणगात्रं, नौमि जिनोत्तममंबुज नेत्रं ॥ १ ॥

पञ्चमभीप्सित चक्रधराणां, पूजितमिन्द्रनरेन्द्रगणैश्च ।
शांतिकरं गणशांतिमभीप्सुः षोड़शतीर्थंकरं प्रणमामि ॥ २ ॥
दिव्यतरुः सुरपुष्पसुवृष्टिर्दुन्दुभिरासनयोजनघोषौ ।
आतपवारणचामरयुग्मे यस्य विभाति च मंडलतेजः ॥ ३ ॥
तं जगदर्चितशांतिजिनेन्द्रं शांतिकरं शिरसा प्रणमामि ।
सर्वगणाय तु यच्छतु शांतिं मह्यमरं पठते परमां च ॥ ४ ॥

वसंततिलका छन्द ।

येऽभ्यर्चिता मुकुटकुण्डलहाररत्नैः, शक्रादिभिः सुरगणैः स्तुतपादपद्माः ।
ते मे जिनाः प्रवरवंशजगत्प्रदीपास्तीर्थंकराः सततशांतिकरा भवन्तु ॥५॥

इन्द्रवज्रा ।

सम्पूजकानां प्रतिपालकानां यतीन्द्रसामान्यतपोधनानां ।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांतिं भगवान् जिनेन्द्रः ॥ ६ ॥

स्रग्धरावृत्तं ।

क्षेमं सर्व प्रजानां प्रभवतु बलवान् धार्मिको भूमिपालः ।
काले काले च सम्यग्वर्षतु मघवा व्याधयो यांतु नाशम् ।
दुर्भिक्षं चौरमारी क्षणमपि जगतां मा स्म भूज्जीवलोके ।
जैनेन्द्रं धर्मचक्रं प्रभवतु सततं सर्वसौख्यप्रदायि ॥ ७ ॥

अनुष्टुप—प्रध्वस्तघातिकर्माणः केवलज्ञानभास्कराः ।
कुर्वंतु जगतः शांतिं वृषभाद्या जिनेश्वराः ॥ ८ ॥

प्रथमं करणम् चरणं द्रव्यं नमः ।

अथेष्ट प्रार्थना ।

शास्त्राभ्यासो जिनपतिनुतिः सङ्गतिः सर्वदार्यैः ।
सद्वृत्तानां गुणगणकथा दोषवादे च मौनम् ।
सर्वस्यापि प्रियहितवचो भावना चात्मतत्त्वे ।
सम्पद्यंतां मम भवभवे यावदेतेऽपवर्गः ॥ ६ ॥

आर्यावृत्तं ।

तव पादौ मम हृदये मम हृदयं तव पदद्वये लीनम् ।
तिष्ठतु जिनेन्द्र ! तावद्यावन्निर्वाणसंप्राप्तिः ॥ १० ॥

अक्खरपयत्थहीणं मत्ताहीणञ्च जं मए भणियं ।
तं खमउ णाणदेव य मज्झवि दुक्खक्खयम् दिंतु ॥११॥

दुःक्खक्खओ कम्मक्खओ, समाहिमरणञ्च बोहिलाहो य ।
मम होउ जगतबान्धव तव, जिणवर चरणसरणेण ॥१२॥

संस्कृत प्रार्थना ।

त्रिभुवनगुरो ! जिनेश्वर ! परमान्दकैककारणम् कुरुष्व ।
मयि किंकरेत्र करुणां यथा तथा जायते मुक्तिः ॥१३॥

निर्विण्णोहम् नितरामर्हन् वहुदुक्खया भवस्थित्या ।
अपुनर्भवाय भवहर ! कुरु करुणामत्र-मयि दीने ॥१४॥

उद्धर मां पतितमतो विषमाद् भवकूपतः कृपां कृत्वा ।
अर्हन्नलमुद्धरणे त्वमसीति पुनः पुनर्वच्मि ॥१५॥

त्वं कारुणिकः स्वामी त्वमेव शरणं जिनेश ! तेनाहं ।
मोहरिपुदलितमानं फूत्करणं तव पुरः कुर्वे ॥१६॥

ग्रामपतेरपि करुणा परेण केनाप्युपद्रुते पुंसि ।
जगतां प्रभो ! न किं तव, जिन ! मयि खलु कर्मभिः प्रहते ॥१७॥

अपहर मम जन्मदयां, कृत्वेत्येकवचसि वक्तव्ये ।
तेनातिदग्ध इति मे देव ! बभूव प्रलापित्वं ॥ १८ ॥

तव जिनवर ! चरणाब्जयुगं करुणामृतशीतलं यावत् ।
संसारतापतप्तः करोमि ह्रांद तावदेव सुखी ॥ १९ ॥

जगदेकशरण भगवन् ! नौमि श्रीपद्मनंदितगुणौघ ।
किं बहुना कुरु करुणामत्र जने शरणमापन्ने ॥ २० ॥

परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

विसर्जन संस्कृत ।

ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि शास्त्रोक्तं न कृतं मया।
तत्सर्वपूर्णमेवास्तु त्वत्प्रसादाज्जिनेश्वर ॥ १ ॥
आह्वानं नैव जानामि नैव जानामि पूजनं ।
विसर्जनं न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ॥२॥
मंत्रहीनं क्रियाहीनं द्रव्यहीनं तथैव च ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव रक्ष रक्ष जिनेश्वर ॥ ३ ॥
आहूता ये पुरा देवा लब्धभागा यथाक्रमं ।
ते मयाऽभ्यर्चिता भक्त्या सर्वे यांतु यथास्थितिं ॥ ४ ॥
सर्वमंगल मांगल्यं सर्व कल्याणकारकम् ।
प्रधानं सर्वधर्माणां जैनं जयतु शासनम् ॥ ५ ॥

—:देव पूजा:—

दोहा—प्रभु तुम राजा जगतके, हमें देय दुख मोह ।
तुम पद पूजा करतहूं, हमपै करुणा होहि ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहितषट्चत्वारिंशद्गुणसहित श्रीजिनेन्द्र भगवन् अत्रावतरावतर संवौषट् । ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहितषट्चत्वारिंशद्गुणसहितश्रीजिनेन्द्रभगवन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः । ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहितषट्चत्वारिंशद्गुणसहितश्रीजिनेंद्रभगवन् अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

छन्द त्रिभङ्गी ।

बहु तृषा सतायो, अति दुख पायो, तुमपै आयो जल लायो।
उत्तम गंगाजल, शुचि अति शीतल, प्रासुक निर्मल, गुन

गायो ॥ प्रभु अन्तरजामी, त्रिभुवननामी, सबके स्वामी, दोष हरो। यह अरज सुनीजै, ढील न कीजै, न्याय करीजै, दया धरो ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं अष्टादशदोष रहितषट्चत्वारिंशद्गुणसहित श्रीजिनेन्द्र भगवद्भ्यो जन्ममृत्युविनाशाय जलं ॥

अघतपत निरन्तर, अगनिपटन्तर, मो उर अन्तर खेद करयो। लै बावन चन्दन, दाहनिकंदन, तुमपदवन्दन, हरष धरयो।। प्र०

ॐ ह्रीं अष्टा० श्रीजिनेभ्यो भवतापनाशाय चन्दनं नि० ।

औगुन दुखदाता, कह्यो न जाता, मोहिं असाता, बहुत करै। तन्दुल गुनमण्डित, अमल अखण्डित, पूजत पंडित, प्रीति धरै ॥ प्रभु० ॥

ॐ ह्रीं अष्टा० श्रीजिनेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि० ।

सुरनर पशुको दल काम महाबल बात कहत छल मोहि लिया। ताके शर लाऊं फूल चढ़ाऊं भगति बढाऊं खोल हिया ॥ प्र.

ॐ ह्रीं अष्टा० श्रीजिनेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि० ।

सब दोषनमाहीं, जासम नाहीं, भूख सदा ही मो लागै। सद घेवर बावर, लाडू बहु धर, थार कनक भर, तुम आगै। प्र.

ॐ ह्रीं अष्टा० श्रीजिनेभ्यो क्षुधारोगनाशाय नैवेद्यं नि० ।

अज्ञान महातम, छाय रह्यौ मम, ज्ञान ढक्यौ हम, दुख पावैं। तम मेटनहारा, तेज अपारा, दीप संवारा, जस गावैं ॥ प्रभु०

ॐ ह्रीं अष्टा० श्रीजिनेभ्यो मोहान्धकारविनाशाय दीपं।

इह कर्म महाबन, भूल रह्यौ जन, शिवमारग नहिं पावत हैं। कृष्णागरुधूपं, अमल अनूपं, सिद्धस्वरूपं ध्यावत हैं ॥ प्र०

ॐ ह्रीं अष्टा० श्रीजिनेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं० ।

सबते जोरावर, अन्तराय अरि, सुफल विघ्न करि डारत हैं ।
फलपुञ्ज विविध भर, नयनमनोहर, श्रीजिनवर पद धारत हैं ॥ प्र.

ॐ ह्रीं अष्टा० श्रीजिनेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं ॥

आठौं दुखदानी, आठ निशानी, तुम ढिंग आनि निवारन हो ।
दीननिस्तारन, अधम उधारन, 'द्यानत' तारन, कारन हो ॥ प्र.

ॐ ह्रीं अष्टा० श्रीजिनेन्द्रभवद्भ्योऽनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं ।

जयमाला ।

दोहा–गुण अनंत को कहि सकै, छियालीस जिनराय ।
प्रगट सुगुन गिनती कहूं, तुम ही होहु सहाय ॥ १ ॥

चौपाई (१६ मात्रा)

एक ज्ञान केवल जिनस्वामी, दो आगम अध्यातम नामी ।
तीन काल विधि परगट जानी, चार अनन्तचतुष्टय ज्ञानी ॥२॥

पञ्च परावर्तन परकासी, छहों दरब गुन परजय भासी ।
सातभङ्गवानी परकाशक, आठों कर्म महारिपु नाशक ॥३॥

नव तत्वनके भाखनहारे, दश लच्छनसों भविजन तारे ।
ग्यारह प्रतिमाके उपदेशी, बारह सभा सुखी अकलेशी ॥४॥

तेरहविधि चारितके दाता, चौदह मारगनाके ज्ञाता,
पन्द्रह भेद प्रमाद निवारी, सोलह भावन फल अविकारी ॥५॥

तारे सत्रह अङ्क भरत भुव, ठारै थान दान दाता तुव ।
भाव उनीस जु कहे प्रथम गुन, वीस अङ्क गणधरजीकी धुन॥६॥

इकइस सर्व घातविधि जानै, बाइस बंध नवम गुणथानै ।
तेइस निधि अरु रतन नरेश्वर, सो पूजै चौवीस जिनेश्वर ॥७॥

नाश पचीस कषाय करी हैं, देशघाति छब्बीस हरी हैं ।
तत्व दरब सत्ताइस देखे, मति विज्ञान अठाइस पेखे ॥ ८ ॥

उनतीस अङ्क मनुष सब जाने, तीस कुलाचल सर्व बखाने ।
इकतिस पटल सुधर्म निहारे, बत्तीस दोष समाइक टारे ॥६॥
तेतीस सागर सुखकर आये, चौंतिस भेद अलब्धि बताये ।
पैंतिस अक्षर जप सुखदाई, छत्तिस कारन रीति मिटाई ॥११॥
सैंतिस मग कहि ग्यारह गुनमें, अडतिस पद लहि नरक अपुनमें ।
उनतालीस उदीरन तेरम, चालिस भवन इन्द्र पूजें नम ॥११॥
इकतालीस भेद आराधन, उदै बियालीस तीर्थंकर भन ।
तैंतालीस बन्ध ज्ञाता नहिं, द्वार चवालिस नर चौथेमहिं ॥१२॥
पैंतालीस पल्यके अक्षर, छियालिस बिन दोष मुनीश्वर ।
नरक उदै न छियालिस मुनिधुन, प्रकृत छियालिस नाश दशम गुन
छियालीस घन राजु सात भुव, अंक छियालीस सरसों कहि कुव ।
भेद छियालीस अन्तर तपवर । छियालीस पूरन गुन जिनवर।१४
अडिल्ल–मिथ्यातपन निवारण चंद्र समानहो । मोहतिमिर वारनको कारन भान हो ॥ काम कषाय मिटावन मेघ मुनीश हो । 'द्यानत' सम्यकरतनत्रयगुनईश हो ॥ १५ ॥

ओं ह्रीं अष्टादशदोषरहितषट्चत्वारिंषत्गुणसहितश्रीजिनेंद्रभगवद्भ्यो पूर्णाऽर्घ्यं निर्वपा० ।

अथ सरस्वतीपूजा ।

शास्त्रजी को उच्चासन पर विराजमान करके पूजा करना चाहिये ।

दोहा–जनम जरा मृतु छय करै, हरै कुनय जडरीति ।
भवसागरसों ले तिरै, पूजै जिनवचप्रीत ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतिवाग्वादिनि ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

छीरोदधि गंगा, विमल तरंगा, सलिल अभंगा, सुखसंगा।
भरि कंचन झारी, धार निकारी, तृषा निवारी, हित चंगा।
तीर्थंकरकी धुनि, गणधरने सुनि, अंग रचे चुनि ज्ञान मई।
सो जिनवरवानी, शिवसुखदानी त्रिभुवन मानी, पूज्य भई॥ १॥

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै जलं नि०।

करपूर मंगाया, चन्दन आया, केशर लाया, रंग भरी।
शारदपद वन्दौं, मन अभिनन्दौ, पापनिकंदौं, दाहहरी॥ तीर्थं०

ओं ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

सुखदास कमोदं, धारकमोदं, अतिअनुमोदं चंदसमं। बहु-
भक्ति बढाई कीरति गाई, होहु सहाई, मात ममं॥तीर्थं०॥२॥

ओं ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्तीदेव्यै अक्षतान् निर्वपा०॥ ३॥

बहुफूलसुवासं, विमलप्रकाशं, आनन्दरासं लाय धरे। मम
काम मिटायौ, शील बढायौ, सुख उपजायौ दोष हरे। तीर्थं०

ओं ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्तीदेव्यै पुष्पं निर्वपा०॥ ४॥

पकवान बनाया, बहुघृत लाया, सब विध भाया, मिष्ट महा
पूजं थुति गाऊं, प्रीति बढाऊं छुधा नसाऊं, हर्ष लहा। तीर्थं०

ओं ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै नैवेद्यं निर्वपा०॥ ४॥

करि दीपक ज्योतं, तमछयहोतं, ज्योति उदोतं तुमहि चढै
तुमहो परकाशक, भरमविनाशक, हम घट भाशक ज्ञानबढै। ती.

ओं ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै दीपं निर्वपा०॥ ६॥

शुभगंध दशोंकर, पावकमें धर, धूप मनोहर खेवत हैं। सब
पाप जलावैं, पुण्य कमावैं, दास कहावैं, सेवत हैं॥ तीर्थं०

ओं ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै धूपं निर्वपा०॥ ७॥

बादाम छुहारी, लौंग सुपारी, श्रीफल भारी ल्यावत हैं।
मनवांछित दाता, मेट असाता, तुम गुन माता ध्यावत हैं ॥ तीर्थं०
ओं ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै फलं निर्वपा० ॥८॥

नयननिसुखकारी, मृदुगुनधारी, उज्वल भारी, मोल धरै।
शुभगंधसम्हारा, बसन निहारा, तुमतर धारा ज्ञान धरै॥ तीर्थं०
ओं ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वती देव्यै अर्घं निर्वपा० ॥ ९ ॥

जल चन्दन अच्छत, फूल चरू चत, दीप धूप अति, फल लावै।
पूजाको ठानत, जो तुम जानत, सो नर 'द्यानत' सुख पावै॥तीर्थ.
ओं ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यैऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥१०॥

सोरठा—ओंकार धनिसार, द्वादशांग वाणी विमल।
नमों भक्ति उरधार, ज्ञान करै जड़ता हरै॥

पहला आचारांग बखानो, पद अष्टादस सहस प्रमानो।
दूजा सूत्रकृत अभिलाषं, पद छत्तीस सहस गुरुभाषं ॥ १ ॥
तीजा ठाना अंग सुजानं, सहस छियालीस पद सरधानं।
चौथा समवायांग निहारं, चौसठ सहस लाख इकधारं ॥ २ ॥
पञ्चम व्याख्याप्रगपति दरशं, दोय लाख अट्ठाइस सहसं।
छट्ठा ज्ञातृकथा विस्तारं, पांचलाख छप्पन हजारं ॥ ३ ॥
सप्तम उपाकाध्ययनंगं, सत्तर सहस ग्यारह लख भंगं।
अष्टम अन्तकृतं दश ईसं, सहस अठाईस लाख तेईसं ॥ ४ ॥
नवम अनुत्तरदश सुविशालं, लाख बानवै सहस चवालं।
दशम प्रश्न व्याकरण विचारं, लाखतिराबन सोल हजारं ॥ ५ ॥
ग्यारम सूत्रविपाक सुभाखं, एक कोड़ चौरासी लाखं।
चार कोड़ि अरु पन्द्रह लाखं, दो हजार सब पद गुरुशाखं ॥६॥
द्वादश दृष्टिवाद पन भेदं, इकसौ आठ कोड़िपन वेदं।
अड़सठ लाख सहस छप्पन हैं, सहित पञ्चपद मिथ्याहन हैं॥७॥

इक सौ बारह कोड़ बखानो, लाख तिरासी ऊपर जानो।
ठावन सहस पञ्च अधिकाने। द्वादश अंग सर्व पद माने॥८॥
कड़ि इकावन आठहि लाखं, सहस चुरासी छहसौ भाखं।
साढे इकीस श्लोक बताये, एक एक पदके ये गाये॥ ६॥
घत्ता—जा बानीके ज्ञानमें, सूझै लोक अलोक।
'द्यानत' जगजयवन्त हो, सदा देत हों धोक॥ १॥
ओं ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति०

इति सरस्वती पूजा।

गुरु पूजा।

दोहा—चहुँ गति दुखसागरविषैं, तारनतरन जिहाज।
रतनत्रयनिधि नगन तन, धन्य महा मुनिराज॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीआचार्योपाध्यायसर्वसाधुगुरुसमूह! अत्रावतरावतर। संवौषट्। ॐ ह्रीं श्रीआचार्योपाध्यायसर्वसाधुगुरुसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। ॐ ह्रीं श्रीआचार्योपाध्यायसर्वसाधुगुरुसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट्।

शुचि नीर निरमल छीरदधिसम सुगुरु चरन चढ़ाइया।
तिहुं धार तिहुं गदटार स्वामी, अति उछाह बढ़ाइया॥
भवभोगतनवैराग धार, निहार शिव तप तपत हैं।
तिहुं जगतनाथ अराध साधु सुपूज नित गुन जपत हैं॥ १॥

ॐ ह्रीं आचार्योपाध्यायसर्वसाधुगुरुभ्यः जलं नि०॥ १॥

करपूर चन्दन सलिलसौं घसि, सुगुरुपद पूजा करौं।
सब पाप ताप मिटाय स्वामी, धरम शीतल विस्तरौं॥ भव०॥२॥

ॐ ह्रीं आचार्योपाध्यायसर्वसाधुगुरुभ्यः चन्दनं नि० ॥ २ ॥

तन्दुल कमोद सुवास उज्जल, सुगुरु पगतर धरत हैं ।
गुनकार औगुनहार स्वामी, वन्दना हम करत हैं ॥ भव० ॥३॥

ॐ ह्रीं आचार्योपाध्यायसर्वसाधुगुरुभ्यः अक्षतान् नि० ॥ ३ ॥

शुभफूलरासप्रकाश परिमल, सुगुरुपांयनि परत हों ।
निरवार मार उपाधि स्वामी, शील दृढ़ उर धरत हों ॥भव०।४

ॐ ह्रीं आचार्योपाध्यायसर्वसाधुगुरुभ्यः पुष्पं नि० ॥ ४ ॥

पकवान मिष्ठ सलौन सुन्दर, सुगुरु पांयन प्रीतिसौं ।
कर छुधारोग विनाश स्वामी, सुथिर कीजे रीतिसौं ॥भव० ॥५

ॐ ह्रीं आचार्योपाध्यायसर्वसाधुगुरुभ्यः नैवेद्यं नि० ॥ ५ ॥

दीपक उदोत सजोत जगमग, सुगुरु पद पूजों सदा ।
तमनाश ज्ञानउजास स्वामी, मोहि मोह न हो कदा ॥भव०॥६॥

ॐ ह्रीं आचार्योपाध्यायसर्वसाधुगुरुभ्यः दीपं नि० ॥ ६ ॥

बहु अगर आदि सुगंधखेऊं, सुगुण पद पद्महि खरे ।
दुख पुञ्जकाठ जलाय स्वामी, गुण अक्षय चितमें धरे ॥भ०॥

ओं ह्रीं आचार्योपाध्यायसर्वसाधुगुरुभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपं नि०

भर थार पूग बदाम बहुविधि, सुगुरुक्रम आगें धरों ।
मंगल महाफल करो स्वामी, जोर कर विनती करों ॥भव०॥

ओं ह्रीं आचार्योपाध्यायसर्वसाधुगुरुभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०

जल गंध अक्षत फूल नेवज, दीप धूप फलावली ।
'द्यानत' सुगुरुपद देहु स्वामी, हमहिं तार उतावली ॥भव०॥

ओं ह्रीं आचार्योपाध्यायसर्वसाधुगुरुभ्योऽनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं नि०

अथ जयमाल

दोहा—कनककामिनी विषयवश, दीसै सब संसार।
त्यागी वैरागी महा, साधु सुगुन भंडार ॥ १ ॥
तीन घाटि नवकोड सब, बंदौं शीश नवाय।
गुन तिन अट्ठाईस लौं कहूं आरती गाय ॥ २ ॥

एक दया पालैं मुनिराजा, रागद्वेष द्वै हरन परं।
तीनों लोक प्रगट सब देखैं, चारौं आराधननिकरं ॥
पंच महाव्रत दुद्धर धारैं, छहों दरब जानें सुहितं।
सातभंग वानी मन लावैं, पावैं आठ रिद्ध उचितं ॥३॥
नवों पदारथ विधिसौं भाखैं, बंध दशौं चूरन करनं।
ग्यारह शंकर जानै मानै, उत्तम बारह व्रत धरनं ॥
तेरह भेद काठिया चूरे, चौदह गुणगाथानक लखियं।
महाप्रमाद पंचदश नाशे, शील कषाय सबै नखियं ॥४॥
बंधादिक सत्रह सब चूरे ठारह जन्म न मरन मुनं।
एक समय उनईस परीषह, बीस प्ररूपनिमें निपुनं ॥
भाव उदीक इकीसौं जानै, बाइस अभखन त्याग करं।
अहिमिंदर तेइसौं वंदैं, इन्द्र सुरग चौबीस वरं ॥ ५ ॥
पचीसौं भावन नित भावै, छब्बिस अङ्गउपंग पढैं।
सत्ताइससों विषय विनाशैं, अट्ठाईसौं गुण सु बढैं।
शीतसमय सर चौपटवासी ग्रीषमगिरिसिर जोग धरै।
वर्षा वृत्ततरैं थिर ठाडे, आठ करम हनि सिद्धि वरैं ॥ ६ ॥

दोहा—कहों कहां लौं भेद मैं बुध थोडी गुण पूर।
'हेमराज' सेवक हृदय, भक्ति भरी भरपूर ॥ ७ ॥

ओं ह्रीं आचार्योपाध्यायसर्वसाधुगुरुभ्यो अर्घ्यं निर्व० ॥

पंच बालयती तीर्थंकर पूजा

दोहा—श्री जिन पंच अनंगजित, वासुपूज्य मलि नेम ।
पारसनाथ सुवीर अति, पूजूं चित धरि प्रेम ॥

ॐ ह्रीं पंच बालयति तीर्थंकरेभ्यो अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्रमम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ॥

अथाष्टकं—शुचि शीतल सुरभि सुनीर, लायो भर भारी ।
दुख जन्मन मरन गहीर, याको परिहारी ॥
श्री वासु पूज्य मलि नेमि, पारस वीर अती ।
नमुं मन वच तन धरि प्रेम पांचों बालयती ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य, मल्लिनाथ, नेमिनाथ, पारसनाथ, महावीर स्वामी, श्रीपंच बालयती तीर्थंकरेभ्यो नमः जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीतिस्वाहा ॥

चन्दन केशर करपूर, जल में घसि आनो ।
भव तप भंजन सुखपूर, तुमको मैं जानो ॥ श्री वासु० । चन्दनं
वर अक्षत विमल बनाय, सुवरण थाल भरे ।
बहु देश देश के लाय, तुमरी भेट धरे ॥ श्रीवासु० । अक्षतं
यह काम सुभट अति सूर, मन में क्षोभ करो ।
मैं लायो सुमन हजूर, याको बेग हरो ॥ श्रीवासु० । पुष्पं
षट्रस पूरित नैवेद्य, रसना सुखकारी ।
द्वय करम वेदनी छेद, आनन्द ह्वै भारी ॥ श्री वासु० । नैवेद्य
धरि दीपक जगमग ज्योति, तुम चरनन आगे ।
मम मोह तिमर क्षय होत, आतम गुण जागे ॥ श्री वासु० । दीपं

ले दशविधि धूप अनूप, खेऊं गन्ध मई ।
दशबन्ध दहन जिन भूप, तुम हो कर्म जई ॥ श्रीवासु० । धूपं
पिस्ता अरु दाख बदाम, श्रीफल लेय घने ।
तुम चरन जजूं गुण धाम, द्योसुख मोक्ष तने ॥ श्री वासु० । फलं
सजि वसुविधि द्रव्य मनोज्ञ, अरघ बनावत हैं ।
वसुकर्म अनादि संयोग, ताहि नसावत हैं ॥ श्री वासु० । अर्घं

अथ जयमाल

दोहा—बाल ब्रह्मचारी भये, पांचों श्री जिनराज ।
तिनकी अब जयमालिका, कहूँ स्वपर हितकाज ॥१॥
जय जय जय जय श्रीवासु पूज, तुम सम जगमें नहीं और दूज ।
तुम महा लक्ष सुर लोक छार, जब गर्भ मात माहीं पधार ॥२॥
षोड़श स्वपने देखे सुमात, बल अवधि जान तुम जन्म तात ।
अति हर्षधार दम्पति सुजान, बहु दानदियो जाचक जनान ॥ ३ ॥
छप्पन कुमारिका कियो आन, तुम मात सेव बहु भक्ति ठान ।
छःमास अगाऊ गर्भ आय, धनपति सुवरन नगरी रचाय ॥ ४ ॥
तुम मात महल आंगन मंझार, तिहुं कालरतन धारा अपार ।
वरषाए षट् नव मास सार, धनिजिन पुरुषन नयनन निहार ॥५॥
जय मल्लिनाथ देवन सुदेव, शतइन्द्र करत तुम चरण सेव ।
तुमजन्मत हीत्रयज्ञान धार, आनन्द भयो तिहुं जग अपार ॥६॥
तब ही ले चहु विधि देव सङ्ग, सौधर्म इंद्र आयो उमङ्ग ।
सजि गज ले तुम हरि गोद आप, बन पांडुक शिल ऊपर सुथाप ॥
क्षीरोदधि तैं बहु देव जाय, भरि जल घट हाथों हाथ लाय ।
करि न्हवन वस्त्र भूषण सजाय, दे तात नृत्य तांडव कराय ॥८॥
पुनि हर्ष धार हिरदै अपार, सब निर्जर रव जय जय उचार ।
तिस अवसर आनन्दहेजिनेश, हम कहिवे समरथ नाहिंलेश ॥९॥
जय जादोपति श्री नेमनाथ, हम नमत सदा जुग जोर हाथ ।
तुम ब्याह समय पशुवन पुकार, सुन तुरत छुडाये दयाधार ॥१०॥

कर कंकण अरु सिर मौर वन्द, सो तोड़ भये छिनमें स्वच्छन्द ।
तब ही लोकांतिकदेव आय, वैराग्य वर्द्धनी श्रुति कराय ॥११॥
ततक्षण शिविका लायो सुरेन्द्र, आरूढ भये तापर जिनेन्द्र ।
सो शिविका निज कन्धन उठाय, सुरनरखग मिल तप वन ठैराय १२
कच लौंच वस्त्र भूषण उतार, भये जती नगन मुद्रा सुधार ।
हरि केश लेय रतनन पिटार, सो क्षीर उदधि मांहीं पधार ॥१३॥
जय पारशनाथ अनाथ नाथ, सुर असुर नमत तुम चरण माथ ।
जुग नाग जरत कीनी सुरत्त, यह बात सकल जग में प्रत्यक्ष ॥ १४
तुम सुर धनु सम लखि जग असार, तप तपत भये तन ममत क्षार
शठ कमठ कियो उपसर्ग आय, तुम मन सुमेरु नहिं डगमगाय ॥१५॥
तुम शुक्ल ध्यान गहि खड़ग हाथ, अरि चारि घातिया कर सुघात ।
उपजायो केवल ज्ञान भानु, आयो कुवेर हरि वच प्रमाण ॥ १६ ॥
की समोसरण रचना विचित्र, तहां खिरतभई वाणी पवित्र ।
मुनि सुर नर खग तिर्यंच आय, सुन निज निज भाषा बोध पाय ॥१७॥
जय वर्द्धमान-अन्तिम जिनेश, पायो न अन्त तुम गुण गणेश ।
तुम च्यारि अघाती करम हान, लियो मोक्ष स्वयं सुख अचलथान ॥१८॥
तबही सुरपति बल अवधि जान, सब देवन युत बहु हर्ष ठान ।
सजि निज वाहन आयो सुतीर, जहं परमौदारिक तुम शरीर ॥१९॥
निर्वाण महोत्सव कियो भूर, ले मलयागिर चंदन कपूर ।
बहु द्रव्य सुगंधित सरस सार, तामें श्री जिनवर वपु पधार ॥२०॥
निज अगनि कुमारिन मुकट नाय, तिह रतननि शुचि ज्वाला उठाय ।
तिस सिर माही दीनी लगाय, सो भस्म सबन मस्तक चढ़ाय ॥२१॥
अति हर्ष थकी रचि दीप माल, शुभ रतन मई दश दिश उजाल ।
पुनि गीत नृत्य वाजे बजाय, गुण गाय ध्याय सुरपति सिधाय ॥२२॥
सो नाथ अबै जग में प्रत्यक्ष, नित होतदीप माला सुलक्ष ।
हे जिन तुम गुण महिमा अपार, वसु सम्यग्ज्ञानादिक सुसार ॥२३॥

तुम ज्ञानमाहिं तिहुँलोकदर्व, प्रतिविम्बित हैं चरअचर सर्व।
लहि आतम अनुभव परम ऋद्धि, भये वीतराग जगमें प्रसिद्ध ॥२४॥
हो बाल यती तुम सबन एम, अचरज शिवकांता वरी केम।
तुम परम शांतिमुद्रा सुधार, किम अष्टकर्म रिपु को प्रहार ॥ २५ ॥
हम करत विनती बार बार, कर जोर स्व मस्तक धार धार।
तुम भये भवोदधि पार पार, मोको सुवेग ही तार तार ॥ २६ ॥
'अरदास' दास ये पूर पूर, वसु कर्म शैल चकचूर चूर।
दुख सहन करन अब शक्ति नाहि, गही चरण शरण कीजे निवाह ॥२७

चौ०—पांचों बाल यती तीर्थेश, तिनकी यह जयमाल विशेष।
मन वच काय त्रियोग सम्हार, जे गावत पावत भव पार ॥
ॐ ह्रीं ह्रीं पंच बाल यति तीर्थङ्कर जिनेन्द्रायनमः पूर्णार्घं

दोहा—ब्रह्मचर्य सो नेह धरि, रचियो पूजन ठाठ।
पांचों बाल यतीन को, कीजे नित प्रति पाठ ॥ २६ ॥
॥ इत्याशीर्वादः ॥

दीप मालिका विधान।

निर्वाणोत्सव।

श्री शुभ मिती कार्तिक कृष्णा अमावस्या के प्रातःकाल करीब ४ बजे शौचादिसे निवृत्त होकर स्नानादि प्रातःकालीन क्रियायें करके श्रीमहावीर स्वामी का निर्वाण कल्याणक उत्सव मनाने के लिये श्रीमंदिरजी में जाना चाहिये। वहां पर खूब ठाठ-बाटसे नृत्य महोत्सव, गायनवादित्रादिके साथ नित्यनियम पूजा करके श्रीमहावीरस्वामी की पूजा करनी चाहिये। महावीर स्वामी की पूजा में गर्भ, जन्म, तप और ज्ञान कल्याणक का अर्घ चढाने के बाद प्रिय मधुर ध्वनि से निर्वाण काण्ड बोले, फिर मोक्ष

कल्याणक का पद्य बोलकर उपस्थित सभी स्त्री-पुरुषों को अर्घ सहित निर्वाणजी का लाड्डू चढाना चाहिये। इस वक्त वादित्रादि की ध्वनि से मंदिर को गुञ्जायमान कर देना चाहिये।

दिवाली–पूजा।

जिस दिन दिवाली हो उस दिन सायंकाल में शुभ वेला नक्षत्र में निम्न प्रकार पूजा करके नई वही का मुहूर्त करें तथा दीपमालिका की रोशनी करें।

एक ऊंची चौकी पर थाल या रकेवी रखकर उसमें केशर से ॐ लिखना चाहिये। उसी चौकी के आगे दूसरी चौकी पर शास्त्रजी या जिनवाणी की पुस्तक विराजमान करना चाहिये। इन दोनों चौकियों के आगे एक छोटी चौकी पर पूजा की सामग्री तैयार रखना चाहिए और इसी के पास एक दूसरी छोटी चौकी पर थाल रखकर उसमें पूजा की सामग्री चढ़ाना चाहिये। पूजा करने वाले को पूर्व या उत्तर मुख करके पूजा करनी चाहिये। जो कुटुम्ब में बडा हो या दूकान का मालिक हो वह चित्त में एकाग्रता करके पूजा करे और उपस्थित सब लोग पूजा बोले तथा शान्ति से सुने। इसके बाद व्यापारी की बही में केशर से स्वस्तिक लिखकर तथा दवात कलम के मौली बांधकर सामने रख लेना चाहिये। पूजा प्रारम्भ करने के पहले उपस्थित सब सज्जनों को नीचे लिखा श्लोक बोलकर केशर का तिलक कर लेना चाहिए।

तिलक मंत्र।

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमोगणी।
मंगलं कुंदकुंदाद्यो, जैनधर्मोऽस्तु मंगलं॥ १॥

तिलक करने के बाद साधारण नित्य नियम पूजा करके महावीर स्वामी की और सरस्वती की पूजा करना चाहिए। सरस्वती पूजा में फल चढाने के बाद वस्त्रका पद्य बोलकर शास्त्रजी के लिए एक

शुद्ध वस्त्र या वेष्टन चढाना चाहिए। पूजा कर चुकने के पश्चात् रकेबी में कपूर प्रज्वलित करके सबको खड़े होकर खूब ललित ध्वनि से नीचे लिखी आरती बोलनी चाहिये।

※ जिनवाणी माता की आरती। ※

जय अम्बे वाणी, माता जय अम्बे वाणी।

तुमको निश दिन ध्यावत सुरनर मुनि ज्ञानी॥ टेर॥ श्रीजिन गिरतें निकसी, गुरु गौतम वाणी। जीवन भ्रम तम नाशन दीपक दरशाणी॥ जय०॥ १॥ कुमति कुलाचल चूरण, वज्र सु सरधानी। नव नियोग निक्षेपण, देखन दरपाणी॥ जय०॥ २॥ पातक पंक पखालन, पुण्य पाणी। मोहमहार्णव डूबत, तारण नौकाणी॥जय०॥॥ ३॥ लोकालोक निहारण, दिव्य नेत्र स्थानी। निज पर भेद दिखावन, सूरज किरणानी॥ जय०॥ ४॥ श्रावक मुनिगण जननी, तुमही गुणखानी। सेवक लख शुभदायक, पावन परमाणी॥जय०॥

पश्चात् नीचे लिखे अनुसार बहियों में स्वस्तिकादि लिखकर वीर सम्वत, विक्रम सम्वत, ईस्वी सन् मिती, वार, तारीख आदि लिखना चाहिये।

श्री महावीर स्वामिने नमः।

卐

श्री

श्री श्री

श्री लाभ श्री श्री श्री श्री शुभ

श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री श्री

श्रीऋषभायनमः श्री महावीरस्वामिने नमः

श्री गौतमगणधराय नमः श्री जिनमुखोद्भवसरस्वती देव्यै नमः

श्री केवलज्ञान लक्ष्मी देव्यै नमः।

संक्षिप्त सूतकविधि ।

सूतक में देव शास्त्र गुरु की पूजन प्रक्षालादिक करना, तथा मंदिरजी की जाजम वस्त्रादिको स्पर्श नहीं करना चाहिये । सूतक का समय पूर्ण हुये बाद पूजनादि करके पात्रदानादि करना चाहिये ।

१—जन्म का सूतक दश दिन तक माना जाता है ।

२—यदि स्त्री का गर्भपात (पांचवं छठे महीने में) हो तो जितने महीने का गर्भपात हो उतने दिन का सूतक माना जाता है ।

३—प्रसूता स्त्री को ४५ दिनका सूतक होता है, कहीं कहीं चालीस दिन का भी माना जाता है । प्रसूतिस्थान एक मास तक अशुद्ध है ।

४—रजस्वला स्त्री चौथे दिन पति के भोजनादिक के लिये शुद्ध होती है परन्तु देव पूजन, पात्रदान के लिये पांचवें दिन शुद्ध होती है । व्याभिचारिणी स्त्री के सदा ही सूतक रहता है ।

५—मृत्युका सूतक तीन पीढी तक १२ दिनका माना जाता है । चौथी पीढी में छह दिनका, पांचवीं छटी पीढी तक चार दिनका, सातवीं पीढी में तीन, आठवीं पीढी में एक दिन रात, नवमी पीढी में स्नानमात्र में शुद्धता होती है ।

६—जन्म तथा मृत्यु का सूतक गोत्र के मनुष्य को पांच दिन का होता है । तीन दिनके बालक की मृत्यु का तीन दिन तक का माना जाता है । इसके आगे बारह दिन का ।

७—अपने कुल के किसी गृहत्यागी का सन्यास-मरण, वा किसी कुटुम्बी का संग्राम में मरण होजाय तो एक दिनका सूतक माना जाता है ।

८—यदि अपने कुलका कोई देशांतर में मरण करे और १२ दिन पहले खबर सुने तो शेष दिनों का ही सूतक मानना चाहिये। यदि १२ दिन पूर्ण हो गये हों तो स्नान मात्र सूतक जानो।

९—गौ, भैंस घोड़ी आदि पशु अपने घर में जने तो एक दिन का सूतक और घर के बाहर जने तो सूतक नहीं होता। दासी दास तथा पुत्री के घर में प्रसूति होय तो एक दिन, मरण होय तो तीन दिन का सूतक होता है। यदि घर से बाहर हो तो सूतक नहीं। जो कोई अपने को अग्नि आदिक में जलाकर वा विष, शस्त्रादि से आत्महत्या करे तो छह महीने तक सूतक होता है। इसी प्रकार और भी विचार हैं सो आदिपुराण से जानना।

१०—बच्चा हुये बाद भैंसका दूध १५ दिन तक, गायका दूध १० दिक तक, बकरी का ८ दिन तक अभक्ष्य (अशुद्ध) होता है। देश भेद से सूतक विधान में कुछ न्यूनाधिक भी होता है परन्तु शास्त्र की पद्धति मिलाकर ही सूतक मानना चाहिये।

शांतिधारा पाठ।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं भवीं भवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय २ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते। ॐ ह्रीं क्रों मम पापं खंड २ हन २ दह २ पच २ पाचय २ अर्हन् झं झ्वीं क्ष्वीं हं सः झं वं ह्वः पः हः क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः क्ष्वीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रौं ह्रौं ह्रं ह्रः द्रां द्रीं द्रावय २ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठः ठः अस्माकं श्रीरस्तु वृद्धिरस्तु तुष्टिरस्तु पुष्टिरस्तु शांतिरस्तु कान्तिरस्तु कल्याणमस्तु

स्वाहा। एवं अस्माकं कार्यसिद्ध्यर्थं सर्वविघ्ननिवारणार्थं श्री मद्भगवदर्हत्सर्वज्ञपरमेष्ठिपरमपवित्राय नमोनमः। अस्माकं श्री शांति भट्टारकपादपद्मप्रसादात् सद्धर्मं श्रीबलायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धिरस्तु स्वशिष्यपरशिष्यवर्गं प्रसीदंतु नः।

ॐ वृषभादयः श्री वर्द्धमानपर्यंताश्चतुर्विंशत्यर्हतो भगवंतः सर्वज्ञाः परममंगलनामधेयाः मे इहामुत्र च सिद्धिं तनोतु च सद्धर्म-कार्येषु इहामुत्र च सिद्धिं प्रयच्छतु नः।

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते श्रीमत्पार्श्वतीर्थंकराय श्रीमद्रत्नत्रय-रूपाय दिव्यतेजोमूर्तये प्रभामंडलमंडिताय द्वादशगणसहिताय अनंतचतुष्टयसहिताय समवशरणकेवलज्ञानलक्ष्मीशोभिताय अष्टादशदोषरहिताय षट्चत्वारिंशद्गुणसंयुक्ताय परमेष्ठीपवित्राय सम्यग्ज्ञानाय स्वयंभुवे सिद्धाय बुद्धाय परमात्मने परमसुखाय त्रैलोक्यमहिताय अनंतसंसारचक्रप्रमर्दनाय अनंतज्ञानदर्शनवीर्य-सुखास्पदाय त्रैलोक्यवशंकराय सत्यज्ञानाय सत्यब्रह्मणे उपसर्ग-विनाशनाय घातिकर्मक्षयंकराय अजराय अभवाय अस्माकं * "अमुकराशिनामधेयानां" व्याधिं हन्तु ! श्रीजिनपूजनप्रशादात् मम सेवकस्य सर्वदोषरोगशोकभयपीडाविनाशनं भवतु !

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषदोषकल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तये श्री शांतिनाथाय शांतिकराय सर्वविघ्नप्रणाशनाय सर्वरोगापमृत्युविनाशनाय सर्वपरकृतक्षुद्रोपद्रवविनाशनाय सर्वक्षाम डामरविनाशनाय सर्वारिष्टशांतिकराय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसानमः मम सर्वविघ्नशांतिं कुरु २ तुष्टिं पुष्टिं कुरु २ स्वाहा। मम कामं छिंद छिंद भिंद भिंद। रतिकामं छिंद २ भिंद २

---

* अपनी राशि तथा नाम बोलना चाहिए।

वलिकामं छिंद २ भिद २। क्रोधं पापंवैरंच छिंद २ भिंद २। अग्निवायुभयं छिंद २ भिंद २। सर्वशत्रुविघ्नं छिंद २ भिंद २। सर्वोपसर्गं छिंद २ भिंद २। सर्वविघ्नं छिंद भिंद २। सर्वराज्यभयं छिंद २ भिंद २। सर्वचौरदुष्टभयं छिंद २ भिंद २। सर्व सर्पवृश्चिकसिंहादिभयं छिंद २ भिंद २। सर्व ग्रहभयं छिंद २ भिंद २। सर्वदोषं व्याधिं डामरं च छिंद २ भिंद २। सर्व परमंत्रं छिंद २ भिंद २। सर्वात्मघातं परघातं च छिंद २ भिंद २। सर्व सूलरोगं कुक्षि-रोगं अक्षि-रोगं शिर-रोगं ज्वर-रोगं च छिंद २ भिंद २। सर्व-नरमारिं छिंद २-भिंद-२। सर्व गजाश्वगोमहिषअजमारिं भिंद २ छिंद २। सर्वसस्यधान्यवृक्षलतागुल्मपत्र पुष्पफलमारिं छिंद २ भिंद २। सर्वराष्ट्रमारिं छिंद २ भिंद २। सर्व विषयं छिंद२भिंद २। सर्वक्रूरवेतालशाकिनीडाकिनीभयं छिंद २ भिंद २। सर्व वेदनीं छिंद २ भिंद २। सर्वमोहनीं छिंद २ भिंद। सर्वापस्मारिं छिंद २ भिंद२। सर्व भगवती दुर्भगवतीभयं छिंद२ भिंद२। मम अशुभकर्मजनित दु:खान् छिंद २ भिंद २। दुष्टजनकृतान् मंत्रतंत्रदृष्टिमुष्टिछलछिद्र दोषान् छिंद २ भिंद २। सर्वदुष्ट देवदानववीरनरनाहर्रसिंह योगनीकृतदोषान् छिंद २ भिंद २। सर्व अष्टकुलीनागजनित विषभयान् सर्व थावरजंगम वृश्चिक सर्पादिकृतदोषान् छिंद२ भिंद२। सर्वसिंहाष्टपदादिकृतदोषान् छिंद २ भिंद२। परशत्रुकृतमारणोच्चाटनविद्वेषनमोहनवशीकरणादिदोषान् छिंद २ भिंद २। ॐ ह्रीं × अमुकाय चक्रविक्रमसत्वतेजोबलशौर्यशांति पूरय २ सर्व जीवानन्दनं जनानंदनं भव्यानंदनं गोकुलानंदनं च कुरु २। सर्व राजानंदनं कुरु २। सर्वग्रामनगरखेडा कर्वमंडव द्रोणमुख संवाहनानंदनं कुरु २। सर्वानंदनं कुरु २ स्वाहा।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु व्याधिव्यसनविवर्जितम्।
अभयं क्षेममारोग्यं स्वस्तिरस्तु विधीयते॥

× अपना नाम बोलना चाहिए।

श्रीशांतिरस्तु ! शिवमस्तु ! जयोऽस्तु ! नित्यमारोग्यमस्तु ! तव पुष्टिसमृद्धिरस्तु ! कल्याणमस्तु ! सुखमस्तु ! अभिवृद्धिरस्तु ! दीर्घायुरस्तु ! कुलगोत्रधनं सदास्तु ! सद्धर्मश्रीबलायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धिरस्तु ।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं असिआउसा अनाहत विद्यायै णमोअरहंताणं ह्रौं सर्व शांति कुरु स्वाहा ।

आयुर्वल्ली विलासं सकलसुखफलैर्द्राघयित्वाश्वनल्पं ।
धीरं हीरं शरीरं निरमसुपनयत्त्वा तनोत्त्वच्छं कीर्ति ॥
सिद्धिं वृद्धिं समृद्धिं प्रथयतु तरणिः स्फूर्यदुच्चैः प्रतापं ।
कीर्ति शांतिं समाधिं वितरतु भवतामुत्तमा शांतिधारा ॥

इति शांतिधारा पाठः ।

विनोद प्रश्नावली १६६

गमन होय ॐॐॐ❀	राज मिलाप ❀❀ॐॐ	व्यापार ॐॐ❀❀	परीक्षा में ❀❀ॐ❀ पास हो
संतान प्राप्ति ❀ॐॐॐ	परदेश गमन ❀ॐ❀ॐ	पास न हो ॐॐ❀ॐ	संत न दुख ॐ❀ॐ❀
सुख प्राप्ति ॐॐॐॐ	सम्मानित हो ❀❀❀❀	जीत हो ❀ॐ❀ॐ	संकट ॐ❀ॐॐ
इच्छित प्राप्ति ❀❀❀ॐ	द्रव्य लाभ ॐ❀❀ॐ	हार हो ❀ॐ❀❀	भय ॐ❀❀❀

❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀
ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं
श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री
ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ❀ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

प्रश्नकर्त्ता को शुद्ध हो, शांतिचित णमोकार महामंत्र का नौ वार शुद्ध उच्चारण करके प्रश्न को चित्त में समझ कर प्रश्न नीचे लिखे ॐ ❀ ह्री श्री इन चारों की लेन पर नंबर वार

उंगली रखे और गिनती करे। सम संख्या होने पर ॐ और विषम संख्या होने पर ❀ यह निशान अंकित करो।

उदाहरण:—जैसे आपने प्रथम लाइन के ❀ इस चिह्न में से किसी एक पर अंगुली रखी। अब आप यह गिनें कि आप की अंगुली वाला चिह्न कौनसे नम्बर पर है। मान लीजिये कि आपका चिह्न ८-नम्बर वाला है तो यह सम संख्या है। सम के लिये आप अलग कागज पर ॐ लिखलें। इसी प्रकार दूसरी लाइन के चिह्न पर अंगुली रख कर गिने यदि उसका नम्बर ७–६–११ आदि है तो यह विषम संख्याएं हैं। इसका चिह्न ❀ (फूल) है अब आप पहले वाले ॐ के आगे ❀ लिखलें। इसी प्रकार तीसरी और चौथी लाइन के चिह्नों पर अंगुली रखकर सम या विषम संख्या के अनुसार अपने कागज पर चिह्न बना लें और फिर प्रश्नावली के १६ खानों में देखें। उसमें आप को अपने प्रश्न का फल मिल जायगा।

★ भक्तामर स्तोत्र ★★

—:ccccccccc:—

भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रभाणा—
मुद्योतकं दलितपापतमोवितानं ।
सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगंयुगादा—
वालंबनं भवजले पततां जनानां ॥ १ ॥
यः संस्तुतः सकलवाङ्मयतत्त्वबोधा—
दुद्भूतबुद्धिपटुभिः सुरलोकनाथैः ।
स्तोत्रैर्जगत्त्रितयचित्तहरैरुदारैः,
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥ २ ॥
बुद्ध्या विनापि विबुधार्चितपादपीठ—
स्तोतुं समुद्यतमतिर्विगतत्रपोऽहं ।
बालं विहाय जलसंस्थितमिंदुबिंब—
मन्यः क इच्छति जनः सहसा गृहीतुं ॥ ३ ॥
वक्तुं गुणान्गुणसमुद्र शशांककांतान्,
कस्ते क्षमः सुरगुरुप्रतिमोऽपि बुद्ध्या ।
कल्पांतकालपवनोद्धतनक्रचक्रं,
को वा तरीतुमलमंबुनिधिं भुजाभ्यां ॥ ४ ॥
सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश !

कर्त्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः ।
प्रीत्यात्मवीर्यमविचार्य मृगी मृगेंद्रं,
नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम् ॥ ५ ॥

अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम,
त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्मां ।
यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति,
तच्चाम्रचारुकलिकानिकरैकहेतुः ॥ ६ ॥

त्वत्संस्तवेन भवसंततिसन्निबद्धं,
पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजां ।
आक्रांतलोकमलिनीलमशेषमाशु,
सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमंधकारं ॥ ७ ॥

मत्वेति नाथ तव संस्तवनं मयेद—
मारभ्यते तनुधियापि तव प्रभावात् ।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु,
मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदबिंदुः ॥ ८ ॥

आस्तां तव स्तवनमस्तसमस्तदोषं,
त्वत्संकथापि जगतां दुरितानि हंति ।
दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव,
पद्माकरेषु जलजानि विकासभांजि ॥ ९ ॥

नात्यद्भुतं भुवनभूषण ! भूतनाथ !
भूतैर्गुणैर्भुवि भवंतमभिष्टुवंतः ।

तुल्या भवंति भवतो ननु तेन किं वा,
भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति ॥ १० ॥

दृष्ट्वा भवंतमनिमेषविलोकनीयं,
नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः ।
पीत्वा पयः शशिकरद्युतिदुग्धसिंधोः,
क्षारं जलं जलनिधे रसितुं क इच्छेत् ॥ ११ ॥

यैः शांतरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं,
निर्मापितस्त्रिभुवनैकललामभूत !
तावंत एव खलु तेप्यणवः पृथिव्यां,
यत्ते समानमपरं न हि रूपमस्ति ॥ १२ ॥

वक्त्रं क्व ते सुरनरोरगनेत्रहारि,
निःशेषनिर्जितजगत्त्रितयोपमानं ।
बिंबं कलंकमलिनं क्व निशाकरस्य,
यद्वासरे भवति पांडुपलाशकल्पं ॥ १३ ॥

संपूर्णमंडलशशांककलाकलाप—
शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लंघयंति ।
ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वरनाथमेकं,
कस्तान्निवारयति संचरतो यथेष्टं ॥ १४ ॥

चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगनाभि—
र्नीतंमनागपि मनो न विकारमार्गम् ।
कल्पांतकालमरुता चलिताचलेन,
किं मंदराद्रिशिखरं चलितं कदाचित् ॥ १५ ॥

निर्धूमवर्तिरपवर्जिततैलपूरः,
कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि ।
गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां,
दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रकाशः ॥ १६ ॥

नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः,
स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगंति ।
नांभोधरोदरनिरुद्धमहाप्रभावः,
सूर्यातिशायिमहिमासि मुनींन्द्र लोके ॥ १७ ॥

नित्योदयं दलितमोहमहांधकारं,
गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानां ।
विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकांति,
विद्योतयज्जगदपूर्वशशांकबिंबं ॥ १८ ॥

किं शर्वरीषु शशिनाह्नि विवस्वता वा,
युष्मन्मुखेंदुदलितेषु तमःसु नाथ ।
निष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके,
कार्यं कियज्जलधरैर्जलभारनम्रैः ॥ १६ ॥

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं,
नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु ।
तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं,
नैवं तु काचशकले किरणाकुलेपि ॥ २० ॥

मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा,
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति ।

किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः,
कश्चिन्मनो हरति नाथ भवांतरेपि ॥ २१ ॥

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयंति पुत्रान्,
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता ।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्ररश्मिं,
प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालं ॥ २२ ॥

त्वामामनंति मुनयः परमं पुमांस—
मादित्यवर्णममलं तमसः पुरस्तात् ।
त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयंति मृत्युं,
नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनींद्र पंथाः ॥ २३ ॥

त्वामव्ययं विभुमचिंत्यमसंख्यमाद्यं,
ब्रह्माणमीश्वरमनंतमनंगकेतुं ।
योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं,
ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदंति संतः ॥ २३ ॥

बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधात्,
त्वं शंकरोऽसि भुवनत्रयशंकरत्वात् ।
धाताऽसि धीर शिवमार्गविधेर्विधानाद्,
व्यक्तं त्वमेव भगवन् पुरुषोत्तमोसि ॥ २५ ॥

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्त्तिहराय नाथ !
तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय ।
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय,
तुभ्यं नमो जिनभवोदधिशोषणाय ॥ २६ ॥

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै—
स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश !
दोषैरुपात्तविविधाश्रयजातगर्वैः,
स्वप्नांतरेपि न कदाचिदपीक्षितोसि ॥ २७ ॥

उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख—
माभाति रूपममलं भवतो नितांतं ।
स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमोवितानं,
विंबं रवेरिव पयोधरपार्श्ववर्ति ॥ २८ ॥

सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे,
विभ्राजते तव वपुः कनकावदातं ।
विंवं वियद्विलसदंशुलतावितानं,
तुंगोदयाद्रिशिरसीव सहस्ररश्मेः ॥ २९ ॥

कुंदावदातचलचामरचारुशोभं,
विभ्राजते तव वपुः कलधौतकांतं ।
उद्यच्छशांकशुचिनिर्झरवारिधार—
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ॥ ३० ॥

छत्रत्रयं तव विभाति शशांककांत—
मुच्चैः स्थितं स्थगितभानुकरप्रतापं ।
मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धशोभं,
प्रख्यापयत्त्रिजगतः परमेश्वरत्वं ॥ ३१ ॥

गंभीरताररवपूरितदिग्विभाग—
स्त्रैलोक्यलोकशुभसंगमभूतिदक्षः ।

सद्धर्मराज जयघोषणघोषकःसन्,
खे दुंदुभिर्ध्वनति ते यशसः प्रवादी ॥ ३२ ॥

मंदारसुंदरनमेरुसुपारिजात—
संतानकादिकुसुमोत्करवृष्टिरुद्धा ।
गंधोदबिंदुशुभमंदमरुत्प्रपाता,
दिव्यादिवः पतति ते वचसां ततिर्वा ॥ ३३ ॥

शुंभत्प्रभावलयभूरिविभा विभोस्ते,
लोकत्रये द्युतिमतां द्युतिमाक्षिपंती ।
प्रोद्यद्दिवाकरनिरंतरभूरिसंख्या,
दीप्त्या जयत्यपि निशामपि सोमसौम्यां ॥ ३४ ॥

स्वर्गापवर्गगममार्गविमार्गणेष्टः,
सद्धर्मतत्त्वकथनैकपटुस्त्रिलोक्याः ।
दिव्यध्वनिर्भवति ते विशदार्थसर्व,
भाषास्वभावपरिणामगुणैः प्रयोज्यः ॥ ३५ ॥

उन्निद्रहेमनवपंकजपुंजकांती,
पर्युल्लसन्नखमयूखशिखाभिरामौ ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र धत्तः,
पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयंति ॥ ३६ ॥

इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र,
धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ।
यादृक्प्रभा दिनकृतः प्रहतांधकारा,
तादृक् कुतो ग्रहगणस्य विकाशिनोपि ॥ ३७ ॥

श्च्योतन्मदाविलविलोलकपोल मूल-
मत्तभ्रमद्भ्रमरनादविवृद्धकोपं ।
ऐरावताभमिभमुद्धतमापतंतं,
दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानां ॥ ३८ ॥

भिन्नेभकुंभगलदुज्ज्वलशोणिताक्त—
मुक्ताफलप्रकरभूषितभूमिभागः ।
बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोपि,
नाक्रामति क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥ ३९ ॥

कल्पांतकालपवनोद्धतवह्निकल्पं,
दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिंगं ।
विश्वं जिघित्सुमिव संमुखमापतंतं,
त्वन्नामकीर्त्तनजलं शमयत्यशेषं ॥ ४० ॥

रक्तेक्षणं समदकोकिलकंठनीलं,
क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतंतं ।
आक्रामति क्रमयुगेण निरस्तशंक—
स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः ॥ ४१ ॥

वल्गत्तुरंगगजगर्जितभीमनाद—
माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनां ।
उद्यद्दिवाकरमयूखशिखापविद्धं,
त्वत्कीर्त्तनात्तम इवाशु भिदामुपैति ॥ ४२ ॥

कुंताग्रभिन्नगजशोणितवारिवाह—
वेगावतारतरणातुरयोधभीमे ।

युद्धे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षा—
स्त्वत्पादपंकजवनाश्रयिणो लभंते ॥ ४३ ॥

अंभोनिधौ क्षुभितभीषणनक्रचक्र—
पाठीनपीठभयदोल्वणवाडवाग्नौ ।
रंगत्तरंगशिखरस्थितयानपात्रा—
स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजंति ॥ ४४ ॥

उद्भूतभीषणजलोदरभारभुग्नाः,
शोच्यां दशामुपगताश्च्युतजीविताशाः ।
त्वत्पादपंकजरजोऽमृतदिग्धदेहा,
मर्त्या भवंति मकरध्वजतुल्यरूपाः ॥ ४५ ॥

आपादकंठमुरुशृंखलवेष्ठितांगा,
गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृष्टजंघाः ।
त्वन्नाममंत्रमनिशं मनुजाः स्मरंतः,
सद्यः स्वयं विगतबंधभया भवंति ॥ ४६ ॥

मत्तद्विपेंद्रमृगराजदवानलाहि—
संग्रामवारिधिमहोदरबंधनोत्थं ।
तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव,
यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥ ४७ ॥

स्तोत्रस्रजं तव जिनेंद्र गुणैर्निबद्धां,
भक्त्या मया विविधवर्णविचित्रपुष्पां ।
धत्ते जनो य इह कंठगतामजस्रं,
तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४८ ॥

इति श्रीमानतुंगाचार्य विरचितमादिनाथस्तोत्रं (भक्तामर स्तोत्रं)

मोक्ष-शास्त्रं

मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्मभूभृतां ।
ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां वंदे तद्गुणलब्धये ॥

त्रैकाल्यं द्रव्यषट्कं नवपदसहितं जीवषट्कायलेश्याः ।
पंचान्येचास्तिकाया व्रतसमितिगतिज्ञानचारित्रभेदाः ॥
इत्येतन्मोक्षमूलं त्रिभुवनमहितैः प्रोक्तमर्हद्भिरीशैः ।
प्रत्येति श्रद्धाति स्पृशति च मतिमान् यः स वै शुद्धदृष्टिः॥१॥

सिद्धे जयप्पसिद्धे, चउविहाराहणाफलं पत्ते ।
वंदित्ता अरहंते वोच्छं आराहणाकमसो ॥२॥
उज्झोवणमुज्झवणं णिव्वाहणं साहणं च णिच्छरणं ।
दंसणणाणचरित्तं तवाणमाराहणा भणिया ॥३॥

सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः ।१॥ तत्त्वार्थ-श्रद्धानं सम्यग्दर्शनं ॥२॥ तन्निसर्गादधिगमाद्वा ॥३॥ जीवाजीवास्रवबंधसंवरनिर्जरामोक्षास्तत्त्वं ॥४॥ नामस्थापनाद्रव्य-भावतस्तन्न्यासः ॥५॥ प्रमाणनयैरधिगमः ॥६॥ निर्देश-स्वामित्वसाधनाधिकरणस्थितिविधानतः ॥७॥ सत्संख्या-क्षेत्रस्पर्शनकालांतरभावाल्पबहुत्वैश्च ॥ ८ ॥ मतिश्रुतावधि-मनःपर्ययकेवलानि ज्ञानं ॥९॥ तत्प्रमाणे ॥१०॥ आद्ये परोक्षं ॥११॥ प्रत्यक्षमन्यत् ॥१२॥ मतिः स्मृतिः संज्ञा चिंताभि-

निबोध इत्यनर्थान्तरं ॥१३॥ तदिंद्रियानिंद्रियनिमित्तं ॥१४॥ अवग्रहेहावायधारणाः ॥१५॥ बहुबहुविधक्षिप्रानिःसृतानुक्तध्रु-वाणां सेतराणां ॥१६॥ अर्थस्य ॥१७॥ व्यंजनस्यावग्रहः॥१८॥ न चक्षुरनिन्द्रियाभ्यां ॥१६॥ श्रुतं मतिपूर्वं द्व्यनेकद्वादश-भेदं ॥२० भवप्रत्ययोवधिर्देवनारकाणां ॥२१॥ क्षयोपश-मनिमित्तः षड्विकल्पः शेषाणां ॥२२॥ ऋजुविपुलमती मन-पर्ययः ॥२३॥ विशुद्ध्यप्रतिपाताभ्यां तद्विशेषः ॥ २४ ॥ विशुद्धिक्षेत्रस्वामिविषयेभ्योऽवधिमनःपर्यययोः ॥ २५ ॥ मतिश्रुतयोर्निबंधो द्रव्येष्वसर्वपर्यायेषु ॥२६॥ रूपिष्ववधेः ॥२७॥ तदनंतभागे मनःपर्ययस्य ॥२८॥ सर्वद्रव्यपर्यायेषु केवलस्य ॥२६॥ एकादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्नाचतुर्भ्यः ॥३०॥ मतिश्रुतावधयो विपर्ययश्च ॥३१॥ सदसतोरविशेषाद्यदृच्छो-पलब्धेरुन्मत्तवत् ॥३२॥ नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसम-भिरुढैवंभूता नयाः ॥३३॥

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

औपशमिकक्षायिकौ भावौ मिश्रश्च जीवस्य स्वतत्त्व-मौदयिकपारिणामिकौ च ॥१॥ द्विनवाष्टादशैकविंशति-त्रिभेदा यथाक्रमं ॥२॥ सम्यक्त्वचारित्रे ॥३॥ ज्ञानदर्शन-दानलाभभोगोपभोगवीर्याणि च ॥४॥ ज्ञानाज्ञानदर्शन-लब्धयश्चतुस्त्रित्रिपंचभेदाः सम्यक्त्वचारित्रसंयमासंयमाश्च ॥५॥ गतिकषायलिंगमिथ्यादर्शनाज्ञानासंयतासिद्धलेश्याश्च-तुश्चतुस्त्र्येकैकैकैकषड्भेदाः ॥६॥ जीवभव्याभव्यत्वानि च

॥७॥ उपयोगो लक्षणं ॥८॥ सद्विविधोऽष्टचतुर्भेदः ॥९॥ संसारिणो मुक्ताश्च ॥१०॥ समनस्काऽमनस्काः ॥११॥ संसारिणस्त्रसस्थावराः ॥१२॥ पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतयः स्थावराः ॥१३॥ द्वीन्द्रियादयस्त्रसाः ॥१४॥ पंचेन्द्रियाणि ॥१५॥ द्विविधानि ॥१६॥ निर्वृत्त्युपकरणे द्रव्येन्द्रियं ॥१७॥ लब्ध्युपयोगौ भावेन्द्रियं ॥१८॥ स्पर्शरसगंधवर्णशब्दास्तदर्थाः ॥२०॥ श्रुतमनिन्द्रियस्य ॥२१॥ वनस्पत्यन्तानामेकं ॥२२॥ कृमिपिपीलिकाभ्रमरमनुष्यादीनामेकैकवृद्धानि ॥२३॥ संज्ञिनः समनस्काः ॥२४॥ विग्रहगतौ कर्मयोगः ॥२५॥ अनुश्रेणि गतिः ॥२६॥ अविग्रहा जीवस्य ॥२७॥ विग्रहवती च संसारिणः प्राक् चतुर्भ्यः ॥२८॥ एकसमयाऽविग्रहा ॥२९॥ एकं द्वौत्रीन्वानाहारकः ॥३०॥ संमूर्च्छनगर्भोपपादा जन्म ॥३१॥ सचित्तशीतसंवृताः सेतरा मिश्राश्चैकशस्तद्योनयः ॥३२॥ जरायुजांडजपोतानां गर्भः ॥३३॥ देवनारकाणामुपपादः ॥३४॥ शेषाणां सम्मूर्च्छनं ॥ ३५ ॥ औदारिकवैक्रियिकाहारकतैजसकार्मणानि शरीराणि ॥३६॥ परं परं सूक्ष्मं ॥३७॥ प्रदेशतोऽसंख्येयगुणं प्राक्तैजसात् ॥३८॥ अनन्तगुणे परे ॥३९॥ अप्रतीघाते ॥४०॥ अनादि संबंधे च ॥४१॥ सर्वस्य ॥४२॥ तदादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्नाचतुर्भ्यः ॥४३॥ निरुपभोगमन्त्यं ॥४४॥ गर्भसम्मूर्च्छनजमाद्यं ॥४५॥ औपपादिकं वैक्रियिकं ॥४६॥ लब्धिप्रत्ययं च ॥४७॥ तैजस-

मपि ॥४८॥ शुभं विशुद्धमव्याघाति चाहारकं प्रमत्तसंयतस्यैव ॥४९॥ नारकसंमूर्च्छिनो नपुंसकानि ॥५०॥ न देवाः ॥५१॥ शेषास्त्रिवेदाः ॥५२॥ औपपादिकचरमोत्तमदेहाऽसंख्येयवर्षायुषोऽनपवर्त्यायुषः ॥५३॥

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

रत्नशर्करावालुकापंकधूमतमोमहातमःप्रभाभूमयो घनाम्बुवाताकाशप्रतिष्ठाःसप्ताऽधोऽधः ॥१॥ तासु त्रिंशत्पञ्चविंशतिपञ्चदशदशत्रिपंचोनैकनरकशतसहस्राणि पंच चैव यथाक्रमम् ॥२॥ नारका नित्याऽशुभतरलेश्यापरिणामदेहवेदनाविक्रियाः ॥ ३ ॥ परस्परोदीरितदुःखाः ॥४॥ संक्लिष्टाऽसुरोदीरितदुःखाश्च प्राक्चतुर्थ्याः ॥५॥ तेष्वेकत्रिसप्तदशसप्तदशद्वाविंशतित्रयस्त्रिंशत्सागरोपमा सत्त्वानां परा स्थितिः ॥६॥ जम्बूद्वीपलवणोदादयः शुभनामानो द्वीपसमुद्राः ॥७॥ द्विर्द्विर्विष्कम्भाः पूर्वपूर्वपरिक्षेपिणो वलयाकृतयः ॥८॥ तन्मध्ये मेरुनाभिर्वृत्तो योजनशतसहस्रविष्कम्भो जम्बूद्वीपः ॥९॥ भरतहैमवतहरिविदेहरम्यकहैरण्यवतैरावतवर्षाः क्षेत्राणि ॥१०॥ तद्विभाजिनः पूर्वापरायता हिमवन्महाहिमवन्निषधनीलरुक्मिशिखरिणो वर्षधरपर्वताः ॥११॥ हेमार्जुनतपनीयवैडूर्यरजतहेममयाः॥१२ मणिविचित्रपार्श्वा उपरि मूले च तुल्यविस्ताराः ॥१३॥ पद्ममहापद्मतिगिञ्छकेशरिमहापुण्डरीकपुण्डरीका ह्रदास्तेषामुपरि ॥१४॥ प्रथमो योजनसहस्रायामस्तदर्द्धविष्कम्भो ह्रदः ॥१५॥ दशयोजनावगाहः ॥१६॥ तन्मध्ये योजनं पुष्करम् ॥१७

तद्द्विगुणद्विगुणा ह्रदाः पुष्कराणि च ॥१८॥ तन्निवासिन्यो देव्यः श्रीह्रीधृतिकीर्तिबुद्धिलक्ष्म्यः पल्योपमस्थितयः ससामानिकपरिषत्काः ॥१९॥ गंगासिन्धुरोहिद्रोहितास्याहरिद्धरिकांतासीतासीतोदानारीनरकांतासुवर्णरूप्यकूलारक्तारक्तोदाः सरितस्तन्मध्यगाः ॥२०॥ द्वयोर्द्वयोः पूर्वाः पूर्वगाः ॥२१॥ शेषास्त्वपरगाः ॥२२॥ चतुर्दशनदीसहस्रपरिवृता गंगासिन्ध्वादयो नद्यः ॥२३॥ भरतः षड्विंशतिपञ्चयोजनशतविस्तारः षट्चैकोनविंशतिभागायोजनस्य ॥ २४ ॥ तद्द्विगुणद्विगुणविस्तारा वर्षधरवर्षा विदेहान्ताः ।२५। उत्तरा दक्षिणतुल्याः २६। भरतैरावतयोर्वृद्धिह्रासौ षट्समयाभ्यामुत्सर्पिण्यवसर्पिणीभ्याम् ।२७। ताभ्यामपरा भूमयोऽवस्थिताः ॥२८॥ एकद्वित्रिपल्योमस्थितयो हैमवतकहारिवर्षकदैवकुरवकाः ॥२९॥ तथोत्तराः ॥३०॥ विदेहेषु संख्येयकालाः ॥३१॥ भरतस्य विष्कम्भो जम्बूद्वीपस्य नवतिशतभागः ॥३२॥ द्विर्धातकीखण्डे ॥३३॥ पुष्करार्द्धे च ॥३४॥ प्राङ्मानुषोत्तरान्मनुष्याः ॥३५॥ आर्याम्लेच्छाश्च ॥३६॥ भरतैरावतविदेहाः कर्मभूमयोऽन्यत्र देवकुरूत्तरकुरुभ्यः ॥३७॥ नृस्थिती परावरे त्रिपल्योपमान्तर्मुहूर्ते ॥३८॥ तिर्यग्योनिजानां च ॥३९॥

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

देवाश्चतुर्णिकायाः ॥१॥ आदितस्त्रिषु पीतान्तलेश्याः ॥२॥ दशाष्टपञ्चद्वादशविकल्पाः कल्पोपपन्नपर्यन्ताः ॥३॥ इन्द्रसामानिकत्रायस्त्रिंशपारिषदात्मरक्षलोकपालानीकप्रकीर्ण-

काभियोग्यकिल्बिषिकाश्चैकशः ॥४॥ त्रायस्त्रिंशलोकपाल-वर्ज्या व्यन्तरज्योतिष्काः ॥ ५ ॥ पूर्वयोर्द्वीन्द्राः ॥ ६ ॥ कायप्रवीचारा आ ऐशानात् ॥ ७ ॥ शेषाः स्पर्शरूप-शब्दमनःप्रवीचाराः ॥ ८ ॥ परेऽप्रवीचाराः ॥ ६ ॥ भवन-वासिनोऽसुरनागविद्यु त्सुपर्णाग्निवातस्तनितोदधिद्वीपदिक्कुमाराः ॥१०॥ व्यन्तराः किन्नरकिंपुरुषमहोरगगन्धर्वयक्षराक्षस-भूतपिशाचाः ॥११॥ ज्योतिष्काः सूर्याचन्द्रमसौ ग्रहनक्षत्र-प्रकीर्णकतारकाश्च ॥१२॥ मेरुप्रदक्षिणा नित्यगतयो नृलोके ॥१३॥ तत्कृतः कालविभागः ॥१४॥ बहिरवस्थिताः ॥१५॥ वैमानिकाः ॥ १६ ॥ कल्पोपपन्नाः कल्पातीताश्च ॥ १७ ॥ उपर्यु परि ॥१८॥ सौधर्म्मैशानसानत्कुमारमाहेन्द्रब्रह्मब्रह्मोत्तर-लान्तवकापिष्ठशुक्रमहाशुक्रशतारसहस्रारेष्वानतप्राणतयोरार-णाच्युतयोर्नवसु ग्रैवेयकेषु विजयवैजयन्तजयन्तापराजितेषु सर्वार्थसिद्धौ च ॥१६॥ स्थितिप्रभावसुखद्यु तिलेश्या विशु-द्धीन्द्रियावधिविषयतोधिकाः ॥२०॥ गतिशरीरपरिग्रहाभि-मानतो हीनाः ॥२१॥ पीतपद्मशुक्ललेश्या द्वित्रिशेषेषु ।२२। प्राग्ग्रैवेयकेभ्यः कल्पाः ॥२३॥ ब्रह्मलोकालया लौकान्तिकाः ॥ २४ ॥ सारस्वतादित्यवह्न्यरुणगर्दतोयतुषिताव्याबाधा-रिष्टाश्च ॥२५॥ विजयादिषु द्विचरमाः ॥२६॥ औपपादिक-मनुष्येभ्यः शेषास्तिर्यग्योनयः ॥ २७ ॥ स्थितिरसुरनाग-सुपर्णद्वीपशेषाणां सागरोपमत्रिपल्योपमार्द्धहीनमिताः ॥२८॥ सौधर्मैशानयोः सागरोपमेऽधिके ।२६॥ सानत्कुमारमाहे-न्द्रयोः सप्त ॥३०॥ त्रिसप्तनवैकादशत्रयोदशपंचदशभिरधिकानि

तु ॥३१॥ आरणाच्युतादूर्ध्वमेकैकेन नवसु ग्रैवेयकेषु विजयादिषु सर्वार्थसिद्धौ च ॥३२॥ अपरा पल्योपममधिकम् ॥३३॥ परतः परतः पूर्वापूर्वानन्तराः ॥३४॥ नारकाणां च द्वितीयादिषु ॥३५॥ दशवर्षसहस्राणि प्रथमायाम् ॥३६॥ भवनेषु च ॥३७॥ व्यन्तराणां च ॥३८॥ परा पल्योपममधिकम् ॥३९॥ ज्योतिष्काणां च ॥४०॥ तदष्टभागोऽपरा ॥४१॥ लोकान्तिकानामष्टौ सागरोपमाणि सर्वेषाम् ॥४२॥

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे चतुर्थोऽध्यायः ॥४॥

अजीवकाया धर्म्माधर्माकाशपुद्गलाः ॥१॥ द्रव्याणि ॥२॥ जीवाश्च ।३॥ नित्यावस्थितान्यरूपाणि ॥४॥ रूपिणः पुद्गलाः ॥५॥ आ आकाशादेकद्रव्याणि ॥६॥ निष्क्रियाणि च ॥७॥ असंख्येयाः प्रदेशा धर्माधर्मैकजीवानां ।८॥ आकाशस्यानन्ता ॥९॥ संख्येयाऽसंख्येयाश्च पुद्गलानां ॥१०॥ नाणोः ॥११॥ लोकाकाशेऽवगाहः ॥१२॥ धर्माधर्मयोः कृत्स्ने ॥१३॥ एकप्रदेशादिषु भाज्याः पुद्गलानां ॥१४। असंख्येयभागादिषु जीवानां ॥१५॥ प्रदेशसंहारविसर्पाभ्यां प्रदीपवत् ॥१६॥ गतिस्थित्युपग्रहौ धर्माधर्मयोरुपकारः ॥१७॥ आकाशस्यावगाहः ॥१८॥ शरीरवाङ्मनःप्राणापानाः पुद्गलानां ।१९॥ सुखदुःखजीवितमरणोपग्रहाश्च ॥२०॥ परस्परोपग्रहो जीवानां ॥२१॥ वर्तनापरिणामक्रियाः परत्वापरत्वे च कालस्य ॥२२॥ स्पर्शरसगन्धवर्णवन्तः पुद्गलाः ॥२३॥ शब्दबन्धसौक्ष्म्यस्थौल्यसंस्थानभेदतमश्छायातपो-

द्योतवन्तश्च ॥२४॥ अणवः स्कन्धाश्च ॥२५॥ भेदसंघातेभ्यः उत्पद्यन्ते ॥२६॥ भेदादणुः ॥२७॥ भेदसंघाताभ्यां चाक्षुपः ॥२८॥ सद्द्रव्यलक्षणं ॥२९॥ उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्तं सत् ॥३०॥ तद्भावाव्ययं नित्यं ॥३१॥ अर्पितानर्पितसिद्धेः ॥३२॥ स्निग्धरूक्षत्वाद्बन्धः ॥३३॥ न जघन्यगुणानां ॥३४॥ गुणसाम्ये सदृशानां ॥३५॥ द्वयधिकादिगुणानां तु ॥३६॥ बन्धेऽधिकौ पारिणामिकौ च ॥३७॥ गुणपर्ययवद् द्रव्यं ॥३८॥ कालश्च ॥३९॥ सोऽनन्तसमयः ॥४०॥ द्रव्याश्रया निर्गुणाः गुणाः ॥४१॥ तद्भावः परिणामः ॥४२॥

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे पंचमोऽध्यायः ॥

कायवाङ् मनःकर्म योगः ॥१॥ स आस्रवः ॥२॥ शुभः पुण्यस्याशुभः पापस्य ॥३॥ सकपायाकषाययोः साम्परायिकेर्यापथयोः ॥४॥ इन्द्रियकपायाव्रतक्रियाः पंचचतुःपंचपंचविंशतिसंख्याः पूर्वस्य भेदाः ॥५॥ तीव्रमन्दज्ञाताज्ञातभावाधिकरणवीर्यविशेपेभ्यस्तद्विशेषः ॥ ६ ॥ अधिकरणं जीवाऽजीवाः ॥७॥ आद्यं संरम्भसमारम्भारम्भयोगकृतकारितानुमतकषायविशेषैस्त्रिस्त्रिस्त्रिश्चतुश्चैकशः ॥८॥ निर्वर्तनानिक्षेपसंयोगनिसर्गा द्विचतुर्द्वित्रिभेदाः परं ॥९॥ तत्प्रदोषनिह्नवमात्सर्यान्तरायासादनोपघाता ज्ञानदर्शनावरणयोः ॥१०॥ दुःखशोकतापाक्रन्दनवधपरिदेवनान्यात्मपरोभयस्थानान्यसद्वेद्यस्य ॥११ भूतव्रत्यनुकम्पादानसरागसंयमादियोगः क्षान्तिः शौचमिति सद्वेद्यस्य ॥१२॥ केवलिश्रुतसंघधर्मदेवावर्णवादो दर्शनमोहस्य ॥१३॥ कषायोदयात्तीव्रपरिणामश्चारित्रमोहस्य

॥१४॥ बह्वारम्भपरिग्रहत्वं नारकस्यायुषः ॥१५॥ माया तैर्यग्योनस्य ॥१६॥ अल्पारम्भपरिग्रहत्वं मानुषस्य ॥१७॥ स्वभावमार्दवं च ॥१८॥ निःशीलव्रतत्वं च सर्वेषां ॥१९॥ सरागसंयमसंयमासंयमाकामनिर्जराबालतपांसि दैवस्य ॥२०॥ सम्यक्त्वं च ॥२१॥ योगवक्रताविसंवादनं चाशुभस्य नाम्नः ॥२२॥ तद्विपरीतं शुभस्य ॥२३॥ दर्शनविशुद्धिर्विनयसम्पन्नता शीलव्रतेष्वनतीचारोऽभीक्ष्णज्ञानोपयोगसंवेगौ शक्तितस्त्यागतपसी साधुसमाधिर्वैयावृत्यकरणमर्हदाचार्यबहुश्रुतप्रवचनभक्तिरावश्यकापरिहाणिर्मार्गप्रभावना प्रवचनवत्सलत्वमिति तीर्थकरत्वस्य ॥२४॥ परात्मनिन्दाप्रशंसे सदसद्गुणोच्छादनोद्भावने च नीचैर्गोत्रस्य ॥२५॥ तद्विपर्ययो नीचैर्वृत्त्यनुत्सेकौ चोत्तरस्य ॥२६॥ विघ्नकरणमन्तरायस्य ॥२७॥

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे षष्ठोऽध्यायः ।

हिंसाऽनृतस्तेयाऽब्रह्मपरिग्रहेभ्यो विरतिर्व्रतं ॥१॥ देशसर्वतोऽणुमहती ॥२॥ तत्स्थैर्यार्थं भावनाः पंचपंच ॥३॥ वाङ्मनोगुप्तीर्यादाननिक्षेपणसमित्यालोकितपानभोजनानि पंच ॥४॥ क्रोधलोभभीरुत्वहास्यप्रत्याख्यानान्यनुवीचिभाषणं च पंच ॥५॥ शून्यागारविमोचितावासपरोपरोधाकरणभैक्ष्यशुद्धिसधर्माविसंवादाः पंच ॥६॥ स्त्रीरागकथाश्रवणतन्मनोहरांगनिरीक्षणपूर्वरतानुस्मरणवृष्येष्टरसस्वशरीरसंस्कारत्यागाः पंच ॥७॥ मनोज्ञामनोज्ञेन्द्रियविषयरागद्वेषवर्जनानि पंच ॥८॥ हिंसादिष्विहामुत्रापायावद्यदर्शनं ॥९॥

दुःखमेव वा ।१०। मैत्रीप्रमोदकारुण्यमाध्यस्थ्यानि च सत्त्वगुणाधिकक्लिश्यमानाविनयेषु ।११। जगत्कायस्वभावौ वा संवेगवैराग्यार्थं ।१२। प्रमत्तयोगात्प्राणव्यपरोपणं हिंसा ।१३। असदभिधानमनृतं ।१४। अदत्तादानं स्तेयं ।१५। मैथुनमब्रह्म ।१६। मूर्छा परिग्रहः ।१७। निःशल्यो व्रती ।१८। अगार्यनगाराश्च ।१९। अणुव्रतोऽगारी ।२०। दिग्देशानर्थदंडविरतिसामायिकप्रोषधोपवासोपभोगपरिभोगपरिमाणातिथिसंविभागव्रतसम्पन्नश्च ।२१। मारणान्तिकीं सल्लेखनां जोषिता ।२२। शंकाकांक्षाविचिकित्सान्यदृष्टिप्रशंसासंस्तवाः सम्यग्दृष्टेरतीचाराः ।२३। व्रतशीलेषु पंच पंच यथाक्रमं ।२४। बन्धवधच्छेदातिभारारोपणान्नपाननिरोधाः ।२५। मिथ्योपदेशरहोभ्याख्यानकूटलेखक्रियान्यासापहारसाकारमंत्रभेदाः ।२६। स्तेनप्रयोगतदाहृतादानविरुद्धराज्यातिक्रमहीनाधिकमानोन्मानप्रतिरूपकव्यवहाराः ।२७। परविवाहकरणेत्वरिकापरिगृहीतापरिगृहीतागमनानंगक्रीडाकामतीव्राभिनिवेशाः ।२८। क्षेत्रवास्तुहिरण्यसुवर्णधनधान्यदासीदासकुप्यप्रमाणातिक्रमाः ।२९। ऊर्ध्वाधस्तिर्यग्व्यतिक्रमक्षेत्रवृद्धिस्मृत्यन्तराधानानि ।३०। आनयनप्रेष्यप्रयोगशब्दरूपानुपातपुद्गलक्षेपाः ।३१। कन्दर्पकौत्कुच्यमौखर्यासमीक्ष्याधिकरणोपभोगपरिभोगानर्थक्यानि ।३२। योगदुःप्रणिधानानादरस्मृत्यनुपस्थानानि ।३३। अप्रत्यवेक्षिताप्रमार्जितोत्सर्गादानसंस्तरोपक्रमणानादरस्मृत्यनुपस्थानानि ।३४। सचित्तसम्बन्धसम्मिश्राभिषवदुःपक्काहाराः ।३५।

सचित्तनिक्षेपापिधानपरव्यपदेशमात्सर्यकालातिक्रमाः ।३६।
जीवितमरणाशंसामित्रानुरागसुखानुबन्धनिदानानि ।३७।
अनुग्रहार्थं स्वस्यातिसर्गो दानं ।३८ विधिद्रव्यदातृपात्र-
विशेषात्तद्विशेषः ॥३९॥

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे सप्तमोऽध्यायः ॥

मिथ्यादर्शनाविरतिप्रमादकषाययोगा बन्धहेतवः ॥१॥
सकषायत्वाज्जीवः कर्मणो योग्यान्पुद्गलानादत्ते स बन्धः
।२। प्रकृतिस्थित्यनुभागप्रदेशास्तद्विधयः ३। आद्यो ज्ञानदर्श-
नावरणवेदनीयमोहनीयायुर्नामगोत्रान्तरायाः ।४। पंचनव-
द्व्यष्टाविंशतिचतुर्द्विचत्वारिंशद्द्विपंचभेदा यथाक्रमं ।५।
मतिश्रुतावधिमनःपर्ययकेवलानां ।६। चक्षुरचक्षुरवधिकेव-
लानां निद्रानिद्रानिद्राप्रचलाप्रचलाप्रचलास्त्यानगृद्धयश्च ।७।
सदसद्वेद्ये ।८। दर्शनचारित्रमोहनीयाकषायकषायवेदनी-
याख्यास्त्रिद्विनवषोडशभेदाः सम्यक्त्वमिथ्यात्वतदुभयान्यक-
षायाकषायौ हास्यरत्यरतिशोकभयजुगुप्सास्त्रीपुंनपुंसकवेदा
अनंतानुबन्ध्यप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानसंज्वलनविकल्पाश्चैकशः
क्रोधमानमायालोभाः ॥९॥ नारकतैर्यग्योनमानुषदैवानि
॥१०॥ गतिजातिशरीरांगोपांगनिर्माणबन्धनसंघातसंस्थान-
संहननस्पर्शरसगंधवर्णानुपूर्व्यागुरुलघूपघातपरघातातपोद्योतो-
च्छ्वासविहायोगतयः प्रत्येकशरीरत्रससुभगसुस्वरशुभसूक्ष्म-
पर्याप्तिस्थिरादेययशः कीर्तिसेतराणि तीर्थकरत्वं च ॥११॥
उच्चैर्नीचैश्च ॥१२॥ दानलाभभोगोपभोगवीर्याणां ॥१३॥
आदितस्तिसृणामन्तरायस्य च त्रिंशत्सागरोपमकोटीकोट्यः

परा स्थितिः ॥१४॥ सप्ततिर्मोहनीयस्य ॥१५॥ विंशतिर्नामगोत्रयोः ॥१६॥ त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाण्यायुषः ॥१७॥ अपराद्वादशमुहूर्ता वेदनीयस्य ॥१८॥ नामगोत्रयोरष्टौ ॥१९॥ शेषाणामन्तर्मुहूर्ता ॥२०॥ विपाकोऽनुभवः ॥२१॥ स यथानाम ॥२२॥ ततश्च निर्जरा ॥२३॥ नामप्रत्ययाः सर्वतो योगविशेषात्सूक्ष्मैकक्षेत्रावगाहस्थिताः सर्वात्मप्रदेशेष्वनन्तानन्तप्रदेशाः ॥२४॥ सद्वेद्यशुभायुर्नामगोत्राणि पुण्यं ॥२५॥ अतोन्यत्पापं ॥२६॥

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे अष्टमोऽध्यायः ॥

आश्रवनिरोधः संवरः ॥१॥ स गुप्तिसमितिधर्मानुप्रेक्षापरिषहजयचारित्रैः ॥२॥ तपसा निर्जरा च ॥३॥ सम्यग्योगनिग्रहो गुप्तिः ॥४॥ ईर्याभाषैषणादाननिक्षेपोत्सर्गाः समितयः ॥५॥ उत्तमक्षमामार्दवार्जवशौचसत्यसंयमतपस्त्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्याणि धर्मः ॥६॥ अनित्याशरणसंसारैकत्वान्यत्वाशुच्यास्रवसंवरनिर्जरालोकबोधिदुर्लभधर्मस्वाख्याततत्त्वानुचिंतनमनुप्रेक्षाः ॥७॥ मार्गाच्यवननिर्जरार्थं परिषोढव्याः परीषहाः ॥८॥ क्षुत्पिपासाशीतोष्णदंशमशकनाग्न्यारतिस्त्रीचर्यानिषद्याशय्याक्रोशवधयाचनाऽलाभरोगतृणस्पर्शमलसत्कारपुरस्कारप्रज्ञाऽज्ञानादर्शनानि ॥९॥ सूक्ष्मसांपरायछद्मस्थवीतरागयोश्चतुर्दश ॥१०॥ एकादश जिने ।११॥ बादरसांपराये सर्वे ॥१२॥ ज्ञानावरणे प्रज्ञाज्ञाने ॥१३॥ दर्शनमोहांतरायंयोरदर्शनालाभौ ॥१४॥ चारित्रमोहे नाग्न्यारतिस्त्रीनिषद्याक्रोशयाचनासत्कारपुरस्काराः ॥१५॥ वेदनीये शेषाः

॥१६॥ एकादयो भाज्या युगपदेकस्मिन्नैकोनविंशतेः ॥१७॥ सामायिकच्छेदोपस्थापनापरिहारविशुद्धिसूक्ष्मसांपराययथाख्यातमिति चारित्रं ॥१८॥ अनशनावमौदर्यवृत्तिपरिसंख्यानरसपरित्यागविविक्तशय्यासनकायक्लेशा बाह्यं तपः ॥१९॥ प्रायश्चित्तविनयवैयावृत्यस्वाध्यायव्युत्सर्गध्यानान्युत्तरं ॥२०॥ नवचतुर्दशपंचद्विभेदा यथाक्रमं प्राग्ध्यानात् ।२१। आलोचनप्रतिक्रमणतदुभयविवेकव्युत्सर्गतपश्छेदपरिहारोपस्थापनाः।२२। ज्ञानदर्शनचारित्रोपचाराः ॥२३॥ आचार्योपाध्यायतपस्विशैक्षग्लानगणकुलसंघसाधुमनोज्ञानां ॥२४॥ वाचनापृच्छनानुप्रेक्षाऽम्नायधर्मोपदेशाः ।२५। बाह्याभ्यंतरोपध्योः ॥२६। उत्तमसंहननस्यैकाग्रचिंतानिरोधो ध्यानमांतर्मुहूर्तात् ॥२७॥ आर्त्तरौद्रधर्म्यशुक्लानि ॥२८॥ परे मोक्षहेतू ॥२९॥ आर्त्तममनोज्ञस्य संप्रयोगे तद्विप्रयोगाय स्मृतिसमन्वाहारः ॥३०॥ विपरीतं मनोज्ञस्य ॥३१॥ वेदनायाश्च ॥३२॥ निदानं च ॥३३॥ तदविरतदेशविरतप्रमत्तसंयतानां ॥३४॥ हिंसाऽनृतस्तेयविषयसंरक्षणेभ्यो रौद्रमविरतदेशविरतयोः ॥३५॥ आज्ञापायविपाकसंस्थानविचयाय धर्म्यम् ॥३६॥ शुक्ले चाद्ये पूर्वविदः ॥३७॥ परे केवलिनः ॥३८॥ पृथक्त्वैकत्ववितर्कसूक्ष्मक्रियाप्रतिपातिव्युपरतक्रियानिवर्तीनि ॥ ३९ ॥ त्र्येकयोगकाययोगानां ॥४०॥ एकाश्रये सवितर्कवीचारे पूर्वे ॥४१॥ अवीचारं द्वितीयं ॥४२॥ वितर्कः श्रुतं ॥४३॥ वीचारोर्थव्यंजनयोगसंक्रांतिः ॥४४॥ सम्यग्दृष्टिश्रावकविरतानंतवियोजकदर्शनमोहक्षपकोपशमकोपशांतमोहक्षपकक्षीण-

मोहजिनाः क्रमशोऽसंख्येयगुणनिर्जराः ॥४५॥ पुलाकवकुशकुशीलनिर्ग्रंथस्नातका निर्ग्रंथाः ॥ ४६ ॥ संयमश्रुतप्रतिसेवनातीर्थलिंगलेश्योपपादस्थानविकल्पतः साध्याः ॥४७॥

इति तत्त्वार्थधिगमे मोक्षशास्त्रे नवमोऽध्यायः ॥

मोहक्षयाज्ज्ञानदर्शनावरणांतरायक्षयाच्च केवलं ॥१॥ बंधहेत्वभावनिर्जराभ्यां कृत्स्नकर्मविप्रमोक्षो मोक्षः ॥ २ ॥ औपशमिकादिभव्यत्वानां च ॥३॥ अन्यत्र केवलसम्यक्त्वज्ञानदर्शनसिद्धत्वेभ्यः ॥४॥ तदनंतरमूर्ध्वं गच्छंत्यालोकांतात् ॥ ५ ॥ पूर्वप्रयोगादसंगत्वाद्बंधच्छेदात्तथागतिपरिणामाच्च ॥६॥ आविद्धकुलालचक्रवद्व्यपगतलेपालांबुवदेरंडबीजवदग्निशिखावच्च ॥७॥ धर्मास्तिकायाभावात् ॥८॥ क्षेत्रकालगतिलिंगतीर्थचारित्रप्रत्येकबुद्धबोधितज्ञानवगाहनांतरसंख्याल्पबहुत्वतः साध्याः ॥ ९ ॥

इतितत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे दशमोऽध्यायः ॥

मोक्षमार्गस्य नेतारं, भेत्तारं कर्मभूभृतां ।
ज्ञातारं विश्वतत्वानां, वन्दे तद्गुणलब्धये ॥

कोटिशतं द्वादशं चैव कोट्यो लक्षाण्यशीतिस्त्र्यधिकानि चैव ।
पंचाशदष्टौ च सहस्रसंख्यामेतद्श्रुतं पंचपदं नमामि ॥१॥

अरहंत भासियत्थं गणहरदेवेहिं गंथियं सव्वं ।
पणमामि भत्तिजुत्तो, सुदणाणमहोवयं सिरसा ॥२॥

अक्षरमात्रपदस्वरहीनं व्यंजनसंधिविवर्जितरेफम् ।
साधुभिरत्र मम क्षमितव्यं को न विमुह्यति शास्त्रसमुद्रे ॥३॥

दशाध्याये परिच्छिन्ने तत्त्वार्थे पठिते सति ।
फलं स्यादुपवासस्य भाषितं मुनिपुंगवैः ॥४॥
तत्वार्थसूत्रकर्त्तारं गृद्ध्रपिच्छोपलक्षितम् ।
वंदे गणीन्द्रसंजातमुमास्वामिमुनीश्वरम् ॥५॥
जं सक्कइ तं कीरइ, जंपण सक्कइ तहेव सद्दहणं ।
सद्दहमाणो जीवो पावइ अजरामरं ठाणं ॥६॥
तव यरणं वयधरणं, संजमसरणं च जीवदयाकरणम् ।
अंते समाहिमरणं, चउविह दुक्खं णिवारेई ॥७॥

इति तत्वार्थसूत्रापरनाम तत्त्वार्थाधिगमोक्षशास्त्रं समाप्तम् ।

महावीराष्टकस्तोत्र ।

शिखरिणी ।

यदीये चैतन्ये मुकुर इव भावाश्चिद्चितः, समं भांति ध्रौव्यव्ययजनिलसंतोंतरहिताः । जगत्साक्षी मार्गप्रकटनपरो भानुरिवयो-महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे (नः) ॥ १ ॥ अताम्रं यच्चक्षुः कमलयुगलं स्पंदरहितं, जनान्कोपापायं प्रकटयति वाभ्यंतर-मपि । स्फुटं मूर्तिर्यस्य प्रशमितमयी वातिविमला । महावीर० ॥ २ ॥ नमन्नाकेंद्राली मुकुटमणिभाजालजटिलं, लसत्पादांभोजद्वयमिह यदीयं तनुभृतां । भवज्ज्वालाशांत्यै प्रभवति जलं वा स्मृतमपि । महावीर० ॥३॥ यदर्चाभावेन प्रमुदितमना दर्दुर इह, क्षणादासीत्स्वर्गी गुणगणसमृद्धः सुखनिधिः । लभंते सद्भक्ताः शिवसुखसमाजं किमुतदा । महावीर० ॥४॥ कनत्स्वर्णाभासोऽप्यपगततनुर्ज्ञाननिवहो, विचित्रात्माप्येको नृपतिवर-सिद्धार्थतनयः । अजन्मापि श्रीमान् विगतभवरागोद्भुतगतिर् । महा०

॥ ५ ॥ यदीया वाग्गंगा विविधनयकल्लोलविमला, बृहज्ज्ञानांभोभिर्जगति जनतां या स्नपयति । इदानीमप्येषा बुधजनमरालैः परिचिता । महावीर० ॥६॥ अनिर्वारोद्रेकस्त्रिभुवनजयी काम सुभटः, कुमारावस्थायामपि निजवलाद्येन विजितः । स्फुरन्नित्यानंदप्रशमपदराज्याय स जिनः । महावीर० ॥७॥ महामोहातंकप्रशमनपराकस्मिकभिषङ्, निरापेक्षो वंधुर्विदितमहिमा मंगलकरः । शरण्यः साधूनां भवभयभृतामुत्तमगुणो, महावीर० ॥८॥

महावीराष्टकं स्तोत्रं भक्त्या भागेंदुना कृत ।
यः पठेच्छृणुयाच्चापि स याति परमां गतिं ॥

महावीराष्टक स्तोत्र (भाषा)

चेतन अचेतन तत्त्व जेते, हैं अनन्त जहान में । उत्पाद व्यय ध्रुवमय मुकुरवत्, लसत जाके ज्ञान में । जो जगतदरशी जगत में सन्मार्ग दर्शक रवि मनो । ते वीर स्वामीजी हमारे, नयन पथगामी बनो ॥१॥ टिमिकार बिन जुग कमल लोचन लालिमा-तैं रहित हैं । बाह्य अन्तर की क्षमाको, भविजनों से कहत हैं । अति परम पावन शान्तिमुद्रा, जासु तन उज्ज्वल घनो । ते वीर स्वामीजी हमारे नयन पथगामी बनो ॥२॥ जिहिं स्वर्गवासी विपुल सुरपति नम्र तन वह नमत हैं । तिन मुकुटमणि के प्रभा मंडल पद्म पद में लसत हैं ॥ जिन मात्र सुमरन रूप जलसे, हनै भव आतप घनो । ते वीर स्वामी जी हमारे, नयन पथगामी बनो ॥३॥ मन मुदित ह्वै मंडूक ने, प्रभु पूजवे मनसा करी । ततछन लही सुर सम्पदा, बहुऋद्धि गुणनिधि सों भरी ॥ जिहिं भक्ति सों सद्व्रतजन लहैं, मुक्तिपुर को सुख घनो । ते वीर स्वामीजी हमारे, नयन पथगामी बनो ॥४॥

कंचन तपतवत ज्ञाननिधि हैं, तदपि ज्ञान वर्जित रहैं । जो हैं अनेक तथापि इक, सिद्धार्थ सुत भव रहित हैं ॥ जो वीतरागी गति रहित हैं, तदपि अद्भुत गति पनो । ते वीर स्वामीजी हमारे, नयन पथ गामी बनो ॥ ॥५॥ जिनकी वचन मय अमल सुरसरि, विविध नय लहरें धरें । जो पूर्ण ज्ञान स्वरूप जल से, न्हवन भविजन को करें ॥ तामैं अजों लगि घने पंडित, हंस ही सोहत मनो । ते वीर स्वामीजी हमारे नयन पथगामी बनो ॥ ६ ॥ जाने जगत की जंतु जनता, करी स्ववश तमाम है । है वेग जाको अमिट ऐसो, विकट अतिभट काम है ॥ ताकों स्वबल से प्रौढवय में, शांति शासन हित हनो । ते वीर स्वामीजी हमारे नयन पथगामी बनो ॥ ७॥ भयभीत भव में साधुजन को, शरण उत्तम गुण भरे । निस्वार्थ के ही जगत बांधव, विदित यश मंगल करे ॥ जो मोह रूपी रोग हनिवे वैद्यवर अद्भुत मनो । ते वीर स्वामीजी हमारे नयन पथ गामी बनो ॥ ८ ॥

दोहा—महावीर अष्टक रच्यो, भागचन्द रुचि ठान ।
पढै सुनै जो भाव सों, ते पावें निरवान ॥

—o—

स्वर्गीय पण्डित हेमराजजी कृत

भक्तामर स्तोत्र भाषा

दोहा

आदि पुरुष आदीश जिन, आदि सुविधिकरतार ।
धरमधुरन्धर परमगुरु, नमों आदि अवतार ॥ १ ॥

चौपाई १५ मात्रा

सुरनतमुकुटरतन छवि करैं, अंतरपापतिमिर सब हरैं ।
जिनपद बंदों मनवचकाय, भवजल पतित उद्धरन सहाय ॥ १ ॥

श्रुतिपारग इन्द्रादिकदेव, जाकी थुति कीनी कर सेव।
शब्दमनोहर अरथ विशाल, तिस प्रभु की वरनों गुणमाल ॥ २ ॥

विबुधवंद्यपद मैं मतिहीन, होय निलज थुति-मनसा कीन।
जलप्रतिबिंब बुद्ध को गहै, शशिमण्डल बालक ही चहै ॥ ३ ॥

गुणसमुद्र तुमगुण अविकार, कहत न सुरगुरु पावैं पार।
प्रलयपवन उद्धत जलजन्तु, जलधि तिरै को भुज बलवंतु ॥ ४ ॥

सो मैं शक्तिहीन थुतिकरूं, भक्तिभाववश कछु नहीं डरूं।
ज्यों मृग निजसुत पालन हेत, मृगपति सनमुख जाय अचेत ॥ ५ ॥

मैं शठ सुधी हंसन को धाम, मुझ तव भक्ति बुलावैं राम।
ज्यों पिक अम्बकली परभाव, मधुऋतु मधुर करे आराव ॥ ६ ॥

तुम जस जंपत जन छिनमाहिं, जनमजनम के पाप नसाहिं।
ज्यों रवि उगै फटै ततकाल, अलिवत नील निशातमजाल ॥ ७ ॥

तव प्रभावतैं कहूँ विचार, होसी यह थुति जनमनहार।
ज्यों जल कमलपत्र पै परै, मुक्ताफल की दुति विस्तरै ॥ ८ ॥

तुम गुणमहिमा हतदुखदोष, सो तो दूर रहो सुख पोष।
पापविनाशक है तुम नाम, कमलविकाशी ज्यों रविधाम ॥ ६ ॥

नहिं अचम्भ जो होहिं तुरन्त, तुमसे तुम गुण बरनत सन्त।
जो अधनी को आप समान, करे न सो निंदित धनवान ॥ १० ॥

इकटक जन तुमको अविलोय, और विषैं रतिकरै न सोय।
कोकरि क्षीर जलधिजलपान, क्षारनीर पीवै मतिमान ॥ ११ ॥

प्रभु तुम वीतरागगुणलीन, जिन परमाणु देह तुम कीन।
हैं तितने ही ते परमानु, यातैं तुमसम रूप न आनु ॥ १२ ॥

कहं तुमसुख अनुपम अविकार, सुरनरनागनयनमनहार।
कहाँ चन्द्र मण्डल सकलंक, दिन में ढाकपत्रसम रंक ॥ १३ ॥

पूरणचन्द्र जोति छबिवंत, तुमगुण तीनजगत लंघंत।
एकनाथ त्रिभुवन आधार, तिन विचरत को करे निवार ॥ १४ ॥

जो सुरतियविभ्रमआरम्भ, मन न डिग्यौ तुम तौ न अचंभ।
अचल चलावै प्रलय समीर, मेरुशिखर डगमगै न धीर॥१५॥
धूमरहित बाती गतनेह, परकाशै त्रिभुवन घर येह।
वातगम्य नाहीं परचंड, अपर दीप तुम बलो अखण्ड॥ १६॥
छिपहु न लुपहु राहुकी छाँहि, जगपरकाशक हो छिनमांहि।
घन अनवर्त्त दाह विनिवार, रवि तै अधिक धरौ गुणसार॥१७॥
सदा उदित विदलिततममोह, विघटित मेघ राहु आरोह।
तुम मुखकमल अपूरव चन्द, जगतविकाशी ज्योति अमंद॥ १८॥
निशिदिन शशिरवितकौ नहिं काम, तुव मुखचंद हरै तमधाम।
जो स्वभावतैं उपजै नाज, सजल मेघतैं कौनहु काज॥ १९॥
जो सुबोध सोहै तुम मांहि, हरिहर आदिक में सो नांहि।
जो दुति महारतन में होय, काचखण्ड पावै नहिं सोय॥ २०॥

नाराचछन्द—सराग देवदेख मैं भला विशेष मानिया,
स्वरूप जाहि देख वीतराग तू पिछानिया।
कछू न तोहि देखके जहां तुही विशेषिया,
मनोग चित्तचोर और भूल हूं न देखिया॥ २१॥
अनेक पुत्रवंतिनी, नितंविनी सपूत हैं,
न तो समान पुत्र और माततैं प्रसूत है।
दिशा धरंत तारिका अनेक कोटि को गिनै,
दिनेश तेजवंत एक पूर्व ही दिशा जनै॥ २२॥
पुराण हो पुमान हो पुनीत पुन्यवान हो,
कहैं मुनीश अन्धकारनाशको सुभान हो।
महंत तोहि जानके न होय वश्य कालके,
न और मोहि मोखपंथ देव तोहि टालके॥ २३॥
अनंत नित्य चित्त के अगम्य रम्य आदि हो,
असंख्य सर्वव्यापि विष्णु ब्रह्म हो अनादि हो।

महेश कामकेतु जोग-ईश जोग-ज्ञान हो,
अनेक एक ज्ञानरूप शुद्ध संतमान हो ॥ २४ ॥
तुही जिनेश बुद्ध है सुबुद्धि के प्रमानतैं,
तुही जिनेश शंकरौ जगत्त्रयैं विधानतैं।
तुही विधाता है सही सुमोखपंथ धारतैं,
नरोत्तमो तुही प्रसिद्ध अर्थके विचारतैं ॥ २५ ॥
नमो करूं जिनेश तोहि आपदा निवार हो,
नमो करूं सुभूरि भूमिलोक के सिंगार हो।
नमो करूं भवाब्धिनीरराशिशोख हेतु हो,
नमो करूं महेश तोहि मोक्ष पंथ देतु हो ॥ २६ ॥

चौपाई १५ मात्रा

तुम जिन पूरन गुनगन भरे, दोष गरब करि तुम परिहरे।
और देवगण आश्रय पाय, सुपन न देखे तुम फिर आय ॥ २७ ॥

तरुअशोकतर किरन उदार, तुम तन शोभित है अविकार।
मेघ निकट ज्यों तेज फुरंत, दिनकर दिपै ज्यों तिमिर निहंत ॥ २८ ॥

सिंहासन मणिकिरणविचित्र, तापर कंचनवरन पवित्र।
तुम तनु शोभित किरणविथार, ज्यों उदयाचल रवि तमहार ॥ २९॥

कुंद पुहुपसित चमर ढुरंत, कनक वरण तुम तन शोभंत।
ज्यों सुमेरुतट निर्मल कांति, झरना झरैं नीर उमगांति ॥ ३० ॥

ऊंचे रहैं सूर-दुति लोप, तीन छत्र तुम दिपैं अगोप।
तीन लोक की प्रभुता कहैं, मोती झालरसों छबि लहैं ॥ ३१ ॥

दुंदुभि शब्द गहर गम्भीर, चहुंदिशि होय तुम्हारे धीर।
त्रिभुवनजन शिवसंगम करैं, मानौं जय २ रव उंचरैं ॥ ३२ ॥

मंद पवन गंधोदक इष्ट, विविध कल्पतरु पुहुपसुवृष्ट।
देव करैं विकसित दल सार, मानों द्विजपंकति अवतार ॥ ३३ ॥

तुमतन भामण्डल जिनचन्द, सब दुतिवंत करत है मंद।
कोटिशंख रवि तेज छिपाय, शशि निर्मल निशि करै अछाय ॥३४॥

स्वर्ग मोक्षमारगसंकेत, परम धरम उपदेशन हेत।
दिव्य वचन तुम खिरैं अगाध, सब भाषागर्भित हितसाध ॥३५॥
दोहा-विकसित सुवरन कमल दुति, नख दुति मिल चमकाहिं।
तुमपद पदवी जहं धरैं, तहं सुर कमल रचाहिं ॥३६॥
जैसी महिमा तुम विषैं, और धरैं नहिं कोय।
सूरज में जो ज्योति है, नहिं तारागण होय॥ ३७॥

षट्पद

मदअवलिप्तकपोल-मूल, अलिकुल झंकारैं,
तिन सुन शब्द प्रचंड, क्रोध उद्धत अति धारैं।
कालवरन विकराल, कालवत् सन्मुख आवै,
ऐरावत सो प्रबल, सकल जन भय उपजावैं॥
देखि गयन्द न भय करैं, तुम पद महिमालीन,
विपतिरहित सम्पतिसहित, बरतैं भक्तअदीन ॥३८॥

अति मदमत्तगयंद, कुम्भथल नखन विदारै,
मोती रक्त समेत, डारि भूतल सिंगारै।
बांकी दाड़ विशाल, वदन में रसना लोलै,
भीम भयानक रूप देखि जन थरहर डोलै॥
ऐसे मृगपतिपगतलै, जो नर आयो होय,
शरण गहे तुम चरण की बाधा करै न सोय ॥३९॥

प्रबल पवन कर उठी आग जो तास पटंतर,
वमैं फुलिंग शिखा उतंग पर जलै निरंतर।
जगत समस्त निगल्ल, भस्मकर देगी मानों,
तडतडाट दव अनल, जोर चहुं दिशा उठानों।
सो इक छिन में उपशमै, नाम नीर तुम लेत,
होय सरोवर परिनमैं, विकसित कमल समेत ॥४०॥
कोकिलकंठ समान श्यामतन क्रोध जलंता,
रक्तनयन फुंकार, मार विष-कण उगलंता।
फण को ऊंचो करै, वेग ही सनमुख धाया॥

तब जन होय निशंक, देख फणपतिको आया ॥
जो चापै निज पांवतैं, व्यापै विष न लगार,
नागदमनि तुव नामकी, है जिनके आधार ॥४१॥
जिस रण माहिं भयानक, शब्द कर रहे तुरंगम,
घन सम गज गरजाहिं, मत्त मानों गिरि जंगम।
अति कोलाहल माहिं, बात जहँ नहीं सुनीजै,
राजन को परचंड, देख बल धीरज छीजै॥
नाथ तिहारे नाम तैं, सो छिन मांहि पलाय,
ज्यों दिनकर प्रकाशतैं, अन्धकार विनशाय ॥ ४२ ॥
मारे जहां गयन्द, कुम्भ हथियार विदारे,
उमगे रुधिर-प्रवाह, वेग जलसौं विस्तारे।
होय तिरन असमर्थ, महाजोधा बलपूरे,
तिस रन में जिन तोय, भक्त जे हैं नरसूरे॥
दुर्जय अरिकुल जीत के, जय पावें निकलंक,
तुम पदपंकज मन बसैं, ते नर सदा निशंक ॥ ४३ ॥
नक्र चक्र मगरादि, मच्छकरि भय उपजावै,
जामें बडवा अग्नि, दाहतैं नीर जलावै।
पार न पावे जास, थाह नहिं लहिए जाकी,
गरजें अति गम्भीर, लहर की गिनति न ताकी॥
सुख सों तिरैं समुद्र को, जे तुम गुण सुमराहिं,
लोल कलोलन के शिखर, पार यान ले जांहि ॥४४॥
महा जलोदर रोग, भार पीडित नर जे हैं,
वात पित्त कफ कुष्ठ, आदि जो रोग गहे हैं।
सोचत रहें उदास, नांहि जीवन की आशा,

अति घिनावनी देह, धरैं दुर्गन्ध निवासा ॥
तुम पद पंकज धूल को, जो लावें निज अङ्ग,
ते निरोग शरीर लहिं, छिन में होहिं अनङ्ग ॥ ४५ ॥
पांव कंठ तैं जकर बांध सांकल अति भारी,
गाढी बेडी पैर मांहि जिन जांघ विदारी।
भूख प्यास चिन्ता शरीर, दुख जे विललाने,
शरण नांहि जिन कोय, भूप के बन्दीखाने ॥
तुम सुमरत स्वयमेवही, बन्धन सब खुल जाहिं,
छिनमें ते सम्पति लहैं, चिन्ता-भय विनसाहिं ॥ ४६ ॥
महामत्त गजराज, और मृगराज दवानल,
फनपति रण परचंड नीरनिधि रोग महाबल।
बन्धन ये भए आठ, डरपकर मानों नाशैं,
तुम सुमरत छिनमाहिं, अभय-थानक परकाशैं ॥
इस अपार संसार में, शरण नाहिं प्रभु कोय,
यातैं तुम पद भक्त को, भक्ति सहाई होय ॥ ४७ ॥
यह गुणमाल विशाल, नाथ तुम गुणन संवारी,
विविध वर्णमय पुहुप, गूंथ मैं भक्ति विथारी।
जे नर पहिरै कंठ भावना मन में भावै,
मानतुंगते निजाधीन, शिव-लक्ष्मी पावैं ॥
भाषा भक्तामर कियो, हेमराज हितहेत,
जे नर पढैं सुभाव सौं, ते पावैं शिव खेत ॥४८॥

श्री पार्श्वनाथ स्तोत्र

नरेंद्रं फणींद्रं सुरेंद्रं अधीशं, शतेंद्रं सु पूजैं भजैं नाय शीशं।
मुनींद्रं गणेंद्रं नमों जोड़ि हाथं, नमो देवदेवं सदा पार्श्वनाथं ॥१॥
गजेंद्रं मृगेंद्रं गह्यो तू छुड़ावै, महा आगतैं नागतैं तू बचावै।
महावीरतैं युद्ध में तू जितावै, महा रोगतैं बंधतैं तू छुडावै ॥२॥
दुखी दुःख हर्ता सुखीसुक्खकर्त्ता, सदा सेवकों को महानंद भर्त्ता।
हरे यक्ष राक्षस भूतं पिशाचं, विषं डाकिनी विघ्न के भय अवाचं ॥३॥
दरिद्रीनको द्रव्य के दान दीने, अपुत्रीनकों तै भले पुत्र कीने।
महासंकटों से निकारै विधाता, सबै संपदा सर्व को देहि दाता ॥४॥
महाचोर को वज्रको भय निवारै, महापौनके पुञ्जतैं तू उबारै।
महाक्रोध की अग्नि को मेघ-धारा, महालोभ-शैलेश को वज्रभारा ॥५
महामोह अंधेर को ज्ञान भानु, महाकर्मकांतारको दौं प्रधानं।
किये नागनागिन अधोलोकस्वामी, हर्यो मान तू दैत्यको हो अकामी ।६
तुही कल्पवृक्षं तुही कामधेनं, तुही दिव्य चिंतामणी नाग एनं।
पशू नर्क के दुःखतैं तू छुड़ावै, महास्वर्ग में मुक्ति में तू बसावै ॥७॥
करै लोह को हेमपाषाण नामी, रटै नाम सो क्यों न हो मोक्षगामी।
करै सेव ताकी करैं देव सेवा, सुनै बैन सोही लहै ज्ञान मेवा ॥८॥
जपै जाप ताको नहीं पाप लागै, धरै ध्यान ताके सबै दोष भागै।
बिना तोहि जाने धरे भव घनेरे, तुम्हारी कृपातैं सरे काज मेरे ॥९

दोहा—गणधर इन्द्र न कर सकैं, तुम बिनती भगवान्।
'द्यानत' प्रीति निहारकैं, कीजे आप समान ॥१०॥

श्री शांतिनाथ स्तोत्र

भये आप जिन देव जगत में सुख विस्तारे।
तारे भव्य अनेक तिनों के संकट टारे॥

टारे आठों कर्म मोक्ष सुख तिन को भारी।
भारी वृद्ध निहार लही मैं शरण तिहारी॥
चरणन को सिर नाय हूँ, दुख दरिद्र संताप हर।
हर सकल कर्म छिन एक में, शांति जिनेश्वर शांति कर॥१॥
दोहा—सारंग लक्षण चरण में, उन्नत धनु चालीस।
हाटक वर्ण शरीर दुति, नमूं शांति जग ईस॥

॥ छन्द भुजंग प्रयात॥

प्रभु आपने सर्व के फंद तोड़े, गिनाऊं कछू मै तिनों नाम थोड़े।
पड्यो अंबुधी बीच श्रीपाल आई, जपो नाम तेरो भए थे सहाई॥१
धरो राय ने सेठ को शूलिका पै, जपी आपके नाम की सार जापै।
भये थे सहाई तबै देव आये, करी फूल वर्षा सु विष्टर बिठाये॥२
तबै लाख के धाम सब ही प्रजारी, भयो पांडवों पै महा कष्ट भारी।
जबै नाम तेरे तनी टेर कीनी, करी थी विदुर ने वही राह दीनी॥३
हरी द्रोपदी धातुकी खंड मांही, तुम्हीं हो सहाई भला और नाहिं।
लियो नाम तेरो भलो शील पालो, बचाई तहांतें सबै दुःख टालो॥४
जबै जानकी राम ने जो निकारी, धरे गर्भ को भार उद्यान डारी।
रटो नाम तेरो सबै सौख्यदाई, करी दूर पीडा सु छिन ना लगाई॥५
विसन सात सेवै करै तस्कराई, सुअंजन को तारथो घडी ना लगाई।
सहे अञ्जना चंदना दुःख जेते, गये भाग सारे जरा नाम लेते॥६
घडे बीच में सास ने नाग डारो, भलो नाम तेरो जुसोमा संभारो।
गई काढने को भई फूल माला, भई है विख्यात सबै दुःख टाला॥७
इन्हें आदि देके कहां लों बखानों, सुनो वृद्धभारी तिहुँलोक जानो।
अजी नाथ मेरी जरा ओर हेरो, बडो नाव तेरी रती बोझ मेरो॥८
गहो हाथ स्वामी करो वेग पारा, कहूं क्या अबै आपनी मै पुकारा।
सबै ज्ञान के बीच भासी तुम्हारे, करो देर नाहिं अहो शांति प्यारे॥९॥

घत्ता—

श्री शांति तुम्हारी, कीरति भारी, सुन नर नारी गुणमाला।
'बखतावर' ध्यावे, रतन सुगावे, मम दुख दारिद्र सब टाला ॥१०॥

आलोचना पाठ।

दोहा—बंदों पांचों परमगुरु, चौवीसों जिनराज।
करूं शुद्ध आलोचना, शुद्धिकरन के काज ॥१॥

सखी छंद चौदह मात्रा।

सुनिये जिन अरज हमारी, हम दोष किये अति भारी।
तिनकी अब निवृत्ति काज, तुम शरण लही जिनराज ॥२॥
इक वे ते चउ इंद्री वा, मनरहित सहित जे जीवा।
तिनकी नहिं करुणा धारी, निरदइ ह्वै घात विचारी ॥३॥
समरंभ समारंभ आरंभ, मनवचतन कीने आरंभ।
कृत कारित मोदन करिकै, क्रोधादि चतुष्टय धरिकै ॥४॥
शत आठ जु इमि भेदनतैं, अघ कीने परछेदनतैं।
तिनकी कहुं कोलौं कहानी, तुम जानत केवलज्ञानी ॥५॥
विपरीत एकांत विनयके, संशय अज्ञान कुनयके।
वश होय घोर अघ कीने, वचतैं नहिं जाय कहिने ॥६॥
कुगुरुनकी सेवा कीनी, केवल अदयाकरि भीनी।
याविधि मिथ्यात भ्रमायो, चहुंगति मधि दोष उपायो ॥७॥
हिंसा पुनि झूठ जु चोरी, परवनितासों दृग जोरी।
आरंभपरिग्रह भीनो, पनपाप जु या विधि कीनो ॥८॥
सपरस रसना घ्राननको, दृग कान विषयसेवनकों।
बहु कर्म किये मनमानी, कछु न्याय अन्याय न जानी ॥९॥

फल पंच उदंबर खाये, मधु मांस मद्य चितचाहे।
नहिं अष्टमूलगुणधारी, विषयन सेये दुखकारी ॥ १० ॥
दुइवीस अभख जिनगाये, सो भी निशदिन भुंजाये।
कछु भेदाभेद न पायो, ज्यौं त्यौं करि उदर भरायो ॥ ११ ॥
अनंतानुजुबंधी जानो, प्रत्याख्यान अप्रत्याख्यानो।
संज्वलन चौकरी गुनिये, सब भेद जु षोडश मुनिये ॥ १२ ॥
परिहास अरति रति शोग, भय ग्लानि तिवेद संजोग।
पनवीस जु भेद भये इम, इनके वश पाप किये हम ॥ १३ ॥
निद्रावश शयन कराई, सुपने मधि दोष लगाई।
फिर जाग विषयवन धायो, नानाविधि विषफल खायो ॥ १४ ॥
किये आहार निहार विहारा, इनमें नहिं जतन विचारा।
विन देखी धरी उठाई, विन शोधी वस्तु जु खाई ॥ १५ ॥
तब ही परमाद सतायो, बहुविधि विकलप उपजायो।
कछु सुधिबुधि नाहिं रही है, मिथ्यामति छाय गयी है ॥ १६ ॥
मरजादा तुमढिग लीनी, ताहू में दोष जु कीनी।
भिन भिन अब कैसे कहिये, तुम ज्ञानविषैं सब पइये ॥ १७ ॥
हा हा ! मैं दुठ अपराधी, त्रसजीवनराशि विराधी।
थावरकी जतन न कीनी, उर में करुना नहिं लीनी ॥ १८ ॥
पृथिवी बहु खोद कराई, महलादिक जागां चिनाई।
पुनि विन गाल्यो जल ढोल्यो, पंखातैं पवन विलोल्यो ॥ १९ ॥
हा हा मैं अदयाचारी, बहु हरितकाय जु विदारी।
तामधि जीवन के खंदा, हम खाये धरि आनन्दा ॥ २० ॥
हा हा ! परमाद बसाई, विन देखे अगनि जलाई।
तामधि जे जीव जु आये, ते हू परलोक सिधाये ॥ २१ ॥
बीध्यो अन्न राति पिसायो, ईंधनविन सोधि जलायो।
झाड़ू ले जागां बुहारी, चिंवटी आदिक जीव विदारी ॥ २२ ॥

जल छानि जिवानी कीनी, सो हू पुनि डारि जु दीनी।
नहिं जलथानक पहुंचाई, किरिया बिन पाप उपाई॥ २३॥
जल मल मोरिन गिरवायो, कृमिकुल बहु घात करायो।
नदियन बिच चीर धुवाये, कोसनके जीव मराये॥ २४॥
अन्नादिक शोध कराई, ता में जु जीव निसराई।
तिनका नहिं जतन करायो, गलियारे धूप डराया॥ २५॥
पुनि द्रव्य कमावन काजे, बहु आरंभ हिंसा साजे।
किये तिसनावश भारी, करुना नहिं रंच विचारी॥ २६॥
ताको जु उदय अब आयो, नाना विधि मोहि सतायो।
फल भुंजत जियदुख पावै, वचतै कैसे करि गावै॥ २७॥
तुम जानत केवलज्ञानी, दुख दूर करो शिवथानी।
हम तो तुम शरण लही है, जिन तारनविरद सही है।
जो गांवपती इक होवै, सो भी दुखिया दुख खोवै।
तुम तीन भुवन के स्वामी, दुख मेटहु अंतरजामी॥ २८॥
द्रौपदिको चीर बढ़ायो, सीता प्रति कमल रचायो।
अंजन से किये अकामी, दुख मेटहु अन्तरजामी॥ ३०॥
मेरे अवगुन न चितारो, प्रभु अपनो विरद निहारो।
सब दोषरहित करि स्वामी, दुख मेटहु अन्तरजामी॥ ३१॥
इन्द्रादिक पदवी न चाहूं, विषयनि में नाहिं लुभाऊं।
रागादिक दोष हरीजै, परमातम जिनपद दीजै॥ ३२॥

दोहा—

दोषरहित जिनदेवजी, जिनपद दीज्यो मोय।
सब जीवन के सुख बढ़ै, आनन्द मंगल होय॥
अनुभव माणिक पारखी, 'जौंहरी' आप जिनंद।
ये ही वर मोहि दीजिये, चरण शरण आनंद॥ इति

भाषा सामायिक पाठ

अथ प्रथम प्रतिक्रमण कर्म

काल अनंत भ्रम्यो जगमें सहिया दुख भारी। जन्ममरण नित किये पापको ह्वै अधिकारी॥ कोटि भवांतरमाहिं मिलन दुर्लभ सामायिक। धन्य आज मैं भयो योग मिलियो सुखदायक॥ १॥ हे सर्वज्ञ जिनेश किये जे पाप जु मैं अब। ते सब मनवचकाय योगकी गुप्ति बिना लभ॥ आप समीप हजूरमाहिं मैं खडो २ सब। दोष कहूँ सो सुनो करो नठ दुःख देहिं जब ॥ २॥ क्रोध मान मद लोभ मोह मायावशि प्रानी। दुःख सहित जे किये दया तिनकी नहिं आनी॥ बिना प्रयोजन एकेंद्रिय बि ति चउ पचेंद्रिय। आप प्रसादहि मिटै दोष जो लाग्यो मोहि जिय॥ ३॥ आपस में इक ठोर थापि करि जे दुःख दीने। पेलि दिये पगतलें दाबकरि प्राण हरीने॥ आप जगत के जीव जिते तिन सबके नायक। अरज करौं मैं सुनो दोष मेटो सुखदायक॥ ४॥ अंजन आदिक चोर महा घनघोर पापमय। तिनके जे अपराध भये ते क्षमा क्षमा किय॥ मेरे जे अब दोष भये ते क्षमों दयानिधि। यह पडिकोणो कियो आदि षटकर्म मांहिं विधि॥ ५॥

अथ द्वितीय प्रत्याख्यान कर्म

जो प्रमादवशि होय विराधे जीव घनेरे। तिनको जो अपराध भयो मेरे अघ ढेरे॥ सो सब झूठो होउ जगतपति के परसादै। जा प्रसादतै मिलै सर्व सुख दुःख न लांधै॥ ६॥ मैं पापी निर्लज्ज दयाकरि हीन महाशठ। किये पाप अति घोर पापमति होय चित्त दुठ॥ निंदूं हूँ मैं बारबार निज जियको गरहूँ। सब विध धर्म उपाय पाय फिर पापहिं करहूँ॥ ७॥ दुर्लभ है नरजन्म तथा श्रावककुल भारी। सतसंगति संयोग धर्म जिन श्रद्धाधारी॥

जिनवचनामृतधार समावर्तै जिनवानी। तौहू जीव संहारे धिक धिक धिक हम जानी ॥ ८ ॥ इंद्रियलंपट होय खोय निज ज्ञानजमा सब। अज्ञानी जिम करै तिसी विधि हिंसक ह्वै अब ॥ गमनागमन करंतो जीव विराधे भोले। ते सब दोष किये निंदूं अब मनवच तोले ॥ ९ ॥ आलोचनविधथकी दोष लागे जु घनेरे। ते सब दोष विनाश होउ तुमतैं जिन मेरे ॥ बार बार इस भांति, मोह मद दोष कुटिलता। ईर्षादिकतैं भये निंदिये जे भयभीता ॥ १० ॥

अथ तृतीय सामायिक कर्म।

सब जीवनमैं मेरे समताभाव जग्यो है। सब जिय मो सम समता राखो भाव लग्यो है ॥ आर्त रौद्र द्वय ध्यान छाँड़ि करिहूं सामायक। संयम मो कब शुद्ध होय यह भाव बधायक ॥ ११ ॥ पृथिवि जल अरु अग्नि वायु चउ काय वनस्पति। पंचहि थावरमाहिं तथा त्रस जीव बसैं जित ॥ वे इंद्रिय तिय चउ पंचेंद्रियमाहिं जीव सब। तिनतैं क्षमा कराऊं मुझ पर क्षमा करो अब ॥ १२ ॥ इस अवसर मैं मेरे सब सम कंचन अरु त्रण। महल मसान समान शत्रु अरु मित्र हि सम गण ॥ जामन मरण समान जानि हम समता कीनो। सामायिकका काल जितै यह भाव नवीनो ॥ १३ ॥ मेरो है इक आतम तामैं ममत जु कोनौ। और सबै मम भिन्न जानि सो समतरास भीनौ ॥ मात पिता सुत बंधु मित्र तिय आदि सबै यह। मोतैं न्यारे जानि जथारथरूप करयो गह ॥ १४ ॥ मैं अनादि जगजालमाहिं फँसि रूप न जाण्यो। एकेंद्रिय दे आदि जंतुको प्राण हराण्यो ॥ ते अब जीवसमूह सुनो मेरी यह अरजी। भवभवको अपराध क्षमा कीज्यो करि मरजी ॥ १५ ॥

अथ चतुर्थ स्तवन कर्म।

नमूं ऋषभ जिनदेव अजित जिन जीत कर्मकों। संभव भवदुखहरणकरण अभिनंद शर्मकों ॥ सुमति सुमतिदातार तार

भवसिंधु पारकर। पद्मप्रभ पद्माभ भानि भवभीति प्रीतिधर ॥१६॥ श्रीसुपार्श्व कृत पास नाश भव जास शुद्ध कर। श्रीचंद्रप्रभ चंद्रकांतिसम देहकांति धर ॥ पुष्पदंत दमि दोषकोश भवि पोष रोषहर। शीतल शीतल करन हरन भवताप दोषहर ॥१७॥ श्रेयरूप जिन श्रेय धेय नित सेय भव्यजन। वासुपूज्य शतपूज्य वासवादिक भवभय हन ॥ विमल विमलमतिदैन अंतगत हैं अनंत। जिन धर्म शर्म शिवकरन शांति जिन शांतिविधायिन ॥१८॥ कुंथ कुंथ मुखजीवपाल अरनाथ जाल हर। मल्लि मल्लसम मोहमल्ल मारण प्रचार। धर मुनिसुव्रत व्रतकरण नमत सुरसंघहि नमि जिन। नेमिनाथ जिन नेमि धर्मरथ मांहि ज्ञान धन ॥१६॥ पार्श्वनाथ जिन पार्श्व उपलसम मोक्षरमापति। वर्द्धमान जिन नमूं वमूं भवदुःख कर्मकृत ॥ याविध मैं जिनसंघरूप चउवीस संख्यधर। स्तउं नमूं हूं बार बार बंदौं शिवसुखकर ॥२०॥

अथ पंचम वंदना कर्म।

बंदूं मैं जिनवीर धीर महावीर सु सन्मति। वर्द्धमान अतिवीर बंदिहों मनवचतनकृत ॥ त्रिशलातनुज महेश धीश विद्यापति बंदूं। बंदूं नितप्रति कनकरूपतनु पाप निकंदूं ॥२१॥ सिद्धारथ नृपनंद द्वंद दुखदोष मिटावन। दुरित दवानल ज्वलित ज्वाल जगजीव उधारन ॥ कुंडलपुर करि जन्म जगतजिय आनंदकारन। वर्ष बहत्तरि आयु पाय सब ही दुख टारन ॥२२॥ सप्त हस्त तनु तुंग भंग कृत जन्म मरण भय। बालब्रह्ममय ज्ञेय हेय आदेय ज्ञानमय ॥ दे उपदेश उधारि तारि भवसिंधु जीवधन। आप बसे शिवमाहिं ताहि बंदौं मनवचतन ॥२३॥ जाके बंदनथकी दोष दुख दूरहि जावै। जाके बंदनथकी मुक्ति तिय सम्मुख आवै ॥ जाके बंदनथकी बंध होवैं सुरगनके। ऐसे वीर जिनेश बंदिहूं क्रमयुग तिनके ॥२४॥ सामायिक षटकर्ममाहिं वंदन यह पंचम।

वंदे वीरजिनेंद्र इंद्रशतवंद्य वद्य मम ॥ जन्म मरण भय हरो करो अघ शांत शांतिमय । मैं अघकोश सुपोष दोषको दोष विनाशय ॥ २५ ॥

अथ छट्टाकायोत्सर्गकर्म ।

कायोत्सर्गविधान करूं अंतिम सुखदाई । काय त्यजन मय होय काय सबको दुखदाई ॥ पूरब दक्षिण नमूं दिशा पश्चिम उत्तर मैं। जिनगृह वंदन करूं हरूं भव पापतिमिर मैं ॥२६॥ शिरोनती मैं करूं नमूं मस्तक कर धरिकै । आवर्त्तादिक क्रिया करूं मनवच-मदहरिकैं ॥ तीन लोक जिनभवनमांहिं जिन हैं जु अकृत्रिम । कृत्रिम हैं द्वयअर्द्ध द्वीपमाहिं वंदौं जिम ॥२७॥ आठकोडिपरि छपन लाख जु सहस सत्याणूं । चारि शतकपरि असी एक जिनमंदिर जाणूं ॥ व्यंतर ज्योतिषमाहिं संख्यरहिते जिनमंदिर जिनगृह वंदन करूं हरहु मम पाप सघकर ॥२८॥ सामायिक सम नाहिं और कोउ वैर मिटायक । सामायिक सम नाहिं और कोउ मैत्रीदायक ॥ श्रावक अणुव्रत आदि अंत सप्तम गुणथानक । यह आवश्यक किये होय निश्चय दुखहानक ॥१६॥ जे भवि आतम काज करण उद्यमके धारी । ते सब काज विहाय करो सामायिक सारी ॥ राग दोष मद मोह क्रोध लोभादिक जे सब । बुध 'महाचन्द्र' विलाय जाय तातैं कीयो अब ॥

इतिसामायिक भाषापाठ समाप्त ।

निर्वाणकाण्ड (गाथा)

अट्ठावयम्मि उसहो चंपाए वासुपुज्जजिणणाहो । उज्जंते णेमि जिणो पावाए णिव्वुदो महावीरो ॥१॥ वीसं तु जिणवरिंदा अमरासुरवंदिदा धुदकिलेसा । सम्मेदे गिरिसिहरे णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥२॥ वरदत्तो य वरंगो सायरदत्तो य तारवरणयरे । आहुट्ठयकोडीओ णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥३॥ णेमिसामि पज्जुण्णो संबुकुमारो तहेव अणिरुद्धो । बाहत्तरिकोड़ीओ उज्जंते सत्तसया सिद्धा

॥४॥ रामसुवा बेण्णि जणा लाडणरिंदाण पंचकोडीओ। पावागिरिवरसिहरे णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥५॥ पंडुसुआ तिण्णिजणा दविडणरिंदाण अट्ठकोडीओ । सत्तुंजयगिरिसिहरे णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥६॥ संते जे बलभद्दा जदुवणरिंदाण अट्ठकोडीओ। गजपंथे गिरिसिहरे णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥७॥ रामहणू सुग्गीओ गवयगवाक्खो य णीलमहणीलो ! णवणवदीकोडीओ तुंगीगिरिणिव्वुदे वंदे ॥८॥ णंगाणंगकुमारा कोडीपंचद्धमुणिवरा सहिया। सुवणगिरिवरसिहरे णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥९॥ दहमुहरायस्स सुवा कोडीपंचद्धमुणिवरा सहिया। रेवाउहयत्तडग्गे णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥१०॥ रेवाणइए तीरे पच्छिमभायम्मि सिद्धवरकूडे। दो चक्की दह कप्पे आहुट्ठयकोडीणिव्वुदे वंदे ॥११॥ वडवाणीवरणयरे दक्खिणभायम्मि चूलगिरिसिहरे। इंदजीदकुंभयणो णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥१२॥ पावागिरिवरसिहरे सुवण्णभद्दाइमुणिवरा चउरो। चलणाणईतडग्गे णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥१३॥ फलहोडीवरगामे पच्छिमभायम्मि दोणगिरिसिहरे। गुरुदत्ताइमुणिंदा णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥१४॥ णायकुमारमुणिंदो वाल महावालि चेव अज्झेया। अट्ठावयगिरिसिहरे णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥१५॥ अचलपुरवरणयरे ईसाणे भाए मेढगिरिसिहरे। आहुट्ठयकोडीओ णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥१६॥ वंसत्थलवरणियरे पच्छिमभायम्मि कुंथुगिरिसिहरे। कुलदेसभूसणमुणी णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥१७॥ जसरहरायस्स सुआ पंचसयाइं कलिंगदेसम्मि। कोडिसिलाकोडिमुणी णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥१८॥ पासस्स समवसरणे सहिया वरदत्तमुणिवरा पंच। रिस्सिंदे गिरिसिहरे णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥१९॥

[अतिशयक्षेत्रकाण्डम्]

पासं तह अहिणंदण णायदहि मंगलाउरे वंदे। अस्सारम्मे पट्टणि मुणिसुव्वओ तहेव वंदामि ॥ १ ॥ बाहूबलि तह वंदमि पोयणपुरहत्थिणापुरे वंदे। शांति कुंथुव अरिहो वाणारसिए

सुपासपासं च ॥ २ ॥ महुराए अहिछित्ते वीरं पासं तहेव वंदामि । जंबुमुणिंदो वंदे णिव्वुइपत्तोवि जंबुवणगहणे ॥ ३ ॥ पंचकल्लाण-ठाणइं जाणवि संजादमज्झलोयम्मि । मणवयकायसुद्धी सव्वं सिरसा णमस्सामि ॥ ४ ॥ अग्गलदेवं वंदमि वरणयरे णिवडकुंडली वंदे । पासं सिवपुरि वंदमि होलागिरिसंखदेवम्मि ॥ ५ ॥ गोमटदेवं वंदमि पंचसयं धणुहदेहउच्चंतं । देवा कुणंति वुट्टी केसरिकुसुमाण तस्स उवरिम्मि ॥ ६ ॥ णिव्वाणठाण जाणिवि अइसयठाणाणि अइसए सहिया । संजादमिच्चलोए सव्वे सिरसा णमस्सामि ॥ ७ ॥ जो जण पढइ तियालं णिव्वुइकंडंपि भावसुद्धीए । भुंजदि णरसुर-सुक्खं पच्छा सो लहइ णिव्वाणं ॥ ८ ॥

इति अइसइखित्तकंड ।

निर्वाणकांड (भाषा) ।

दोहा:—वीतराग बंदौं सदा, भावसहित सिरनाय ।
कहूं कांड निर्वाणकी, भाषा सुगम बनाय ॥ १ ॥

चौपाई १५ मात्रा ।

अष्टापदआदिसुरस्वामि, वासुपूज्य चंपापुरि नामि । नेमिनाथ-स्वामी गिरनार । बंदौं भावभगति उरधार ॥ २ ॥ चरम तीर्थंकर चरम शरीर, पावापुरि स्वामी महावीर ॥ शिखरसमेद जिनेसुर बीस, भावसहित बंदौं निशदीस ॥ ३ ॥ वरदतराय रु इंद मुनिंद, सायरदत्त आदि गुणवृंद ॥ नगरतारवर मुनि अठकोडि, वंदौं भावसहित करजोडि ॥ ४ ॥ श्री गिरनार शिखर विख्यात, कोडि बहत्तर अरु सौ सात । शंबु प्रद्युम्न कुमार द्वै भाय, अनिरुध आदि नमूं तसु पाय ॥ ५ ॥ रामचंद्र के सुत द्वै वीर, लाडनरिंद आदि गुणधीर । पाँचकोडि मुनि मुक्ति मंझार, पावागिरि बंदौं निरधार ॥ ६ ॥ पांडव तीन द्रविडराजान, आठकोडि मुनि मुकति पयान । श्रीशत्रुंजयगिर के सीस, भावसहित बंदौं निशदीस ॥ ७ ॥ जे बलभद्र मुकति में गये, आठकोडि मुनि औरहु भये । श्री गज

पंथ शिखर सुविशाल, तिनके चरण नमूं तिहुंकाल ॥८॥ राम हणू-सुग्रीव सुडील, गवयगवाख्य नील महानील । कोडि निन्याणवै मुक्ति पयान, तुंगीगिर बंदौं धरि ध्यान ॥९॥ नंग अनंग कुमार सुजान, पांचकोडि अरु अर्ध प्रमान । मुक्ति गये सोनागिर शीश, ते बंदौं त्रिभुवनपति ईश ॥१०॥ रावण के सुत आदिकुमार, मुक्ति गये रेवातट सार । कोटि पंच अरु लाख पचास, ते बंदौं धरि परम हुलास ॥११॥ रेवा नदी सिद्धवर कूट, पश्चिम दिशा देह जहं छूट । द्वै चक्री दश कामकुमार, आठकोडि बंदौं भव पार ॥१२॥ बडवानी बडनगर सुचंग, दक्षिण दिशि गिरिचूल उतंग । इन्द्रजीत अरु कुम्भ जु कर्ण, ते बंदौं भवसागर तर्ण ॥१३॥ सुवरण भद्र आदि मुनिचार, पावागिरिवर शिखर मंझार । चेलना नदीतीर के पास, मुक्ति गये बन्दौं नित तास ॥१४॥ फलहोडी बडगाम अनूप पश्चिम दिशा द्रोणगिरि रूप । गुरुदत्तादि मुनीसुर जहां, मुक्ति गये वन्दौं नित तहां ॥१५॥ बाल महाबाल मुनि दोय, नागकुमार मिले त्रय होय । श्रीअष्टापद मुक्ति मंझार, ते वन्दौं नित सुरत संभार ॥१६॥ अचला पुरकी दिश ईसान, तहां मेढगिरि नाम प्रधान । साढ़े तीन कोडि मुनिराय, तिनके चरण नमूं चितलाय ॥१७॥ वंस-स्थल वनके ढिग होय, पश्चिमदिशा कुंथुगिरि सोय । कुल-भूषण दिशि-भूषण नाम, तिनके चरणनि करूं प्रणाम ॥१८॥ जसधर राजा के सुत कहे, देश कलिंग पांच सौ लहे । कोटिशिला मुनि कोटि प्रमान, बन्दन करूं जौरजुगपान ॥१९॥ समवसरण श्रीपार्श्वजिनंद, रेसिंदी गिरि नयनानंद । वरदत्तादि पंच ऋषिराज, ते वन्दौं नित धरम जिहाज ॥२०॥ मथुरापुर पवित्र उद्यान, जंबूस्वामीजी निर्वाण । चरम केवली पंचम काल, ते वन्दौं नित दीन दयाल ॥२१॥ तीन लोक के तीरथ जहां, नित प्रति वन्दन कीजै तहां । मनवचकायसहित सिर नाय, वन्दन करहिं भविक गुणगाय ॥ २२ ॥ सम्वत् सतरहसौ इकताल, आश्विन शुदि दशमी सुविशाल । 'भैया' वन्दन करहिं त्रिकाल, जय निर्वाणकांड गुणमाल ॥२३॥ ॥ इति ॥

❀ मेरी द्रव्य पूजा ❀

(पं० जुगलकिशोरजी मुख्तारकृत)

कृमिकुल कलित नीर है जिसमें मच्छ कच्छ मेंढक फिरते। हैं मरते औ वहीं जनमते, प्रभो मलादिक भी करते॥ दूध निकालें लोग छुड़ाकर, बच्चे को पीते पीते। हैं उच्छिष्ट अनीतिलब्ध यों, योग्य तुम्हारे नहिं दीखे ॥१॥ दही घृतादिक भी वैसे हैं कारण उनका दूध यथा। फूलों को भ्रमरादिक सूंघे, वे भी हैं उच्छिष्ट तथा॥ दीपक तो पतंग कालानल, जलते जिनपर कीट सदा। त्रिभुवन सूर्य, आपको अथवा दीप दिखाना नहीं भला ॥२॥ फल मिष्टान्न अनेक यहां पर, उसमें ऐसे एक नहीं। मलप्रिया मक्खी ने जिसको, आकर प्रभुवर छुआ नहीं॥ यों अपवित्र पदार्थ अरुचिकर, तू पवित्र सब गुण घेरा। किस विधि पूजूं क्या हि चढाऊं, चित्त डोलता है मेरा ॥३॥ औ आता है ध्यान तुम्हारे, क्षुधा तृषा का लेश नहीं। नाना रस युत अन्न पानका, अतः प्रयोजन रहा नहीं॥ नहिं वांछा न विनोद भाव नहिं, राग अंशका पता कहीं। इससे व्यर्थ चढाना होगा, औषध सम जब रोग नहीं ॥४॥ यदि तुम कहो रत्न वस्त्रादिक, भूषण क्यों न चढाते हो। अन्य सदृश पावन हैं अर्पण, करते क्यों सकुचाते हो॥ तो तुमने निःसार समझ जब, खुशी खुशी उनको त्यागा। हो वैराग्य लीनमति स्वामिन! इच्छा का तोडा तागा ॥५॥ तब क्या

तुम्हें चढ़ाऊं वे ही, करूं प्रार्थना ग्रहण करो। होगी यह तो प्रकट अज्ञता, तव स्वरूप की सोच करो ॥ मुझे धृष्टता दीखे अपनी, और अश्रद्धा बहुत बडी। हेय तथा सत्यक्त वस्तु यदि, तुम्हें चढाऊं घडी घडी ॥६॥ इससे युगल हस्त मस्तक पर, रखकर नम्रीभूत हुआ ॥ भक्ति सहित मैं प्रणमूं तुमको बार बार गुणलीन हुआ ॥ संस्तुति शक्ति समान करूं औ, सावधान हो नित तेरी। काय वचन की यह परणति ही, अहो द्रव्य पूजा मेरी ॥७॥ भाव भरी इस पूजा से ही, होगा आराधन तेरा। होगा तव सामीप्य प्राप्त औ, सभी मिटेगा जग फेरा ॥ तुझमें मुझमें भेद रहेगा, नहिं स्वरूप से तब कोई। ज्ञानानन्द कला प्रकटेगी, थी अनादि से जो खोई ॥८॥

श्री जिन-सहस्त्रनाम स्तोत्रं।

स्वयंभुवे नमस्तुभ्यमुत्पाद्यात्मानमात्मनि। स्वात्मनैव तथोद्भूतवृत्तयेऽचिंत्यवृत्तये ॥१॥ नमस्ते जगतांपत्ये लक्ष्मीभर्त्रे नमोस्तुते। विदांवर नमस्तुभ्यं नमस्ते वदतांवर ॥२॥ कामशत्रुहनं देवमामनंति मनीषिणः। त्वामानमत्सुरेन्मौलिभामालाभ्यर्चितक्रमम्। ॥३॥ ध्यानदुर्घणनिर्भिन्नघनघातिमहातरुः। अनंतभवसंतानजयादासीदनंतजित् ॥४॥ त्रैलोक्यनिर्जयाव्याप्तदुर्दर्पमतिदुर्जयं। मृत्युराजं विजित्यासीज्जन्ममृत्यु जयो भवान् ॥५॥ विधूताशेषसंसारबंधनो भव्यबांधवः

त्रिपुरारिस्त्वमेवासि जन्ममृत्युजरांतकृत् ॥६॥ त्रिकालविषयाशेषतत्वभेदात् त्रिधोत्थितं । केवलाख्यं दधच्चक्षुस्त्रिनेत्रोसि त्वमीशितः ॥७॥ त्वामंधकांत प्राहुर्मोहांधासुरमर्दनात् । अर्द्धं ते नारयो यस्मादर्धनारीश्वरोऽस्युतः ॥८॥ शिवः शिवपदाध्यासाद् दुरितारिहरो हरः । शंकरः कृतशं लोके शंभस्त्वं भवन्मुखे ॥९॥ वृषभोसि जगज्ज्येष्ठः गुरुगुरुगुणोदयैः । नाभेयो नाभिसंभूतेरिक्ष्वाकुकुलनंदनः ॥१०॥ त्वमेकः पुरुषस्कंधस्त्वं द्वे लोकस्य लोचने । त्वं त्रिधाबुद्धसन्मार्गस्त्रिज्ञस्त्रिज्ञानधारकः ॥११॥ चतुःशरणमांगल्यमूर्तिस्त्वं चतुरसुधीः । पंचब्रह्ममयो देव पावनस्त्वं पुनीहि मां ॥१२॥ स्वर्गावतारिणे तुभ्यं सद्योजातात्मने नमः । जन्माभिषेकवामाय वामदेव नमास्तु ते ॥१३॥ सुनिःक्रांतायघोराय परं प्रशममीयुषे । केवलज्ञानसंसिद्धावीशानाय नमोस्तुते ॥१४॥ पुरस्तत्पुरुषत्वेन विमुक्तिपदभागिने । नमस्तत्पुरुषावस्थां भाविनींतेऽधविभ्रते ॥ १५ ॥ ज्ञानावरणनिह्रासान् नमस्तेनन्तचक्षुषे । दर्शनावरणोच्छेदान्नमस्ते विश्वदर्शिने ॥ १६ ॥ नमोदर्शनमोहघ्ने क्षायिकामलदृष्टये । नमश्चारित्रमोहघ्ने विरागाय महौजसे ॥१७॥ नमस्तेनन्तवीर्याय नमोनन्तसुखायते । नमस्तेनन्तलोकाय लोकालोकावलोकिने ॥१८॥ नमस्तेनन्तदानाय नमस्तेनन्तलब्धये । नमस्तेनन्तभोगाय नमोनन्तोपभोगिने ॥१९॥ नमः परमयोगाय नम-

स्तुभ्यमयोनये । नमः परमपूताय नमस्ते परमर्षये ॥२०॥ नमः परमविद्याय नमः परमतच्छिदे । नमः परमतत्त्वाय नमस्ते परमात्मने ॥२१॥ नमः परमरूपाय नमः परमतेजसे । नमः परममार्गाय नमस्ते परमेष्ठिने ॥२१॥ परमर्द्धिजुपे धाम्ने परमज्योतिपे नमः । नमः पारेतमः प्राप्तधाम्ने ते परतरात्मने ॥२३॥ नमः क्षीणकलंकाय क्षीणवन्ध नमोऽस्तुते । नमस्ते क्षीणमोहाय क्षीणदोषाय ते नमः ॥२४॥ नमःसुगतये तुभ्यं शोभनां गतिमीयुपे। नमस्तेतींद्रियज्ञानसुखायानिन्द्रियात्मने ॥२५॥ कायवन्धननिर्मोक्षादकायाय नमोस्तुते। नमस्तुभ्यमयोगाय योगिनामपियोगिने॥२६॥ अवेदाय नमस्तुभ्यमकपायाय ते नमः। नमः परमयोगीन्द्रवन्दितांघ्रिद्वयायते ॥२७॥ नमः परमविज्ञान नमः परमसंयमः। नमः परमदृग्दृष्टपरमार्थाय ते नमः ॥२८॥नमस्तुभ्यमलेश्याय शुक्ललेश्यांशकस्पृशे । नमो भव्येतरावस्थाव्यतीताय विमोक्षणे ॥२६॥ संज्ञासंज्ञिद्वयावस्थाव्यतिरिक्तामलात्मने। नमस्ते वीतसंज्ञाय नमः क्षायिकदृष्टये ॥३०॥ अनाहाराय तृप्ताय नमः परमभाजुषे । व्यतीताशेषदोषाय भवाब्धेः पारमीयुषे ॥३१॥ अजराय नमस्तुभ्यं नमस्तेऽतीतजन्मने । अमृत्यवे नमस्तुभ्यमचलायाक्षरात्मने ॥३२॥ अलमास्तां गुणस्तोत्रमनंतास्तावका गुणाः । त्वन्नामस्मृतिमात्रेण पर्युपासि सिषामहे ॥३३॥ एवं स्तुत्वा जिनं देवं भक्त्यापरमया सुधीः । पठेदष्टोत्तरं नाम्नां सहस्रं पापशांतये ॥३४॥ पुष्पांजलिं ।

श्रीजिनसहस्रनामस्तोत्रम् ।

(भगवज्जिनसेनाचार्यकृतं)

प्रसिद्धाष्टसहस्रेद्धलक्षणस्त्वं गिरां पतिः ।
नाम्नामष्टसहस्रेण त्वां स्तुमोऽभीष्टसिद्धये ॥ १ ॥

तद्यथा—

श्रीमान्स्वयंभूर्वृषभः शंभवः शंभुरात्मभूः । स्वयंप्रभः प्रभुर्भोक्ता विश्वभूरपुनर्भवः ॥ २ ॥ विश्वात्मा विश्वलोकेशो विश्वतश्चक्षुरक्षरः । विश्वविद्विश्वविद्येशो विश्वयोनिरनीश्वरः ॥ ३ ॥ विश्वदृश्वा विभुर्धाता विश्वेशो विश्वलोचनः । विश्वव्याप विधिर्वेधाः शाश्वतो विश्वतोमुखः ॥ ४ ॥ विश्वकर्मा जगज्ज्येष्ठो विश्वमूर्तिर्जिनेश्वरः । विश्वदृग्विश्वभूतेशो विश्वज्योतिरनीश्वरः ॥ ५ ॥ जिनो जिष्णुरमेयात्मा जगदीशो जगत्पतिः । अनन्तचिदचिन्त्यात्मा भव्यबन्धुरबन्धनः ॥ ६ ॥ युगादिपुरुषो ब्रह्मा पञ्चब्रह्ममयः शिवः । परः परतरः सूक्ष्मः परमेष्ठी सनातनः ॥ ७ ॥ स्वयंज्योतिरजोऽजन्मा ब्रह्मयोनिरयोनिजः । मोहारिविजयी जेता धर्मचक्री दयाध्वजः ॥ ८ ॥ प्रशान्तारिरनन्तात्मा योगी योगीश्वरार्चितः । ब्रह्मविद्ब्रह्मतत्त्वज्ञो ब्रह्मोद्याविद्यतीश्वरः ॥ ९ ॥ सिद्धो बुद्धः प्रबुद्धात्मा सिद्धार्थः सिद्धशासनः । सिद्धः सिद्धान्तविद् ध्येयः सिद्धसाध्यो जगद्धितः ॥१०॥ सहिष्णुरच्युतोऽनन्तः प्रभविष्णुर्भवोद्भवः । प्रभूष्णुरजरोऽजर्यो भ्राजिष्णुर्धीश्वरोऽव्ययः ॥११॥ विभावसुरसंभूष्णुः स्वयंभूष्णुः पुरातनः । परमात्मा परंज्योतिस्त्रिजगत्परमेश्वरः ॥ १२ ॥

इति श्रीमदादिशतम् ॥ १ ॥

दिव्यभाषापतिर्दिव्यः पूतवाक्पूतशासनः । पूतात्मा परमज्योतिर्धर्माध्यक्षो दमीश्वरः ॥ १ ॥ श्रीपतिर्भगवानर्हन्नरजाविरजाः शुचिः । तीर्थकृत्केवलीशान्तः पूजार्हः स्नातकोऽमलः ॥ २ ॥ अनन्तदीप्तिर्ज्ञानात्मा स्वयंबुद्धः प्रजापतिः । मुक्तः शक्तो निराबाधो निष्कलो भुवनेश्वरः ॥३॥ निरञ्जनो जगज्ज्योतिर्निरुक्तोक्तिर्निरामयः । अचलस्थितिरक्षोभ्यः कूटस्थः स्थाणुरक्षयः ॥ ४ ॥ अग्रणीर्ग्रामणीर्नेता प्रणेता न्यायशास्त्रकृत् । शास्ता धर्मपतिर्धर्म्यो धर्मात्मा धर्मतीर्थकृत् ॥ ५ ॥ वृषध्वजो वृषाधीशो वृषकेतुर्वृषायुधः । वृषो वृषपतिर्भर्ता वृषभाङ्को वृषोद्भवः ॥६॥ हिरण्यनाभिर्भूतात्मा भूतभृद्भूतभावनः । प्रभवो विभवो भास्वान् भवो भावो भवान्तकः ॥ ७ ॥ हिरण्यगर्भः श्रीगर्भः प्रभूतविभवोद्भवः । स्वयंप्रभुः प्रभूतात्मा भूतनाथो जगत्प्रभुः । सर्वादिः सर्वदृक् सार्वः सर्वज्ञः सर्वदर्शनः । सर्वात्मा सर्वलोकेशः सर्ववित्सर्वलोकजित् ॥ ६ ॥ सुगतिः सुश्रुतः सुश्रुक् सुवाक् सूरिर्बहुश्रुतः । विश्रुतो विश्वतः पादो विश्वशीर्षः शुचिश्रवा ॥ १० ॥ सहस्रशीर्षः क्षेत्रज्ञः सहस्राक्षः सहस्रपात् । भूतभव्यभवद्भर्ता विश्वविद्यामहेश्वरः ॥ ११ ॥

इति दिव्यादिशतम् ॥ २ ॥

स्थविष्ठः स्थविरो ज्येष्ठः पृष्ठः प्रेष्ठो वरिष्ठधीः । स्थेष्ठो गरिष्ठो बंहिष्ठः श्रेष्ठो निष्ठो गरिष्ठगीः ॥ १ ॥ विश्वभृद्विश्वसृट् विश्वेट् विश्वभुग्विश्वनायकः । विश्वाशीर्विश्वरूपात्मा विश्वजिद्विजितान्तकः ॥२॥ विभवो विभयो वीरो विशोको विजरो जरन् । विरागो विरतोसङ्गो विविक्तो वीतमत्सरः ॥ ३ ॥ विनेयजनताबन्धुर्विलीनाशेषकल्मषः । वियोगो योगविद्विद्वान्विधाता सुविधिः सुधी ॥ ४ क्षान्तिभाक्पृथिवीमूर्तिः शान्तिभाक्सलिलात्मकः । वायुमूर्तिरसङ्गात्मा वह्निमूर्ति-

रधर्मधृक् ॥ ५ ॥ सुयज्वा यजमानात्मा सुत्वा सुत्रामपूजितः । ऋत्विग्यज्ञपतिर्यज्ञो यज्ञाङ्गममृतं हविः ॥ ६ ॥ व्योममूर्तिरमूर्तात्मा निर्लेपो निर्मलोऽचलः । सोममूर्तिः सुसौम्यात्मा सूर्यमूर्तिर्महाप्रभः ॥ ७ ॥ मन्त्रविन्मन्त्रकृन्मन्त्री मन्त्रमूर्तिरनंतकः । स्वतन्त्रस्तन्त्रकृत्स्वान्तः कृतान्तान्तः कृतान्तकृत् ॥ ८ ॥ कृती कृतार्थः सत्कृत्यः कृतकृत्यः कृतक्रतुः । नित्यो मृत्युंजयो मृत्युरमृतात्मामृतोद्भवः ॥ ९ ॥ ब्रह्मनिष्ठः परंब्रह्म ब्रह्मात्मा ब्रह्मसम्भवः । महाब्रह्मपतिर्ब्रह्मेट् महाब्रह्मपदेश्वरः ॥ १० ॥ सुप्रसन्नः प्रसन्नात्मा ज्ञानधर्मदमप्रभुः । प्रशमात्मा प्रशान्तमात्मा पुराणपुरुषोत्तमः ॥ ११ ॥

इति स्थविष्ठादिशतम् ॥ ३ ॥

महाशोकध्वजोशोकः कः स्रष्टा पद्मविष्टरः । पद्मेशः पद्मसम्भूतिः पद्मनाभिरनुत्तरः ॥ १ ॥ पद्मयोनिर्जगद्योनिरित्यः स्तुत्यः स्तुतीश्वरः । स्तवनार्हो हृषीकेशो जितजेयः कृतक्रियः ॥ २ ॥ गणाधिपो गणज्येष्ठो गण्यः पुण्यो गणाग्रणी । गुणाकरो गुणाम्भोधिर्गुणज्ञो गुणनायकः ॥ ३ ॥ गुणाकारी गुणोच्छेदी निर्गुणः पुण्यगीर्गुणः । शरण्यः पुण्यवाक्पूतो वरेण्यः पुण्यनायकः ॥ ४ ॥ अगण्यः पुण्यधीर्गण्यः पुण्यकृत्पुण्यशासनः । धर्मारामो गुणग्रामः पुण्यापुण्यनिरोधकः ॥ ५ ॥ पापापेतो विपापात्मा विपाप्मा वीतकल्मषः । निर्द्वन्द्वो निर्मदः शान्तो निर्मोह निरुपद्रवः ॥ ६ ॥ निर्निमेषो निराहारो निःक्रियो निरुपप्लवः । निष्कलङ्को निरस्तैना निर्धूताङ्गो निराश्रयः ॥ ७ ॥ विशालो विपुलज्योतिरतुलोचिन्त्यवैभवः । सुसंवृत्तः सुगुप्तात्मा सुवृत्सुनयतत्त्ववित् ॥ ८ ॥ एकविद्यो महाविद्यो मुनिः परिवृढः पतिः । धीशो विद्यानिधिः साक्षी विनेता विहतान्तकः ॥ ९ ॥ पिता पितामहः पाता पवित्रः पावनो गतिः । त्राता भिषग्वरो वर्यो वरदः परमः पुमान् ॥ १० ॥ कविः पुराणपुरुषो वर्षीयान्वृषभः

पुरुः । प्रतिष्ठाप्रभवोहेतुर्भुवनैकपितामहः ॥ ११ ॥

इति महादिशतम् । ४ ॥

श्रीवृक्षलक्षणः श्लक्ष्णो लक्षण्यः शुभलक्षणः निरक्षः पुण्डरीकाक्षः पुष्कलः पुष्करेक्षणः ॥१॥ सिद्धिदः सिद्धसङ्कल्पः सिद्धात्मा सिद्धिसाधनः । बुद्धबोध्यो महाबोधिर्वर्धमानो महर्द्धिकः ॥२॥ वेदाङ्गो वेदविद्वेद्यो जातरूपो विदांवरः । वेदवेद्यः स्वसंवेद्यो विवेदो वदतांवरः ॥ ३ ॥ अनादिनिधनो व्यक्तो व्यक्तवाग्व्यक्तशासनः । युगादिकृद्युगाधारो युगादिजगदादिजः ॥ ४ ॥ अतीन्द्रोऽतीन्द्रियो धीन्द्रो महेन्द्रोऽतीन्द्रियार्थदृक् । अनिन्द्रियोऽहमिन्द्रार्च्यो महेन्द्रमहितो महान् ॥ ५ ॥ उद्भवः कारणं कर्ता पारगो भवतारकः । अग्राह्यो गहनं गुह्यं परार्ध्यः परमेश्वरः ॥ ६ ॥ अनन्तर्द्धिरमेयर्द्धिरचिन्त्यर्द्धिः समग्रधीः । प्राग्रयः प्राग्रहरोऽभ्यग्रयः प्रत्यग्रोऽग्र्योऽग्रिमोऽग्रजः ॥ ७ ॥ महातपा महातेजा महोदर्को महोदयः । महायशो महाधामा महासत्त्वो महाधृतिः ॥ ८ ॥ महाधैर्यो महावीर्यो महासम्पन्महाबलः । महाशक्तिर्महाज्योतिर्महाभूतिर्महाद्युतिः ॥ ९ ॥ महामतिर्महानीतिर्महाक्षांतिर्महोदयः । महाप्राज्ञो महाभागो महानंदो महाकविः ॥१०॥ महामहामहाकीर्तिर्महाकांतिर्महावपुः । महादानो महाज्ञानो महायोगो महागुणः ॥११॥ महामहपतिः प्राप्तमहाकल्याणपञ्चकः । महाप्रभुर्महाप्रातिहार्याधीशो महेश्वरः ॥१२॥

इति श्रीवृक्षादिशतम् ॥ ५ ॥

महामुनिर्महामौनी महाध्यानी महादमः । महाक्षमो महाशीलो महायज्ञो महामखः ॥ १ ॥ महाव्रतपतिर्मह्यो महाकांतिधरोऽधिपः । महामैत्री महामेयो महापायो महोदयः ॥ २ ॥ महाकारुण्यको मंता महामंत्रो महायतिः । महानादो महाघोषो महेज्यो महसांपतिः ॥ ३ ॥ महाध्वरधरो धुर्यो महौदार्यो महेष्टवाक् । महात्मा महसांधम मह-

श्री सुकमाल स्वामी

श्री १००८ बाहुबलि स्वामी

र्षिर्महितोदयः ॥ ४ ॥ महाक्लेशांकुशः शूरो महाभूतपतिर्गुरुः । महापराक्रमोऽनंतो महाक्रोधरिपुर्वशी ॥ ५ ॥ महाभवाब्धिसंतारिर्महामोहाद्रि सूदनः । महागुणाकरः क्षांतो महायोगीश्वरः शमी ॥ ६ ॥ महाध्यानपतिर्ध्याता महाधर्मा महाव्रतः । महाकर्मारिहात्मज्ञो महादेवो महेशिता ॥ ७ ॥ सर्वक्लेशापहः साधुः सर्वदोषहरो हरः । असंख्येयोऽप्रमेयात्मा शमात्मा प्रशमाकरः ॥ ८ ॥ सर्वयोगीश्वरोऽचिन्त्यः श्रुतात्मा विष्टरश्रवाः । दांतात्मा दमतीर्थेशो योगात्मा ज्ञानसर्वगः ॥ ९ ॥ प्रधानमात्मा प्रकृतिः परमः परमोदयः । प्रक्षीणबंधः कामारिः क्षेमकृत्क्षेमशासनः ॥१०॥ प्रणवः प्रणयः प्राणः प्राणदः प्रणतेश्वरः । प्रमाणं प्रणिधिर्दक्षो दक्षिणोध्वर्युरध्वरः ॥११॥ आनंदो नंदनो नन्दो वन्द्योऽनिंद्योऽभिनंदनः । कामहा कामदः काम्यः कामधेनुररिंजयः ॥ १२ ॥

इति महामुन्यादिशतम् ॥ ६ ॥

असंस्कृतः सुसंस्कारः प्राकृतो वैकृतांतकृत् । अंतकृत्कांतिगुः कांतश्चिंतामणिरभीष्टदः ॥ १ ॥ अजितो जितकामारिरमितोऽमितशासनः । जितक्रोधो जितामित्रो जितक्लेशो जितांतकः ॥ २ ॥ जिनेन्द्रः परमानन्दो मुनीन्द्रो दुन्दुभिस्वनः । महेन्द्रवन्द्यो योगीन्द्रो यतीन्द्रो नाभिनन्दनः ॥ ३ ॥ नाभेयो नाभिजो जातः सुव्रतो मनुरुत्तमः । अभेद्योऽनत्ययोऽनाश्वानधिकोऽधिगुरुःसुधी ॥ ४ ॥ सुमेधा विक्रमी स्वामी दुराधर्षो निरुत्सुकः । विशिष्टः शिष्टभुक् शिष्टः प्रत्ययः कमनोऽनघः ॥ ५ ॥ क्षेमी क्षेमंकरोऽक्षय्यः क्षेमधर्मपतिः क्षमी । अग्राह्यो ज्ञाननिग्राह्यो ध्यानगम्यो निरुत्तरः ॥ ६ ॥ सुकृती धातुरिज्यार्हः सुनयश्चतुराननः । श्रीनिवासश्चतुर्वक्त्रश्चतुरास्यश्चतुर्मुखः ॥ ७ ॥ सत्यात्मा सत्यविज्ञानः सत्यवाक्सत्यशासनः ।

सत्याशीः सत्यसन्धानः सत्यः सत्यपरायणः ॥ ८ ॥ स्थेयान्स्थवीयान्नेदीयान्दवीयान्दूरदर्शनः । अणोरणीयाननणुगुरुराद्यो गरीयसाम् ॥ ९ ॥ सदायोगः सदाभोगः सदातृप्तः सदाशिवः । सदागतिः सदासौख्यः सदाविद्यः सदोदयः ॥ १० ॥ सुघोषः सुमुखः सौम्यः सुखदः सुहितः सुहृत् । सुगुप्तागुप्तिभृद्गोप्ता लोकाध्यक्षो दमीश्वरः ॥ ११ ॥

इति असंस्कृतादिशतम् ॥ ७ ॥

बृहन्बृहस्पतिर्वाग्मी वाचस्पतिरुदारधीः । मनीषी धिषणो धीमाञ्छेमुषीशो गिरांपतिः ॥ १ ॥ नैकरूपो नयस्तुङ्गो नैकात्मा नैकधर्मकृत् । अविज्ञेयोऽप्रतर्क्यात्मा कृतज्ञः कृतलक्षणः ॥ २ ॥ ज्ञानगर्भो दयागर्भो रत्नगर्भः प्रभास्वरः । पद्मगर्भो जगद्गर्भो हेमगर्भः सुदर्शनः ॥ ३ ॥ लक्ष्मीवांस्त्रिदशाध्यक्षो दृढीयानिनईसिता । मनोहरो मनोज्ञाङ्गो धीरो गम्भीरशासनः ॥ ४ ॥ धर्मयुपो दयायोगो धर्मनेमिमुनीश्वरः । धर्मचक्रायुधो देवः कर्महाधर्मघोषणः ॥ ५ ॥ अमोघवागमोघाज्ञो निर्मलोऽमोघशासनः । सुरूपः सुभ-सत्यागी समयज्ञः समाहितः ॥ ६ ॥ सुस्थितः स्वास्थ्यभाक्स्वस्थो नीरजस्को निरुद्धवः । अलेपो निष्कलङ्कात्मा वीतरागो गतस्पृहः ॥ ७ ॥ वश्येन्द्रियो विमुक्तात्मा निःसपत्नो जितेन्द्रियः । प्रशान्तोऽनन्तधामर्षिर्मङ्गलं मलहानघः ॥ ८ ॥ अनीदृगुपमाभूतो दृष्टिर्दैवमगोचरः । अमूर्तो मूर्तिमानेको नैको नानैकतत्त्वदृक् ॥ ९ ॥ अध्यात्मगम्यो गम्यात्मा योगविद्योगिवन्दितः । सर्वत्रगः सदाभावी त्रिकालविषयार्थदृक् ॥ १० ॥ शङ्करः शंवदो दान्तो दमी क्षान्तिपरायणः । अधिपः परमानन्दः परात्मज्ञः परात्परः ॥ ११ ॥ त्रिजगद्वल्लभोऽभ्यर्च्यस्त्रिजगन्मङ्गलोदयः । त्रिजगत्पतिपूजाङ्घ्रिस्त्रिलोकाग्रशिखामणिः ॥ १२ ॥

इति बृहदादिशतम् ॥ ८

त्रिकालदर्शी लोकेशो लोकधाता दृढव्रतः । सर्वलोकातिगः पूज्यः सर्वलोकैकसारथिः ॥ १ ॥ पुराणपुरुषः पूर्वः कृतपूर्वाङ्गविस्तरः आदिदेवः पुराणाद्यः पुरुदेवोऽधिदेवता ॥ २ ॥ युगमुख्यो युगज्येष्ठो युगादिस्थितिदेशकः । कल्याणवर्णः कल्याणः कल्यः कल्याणलक्षणः ॥ ३ ॥ कल्याणप्रकृतिर्दीप्तः कल्याणात्मा विकल्मषः विकलङ्कः कलातीतः कलिलघ्नः कलाधरः ॥ ४ ॥ देवदेवो जगन्नाथो जगद्बन्धुर्जगद्विभुः । जगद्धितैषी लोकज्ञः सर्वगो जगदग्रजः ॥ ५ ॥ चराचरगुरुर्गोप्यो गूढात्मा गूढगोचरः । सद्योजातः प्रकाशात्मा ज्वलज्ज्वलनसप्रभः ॥ ६ ॥ आदित्यवर्णो भर्माभः सुप्रभः कनकप्रभः । सुवर्णवर्णो रुक्माभः सूर्यकोटिसमप्रभः ॥ ७ ॥ तपनीयनिभस्तुङ्गो बालार्काभोऽनलप्रभः । संध्याभ्रबभ्रुर्हेमाभस्तप्तचामीकरच्छविः ॥ ८ ॥ निष्टप्तकनकच्छायः कनत्काञ्चनसन्निभः । हिरण्यवर्णः स्वर्णाभः शातकुम्भनिभप्रभः ॥ ९ ॥ द्युम्नभाजातरूपाभो दीप्तजाम्बूनदद्युतिः । सुधौतकलधौतश्रीः प्रदीप्तो हाटकद्युतिः ॥ १० ॥ शिष्टेष्टः पुष्टिदः पुष्टः स्पष्टः स्पष्टाक्षरक्षमः । शत्रुघ्नोऽप्रतिघोऽमोघः प्रशास्ता शासिता स्वभूः ॥ ११ ॥ शान्तिनिष्ठो मुनिज्येष्ठः शिवतातिः शिवप्रदः । शान्तिदः शान्तिकृच्छान्तिः कान्तिमान्कामितप्रदः ॥१२॥ श्रेयोनिधिरधिष्ठानमप्रतिष्ठः प्रतिष्ठितः । सुस्थितः स्थावरः स्थाणुः प्रथीयान्प्रथितः पृथुः ॥१३॥

इति त्रिकालदर्श्यादिशतम् ॥ ६ ॥

दिग्वासा वातरशनो निर्ग्रन्थेशो निरम्बरः । निष्किञ्चनो निराशंसो ज्ञानचक्षुरमोमुहः ॥ १ ॥ तेजोराशिरनन्तौजा ज्ञानाब्धिः शीलसागरः । तेजोमयोऽमितज्योतिर्ज्योतिर्मूर्तिस्तमोपहः ॥२॥ जगच्चूडामणिर्दीप्तः सर्वविघ्नविनायकः । कलिघ्नः कर्मशत्रुघ्नो लोकालोकप्रकाशकः ॥३॥ अनिद्रालुरतन्द्रालुर्जागरूकः प्रभामयः । लक्ष्मी-

पतिर्जगज्ज्योतिर्धर्मराजः प्रजाहितः ॥ ४ ॥ मुमुक्षुर्बन्धमोक्षज्ञो जिताक्षो जितमन्मथः । प्रशान्तरसशैलूषो भव्यपेटकनायकः ॥ ५ ॥ मूलकर्ताखिलज्योतिर्मलघ्नो मूलकारणं । आप्तो वागीश्वरः श्रेयाञ्छ्रायसोक्तिर्निरुक्तवाक् ॥ ६ ॥ प्रवक्ता वचसामीशो मारजिद्विश्वभाववित् । सुतनुस्तनुनिर्मुक्तः सुगतो हतदुर्नयः ॥ ७ ॥ श्रीशः श्रीश्रितपादाब्जो वीतभीरभयङ्करः । उत्सन्नदोषो निर्विघ्नो निश्चलो लोकवत्सलः ॥ ८ ॥ लोकोत्तरो लोकपतिर्लोकचक्षुरपारधीः । धीरधीर्बुद्धसन्मार्गः शुद्धः सूनृतपूतवाक् ॥ ९ ॥ प्रज्ञापारमितः प्राज्ञो यतिर्नियमितेन्द्रियः । भदन्तो भद्रकृद्भद्रः कल्पवृक्षो वरप्रदः ॥१०॥ समुन्मूलितकर्मारिः कर्मकाष्ठाशुशुक्षणिः । कर्मण्यः कर्मठः प्रांशुर्हेयादेयविचक्षणः ॥ ११ ॥ अनन्तशक्तिरच्छेद्य स्त्रिपुरारिस्त्रिलोचनः । त्रिनेत्रस्त्र्यम्बकस्त्र्यक्षः केवलज्ञानवीक्षणः ॥ १२ ॥ समन्तभद्रः शान्तारिर्धर्माचार्यो दयानिधिः । सूक्ष्मदर्शी जितानङ्गः कृपालुर्धर्मदेशकः ॥ १३ ॥ शुभंयुः सुखसद्भूतः पुण्यराशिरनामय । धर्मपालो जगत्पालो धर्मसाम्राज्यनायकः ॥ १४ ॥

इति दिग्वासाद्यष्टोत्तरशतम् ॥ १० ॥

इत्यष्टाधिकसहस्रनामावली समाप्ता ।

धाम्नांपते तवामूनि नामान्यागमकोविदैः । समुच्चितान्यनुध्यायन्पुमान्पूतस्मृतिर्भवेत् ॥ १ ॥ गोचरोऽपि गिरामासां त्वमवाग्गोचरो मतः । स्तोता तथाप्यसंदिग्धं त्वत्तोऽभीष्टफलं भवेत् ॥२॥ त्वमतोऽसि जगद्बन्धुस्त्वमतोऽसि जगद्भिषक् । त्वमतोऽसि जगद्धाता त्वमतोऽसि जगद्धितः ॥ ३ ॥ त्वमेकं जगतां ज्योतिस्त्वं द्विरूपोपयोगभाक् । त्वं त्रिरूपैकमुक्त्यङ्ग स्वोत्थानन्तचतुष्टयः ॥४॥ त्वं पञ्चब्रह्मतत्त्वात्मा पञ्चकल्याणनायकः । षड्भेदभावतत्वज्ञस्त्वं सप्तनयसंग्रहः ॥५॥ दिव्याष्टगुणमूर्तिस्त्वं नवकेवललब्धिकः । दशा-

वतारनिर्धार्यो मां पाहि परमेश्वर ॥ ६ ॥ युष्मन्नामावलीदृब्धाविल-
सत्स्तोत्रमालया । भवन्तं वरिवस्यामः प्रसीदानुगृहाण नः ॥ ७ ॥
इदं स्तोत्रमनुस्मृत्य पूतो भवति भाक्तिकः । यः स पाठं पठत्येनं
स स्यात्कल्याणभाजनम ॥ ८ ॥ ततः सदेदं पुण्यार्थी पुमान्पठति
पुण्यधीः । पौरुहूतीं श्रियं प्राप्तुं परमामभिलाषुकः ॥ ९ ॥
इति भगवज्जिनसेनाचार्यविरचितादिपुराणान्तर्गतं जिनसहस्रनाम-
स्तवनं ।

महावीर-सन्देश

यही है महावीर सन्देश ।

विपुलाचल पर दिया गया जो प्रमुख धर्म उपदेश ॥ यही०
सब जीवों को तुम अपनाओ हर उनके दुख क्लेश ।
असद्भाव रक्खो न किसी से हो अरि क्यों न विशेष ॥ यही०
वैरी का उद्धार श्रेष्ठ है कीजे सुविधा विशेष ।
वैर छुटे उपजे मति जिससे वही यत्न यत्नेश ॥ २ ॥ यही०
घृणा पाप से हो, पापी, से नहीं कभी लव लेश ।
भूल सुझाकर प्रेम मार्ग से करो उसे पुण्येश ॥ ३ ॥ यही०
तज एकान्त कदाग्रह दुर्गुण बनो उदार विशेष ।
रहे प्रसन्न चित्त करो तुम मनन तत्व उपदेश ॥ ४ ॥ यही०
तजो राग-द्वेष भय इन्द्रिय मोह कषाय अशेष ।
धरो धैर्य सम चित्त रहो औ' सुख दुख में सविशेष ॥५॥ यही०
अहंकार ममकार तजो जो अवनतिकार विशेष ।
तप-संयम में रत हो त्यागो तृष्णाभाव अशेष ॥ ६ ॥ यही०

'वीर' उपासक बनो सत्य के तज मिथ्याऽभिनिवेश ।
विपदाओं से मत घबराओ धरो न कोपाऽऽवेश ॥ ७ ॥ यही०
संज्ञानी संदृष्टि बनो औ तजो भाव संक्लेश ।
सदाचार पालो दृढ होकर रहे प्रमाद न लेश ॥ ८ ॥ 'यही०
सादा रहन सहन भोजन हो सादा भूषा वेष ।
विश्व प्रेम जागृत कर उर में करो कर्म निःशेष ॥ ९ ॥ यही०
हो सब का कल्याण भावना ऐसी रहे हमेश ।
दया लोक सेवा रत चित्त हो और न कुछ आदेश ॥ १० ॥यही०
इस पर चलने से ही होगा विकसित स्वात्म प्रदेश ।
आत्म "ज्योति" जगेगी ऐसे जैसे उदित दिनेश ॥११॥ यही०

श्री चौबीस तीर्थंकारों के चिन्ह ।

वृषभनाथ का 'वृषभ' जु जान । अजितनाथ के 'हाथी' मान ॥
संभवजिनके 'घोड़ा' कहा । अभिनंदपद 'बन्दर' लहा ॥ १ ॥
सुमतिनाथ के 'चकवा' होय । पद्मप्रभके 'कमल' जु जोय ॥
जिनसुपासके 'सथिया' कहा । चंद्रप्रभपद 'चंद्र' जु लहा ॥
पुष्पदन्तपद 'मगर' पिछान । 'कल्पवृक्ष' शीतलपद मान ॥
श्रीश्रेयांसपद 'गेंडा' होय । वासुपूज्य के 'भैंसा' जोय ॥ ३ ॥
विमलनाथपद 'शूकर' मान । अनँतनाथ के 'सेही' जान । धर्मनाथके 'वज्र' कहाय । शांतिनाथपद 'हिरन' लहाय ॥ ४ ॥ कुंथुनाथके पद 'अज' चीन । अरजिनके पद चिह्न जु 'मीन' ॥ मल्लिनाथ पद 'कलशा' कहा । मुनिसुव्रत के 'कछुआ' लहा ॥ ५ ॥ 'लालकमल' नमिजिन के होय । नेमिनाथ-पद 'शंख' जु जोय ॥ पार्श्वनाथ 'सर्प' जु कहा । वद्धमान पद 'सिंह' हि लहा ॥६॥

मेरी भावना

जिसने रागद्वेषकामादिक जीते, सब जग जान लिया।
सब जीवों को मोक्ष मार्ग का, निस्पृह हो उपदेश दिया॥
बुद्ध, वीर, जिन, हरि, हर, ब्रह्मा, या उसको स्वाधीन कहो।
भक्ति-भाव से प्रेरित हो यह, चित्त उसी में लीन रहो॥ १॥
विषयों की आशा नहिं जिनके; साम्य-भाव धन रखते हैं।
निज-परके हित साधन में जो, निशिदिन तत्पर रहते हैं॥
स्वार्थ त्याग की कठिन तपस्या, बिना खेद जो करते हैं।
ऐसे ज्ञानी साधु जगत के, दुःख समूह को हरते हैं॥ २॥
रहे सदा सत्संग उन्हीं का, ध्यान उन्हीं का नित्य रहे।
उन ही जैसी चर्या में यह चित्त सदा अनुरक्त रहे॥
नहीं सताऊँ किसी जीव को, झूंठ कभी नहीं कहा करूँ।
परधन *वनिता पर न लुभाऊँ, संतोषामृत पिया करूँ॥ ३॥
अहंकार का भाव न रक्खूं, नहीं किसी पर क्रोध करूं।
देख दूसरों की बढ़ती को, कभी न ईर्ष्या-भाव धरूँ॥
रहे भावना ऐसी मेरी, सरल-सत्य-व्यवहार करूँ।
बने जहाँ तक इस जीवन में, औरों का उपकार करूँ॥ ४॥
मैत्रीभाव जगत में मेरा, सब जीवों से नित्य रहे।
दीन-दुखी जीवों पर मेरे, उरसे करुणा स्रोत बहे॥
दुर्जन क्रूर-कुमार्ग रतों पर, क्षोभ नहीं मुझको आवे।
साम्यभाव रक्खूँ मैं उन पर, ऐसी परणति हो जावे॥ ५॥
गुणीजनों को देख हृदय में, मेरे प्रेम उमड़ आवे।
बने जहां तक उनकी सेवा, करके यह मन सुख पावे॥

---

* वनिता के स्थान पर 'भर्ता' पढें महिलाएँ।

होऊँ नहीं कृतघ्न कभी मैं, द्रोह-न मेरे उर आवे।
गुण ग्रहण का भाव रहे नित, दृष्टि न दोषों पर जावे॥ ६॥
कोई बुरा कहो या अच्छा, लक्ष्मी आवे या जावे।
लाखों वर्षों तक जीऊँ या, मृत्यु आज ही आ जावे॥
अथवा कोई कैसा ही भय, या लालच देने आवे॥
तो भी न्याय मार्ग से मेरा, कभी न पद डिगने पावै॥ ७॥
होकर सुख में मग्न न फूले, दुख में कभी न घबरावे।
पर्वत नदी-श्मशान-भयानक, अटवी से नहिं भय खावे॥
रहे अडोल-अकम्प निरन्तर, यह मन दृढ़तर बन जावे।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग में सहनशीलता दिखलावे॥ ८॥
सुखी रहें सब जीव जगत के, कोई कभी न घबरावे।
वैर-पाप अभिमान छोड़ जग, नित्य नये मंगल गावे॥
घर घर चर्चा रहे धर्म की, दुष्कृत दुष्कर हो जावे।
ज्ञान-चरित उन्नत कर अपना, मनुज जन्मफल सब पावे॥ ९॥
ईति-भीति व्यापे नहिं जगमें, वृष्टि समय पर हुआ करे।
धर्म-निष्ठ होकर राजा भी, न्याय प्रजा का किया करे॥
रोग-मरी-दुर्भिक्ष न फैले, प्रजा शान्ति से जिया करे।
परम अहिंसा धर्म जगत में, फैल सर्वहित किया करे॥ १०॥
फैले प्रेम परस्पर जग में, मोह दूर पर रहा करे।
अप्रिय-कटुक-कठोर शब्द नहिं, कोई मुख से कहा करे॥
बनकर सब 'युग-वीर हृदय से देशोन्नति रत रहा करे।
वस्तु स्वरूप विचार खुशी से, सब दुख संकट सहा करें॥ ११॥

दुःख हरण स्तुति।

श्रीपति जिनवर करुणायतनं, दुखहरन तुम्हारा बाना है। मत मेरी बार अंबार करो, मोहि देहु विमल कल्याना है॥ टेक॥

त्रैकालिक वस्तु प्रत्यक्ष लखो, तुमसौं कछु बात न छाना है। मेरे उर आरत जो वरतैं, निहचै सब सो तुम जाना है ॥ अवलोक विथा मत मौन गहो, नहिं मेरा कहीं ठिकाना है। हे राजिवलोचन सोचविमोचन, मैं तुम सौं हित ठाना है ॥ श्री०॥ १॥ सब ग्रन्थनि में निरग्रन्थनि ने, निरधार यही गणधार कही। जिननायक ही सब लायक हैं, सुखदायक छायक ज्ञानमही ॥ यह बात हमारे कान परी, तब आन तुमारी शरन गही। क्यों मेरी वार विलंब करो, जिननाथ सुना यह बात सही ॥ श्री० ॥ २ ॥ काहूको भोग मनोग करो, काहूको स्वर्गविमाना है। काहूको नागनरेशपती, काहूको ऋद्धि निधाना है। अब मोपर क्यों न कृपा करते, यह क्या अंधेरा जमाना है। इनसाफ करो मत देर करो, सुखवृन्द भजो भगवाना है॥ श्री० ॥ ३ ॥ खल कर्म मुझे हैरान किया, तब तुमसों आन पुकारा है। तुम ही समरत्थ न न्याय करो, तब बंदेका क्या चारा है। खल घालक पालक बालकका, नृपनीति यही जगसारा है। तुम नीतिनिपुन त्रैलोकपती, तुमही लगि दौर हमारा है॥ श्री ॥ ४॥ जबसे तुमसे पहिचान भई तबसे तुमही को माना है। तुमरे ही शासनका स्वामी, हमको शरना सरधाना है ॥ जिनको तुमरी शरनागत है, तिनसौं जमराज डराना है। यह सुजस तुम्हारे सांचेका सब गावत वेद पुराना है॥ श्री० ॥ ५ ॥ जिसने तुमसे दिलदर्द कहा, तिसका तुमने दुख हाना है। अघ छोटा मोटा नाशि तुरत, सुख दिया तिन्हें मनमाना है ॥ पावकसों शीतल नीर किया, औ चीर बढा असमाना है। भोजन था जिसके पास नहीं, सो किया कुवेर समाना है ॥ श्री० ॥६॥ चिंतामन पारस कल्पतरु, सुखदायक ये परधाना है। तव दासनके सब दास यही, हमरे मनमें ठहराना है ॥ तुम भक्तनको सुरइंद्रपदी, फिर चक्रवर्तिपद पाना है। क्या वात कहौं विस्तार वढे, वे पावैं मुक्ति ठिकाना है ॥श्री०॥७॥

गति चार चौरासी लाखविषैं चिन्मूरत मेरा भटका है । हो दीन-बंधु करुणानिधान अबलौं न मिटा वह खटका है ॥ जब जोग मिला शिवसाधनका तब विघन कर्मने हटका है । अब विघन हमारे दूर करो सुख देहु निराकुल घटका है ॥ श्री० ॥ ८ ॥ गजग्राह-ग्रसित उद्धार लिया, ज्यों अंजन तस्कर तारा है । ज्यों सागर गोप-दरूप किया, मैनाका संकट टारा है ॥ ज्यों शूलीतैं सिंहासन औ बेडीको काट विडारा है । त्यों मेरा संकट दूर करो प्रभु मोकूं आश तुम्हारा है ॥श्री०॥९॥ ज्यों फाटक टेकत पांय खुला, औ सांप सुमन कर डारा है ॥ ज्यों खड्ग कुसुमका माल किया बालक का जहर उतारा है ॥ ज्यों सेठ विपत चकचूर पूर, घर लक्ष्मीसुख विस्तारा है । त्यों मेरा संकट दूर करो प्रभु मोकूं आस तुम्हारा है ॥ श्री० ॥१०॥ यद्यपि तुमको रागादि नहीं यह सत्य सर्वथा जाना है । चिन्मूरति आप अनंतगुनी, नित शुद्धदशा शिवथाना है । तद्यपि भक्तनकी भीड हरो, सुखदेत तिन्हें जु सुहाना है । यह शक्ति अचिन्त तुम्हारी का क्या पावै पार सयाना है ॥ श्री० ॥ ११ ॥ दुख खंडन श्री सुखमंडन का, तुमरा प्रणपरम प्रमाना है । वरदान दया जस कीरतका, तिहुं लोकधुजा फहराना है । कमलाधरजी ! कमलाकरजी, करिये कमला अमलाना है । अब मेरि विथा अव-लोकि रमापति, रंच न बार लगाना है ॥ श्री० ॥ १२ ॥ हो दीनानाथ अनाथ हितू जन दीन अनाथ पुकारी है । उदयागत कर्म-विपाक हलाहल, मोह विथा विस्तारी है । ज्यों आप और भवि जीवनकी, ततकाल विथा निरवारी है । त्यों 'वृन्दावन' यह अर्ज करै, प्रभु आज हमारी वारी है ॥ श्रीपतिः ॥१३॥

संकट हरण स्तुति

हो दीन बन्धु श्रीपती, करुणानिधान जी।
अब मेरी विथा क्यों न हरो, वार क्या लगी ॥ टेक

मालिक हो दो जहान के जिनराज आपही। ऐबो हुनर हमारा कुछ तुम से छिपा नहीं। बेजान में गुनाह जो मुझ से बन गया सही। कंकरी के चोर को कटार मारिये नहीं। हो दीन० ॥ १ ॥

दुख दर्द दिलका आपसे जिसने कहा सही। मुश्किल कहर बहर से लई है भुजा गही॥ सब वेद औ पुराण में प्रमाण है यही। आनन्द कन्द श्री जिनेन्द्र देव है तुही। हो दीन० ॥ २ ॥

हाथी पै चढ़ी जाती थी सुलोचना सती। गंगा में ग्राह ने गही गजराज की गती॥ उस वक्त में पुकार किया था तुम्हें सती। भय टार के उभार लिया हो कृपापती। हो दीन० ॥ ३ ॥

पावक प्रचण्ड कुण्ड में उमण्ड जब रहा। सीता से शपथ लेने को तब राम ने कहा॥ तुम ध्यान धार जानकी पग धारती तहाँ। तत्काल ही सर स्वच्छ हुआ कमल लहलहा। हो दीन० ॥ ४ ॥

जब द्रौपदी का चीर दुशासन ने था गहा। सबही सभा के लोग कहते थे ह हा ह हा। उस वक्त भीर पीर में तुमने करि सहा। पड़दा ढका सती का सुयश जगत में रहा। हो दीन० ॥ ५ ॥

सम्यक्त शुद्ध शीलवन्ति चन्दनासती। जिसके नजीक लगती थी जाहिर रती रती। बेड़ी में पड़ी थी तुम्हें जब ध्यावती हुती। तब वीर धीर ने हरी दुख द्वन्द की गती। हो दीन० ॥ ६ ॥

श्रीपाल को सागर विषै जब सेठ गिराया। उसकी रमा से रमने को आया था बेहया॥ उस वक्त के संकट में सती तुम को जो ध्याया। दुख द्वन्द फन्द मेटके आनन्द बढ़ाया। हो दीन० ॥ ७ ॥

हरषेण की माता को जब सौतक सताया। रथ जैनका तेरा चले पीछे से बताया॥ उस वक्त के अनशन में सती तुम को जो ध्याया। चक्रीश हो सुत उसके ने रथ जैन चलाया। हो दीन०॥८॥

जब अंजना सती को हुआ गर्भ उजाला। तब सासुने कलंक लगा घर से निकाला॥ बन वर्ग के उपसर्ग में सती तुम को चितारा। प्रभु भक्तियुक्त जानके भय देव निवारा॥ हो दीन०॥९॥

सोमा से कहा जो तू सती शील विशाला। तो कुम्भ में से काढ़ भला नाग ही काला। उस वक्त तुम्हें ध्याय के सती हाथ जो डाला। तत्काल ही वह नाग हुआ फूल की माला॥ हो दीन०॥१०॥

जब कष्टरोग था हुआ श्रीपाल राज को। मैना सती तब आप को पूजा इलाज को। तत्काल ही सुन्दर किया श्रीपालराज को। वह राज भोग २ गया मुक्तिराज को॥ हो दीन०॥११॥

जब सेठ सुदर्शन को मृषा दोष लगाया। रानी के कहे भूपने सूली पै चढ़ाया॥ उस वक्त तुम्हें सेठ ने निज ध्यान में ध्याया। शूली से उतार उसको सिंहासन पै बिठाया। हो दी०॥१२॥

जब सेठ सुधन्नाजी को वापी में गिराया। ऊपर से दुष्ट था उसे वह मारने आया॥ उस वक्त तुम्हें सेठ ने दिल अपने में ध्याया। तत्काल ही जंजाल से तब उसको बचाया॥ हो दीन०॥१३॥

इक सेठ के घर में किया दारिद्र ने डेरा। भोजन का ठिकाना भी न था सांझ सवेरा। उस वक्त तुम्हें सेठ ने जब ध्यान में घेरा। घर उसके में तब कर दिया लक्ष्मी का बसेरा॥ हो दीन०॥१४॥

बलि वाद में मुनिराज सों जब पार न पाया। तब रात को तलवार ले शठ मारने आया॥ मुनिराज ने निज ध्यान में

मने लीन लगाया। उस वक्त हो परतच्छ तहाँ देव बचाया॥ हो दीन०॥ १५॥

जब राम ने हनुमन्त को गढ़ लंक पठाया। सीता की खबर लेने को बिलफौर सिधाया॥ मग बीच दो मुनिराज की लख आग में काया। झट वारि-मूसल धार से उपसर्ग बुझाया॥ हो दीन०॥ १६॥

जिननाथ ही को माथ नवाता था उदारा। घेरे में पड़ा था वह कुम्भकरण बिचारा॥ उस वक्त तुम्हें प्रेम से संकट में उचारा। रघुवीर ने सब पीर तहाँ तुरत निवारा॥ हो० १७॥

रणपाल कुँवर के पड़ी थी पांव में बेरी। उस वक्त तुम्हें ध्यान में ध्याया था सबेरी॥ तत्काल ही सुकुमार की सब झड़ पड़ी बेरी। तुम राजकुँवर की सभी दुख द्वन्द निवेरी॥ हो० १८॥

जब सेठ के नन्दन को डसा नाग जु कारा। उस वक्त तुम्हें पीर में धरधीर पुकारा। तत्काल ही उस बाल का विषभूरि उतारा। वह जाग उठा सो के मानो सेज सकारा॥ हो १९॥

मुनि मानतुङ्ग को दई जब भूप ने पीरा। ताले में किया बन्द भरी लोहे जञ्जीरा॥ मुनीश ने आदीश की थुति की है गंभीरा। चक्रेश्वरी तब आन के झट दूर की पीरा॥ हो० २०॥

शिवकोटि ने हट था किया सामन्तभद्र सों। शिवपिण्ड की बन्दन करो शंकों अभद्र सों॥ उस वक्त स्वयम्भू रचा गुरु भाव भद्र सों। जिन चन्द्र की प्रतिमा तहाँ प्रगटी सुभद्रसों॥ ॥ हो० २१॥

सूवे ने तुम्हें आनके फल आम चढाया। मेंडक ले चला फूल भरा भक्ति का भाया॥ उन दोनों को अभिराम स्वर्गधाम बसाया। हम आपसे दातार को लख आज ही पाया॥ हो० २२॥

कपि स्वान सिंह नवल अज बैल विचारे। तिर्यंच जिन्हें रञ्च न था बोध चितारे॥ इत्यादि को सुरधाम दे शिवधाम में धारे। हम आपसे दातार को प्रभु आज निहारे॥ हो० २३॥

तुम ही अनन्त जन्तु का भय भीर निवारा। वेदो पुराण में गुरु गणधर ने उचारा॥ हम आपकी शरणागति में आके पुकारा। तुम हो प्रत्यक्ष कल्पवृक्ष इच्छिताकारा॥ हो० २४॥

प्रभु भक्त व्यक्त भक्तियुक्त मुक्ति के दानी। आनन्द कन्द वृन्द को हो मुक्ति के दानी॥ मोहि दीन जान दीनबन्धु पातक भानी। संसार विषम क्षार तार अन्तरजामी॥ हो० २५॥

करुणा निधान बान को अब क्यों न निहारो। दानी अनन्त दान के दाता हो सम्भारो॥ वृषचन्द नन्द वृन्द का उपसर्ग निवारो। संसार विषमक्षार से प्रभु पार उतारो॥ हो दीन बन्धु श्रीपति करुणा निधानजी। अब मेरी विथा क्यों ना हरो बार क्या लगी॥ २६॥

॥ सम्पूर्णम् ॥

समाधि मरण छोटा

(चाल योगीरासा)

गौतम स्वामी बन्दौं नामी मरण समाधि भला है।
मैं कब पाऊँ निशदिन ध्याऊँ गाऊँ वचन कला है॥
देव धर्म गुरु प्रीति महा दृढ सात व्यसन नहीं जाने।
त्यागि बाईस अभक्ष संयमी बारह व्रत नित ठाने॥ १॥
चक्की चूली उखरी बुहारी पानी त्रस ना विरोधे।
बनिज करे पर द्रव्य हरे नहीं छहों करम इमि सोधे॥
पूजा शास्त्र गुरुन की सेवा संयम तप चहुं दानी।
पर उपकारी अल्प अहारी सामयिक विधि ज्ञानी॥ २॥

जाप जपे तिहुं योग धरे दृढ तनु की ममता टारे।
अन्त समय वैराग्य सम्हारे ध्यान समाधि विचारे ॥
आग लगे अरु नाव जब डूबे धर्म विघन जब आवे।
चार प्रकार आहार त्यागि के मन्त्र सु मन में ध्यावे ॥ ३ ॥
रोग असाध्य जरा बहु देखे कारण और निहारे।
बात बडी है जो बनि आवे भार भवन को डारे ॥
जो न बने तो घर में रह करि सब सों होय निराला।
मात पिता सुत त्रिय को सोंपे निज परिग्रह अहि काला ॥ ४ ॥
कुछ चैत्यालय कुछ श्रावक जन कुछ दुखिया धन देई।
क्षमा क्षमा सब ही सों कहिके मन की शल्य हनेई ॥
शत्रुन सों मिल मिल कर जोरे मैं बहु करी है बुराई।
तुमसे प्रीतम को दुख दीने ते सब बकसो भाई ॥ ५ ॥
धन धरती जो मुख सो मांगे सो सब दे सन्तोषे।
छहों काय के प्रानी ऊपर करुणा भाव विशेषे ॥
ऊंच नीच घर बैठ जगह इक कुछ भोजन कुछ पयले।
दुध धारी क्रम क्रम तज के छाछ अहार गहेले ॥ ६ ॥
छाछ त्यागि के पानी राखे पानी तजि संथारा।
भूमि मांहि थिर आसन मांडे साधर्मी ढिंग प्यारा ॥
जब तुम जानो यह न जपै है तब जिन वाणी पढिये।
यों कहि मौन लियो संन्यासी पंच परम पद लहिये ॥ ७ ॥
चार अराधन मन में ध्यावे बारह भावन भावे।
दश लाक्षण मन धर्म विचारे रत्नत्रय मन ल्यावे ॥
पैंतिस सोलह षटपन चारों दुइ इक वरन विचारे।
काया तेरी दुख की ढेरी ज्ञान मई तू सारे ॥ ८ ॥
अजर अमर निज गुणसों पूरे परमानन्द सुभावे।
आनन्द कन्द चिदानन्द साहब तीन जगतपति ध्यावे ॥

क्षुधा तृषादिक होई परीषह सहे भाव सम राखे।
अतीचार पांच सब त्यागे ज्ञान सुधारस चाखे॥ ९॥
हाड मांस सब सूख जाय जब धरम लीन तन त्यागे।
अद्भुत पुण्य उपाय सुरग में सेज उठे ज्यों जागे॥
तहाँ ते आवे शिव पद पावे विलसे सुक्ख अनन्तो।
'द्यानत' यह गति होय हमारी जैन धरम जयवन्तो॥ १०॥

॥ इति समाधिसरणं समाप्तम् ॥

बारह भावना मंगतराय कृत

दोहा छन्द

वन्दू श्री अरहन्तपद, वीतराग विज्ञान।
वरणूं बारह भावना, जगजीवनहित जान॥१॥

विश्नुपद छन्द

कहाँ गये चक्री जिन जीता, भरतखंड सारा।
कहाँ गये वह रामरुलछमन, जिन रावन मारा॥
कहाँ कृष्ण रुक्मिणि सतभामा, अरु संपति सगरी।
कहाँ गये वह रङ्गमहल अरु, सुवरन की नगरी॥ २॥
नहीं रहे वह लोभी कौरव जूझ मरे रन में।
गये राज तज पांडव वनको, अगिन लगी तनमें॥
मोहनींद से उठ रे चेतन, तुझे जगावन को।
हो दयाल उपदेश करे गुरु, बारह भावन को॥ ३॥

अथिर भावना

सूरज चाँद छिपै निकलै ऋतु फिर फिर कर आवै।
प्यारी आयू ऐसी बीतै, पता नहीं पावै॥
पर्वतपतितनदी सरिता जल बहकर नहिं हटता।
स्वास चलत यों घटै काठ ज्यों, आरेसों कटता॥ ४॥

ओसबूंद ज्यों गलै धूपमें, वा अंजुलि पानी।
छिन छिन यौवन छीन होत है क्या समझै प्रानी॥
इन्द्रजाल आकाश नगर सब जगसंपति सारी।
अथिर रूप संसार विचारो सब नर अरु नारी॥५॥

अशरण भावना

कालसिंहने मृगचेतनको, घेरा भव वनमें।
नहीं बचावनहारा कोई, यों समझो मनमें॥
मन्त्र यन्त्र सेना धन सम्पति, राज पाट छूटे।
वश नहिं चलता काल लुटेरा, काया नगरी लूटै॥
चक्ररतन हलधरसा भाई, काम नहीं आया।
एक तीरके लगत कृष्णकी विनश गई काया॥
देव धर्म गुरु शरण जगतमें, और नहीं कोई।
भ्रमसे फिरै भटकता चेतन, यु ही उमर खोई॥

संसार भावना

जनममरन अरु जरारोगसे, सदा दुखी रहता।
द्रव्य क्षेत्र अरु कालभावभव, परिवर्तन सहता॥
छेदन भेदन नरक पशूगति, वध बन्धन सहना।
रागउदयसे दुखसुरगतिमें, कहां सुखी रहना॥
भोगि पुण्यफल हो इकइन्द्री, क्या इसमें लाली।
कुतवाली दिनचार वही फिर, खुरपा अरु जाली॥
मानुषजन्म अनेक विपतिमय, कहीं न सुख देखा।
पंचमगति सुख मिलै शुभाशुभका मेटो लेखा॥

एकान्त भावना

जन्मै मरै अकेला चेतन, सुखदुखका भोगी।
और किसी का क्या इक दिन यह, देह जुदी होगी॥
कमला चलत न पैंड जाय मरघट तक परिवारा।

अपने अपने सुखको रोवैं, पिता पुत्र दारा ॥ १० ॥
ज्यों मेले में पंथीजन मिलि नेह फिरै धरते।
ज्यों तरवरपैं रैन वसेरा पंछी आ करते॥
कोस कोई दो कोस कोई उड़ फिर थक थक हारै।
जाय अकेला हंस संगमें, कोइ न पर मारै॥ ११ ॥

भिन्न भावना

महोरूप मृगतृष्णा जगमें मिथ्या जल चमकै।
मृग चेतन नित भ्रममें उठ उठ, दौडैं थक थककै॥
जल नहिं पावै प्राण गमावै, भटक भटक मरता।
वस्तु पराई मानै अपनी, भेद नहीं करता॥ २ ॥
तू चेतन अरु देह अचेतन, यह जड़ तू ज्ञानी।
मिले अनादि यतनतैं विछुडै ज्यों पय अरु पानी॥
रूप तुम्हारा सबसों न्यारा, भेद ज्ञान करना।
जौलों पौरुष थकै न तौलों उद्यमसों चरना॥ १३ ॥

अशुचि भावना

तू नित पोखै यह सूखै ज्यों, धोवै त्यों मैली।
निश दिन करै उपाय देहका, रोगदशा फैली॥
मातपितारज-वीरज मिलकर, बनी देह तेरी।
मांस हाड़ नश लहू राधकी, प्रगट व्याधि घेरी॥
काना पौंडा पड़ा हाथ यह चूसै तो रोवै।
फलै अनन्त जु धर्म ध्यानकी, भूमिविषै बोवै॥
केसर चन्दन पुष्प सुगंधित, वस्तु देख सारी।
देह परसते होय अपावन, निशदिन मल जारी॥ १५ ॥

आश्रव भावना

ज्यों सरजल आवत मोरी त्यों, आस्रव कर्मनको।
दर्वित जीव प्रदेश गहै जव पुद्गल भरमनको॥

भावति आस्रवभाव शुभाशुभ, निशदिन चेतन को।
पाप पुण्य के दोनों करता, कारण बंधन को ॥ १६ ॥
पन मिथ्यात योग पन्द्रह द्वादश अविरत जानो।
पंचरु वीस कषाय मिले सब सत्तावन मानो॥
मोहभाव की ममता टारै, पर परणत खोते।
करे मोखका यतन निरास्रव, ज्ञानी जन होते ॥ १७॥

संवर भावना

ज्यों मोरी में डाट लगावै, तब जल रुक जाता।
त्यों आस्रवको रोकै संवर, क्यों नहिं मन लाता॥
पंच महाव्रत-समिति गुप्तिकर वचनकाय मनको।
दशविधधर्म परीषहबाइस, बारह भावनको॥ १८॥
यह सब भाव सतावन मिलकर, आस्रव को खोते।
सुपन दशासे जागो चेतन, कहां पडे सोते॥
भाव शुभाशुभ रहित शुद्धभावनसंवर पावै।
डांड लगत यह नाव पड़ी मझधार पार जावै॥ १९॥

निर्जरा भावना

ज्यों सरवर जल रुका सूखता, तपन पड़े भारी।
संवर रोकै, कर्म निर्जरा है सोखनहारी॥
उदय भोग सविपाक समय, पक जाय आम डाली।
दूजी है अविपाक पकावै, पालविषै माली॥ २॥
पहली सबके होय नहीं, कुछ सरै काम तेरा।
दूजी करै जु उद्यम करके, मिटै जगत फेरा॥
संवर सहित करो तप प्रानी, मिलै मुक्त राणी।
इन दुलहिन की यही सहेली, जानै सब ज्ञानी॥ २१॥

लोक भावना

लोक अलोक अकाश माहिं थिर, निराधार जानो।
पुरुषरूप कर कटी भये षट, द्रव्यनसों मानो॥

इसका कोइ न करता हरता, अमिट अनादी है।
जीवरु पुद्गल नाचै यामैं, कर्म उपाधी है ॥ २२ ॥
पापपुन्यसों जीव जगतमें, नित सुख दुख भरता।
अपनी करनी आप भरै शिर, औरन के धरता ॥
मोहकर्म को नाश मेटकर, सब जगकी आसा।
निज पदमें थिर होय लोकके, शीश करो बासा ॥ २३ ॥

बोधिदुर्लभ भावना

दुर्लभ है निगोदसे थावर, अत्रसगति पानी ॥
नरकायाको सुरपति तरसै सो दुर्लभ प्रानी ॥
उत्तम देश सुसंगति दुर्लभ, श्रावककुल पाना।
दुर्लभ सम्यक दुर्लभ संयम, पंचम गुणठाना ॥ २४ ॥
दुर्लभ रत्नत्रय आराधन, दीक्षा का धरना।
दुर्लभ मुनिवर को व्रत पालन, शुद्धभाव करना ॥
दुर्लभ से दुर्लभ है चेतन, बोधिज्ञान पावै।
पाकर केवलज्ञान नहीं फिर इस भव में आवै ॥ २५ ॥

धर्म भावना

षट दरशन अरु बौद्ध रु नास्तिकने जगको लूटा।
मूसा ईसा और मुहम्मद का मजहब झूटा ॥
हो मुछंद सब पाप करै सिर, करता के लावै।
कोई छिनक कोई करता से, जगमैं भटकावै ॥ २६ ॥
वीतराग सर्वज्ञ दोष बिन, श्रीजिनकी वानी।
सप्त तत्वका वर्णन जामें, सबको सुखदानी ॥
इनका चितवन बारबार कर, श्रद्धा उर धरना।
मंगत इसी जतनतै इकदिन, भवसागरतरना ॥ २७ ॥
॥ इति सुलतानपुरनिवासी मंगतरायजीकृत बारह भावना ॥

वैराग्य भावना

दोहा—बीज राख फल भोगवे, ज्यों किसान जग मांहि।
त्यों चक्री सुख में मगन, धर्म विसारै नाहि॥

योगीरासा वा नरेन्द्र छन्द

इस विधि राज्य करै नर नायक भोगे पुण्य विशाला।
सुखसागर में मग्न निरन्तर जात न जानो काला॥
एक दिवस शुभकर्म योग से क्षेमंकर मुनि वन्दे।
देखे श्रीगुरु के पद पंकज लोचन अलि आनन्दे॥१॥
तीन प्रदक्षिणा दे शिरनायो कर पूजा स्तुति कीनी।
साधु समीप विनय कर बैठो चरणों में दृष्टि दीनी॥
गुरु उपदेशी धर्म शिरोमणि सुन राजा वैरागी।
राज्य रमा वनतादिक जो रससो सब नीरस लागी॥२॥
मुनि सूरज कथनी किरणावलि लगत भर्म बुद्धि भागी।
भव तन भोग स्वरूप विचारो परम धर्म अनुरागी॥
या संसार महा वन भीतर भर्म छोर न आवे।
जन्मन मरन जरादों दाहे जीव महादुःख पावे॥३॥
कबहूँ कि जाय नर्क पद भुंजे छेदन भेदन भारी।
कबहूँ कि पशु पर्याय धरे तहाँ वध बन्धन भयकारी॥
सुरगति में परि सम्पति देखे राग उदय दुख होई।
मानुष योनि अनेक विपति भय सब सुखी नहिं कोई॥४॥
कोई इष्ट वियोगी विलखे कोई अनिष्ट संयोगी।
कोई दीन दरिद्री दीखे कोई तन का रोगी॥
किस ही घर कलिहारी नारी के बैरी सम भाई।
किस ही के दुःख बाहर दीखे किस ही उर दुचिताई॥५॥

कोई पुत्र बिना नित भूरै होय मरै तब रोवै।
खोटी संतति से दुख उपजे क्यों प्राणी सुख सोवै॥
पुण्य उदय जिनके तिनको भी नाहीं सदा सुख साता।
यह जग बास यथार्थ दीखे सबही हैं दुःख घाता॥ ६॥
जो संसार विषै सुख होतो तीर्थंकर क्यों त्यागे।
काहे के शिव साधन करते संयम से अनुरागे॥
देह अपावन अथिर घिनावनी इस में सार न कोई।
सागर के जल से शुचि कीजै तो भी शुद्ध न होई॥ ७॥
सप्त कुधातु भरी मल मूत्र से चर्म लपेटी सो है।
अन्तर देखत या सम जग में और अपावन को है॥
नव मल द्वार श्रवैं निश वासर नाम लिये घिन आवे।
व्याधि उपाधि अनेक जहाँ तहाँ कौन सुधी सुख पावे॥ ८॥
पोषत तो दुःख दोष करे अति सोषत सुख उपजावे।
दुर्जन देह स्वभाव बराबर मूर्ख प्रीति बढ़ावे॥
राचन योग्य स्वरूप न याको विरचन योग्य सही है।
यह तन पाय महातप कीजै इसमें सार यही है॥ ९॥
भोग बुरे भवरोग बढावे बैरी हैं जग जी के।
वे रस होंय विपाक समय अति सेवत लागें नीके॥
बज्र अग्नि विष से विषधर से हैं अधिक दुखदाई।
धर्म रत्न को चोर प्रबल अति दुर्गत पन्थ सहाई॥ १०॥
मोह उदय यह जीव अज्ञानी भोग भले कर जाने।
ज्यों कोई जन खान धतूरा सो सब कंचन माने॥
ज्यों-ज्यों भोग संयोग मनोहर मन वांछित जन पावे।
तृष्णा नागिन त्यों-त्यों झंके लहर लोभ विष लावे॥ ११॥
मैं चक्री पद पाय निरन्तर भोगै भोग घनेरे।
तो भी तनक भये ना पूरण भोग मनोरथ मेरे॥

राज समाज महा अघ कारण बैर बढ़ावन हारा।
वेश्या सम लक्ष्मी अति चंचल इसका कौन पत्यारा॥ १२॥
मोह महा रिपु बैर विचारे जग जीव संकट टारे।
कारागार वनिता बेड़ा परजन है रखवारे॥
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण तप ये जिय को हितकारी।
ये ही सार असार सब यह चक्री जीव धारी॥ १३॥
छोड़े चौदहरत्न नवोनिधि और छोड़े संग साथी।
कोड़ि अठ रह घोड़े छोड़े चौरासी लख हाथी॥
इत्यादिक सम्पति बहु तेरी जीर्ण तृणवत त्यागी।
नीति विचार नियोगी सुत को राज्य दियो बड़भागी॥ १४॥
होइ निःशल्य अनेक नृपति संग भूषण वसन उतारे।
श्री गुरुचरण धरी जिन मुद्रा पंच महाव्रत धारे॥
धन्य यह समझ सुबुद्ध जगोत्तम धन्य यह धैर्य्य धारी।
ऐसी सम्पति छोड़ बसे बन तिन पद धोक हमारी॥ १५॥

दोहा—परिग्रह पोट उतार सब, दीनो चारित्र पंथ।
निज स्वभाव में थिर भये, वज्रनाभि निर्ग्रन्थ॥

इति वैराग्य भावना सम्पूर्णम्।

बारह भावना।

(भूधरदासकृत)

राजा राणा छत्रपति, हथियनके असवार। मरना सबको एक दिन, अपनी अपनी वार॥ १॥ दल बल देवी देवता, मात पिता परिवार। मरती विरियां जीवको, कोई न राखनहार॥ २॥ दाम विना निर्धन दुखी, तृष्णा वश धनवान। कहीं न सुख

संसार में, सब जग देखी छान ॥ ३ ॥ आप अकेला अवतरे; मरे अकेला होय । यूं कब ही इस जीवका, साथी सगा न कोय ॥ ४ ॥ जहां देह अपनी नहीं, तहां न अपना कोय । पर संपति पर प्रगटये, पर हैं परिजन लोय ॥ ५ ॥ दिपे चाम चादर मढ़ी, हाड पींजरा देह । भीतर यासम जगत् में, और नहीं घिनगेह ॥ ६ ॥

॥ सोरठा ॥

मोह नींदके जोर, जगवासी घूमें सदा । कर्म चोर चहुँ ओर, सरबस लूटें सुध नहीं ॥ ७ ॥ सतगुर देय जगाय, मोहनींद जब उपशमें । तब कुछ बने उपाय, कर्म चोर आवत रुकें ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

ज्ञान दीप तप तेल भर, घर सोधै भ्रम छोर । याविधि बिन निकसें नहीं, बैठे पूर्व चोर ॥ ९ ॥ पंचमहाव्रत संचरण, सुमति पंच परकार । प्रबल पंच इन्द्री विजय, धार निर्जरा सार ॥१०॥ चौदह राजु उतंग नभ, लोक पुरुष संठान । तामें जीव अनादिसे, भरमत हैं बिन ज्ञान ॥११॥ यांचे सुरतरु देय सुख, चिंतन चिंता रैन । बिन यांचे बिन चितवे, धर्मसकल सुख दैन ॥१२॥ धनकन कंचन राजसुख, सबै सुलभकर जान । दुर्लभ है संसारमें, एक यथारथ ज्ञान ॥१३॥

॥ इति संपूर्णम् ॥

गुरुस्तुति ।

वन्दौं दिगम्बरगुरुचरन, जग तरन तारन जान । जे भरम भारी रोगको, हैं राजवैद्य महान ॥ जिनके अनुग्रह बिन कभी, नहीं कटैं कर्म जंजीर । ते साधु मेरे मन वसौ, मेरी हरौ पातक पीर ॥ १ ॥ यह तन अपावन अशुचि है, संसार सकल असार । ये भोग विष

पकवान से, इस भांति सोच विचार ॥ तप विरचि श्रीमुनि बन बसे, सब त्यागि परिग्रहभीर । ते साधु मेरे मन बसौ, मेरी हरौ पातक पीर ॥२॥ जे काच कंचन सम गिनैं, अरि मित्र एकसरूप । निंदा बड़ाई सारिखी वन खंड शहर अनूप । सुख दुःख जीवन मरन में, नहिं खुशी नहिं दिलगीर । ते साधु मेरे मन बसौ, मेरी हरौ पातक पीर ॥३॥ जे बाह्य परवत बन बसैं, गिरि गुहा महल मनोग । सिल सेज समता सहचरी, शशिकिरण दीपकजोग ॥ मृग मित्र भोजन तप मई, विज्ञान निरमल नीर । ते साधु मेरे मन बसौ, मेरी हरो पातक पीर ॥४॥ सूखैं सरोवर जल भरे, सूखैं तरंगनि-तोय । वाटैं बटोही ना चलैं, जहं घाम गरमी होय । तिस काल मुनिवर तप तपैं, गिरि-शिखर ठाडे धीर । ते साधु मेरे मन बसौ, मेरी हरौ पातक पीर ॥५॥ घंनघोर गरजैं घनघटा जल परै पावसकाल । चहुंओर चमकै वीजुरी, अति चलै शीतल व्याल (र) । तरुहेट तिष्ठैं तबजती एकांत अचल शरीर । ते साधु मेरे मन बसौ, मेरी हरौ पातक पीर ॥६॥ जब शीतमास तुषारसौं, दाहै सकल बनराय । जब जमै पानी पोखरां, थरहरै सबकी काय ॥ तब नगन निवसैं चौहटैं, अथवा नदीके तीर । ते साधु मेरे मन बसौ, मेरी हरौ पातक पीर ॥७॥ कर जोर 'भूधर' बीनवै, कब मिलैं वे मुनिराज । यह आस मनकी कब फलै मेरे सरैं सगरे काज ॥ संसार विषम विदेशमें, जे विना कारण वीर । ते साधु मेरे मन बसौ, मेरी हरौ पातक पीर ॥ ८ ॥

दोहा (राग—भरथरी) ।

ते गुरु मेरे मन बसौ, जे भव-जलधि-जिहाज । आप तिरैं पर तारहीं, ऐसे श्री ऋषिराज ॥ ते गुरु० ॥ १ ॥ मोह महारिपु जीतिकैं, छांड्यो सब घरबार । होय दिगम्बर वन वसे, आतम शुद्ध विचार ॥ ते गुरु० ॥ ॥ २ ॥ रोगउरग-विल वपु गिण्यौ, भोग

भुजंग समान। कदलीतरु संसार है, त्यागयो सब यह जान ॥ ते गुरु॰ ॥३॥ रतनत्रय निधि उर धरैं, अरु निरग्रंथ त्रिकाल। मार थौ काम खवीसको, स्वामी परम दयाल ॥ ते गुरु॰ ॥ ४ ॥ पंच महाव्रत आदरैं, पांचौ सुमति-समेत। तीन गुपति पालैं सदा, अजरअमर-पदहेत ॥ ते गु॰ ॥ ५ ॥ धर्म धरैं दशलक्षणी, भावैं भावना सार। सहैं परीषह वीस द्वै, चारित-रतन भंडार ॥ ते गुरु॰ ॥६॥ जेठ तपै रवि आकरौ, सूखै सरवरनीर। शैल-शिखर मुनि तप तपैं, दाझै नगन शरीर ॥ ते गु॰ ॥ ७ ॥ पावस रैन डरावनी, वरसै जलधर धार। तरुतल निवसैं साहसी, बाजै झंझाव्यार ॥ ते गुरु॰ ॥८॥ शीत पड़ै कपि-मद गलैं, दाहै सब बनराय। ताल तरंगनिके तटै, ठाड़े ध्यान लगाय ॥ ते गु॰ ॥ ६ ॥ इहि विधि दुद्धर तप तपैं, तीनौं कालमँझार। लागे सहज सरूपमें, तनसौं ममत निवार ॥ ते गु॰ ॥ ॥ १० ॥ पूरव भोग न चिंतवैं, आगम वांछा नाहिं। चहुंगतिके दुखसौं डरैं, सुरत लगी शिवमाहिं ॥ ते गु॰ ॥ ११ ॥ रंगमहलमें पौढते, कोमल सेज बिछाय। ते पच्छिम निशि भूमिमें, सौवैं संवरि काय ॥ ते गु॰ ॥ १२ ॥ गज चढ़ि चलते गरवसौं, सेना सजि चतुरंग। निरखि निरख पग वे धरैं, पालैं करुणा अंग ॥ ते गु॰ ॥ ॥ १३ ॥ वे गुरु चरण जहां धरैं, जगमें तीरथ जेह। सो रज मम मस्तक चढ़ो, 'भूधर' मांगे येह ॥ ते गुरु॰ ॥ १४ ॥

एकीभाव स्तोत्र भाषा।

॥ दोहा छन्द ॥

वादिराज मुनिराजके, चरणकमल चित लाय।
भाषा एकीभावकी, करूं स्वपरसुखदाय ॥

जो अति एकीभाव भयो मानो अनिवारी। समुझ कर्म्म प्रबन्ध करत भव भव दुःखभारी॥ ताहि तिहारी भक्ति जगत रविजो निरवारै। सो अब और कलेश कौनसो नाहिं विदारै॥ १॥ तुम जिन जोतिस्वरूप दुरित अन्धियारी निवारी। सो गणेश गुरु कहैं तत्वविद्याधन धारी॥ मेरे चितघर माहिं बसों तेजोमय यावत। पापतिमिर अवकाश वहां सो क्यों कर पावत॥ २॥ आनंद आंसू वदन धोय तुम सो चित सानै। गदगद सुर सों सुयश मंत्र पढ़ पूजा ठानै॥ ताके बहुविधि व्याधव्याल चिर काल निवासी। भाजैं थानक छोड़ देहबमियों के बासी॥३॥ दिवसे आवनहार भये भवि भाग उदयबल। पहले ही सुर आय कनकमय कीन महीतल॥ मन गृह ध्यान दुवार आय निवसो जगनामी। जो सुवर्ण तन करो कौन यह अचरज स्वामी॥ ४॥ प्रभु सब जगकें बिना हेतु बांधव उपकारी। निरावर्ण सर्वज्ञ शक्ति जिनराज तिहारी॥ भक्ति रचित मम चित्त सेज नित बास करोगे। मेरे दुःख सन्ताप देख किम धीर धरोगे॥ ५॥ भवनन में चिर काल भ्रम्यो कछु कही न जाई। तुम थुति कथा पियूष वापिका भागन पाई॥ शशितुषार घनसार हार शीतल नहिं जा सम। करत न्हौन तिस माहिं क्यों न भव ताप बुझै मम॥ ६॥ श्रीविहार परिवाह होत शुचि रूप सकल जग। कमल कनक आभाव सुरभि श्रीवास धरत पग॥ मेरो मन सर्वंग परस प्रभुको सुख पावै। अब सो कौन कल्याण जो न दिन दिन ढिग आवै॥ ७॥ भव तज सुखपद बसे काम मद सुभट संघारे। जो तुमको निरखंत सदा प्रियदास तिहारे। तुम वचनामृत पान भक्ति अंजुलिसो पीवै। तिन्हे भयानक क्रूर रोग रिपु कैसे छीवै॥ ८॥ मानथंभ पाषाण आन पाषाण पटंतर। ऐसे और अनेक रत्न दीखे जग अन्तर।

देखत दृष्टि प्रमाण मानमद तुरत मिटावै। जो तुम निकट न होय शक्ति यह क्यों कर पावै॥ ६॥ प्रभुतन पर्वत परस पवन उरमें निवहे है। तासों ततक्षण सकल रोगरज वाहिरहै है। जाके ध्यानाहूत वसो उर अंबुज मांहीं। कौन जगत उपकार करण समरथ सो नाहीं ॥ १०॥ जन्म जन्मके दुःख सहे सब ते तुम जानो। याद किये मुझ हिये लगैं आयुध से मानो। तुम दयालु जगपाल स्वामी मैं शरण गही है। जो कुछ करना होय करो परमाण वही है ॥ ११॥ मरण समय तुम नाम मंत्र जीवक तैं पायो। पापाचारी स्वान प्राण तज अमर कहायो। जो मणि माला लेय जपै तुम नाम निरन्तर। इन्द्र संपदा लहै कौन संशय इस अंतर॥ १२॥ जे नर निर्मल ज्ञान मान शुचि चारित साधैं। अनवधि सुख की सार भक्ति ताली नहिं हाथैं। सो शिव वांछक पुरुष मोक्षपट केम उघारे। मोह मुहर दिढ़करी मोक्षमन्दिर के द्वारे॥ १३॥ शिवपुर केरो पंथ पापतम सो अति छायो। दुःख स्वरूप बहु कपट खांड़ सो विकट बतायो॥ स्वामी सुख सो तहां कौन जनमारग लागै। प्रभु प्रवचन मणिदीप जौन के आगें आगैं ॥ १४॥ कर्म पलट भूमाहिं दबी आत्म निधि भारी। देखत अति सुख होय विमुखजन नाहिं उघारी॥ तुम सेवक तत्काल ताहिं निश्चय कर धारैं। स्तुति कुदाल सों खोद, बंद भू कठिन विदारैं ॥ १५॥ स्यादवाद गिर उपज मोक्ष सागर लों धाई। तुम चरणांबुज परस भक्ति गंगा सुखदाई। मोचित निर्मल थयो न्हौन रुचि पूरव तामैं। अब वह हों न मलीन कौन जिन संशय यामैं ॥१६॥ तुम शिवसुखमय प्रकट करत प्रभु चिन्तवन तेरो। मैं भगवान् समान भाव यों बरतै मेरो॥ यदपि झूठ है तदपि तृपत निश्चल उपजावै। तुम प्रसाद सकलंक जीव वांछित फल पावै ॥१७॥ वचनजलधि तुम देव सकल त्रिभुवन में व्यापै। भंग तरंगिनी विकथ वाद मल

मलिन उथापै ॥ मन सुमेरु सों मथै ताहि जे सम्यकज्ञानी । परमामृत सों तृपत होहिं ते चिर लों प्राणी ॥ १८ ॥ जो कुदेव छवि हीन वसन भूषण अभिलाषै । बैरी सों भयभीत होय सो आयुध राखै ॥ तुम सुन्दर सर्वंग शत्रु समरथ नहिं कोई ॥ भूषण वसन गदादि ग्रहण काहे को होई ॥१६॥ सुरपति सेवा करै कहा प्रभु प्रभुता तेरी । सो शलाघना लहै मिटै जग सों जग फेरी । तुम भव जलधि जहाज तोहि शिव कंत उचरिये । तुही जगत जनपाल नाथ थुति की थुति करिये ॥ २० ॥ वचन जाल जड़ रूप आप चिन्मूरति भाई । तातै थुति आलाप नाहिं पहुंचै तुम तांई । तो भी निष्फल नाहिं भक्ति रस भीने वायक । सन्तन को सुरतरु समान वांछित वर दायक ॥ २१ ॥ कोप कभी नहिं करो प्रीत कबहुं नहिं धारो । अति उदास बेचाह चित्त जिनराज तिहारो ॥ तदपि आन जग बहै बैर तुम निकट न लहिये । यह प्रभुता जग तिलक कहां तुम बिन सरधैये ॥२२॥ सुर तिय गावै सुयश सर्व गति ज्ञान स्वरूपी ॥ जो तुम को थिर होही नमैं भवि आनन्द रूपी ॥ ताहि क्षेमपुर चलन बाट बाकी नहिं हो है । श्रुति के सुमरण माहिं सो न कब ही नर मोहै ॥२३॥ अतुल चतुष्टयरूप तुमैं जो चितमें धारै ॥ आदर सो तिहुं काल माहिं जग थुति विस्तारै ॥ सो सुकृत शिवपन्थ भक्ति रचना कर पूरै । पंचकल्याणक ऋद्धि पाय निश्चय दुख चूरै ॥ २४॥ अहो जगत पति पूज्य अवधि ज्ञानी मुनि हारे । तुमगुण कीर्तन माहिं कौन हम मन्द बिचारे ॥ स्तुति छल सों तुम विषे देव आदर विस्तारे । शिव सुख पूरण हार कल्प तरु येही हमारे ॥२५॥ वादिराज मुनिराज शब्दविद्या के स्वामी । वादिराज मुनिराज तर्कविद्या पति नामी ॥ वादिराज मुनिराज काव्य करता अधिकारी । वादिराज मुनिराज बडे भविजन उपकारी ॥२६॥

दोहा—मूल अर्थ बहुविधि कुसुम, भाषा सूत्र मझार ॥
भक्तिमाल भूधर करी, करो कंठ सुखकार ॥१॥

॥इति एकीभावभाषा स्तोत्रम् ॥

नामावली स्तोत्र ।

छंद नयमालिनी १६ मात्रा ।

जय जिनंद सुख कंदनमस्ते । जय जिनंद जिन फंद नमस्ते ॥ जय जिनंद वरबोध नमस्ते । जय जिनंद जित क्रोध नमस्ते ॥ १ ॥ पाप ताप हर इन्दु नमस्ते । अर्हं बरन जुत विन्दु नमस्ते ॥ शिष्टाचार विशिष्ट नमस्ते । इष्ट मिष्ट उत्कृष्ट नमस्ते ॥२॥ पर्म धर्म वर शर्म नमस्ते । मर्म भर्म घन धर्म नमस्ते ॥ दृगविशाल वर भाल नमस्ते । हृद दयाल गुनमाल नमस्ते ॥ ३ ॥ शुद्धबुद्ध अविरुद्ध नमस्ते । रिद्धिसिद्धि वर वृद्धि नमस्ते ॥ वीतराग विज्ञान नमस्ते । चिद्विलास धृत ध्यान नमस्ते ॥ ४ ॥ स्वच्छ गुणांबुधि रत्न नमस्ते । सत्व हितकर यत्न नमस्ते ॥ कुनयकरी मृगराज नमस्ते । मिथ्या खग वर बाज नमस्ते ॥ ५ ॥ भव्य भवोदधि तार नमस्ते । शर्मामृत सित सार नमस्ते ॥ दरश ज्ञान सुख वीर्य नमस्ते । चतुराननधर धीर्य नमस्ते ॥ ६ ॥ हरिहर ब्रह्मा विष्णु नमस्ते । मोह मर्द मनु जिष्णु नमस्ते ॥ महादान महभोग नमस्ते । महाज्ञान महं जोग नमस्ते ॥ ७ ॥ महा उग्र तप सूर नमस्ते । महा मौन गुण भूरि नमस्ते ॥ धरम चक्रि वृष केतु नमस्ते । भवसमुद्र शत सेतु नमस्ते ॥ ८ ॥ विद्याईश मुनीश नमस्ते । इन्द्रादिक नुत शीस नमस्ते ॥ जय रत्नत्रय राय नमस्ते । सकल जीव सुखदाय नमस्ते ॥ अशरण शरण सहाय नमस्ते । भव्य सुपन्थ लगाय नमस्ते ॥ निराकार साकार नमस्ते । एकानेक अधार नमस्ते ॥१०॥

लोकालोक विलोक नमस्ते । त्रिधा सर्व गुण थोक नमस्ते ॥ सल्ल दल्ल दल मल्ल नमस्ते । कल्ल मल्ल जित लल्ल नमस्ते ॥ ११ ॥
भुक्ति मुक्ति दातार नमस्ते । उक्ति सुक्ति श्रृंगार नमस्ते ॥ गुण अनन्त भगवन्त नमस्ते । जै जै जै जयवन्त नमस्ते ॥ १२ ॥

इति पठित्वा जिनचरणाग्रे परि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

अध्याय पंचम

—:जैन व्रत कथा संग्रह:—

रोहिणी व्रत कथा

सोरठा—बास पूज्य जिनराज, भव दधि तरण जिहाज सम ।
भव्य लहैं सुख साज, नाम लेत पातक हरैं ॥ १ ॥
दोहा—शारद बंदों भाव सों, गुरु के लागों पांय ।
कथा रोहिणी व्रत कहौं, सुनो भव्य चितलाय ॥ २ ॥

चौपाई ।

जंबू द्वीप मध्य शुभ जानि, दक्षिण भरत क्षेत्र सुखखानि ।
मगध देश पूरब दिशि सार, राजमही पुर बसै अपार ॥ ३ ॥
श्रेणिक तहाँ नृपति परचंड, तिन लीनों अरिजन पर दंड ।
पटरानी चेलना सुजानि, धर्म धुरन्धर शील निधान ॥ ४ ॥
बैठ्यो सभा सिंहासन सदा, बनमाली फल लायो तदा ।
छह रितु के फल देखे राय, राजा पूछत मन वचकाय ॥ ५ ॥
सत्य कहो ए पाये कहाँ, धन्य भूमि ये उपजे जहाँ ।
करि प्रणाम सो विनवै एव, विपुलाचलि आये जिन देव ॥६॥
वर्द्धमान को आगम भयो, समोशरण सुरपति निरमयो ।
राजा सुनियो जिनवर नाम, सात पैंड चल कियो प्रणाम ॥७॥

बहुत दान बन मालिये दयो, बजै निशान मुदित मन कियौ।
राजा रानी परिजन योग, बंदन चले नगर के लोग ॥ ८ ।
समोशरण रचना देखियौ, जन्म सुफल अपनो लेखियौ।
मध्यम स्थल बंदे जिन राय, राजा भक्ति करी बहु पाय ॥ ९ ॥
पुनि गणधर को कियो प्रणाम, नर कोठे में बैठो ताम।
द्वै विधि धर्म सुन्यो मन लाय, रोम रोम आनंदो राय ॥१०॥
फिर नरपति कर जोरि सु कही, अति प्रमोद ताके मन सही।
स्वामी मो पर कृपा करेव, व्रत रोहिणी कहौ जिन देव ॥११॥
कहि विधि करों कहौविधि सोय, सो व्रत करै कहा फल होय।
तब गणधर बोले मुनिराय, जिन यह व्रत पालौ सुखदाय ॥१२॥
ताकों सकल कहों विरतंत, चंपापुर एक वसै महन्त।
राजा राज करैं मघवान, सकल जननिकौ राखै मान ॥ १३ ॥
ता घर रानी लक्ष्मी मती, सुन्दर शीलवन्त गुण सती।
सात पुत्र कन्या रोहिनी, तात मात भ्रात मोहिनी ॥ १४ ॥
एक दिवस पूछौ मुनिराय, रोहिनी व्रत कहिए समझाय।
अवधि ज्ञान करि मुनिवर कहैं, हस्तनापुर पट्टन लहै ॥ १५ ॥
राजा वीत शोक परवीन, दयावन्त गुणवन्त नवीन।
विद्युत प्रभा तिया तसुनाम, पुत्र अशोक कहत तसु धाम ॥ १६ ॥
सो अशोक रोहिनी पति होय, सुनि राजा आनन्दो सोय।
राजा तासु स्वयंवर रच्यौ, बहुविधि भूमि सुवर्ण में खच्यो ॥ १७ ॥
देश देश नृप कुमर बुलाय, सिंहासन बैठिका दिवाय।
कन्या आई मण्डप मांझ, मनो सभा में फूलो सॉझ ॥ १८ ॥
रोहिणी देखि अशोक कुमार, रूपवन्त गुण तेज अपार।
ततक्षण कुमर रोहिन वर्यो, जै जै कार सकल नर कर्यौ ॥१९॥
भयो विवाह सकल विधि जोग, सुख सों विदा भये सब लोग।
रोहिनी घर लै गयो अशोक, दिन दिन वांछित भोगे भोग ॥२०॥

सुख सों रहत बहुत दिन गये, सात पुत्र ताके घर भये।
अष्टम लघु बेटा ता अङ्क, दिन दिन भुगतै सुरक मयंक ॥२१॥
दुख की बात न जाने कोय, सुपने हू दुख कैसो होय।
कुमर अशोक रोहिनी धाम, महल सतखने बैठी जाम ॥२२॥
एक धनी को सुत मरि गयो, ता घर महा शोक दुख भयो।
तब रोहिनी बोली हम जोइ, इन घर कहा महोच्छव होय ॥२३॥
मैं नहिं सुन्यो कहूं इहि भाँति, कौन गीत गावे दिन राति।
सखी गीत सिखवो इह मोहि, सब आभरण मैं देहों तोहि ॥२४॥
सुनि वसन्त सेना अनखाय, हे पुत्री तू बौरी भाय।
याके घर भयो पुत्र वियोग, करैं दुःख सब परियन लोग ॥२५॥
ऐसी गति यह वाकी भई, सो काहू मत दीजो दई।
तासों फिर बोली रोहिणी, मेरे हू जिय इच्छा घणी ॥२६॥
पुत्र शोक यह कैसो होय, सो तुम सखी बताओ मोय।
राजा वचन न सक्यौ सम्हारि, पुत्र महल तैं दीनों डारि ॥२७॥
चित्त रोहिणी निर्मल भाय, ततक्षण देवनि करी सहाय।
अन्तरीक्ष हाथन पर लयौ, कंचन मणि सिंहासन दयो ॥२८॥
तापर बालक क्रीडा करे, नेक नहीं चित्त अन्तर डरे।
यह अचरज देख्यौ नरनारि, बहुतक आये कौतुक धारि ॥२९॥
नगर लोग सब करैं विचार, पुन्यवन्त रोहिन वर नारि।
कुमर अशोक पुत्र देखियौ, सुफल जन्म अपनौ लेखियौ ॥३०॥
यह विरतन्त रह्यौ यह ठोर, अब यह कथा चली पुन और।
तिह पुर बारह गहन मंझार, चारण मुनि आये तिहिं वार ॥३१॥
रूप कुम्भ सुर्ण कुम्भ मुनीश, वंदन गयौ नगर कौ ईश।
छह रित के फल फूल सु जहाँ, सभा मध्य मुनि बैठे तहाँ ॥३२॥
नाग मोर मूसा मंझार, मृग पर सिंह न करे विकार।
राजा मुनि की पूजा करी, गुरु की भक्ति हिये में धरी ॥३३॥

द्विविध धर्म सुनि कियौ प्रकाश, सुनि करि गयौ चित्त को त्रास।
पुनि अशोक पूंछै मुनिराय, मो घर त्रिया रोहिनी आय ॥३४॥
शोक नाम जानै नहिं कोय, कहा पुन्य तैं यह फल होय।
तव मुनि यह वोले मुनिराय, पूरव पुण्य सुनों चितलाय ॥३५॥
यहै नगर वसु पाल नरेन्द्र, रानी तासु यशोमति चन्द्र।
सेठि बसै धन मित्र सुनाम, भार्या धन मित्रा तासुधाम ॥३६॥
सेठि गृह इक पुत्री भई, दुरगंधा अति दुखिता ठई।
ताहि सुनों व्याहै नहिं कोय, सेठि चित्त अति दुखितौ होय ॥३७॥
तहाँ धन्न मित्र वनिक इक रहै, वसु कांता वनिता सुख लहै।
पुत्र एक श्रीखेण जु भयौ, सो दुरबुद्धि कुसङ्गति गयौ ॥३८॥
सात विसन सेवै दिन राति, कोऊ न ताकों व्याहै जाति।
जूआ खेल धन हारयौ सबै, चोरी चित्त आरंभ्यौ तबै ॥३९॥
चोरी करण गयो इक जाम, सो कुतवाल पकरियौ ताम।
वांधि पाय दीनौ लटकाय, वहुतक कष्ट दिखायौ ताहि ॥४०॥
ता मारग निकस्यो धन मित्र, ताहि देखि करुणा भई चित्त।
दै धनि तोहिं छुड़ावों जबै, मो दुरगंधा व्याहौं अबै ॥४१॥
तिन मानी जु सेठि की वात, तिन दै द्रव्य छुड़ायौ प्रात।
ताहि दई दुरगंधा व्याहि, सो पुनि नैन न देखी जाय ॥४२॥
व्याहि छाँड़ि देशांतर गयौ, फिर तब ताहि अधिक दुःख भयो।
ताकर भीख न भिक्षुक लेइ, ताको कोई न आदर देई ॥४३॥
सर्व श्री वाइ कौ नाम, सो पुनः मिली पिता के धाम।
दुरगंधा दुख कहियो ताम, कहा पाप मैं कीनों जाम ॥४४॥
तातै मैं दुरगंधा भई, हा हा वचन कहत सो ठई।
अब तुम मोपर कर उपकार, तातैं पूरव मिटै विकार ॥४५॥
वाई कहै चलो मुनि पास, वे सब कहैं पूर्व भव त्रास।
अमृतश्रवा मुनीश्वर जबै, सो वन माहिं यौं हों चीतवै ॥४६॥

बाहिर नगर दियौ पुनि जोग, बन्दन गये नगर के लोग।
कहै सेठ मुनि सों करि भाय, मेरे दुरगंधा धिय आय ॥४७॥
कौन पाप ऐने ओतरी, बहौरि व्याहि करि पति परिहरी।
कौन पाप तैं भयो वियोग, सो कहिये हम सों संजोग ॥४८॥
बार बार विनवै सौ एव, मोहि भवांतर कहि जिन देव।
सुनि मुनिवर बोले तिहिं वार, सोरठि देशि नगर गिरनारि ॥४६॥
तिहिं पुर राज करें भूपाल, रानी सिंधुमती सुकमाल।
रिंतु बसन्त बन विहरन गये, सब नर नारि अनंदित भये।
राजा चित नगर तब करौ, नजर मांहि एक मुनिवर परौ ॥५०॥
पटरानी सों कही बुलाय, भोजन देउ नगर में जाय।
राजा बचन न डारो गयो, रानी चित्त कोप अति भयौ ॥५१॥
बैठि सुखासन मंदिर गई, कोपवन्त मुनिवर पै भई।
कटुक तूबरी खटाई तहाँ, लै अहार मुनि बन गए जहाँ ॥५२॥
तब सन्यास लियौ मुनिराय, भयो जु देव सुरग में जाय।
रानी सिंधुमती की बात, राजा सुनी सबै परभात ॥ ५३ ॥
इन पापिन नैं कुकर्मकियौ, कटु तूंबी मुनी भोजन दियौ।
जो मैं याके संगमें रहों, याके पाप नर्क दुःख सहो ॥ ५४ ॥
राजा कोप न सक्यौ संभारि, तबै नगर तै दई निकारि।
सो पुनि रुद्र ध्यान तैं मरी, छट्टे नरक जाय अवतरी ॥ ५५ ॥
पंचम चतुर्थ तीसरे दोय, प्रथम नर्क धरि भव भव सोय।
छेदन भेदन मुदिगर मार, सूला रोपन दुःख अपार ॥ ५६ ॥
जेते कष्ट नर्क में सहे, ते सब हम पर जात न कहे।
मैंडक जौंक भई जल मांहि, सूकर कूकर ए सब मांहिं ॥ ५७ ॥
गाय जु भैंस भई परि जानि, सो मरि गई दुरगंधा आनि।
मुनिके वचन सुने सब साह, पुनि याकौ किम होय निवाह ॥५८॥
अब ऐसौ दीजै उपदेश, पूर्व जन्म कौ जाय कलेश।

सुनि करि वचन कहैं मुनिराय, व्रत रोहिनी करौ मन लाय ॥५६॥

सुनि दुरगन्धा जोरे हाथ मो पर कृपा करौ मुनिनाथ ।
किहिं विधि व्रतरोहिनी करों, कहा विधान चित्त में धरों ॥ ६० ॥

मुनिवर कहैं सुनों भवि लाय, जादिन वक्त रोहिनी होय ।
ता दिन सब छांड़ौं आरम्भ, पूजा भाव धरौ व्रत थम्भ ॥ ६१ ॥

करि उपवास कथा रुचि सुनौं, पात्र दान दै सुकृत लुनौं ।
उत्तम व्रत नौ वरस प्रमाण, मध्य सात पाँच लघु जान ॥ ६२ ॥

बेदी माँहि पाँडनौ रचौ, चन्दोपक रचना सब सचौ ॥ ६३ ॥

जब यह व्रत सम्पूरण होय, तब उद्यापन कीजै लोय ।
बहु पकवान बनावौ भले, बहु विधि जिन पूजौ अघटले ।
यह विधि निशि जागरण कराय, तब व्रत गुरु भंडार धराय ॥६४॥

चारि संघ कौं दान जु देय, खरचि लची जग सहौ लेय ।
सकल नातनों लाडू सेव, द्रव्य सहित श्रावक घर देव ॥ ६५ ॥

औषधि अभय दान रुचिलाय, पुस्तक गुरु कों देय लिखाय ।
सुनि दुरगंधा आनन्द भयो, तिन रोहिनी व्रत गुरु पै लयौ ॥६६॥

लै व्रत सों अपने घर जाय, सब दुरगन्ध सु गई पलाय ।
करि व्रतिन उद्यापन कर्यो, अन्तर पाप तिमर सब हर्यो ॥६७॥

अन्त समाधि मरण सौं मरी, पहले स्वर्ग जाय अवतरी ।
तहाँ बहुत सुख भुगते जाय, सो यह रोहिणी अवतरी आय ॥६८॥

यह व्रत पाल्यो अभिराम, तातैं शोक न जानें नाम ।
मुनिवर वचन सुनैं जब राय, रोहिणी सहित जु पूजे पाय ॥६६॥

पुनि अशोक आनन्द्यौराय, मेरे भव कहिए समझाय ।
मुनिवर कहैं भील वन रहै, महापाप सो निशि दिन वहै ॥७०॥

तिन मुनि को उपसर्ग जु कियौ, ताके पाप नर्क दुख लियौ ।
क्रम क्रमकरि नर देही लही, मुनि समीप ह्वै शुभ गति गही ॥७१॥

तो तप करि सुर भयौ महंत, धर्म ध्यान करि लीनौ अन्त।
सो तुम भये अशोक कुमार, पूरव पुन्य जो लयौ अपार ॥७२॥
गुनें भवांतर अति सुख भयौ, तिन रोहिनि व्रत गुरु पै लयौ।
जुक्ति मुक्ति व्रत कीनों राय, उद्यापन विधि सर्व कराय ॥७३॥
रहत बहुत दिन वीते जहाँ, वास पूज्य जिन आए तहाँ
तव वनपाल जनायौ दयौ, नगर लोग, आनन्दित भयो ॥ ७४ ॥
राजा रानी परियन लोग, बन्दन चले नगर के लोग ।
समोसरण वन्दे जिनराय, पूजा भक्ति करी चित्त लाय ॥७५॥
नर कोठे में बैठन लयौ, धर्म श्रवण चित्त अन्दर दयो ।
राय अशोक जुदिक्षा लई, तप बल गण धर शुद्ध जु भई ॥७६॥
पुनि केवल मुक्ति जु गयौ, अजर अमर पद निर्मल लयौ ।
धर्म श्री बाई के अन्त, रोहिनि दिक्षा लई तुरन्त ॥ ७७ ॥
अन्त समाधि चित्त में धारि, सोला स्वर्ग जाय अवतार।
अर रोहिनी के सुत है आठ, तिन हूं भव्य लियौ तज पाठ ॥७८॥
तप बल स्वर्ग मुक्ति फल लयौ, जन्म मरण सकल दुख गयौ।
यह विधान गौतम नै भणौं, श्रेणिक राय भाव धरि सुणौं ॥७९॥
बहुत भव्य व्रत लीनौ जाय, दुःख दारिद्र तिन दिया मिटाय।
रोहिनि कथा समपूर्ण भई, जो पूरब परकाशी सही ॥८०॥
हेमराज यह कही विचारि, गुरुमुख सकल शास्त्र अवधारि।
जो व्रत कथा कोष में कही, सो विधि गन्ध चौपाई भई ॥८१॥
नगर वीर पुर गोल प्रवीन, दया दान तिन कोमल लीन।
विधि हों दान सुपात्र हिं देय, खरचि लक्ष्मी जश कौं लेय ॥८२॥
निशि दिन गुरु मुख पढ़ै पुराण, गुणी जननि कौं राखै मान।
जुगल वेद रिविचंद बखानि, बुध जन मत संवत सर मानि ॥८३॥
पोष सुदी रवि दिन द्वादशी, मंगल वार रोहिनी सची।
कवि जन भगति गात अति भई, तब यह धर्म कथा वरनई ॥८४॥

रोहिनि व्रत पालै जो कोइ, सो नर नारि अमर पद होइ।
इम लखि भवि जनकर मनलाय, भव भव के दुख जाय पलाय॥८६॥
दोहा—"मुन्नालाल" ऐसे कहैं, सुनौं चित्त मन लाय।
मन वच लाय जो करैं भवि, सो शिवै तरि जाय॥८७॥

❀ समाप्त ❀

निशि भोजन कथा

दोहा

नमों सारदा सार बुध, करैं हरैं अघ लेप।
निशि भोजन भुंज की कथा, लिखूं सुगम संक्षेप॥१॥

चौपाई छन्द

जम्बू दीप जगत विख्यात। भरत खंड छवि कहिये न जात॥
तहाँ देश कुरु जांगल नाम। हस्तनागपुर उत्तम ठाम॥
यशोभद्र भूपति गुण वास। रुद्रदत्तद्विज प्रोहित तास॥
अश्वमास तिथि दिन आराध। पहिली पड़वा कियो सराध॥
बहुत विनय सों नगरी तने। न्याति जिमाये ब्राह्मण घने॥
दान मान सबही को दियो। आप विप्र भोजन नहिं कियो॥
इतने राय पठायो दास। प्रोहित गयो राय के पास॥
राज काज कछु ऐसो भयो। करत करावत सब दिन गयो॥
घर में रात रसोई करी। चूल्है ऊपर हाँड़ी धरी॥
हींग लौन उठि बाहर गई। यहाँ विधाता औरहिं ठई॥
मैंडक उछल परो तामाहिं। विप्र तहाँ कछु जानो नाहिं॥
बेंगन छौंक दिये तत्काल। मैंडक मरो होय बेहाल॥
तबहुँ विप्र नहिं आयो धाम। धरी उठाय रसौई ताम॥
पराधीन को ऐसी बात। औसर पायो आधी रात॥
सोय रहे सब घर के लोग। आग न दीवा कर्म संजोग॥
भूखो प्रोहित निकसे प्रान। ततछिन बैठो रोटी खान॥

बैंगन भोले लीनो ग्रास । मैंडक मुँह में आयो तास ॥
दांतन चले चब्यो नहिं जबै । काढ़ धरो थाली में तबै ॥
प्रात हुए मैंडक पहिचान । तौभी विप्र न करी गिलानि ॥
थिति पूरी कर छोड़ी काय । पशु की योनी उपजो आय ॥

॥ सोरठा छन्द ॥

१ २ ३ ४ ५
घुघू काग विलाव सावर गिरध परवेरुआ ।
६ ७ ८ ९ १०
सूकर अजगर भाव वाघ गोह जक में मगर ।
दश भव इहि विधि थाय, दसों जन्म नरकहिं गयो ।
दुर्गति कारण पाय, फला पाप वट बीजवत ॥

॥ दोहा ॥

निशि भोजन करिये नहीं, प्रगट दोष अविलोय ।
परभव सब सुख संपजे, यह भव रोग न होय ॥

॥ छन्द छप्पय ॥

कीड़ी बुध बलहरे कंप गद करे कसारी । मकड़ी कारण पाय कोढ़ उपजे दुख भारी । जुआं जलोदर जने फाँस गल बिथा बढ़ावे । बाल सबै सुरभंग बमन माखी उपजावे ॥ तालुवे छिद्र बीछू भखत और व्याधि बहु करहि सब । यह प्रगट दोष निशअसन के पर भव दोष परोक्ष फल ॥

॥ दोहा छन्द ॥

जो अघ इहि भव दुख करे, परभव क्यों न करेय ।
डसत साँप पीड़े तुरत, लहर क्यों न दुख देय ॥
सुवचन सुन डाहारजै, मूरख मुदित न होय ।
मणिधर फण फेरे सही, नदी साँप नहीं होय ॥
सुवचन सत गुरु के वचन, और न सुवचन कोय ।
सत गुरु वही पिछानिये, जा उर लोभ न होय ॥

भूधर सुवचन सांभलो, स्वपर पत्तकर बौन।
समुद्र रेणु का जो मिले, तोड़ें ते गुण कौन ॥
इति निशिभोजन भंज कथा सम्पूर्णम्।

ब्रह्मगुलाल मुनी की कथा

कुंकुम छन्द

स्वामी ब्रह्मगुलाल मुनि की कथा अचरज कारी।
हँसी खेल में सांग रचा और जिनमत की दीक्षा धारी। टेक

अद्भुत रूप अनूपम विद्या, शरधानी जिन दर्शन का।
पड़ कुसंग में स्वांग खेलता, रास रचै वृन्द्रावन का॥
कभी राम कभी कृष्ण रूप धर, सीता राधा रुक्मिणि का।
मन को मौहै लौग चकित हों, समा देख यह जोवन का॥
इक दिन राजकुंवर महलों में, बैठे जोड़ सभा भारी।
स्वामी ब्रह्मगुलाल मुनी की, सुनो कथा अचरज कारी॥ हँसी०

चर्चा चली कठिन है सबमें, धरै सिंह का जो वाना।
वही गरज हो वही पराक्रम, वही चाल हो मस्ताना॥
ब्रह्मगुलाल कही, नहिं मुश्किल, चोट फेट, से घबराना।
राजकुंवर ने एक खून का, लिखकर दे दिया परवाना॥
भरी सभा में गरज कड़क कर, आया केहरि बलधारी।
स्वामी ब्रह्मगुलाल मुनी की सुनो कथा अचरज कारी॥ हँसी

यारों ने बकरी का बच्चा बाँधा थो धरके मन में।
देखें कैसा है यह जोगी, दया धर्म आराधन में॥
कहा कुंवर ने अरे सिंह तू, क्या करता होगा वन में।
नहीं मारता देख उधर, क्यों खड़ा सामने आँगन में॥
शेर नहीं है तू कोई गीदड़, धिक् धिक् तेरी महतारी।
स्वामी ब्रह्मगुलाल मुनी की सुनो कथा अचरज कारी॥ हँसी०

सुनके कुंवर के वचन अजा सुत, देख क्रोध मन में आया।
पूंछ उठाके धरी कान पै, लहू जो नैनों में छाया॥
अंग समेट उठाकर पंजा, कूद कुंवर सनमुख धाया।
आसपास के भागे सगरे, कुछ ऐसा धरका खाया।
लगा तमाचा गिरा सिंहासन, कुंवर प्राण का परिहारी।
स्वामी ब्रह्मगुलाल मुनी की, सुनो कथा अचरज कारी॥ हँसी०
ब्रह्मगुलाल बुला राजा ने, मन्त्र सोच यों फरमाया।
हाय कर्मगति यही लिखी थी, हमें पेश जो कुछ आया॥
होनहार सो हुई जिन्दगी, जग में है तरुवर छाया।
निपट उदासी दूर करन को, हमने तुमको बुलवाया।
जैन मुनी का भेष बनाकर, दे कोई शिक्षा हितकारी।
स्वामी ब्रह्मगुलाल मुनी की, सुनो कथा अचरज कारी॥ हँसी०
आकै घरपै बात कही यह, सब कुनबे के लोगन को।
समा आ गया करैं नाश हम, कर्म पाप के रोगन को॥
सुन मथुरामल धार महाव्रत, धार निरोधै योगन को॥
यही समझ के सबने मानी, कठिन है तजना भोगन को।
भाई भावन बारह निशको, मनमें मुनि शिव अधिकारी।
स्वामी ब्रह्मगुलाल मुनि की, सुनो कथा अचरज कारी। हँसी०
प्रातःकाल पंचों की साची, प्रतिमा सन्मुख थिति ठानी।
हाथ जोड़कर करी बीनती, काल दोष में गुरु हानी॥
तातैं श्री जिनविम्ब लेत हूँ, दिक्षा वर्णंत जिनवानी।
पांच मुष्ट से लोच बालकर, कमंडलु अरु पीछी आनी॥
मारग सोध गमन का पहुंचे, जहाँ सभा बैठी सारी।
स्वामी ब्रह्मगुलाल मुनी की, सुनो कथा अचरज कारी॥ हँस०
दोहा—राजा—देख भेष होके चकित, भूप कहा सिरनाय।
शोक रहित कीजे हमें, दे शिक्षा मुनिराय॥

ब्रह्म०—कीजे कोट उपाव, कोऊ न सुख दुख दे सकै।
तजकै मन भ्रम भाव निज हित का उद्यम करो ॥
राजन रोष न कीजिये यह जगरूप विचार ॥ टेक
ज्ञान चढे गज ज्ञान पै, उदै स्वान निहार ।
भौसत भौसत थक रहे, ताको अगम अपार ॥
कर्म उदैसों क्या डरो, यह जगरूप विचार ॥ टेक
सुख दुःख परणति कर्म की, दोऊ बन्धन रूप ।
पंचमगति बिन सुख नहीं, जगहै दुख कूप ॥
मन की दुविधा परिहरो, यह जग रूप विचार ॥ टेक
हम अज्ञान दशा विषै, किये पाप जो घोर ।
छेदेंगे तप धारकैं, तन ममता को छोर ॥
हमरे हाथ कुंवर मरो, यह जगरूप विचार ॥ टेक
तज कै राग रु दोष को, तन में समता लाय ।
मौन धरो कह भूपसों, यों वे श्री मुनिराय ॥
जो मन आवै सो करो, ये जगरूप विचार ॥ टेक

॥ कुकुभ छन्द ॥

देख अवस्था मुनि रूप की राव सभी छल को त्यागा ।
कहा, होय कै परगट मांगो तुमको जो अच्छा लागा ॥
ब्रह्मगुलाल मुनी बोले वैराग भाव में मन पागा ।
क्षमा कीजिए हम वनवासी इच्छा का तोड़ा तागा ।
ले कमन्डलु पीछी सब कुछ छोड चले पर उपकारी ।
स्वामी ब्रह्मगुलाल मुनि की, सुनो कथा अचरज कारी ॥ हसी०
सब नगरी में फैली चर्चा, हाहाकार करें सारे ।
आगै मुनिवर पीछैं सगरे, जन धारा परमन मारे ॥
माता पिता औ नारी तीनों, चले साथ अति दुखियारे ।
पहुंचे वन में बैठ गये मुनि, मोह फॉस नाशन हारे ॥

तीनों में अब प्रश्नोत्तर यों होते हैं बारी बारी ।
स्वामी ब्रह्मगुलाल मुनी की सुनो कथा अचरज कारी । हँसी०

नरेन्द्र छन्द (जोगी रासा)

माता– बस बस बेटा अब घर चलिये, क्यों बैठे बन माँही ।
हँसी खेल में साँग भरा था, क्या सोची मन के मांही ।
मुनि–किसका घर क्या आना जाना ममत न कुछ इस तन मांही ॥
कैसा साँग लगे अब हमतो लागे मोक्ष यतन के माँही ॥
माता–मेरे जिगर का टुकड़ा बेटे, मेरी बगल का पाला ।
मुझ दुखिया को छोड़ चले, अब क्यों वैराग संभाला ॥
मुनि–बिछुडे बार अनंती मिल मिल, नया ढंग मैं क्या डाला ।
माता कौन कौन है बेटा, है इक साँग निराला ॥
माता–नहीं जानूं थी मैं इस दिन को, है है भरी जवानी ।
यों दीपक गुल कर जाओगे कुछ छोड़ी नहीं निशानी ॥
मुनि—नहीं जवानी और बुढ़ापे, की कुछ जुदी कहानी ।
इक दिन जिसको समझे अपनी, होगी वही बिगानी ॥
नारी—मुझे छोड़ मंझधार चले हो, मुझे बताओ प्यारे ।
किसका तकूं सहारा दिन अब, कैसे कटे हमारे ॥
मुनि—नारी की पर्याय बुरी है, पराधीन दुख सारे ।
छिदै स्त्री लिंग धर्म की, सेवन शरण तुम्हारे ॥
नारी—भरी जवानी जोग लिया, तुम मन में कुछ न विचारा ।
भरी पड़ी है उमर अभी, क्यों छोड़ा संग हमारा ॥
मुनि—वृद्ध अवस्था और लड़कपन दोनों दुख की धारा ।
एक जवानी में बन आवै, सोचै सोचन हारा ॥२०॥

॥ कुकुभ छन्द ॥

होकर गये निराश बुलाकर, मथुरामल की नारी को ।
कहा सभी ने हाहा धिकधिक, ऐसी समझ तुम्हारी को ॥

आप रहे घर बैठ विपति में, छोड़ छाड़ सब यारी को।
भेजो उसको जाकर लावै, कहते हमे लाचारी को॥
किया तंग जब औरत ने तब, मथुरामल यो मन धारी।
स्वामी ब्रह्मगुलाल मुनी की सुनो कथा अचरज कारी॥ हँसी०

वह हठग्राही कभी न आवै, कहा किसी का न मानै।
चले गये वह अब हमको भी कहा यहाँ छप्पर छाने॥
जो संयम कुछ हम भी सेवैं, यारी को इक जग जाने॥
कहा नार से लो जाते हैं, तुम मत लगियो पछताने॥
उस बिन हम भी घर नहिं आवें, यही प्रतिज्ञा सुखकारी।
स्वामी ब्रह्मगुलाल मुनी की सुनो कथा अचरज कारी॥ हँसी०

दोहा—बन में जाकर यों कहा, सुनिये ब्रह्मगुलाल।
कहा धरा मुनिव्रत विषै, दो उत्तर गुणमाल॥

नरेन्द्र छन्द (जोगी रासा)

मथुरामल—बालपने में विद्या सीखे, निज अरुपर हितकारी।
तरुण अवस्था भोग जोग की, वृद्धपने में वारी॥
बिना भोग के जोग लिया, तज सुन्दर कामिन प्यारी।
कोमल सेज तजो साईंजी, क्या मन माहिं बिचारी॥

मुनी—भोग विषै हैं रोग घनेरे, लावें अंत उदासी।
कामिनि सेज दिना दश की फिर पड़े गले में फाँसी॥
पाँच इन्द्री के विषय अग्नि हैं, भोग सबै त्रण रासी।
ज्यों ज्यों सेवें त्यों त्यों भड़कै, सुखी सदा बनवासी॥

मथुरामल—सुख में रहना खाना पीना, दया धर्म का धरना।
पाल अनुव्रत चार दान दे, वैयाव्रत का करना॥
करना पर उपकार धार, संन्यास अंत में मरना।
ऐसे उत्तम गृहाचार को, तज कै क्यों दुख भरना॥

मुनी—घर बस हो नहिं सकती, पूरण पुन्य पाप की हानी।
लोहे अरु सोने की बेड़ी, दोनों बंध निशानी॥

धार महाव्रत मिलै मोक्ष जो, परम हितू सुखदानी।
ऐसे यती धर्म की महिमा, सारे जग ने जानी ॥

मथुरामल—हीन संहनन काल पाँचवां निर्बल है यह काया।
यह मन चंचल फिरै भटकता रहै न थिर ठहराया ॥
कैसे हो निर्वाण महाव्रत, धरके क्या फल पाया।
वही मसल हो दुविधा में ना, मिलै राम ना माया ॥

मुनी—धर्म ध्यान की कर उपासना, चंचल मन ठहरावै।
घर को त्याग वास कर वन में, आसा सभी घटावै ॥
समिति गुप्ति व्रत पाल देह तजं, जब विदेह को जावै।
धरके दिक्षा इसी काल यों, जीव मुकति पद पावै।

॥ कुकुभ छन्द ॥

गये मनाने को मथुरा मल, यती धर्म-महिमा जानी।
छुल्लक होकर साथ हो लिए, भोग वासना सब हानी ॥
दिया धर्म उपदेश जगत को; जो लौं तन अस्थिति ठानी।
मङ्गल ऐसे काठ संग में, लोहा तैरति है पानी ॥
यह वैरांग कुतूहल बांचो, मन लाकर सब नरनारी ॥ ब्रह्म

॥ इति शुभम् ॥

कवि हेमराजजी कृत—

अष्टाह्निकाव्रत कथा

दोहा—चरण नमूं जिनराज के, जाते दुरित नशाय।
शारद वन्दूं भाव से, सतगुरु सदा सहाय ॥१॥

चौपाई

जम्बूद्वीप सुदर्शन मेर। रहो ताहि लवनोदधि घेर ॥
मेरुसे दक्षिण भारत क्षेत्र। मगधदेश सुख सम्पति हेत ॥२॥
राजगृह नगरी शुभ बसै। गढ मठ मंदिर सुन्दर लसै ॥

श्रेणिक राज करे सु प्रचंड । जिन लीनो अरिगण परदंड ॥३॥
पटरानी चेलना सुजान । सदा करै जिनपूजा दान ॥
सभामध्य बैठो सो राय । बनमाली शिर नायो आय ॥४॥
दो कर जोड़ करै सो सेव । विपुलाचल आये जिन देव ॥
वर्द्धमान को आगम सुनो । जन्म सुफल चित अपने गुनो ॥५॥
राजा रानी पुरजन लोग । वन्दन चले पूजने जोग ॥
चलत चलत सो पहुंचे तहाँ । समोशरण जिनवर को जहाँ ॥६॥
दे प्रदक्षिणा भीतर गये । वर्द्धमान के चरणों नये ॥
पुनि गणधर को कियो प्रणाम । हर्षित चित्त भयो अभिराम ॥७॥
दशविध धर्म सुनो जिन पास । जाते गयो चित्त को त्रास ॥
दो कर जोड़ि नृपति वीनयो । अति प्रमोद मेरे मन भयो ॥८॥
प्रभु दयाल अब कृपा करेव । व्रत नंदीश्वर कहो जिनदेव ॥
अरु सब विधि कहिये समझाय । भावसहित यों पूछो राय ॥९॥
अवधिज्ञानधर मुनिवर कहैं । कौशलदेश स्वर्ग सम रहैं ॥
ताके मध्य अयोध्यापुरी । धन कन सुखी छतीसों कुरी ॥१०॥
ता पुर राज करै हरिषैन । महा तेज बल पूरण सैन ॥
वंशइक्ष्वाकु चक्री भयो आन । ताकी आनि खंड छह जान ॥११॥
पाट बंध रानी नृप तीन । गंधारी जेठी गुणलीन ॥
प्रिय मित्रा रूपश्री नाम । साधे धर्म अर्थ अरु काम ॥१२॥
सुखसे रहत बहुत दिन भये । ऋतु बसन्त बन राजा गये ॥
जल क्रीड़ा वनक्रीड़ा करें । हास्य विलास प्रीति अनुसरें ॥१३॥
ता वनमध्य कल्पद्रुम मूल । चन्द्रकांति मणि शिलानुकूल ॥
मण्डपलता अधिक विस्तार । चारण मुनि आये तिहिंवार ॥१४॥
अरिंजय अमितंजय नाम । सोम दयालु धर्म के धाम ॥
राजा रानी पुरजन नारि । देखे मुनि तिन दृष्टि पसारि ॥१५॥
सब नर नगर आनंदित भये । क्रीड़ा तजि मुनि वंदन गये ॥

त्रिया पुरुष चरणों अनुसरे। अष्ट द्रव्य मुनि पूजे खरे ॥१६॥
धर्मध्यान कहो मुनिराय। श्रद्धा सहित सुनो कर भाय॥
राजा प्रश्न करी मुनि पास। सुनो धर्म चित भयो हुलास॥१७॥
दलबल सहित संपदा घनी। और भूमि षटखंड जो तनी॥
महा पुण्य जो यह फल होइ। गुरु बिन ज्ञान न पावैं कोइ॥१८॥
बार बार विनवे कर सेव। पूरव कहो भवान्तर देव॥
अवधिज्ञानबल मुनिवर कहै। पुर अहिच्छेत्र वनिक इक रहै॥१९॥
सुखित कुवेरमित्र ता नाम। साधे धर्म अर्थ अरु काम॥
जेठ पुत्र श्रीवर्म्मकुमार। मध्यम जयवर्मा गुणसार॥२०॥
लघु जयकीर्ति कीर्ति विख्यात। तीनों शुभ-आनंदित गात॥
एक दिवस उपजो शुभकर्म। वनमें आये मुनि सौधर्म॥२१॥
सेठ पुत्र मुनिवर बंदियो। श्रीवर्म्माजु अठाई लियो॥
नंदीश्वरव्रत विधि से पाल। भव भव पापपुंज को जाल॥२२॥
अंत समाधिमरण को पाय। इस पुर वज्रबाहु नृप आय॥
ताके विमला रानी जान। तुम हरषेन पुत्र भये आन॥२३॥
पूरव व्रत पालो अभिराम। तातैं लहो सुक्ख कौ धाम॥
जयवर्म्मा जयकीरति वीर। निकट भव्य गुण साहस धीर॥२४॥
वंदे गुरु जु धुरन्धर देव। मन बच काय करी बहु सेव॥
तब मुनि पंच अणुव्रत दिये। दोनों भाव सहित व्रत लिये॥२५॥
अरुनंदीश्वरव्रत तिन लियो। अंत समाधिमरण तिन कियौ॥
हस्तनागपुर शुभ जहँ बसै। तहाँ विमलवाहन नृप लसै॥२६॥
ताके नारि श्रीधरा नाम। अरिंजय अमितंजय धाम॥
पुत्र युगल हम उपजे तहाँ। पूर्वपुण्य फल पायौ तहाँ॥२७॥
गुरु समीप जिन दीक्षा लई। तपबल चारण पदवी भई॥
यासे हम तुम पूरव भ्रात। देखत उपजो प्रेम सुगात॥२८॥
पूरव व्रत नंदीश्वर कियौ। तातैं राज चक्रपद लियौ॥

अब फिर व्रत नंदीश्वर करो। तातैं स्वर्ग मुक्तिपद धरो ॥२९॥
तब हरिषेण कहैं कर जोड़ि। व्रत नंदीश्वर कहो वहोरि॥
मुनिवर कहैं दीप आठमो। तास नाम नंदीश्वर भनो ॥३०॥
ताके चहुँदिश परवत परे। अञ्जन दधिमुखरतिकर धरे॥
तेरह तेरह दिशि दिशि जान। ये सब पर्वत बावन मान ॥३१॥
पर्वत पर्वत पर जिन गेह। वह परिणाम सुनो कर नेह॥
सौ योजन ताका आयाम। अरु पचास विस्तार सुताम ॥३२॥
उन्नत है योजन पचीस। सुर तहँ आय नवावें शीश॥
अष्टोत्तर सौ प्रतिमा जान। एक एक चैत्यालय मान॥३३॥
गोपुर मणिमय के सु प्रकार। छत्र चमर ध्वज वंदनवार॥
प्रातिहार्य विधि शोभा भली। तिन रविकोटि सोम छविछली ॥३४॥
तासु दीप में सुरपति आय। पूजा भक्ति करें बहु भाय॥
देव अव्रती व्रत नहिं करैं। भाव भक्तिकर पातिक हरैं॥३५॥
तासु दीप सम्बन्धी सार। व्रत नंदीश्वर को अधिकार॥
यहाँ कही जिनवरसु प्रकाशि। आदि अनादि पुण्य की राशि ॥३६॥
जो व्रत भव्य भाव से करें। भव २ जन्म जरा भय हरैं॥
ता व्रत को सुनिये अधिकार। वर्ष वर्ष में त्रय त्रय वार ॥३७॥
आषाढ़ कातिक अरु जो फाग। शाखा तीन करो अनुराग॥
आठों दिन आठैं पर्यत। भक्ति सहित कीजै व्रत संत ॥३८॥
सातैं दिन एकाशन करो। कर संयम जिनवर मन धरो॥
आठैं के दिन कर उपवास। जातैं छूटे कर्म का त्रास ॥३९॥
करो प्रथम जिनका अभिषेक। जातैं पातिक जांय अनेक॥
अष्ट प्रकारी पूजा करो। मुख परमेष्ठि पंच उच्चरो ॥४०॥
ता दिन व्रत नंदीश्वर नाम। ताका फल सुनियो अभिराम॥
फल उपवास लक्ष दश जाम। श्रीजिनवर ने करो बखान ॥४१॥

दूजे दिन जिनपूजा करो। पात्रदान दे पातिक हरो ॥
अष्ट विभूति नाम दिन सोय। ता दिन एकाशन कर लोय ॥४२॥

फल उपवास सहस दश होई। अब तीजी दिन सुनिये लोई ॥
जिनपूजा कर पात्र हि दान। भोजन पानीभात प्रमान ॥४३॥

नाम त्रिलोकसार दिन कहो। साठ लाख प्रोषधफल कहो ॥
चतुर्थ दिनकर अवमौदर्य। नाम चतुर्मुख दिन सोहर्य ॥४४॥

तहँ उपवास लक्षफल होइ। पंचमदिन विधि करियो सोइ ॥
जिनपूजा एकाशन करो। ह्यलक्षण जु नाम दिनधरो ॥४५॥

फलचौरासी लख उपवास। जातैं जाय भ्रमण भव त्रास ॥
षष्ठम दिन जिनपूजा दान। भोजन भात आमली पान ॥४६॥

तादिन नाम स्वर्ग सोपान। व्रत चालीस लक्ष फल जान ॥
सप्तम दिन जिन पूजा दान। कीजै भविजन का सनमान ॥४७॥

सब सम्पत्ति नाम दिन सोइ। भोजन भात त्रिबेली होय ॥
फल उपवास लक्ष को जान। अष्टम दिन व्रत चित में आन ॥४८॥

कर उपवास कथा रुचि सुनो। पात्र दान दे सुकृत गुनो ॥
इन्द्रध्वज व्रत दिन तसु नाम। सुमरो जिनवर आठों जाम ॥४९॥

तीन कोड़ि अरु लाख पचास। यह फल होय हरै सब त्रास ॥
इस विध आठ वर्ष में होय। भाव सहित कीजै भविलोय ॥५०॥

उत्तम सात वर्ष विधि जान। मध्यम पाँच तीन लघु मान ॥
उद्यापन विधि पूर्वक सचो। वेदी मध्य माड़नो रचो ॥५१॥

जिनपूजा जु महा अभिषेक। चन्द्रोपम ध्वज कलशु अनेक ॥
छत्र चमर सिंहासन करो। बहुविधि जिनपूजो अघ हरो ॥५२॥

चारौ दान सुपात्रहि देउ। बहुत भक्तिकर विनय करेउ ॥
बहुविध जिन प्रभावना होय। शक्तिमान करो भविलोय ॥५३॥

उद्यापन की शक्ति न होय। तो दूनो व्रत कीजो लोय ॥
जिन यह व्रत कीनो अभिराम। तिन पद लयो सुखका धाम ॥५४॥

यह व्रतपुण्य महाफल लियो। प्रथम ऋषभजिनवर ने कियो॥
अनन्तवीर्य अपराजित पाल। चक्रवर्ति पदवी भई हाल॥५५॥
श्रीपाल मैना सुन्दरी। व्रत कर कुष्टव्याधि सब हरी॥
बहुतक नरनारी व्रत करो। तिन सब अजर अमर पद धरो॥५६॥
सुनो विधान राय हरिषैण। अति प्रमोद मुख जपे बैन॥
सब परिवार सहित व्रत लियो मुनिवर धर्म प्रीतिकर दियो॥५७॥
व्रत कर फिर उद्यापन करो। धर्म ध्यान कर शुभ पद धरो॥
अन्त समाधिमरण को पाय। भयो देव हरिषैण सु राय॥५८॥
पर्यायांतर जैहै मुक्ति। श्रेणिक सुनी सकल व्रत युक्ति॥
गौतम कहो सकल अधिकार। सुनो मगधपति चित्त उदार॥५९॥
जो नरनारी यह व्रत करें। निश्चय स्वर्ग मुक्तिपद धरें॥
संकट रोग शोक सब जाहिं। दुख दरिद्रता दूर पलाहिं॥६०॥
यह व्रत नंदीश्वर की कथा। हेम राज परकाशी यथा॥
शहर इटावा उत्तम थान। श्रावक करें धर्म शुभ ध्यान॥६१॥
सुने सदा ये जैनपुराण। गुणीजनों का राखें मान॥
तिहिठां सुना धर्म सम्बन्ध। कीनी कथा चौपाई बंध॥६२॥
पढें सुनें देव उपदेश। लहैं भाव से पुण्य अशेष॥
जाके नाम पाप मिट जांय। तो जिनवर के बंदों पांय॥६३॥

❀ त्रैलोक्य तिलक व्रत कथा

(पं० पन्नालालजी साहित्याचार्य कृत)

येन सद्ध्यान शस्त्रेन, छिन्नं कर्म कदम्बकं।
त्रैलोक्यभ्रमणातीतं, बंदे तं सिद्धं सन्मतिम्॥

असंख्यात द्वीप समुद्रों से भरे हुए मध्यलोक में सबसे पहिला जम्बू द्वीप नाम का महाद्वीप है। यह एक लाख योजन

❀ इस व्रत को "त्रिलोक तीजव्रत" और रोट तीजव्रत भी कहते हैं।

विस्तार वाला है और चारों ओर से लवण समुद्र द्वारा वेष्टित है। इसी जम्बूद्वीप के दक्षिण में एक भरत नाम का क्षेत्र है। उसके बीच में पूर्व से पश्चिम तक लम्बा विजयार्ध नाम का पर्वत पड़ा हुआ है तथा हिमवत् पर्वत से निकली हुई गंगा और सिन्धु महानदियाँ भी इसी क्षेत्र में बहती हैं। इस कारण से इस क्षेत्र के छह खण्ड हो जाते हैं। इन छह खण्डों में मध्य का आर्यखण्ड कहलाता है और शेष के पाँच खण्ड म्लेच्छ खण्ड कहलाते हैं। तीर्थंकर आदि महापुरुष आर्यखण्ड ही में उत्पन्न होते हैं। इस आर्यखण्ड में अङ्ग, बङ्ग, कलिङ्ग आदि अनेक अच्छे अच्छे देश हैं, उन्हीं देशों में एक कुरुजांगल नाम का देश भी है जो खूब ही हरा-भरा रहता है। उसी देश में एक हस्तिनागपुर नाम का नगर है, जो अनेक तीर्थंकरों के गर्भ जन्म और तप कल्याणक होने से अतिशय पवित्र है।

किसी समय वहाँ पर कामदुक राजा राज्य करते थे। राजा कामदुक बहुत नीतिवान और बलवान् थे। इनकी रानी का नाम कमललोचना था। कमललोचना यथार्थ में कमललोचना ही थी—उसके नेत्र कमलों के समान अतिशय सुन्दर थे। राजा और रानी धर्मसेवन करते हुए आनन्द से समय व्यतीत करते थे। समय पाकर उनके विशाखदत्त नाम का पुत्र हुआ। राजा कामदुक के एक वरदत्त नाम का मंत्री था। मंत्री की पत्नी का नाम विशालाक्षी था। उन दोनों से एक विजय सुन्दरी नाम की पुत्री हुई जो बहुत ही रूपवती थी। राजकुमार विशाखदत्त ने तरुण होने पर उसी विजयसुन्दरी के साथ विवाह किया था।

कितने ही दिन बाद राजा कामदुक की मृत्यु हो गई, जिससे समस्त राज परिवार और प्रजाजन बहुत ही दुखी हुए।

परन्तु मात्र शोक करने से ही तो गई हुई वस्तु की प्राप्ति नहीं हो सकती।

राजकुमार विशाखदत्त ने राज्य का भार ग्रहण किया और नीतिपूर्वक प्रजा का पालन करना शुरू कर दिया, परन्तु पिता के वियोग से वह हमेशा खेद खिन्न रहा करता था। एक दिन वह उदासचित्त बैठा हुआ था कि वहाँ विहार करते हुए ज्ञान-सागर नाम के मुनिराज आये। राजा ने उठकर उन्हें नमस्कार किया और उच्चासन पर बैठा कर उनकी बड़ी स्तुति की। मुनि-राज ने धर्मवृद्धि रूप आशीर्वाद देकर राजा विशाखदत्त को इस रीति से धर्मोपदेश दिया कि जिससे उसका समस्त शोक नष्ट हो गया। उपदेश देकर मुनिराज यथेष्ट स्थान पर विहार कर गये और राजा न्यायपूर्वक प्रजा का पालन करने लगा।

किसी समय उस नगरी में अनेक आर्यिकाओं के साथ विहार करती हुई संयमभूषण नाम की आर्यिका पधारी। वे समस्त आर्यिकाओं की गणिनी अर्थात् स्वामिनी थीं। नगरी के समस्त स्त्री-पुरुष उनके दर्शन करने के लिए गये। रानी विजयसुन्दरी भी साजबाज के साथ आर्यिका के दर्शन करते गई। आर्यिका ने सबको धर्मोपदेश दिया। उपदेश हो चुकने के बाद रानी ने विनय सहित पूछा कि हे स्वामिनी! मेरे योग्य कोई ऐसा व्रत बताइये जिसके करने से मेरा जन्म सफल हो और इस निन्दनीय स्त्री पर्याय से छुटकारा पाकर मोक्ष प्राप्त कर सकूँ। आर्यिका ने रानी को निकट भव्य जानकर उसे त्रैलोक्य तिलक (त्रिलोक तीज) व्रत करने का आदेश दिया। रानी के पूछने पर आर्यिका ने उसको नीचे लिखे अनु-सार विधि बतलाई—

यह व्रत भाद्र मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया के दिन किया जाता है। व्रत के दिन उपवास करना चाहिये और हर प्रकार के आरम्भ आदि का त्याग कर प्रमाद रहित हो धर्मध्यान करना चाहिए। मन्दिर जी में तीन लोक की रचना कर उसमें अकृत्रिम चैत्यालयों की स्थापना कर विधिपूर्वक पूजा करना चाहिये। और तीनों काल 'ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्ध्यत्रिम-जिनचैत्यालयेभ्यो नमः।' इस मन्त्र का जाप करना चाहिये।※

रात का समय भी धर्मध्यान में ही बिताना चाहिये। इस प्रकार यह व्रत तीन वर्ष तक करना चाहिये। उसके बाद उत्साह पूर्वक शक्ति के अनुसार व्रत का उद्यापन करना चाहिये। यदि उद्यापन करने की सामर्थ्य न हो तो व्रत को दूना करना चाहिये। उद्यापन के समय हर प्रकार के तीन-तीन उपकरण मन्दिरजी में भेंट करे, शास्त्रदान दे, चतुर्विध संघ को चार प्रकार का दान देवे और अपने भावों की विशुद्धि उत्तरोत्तर बढ़ाने का प्रयत्न करे। विधिपूर्वक व्रत का पालन करने से शीघ्र ही यथेष्ट फल की प्राप्ति होती है।

इस प्रकार विधि सुनकर रानी ने उक्त व्रत को आर्यिका तथा अन्य समस्त संघ की साक्षीपूर्वक ग्रहण किया और यत्न सहित उसका पालन किया। आयु के अन्त

※ कहीं कहीं पर ऐसा भी विधान है कि भूत भविष्यत् और वर्तमान काल सम्बन्धी तीन चौवीसी का मांडना बनाकर तीन चौवीसी की पूजा करना चाहिये। और 'ॐ ह्रीं त्रिकाल-सम्बन्धीत्रिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो: नमः' इस मन्त्र का जाप करना चाहिये। परन्तु तत्व-दृष्टि से विचार करने पर दोनों का प्रयोजन एक ही मालूम होता है। क्योंकि यह सब शुभोपयोग की वृद्धि तथा चित्त की चंचलता के रोकने के साधन मात्र हैं।

में समाधिमरण करके अच्युत नाम के १६ वें स्वर्ग में देव हुई। व्रत के प्रभाव से उसका स्त्रिलिङ्ग छिद गया। वहाँ उसने मनवांछित अनेक सुख भोगे और अकृत्रिम चैत्यालयों के साक्षात् दर्शन तथा धर्मध्यान करते हुये समय बिताया।

आयु पूर्ण होने पर वह मगधदेश के कंचनपुर नगर में राजा सुपिंगल और राणी कमलोचना के सुमंगल नाम का पुत्र हुआ। एक दिन वह अपने इष्ट मित्रों के साथ वन क्रीड़ा के लिये गया था कि तो वहाँ उसकी दृष्टि एक दिगम्बर मुनिराज पर पड़ी। मुनिराज के दर्शन करते ही राजपुत्र सुमङ्गल के हृदय में भारी ममता उत्पन्न होगई। वह मुनिराज को नमस्कार कर विनय सहित उनके पास ही बैठ गया और पूछने लगा कि हे ऋषिराज! आपके दर्शनकर मेरे हृदय में भारी ममता उत्पन्न हो रही है सो इसका क्या कारण है? राजपुत्र के वचन सुनकर मुनिराज कहने लगे कि हे वत्स! तू इस भव से तीसरे भव में हस्तिनापुर के राजा विशाखदत्त की विजयसुन्दरी नामकी रानी थी, उस समय मै संयम-भूषण नाम की आर्यिका थी, मेरे उपदेश से तूने त्रैलोक्य तिलक व्रत (त्रिलोक तीजव्रत) ग्रहण किया था और उसके प्रभाव से तू सोलहवें स्वर्ग में देव हुई। वहाँ से चलकर यहाँ राजा सुपिंगल की कमललोचना रानी से सुमंगल नामका राजपुत्र हुआ है और मेरा जीव भी संयम-भूषण आर्यिका के बाद स्वर्ग में देव हुआ। तथा वहाँ से चलकर यहाँ मनुष्य पर्याय में उत्पन्न हुआ। संसार को अनित्य समझकर मैंने जिन दीक्षा धारण करली है। पूर्व भव के स्नेह के कारण ही मुझे देखकर तेरे हृदय में ममता उत्पन्न हुई है। यह जीव संसार में इसी प्रकार घूमता फिरता है इसलिये किसी से हर्ष विषाद नहीं करना चाहिये।

मुनिराज के वचन सुनकर सुमङ्गल के हृदय में वैराग्य उत्पन्न हो आया जिससे उसने उसी समय जिनदीक्षा धारण करली और

कठिन तपस्या कर केवल ज्ञान प्राप्त किया। सुमंगल केवली ने आर्य देशों में विहार कर धर्म का उपदेश दिया और अष्टकर्मों को नष्ट कर मोक्षपद प्राप्त किया।

इस प्रकार रानी विजयसुन्दरी ने त्रैलोक्य तिलक व्रत का पालन कर स्वर्ग मोक्ष के सुख प्राप्त किये। यदि श्रद्धा सहित अन्य भव्य भी इसे धारण करें, तो इच्छानुसार फल प्राप्त कर सकते हैं।

❀ इति ❀

७२ दुधारस (द्वादशी) कथा

चौपाई छन्द

प्रथम नमों श्री वीर जिनन्द, बन्दों सद्गुरु पद अरविन्द।
जास प्रसाद कहूँ शुभ कथा, गौतम गणधर भाषी यथा ॥ १ ॥
समोशरण में श्री महावीर, धर्म कथा भाषी गम्भीर।
तदनन्तर श्रेणिक बीनवे, मुझ मन आनन्दो छै अवै ॥ २ ॥
स्वामी नरक उधारी कथा, व्रत विधान सुनि वाने यथा।
गौतम गणधर भाषी तदा, सोहि नर नारि सुनो चित मुदा ॥ ३ ॥
जम्बू दीप भरतवर जान, सोरठ देश महा सु बखान।
उजवन्ति नगरी अभिराम, पद्मप्रभ जहाँ राजा नाम ॥ ४ ॥
पद्मावती रानी तसु गेह, सती शिरोमणि कहिये तेह।
सेठ बसे धनदत्त है नाम, स्वयं प्रभा सेठानी धाम ॥ ५ ॥
एक दिवस तहाँ मुनि संचरा, मिहिताश्रव नामै गुण भरा।
नव सूखा ते सफला भया, माली फल ले नृप पै गया ॥ ६ ॥
सुन वृत्तान्त बहुतसा दीय, मुनि पद वन्दन मनसा कीय।
आनन्द भेरी बजवाई राय, हरषवन्त तहाँ पहुँचो जाय ॥ ७ ॥

धनदत्त सेठ आयो नृप सङ्ग, मुनि बंदिवे गमन करन्त।
भव्य जीव प्रति बोधन काज, धर्म कथा भाखो मुनिराज॥ ८॥
मद मात्सर्य नृप नहीं धरी, कर जोडे तहाँ विनती करी।
स्वामी सब जीवन हितकार, भाषो श्रावक धर्म विचार॥ ९॥
तब मुनी भाषै धर्म स्वरूप, धर्म रतन जग मांहि अनूप।
धर्म तनो समकित है मूल, सहित गुणाष्टक धरि अनुकूल॥१०॥
आठ मूल गुण चित में धरो, सकल अभक्ष सदा परिहरौ।
पांच अणुव्रत साते शील, बारह व्रत हैं ये सब मील॥११॥
श्रीजिन भाषित यह जो मर्म, आदर छै श्रावक नो धर्म।
दान सुपात्रे विधसूं करै, अन्त सल्लेखना व्रत अनुसरै॥१२॥
मुनि बचनै प्रीति कू हो राय, कर जोडे बन्दै मुनि राय।
नगर प्रवेश कियो नृप नरै, सब जन मुनि को जस उच्चरै॥१३॥
धनदत्त जो घर आयो तान, निज नारी सु भाखै आन।
मुझ मन हर्ष आवै अतिगनौ, पूजादान करै व तनौ॥१४॥
दान से सम्पत्ति बाढै घनी, दान से सेव करै सुर धनी।
दान से सब मन बांछित फलै, दान से संकट दूर ही टलै॥१५॥
दान से लहिये भोग विलास, दान से होवैं पाप विनास।
दान से पावै सुजस अपार, दान से कोई न लीये कार॥१६॥
दान से पुण्य प्रताप अपार, दान से हौवे जय जयकार।
दान से स्वर्ग मुक्ति सुख जान, दान को फल भाखौ भगवान॥१७॥
इस ही हेत है दान प्रधान, अन्न दान उत्तम सुख खान।
भोजन शीघ्र सम्भारो तुम्हें, दान सुपात्र ही दैस्यूं हमें॥१८॥
जिस घर मुनिवर भोजन करै, भव सागर से सुख सौ तरै।
सेठ वचन सुन सेठानी जवै, प्रीतम सुन मुझ विनती हवै॥१९॥
हूं ऋतुवन्ती अति अपवित्र, किम करिये मुनि भक्ति विचित्र।
जे निरदूषण लेय आहार, अन्तराय टाले सु विचार॥२०॥
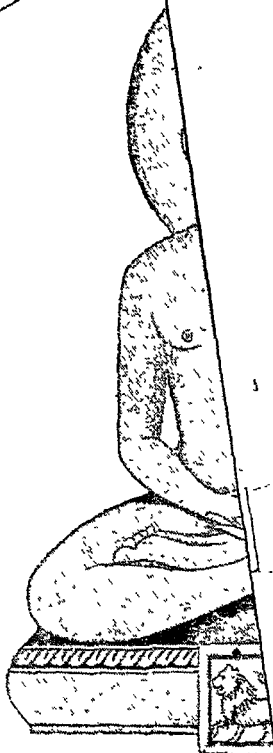
प्रकाशक

" सेठी व

श्री वीर पुस्तक

श्री महावीरजी (ज

तब मुनि बोले मुनि गुणवन्त, भादों सुदी द्वादशि दिन संत।
निरमल व्रत कीजै शुभ ध्यान, कीजै निशि जागृण परधान ॥ ३४ ॥
जिन प्रतिमा आमल मम कुंभ, ढाल विलोको धार अभङ्ग।
पूजा विधि शुभ अष्ट प्रकार, कीजै उच्छव बहु विस्तार ॥ ३५ ॥
द्वादश वर्ष तनौ अवसान, कर उद्यापन यह विधि आन।
यथा शक्ति मुनि दीजै दान, संघ तनौ कीजै सम्मान ॥ ३६ ॥
विविध महोच्छव कीजै चङ्ग, इस विधि व्रत पालो मन रङ्ग।
जो उद्यापन शक्ति न होय, तो दूनो व्रत करियो सोय ॥ ३७ ॥
मुनि बन्द लीनौ व्रत सन्त, आवो निज घर सेठ तुरन्त।
व्रत फल ही से भयो निरोग, प्रगटौ पुण्य तनौ संयोग ॥ ३८ ॥
अन्य दिवस धनदत्त सुजान, भव तन भोग विरक्त बखान।
मनमें चिन्ते बारह भावना, जिन दीक्षा लीनी इक मना ॥ ३९ ॥
बारह भेद तपै तप घना, बन्धन तोडे कर्मन हना।
केवल लहिके मुक्ति गयो, आतम निधि को ध्यातो भयो ॥ ४० ॥
जो नर नारी तै व्रत करैं, ते भव भव के दुःख परिहरैं।
इस भव पावैं भोग विलास, पर भव पावै स्वर्गन वास ॥ ४१ ॥
श्रेणिक आगे गौतम स्वामी, यह कथा भाषी अभिरामी।
यह दुधारस व्रत की कथा, चन्द भनै मैं भाषा तथा ॥ ४२ ॥

॥ इति दुधारस कथा समाप्तम् ॥

सुगन्ध दशमी व्रत कथा

चौपाई।

वर्द्धमान बन्दौं जिनराय, गुरु गौतम बन्दौं सुखदाय।
सुगन्ध दशमी व्रत की कथा, वर्द्धमान सुप्रकाशी यथा ॥ १ ॥

मगध देश राजगृह नाम, श्रेणिक राज करै अभिराम ।
नाम चेलना गृह पटरानि, चन्द्र रोहिणी रूप समानि ॥ २ ॥
नृप बैठो सिंहासन परे, बनमाली फल लायो हरे ।
कर प्रणाम वच नृप से कहो, चित्त प्रमोद से ठाड़ो रहो ॥ ३ ॥
वर्द्धमान आये जिन स्वामि, जिन जीतो उपसर्ग करि काम ।
इतनी सुनत नृपति उठ चला, पुरिजन युत दलबल सौं भला ॥ ४ ॥
समोशरण बन्दे भगवान, पूजा भक्ति धारि बहुमान ।
नर कोठे बैठो नृप जाय, हाथ जोड़ि पूछो शिर नाय ॥ ५ ॥
सुगन्ध दशमी व्रत फल भाषि, या नर की कहिये प्रभु साखि ।
गणधर कहें सुनो मगधेश, जम्बूद्वीप विजयार्द्ध प्रदेश ॥ ६ ॥
शिव मन्दिरपुर उत्तर श्रेणी, विद्याधर प्रीतंकर जैनी ।
कमलावती नारि अति रूप, सुरकन्या से अधिक अनूप ॥ ७ ॥
सागरदत्त बसे तहां साह, जाके चित्त वृष में उत्साह ।
धनदत्ता वनिता गृह कही, मनोरमा ता पुत्री सही ॥ ८ ॥
सुगुप्ताचार्य गृह आइयो, देख मुनीन्द्र दुःख पाइयो ।
कन्या मुनि की निन्दा करी, कुछ मन में नहिं शंका धरी ॥ ९ ॥
नग्न गात दुर्गंध शरीर, मल कर पूर्ण देही नहिं चीर ।
मुख ताम्बूल हतो मुनि अंग, लाख्यो सुख को कीनो भंग ॥ १० ॥
भोजन अन्तराय जब भयो, मुनि उठ जाय ध्यान बन दियो ।
समताभाव धरै उर मांहिं, किंचित खेद चित्त में नाहिं ॥ ११ ॥
बीती अवधि समय कछु गयो, मनोरमा को काल जु भयो ।
भई गधी पुनि कूकरि भास, अपर भास भई सूकरि नाम ॥ १२ ॥
मगध सुदेश तिलकपुर जान, विजयसेन तहं का नृप मान ।
चित्ररेखा ता रानी कही, तो पुत्री दुर्गन्धा भई ॥ १३ ॥
एक समय गुरु वन्दन गया, पूजा कर विनती को ठयो ।
सो पुत्री दुर्गंध शरीर, कहा भवांतर गुरु गंभीर ॥ १४ ॥

राजा वचन मुनीश्वर सब, सुनि वृत्तांत राय से भने।
सब वृतांत हालि जो जान, सुनि राजा से कहो बखान ॥१५॥
सुन दुर्गंधा जोडे हाथ, मोपर कृपा करो मुनिनाथ।
ऐसा व्रत उपदेशो मोहि, यासो तनु निरोग अब होहि ॥१६॥
दयावंत बोले मुनि राय, सुन पुत्री व्रत चित्त लगाय।
समता भाव चित्त में धरो, तुम सुगन्ध दशमी व्रत करो ॥१७॥
यह व्रत कीजे मनवच काय, यासैं रोग शोक सब जाय।
दुर्गंधा विनवे मुनि पाय, कहिये सविध महा मुनिराय ॥१८॥
ऐसे बचन सुनै मुनि जबैं, तब बोले पुत्री सुन अबैं।
भादों शुक्ल पक्ष जब होय, दशमी दिन आराधो सोय ॥१६॥
चारों रस की धारा देव, मन में राखो श्रीजिन देव।
शीतलनाथ की पूजा करो, मिथ्या मोह दूर परिहरो ॥२०॥
व्रत के दिन छोडो आरम्भ, यासैं मिटे कर्म का दंभ।
याके करत पाप क्षय जाय, सो दस वर्ष करो मन लाय ॥२१॥
जब यह व्रत सम्पूर्ण होय, उद्यापन कीजे चित जोय।
दश श्रीफल अमृतफल जान, नीबू सरस सदा फल आन ॥२२॥
दश दीजे पुस्तक लिखवाय, यह विधि सब मुनि दई बताय।
विधि सुन दुर्गंधा व्रत लयो, सब दुर्गंध ततक्षण गयो ॥२३॥
व्रत कर आयु जो पूरण करी, दशवें स्वर्ग भई अप्सरी।
जिन चैत्यालय बंदन करे, सम्यक् भाव सदा उर धरे ॥२४॥
भरत क्षेत्र महं मगध सुदेश, भूति तिलकपुर बसे अशेष।
राजा महीपाल तहां जान, मदन सुन्दरी त्रिया बखान ॥२४॥
दशवें दिवसे देवी आन, ताके पुत्री भई निदान।
मदनावली नाम धर तास, अति सुरूप तनु सकल सुवास ॥२६॥
बहुत बात को कहें बखान, सुर कन्या मानों उनमान।
कौसांबीपुर मदन नरेन्द्र, रानी सती करे आनन्द ॥२७॥

पुरुषोत्तम सुत सुन्दर जान, विद्यावन्त सुगुण की खान।
जो सुगन्ध मदनावलि जाय, सो पुरुषोत्तम को परनाय ॥२८॥
राजा मदन सुन्दरी बाल, सुख से जात न जानो काल।
एक दिवस मुनिवर वंदियो, धर्म श्रवण मुनिवर पर कियो ॥२६॥
हाथ जोड पूछे तब राय, महामुनींद्र कहो समझाय।
मो गृह रानी मदनावली, ता शरीर सौरभता भली ॥३१॥
कौन पुन्य से सुभग सुरूप, सुरवनिता से अधिक अनूप।
राजा वचन मुनीश्वर सुने, सब वृत्तान्त राय से भने ॥३२॥
जैसे दुगंधा व्रत लहो, तैसी विधि नरपति से कहो।
सुने भवांतर जोडे हाथ, दिक्षाव्रत दीजे मुनिनाथ ॥३२॥
राजाने जब दीक्षा लई, रानी तबे अर्जिका भई।
तपकर अन्त स्वर्ग को गई, सोलम स्वर्ग प्रतेन्द्र सो भई ॥ ३३ ॥
बाइस सागर काल जो गयो, अन्तकाल ता दिवसे चयो।
भरत सुक्षेत्र मगध वह देश, वसुधा अमर केतुपुर वेश ॥ ३४ ॥
ता नृपगेह जन्म उन लही, जो प्रतेन्द्र अच्युत दिव कही।
कनककेतु कंचन द्यु ति देह, वनिता भोग करे शुभगेह ॥ ३५ ॥
अमर केतु मुनि आगम भयो, कनककेतु तहं वंदन गयो।
सुनो सुधर्म श्रवण संयोग, तजे परिग्रह अरु भव भोग ॥ ३६ ॥
घात घातिया केवल लयो, पुनि अघात हनि शिवपुर गयो।
व्रतसुगन्ध दशमी विख्यात, ता फल भई सुरभि युत गात ॥ ३७ ॥
यह व्रत पुरुष नारि जो करे, सो दुख संकट भूल न परे।
शहर गहेलों उत्तमावास, जैन धर्म को जहां प्रकाश ॥ ३८ ॥
सब श्रावक व्रत संयम धरे, पूजा दान से पातक हरे।
उपदेशी विश्व भूषण सही, हेमराज पंडित ने कही ॥ ३९ ॥
मन वच पढ़े सुने जो कोय, ताको अजर अमर पद होय।
यातै भविजन पढ़ो त्रिकाल, जो छूटे विधि के भ्रम जाल ॥ ४० ॥

॥ श्री सुगन्ध दशमी व्रत कथा भाषा सम्पूर्णम् ॥

अनन्त चौदश व्रत कथा

दोहा—अनन्तनाथ वन्दों सदा, मन में कर बहु भाव।
सुर असुर सेवत जिन्हें, होय मुक्ति पर चाव॥

जम्बूद्वीप द्वीपन में सार, लख योजन ताका विस्तार।
मध्य सुदर्शन मेरु बखान, भरत क्षेत्र ता दक्षिण जान॥२॥

मगध देश देशों शिर मणी, राजगृह नगरी अति बनी।
श्रेणिक महाराज गुणवंत, रानी चेलना गृह शोभन्त॥३॥

धर्मवंत गुण तेज अपार, राजा राय महागुण सार।
एक दिवस विपुलाचल वीर, आये जिनवर गुण गम्भीर॥४॥

चार ज्ञान के धारक कहे, गौतम गण धर सोसंग रहे।
छः ऋतु के फल देखे नयन, वनमाली ले चलो ऐन॥५॥

हर्ष सहित वनमाली भयो, पुष्प सहित राजा पै गयो।
नमस्कार कर जोड़े हाथ, मो पर कृपा करो नरनाथ॥६॥

विपुलाचल उद्यान कहंत, महामुनीश्वर तहां वसंत।
सुन राजा अति हर्षित भयो, बहुत दान माली को दियो॥७॥

सप्त ध्वनि बाजे बाजंत, प्रजा सहित राजा चालंत।
दे प्रदक्षिणा बैठो राव, जिवनर देख करो चित्त चाव॥८॥

द्वै विधि धर्म कहो समुझाय, जासों पाप सर्व जरजाय।
खग तहां आयो एक तुरंत, सुन्दर रूप महा गुणवंत॥६॥

नमस्कार जिनवर को करो, जय जयकार शब्द उच्चरो।
ताहि देख अचरज अति भयो, राजा श्रेणिक पूछत भयो॥१०॥

सेना सहित महागुण खानि, को यह आया सुन्दर जानि।
याकी बात कहो समझाय, ज्ञानवंत मुनिवर तुम आय॥११॥

गौतम बोले बुद्धि अपार, विजय नगर कहो अतिसार।
मनो कुम्भ राजा राजंत, श्रीमती रानी का कंत॥१२॥

ताका पुत्र अरिंजय नाम, पुण्यवंत सुन्दर गुणधाम।
पूर्व तप कीनो इन जोय, ताको फल भुगते शुभ सोय ॥ १३ ॥
ताकी कथा कहूं विस्तार, जम्बूद्वीप द्वीपों में सार।
भरतक्षेत्र तामें सुखकार, कौशल देश विराजे सार ॥१४॥
परम सुखद नगरी तहं जान, विप्र सोम शर्मा गुण खान।
सोमिल्या भामिन ता कही, दुख दरिद्र की पूरित मही ॥१५॥
पूरव पाप किये जे घने, ताको दुख भुगते ही बने।
सुन राजा याको वृत्तान्त, नगर २ सो भ्रमैं दुखांत ॥१६॥
देश विदेश फिरे सुखआश, तोहु न पावे सुक्ख निवास।
भ्रमत २ सो आयो तहां, समोशरण जिनवर को जहाँ ॥१७॥
दोहा—अनंतनाथ जिनराज का, समोशरण तिहिवार।
सुर नर अति हर्षित भये, देख महा द्युति सार ॥१८॥
विप्र देख हर्षित भयो, समोशरण बंदन को गयो।
बंदि जिनेश्वर पूछे सोई, कहा पाप में कीनो होई ॥१९॥
दरिद्र पीड़ा रहै शरीर, सो तो व्याधि हरो गम्भीर।
गणधर कहें सुनो द्विजराय, अनंत व्रत कीजे सुखदाय ॥२०॥
तब विप्र बोला कर भाय, किस विधि होई सो देहुँ बताय।
किस प्रकार या व्रत को करो, कहो विधान चित्त में धरो ॥२१॥
भादों मास सुक्ख की खान, चौदह शुक्ल कही सुखदान।
कर स्नान शुद्ध हो जाय, तब पूजे जिनवर सुखदाय ॥२२॥
गुरु बंदना करे चितलाय, या विध से व्रत लेय बनाय।
त्रिकाल पूजे श्रीजिनदेव, रात्रि जागरण कर सुख लेव ॥२३॥
गीतरुनृत्य महोत्सव जान, धारा जिनवर करो बखान।
व्रत चतुर्दशी विधि से धरे, तो पीछे उद्यापन करे ॥२४॥
करे प्रतिष्ठा चौदह सार, या से पाप होई जर छार।
झारी धारी अधिक अनूप, चरण कलश देवे शुभ रूप ॥२५॥

दीवट झालर सङ्कल माल, और चंदोवे उत्तम जाल।
छत्र सिंहासन विधि से करे, तातें सर्व पाप परिहरे ॥२६॥
चार प्रकार दान दीजिये, याते अतुल सुक्ख लीजिये।
अंत अवस्थालें संन्यास, ताते मिले स्वर्ग को वास ॥२७॥
उद्यापन की शक्ति न होय, कीजे व्रत दूनों भवि लोई।
विप्र कियो व्रत विधि सों आय, सब दुख तसु गयो विलाय ॥२८॥
अंतकाल धरके संन्यास, ताते पायो स्वर्ग निवास।
चौथे स्वर्गदेव सो जान, महा ऋद्धि ताके सो बखान ॥२६॥
विजयार्द्ध गिरी उत्तम ठौर, कांचीपुर पत्तन शिरमौर।
राजा तहं अपराजित वीर, विजया तासु प्रिया गम्भीर ॥३०॥
ताको पुत्र अरिजय नाम, तिन यह आय कियो परणाम।
कंचनमय सिंहासन आन, ता पर भूप बैठो सुख खान ॥३१॥
व्योम पटल विनशत लख सन्त, उपजो चित्त वैराग महंत।
राज पुत्र को दियो बुलाय, आप लई दीक्षा शुभ भाय ॥३२॥
सही परीषह दृढ़ चितधार, तातें कर्म भये अति चार।
घात घातिया केवल भयो, सिद्धि बुद्धि सो पद निर्भयौ ॥३३॥
रानी ने व्रत कीनो सही, देव देह दिव अच्युत लही।
तहा सुख भुगते अधिकाय, तहां से आय भयो नर राय ॥३४॥
यह ऋद्धि पाई शुभ सार, फिर तप कर विधि कीने छार।
तहां सों मुक्तिपुर को गयो, ऐसो तिन व्रत को फल लयो ॥३५॥
ऐसा व्रत पाले जो कोई, स्वर्ग मुक्ति पद पावे सोई।
विनय सागर गुरु आज्ञा करी, हरि किल पाठ चित्त में धरी ॥३६॥
तब यह कथा करी मन ल्याय, यथा शास्त्र में वरणी आय।
विधि पूर्वक पाले जो कोय, ताको अजर अमर पद होय ॥३७॥

अनन्त चौदश व्रत कथा सम्पूर्णम्।

रत्नत्रय व्रत कथा

दोहा—अरहनाथ को बन्दि के, बन्दौं सरस्वति पांव।
रत्नत्रय व्रत की कथा, कहूँ सुनो मन लाय ॥१॥

चौपाई।

जम्बूद्वीप भरत शुभ क्षेत्र, मगध देश सुख सम्पति हेत।
राजगृह तहाँ नगर बसाय, राजा श्रेणिक राज कराय ॥ २ ॥
विपुलाचल जिन वीर कुंवार, केवल ज्ञान विराजत सार।
माली आय जनायो दयो, तत्क्षण राजा बन्दन गयो ॥ ३ ॥
पूजा बन्दन कर शुभ सार, लाग्यो पूछन प्रश्न विचार।
हे स्वामी रत्नत्रय सार, व्रत कहिये जैसा व्यवहार ॥ ४ ॥
दिव्य ध्वनि भगवान बताय, भादों सुदि द्वादस शुभ आय।
कर स्नान स्वच्छ पट श्वेत, पहिनो जिन पूजन के हेत ॥ ५ ॥
आठों द्रव्य लेय शुभ जाय, पूजोजिनवर मन बच काय।
जीरण नूतन जिनके गेह, बिंब धराओ तिनमें तेह ॥ ६ ॥
हेम रूप्य पीतल के यन्त्र, तांबा यथा भोज के पत्र।
यन्त्र करो बहु मन थिर देव, रत्नत्रय के गुण लिख लेव ॥ ७ ॥
निशंकादि दर्शन गुण सार, संशय रहित सो ज्ञान अपार।
अहिंसादि महाव्रत सार, चारित्र के ये गुण हैं धार ॥ ८ ॥
ये तीनों के गुण हैं आदि, इन्हें आदि जेते गुण वाद।
शिव मारग के साधन हेत, ये गुण धारे व्रती सुचेत ॥ ९ ॥
भादों माघ चैत में जान, तीनों काल करो भवि आन।
या विधि तेरह वर्ष प्रमान, भावना भावे गुणहि निधान ॥ १० ॥
लवङ्गादि अष्टोत्तर आन, जपो मंत्र मन कर श्रद्धान।
पुनि उद्यापन विधि जो एह, कलशा चमर छत्र शुभ देह ॥ ११ ॥
संघ चतुर्विधि को अहार, वस्त्राभरण देउ शुभसार।
बिंब प्रतिष्ठा आदि अपार, पूजों श्री जिन हो भवपार ॥ १२ ॥

दोहा—इस विध श्रीमुख धर्म सुन, भनो चित्ताधर भाय।
कौन फल पायो प्रभु, सो भाषो समझाय ॥ १३ ॥

चौपाई।

जम्बूद्वीप अलंकृत हेर, रह्यो ताहिं लवणोदधि घेर।
मेरु सु दक्षिण दिश है सार, है सो विदेह धर्म अवतार ॥ १४ ॥

कच्छवती सुदेश तहां बसे, वीतशोकपुर तामें लसे।
वैश्रव नाम तहां का राय, करै राज सुरपति सम भाय ॥ १५ ॥

माली ने आय जनावो दियो, विपुल बुद्धि प्रभु वन में ठयो।
इतनी सुन नृप बन्दन गयो, दान बहुत माली को दियो ॥ १६ ॥

हे स्वामी रत्नत्रय धर्म, मोसों कहो मिटै सब भर्म।
तब स्वामी ने सब विधि कही, जो पहिले सो प्रकाशी सही ॥१७॥

पंचामृत अभिषेक सु ठयो, पूजा प्रभु की कर सुख लयो।
जागिरनादि ठयो बहु भाव, इस विधि व्रत कर वैश्रव राय ॥१८॥

भाव सहित राजा व्रत करो, धर्म प्रतीत चित्त अनुसरो।
षोडश भावना भावत भयो, अन्त समाधिमरण तिन कियो ॥१६॥

गोत्र तीर्थङ्कर बांध्यो सार, जो त्रिभुवन में पूज्य अपार।
सर्वार्थ सिद्धि पहुँचो जाय, भयो तहां अहमेंद्र सुभाय ॥ २० ॥

हस्त मात्र तन ऊंचो भयो, तेतिस सागर आयु सो लयो।
दिव्य रूप सुख को भण्डार, सत्य निरूपण अवधि विचार ॥ २१ ॥

सौधर्मेंद्र विचारी घरी, यक्षेश्वर को आज्ञा करी।
वेग देश निर्माप्यो जाय, थापो मुथरा पुर अधिकाय ॥ २२ ॥

कुम्भराय राजा तहँ वसै, देवी प्रजावती तिस लसे।
श्री आदिक तहां देवी आय, गर्भ से सोधना कीनी जाय ॥ २३ ॥

रत्न वृष्टि नृप आंगन भई, पन्द्रह मास लो बरसात गई।
सर्वार्थ-सिद्धि से सुर आय, प्रजावती कुक्ष उपजाय ॥ २४ ॥

मल्लिनाथ नाम जो पाय, दोज चन्द्रसम बदत सुभाय।

जब विवाह मंगल विधि भई, तब प्रभु चित विरागता लई ॥२५॥

दीक्षा धर वन में प्रभु गये, घाति कर्म हनि निर्मल ठये ।
केवल ले निर्वाण सो जाय, पूजा करी सुरन सब आय ॥२६॥

यह विधान श्रेणिक ने सुनो, व्रत लीने चित्त अपने गुणो ।
भक्ति विनय कर उत्तम भाय, पहुँचे अपने गृह को आय ॥२७॥

या विधि जो नर नारी करे, सो भव सागर निश्चय तिरे ।
नलिन कीर्त्ति मुनि संस्कृत कही, ब्रह्मज्ञान भाषा निरमई ॥२८॥

॥ श्री रत्नत्रय कथा सम्पूर्णम् ॥

श्री रविव्रत कथा

॥ चौपाई ॥

श्री सुखदायक पार्श्वजिनेश, सुमति सुगति दाता परमेश ।
सुमिरों शारद पद अरविंद, तिन कर व्रत प्रगटो सानन्द ॥ १ ॥

वाणारस नगरी सुविशाल, प्रजापाल प्रगटो भूपाल ।
मतिसागर तहां सेठ सुजान, ताका भूप करे सन्मान ॥ २ ॥

तासु त्रिया गुण सुन्दरि नाम, सात पुत्र ताके अभिराम ।
षट् सुत भोग करें परणीत, बाल रूप गुण धर सुविनीत ॥ ३ ॥

सहस्रकूट शोभित जिन धाम, आये यति पति खंडित काम ।
सुनि मुनि आगम हर्षित भये, सर्व लोग बन्दन को गये ॥ ४ ॥

गुरु वाणी सुनि के गुणवती, सेठिन तबै करी वीनती ।
प्रभु सुगम व्रत देहु बताय, जासैं रोग शोक भय जाय ॥ ५ ॥

करुणानिधि भाषैं मुनिराय, सुनो भव्य तुम चित्त लगाय ।
जब अषाढ सुदि पक्ष विचार, तब कीजे अन्तिम रविवार ॥ ६ ॥

अनशन अथवा लघु अहार, लवणादिक जो करे परिहार ।
नवफल युत पंचामृत धार, बहु प्रकार पूजो भवहार ॥ ७ ॥

उत्तम फल इक्यासी जान, नव श्रावक घर दीजे आन ।
या विधि करो नव वर्ष प्रमाण, यातें होय सर्व कल्याण ॥ ८ ॥

अथवा एक वर्ष एकसार, कीजै रविव्रत मनहि विचार।
सुन साहुन निज घर को गई, व्रत निन्दा कर निंदित भई ॥ ६ ॥
व्रत निन्दा से निर्धन भये, सात पुत्र अयोध्यापुर गये।
तहां जिनदत्त सेठ गृह रहे, पूर्व दुःकृत का फल लहे ॥१०॥
मात पिता गृह दुःखित सदा, अवधि सहित मुनि पूछे तदा।
दयावन्तमुनि ऐसे कहो, व्रत निन्दा से तुम दुःख लहो ॥११॥
सुन गुरु वचन बहुरि व्रत लयो, पुण्य थयो घर में धन भयो।
भवि जन सुनो कथा सम्बन्ध, जहां रहते थे वे सब नन्द ॥१२॥
एक दिवस गुणधर सुकुमार, घास ले आये गृह द्वार।
क्षुधावन्त भावज पे गयो, दन्त बिना नहि भोजन दयो ॥१३॥
बहुरि गये जहां भूलों दन्त, देखो तासे अहि लिपटन्त।
फणिपति की तहां विनती करी, पद्मावति प्रकटी तिहिं घरी ॥१४॥
सुन्दर मणिमय पारसनाथ, प्रतिमा पंचरत्न शुभ हाथ।
देकर कहो कुंवर कर भोग, करो चणक पूजा संयोग ॥१५॥
आन बिम्ब जिन घरमें धरो, तिहकर तिनको दारिद्र हरो।
सुख विलास सेवें सब नन्द, नित प्रति पूजों पार्स जिनेन्द्र ॥१६॥
साकेता नगरी अभिराम, जिन प्रसाद राचा शुभ धाम।
करी प्रतिष्ठा पुण्य संयोग, आये भविजन संग सो लोग ॥१७॥
संघ चतुर्विधि को सम्मान, कियो दियो मन वांछित दान।
देख सेठ तिनकी सम्पदा, जाय कही भूपति से तदा ॥१८॥
भूपति गृह पूछी वृत्तांत, सत्य कहो गुणधर गुणवन्त।
देख सुलक्षणता को रूप, अत्यानन्द भयो सो भूप ॥१६॥
भूपति तब तनुजा सुन्दरी, गुणधर को दीनी गुण भरी।
कर विवाह मंगल सानन्द, हय गय पुरजन परामानन्द ॥२०॥
मन वांछित पाये सुख भोग, विस्मित भये सकल पुर लोग।
सुख से रहत बहुत दिन भये, तब सब बन्धु बनारस गये ॥२१॥

मातपिता के परशे पांय, अत्यानन्द हृदय न समाय।
विघटो विषम विषम वियोग, भयों सकल पुरजन संयोग ॥२२॥
आठ सात सोलह के अंक रवि व्रत कथा रची अकलंक।
थोड़े अर्थ ग्रन्थ विस्तार, कहें कवीश्वर जो गुणसार ॥२३॥
यह व्रत जो नर नारी करें, सो कबहूँ दुर्गति नहिं परें।
भाव सहित सो शिव सुख लहैं, भानुकीर्त्ति मुनिवर इमि कहैं ॥२४॥

इति श्री रविव्रत कथा सम्पूर्ण ॥

दशलक्षण व्रत कथा

दोहा—प्रथम बन्दि जिनराज के, शारद गणधर पांय।
दशलक्षण व्रत की कथा, कहूं अगम सुखदाय ॥ १ ॥

चौपाई

विपुलाचल श्रीवीर कुवार, आये भवभंजन भरतार।
सुन भूपति तहां बन्दन गयो, सकल लोक मिलि आनंद भयो ॥ २ ॥
श्रीजिन पूजे गनधर चाव, स्तुति करी जोड़ कर भाव।
धर्म कथा तहां सुनी विचार, दान शील तप भेद अपार ॥ ३ ॥
भव दुख त्रायक दायक शर्म, भाख्यो प्रभू दशलक्षण धर्म।
ताको सुनि श्रेणिक रुचि धरी, गुरु गौतम से विनती करी ॥ ४ ॥
दशलक्षण व्रत कथा विशाल, मुझ को भाषो दीनदयाल।
बोले गुरु सुन श्रेणिक चन्द्र, दिव्य ध्वनि कही वीर जिनेन्द्र ॥ ५ ॥
खण्ड धातु की पूरब भाग, मेरुथकी दक्षिण अनुराग।
सीतोदाउपकंठी सही, नगरी विशालाक्ष शुभ कही ॥ ६ ॥
नाम प्रीत कर भूपति बसे, प्रियकरी रानी तिसु लसै।
सुता मृगांकरेखा तसु जान, मति शेखर तसु मंत्रि प्रधान ॥ ७ ॥
शशि प्रभा ताकी वर नार, सुता कामसेना निरधार।
राज सेठ गुण सागर जान, शील सुभद्रा नारि बखान ॥ ८ ॥

अथवा एक वर्ष एकसार, कीजै रविव्रत मनहि विचार ।
सुन साहुन निज घर को गई, व्रत निन्दा कर निंदित भई ॥ ६ ॥

व्रत निन्दा से निर्धन भये, सात पुत्र अयोध्यापुर गये ।
तहां जिनदत्त सेठ गृह रहे, पूर्व दुःकृत का फल लहे ॥१०॥

मात पिता गृह दुःखित सदा, अवधि सहित मुनि पूछे तदा ।
दयावन्तमुनि ऐसे कहो, व्रत निन्दा से तुम दुःख लहो ॥११॥

सुन गुरु वचन बहुरि व्रत लयो, पुण्य थयो घर में धन भयो ।
भवि जन सुनो कथा सम्बन्ध, जहां रहते थे वे सब नन्द ॥१२॥

एक दिवस गुणधर सुकुमार, घास ले आये गृह द्वार ।
क्षुधावन्त भावज पे गयो, दन्त विना नहि भोजन दयो ॥१३॥

बहुरि गये जहां भूलों दन्त, देखो तासे अहि लिपटन्त ।
फणिपति की तहां विनती करी, पद्मावति प्रकटी तिहिं घरी ॥१४॥

सुन्दर मणिमय पारसनाथ, प्रतिमा पंचरत्न शुभ हाथ ।
देकर कहो कुंवर कर भोग, करो क्षणक पूजा संयोग ॥१५॥

आन बिम्ब जिन घरमें धरो, तिहकर तिनको दारिद्र हरो ।
सुख विलास सेवें सब नन्द, नित प्रति पूजों पार्स जिनेन्द्र ॥१६॥

साकेता नगरी अभिराम, जिन प्रसाद रचा शुभ धाम ।
करी प्रतिष्ठा पुण्य संयोग, आये भविजन संग सो लोग ॥१७॥

संघ चतुर्विधि को सम्मान, कियो दियो मन वांछित दान ।
देख सेठ तिनकी सम्पदा, जाय कही भूपति से तदा ॥१८॥

भूपति गृह पूछी वृत्तांत, सत्य कहो गुणधर गुणवन्त ।
देख सुलक्षणता को रूप, अत्यानन्द भयो सो भूप ॥१९॥

भूपति तब तनुजा सुन्दरी, गुणधर को दीनी गुण भरी ।
कर विवाह मंगल सानन्द, हय गय पुरजन परामानन्द ॥२०॥

मन वांछित पाये सुख भोग, विस्मित भये सकल पुर लोग ।
सुख से रहत बहुत दिन भये, तब सब बन्धु बनारस गये ॥२१॥

मातपिता के परशे पांय, अत्यानन्द हृदय न समाय।
विघटो विषम विषम वियोग, भयो सकल पुरजन संयोग ॥२२॥

आठ सात सोलह के अंक रवि व्रत कथा रची अकलंक।
थोड़े अर्थ ग्रन्थ विस्तार, कहें कवीश्वर जो गुणसार ॥२३॥

यह व्रत जो नर नारी करें, सो कबहूँ दुर्गति नहिं परें।
भाव सहित सो शिव सुख लहैं, भानुकीर्त्ति मुनिवर इमि कहैं ॥२४॥

इति श्री रविव्रत कथा सम्पूर्ण ॥

दशलक्षण व्रत कथा

दोहा—प्रथम वन्दि जिनराज के, शारद गणधर पांय।
दशलक्षण व्रत की कथा, कहूं अगम सुखदाय ॥ १ ॥

चौपाई

विपुलाचल श्रीवीर कुवार, आये भवभंजन भरतार।
सुन भूपति तहां वन्दन गयो, सकल लोक मिलि आनंद भयो ॥ २ ॥

श्रीजिन पूजे गनधर चाव, स्तुति करी जोड़ कर भाव।
धर्म कथा तहां सुनी विचार, दान शील तप भेद अपार ॥ ३ ॥

भव दुख नायक दायक शर्म, भाख्यो प्रभू दशलक्षण धर्म।
ताको सुनि श्रेणिक रुचि धरी, गुरु गौतम से बिनती करी ॥ ४ ॥

दशलक्षण व्रत कथा विशाल, मुझ को भाषो दीनदयाल।
बोले गुरु सुन श्रेणिक चन्द्र, दिव्य ध्वनि कही वीर जिनेन्द्र ॥ ५ ॥

खण्ड धातु की पूरव भाग, मेरुथकी दक्षिण अनुराग।
सीतोदाउपकंठी सही, नगरी विशालाक्ष शुभ कही ॥ ६ ॥

नाम प्रीत कर भूपति बसे, प्रियकरी रानी तिसु लसै।
सुता मृगांकरेखा तसु जान, मति शेखर तसु मंत्रि प्रधान ॥ ७ ॥

शशि प्रभा ताकी वर नार, सुता कामसेना निरधार।
राज सेठ गुण सागर जान, शील सुभद्रा नारि बखान ॥ ८ ॥

सुता मदनरेखा तसु खरी, रूपकला लक्षण गुण भरी।
लक्षण भद्र नाम कुतवाल, शशिरेखा नारी गुणमाल ॥ ९ ॥
कन्या तास घरे रोहनी, ये चारों वरणी गुरु तनी
शास्त्र पढे गुरु पास विचार, स्नेह परस्पर बढा अपार ॥ १० ॥
मास वसन्त भयो निरधार, कन्या चारों वनहिं मंझार।
गई मुनीश्वर देखे तहां, तिनको बन्दन कीनो वहां ॥ ११ ॥
चारों कन्या मुनी से कही, त्रिया लिङ्ग ज्यों छूटै सही।
ऐसा व्रत उपदेशो अबै, यासे नर तनु पावे सबै ॥ १२ ॥
बोले मुनि दशलक्षण सार, चारों करो होय भवपार।
कन्या बोली किहिं विधि करैं, किस दिनतैं व्रत को हम धरैं ॥१३॥
तब गुरु बोले वचन रसाल, भादों मास कहो गुणमाल ।
धवल पंचमी दिन से सार, पंचामृत अभिषेक उतार ॥ १४ ॥
पूजार्चन कीजे गुणमाल, जिन चोबीस तनी शुभ साल।
उत्तम क्षमा आदि अतिसार, दशमो ब्रह्मचर्य गुणधार ॥ १५ ॥
पुष्पांजलि इस विधि दीजिये, तीनों काल भक्ति कीजिये।
इस विधि दस वासर आचरो, नियमित व्रत शुभ कार्य करो ॥१६॥
उत्तम दश अनशन कर योग, मध्यम व्रत कांजी का भोग।
भूमि शयन कीजे दस राति, ब्रह्मचर्य पालो सुख भांति ॥ १७ ॥
इस विधि दस वर्ष जब जांय तब तक व्रत कीजे धरभाय ।
फिर व्रत उद्यापन कीजिये, छत्र चमर आदिक दीजिये ॥ १८ ॥
औषधि अभय शास्त्र आहार, पंचामृत अभिषेक हि सार।
माडनों रचि पूजा कीजिये; छत्र चमर आदिक दीजिये ॥ १६ ॥
उद्यापन की शक्ति न होय, तो दूनो व्रत कीजे सोय।
पुण्य तनो संचय भण्डार, परभव पावे मोक्ष द्वार ॥ २० ॥
तब चारों कन्या व्रत लियो, मुनिवर भक्ति भाव लख दियो।
यथा शक्ति व्रत पूरण करो, उद्यापन विधि से आचरो ॥ २१ ॥

अन्तकाल वे कन्या चार, सुमिरण करो पंच नवकार।
चारों मरण समाधि सु कियो, दशवें स्वर्ग जन्म तिन लियो ॥२२॥

षोडश सागर आयु प्रमाण, धर्म ध्यान सेवें तहां जान।
सिद्ध क्षेत्र में करे विहार, क्षायक सम्यक उदय अपार ॥ २३ ॥

सुभग अवन्ती देश विशाल, उज्जैनी नगरी गुणमाल।
स्थूलभद्र नामा नरपती, रानी चार सो अति गुणवती ॥ २४ ॥

देव गर्भ में आये चार, तो रानी के उदर मझार।
प्रथम सुपुत्र देव प्रभु भयो, दूजो सुत गुण चन्द्र भाषियो ॥ २५ ॥

पद्म प्रभ तीनों बलवीर, पद्म सारथी चौथे धीर।
जन्म महोत्सव तिन को करो, अशुभ दोष ग्रह दीनों हरो ॥ २६ ॥

निकल प्रभा राजा की सुता, ते चारों परणी गुण युता।
प्रथम सुता सो ब्राह्मी नाम, दुतिय कुमारी सों गुण धाम ॥२७॥

रूपवती तीजी सुकुमाल, मृगाक्ष चौथी सो गुणमाल।
करो ब्याह घर को आइयो, सकल लोक घर आनन्द कियो ॥२८॥

स्थूलभद्र राजा इक दिना, भोग विरक्त भयो भवतना।
राज पुत्र को दीनों सार, बन में जाय योग शुभ धार ॥२९॥

तप कर उपजो केवल ज्ञान, वसु विधि हनि पायो निर्वाण।
अब वे पुत्र राज को करें, पुण्य का फल पावें ते धरें ॥३०॥

चारों बांधव चतुर सुजान, अहि निशि धर्म तनौ फल मान।
एक समय विरक्त सो भयो, आतम कार्य चिन्तवन ठयो ॥३१॥

चारों बान्धव दिक्षा लई, बन में जाय तपस्या ठई।
निज मनमें चिद्रूप अराधि, शुकल ध्यान को पायो साधि ॥ ३२ ॥

सर्व विमल केवल ऊपनो, सुख अनन्त तब ही सो ठनो।
करो महोत्सव देव कुंवार, जय-जय शब्द भयो तिहि बार ॥ ३३ ॥

शेष कर्म निर्बल तिन करे, पहुंचे मुक्तिपुरी में भरे।
अगम अगोचर भव-जल पार, दशलक्षण व्रत के फल सार ॥ ३४ ॥

वीर जिनेश्वर कही सुजान, शीतल जिनके बाढे मान।
गौतम गणधर भाषी सार, सुनि श्रेणिक आये दरबार ॥ ३५ ॥

जो यह व्रत नर नारी करे, ताके गृह सम्पति अनुसरे।
भट्टारक श्री भूषण वीर, तिनके चेला गुण गम्भीर ॥ ३६ ॥

ब्रह्मज्ञान सागर सुविचार, कही कथा दशलक्षण सार।
मन बचतन व्रत पाले जोई, मुक्ति रमासुख भोगे सोई ॥ ३७ ॥

॥ सम्पूर्ण ॥

आकाश पंचमी व्रत कथा

सैराष्ट्र देश में तिलकपुर नाम का एक विशाल नगर था। वहाँ महीपाल नाम का राजा और विचक्षणा नाम की रानी थी। उसी नगर में भद्रशाह नाम का एक व्यापारी रहता था। उसकी स्त्री नन्दा थी, लड़की का नाम विशाला था, कन्या सुन्दरी होते हुए भी मुँह पर श्वेत कुष्ठ होने से कुरूप हो गई। माता-पिता चिन्तित थे, किन्तु उपाय ही क्या था, तथापि धर्माचरण से कुछ कम हो रहा था।

एक दिन एक वैद्य आया और उसने सिद्ध चक्र की आराधना करके औषधी दी, रोग दूर हो गया। पिता ने उसी वैद्य से उसका विवाह कर दिया। पश्चात् पिंगल वैद्य स्त्री को साथ लेकर देशाटन करता हुआ चित्तौड़गढ़ की ओर गया। वहां पर लोगों ने उसे मारकर सब धन लूट लिया। विशाला विधवा अनाथ होकर चली और भटकती हुई जिनालय में पहुंची। वन्दना करके गुरु से अपनी सब करुण कहानी उसने सुनाई। अनन्तर गुरु से अपना कल्याण मार्ग बताने को कहा। तब मुनिराज ने कहा—बेटी सुनो:—यह जीव सदा अपने पूर्व कृत कर्मों का फल भोगा करता है। तू पूर्व जन्म में वेश्या थी और गाने में भी निपुण थी। एक समय सोमदत्त नामक मुनि-

राजा वहां आये। सभी उनके पास बन्दना करने के लिये गये। उनमें कुछ विधर्मी भी थे जो उनसे वाद विवाद करने लगे, यहाँ तक कि धर्मभ्रष्ट करने के लिये तुझे उनके पास भेजा। तू भी माया जाल फैलाने से बाज न आई। अन्त में सब को हार खानी पडी। वे जरा भी विचलित न हुए। उसी के परिणामस्वरूप तेरी देह में कुष्ट है। अब यदि तू धर्माचरण करेगी तो इस पाप से शीघ्र मुक्ति हो सकेगी। २५ मूल दोषों को त्याग कर तब निर्मल सम्यक् दर्शन हो सकेगा। अहिंसा आदि व्रतों के पालन के साथ आकाश पंचमी व्रत का पालनकर।

यह व्रत भादों सुदी पंचमी को किया जाता है। चार प्रकार का आहार त्याग कर उपवास धारण कर जिनालय में भगवान की पूजा करे। रात्रि में खुले स्थान जागरण करके भजन करे। २४ तीर्थंकरों की प्रतिमा स्थापन करे। वर्षा के कारण अनेक उपसर्ग या विघ्न आने पर भी स्थान को न छोड़े। तीनों समय महामन्त्र नवकार के १०८ जप करे। इस प्रकार पाँच वर्ष तक करके अन्त में उद्यापन करे।

छत्र चमर आदि मन्दिर में भेंट करे। इस प्रकार विशाला कन्या ने श्रद्धा पूर्वक आकाश पंचमी व्रत सम्पादन किया। अनन्तर सात सागर की आयु पूर्ण कर उज्जैन नगर में प्रियगु सुन्दर नामक राजा के यहाँ तारामती नामक एक रानी हुई और सदानन्द नामक उसका पुत्र हुआ। राज्य सुख भी किया। धर्मोपदेश सुनकर शुक्ल ध्यान के बल से मोक्ष पद प्राप्त किया। इसलिये जो इस व्रत का पालन करेंगे वे अवश्य ही मोक्ष पद के अनन्त सुखों को प्राप्त करेंगे।

॥ श्री आकाश पंचमी व्रत कथा भाषा सम्पूर्णम् ॥

अष्टान्हिकाव्रत की जापें

समुच्चय— ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरसंज्ञाय नमः।

आठ दिन की क्रम से आठ जापें:—

१ ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरसंज्ञायनमः, २ ॐ ह्रीं अष्टमहाविभूतिसंज्ञाय नमः, ३ ॐ ह्रीं त्रिलोकसागरसंज्ञाय नमः, ४ ॐ ह्रीं चतुर्मुखसंज्ञाय नमः, ५ ॐ ह्रीं पंचमहालक्षणसंज्ञाय नमः, ६ ॐ ह्रीं स्वर्गसोपानसंज्ञाय नमः, ७ ॐ ह्रीं सिद्धचक्रसंज्ञाय नमः, ८ ॐ ह्रीं इन्द्रध्वजसंज्ञाय नमः।

श्री षोडश कारण व्रत की जापें

समुच्चय– ॐ ह्रीं श्रीषोडशकारणभावनाय नमः।

पृथक पृथक् दिन की जापें:—

१ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धये नमः, २ ॐ ह्रीं श्रीविनयसम्पन्नताये नमः, ३ ॐ ह्रीं श्रीशीलव्रतेष्वनतिचाराय नमः, ४ ॐ ह्रीं श्रीआभीक्ष्णज्ञानोपयोगाय नमः, ५ ॐ ह्रीं श्रीसंवेगाय नमः, ६ ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्त्यागाय नमः, ७ ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्तपसे नमः, ८ ॐ ह्रीं श्री साधुसमाधये नमः, ९ ॐ ह्रीं श्री वैयाव्रतकरणाय नमः १० ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भक्त्यै नमः, ११ ॐ ह्रीं श्री आचार्यभक्त्यै नमः, १२ ॐ ह्रीं श्रीवहुश्रुतभक्त्यै नमः, १३ ॐ ह्रीं श्री प्रवचनभक्त्यै नमः, १४ ॐ ह्रीं श्री आवश्यक परिहाणये नमः, १५ ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावनाय नमः, १६ ॐ ह्रीं श्री प्रवचनवत्सलत्वाय नमः।

अथ दशलक्षणव्रत की जापें

समुच्चय :—ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमामार्दवार्जवसत्यशौचसंयम तपस्त्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्यधर्मांगाय नमः।

पृथक् पृथक् जापें:—

१ ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमाधर्मांगाय नमः, २ ॐ ह्रीं श्री उत्तममार्दवधर्मांगाय नमः, ३ ॐ ह्रीं श्री उत्तमार्जवधर्मांगाय नमः, ४ ॐ ह्रीं श्री उत्तनसत्यधर्मांगाय नमः, ५ ॐ ह्रीं श्री उत्तमशौचधर्मांगाय नमः, ६ ॐ ह्रीं श्री उत्तमसंयमधर्मांगाय नमः, ७ ॐ ह्रीं श्रीउत्तमतपधर्मांगाय नमः, ८ ॐ ह्रीं श्रीउत्तमत्यागधर्मांगाय नमः, ९ ॐ ह्रीं श्रीउत्तमआकिञ्चन्यधर्मांगाय नमः, १० ॐ ह्रीं श्रीउत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय नमः।

श्रीपंचमेरु व्रत की जापें

१ ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुजिनचैत्यालये नमः, २ ॐ ह्रीं श्री विजयमेरुजिनचैत्यालये नमः, ३ ॐ ह्रीं श्री अचलमेरुजिनचैत्यालये नमः, ४ ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुजिनचैत्यालये नमः, ५ ॐ ह्रीं श्रीमंदिरमेरुजिनचैत्यालये नमः।

श्री रत्नत्रय व्रत की जापें

१ ॐ ह्रीं श्रीसम्यक्दर्शनप्राप्ताय नमः, २ ॐ ह्रीं श्रीसम्यक्ज्ञानप्राप्ताय नमः, ३ ॐ ह्रीं श्रीसम्यक्चारित्रप्राप्ताय नमः।

नव ग्रहों की जापें

ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं श्री सूर्यगृह अरिष्ट निवारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः शान्ति कुरुकुरु स्वाहा ॥ १ ॥ ७७०० जाप्य

ॐ ह्रीं क्रौं श्रीं क्लीं चन्द्रारिष्ट निवारक श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय नमः शान्ति कुरु कुरु स्वाहा ॥२॥ ११००० जाप्य

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री भौमारिष्ट निवारक पद्मप्रभु जिनेन्द्राय नमः शान्ति कुरु कुरु स्वाहा ॥३॥ १०००० जाप्य

ॐ ह्रीं क्रौं आं श्रीं बुधग्रहारिष्ट निवारक श्री विमल अनन्त धर्म शान्ति कुन्थु अर नमि वर्द्धमान अष्ट जिनेन्द्रेभ्यो नमः शान्ति कुरु कुरु स्वाहा ॥ ४ ॥ ८००० जाप्य

ॐ क्रौं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं गुरु अरिष्ट निवारक श्री ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन सुमति सुपार्श्व शीतल श्रेयांस अष्ट जिनेन्द्रेभ्यो नमः शान्ति कुरु कुरु स्वाहा ॥ ५ ॥ १९००० जाप्य

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रीं शुक्रग्रह अरिष्ट निवारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय नमः शान्ति कुरु कुरु स्वाहा ॥ ६ ॥ ११००० जाप्य

ॐ ह्रीं क्रौं श्रीं शनिग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रत नाथ जिनेद्राय नमः शान्ति कुरु कुरु स्वाहा ॥ ७ ॥ २३००० जाप्य

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रूं राहु अरिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः शान्ति कुरु कुरु स्वाहा ॥ ८ ॥ १८००० जाप्य

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं केतु अरिष्ट निवारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्रायनमः शान्ति कुरु कुरु स्वाहा ॥ ९ ॥ ७००० जाप्य

अनन्त चतुर्दशी मंत्र

'ॐ ह्रीं अंह हंः अनन्त केवली भगवान अनन्तदान लाभ भोगोपभोग वीर्याभिवृद्धि कुरुकुरु स्वाहा।

द्वादशी (दुधारस व्रत) जाप्य

ॐ ह्रीं च्वीं ह्रीं ह्रीं ह्रौं हंस अमृतवाहने नमः स्वाहा।

पुष्पांजलि व्रत की जापें

समुच्चय—ॐ ह्रीं पंच मेरु सम्बन्धि जिनालयेभ्यो नमः

प्रत्येक दिन की जापें १—ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुस्थजिनालयेभ्यो नमः २ ॐ ह्रीं विजयमेरुस्थजिनालयेभ्यो नमः । ३ ॐ ह्रीं अचलमेरुस्थजिनालयेभ्यो नमः । ४ ॐ ह्रीं मन्दरमेरुस्थजिनालयेभ्योः । ५ ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुस्थजिनालयेभ्यो नमः ।

रविव्रत जाप्य मंत्र

ॐ नमः भगवते चिन्तामणिपार्श्वनाथसप्तफणमंडिताय ॐ ह्रीं श्रीं धरणेन्द्रपद्मावतीसहिताय मम ऋद्धि वृद्धि सौख्यं कुरु कुरु स्वाहा ।

(रविवार को पार्श्वनाथ भगवान का पूजन कर १०८ बार जाप करना चाहिए)।

पासा केवली

अपने भविष्य की बात जानने की इच्छा प्रायः शिक्षित अशिक्षित आदि सभी में देखी गई है। कोई हस्तरेखा से, तो कोई जन्म पत्री से और कई व्यक्ति तो बाजारों में पींजड़े में चिड़िया लेकर बैठने वाले पेशेवर लोगों से ही अपना भविष्य-फल जानने की चेष्टा किया करते हैं। इस प्रकार मनुष्य किसी न किसी विधि से अपनी इच्छा पूर्ण किया करता है, और पैसे एवं शक्ति का अपव्यय करता रहता है। मनुष्यों की इसी भावना की पूर्ति के लिए केवलीपासा या पासाकेवली की रचना की गई है। इसके द्वारा श्रद्धावान मनुष्य अपने भवितव्य की झांकी पा सकता है।

परन्तु विधि पूर्वक क्रिया द्वारा ही कार्य सम्पन्न होता है। देखा गया है कि कई व्यक्ति रस्ते चलते, जूता पहने, खाते हुए, अशुद्ध हाथों से ही पुस्तक उठाई और शुभाशुभ देखने लगते हैं, ऐसा करना उचित नहीं।

पासा केवली से शुभाशुभ देखने के लिए मन में शान्ति एवं श्रद्धा होना आवश्यक है। प्रातः काल स्नानादि क्रियाओं से स्वच्छ होकर स्वच्छ वस्त्र पहिन कर किसी पाटे, चौकी पर पुस्तक को रखकर, पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुंह करके पद्मासन या अर्द्ध पद्मासन से बैठे। उस समय सीधा स्वर चल रहा हो इसका भी ध्यान रखा जाय। फिर अपने मन में प्रश्न का विचार करे और श्री अरहंत प्रभु का ध्यान करते हुए पुस्तक में लिखे मंत्रों का उच्चारण कर तीनवार पासा डालना चाहिए। प्रत्येक बार जो वर्ण पासा के ऊपर की ओर आये उसे लिख लेना चाहिए। इस प्रकार तीन बार में तीन वर्ण आयेंगे। उनका फल पुस्तक में देखकर विश्वास करना चाहिए, और उसी के अनुसार आचरण करना चाहिए।

हमारी इच्छा थी कि हम अरहत पासा केवली को पद्य में ही दें, परन्तु साधारण लोग उससे पूरा लाभ नहीं उठा पाते। इसीलिए पद्यों का भाव दिया गया है। उसमें रही त्रुटियों के लिए क्षमा प्रार्थी हैं। आशा है पाठक गण अशुद्धियों की सूचना देने की कृपा करेंगे जिससे आगामी संस्करण में शुद्ध किया जा सके।

"काशी निवासी कविवर वृन्दावन विरचित"

अरहंत पासा केवली

दोहा—श्रीमत वीर जिनेश पद, वन्दों शीस नवाय।
गुरु गौतम के चरण नमि, नमों शारदा माय॥

श्रेणिक-नृप के पुण्यतें, भाषी गणधर देव।
जगत हेत अरहंत यह, नाम केवली सेव॥
चन्दन के पासा विषै, चारों ओर सुजान।
एक एक अक्षर लिखौ, श्री अरहंत विधान॥
तीन बार डारो तबै, करि वर मंत्र उचार।
जो अक्षर पासा कहै, ताको करो विचार॥
तीन मंत्र है तासुके, सात सात ही बार।
थिर ह्वै पासा डारियो, करिके शुद्ध उच्चार॥
जानि शुभाशुभ तासुतैं, फलनिज हृदय-नियोग।
मन प्रसन्न ह्वै सुमरियो, प्रभुपद सेवहु जोग॥

प्रथम मंत्र—ओं ह्रीं श्रीं बाहुबलि लंब बाहु ओं क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षः नर्द्ध भुजा कुरु कुरु शुभाशुभं कथय कथय भूत भविष्यत वर्तमानं दर्शय दर्शय सत्य ब्रूहि सत्यं ब्रूहि स्वाहा।

(प्रथम मंत्र सात बार जपना)

दूसरा मंत्र— ओं हः ओं सः ओं क्षः सत्यं वद सत्यं वद स्वाहा।

(दूसरा मंत्र भी सात बार जपकर पासा डालना)

तीसरा मंत्र—ओं ह्रीं श्रीं विश्वमालिनि, विश्व प्रकाशिनि अमोघ-वादिनि सत्यं ब्रूहिसत्यं ब्रूहि राह्यहि विश्वमालिनिं स्वाहा।

नोट:—मन एकत्र कर विनय सहित अभिप्राय विचार कर श्री अरहंत भगवान के नाम के अक्षरों (अ, र, हं, त,) का पासा तीन बार डालना चाहिए। जो जो अक्षर पडे, उनको मिलाकर उनका फल जानना चाहिए। जिन मार्ग में यह बड़ा निमित्त है। (वृन्दावन)

अथ अकारादि प्रथम प्रकरण

अ, अ, अ। यदि ये तीन अक्षर पड़ें तो सुख और कल्याण मंगल हो, सम्मान बढे, लक्ष्मी की प्राप्ति हो, व्यापार में तथा विदेश में धन लाभ हो, युद्ध में जीत हो। राज दरबार में सम्मान मिले। सब संकट, रोग, शोक, दरिद्रता का नाश हो। सब प्रकार से कल्याण हो। यह निःसंदेह विश्वास करना चाहिए।

अ, अ, र। इन तीनों का मध्यम फल होता है। मन का विचारा हुआ, पूर्व पाप के कारण बाधा पडने से शीघ्र सफल नहीं होगा। इस लिए मन वांछित फल प्राप्त करने के लिए अपने इष्टदेव श्री अरहंत वीतराग भगवान की आराधना करना चाहिए। इससे कुछ समय बाद इच्छित फल की प्राप्ति होगी।

अ, अ, ह। इनका फल शुभ होता है। धन धान्य का समागम होगा। परदेश गमन से इच्छित फल की प्राप्ति होगी। भाई बन्धु से प्रेम भाव बढेगा। शत्रुओं का दमन होगा। सम्पूर्ण बाधाएँ दूर होंगी। घर में पुण्य के प्रभाव से सब प्रकार का मंगल होगा। हे प्रश्न कर्ता! तुम्हारा विचारा हुआ शुभ है। अतः शुभ फल की निश्चित प्राप्ति होगी।

अ, अ, त। हे दयालु! तेरा प्रश्न शुभ है। तेरे घर में पुत्र पौत्रादि का सुख होगा, हितैषी मित्रों से लाभ होगा। सब प्रकार रोगादि से छुटकारा होगा। खोटे ग्रह दूर होंगे। परदेश में गयेहुए भाई और मित्रों का शुभ मिलन होगा। कुल की बढवारी होगी, सज्जनों से मित्रता होगी। तेरे आगामी दिन सुख और सौभाग्य को देने वाले होंगे। तू वीतराग भगवान का सदा ध्यान कियाकर

अ, र, अ। तेरा विचार श्रेष्ठ है, उत्तम फल का देने वाला है।

प्रति दिन आनन्द की वृद्धि होगी। पाप के उदय से तेरा नष्ट हुआ धन फिर मिलेगा। राजा द्वारा सम्मान होगा। भाई बन्धुओं से मिलाप होगा। हर प्रकार से तेरी गृहस्थी सुखी होगी। अब तेरे सब पापों का अन्त हो गया है। इस लिए धर्म के प्रभाव से सुख समृद्धि का वास होगा। तू अपने कर्त्तव्य कर्म में विश्वास पूर्वक लगा रह।

अ, र, र। हे भाई! तेरा पुण्य बलवान है। तुझे धन का लाभ होगा, सब स्थानों में यश बढेगा, जहाँ भी जायगा, सम्मान पायेगा और सब तेरे शुभ चिन्तक हो जावेंगे। जल, अग्नि, मरी आदि उपद्रव तेरा कुछ भी बिगाड नहीं कर सकेंगे। शत्रु वश में होंगे, सब प्रकार के सुख की प्राप्ति होगी। यह सब तेरे धर्म का प्रभाव है। इस लिए तू धर्म का पालन मत छोडना। बस तेरा भविष्य सुखमय है।

अ, र, ह। ये तीनों वर्ण सौभाग्य, सम्पत्ति के सूचक हैं। तेरा जो मनोरथ है वह सरलता से फलित होगा। जो घर में थोडा सा क्लेश है, उसकी चिन्ता न कर। इसके लए तू श्री महावीर प्रभु की पूजा कर तेरे सब विघ्न दूर होंगे! मन की चिन्ता दूर कर मन को एकाग्र कर, तुझे सब सुखों की प्राप्ति होगी। श्री अरहंत का ध्यान कर, तेरे को सब सिद्धियां प्राप्त होंगी।

अ, र, त। इन तीनों वर्णों के आने पर सब सुखों की प्राप्ति होती है। तुझे स्त्री, पुत्र और पश्चात् पौत्र का भी लाभ होगा। तेरे कुल की शोभा होगी। तुम जहाँ भी जाओगे, वहीं तुम्हारी कीर्त्ति बढेगी। संसार तुम्हें प्यार करेगा। तुम्हारा प्रश्न शुभ है, तुम्हारे मन में प्रभु का ध्यान होना चाहिए। देखो तुम्हारे ललाट पर तिल का चिह्न होना चाहिए।

अ, हं, अ। हे प्रश्न कर्त्ता! सुनो। पहले तुम्हें कुछ कष्ट होगा, परन्तु शीघ्र ही वह दुःख दूर होगा, और दिन प्रति दिन धन की बढ़वारी होगी, सज्जनों की संगति होगी। हे विचारक! तुमने जो सोचा है सो सब सफल होगा। तुम महावीर भगवान के नाम की तीनों (प्रातः, मध्याह्न, सायंकाल) समय एक एक माला फेरा करो।

अ, हं, र। जब ये तीनों अक्षर आवें तब धन-लाभ, यश लाभ, पृथ्वी का लाभ हो। राजा, भाई आदि आदर करें। बिछुडे हुए भाई इष्टजनों, धनादि का लाभ हो। हे भाई! तुम धैर्य धारण करो। तुम्हें व्यापार में परदेश में सब प्रकार सुख लाभ होगा। तुम मनका संशय दूर करो, और सर्व विघ्न विनाशक श्री पार्श्व प्रभुका स्मरण करो।

अ, हं, हं। ये तीनों अक्षर मिलने पर इष्टसिद्धि कठिन होती है। हे भाई! तेरा कार्य मुश्किल से ही सिद्ध होगा। तेरा वर्तमान धन भी नष्ट होता नजर आता है। क्लेश बढ़ेगा। व्यापार में हानि होगी। परदेश में भी सिद्धि नहीं। इसलिए हे सज्जन! तू भगवान की पूजा भक्ति कर। जपदान होम कर। ४१ दिन तक स्नान कर शुद्ध वस्त्र पहन कर प्रातः सायंकाल श्री पार्श्वनाथ भगवान के नाम की ५० हजार जाप दे। इसके बाद तेरा पुण्य उदय आयेगा, और इच्छित फल की प्राप्ति होगी।

अ, हं, त। इन अक्षरों का मिलाप सब प्रकार के कल्याण और आनन्द को देने वाला है। इसलिए हे सज्जन! तुझे आज्ञाकारी पुत्र और भाइयों का समागम होगा। तुझे तेरे उद्योग में धन, धान्य और सम्पत्ति मिलेगी। युद्ध में तेरी विजय निश्चित है। अगर तू या तेरा सम्बन्धी बन्धन में होगा तो छुटकारा पावेगा। इसलिए हे बुद्धिमान तू संदेह छोड़। तेरा सब प्रकार कल्याण होगा।

अ, त, अ । ये चर्ण तेरे कल्याण मंगल के बताने वाले हैं। तुझे तेरे प्रयत्नों से लक्ष्मी की प्राप्ति होगी, सब विघ्न बाधाओं को दूर करता हुआ, पुत्र पौत्रादि के सुख को प्राप्त करेगा, और इच्छित मणि मुक्तादि का लाभ होगा। आज से आठवें दिन तेरा भाग्य और भी अधिक श्रेष्ठ फल को देने वाला होगा।

अ, त, र । हे सज्जन तेरे शुभ दिन हैं। तुझे सब मंगल के सामान मिलेंगे। तेरे घर पर आनन्द के बाजे बजेंगे। तुझे जो प्यारे बन्धुओं की चिन्ता सता रही है यह दूर होगी। वे धन धान्य से भरे हुए हाथी घोड़ों के साथ सुख पूर्वक तेरे से आकर मिलेंगे। तू अपने हृदय की चिन्ता दूर कर। अब तेरे सुख के दिन हैं।

अ, त, हं। हे बन्धु ! तेरा अशुभ का उदय है, कहीं लाभ दिखाई नहीं देता। अभी तो तेरा हाथ का धन और जाता दीखता है। तेरे शुभ चिन्तक भाई बन्धु स्त्री पुत्र, सम्पत्ति आदि का अनिष्ट ही दिखाई पडता है और चारों ओर शत्र ही शत्रु भरे पड़े हैं। इसलिए इन विघ्नों को दूर करने के लिए तू ६१ दिन तक ओं ह्रीं अ, सि, आ, उ, सा, सर्वविघ्न विनाशाय नमः स्वाहा। इस मन्त्र की नित्य शुद्ध होकर ११-११ मालाओं से जाप दे, तेरा विघ्न दूर होगा और घर में मंगलाचार होगा।

अ, त, त। हे भव्य जीव ! तुझे धन लाभ होगा। सम्पत्ति बढेगी, सुख का विस्तार होगा। सब इच्छाएँ पूर्ण होंगी। प्रिय बन्धु और मित्रों का मिलाप होगा, दिन दिन लाभ ही बढेगा, तू जिस तरफ भी ध्यान देगा सब तरफ सफलता ही मिलेगी। युद्ध में वाद विवाद में तेरी विजय होगी। तू सन्देह मत कर। तू अपना पुण्य उदय समझ कर धीरज से कार्य कर, सफलता तेरे चरणों में है।

अथ रकारादि द्वितीय प्रकरण

र, अ, अ ! इन अक्षरों के पढ़ने से धन, सम्पत्ति का लाभ और सज्जनों से मिलाप होता है। सोना, चांदी, वस्त्र, गहने नाना प्रकार के रत्न आदि इच्छित पदार्थों की प्राप्ति अवश्य होगी। रात्रि के अन्त में हाथी, घोड़े या रथ में चढे हुए फूलों की माला पहने हुए देवताओं का विमान में बैठे हुए आना दिखाई देगा।

र, अ, र। हे पृच्छक तुम्हें इच्छित फल की प्राप्ति होगी। तुम्हें व्यापार और खेती में लाभ होगा। तुम से देश और उसके निवासियों को लाभ पहुंचेगा। तुम्हें परदेश में लाभ होगा। तुम्हारे घर में सुख रहेगा। भयानक युद्ध में कुल देवी तुम्हारी रक्षा करेगी, और सब प्रकार सुख का विस्तार होगा।

र, अ, हं। हे भ्राता ! तुम्हारे विचारे कार्य में लाभ की आशा नहीं। तुम्हे दुःख, धन का नाश, शारीरिक कष्ट होगा, तुम्हारे भाई बन्धुओं का वियोग होगा। विदेश में भी तुम्हें सफलता प्राप्त न होगी। इसलिए शान्ति से अपने स्थान पर रहते हुए ही श्री जिनेन्द्रदेव की सेवा पूजा भक्ति आदि करो। इसके लिए अगर २१ दिन तक ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए एक बार भोजन कर स्नान आदि क्रियाओं से शुद्ध होकर ओं ह्रीं, अ, सि, आ, उ, सा, नमः इस मंत्र का सवा लाख जाप करो तो तुम्हारे सब संकट दूर होकर सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होगी।।

र, अ, त। हे सज्जन ! तुम्हारा अशुभ का उदय है। चोरों द्वारा धनका चुराना, नाव में डूब जाना, आग लगना, रोग होना आदि से अशुभ ही होगा। तुम्हारा किया हुआ सब उल्टा होगा। इसे कर्मों का फल समझ कर तुम्हे शोक न करना चाहिए, और शान्ति से भगवान का स्मरण करते हुए परोपकार की भावना से कार्य करो, कुछ समय बाद सफलता मिलेगी।

र, र, अ। हे भाई ! तुम्हारा मन बड़ा चंचल है, तुम स्थिर विचार के नहीं हो। तुम धन का लाभ चाहते हो, पर अशुभ के कारण मूल का भी नाश दिखाई देता है। तुझे राजा से दण्ड, चोरों से, अग्नि से सावधान रहना चाहिए। तेरा शरीर भी निरोग नहीं रहेगा। स्त्री, पुत्र कुटुम्ब से तेरा बिछोह होगा। करीब ३ सरे वर्ष में सब संकट और दुःख दूर होगा, इन दिनों में तू सदा शुभ काम करना।

र, र, र। हे पूछने वाले ! तेरा शुभ का योग है। तुझेमन-वांच्छित फल प्राप्त होगा। तुझे धन, दौलत, जमीन, मकान सब मिलेंगे। तुझे कुटुम्ब में स्त्री-पुत्र पुत्र-वधू आदि शुभ लक्षणों वाले आज्ञाकारी मिलेंगे। व्यापार में तुझे घर में, परदेश में सर्वत्र बड़ा लाभ होगा। तेरे प्रत्येक कार्य में तुझे सफलता ही सफलता प्राप्त होगी।

र, र, हं। दो रकार के साथ हं आने पर महा फल का लाभ होता है। आनन्द देने वाली सुख सम्पत्ति सरलता से ही प्राप्त होगी। घर में नित्य आनन्द का राज होगा। नित्य धन की प्राप्ति होगी। तुम्हें, जमीन, जायदाद, देश और नगरों पर भी अधिकार मिलेगा। तुम मन में जो विचारोगे वही मिलेगा। राजा से तुम्हें सब प्रकार का लाभ होगा। इस प्रकार तुम्हारे घर में सदा सुख का निवास होगा।

र, र, त। तुमने अपने मनमें बड़ा बुरा सोचाहै। तुमनेपर स्त्री की इच्छा से अनेकों खोटे काम किये हैं और इसीसे तुम्हारे धन का नाश हुआ है, घरमें कलह हुई है। तुमने राज दण्ड भी भोगा है। इस लिए अब इस मार्ग को छोड़कर ब्रह्मचर्य को धारण करो और शुभ कार्य करो। इसीसे मनुष्य जन्म सफल होगा।

र, हं, अ। ये तीनों वर्ण शुभ के सूचक हैं। स्त्री, पुत्र धन मान, आदि की प्राप्ति होगी। संसार में यश बढेगा। धर्मकेमार्ग में मन लगेगा। युद्ध में, विदेश में, व्यापार में सब जगह शीघ्र ही विजय होगी।

र, हं, र। हे भाई! तुमने बडा उल्टा मार्ग पकडा है तुमने जो सोचा है उसे मन से निकालदो। इसके करने से लाभ न होगा, बल्कि सब प्रकार का कष्ट ही होगा। तुम्हारे दुश्मन बहुत हैं, तुम्हें कहीं भी सुख न मिलेगा। इसलिए तू इस विचारे हुए कार्य को छोडदे, और संसार के सुख को व्यर्थ समझकर सच्चे सुखकी प्राप्ति के लिए वीतराग भगवान् के मार्ग को ग्रहण कर।

र, हं, हं। हे प्रश्न कर्त्ता! तेरा अशुभ का उदय है। इसलिए जो भी तू करेगा उसका खोटा ही फल मिलेगा। तुम्हारे जो मित्र बने हुए हैं उन पर विश्वास मत करो, ये सब तुम्हारे शत्रु हैं, तुम्हारे धन का नाश कराने पर तुले हुए हैं। तुम धन की इच्छा करते हो, वह इस समय नहीं मिलेगा। इसलिए तुम धर्म की आराधना करो। भगवान की भक्ति कर, भगवती पद्मावती का जाप करो। उससे कुछ समय बाद सफलता मिलेगी।

र, हं त। अहो पूछने वाले! इसका क्या फल कहूं। तेरा बडा शुभ का उदय है। तुझे विद्या की प्राप्ति, कवियों में सम्मान, व्यवहार में निपुणता मिलेगी, स्त्री और पुत्र का लाभ होगा। व्यापार में धन प्राप्त होगा। भाई बन्धुओं और मित्रों से वस्त्र और आभूषणों के साथ मिलाप होगा। परिवार के सुख के लिए नित्य कुलदेवी की पूजा कर।

र, त, अ। हे पृच्छक! तुम्हारे सौभाग्य के दिन हैं। तुम्हारे हृदय में जो पुत्रादि के सुख की लालसा है, धन, सुख, आनन्द दायक भोजन पान की इच्छा है वह सब पूर्ण होगी। तुम्हें मंत्र, तंत्र और औषधि से सर्वत्र सफलता प्राप्त होगी।

र, त, र हे सज्जन ! तुम शान्ति से सुनो । तुम्हारे उद्योग से पद, पद पर सफलता मिलेगी । इसलिए तुम अपने कार्य में लगे रहो तुम्हें लाभ होगा । श्री जिनराज की सेवा से तुम्हें स्त्री पृथ्वी, धन मिलेगा । राजा द्वारा सम्मान मिलेगा । हाथी, घोड़े आभूषणों की बिना चाहे ही प्राप्ति होगी ।

र, त, हं । हे भाई ! तुमने पहले बहुत कष्ट भोगे हैं, पर वे अब दूर होगये । तुम्हारे हृदय में जो धन, स्त्री, पुत्र गहनों की चिन्ता है वह दूर होगी । शरीर के रोग शोक और दुःखों का नाश होकर, जिनधर्म के प्रभाव से तेरे हृदय के सब मनोरथ पूर्ण होंगे ।

र, त, त । हे प्रश्न कर्त्ता ! तेरा प्रश्न अच्छा है, तेरे सब कार्य सफल होंगे । इच्छित धन सम्पत्ति का लाभ होगा । तुम जो विचारोगे वह सरलता से सिद्ध होगा । ये सब धर्म का प्रभाव है, इसमें सन्देह मत करो । तुम जो कल्याण के लिए तप धारण करना चाहते हो, सो तुम्हें उसमें भी सफलता मिलेगी । इसलिए तुम वीतराग भगवान के बताये हुए तप के मार्ग को ग्रहण करो जिससे सच्चे और स्थायी सुख की प्राप्ति हो ।

अथ हंकारादि तृतीय प्रकरण ।

हं, अ, अ ।—इन तीनों वर्णो का फल चिन्ता कारक है, कष्ट, चिन्ता, कार्य विनाश, लोक निन्दा, और युद्ध में पराजयता, उद्योग में असफलता मिलती है । कार्य सिद्धि के लिए जो भी प्रयत्न करते हो उसी में असफलता मिलेगी । इसलिए इस समय मौन होकर कुछ समय धर्मध्यान करो । शुभ उदय आते ही सफलता मिलेगी ।

हं, अ, र । यह बहुत लाभदायक पासा पड़ा है । तुम्हारे सभी मनोरथ सफल होंगे । स्त्री एवं धन की प्राप्ति होगी । भाइयों

से सुख पहुंचेगा। हरेक कार्य में घर में विदेश में सर्वत्र लाभ ही लाभ होगा। तुम्हारे सब रोग शोक दूर होंगे। अच्छे दिनों में भी भगवान की आराधना भक्ति पूर्वक करते ही रहना। क्योंकि धर्म ही सदा सहायक होता है।

हं, अ, हं। हे भव्य तुम बहुत सरल एवं सीधे स्वभाव के हो। तुम मित्र और शत्रु को समान समझते हो। तुमने ऐसे लोगों के लिए अपना धन खर्च किया है। परन्तु यह कलिकाल है और तुम साधु स्वभाव वाले हो। चिन्ता मत करो, तुम्हारा अच्छा समय है, गया हुआ धन मिलेगा। पुण्य की जड़ सदा हरी होती है।

हं, अ, त। हे प्रश्न-कर्त्ता! तेरा शुभ का उदय है। धर्म के प्रताप से तेरे सारे क्लेश और व्याधियां दूर हुई हैं, भगवान की आराधना कर आगे भी सफलता प्राप्त होगी। तुझे सुपुत्र की प्राप्ति होगी। परदेश में धन लाभ होगा। तुझे जो धन की चिन्ता है वह पूरी होगी और स्त्री, पुत्र, आभूषण तथा सकल सुखों की प्राप्ति होगी।

हं, अ, र। ये तीनों वर्ण परम लाभ के सूचक हैं। तेरे सभी इच्छित कार्य पूरे होंगे, धन धान्य बढ़ेगा। देश विदेशों में यश फैलेगा। राज्य में प्रतिष्ठा बढेगी। धनादि आभूषणों से सम्मान होगा। इस तरह से तुम सब के प्रिय बनोगे।

हं, र, र। हे प्रश्न कर्त्ता! तेरे वर्तमान समय में अशुभ उदय है, इसीलिए तू दुश्चिन्ताओं में फंसा हुआ है, और धन का भी नाश हुआ है। परन्तु तू घबरा मत और पुण्य कार्यों में तथा धर्म पर अटल रह, शीघ्र ही लाभ होगा और देश विदेश में सम्मान तथा मित्रों कुटुम्बीजनों से भी सुख प्राप्त होगा।

हं, र, हं। हे सज्जन तेरे पासे के ये तीनों वर्ण परम शुभ हैं। तेरे को बडा लाभ होगा। पुत्र का विवाह होगा और धन मिलेगा। विरोधी भी मित्र बनकर भला करेंगे। युद्ध में वादविवाद में सफलता होगी। तेरा शुभ का उदय है, इसे स्थायी बनाने के लिए धर्म के कार्य कर और श्री चन्द्र-प्रभु भगवान की पूजा विशेष रूप से कर, उससे तेरा कल्याण होगा।

हं, र, त। हे पृच्छक तेरे मन में कुछ चिन्ता है पर यह व्यर्थ का वहम है, तू अपने हृदय से इसे निकाल दे। तेरा सब सोचा हुआ कार्य सिद्ध होगा। उद्यम में लक्ष्मी की प्राप्ति, मुकद्दमे में जीत होगी। किसी भी प्रकार की हानि न होगी। तू संयम और दान में मन लगा, तेरे मन की चिन्ता नष्ट होकर तेरीगृहस्थी में सुख का विस्तार होगा।

हं, हं, अ। ये वर्ण आनन्द के सूचक हैं। तेरे पास पर्याप्त लक्ष्मी है, पुत्र पौत्रादि से सुख बढेगा। बिछुडे हुए भाई, मित्र परदेश में सुखी हैं, और उनका शीघ्र ही सुख कारक मिलाप होगा। श्री जिनेन्द्र भगवान की सेवा के प्राप्त से सब प्रकार के मंगल होंगे, और आगामी एक वर्ष में बहुत धन का लाभ होगा।

हं, हं, र। हे भाई! तुम्हारे सब प्रकार का आनन्द होगा। तुम्हारे पुत्र के विवाह की चिन्ता दूर होगी और विवाह शीघ्र होगा। तू श्री चौबीसीजी की पूजा विधान कर उससे धन, धान्य, वस्त्राभूषण की बढवारी होगी। जहां जायगा लाभ होगा। यह सब जानते हैं कि भगवान की भक्ति से तथा जप दान से सब कार्य सिद्ध होते हैं।

हं, हं हं। इन तीनों वर्णों के फल परम लाभ का सूचक है। देश में सुख शान्ति हो, धन की प्राप्ति हो, खोई हुई जायदाद प्राप्त हो, लडाई झगडे में सफलता मिले, व्यापार में धन मिले,

बन्धुओं और मित्रों से स्नेह वढे । तुम्हारे सम्पूर्ण प्रकार के आनन्द होंगे, श्रद्धा से धर्म का सेवन करो ।

हं, हं, त । हे पूछने वाले ! तुझे अच्छा लाभ होगा । तुम परदेश जाना चाहते हो, वहां तुम्हें धन लाभ होगा । खेती व्यापार, नौकरी, आदि में इच्छानुसार लाभ होगा । देव, गुरु, शास्त्र के प्रभाव से संसार में सुख के साधन, धन, धान्य, सोना, चांदी आदि तुझे इच्छानुसार मिलेंगे । तू श्री महावीर प्रभु की सेवा में मन लगा ।

हं, अ त । ये तीनों वर्ण पूछने वाले के मन के भाव साफ प्रकट कर रहे हैं । हे पृच्छक ! तू लोभ में फंस कर परधन चाहता है । यह अच्छा नहीं । तू संतोष को धारण कर लोभ का त्याग कर, जो होनहार है होकर रहेगा । परन्तु कुछ समय बाद तेरे पुण्य का उदय है, उस समय तेरा कल्याण होगा, तब तक तू वीतराग भगवान की आराधना कर ।

हं, त, र । हे भाई ! तेरे मन में दूसरे के धन की आशा लगी है, तू जो चाहता है, वह तुझे मिलेगा । धन की प्राप्ति, यश की वृद्धि का समागम होगा, और तेरा गया हुआ धन भी पुनः मिलेगा । इस प्रकार हे सज्जन । तू जो भी विचारता है तेरा सब मनवांन्छित प्राप्त होगा । ऐसा समझ कर हृदय की चिन्ता दूर कर और दान पुण्य आदि शुद्ध कार्यों को कर ।

हं, त, हं । हे पूछने वाले ! तेरा मन खेटे कर्मों में लगा हुआ है, तू चौरी से जुआ से सट्टा से धन चाहता है इसीलिए तू दुःख पाता है, और बदनाम होरहा है, और तेरा विश्वास उठ गया है । अब तू इस मार्ग को छोड़ दे और ठीक मार्ग पर चल । तेरा इच्छित कार्य पूरा होगा ।

हं, त, त। हे मित्र! तेरे मन में जो धन, धान्य तथा सुख सम्पत्ति से भरे हुए घर की चाह है वह सफल होगी। तू चिन्ता का त्याग कर विदेश जा वहां तुझे मंत्र, तंत्र, सम्मोहन एवं और भी जितनी विद्याएँ हैं सब प्राप्त होंगी। उनसे तेरे मन की अभिलाषा पूर्ण होगी।

अथ तकारादि चतुर्थ प्रकरण

त, त, अ। हे पूछने वाले! यह पासा बतलाता है कि यदि तू देव पूजा, दान पुण्यादि पवित्र कार्य करेगा तो तेरे सब लाभ की प्राप्ति होगी। जैसे बीज के बिना वृक्ष नहीं होता वैसे ही बिना पुण्य के सुख प्राप्त नहीं होता। तुझे पुत्र, पौत्र, धन धान्य, का लाभ और व्यापार में धन लाभ होगा। लड़ाई में विजय होगी।

त, अ, र। हे भाई तेरा प्रश्न मध्यम फल दाता है। तुम्हारे हृदय में जिस स्त्री, या पुरुष की चाह है, उसको छोड़ दो। तथा तुम्हारा जो धन क्षय हुआ है उसके फिर से मिलने की आशा भी त्याग दो, क्योंकि स्त्री पुरुष, धन कुटुम्ब आदि होनहार के अधीन हैं। प्रभु भक्ति में मन लगा, कुछ समय बाद तुम्हें पर्याप्त धन लाभ होगा।

त, अ, हं। हे प्रश्न-कर्त्ता तेरे मन में दिन- रात धन की चाह रहती है या नहीं? परन्तु भाई! बिना पुण्य के मिले कैसे? तेरे ये दिन बुरे हैं। लेकिन दुखी मत हो, और जिनदेव की आराधना कर, भक्ति में तल्लीन होजा, तेरा शुभोदय शीघ्र ही होगा उस समय अचानक धन लाभ होगा।

त, अ, त। हे भाई! तू प्रसन्न होकर सुन, तेरे हृदय में जो परदेश गमन तथा तीर्थयात्रा की इच्छा है तथा तेरे शरीर में

जो रोग या पीडा है वह एक महीने में दूर होगी, और इच्छानुसार धन लाभ होगा। तुझे सब प्रकार के आनन्द प्राप्त होंगे। तू बीच का यह एक महीने का समय श्री वीर प्रभु की सेवा में लगा।

त, र, अ। तुम्हारा डाला हुआ यह पासा प्रकट करता है कि तुझे धन की चिन्ता है, और इसीलिए तुम परदेश गमन करना चाहते हो। अतः हे सज्जन तुम जाओ। तुम्हें वहां धन का लाभ वस्त्र, आभूषण स्त्री पुत्रादि की प्राप्ति होगी। माता, पिता, और बन्धु का समागम होगा। यह सब गुरु सेवा का फल है। इसलिए हे भाई! तुम आगे भी श्री वीतराग भगवान की मन लगा कर सेवा करते रहो, इसी में तुम्हारा कल्याण है।

त, र, र। हे पृच्छक! तुम्हारी चिन्ता तुम्हारे पासे से ही प्रकट होती है। तुम्हारे घर में दरिद्रता ने पैर जमाये हैं, इसीलिए तुम रातदिन धन की चिन्ता करते हो, और उसी के उपाय भी करते हो, किन्तु अभी ३ वर्ष तक तुम्हारा शुभ का उदय नहीं। अतः इस समय के बाद ही तुम्हें सुख की सामग्री प्राप्त होगी, उसी समय तू किसी अन्य नये कार्य में मन लगाना। उसी से तुझे लाभ और यश मिलेगा।

त, र, डं, । हे सज्जन! यह बहुत शुभ पासा है। इसके प्रताप से तुझे सब कल्याण की सामग्री मिलेगी। जिनेन्द्र भगवान की सेवा के प्रभाव से सब विघ्न बाधाएँ पल भर में दूर होंगी। धन, पुत्र, युद्ध में विजय भाइयों के साथ प्रेम बढेगा। घर में लडाई झगड़े न होंगे। तुम्हारे सारे पाप, सन्ताप दूर होकर कल्याण की प्राप्ति होगी। तम इस सुख को स्थायी बनाने के लिए भगवान की आराधना करते रहो।

त, र, त, । यह बहुत अच्छा शकुन है। तुम्हारा मन धन की चिन्ता से दुखी है, बहुत दिन से तम चिन्ता कर रहे हो, पर अब

अच्छा समय आगया है। तुम्हें सुख की सामग्री, प्रियजनों का समागम, धन लाभ होगा। यदि परदेश गमन करो तो बहुत अधिक लाभ हो। वाद विवाद में जीत, सभ्य समाज में मान और प्रतिष्ठा मिलेगी। देव गुरु धर्म पर अटल श्रद्धा रखो।

त, हं, अ। पासा डालने पर जब ये तीन वर्ण पड़े तो बडा लाभ हो। सारे विघ्न और संकट दूर हों, जहाँ भी जायें वहीं इच्छित फल की प्राप्ति हो। धन, धान्य, वस्त्र, गाय, भैंस, घोडा आदि वैभव की सामग्रीका मिलाप हो। तीर्थयात्रा, परदेश गमन, युद्ध, समुद्र पार सर्वत्र सफलता ही सफलता प्राप्त होगी। इसलिए हे पृच्छक इस कल्पवृक्ष समान फलदाता शकुन का फल भोगता हुआ तू अपने इष्टदेव की सेवा में मन लगा।

त, हं, र। हे पूछने वाले! तेरा पाप का उदय है, तेरा लिया हुआ शकुन यही बताता है, तुम दुखी हो, कष्ट पा रहे हो, तुम्हारा धन नष्ट हो गया। शरीर में भी बिमारियाँ हो रही हैं। पुत्र और मित्रों का वियोग हुआ है, जो भी विचारते हो उसी से कष्ट बढते हैं। तुम्हारे घर में क्लेश पहुँचाने वाली लडाकू स्त्री है, या पुरुष है, और यही पाप दुख दे रहा है। इसलिए तू कुछ समय तक विपत्ति नाशक भगवान पार्श्वनाथ की पूजा कर इससे तुझे शान्ति मिलेगी।

त, हं, हं। हे शकुन लेने वाले! तेरा पाप का उदय है, अतः तू कुछ दिन युद्ध में या वाद विवाद झगड़े में योग मत दे। इन कामों में तुझे कष्ट ही उठाना पड़ेगा, धन की धर्म की हानि ही होगी। तुम्हारे घर में कलह, लड़ाई झगड़े चिन्ता का राज्य है, भाई बान्धव मित्र आदि भी शत्रु जैसे प्रतीत होते हैं। इसलिए अपना खोटा समय जानकर भगवान की भक्ति करता हुआ दुख नाश करने का उपाय सोच।

त, हं, त। हे भाई तुम्हारा शकुन मध्यम है। इसलिए जो तुम सोचते हो वह फल न होगा। कुछ दिन ठहरना ही ठीक है। पाप का उदय समझ कर चिन्ता मत करो, भावि बलवान होता है। मन में मृत्यु का भय मत कर, अज्ञान बुद्धि को छोड दे। सुख पाने के लिए महावीर प्रभु का स्मरण कर।

त, त, अ। हे प्रश्न-कर्ता तुम्हारा शुभ का उदय है, तुम्हें महान सुख मिलेगा, धन धान्य का समागम होगा। राज्य से भी आदर होगा। व्यापार में धन प्राप्त होगा। पुत्री का विवाह साथ ही तम्हें सुपुत्र की प्राप्ति भी होगी।

त, त, र। हे प्रश्न-कर्ता! तुम्हारा शकुन उत्तम है-तुमने सदा सुख ही पाया है, और आगे भी भाई बन्धु, पुत्र धन धान्य की बढवारी ही होगी। विदेश में भी सुख ही मिलेगा। सबसे मित्रता और बन्धुता का व्यवहार होगा। तुम्हारे शत्रु डर कर तुम्हारे मित्र होजायेंगें। घर में गाय, भैंस, घोडा आदि वाहन भी रहा करेंगे।

त, त, हं। हे भाई। तुम आलस्य छोड़कर उद्योग करो, तुम्हें लाभ होगा और मन की भावना पूरी होगी। तीर्थयात्रा पूजन विधान, सब सफल होंगे। तुम्हारे घर में जो रोग शोक है वह शीघ्र दूर होगा। सब प्रकार की भोग सामग्री प्राप्त होगी। अपने मन में किसी प्रकार का सन्देह मत कर। भगवान की भक्ति से सब सुख सामग्री सरलता से प्राप्त होजाती है।

त, त, त। हे पृच्छक तेरा शकुन बडा कल्याणकारी है। तुम्हारे मन चाहे कार्य सिद्ध होंगे। घर में पुत्र पौत्रादि का जन्म होगा। धन बढेगा, सुख बढेगा, विवाह होंगे। नष्ट हुआ धन पुनः प्राप्त होगा। शत्रु शत्रुता छोड़ेंगे। हितैषी मित्रों का मिलन होगा। तम सदा धर्म की आराधना करते रहो, यही सब सुखों का देने वाला है।

॥ इति ॥

.·.स्वप्नादि विचार.·.

शुभ स्वप्न

स्वप्न में किसी को रोते हुए देखना, भगवान की मूर्ति, चाँदी, रुपये भरे हुए कलश दिखाई देना, तीर्थ यात्रा करना, फलों का समूह देखना, साबुत फल का मिलना, चांवलों का समूह देखना, सूर्य, चन्द्रमा, मछली, बिना धूएँ की आग, साधु देखना तथा मुरदा ले जाते हुए दिखाई देना। यह सब अच्छे फल देने वाले स्वप्न हैं। गर्भ की अवस्था में शुभ स्वप्न देखने से यह जाना जाता है कि गर्भ का जीव पुण्यात्मा है।

अशुभ स्वप्न

किसी को हँसते हुए देखना, भगवान की मूर्ति तिरछी या हिलती हुई दिखाई देना, बाल बिखरे किसी स्त्री को को देखना, मकान आदि से गिरते हुए दिखाई देना, खाली वर्तन का देखना, घर से चांदी सोना आदि धन का जाते हुए दिखाई पडना, हाथी सर्प आदि द्वारा रास्ता रोकना, दूध का बिखर जाना, बिल्ली का रुदन, कव्वे गीदड की आवाज सुनाई देना, समुद्र में डूबते नजर आना राजा का सिंहासन हिलता हुआ देखना, नाचते तथा गाते हुए दिखाई देना, विवाह, सगाई, एवं शृंगार किए हुए किसी स्त्री का देखना, आदि अशुभ फल देने वाले स्वप्न है। इनके फल से बचने के लिए, भगवान् की पूजा-भक्ति करना चाहिए। तथा हवन आदि करना चाहिए।

चलते समय सफलता के चिह्न

किसी सौभाग्यवती स्त्री का सामने से भरा वर्तन लाना। रुपये चांदी का लाते दिखाई देना। मुरदे का जाते दीखना।

फूलों से भरा वर्तन, दूध का वर्तन पानी का वर्तन सामने आना। कोई शुभ समाचार सुनना।

चलते समय असफलता के चिह्न

तेल का वर्तन सामने आना, तेल का आना, सामने सीधे हाथ या ऊपर छींक होना, किसी का टोकना, जाते का पल्ला पकडना, रोने की आवाज आना, अशुभ समाचार मिलना, खाली वर्तन सामने आना, बिल्ली का रास्ता कटना, कुत्ते का रोना, कान मारना, लकडी का भारा सामने आना, कव्वे की आवाज सुनाई देना तीन ब्राह्मणों का घर से एक साथ चलना, नौ स्त्रियों का एक साथ घर से वाहर जाने को निकलना, पिता पुत्र तथा दो भाइयों का एक साथ निकलना। स्त्री का नंगे सिर वाल वखेरे दिखाई देना।

स्वर विज्ञान—

परदेश गमन, नये भवन के उद्‌घाटन में, नये गृह के प्रवेश समय, व्यापार के लिये वस्तुओं के खरीदते समय तथा प्राय: सभी शुभ कामों में नाक का वायां स्वर चलना शुभ माना गया है।

किसी शास्त्रार्थ करने में, विद्यारंभ में, विघ्न शान्ति में, युद्ध में व्यवहार में, भोजन में तथा इसी प्रकार के छोटे २ कामों में नाक का दाहिना स्वर चलना उत्तम माना गया है।

गमन

वायाँ स्वर चले तो पूर्व तथा उत्तर दिशा में नहीं जाना चाहिए दाहिना स्वर चले तो दक्षिण और पश्चिम दिशा में गमन नहीं करना चाहिए।

रात के समय वायां स्वर तथा दिन के समम दाहिना स्वर चलता हो तो यात्रा करना शुभ माना जाता है। जिस तरफ का

स्वर चलता हो उसी तरफ के पैर को पहले आगे बढ़ाना चाहिए, इससे कार्य में सफलता मिलती है ।

जब दोनों स्वर चल रहे हों तो ऐसे समय में किसी भी शुभ कार्य को प्रारंभ नहीं करना चाहिए।

दिशाशूल–विचार

वार		दिशा
सोम, शनिवार	—	पूर्व दिशा में
गुरुवार	—	दक्षिण दिशा में
रवि, शुक्रवार	—	पश्चिम "
बुध, मंगलवार	—	उत्तर में दिशा शूल होते हैं

परदेश जाने में दिशा शूल सामने और दाहिने अच्छा नहीं माना जाता। अगर किसी को किसी आवश्यक कार्य वश जाना ही पड़े तो नीचे लिखे अनुसार करना चाहिए।

मंगलवार हो तो गुड़, बुध को खांड, गुरुवार को राई, शुक्र को वायबिडंग, शनिवार को दही, रविवार को पान खाना चाहिए और सोमवार को काच देखना चाहिए। पश्चात् गमन करना चाहिए।

तिथि आदि का विचार

जैन ज्योतिष शास्त्र में तिथियों के ५ भेद किये गये हैं। नन्दा, भद्रा, जया, रिक्ता और पूर्णा। इन भेदों में से 'रिक्ता' शुभ कार्यों में वर्जित की गई है, शेष सब ठीक हैं। कौन से दिन कौनसी तिथि होती है? इसके लिए नीचे का चक्र देख कर ज्ञान किया जाय।

१	६	११	नन्दा
२	७	१२	भद्रा
३	८	१३	जया
४	९	१४	रिक्ता
५	१०	१५	पूर्णा

श्रेष्ठ योग

नन्दा तिथि के शुक्रवार होने पर, भद्रा को बुधवार, जया को मंगलवार, रिक्ता को शनिवार, पूर्णा को बृहस्पति पड़ने पर सिद्धि योग गिना जाता है। इस योग में किये गये सभी अच्छे कार्य फलप्रद होते हैं। नीचे दिये गये चक्र से ठीक प्रकार समझ लीजिए कि किस तिथि और कौन से वार को श्रेष्ठ योग होता है। मृत्यु योग वाले खाने में जो वार लिखे हैं, यदि उन तिथियों के दिन वे वार हों तो वे मृत्यु योग के सूचक हैं। यह अशुभ योग है। इसलिए कोई भी अच्छा कार्य इन दिनों प्रारंभ नहीं करना चाहिए।

तिथियां			शुभ-योग	मृत्यु-योग
१	६	११	शुक्र	रवि, मंगल
२	७	१२	बुध	सोम, गुरु
३	८	१३	मंगल	बुध०
४	९	१४	शनि	शुक्र०
५	१०	१५	गुरु	शनि०

दिन का चौघडिया

रवि०	सो०	मं०	बुध०	वृह०	शु०	श०
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल

सूचना:—ऊपर के विवरण से समझना यह चाहिए कि जिस दिन जो वार हो उस दिन उस वार के नीचे लिखा 'चौघडिया' (चार घडी का समय) सूर्य उदय होने के समय होता है। और उसे प्रथम चौघडिया समझना चाहिए। इस पहिले चौघडिया के उतरने के बाद उस वार से छटे वार का चौघडिया होता है। दूसरे के उतर जाने के बाद उस छटे वार के छटे वार का होता है। इसे उस दिनका तीसरा चौघडिया समझना चाहिए। जैसे:-रविवारके दिन पहला उद्वेग नाम का चौघडिया कोष्ठक में बताया गया है, अब आप दूसरे चौघडिये के लिए रविवार से छटे नम्बर का वार देखें तो शुक्रवार पडा! शुक्र के नीचे 'चल' लिखा है तो समझिये कि रविवार के दिन दूसरा चौघडिया 'चल' है। इसी प्रकार तीसरा चौघडिया निकलने के लिए शुक्रवार से पुनः छटे वार की गिनती करेंगे तो शुक्र से पहला शुक्र, दूसरा शनि इस प्रकार छटा बुधवार पडा। बुधवार के नीचे लाभ आया। एक चौघडिया १॥ घंटे तक

रहता है तो प्रातः काल से सायंकाल तक ८ चौघडिये हुय। इनमें अमृत, शुभ और लाभ ये तीनों उत्तम चौघडिये हैं। उद्वेग, रोग और काल अशुभ होते हैं। चल नाम का मध्यम हैं। अतः शुभ कार्य शुभ चौघडिये में ही करना ठीक है।

रात का चौघडिया

रवि०	सोम०	मंग०	बुध०	गुरु०	शु०	श०
शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

सूचना:—इसमें दिनके कोष्ठक से केवल इतना ही अन्तर है कि दिन के चौघडियों में एक वार चौघडिया उतर जाने के बाद दूसरे चौघडियों के लिए छटे नम्बर का वार लेकर दूसरा बनाया जाता है और इसमें पांचवां। शेष ऊपर के अनुसार ही समझना चाहिए जैसे:-रविवार के पहले चौघडिये में शुभ योग है तो दूसरे चौघडिये में गुरुवार पांचवें नम्बर पर होने से उसके नीचे लिखा अमृत योग होगा। इसी प्रकार गुरुवार के बाद पांचवा नम्बर सोमवार आया तो चल योग बैठा।

माला

जप के लिए माला उत्तम साधन है। परन्तु लोग माला के सम्बन्ध में प्रायः विवेक से काम नहीं लेते, अतः इच्छित लाभ नहीं हो पाता। माला दाहिने हाथ में रखनी चाहिए। अंगूठे और

अंगूठे से जो तीसरी अंगुली (मध्यमा) है, इन दोनों से माला फेरना चाहिए। दूसरी (तर्जनी) अंगुली से भूलकर भी माला न फेरना चाहिए। माला फेरते समय हाथ को हृदय के पास स्पर्श करते हुए रखना चाहिए। माला में जो सुमेरु होता है, उसे लांघना ठीक नहीं है। यदि दूसरी माला फेरनी हो तो वापस माला बदल कर फेरो।

आवर्त्त

आवर्त से जाप देना माला की अपेक्षा भी श्रेष्ठ है। प्राचीन काल में कर माला का ही जाप किया जाता था, क्योंकि इससे मन की एकाग्रता में अधिक सहायता मिलती थी और जाप मन की एकाग्रता के लिए ही किया जाता है। आवर्त के छः भेद हैं। यहां उनमें से दो भेदों का ही वर्णन किया गया है।

साधारण आवर्त

दाहिने हाथ की कनिष्ठा (सबसे छोटी)-अंगुली के नीचे के पोरवे से जाप प्रारंभ करें। कनिष्ठा के नीचे पोरवे से दूसरा, तीसरा, चौथा अनामिका (कनिष्ठा और मध्यमा के बीच की) के ऊपर का पांचवा मध्यमा के ऊपर का छट्ठा तर्जनी के ऊपर का सातवां तर्जनी के मध्य का आठवां तर्जनी के नीचे का नौवां मध्यमा के नीचे का दशवां अनामिका के नीचे का ग्यारहवां, अनामिका के मध्य का बारहवां मध्यमा के बीच का। इस प्रकार बारह जप हुए सो नौबार गिन लेने से एक माला पूरी होजाती है।

नन्दावर्त

इस आवर्त में तीन अंगुली के नौ पोरवोंही से काम लिया जाता है, और ६ पौरवों पर बारह वार गिनने से एक माला हो जाती है।

विधि:—तर्जनी अंगुली के ऊपर के पौरवे से प्रारंभ कर उसके क्रमश: तीनों पौरवे चौथा मध्यमा के नीचे का पांचवा अनामिका के नीचे का छटा अनामिका के मध्य का और सातवां अनामिका के ऊपर का आठवां मध्यमा के ऊपर का ९ वां मध्यमा के बीच का।

महामंत्र णमोकार मंत्र

णमो अरिहंताणं। णमो सिद्धाणं। णमो आइरियाणं। णमो उवज्झायाणं। णमो लोए सव्वसाहूणं।

यह मंत्रराज णमोकार मंत्र है। इससे वढकर तीन लोक में और कोई भी मंत्र नहीं है। पूर्व या उत्तर दिशा में मुंह करके पवित्र भाव से एक माला प्रति दिन फेरने से सव प्रकार का आनन्द मंगल रहता है, सब संकट दूर हो जाते हैं।

कल्याणकारी जैन मंत्र यंत्र संग्रह

मन्त्रों के आराधन में कुछ बातों का ध्यान रखना जरूरी है। सर्व प्रथम तो मन्त्र पर पूर्ण श्रद्धान हो। शरीर स्वस्थ हो। मन में विकार भाव न हो, शान्त चित्त हो। जपते समय मंत्र में पूरा ध्यान हो। इधर-उधर मन को जाने से रोके। जगह-जगह फैलावे नहीं। मैं अमुक काम के लिये अमुक मन्त्र जप रहा हूँ ऐसा कहता न फिरै। एकान्त स्थान हो, शुद्ध जगह हो। जहाँ मन्त्र जाप करे वहाँ पूरा होने तक दूसरा काम न हो। शुरू से विधान समाप्ति तक वही धूप दान, वही दीपक, वही माला चौकी वगैरह जो काम में आ रहे हों, वहीं रहें। उतने समय तक ब्रह्मचर्य से रहे। एक समय शुद्ध भोजन करे। जमीन या तखत पर सोवे। जाप की धोती, दुपटे, वनियान कोरे धोये गये हों। शुभ मिती समय में प्रारम्भ करें। आनन्द-पूर्वक पूरा होने पर दीन गरीबों को दान देवे। मन्दिर जी में पूजा-पाठ करावे। धूप, वाजार की कुटी हुई न लेवे। स्वयं साफ कर कूटे। घी का दीपक बराबर जलता रहे॥

सर्व कष्ट निवारक मन्त्र

१२१ का यन्त्र

ॐ ह्रीं लक्ष्मी

१० ॐ	३० ह्रां	७० ह्रीं	११ हूं
६६ ह्रौं	१२ ह्रः	अ ६	सि ३१
१३ आ	७२ उ	२८ सा	८ व
२६ ष	७ ट्	१४ न	७१ मः

जाप-मन्त्र—ॐ ह्रीं लक्ष्मी सुख विधायकाय श्री महावीराय नमः।

विधि—यन्त्र को केशर घिस भोजपत्र पर बनावे, सिंहासन पर विराजमान करे। घी का दीपक सामने जलावे, मन्त्र का सवा लाख जाप करे। दोनों समय मन्त्र जपै। सिद्ध होने पर भोजपत्र लिख तावीज में रख धूप दिखा २१ वार मन्त्र वोल सीधी भुजा में बाँधे दूसरे को देवे। लक्ष्मी प्राप्ति, भय निवारन, गर्भ-रक्षा।

लक्ष्मीदायक मन्त्र

ॐ ह्रीं नाना लक्ष्मी विभूति विराजमानाय श्री वृषभ देवाय नमः।

विधि—इस मन्त्र का ११ दिन २१ हजार जाप आदिनाथ भगवान् की प्रतिमा के सन्मुख विधिवत् करे। श्री चमत्कार

(माधोपुर) या ऋषभदेव (उदयपुर) क्षेत्र में जपने से विशेष लाभ होगा।

कार्य प्रारम्भ करने से प्रथम जपै

ॐ ह्रीं क्लीं ऐं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहत विद्यायै णमो अरहंताणं पाप क्लेशापहर निर्विघ्न कार्य समाप्ति करणाय वषट् ।

परदेश गमन, व्यापार, शादी, नौकरी, मकान, दूकान, बनाने आदि में प्रारम्भ में जपै। १०८ वार विधिवत् जाप करै।

राजभय-निवारक नोअक्षर का मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हम् नमः क्षीं स्वाहा: ।

पहले नो बार णमोकार मंत्र पढ़कर बाद में इस मंत्र की नो मालाएँ फेरे। लगातार २१ दिन तक जाप करने से सब प्रकार का राजसम्बन्धी या अन्य भय संकट दूर हो जाता है।

सर्व कार्य साधक मंत्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः स्वाहा।

इस मंत्र का सवा लाख जाप, निरंतर अन्तराय डाले विना करने से मन वाञ्छित सब कार्यों की सिद्धि हो जाती है। यह मंत्र गरीबी-धनहीनता का नाश करने वाला है। उत्तर या पूर्व दिशा की ओर मुख करके एक बार भोजन और ब्रह्मचर्य के साथ २१ दिनों में सवा लाख जाप करने से यह मंत्र सब कार्यों की सिद्धि करता है।

ऐश्वर्यदायक मंत्र

ॐ ह्रीं वरे सुवरे अ सि आ उ सा नमः।

इस मंत्र का एकान्त स्थान में प्रति दिन सुबह, दोपहर और शाम १०८ बार जाप करने से (अर्थात् तीनों समय में एक एक

माला फेरने से) सब प्रकार की संपत्ति, लक्ष्मी, और ऐश्वर्य प्रभाव की प्राप्ति होती है। किसी भी पद की प्राप्ति के लिए इसका जाप किया जा सकता है।

परिवार रक्षा मंत्र

ॐ अरिहय सर्वं रक्ष रक्ष हूँ फट स्वाहा।

इस मंत्र की एक माला प्रातः काल और एक माला सायंकाल फेरने से परिवार पर आये हुए सब आपत्ति और संकट दूर हो जाते हैं। माला फेरते हुए परिवार की रक्षा का ध्यान करना चाहिए

द्रव्य प्राप्ति मंत्र

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं सिद्धाणं आइरियाणं उवज्झायाणं साहूणं मम ऋद्धि वृद्धि समीहितं कुरु कुरु स्वाहा।

इस मंत्र का नित्य प्रातः मध्यान्ह और सांयकाल को प्रत्येक समय में बत्तीस ३२ बार मन में ही ध्यान करे। सब प्रकार की सुख समृद्धि, धन का लाभ और कल्याण हो।

सात अक्षरों का मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमः

यह बहुत प्रचीन और प्रभावशाली मंत्र है। सब प्रकार के सुख सम्पत्ति सम्बन्धी मनोरथ इससे पूर्ण हो जाते हैं।

मंगल कारी मंत्र

ॐ असिआउसा नमः

इस मंत्र का सूर्योदय के समय सूर्य की ओर मुख करके १०८ बार जाप करने से (एक माला फेरने से) गृह कलह दूर हो, शान्ति हो और धन सम्पत्ति की प्राप्ति हो।

कार्य सिद्धि कर्ता मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड स्वामिने नमः

इस मंत्र का एक लाख जप करने से कठिन से कठिन कार्य की सिद्धि हो, दरिद्रता दूर हो, लक्ष्मी की प्राप्ति हो। यह जाप २१ दिन में पूर्ण करे। एक बार भोजन करे, ब्रह्मचर्य से रहे और भूमि पर शयन करे।

पुत्र प्रदाता मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हम् असिआउसा नमः

पुत्र रत्न की प्राप्ति के लिए इस मंत्र का सवा लाख जाप करना चाहिए। पद्मासन लगाकर पूर्व या उत्तर को मुख रखकर ब्रह्मचर्य की साधना से जप करना चाहिए। इस मंत्र का १२५०० जाप करने से सब प्रकार का रोग संकट दूर हो जाता है। श्री महावीर भगवान की मूर्ति के सामने बैठकर जप करने से मंत्र में विशेषता आ जाती है।

सर्व कार्य साधक मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूँ अर्हं नमः

इस मंत्र का तीनों काल-सवेरे, दुपहर और सांयकाल १०८ बार जाप करने से तीनों समय में एक २ माला फेरने से सब कार्यों की सिद्धि होती है।

मंगल मंत्र

ॐ ह्रीं श्री नमिऊण असुर-सुर गरुल-भुयग-परिवंदिए गय किलेसे अरि हं सिध्दायरिए उवज्झाय-सव्वसाहूणंए ह्रीं श्रीं नमः

यह अतीव प्रभावशाली मंगलमंत्र है। इस मंत्र का शुद्ध उच्चारण

इस घंटाकर्ण मंत्र का २१ बार नित्य जप करने से राज भय, चौर भय, अग्नि और सर्पका भय दूर होवे। सब प्रकार की भूत प्रेत बाधा भी दूर हो।

दीपावली मंत्र

१	१४	४	१५
८	११	५	१०
१३	२	१६	३
१२	७	९	६
ॐ	ह्रीं	श्रीं	क्लीं

सूचनाः—दीपावली के दिन उपवास रखे, शुद्ध भाव से ब्रह्मचर्य पाले। पहली आधीरात तक "नमोत्थुणं समणस्स भगवतो महावीरस्स" इस मंत्र की माला फेरे और आधी रात के पश्चात् सूर्योदय तक "ॐ नमो भगवतो गोयमस्स सिद्धस्स बुद्धस्स अक्खीण महाणस्स" इस मंत्र का जापकरे। अर्धरात्रि के समय या सूर्योदय के समय केशर या अष्टगन्ध से यह यंत्र लिखे, लक्ष्मी की प्राप्ति हो, सब प्रकार से आनन्द हो।

श्रीचतुर्विंशति जिन स्तोत्र

आदो नेमि जिनं नौमि, संभवं सुविधिं तथा।
धर्मनाथं महादेवं, शान्तिं शान्तिकरं सदा॥ १॥
अनन्तं सुव्रतं भक्त्या, नमिनाथं जिनोत्तम।
अजितं जितकन्दर्पं, चन्द्रं चन्द्रसमप्रभम्॥ २॥

आदिनाथं तथा देवं, सुपार्श्वं विमलं जिनम् ।
मल्लिनाथं गुणोपेतं, धनुषां पञ्चविंशतिम् ॥ ३ ॥

अरहनाथं महावीरं, सुमतिं च जगद्-गुरुम् ।
श्री पद्मप्रभनामानं वासुपूज्यं सुरैर्नतम् ॥ ४ ॥

शीतलं शीतलं लोके, श्रेयांसं श्रेयसे सदा ।
कुन्थुनाथं च वामेयं, श्री अभिनन्दनं जिनम् ॥ ५ ॥

जिनानां नामभिर्बद्धः, पंचषष्टिसमुद्भवः ।
यंत्रोऽयं राजते यत्र, तत्र सौख्यं निरंतरम् ॥ ६ ॥

यस्मिन् गृहे महाभक्तया, यंत्रोऽयं पूज्यते बुधैः ।
भूत-प्रेतपिशाचादि-भयं तत्रन विद्यते ॥ ७ ॥

सकलगुणनिधानं, यंत्रमेनं विशुद्धम ।
हृदयकमलकोषे, धीमतां ध्येयरूपम् ।
जय तिलक गुरु-श्री सूरिराजस्य शिष्यो ।
वदति सुखनिदान, मोक्षलक्ष्मीनिवासम् ॥ ८ ॥

उपसर्गहर स्तोत्र [आचार्य भद्र बाहु स्वामी]

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ।
विसहर विस निन्नासं, मंगल-कल्लाण आवासं ॥ १ ॥
विसहर फुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ ।
तस्स गहरोग मारी, दुट्ठजरा जंति उपसामं ॥ २ ॥
चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामोवि बहुफलो होइ ।
नर तिरिएसु विजीवा, पावंति न दुक्खदोगच्चं ॥ ३ ॥
तुह सम्मत्ते लद्धे, चिन्तामणिकप्पपाय वब्भहिए ।
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥
इअ संथुओ महायस ! भत्तिब्भरनिब्भरेण हिलाएगा ।
ता देव ! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास जिणचंद ! ॥ ५ ॥

फलः– यह स्तोत्र महान प्रभावशाली है। उपसर्गहर स्तोत्र कामूल बीज मंत्र यह है—"नमिऊण पास विसहर वसह जिण फुलिंग।" इसलिए यदि कोई भीषण संकट आजावे तो पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख करके बैठे, सबसे पहिले "श्री भद्रबाहु स्वामि प्रसादात् एष योगः फलतु" ऐसा कहे, फिर ऊपर लिखे बीज मंत्र की एक माला फेरे और बाद में उपसर्गहर स्तोत्र २७ बार पढे। इस प्रकार २७ दिन तक निरंतर साधना करने से सब संकट दूर हो जाते हैं।

श्रीग्रह शान्तिस्तोत्र (भद्रबाहु-स्वामीकृत)

जगद्गुरु नमस्कृत्यं, श्रुत्वा सद्गुरुभाषितम्।
ग्रह शांति प्रवक्ष्यामि, लोकानां सुख हेतवे ॥ १ ॥
जन्म लग्ने च राशौ च, पीडयन्ति यदा ग्रहाः।
तदा संपूयेद् धीमान् खेचरैः सहितान् जिनान् ॥ २ ॥
पद्मप्रभस्य मार्तण्डश्चन्द्रप्रभस्य च।
वासुपूज्यस्य भूपुत्रो, बुधोष्टजिनेषु च ॥ ३ ॥
विमलानन्त-धर्मारा: शान्तिकुन्थुर्नमिस्तथा।
वर्धमानस्तथैतेषां, पाद-पद्मे बुधं न्यसेत् ॥ ४ ॥
ऋषभाजितसुपार्श्वश्चाभिनन्दनशीतलौ।
सुमितः सम्भवः स्वामी, श्रेयांसश्चैषु गीष्यति ॥ ५ ॥
सुविधेः कथितः शुक्रः, सुव्रतस्य शनश्चरः।
नेमिनाथ भवेद् राहुः, केतु श्रीमल्लिपार्श्वयोः ॥ ६ ॥
जिनानामग्रतः कृत्वा, ग्रहाणां शान्तिहेतवे।
नमस्कारशतं भक्त्या, जपेदष्टोत्तरं शतं ॥ ७ ॥
भद्रबाहुरुवाचैवं, पञ्चम श्रतकेवली।
विद्याप्रवादतः पूर्वाद्, ग्रहशान्तिरुदीरिता ॥ ८ ॥

ॐ ह्रौं श्री ग्रहाश्चन्द्रसूर्याङ्गारकबुधबृहस्पतिशुक्रशनैश्चर राहुकेतुसहिताः खेटा जिनपति पुरतोऽवतिष्ठन्तु मम धन-धान्य जय-विजय-सुख-सौभाग्य-धृति-कीर्त्ति-कान्तिःशान्ति-तुष्टि पुष्टि-वृद्धि-लक्ष्मी-धर्मार्थ कामदाः स्युः स्वाहा।

नोटः—ग्रहों की शान्ति के लिए यह स्तोत्र परम लाभप्रद है। २७ दिन तक निरंतर पाठ करने से सर्व प्रकार के अशुभ ग्रह शान्त होकर सुख की वृद्धि होती है।

चिंतामणि पार्श्वनाथ स्तोत्र

इस स्तोत्र का पाठ करने से सब प्रकार के कष्टों का निवारण होकर वांच्छित फल की प्राप्ति होती है।

ॐ नमः पार्श्वनाथाय, विश्वचिन्तामणीयते।
ह्रीं धरणेन्द्र-वैरोटया-पद्मादेवी युतायुते ॥ १ ॥
शान्ति-तुष्टि-महापुष्टि, धृति-कीर्त्ति-विधायिते।
ॐ ह्रीं द्विड् व्याल वेताल, सर्वाधि-व्याधिनाशिने ॥ २ ॥
जयाजिताख्या विजयाख्यापराजितयान्वितः।
दिशांपालैर्ग्रहैर्यक्षै विद्यादेवीभिरन्वितः ॥ ३ ॥
ॐ असि आउसायनमस् तत्र त्रैलोक्य नाथताम्।
चतः षष्ठि-सुरेन्द्रास्ते, भासन्ते छत्र चामरैः ॥ ४ ॥
श्री शंखेश्वर मण्डन पार्श्वजिन ! प्रणतकल्पतरुकल्प।
चूरय दुष्ट व्रातं, पूरय मे वांच्छितं नाथ ॥ ५ ॥

श्री वज्रपञ्जर स्तोत्र (रक्षास्तोत्र)

परमेष्ठिनमस्कारं, सारं नवपदात्मकम्।
आत्मरक्षा करं वज्र-पञ्जराभं स्मराम्यहम ॥ १ ॥
ॐ नमो अरिहताणं, शिरस्कं शिरसि स्थितम्।
ॐ नमो सव्व सिद्धाणं, मुखे मुखपटं वरम् ॥ २ ॥

ॐ नमो आयरियाणं, अङ्ग रक्षातिशायिनी।
ॐ नमो उवज्झायाणं, आयुधं हस्तयोर्दृढम् ॥ ३ ॥
ॐ नमो लोए सव्व साहूणं, मोचके पादयोः शुभे।
एसोपंच-णमोयारो, शिला वज्रमयीतले ॥ ४ ॥
सव्वपावप्पणासणो, वप्रो वज्रमयो बहिः।
मंगलाणं च सव्वेसिं, खादिराङ्गारेखातिका ॥ ५ ॥
स्वाहान्तं च पदं ज्ञेयं, पढमं हवइमंगलं।
वज्रोपरि वज्रमयं ज्ञेयं, विधानं देहरक्षणे ॥ ६ ॥
महाप्रभावरक्षेयं, क्षुद्रोपद्रवनाशिनी।
परमेष्ठिपदोद्भूता, कथिता पूर्व सूरिभिः ॥ ७ ॥
यश्चैवं कुरुते रक्षां, परमेष्ठि-पदैः सदा।
तस्य न स्याद् भयं व्याधिराधिश्चापि कदाचन ॥ ८ ॥

फलः—यह स्तोत्र पंच परमेष्ठि के मंत्र से बनाया हुआ है। यह शरीर की रक्षा के लिए कवच के समान है। इसका जो व्यक्ति भक्ति के साथ पाठ करता है, उसके शरीर पर किसी प्रकार की आधि-व्याधि का प्रभाव नहीं होता।

पंचषष्टि यंत्र स्थापना

२२	३	९	१५	१६
१४	२०	२१	२	८
१	७	१३	१९	२५
१८	२४	५	६	१२
१०	११	१७	२३	४

सूचना:—ऊपर लिखे चौवीसी स्तोत्र का २७ दिन तक २१ वार शुद्ध मन से ब्रह्मचर्य से रहकर एकान्त स्थान में पाठ करे,

सामने भोजपत्र पर केशर से लिखा हुआ यह यंत्रराज रखे। पाठ के समय धूप खेता जाय। निरंतर २७ दिन तक विधिवत पाठ करने से यंत्र सिद्ध हो जाता है। इस यंत्र को चाँदी के तावीज में रखकर दाहिने हाथ पर बांध लेने से सब प्रकार के सुखों की प्राप्ति होती है और भूत, प्रेत पिशाच आदि का भय, रोग शोक, कष्ट सब दूर होते हैं।

ग्रह पीडा नाशक मंत्र

१ ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं। सूर्य और मंगल की पीडा होने पर।
२ ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं। चंद्रमा और शुक्र की पीडा होने पर।
३ ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं। बुध की पीडा होने पर।
४ ॐ ह्रीं णमो आइरियाणं। गुरु-बृहस्पति की पीडा हो-तो।
५ ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं। शनि, राहु और केतु की पीडा पर।

उक्त मंत्रों में से जिस ग्रह की पीडा हो उसी का शान्ति मंत्र का जाप पीडा रहे तब तक नित्य एक हजार जाप करना उचित है।

ॐ

लक्ष्मी दायक मंत्र
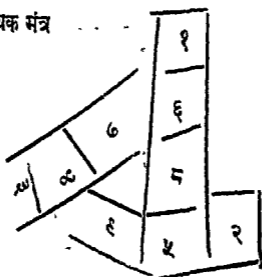
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं अर्हं नमः।

विधिः—दीपमालिका के २ दिन पहले से ही दीपमालिका तक लगातार ३ दिन एकाशन रख कर ब्रह्मचर्य से रहे, और तीन दिनों में मंत्र की ११ हजार जाप करे। जप के समय धूप दान में धूप खेता जाय। पुनः लक्ष्मी पूजन के दिन बही खातों में केशर से मंत्र एवं यंत्र लिखे। आने वाला सारा वर्ष लाभ दायक होगा।

भूतादि की बाधा निवारक मंत्र

ॐ ह्रीं भूत प्रेत बाधा निवारक श्री पद्मप्रभु देवायनमः स्वाहा

उक्त मंत्र की प्रातः मध्याह्न सायंकाल २१ दिन तक जाप देवे। जाप के समय शरीर वस्त्रादि की शुद्धि का ध्यन रखा जाय, और प्रत्येक मंत्र के साथ धूप दान में धूप खेवें तो सम्पूर्ण बाधा दूर हो श्री पद्मपुरा अतिशय क्षेत्र में पद्मप्रभु भगवान के मंदिर में बैठ कर जाप देने से विशेष लाभ हो।

कार्य सिद्धि मन्त्र

यंत्र
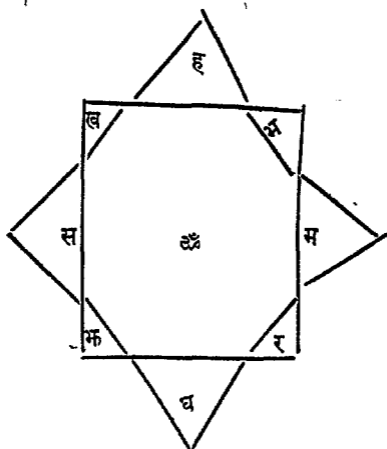
जाप मन्त्र—शिव ॐ वज्र से वज्र जुदे काया का सङ्कट कटे श्री पार्श्वनाथ जी सहाय।

विधि—ऊपर लिखे मन्त्र की सवा लाख जाप करै। २१ दिन तक रात्रि के ११ बजे से १ बजे तक निर्भय हो यन्त्र सामने विराजमान कर घी का दीपक जला धूप दान में अग्नि जला धूप देते हुए मन्त्र पढ़े। मनसा अवश्य पूरी हो।

(विपत्ति नाशक) चन्द्रप्रभु स्तोत्र

चन्द्रप्रभु प्रभाधीश, चन्द्रशेखर चन्दनम्।
चन्द्र लक्ष्म्याङ्क चन्द्रांकं, चन्द्र बीज नमोस्तुते ॥१॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री चन्द्रप्रभु श्री ह्रीं कुरुकुरु स्वाहा।
इष्ट सिद्धि महाऋद्धि, तुष्टि पुष्टि करो मम ॥२॥
द्वादश सहस्र जपतो, वांछितार्थ फल प्रदः।
महन्तं त्रिसंध्यं जपतः सर्वार्तिव्याधिनाशनम् ॥३॥
सुरासुरेन्द्रसहितः श्री पांडवनृपस्तुतः।
चन्द्रप्रभतीर्थेश श्रियं चन्द्रोज्वलां कुरु ॥४॥
श्री चन्द्रप्रभु विद्येयं, स्मृता सद्य फल प्रदा।
भवाब्धि व्याधि विध्वंसः, दायिनीमेव रक्षदा ॥५॥

यह चन्द्रप्रभु स्तोत्र सर्व विपत्तियों का नाशक शान्तिदायक चन्द्रप्रभु विद्या से गर्भित है। इसका शुद्ध मन से भगवान् चन्द्रप्रभु के सामने 'ॐ ह्रीं अर्हं श्री चन्द्रप्रभु श्री ह्रीं कुरु कुरु स्वाहा' इस मंत्र का १२००० जाप ११ दिन में करेगा वह मनो-वांछित फल को पायेगा।

कलि कुण्ड पार्श्वनाथ मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुंड दंड स्वामिन् श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय अतुल बल वीर्य परा-

क्माय ममात्म विद्यां रक्ष रक्ष पर विद्यां छिंद छिंद भिंद भिंद स्फ्रां स्फ्रीं स्फ्रूं स्फ्रौं स्फ्रः ह्रूं ह्रूं नमः स्वाहा।

विधि—२१ दिन प्रातःकाल सायंकाल स्नान कर शुद्ध वस्त्र पहन चौकी पर सिंहासन में विनायक यंत्र की स्थापना करै। घी का दीपक जलावै। ब्रह्मचर्य से रहे। जनेऊ धारन। करै एक लाख मंत्र का जाप करै। विधिवत क्रिया करै अन्तिम दिन हवन कुण्ड बना हवन करै। महोत्सव करे। संकट, रोग दूर होवे। धन लाभ पुत्र लाभ मुकदमे में जीत होवे।

शान्ति कारक मन्त्र

ॐ ह्रीं परम शान्ति विधायक श्री शांतिनाथाय नमः। प्रतिदिन जपे सब प्रकार।से शान्ति मिले

मस्तक पीडा निवारक मन्त्र

ॐ णमो अरिहंताणं, ॐ णमो सिद्धाणं।
ॐ णमो आइरियाणं, ॐ णमो उवज्झायाणं।
ॐ णमो लोए सव्व साहूणं,ॐ णमो णाणाय।
ॐ णमो दंसणाय, ॐ णमो चरित्ताय ॥
ॐ ह्रीं त्रैलोक्य वश्यकरि ह्रीं स्वाहा॥

विधि—आठ दिन ब्रह्मचर्य रह एक बार भोजन कर स्नान पूर्वक शुद्ध वस्त्र पहिन २१ हजार ऊपरका मंत्र जपे। भगवान की प्रतिमा के सामने घी का दीपक जला लौंग अग्नि में चेपे। पश्चात् जब कभी किसी के आधा सीसी, मस्तक दर्द होवे २१ बार मंत्र बोल कर जल पिलावे। तीन दिन ऐसा करै।

॥ इति ॥

श्री महावीर क्षेत्र नाटक

प्राक्कथन

श्री महावीर प्रभु की इस भव्य एवं मनोज्ञ मूर्ति के चमत्कार अवर्णनीय हैं। इन चमत्कारों के वर्णन पर अब तक कई पुस्तकें छप चुकी हैं। सभी में प्रभु भक्ति से प्राप्त होने वाले फलों का वर्णन किया गया है। परन्तु यह मनोज्ञ मूर्ति जमीन में आई कहाँ से यह बात एक प्रश्न ही बना रहा और बना हुआ है।

प्रस्तुत नाटक में हमने अपनी कल्पना से इस प्रश्न को सुलझाने का प्रयत्न किया है। हमारा यह दावा नहीं कि यह सत्य है पर यह सत्य हो सकता है। जिस प्रदेश में यह मूर्ति प्रकट हुई थी वह स्थान इतिहास प्रसिद्ध राणा और बाबर के युद्ध-स्थान फतेहपुर सीकरी के मैदान के पास भी पडता है। श्रीमहावीरजी से २० मील दूरी पर स्थित बयाना नगर कबरों के ढेर पर बसा हुआ है। कहते हैं कि अगर अढाई कब्र और बन जाती तो बयाना मक्का मदीना बन जाता। अस्तु।

हमारे कहने का तात्पर्य केवल इतना है कि इस लडाई में भागती हुई राजपूत सेनाओं का पीछा किया गया था और उसकी लपटों से उक्त प्रदेश भी झुलसा होगा। उसी अवसर पर लूटमार के भय से त्रस्त जनता ने यथासाध्यअपनी और अपने धर्म स्थानों की रक्षा की। जहाँ रक्षा न हो सकी वहाँ के देव मन्दिर तोड फोड डाले गये। भगवान महावीर की इस कला पूर्ण मूर्ति की रक्षा दो वीर सैनिकों एवं भक्त परिवार द्वारा किस प्रकार की गई यहीं से इस नाटक का प्रारम्भ हो जाता है। आइए अब आगे नाटक पढ़िये।

श्री महावीर क्षेत्र नाटक

अंक—पहला

दृश्य—१

[स्थान—खुला मैदान]

(दो सैनिक आपस में बातें करते आरहे हैं।)

चंद्रासिंह—वीरसेन! देख रहे हो सामने क्या है?

वीरसेन—हां, हां, विदेशियों के हृदयों को दहलादेने वाला यह वही विशाल भारतवर्ष है।

चंद्र०—विदेशी आक्रमणकारी कुचल रहे हैं, लूट रहे हैं, हम नष्ट हो रहे हैं।

वीर०—चंद्रासिंह! ऐसा आश्चर्यजनक परिवर्तन होजाने का किसे अनुमान था। हमारी सारी आशायें मिट्टी में मिलगईं। कौन कह सकता था कि महाराणा संग्रामसिंह के सेनापतित्व में राजपूतों की विशाल सेना इस गतिको प्राप्त होगी।

चंद्र०—वह दृश्य अबतक स्मृतिमें ताजा बना हुआ है। मुगलों से चारों तरफ से राणाजी घिर कर खड़े हैं। शत्रुओं ने राजपूतों के सामने गायें करदीं, वे आगे न बढ सके और और मुगल लगातार गोले बरसा रहे हैं। एक राजपूत सेना भी विश्वासघात कर अब उन्हीं की सेना पर धावा बोल रही थी। बहुत घायल होकर भी वे निराश न हुए।

वीर०—(सामने देखकर) यह सामने से कौन आता है?

चंद्र०—कोई घबराया हुआ मालूम होता है।

(भोलाराम अपनी कन्या सहित आता है।)

भोला—आह ! भागते भागते प्राण निकले जाते हैं।

वीर०—तुम कौन हो ? और तुम पर ऐसी क्या आफतआपडी ?

भोला—क्या तुम्हें पता नहीं ? तुम्हारा जीवन, तुम्हारी संपति मां तुम्हारीं मां बहनों की लाज, पवित्र देव मूर्तियां, धर्म-कर्म सब कुछ तो तबाह होने को है और तुम इसतरह अन जान बने हो !

करुण क्रंदन दीन जन का श्रवण कर,
क्यों तुम्हारा हृदय फट जाता नहीं ?
धर्म पर आघात होते देखकर,
खून में क्यों जोश अब आता नहीं ?
दिन दहाडे देवियों की लाजपर—
गाज पड़ती देखकर तुम मौन हो ?
तुम मनुज हो या कि तुम पाषाण हो
क्या कहें, कैसे कहें, तुम कौन हो ?

वीर०—सत्य ही है। हम मनुष्य होकर भी मानवजाति के लिये कलंकस्वरूप हैं, हम मातृभूमि पर भार हैं।

भोला—युवक, मेरे वचनों ने तुम्हें दुःख दिया है, तुमभी मेरी ही तरह दुःखी मालूम होते हो।

चंद्र०—हम आपका परिचय प्राप्त करना चाहते हैं।

भोला—मैं तो एक साधारण व्यक्ति हूँ, देश की इस हालत से व्याकुल हूँ। यह पुत्री है, इसे ससुराल से लाकर अपने घर जारहा हूँ। रास्ते के दृश्यों ने मुझे दुखी बनाया है।

चंद्र०—क्या कोई विशेष बात देखीहै ?

भोला—राहगीरों का जीवन सुरक्षित नहीं, देवमंदिरों पर आघात होते देखा और निरपराध नरनारियों को देव प्रतिमाओं की रक्षार्थ व धर्म की रक्षा के लिये बलिदान होते देखा। यह क्या कोई विशेष बात नहीं ?

चंद्रा०—हम तो सुनते हैं कि बाबर धर्म के संबंध में कोई रुकावट नहीं रखता।

भोला—हो सकता है कि यह सत्य हो, किंतु उसके सभी साथी तो वैसे नहीं। वह तो प्रभुत्व स्थापित कर राज्य करने की इच्छा रखता है, उदारता उसमें होगी, लेकिन उसके साथी ही इस समय अत्याचारी बने हैं।

वीर०-कब तक इन बातों को सहन किया जा सकता है, चाहे हमारे प्राणों का खतरा क्यों न आपडे, किसीभी तरह स्वधर्म रक्षा करना हमारा कर्तव्य है। चंद्रसिंह ! तुम इन लोगों के साथ जाकर इन को सुरक्षित घर पहुँचावो और मैं दूसरी ओर असहाय लोगों की यथासाध्य सहायता का प्रबंध करता हूं।

भोला-भगवान करे, तुम्हारे मनोरथ सफल हों। हमारे लिये आप कष्ट उठाने की आवश्यकता अनुभव करते हैं, यह आप की महानता है और आपका यह उपकार मैं हमेशा मानता रहूंगा।

चंद्रसेन-वीरसेन ! मैं जारहा हूं। तुम यथा संभव शीघ्र मिलने का प्रयत्न करना, मैं घर पर ही मिलूंगा।

वीर-अवश्य।

(वीरसेन का एक ओर और चंद्रसिंह का भोला व उसकी कन्या सहित दूसरी ओर प्रस्थान)

दृश्य-२

[स्थान-घर का एक भाग]

(भगवान की प्रतिमा के सामने बैठीहुई भोला की स्त्री गारही है)

गायन—

प्रभो ! सेवामें कुछ उपहार, लेकर आज आई हूँ ।
हृदय के भाव माला में, पिरोकर आज लाई हूँ ॥
मैं अबला दीन बेचारी, तुम्हीं आधार हो जिसके ।
सुनाने को तुम्हें अपनी कहानी आज आई हूँ ॥
भरे हैं लोचनों के सिंधु में अनमोल जो मोती ।
उन्हों को चरण कमलों में चढाने आज लाई हूँ ॥

(भोलाराम का पुत्री सहित प्रवेश)

स्त्री—रूपा । बेटी तू आ गई ।

रूपा—माँ ।..................(दोनों गले मिलते हैं)

भोला—रूपा की माँ ! क्या तुम अभी तक पूजा पाठ ही कर रही हो ?

रूपा की माँ—करती भी क्या ? आप लोगों के न होने से मन भी तो नहीं लगता । अब भगवान की कृपा से आप लोग सकुशल आ पहुँचे और देखो तो भगवान का कैसा मोहक रूप है ?

है कैसा रूप अनूप दिव्य, शोभा मन हरने वाली है ।
छवि कैसी सुन्दर पावन है, मन मोहक और निराली है ॥

भोला—देवी ! तुम्हारी भावभक्ति देखकर मुझे हर्ष होता है ।

स्त्री—स्वामी ! यह तो प्राणी मात्र का कर्त्तव्य है कि अपने उपास्य देव का सदैव स्मरण करे ।

जिसके घर में भाव भक्ति की, शुचि पावन धार नहीं वहती ।
रहती है सदा अशान्ति वहां, शोभा संपदा नहीं रहती ॥

(नैपथ्य से)—रूपा ! रूपा !

भोला—कौन ? चंद्रासिंहजी ! आ जाइये न !

स्त्री—यह चंद्रासिंहजी कौन हैं ?

भोला—हमारे नये मित्र और सहायक हैं।

(चंद्रासिंह का प्रवेश)

रूपा—भैया ! यह क्या ? तुम्हारे वस्त्र तो खून में रंग गये हैं।

भोला—ज्ञात होता है कहीं किसी से भयंकर मुठभेड़ हुई है ।

चंद्रा०—हाँ, मैं कई सैनिकों के बीच घिर गया था। खैर, यह बातें तो होती रहेंगी। पहिले अपनी रक्षा का उपाय शीघ्र ही कर लेना उचित है।

रूपा की मां—क्यों ? क्या मामला है ?

चन्द्रा०—विजय के मद में मदमाते सैनिक लूटमार करते फिर रहे हैं, सब तरफ अशांति और अव्यवस्था फैली है। शत्रु यहां से कुछ ही दूरी पर हैं और इधर ही आने वाले हैं। वीरसिंह उन्हें रोकेंगे अवश्य, किंतु उनकी शक्ति के विरुद्ध सफल होना दुर्लभ है।

रूपा की मां—तो अब क्या करना चाहिये ?

चन्द्रा०—इस स्थान को कुछ समय के लिये छोड़ देना ही उचित है जिससे प्राणों की रक्षा तो हो जावेगी।

भोला—चन्द्रासिंह ! तुम रूपा और रूपाकी मां को लेकर समीपवर्ती गांव में चले जाओ। वहां मेरे भाई का घर है। इन दोनों को वहां छोड़ देना। वहां इनकी रक्षा अवश्य हो सकेगी। मैं यहां रहकर भगवान की मूर्त्ति की रक्षा का उपाय करता हूँ।

चन्द्रा०—नहीं, हम आपको यहां अकेला नहीं छोड़ सकते। पहले

मूर्त्ति का प्रबन्ध करके ही हम सब लोग साथ-साथ ही चलेंगे। आपने मूर्ति की रक्षा का क्या उपाय सोचा है?

भोला—मेरा विचार तो यह है कि इस प्रतिमा को यहीं पृथ्वी में दबा दिया जावे और फिर जब उपद्रव शान्त हो जावे तो इसको फिर निकाल कर स्थापित कर दिया जावे।

रूपा की मां—यह तो भगवान का महान अपमान है।

भोला—किन्तु इसके अतिरिक्त अन्य उपाय भी क्या है? मूर्त्ति खण्डित होने से तो यही अच्छा है कि इस प्रकार उसकी रक्षा हो जाये।

रूपा की मां—जैसी इच्छा।

चन्द्रा०—काम शुरू करिये। विलम्ब करने से अपने प्राणों की रक्षा भी न हो सकेगी।

भोला—आइये! हम दोनों ही इस कार्य को पूरा करें।

(भोला और चन्द्रासिंह जमीन खोदकर मूर्ति को मिट्टी में दबाने का कार्य करते हैं।

रूपा की मां—आह! आज इस देवालय की यह दशा? क्या यही दृश्य देखने के लिये हमारा जीवन अब तक बना हुआ है? नहीं, नहीं; मूर्ति को मिट्टी में न दबाओ, भगवान का निरादर न करो।

(मूर्त्ति की ओर दौड़ती है)

भोला—नादान न बनो रूपा की मां! हम लोगों के बलिदान से भी इस प्रतिमा की रक्षा न हो सकेगी। शोर न मचाओ और शान्ति से इस कार्य को पूरा हो जाने दो।

रूपा की मां—आह! भगवान!

रूपा—मां, अधीर न हो, समय को देखकर कार्य करना चाहिये। हृदय पर पत्थर रखकर यह सब कुछ सहन करने की आव

श्यकता है। विधर्मियों के हाथों से कलंकित होने की अपेक्षा यही उपाय अधिक श्रेष्ठ है।

सुनता है कौन जग में, दुख से भरी कहानी।
सब जान बूझ कर भी, अनजान हो रहे हैं॥
अपराध कुछ हुआ है, हम से कि जिसके कारण।
हम से विमुख हमारे, भगवान हो रहे हैं॥

(बाहर कोलाहल सुनाई देता है 'मारो' 'काटो' 'लूटलो' की आवाजें आती हैं)

रूपा—हैं! यह शोर कैसा? मालूम होता है कि लुटेरे यहां भी आ पहुंचे। काका! अब क्या होगा?

चन्द्रा०—जो भाग्य में लिखा होगा। हमारा कार्य तो समाप्त हो चुका। अब यहां से फौरन भाग चलना चाहिये।

रूपा—किन्तु भाग कर कहां जायंगे? बाहर तो मार काट मच रही है।

(द्वार खटखटाने का शब्द होता है)

नैपथ्य से—अगर दरवाजा न खुले तो तोड़ डालो।
" और आग ही क्यों न लगा दो।
" हां ठीक है। ठीक है।

रूपा—ओह! भगवान!

(बाहर से लुटेरे आग लगाते हैं, आग तेजी से बढने लगती है)

चन्द्रा०—ओह! आग तो बढ़ती आ रही है। लुटेरों ने चारों तरफ आग लगादी है। बचने की अब कोई सूरत नजर नहीं आती। शायद इसी तरह यहां बिना मौत मरना होगा।

रूपा—हे भगवान्! हे अनाथों के नाथ! क्या यही तुम्हारा न्याय है? क्या इसी भरोसे तुम भक्त वत्सल और दया सिन्धु के नाम से पुकारे जाते हो? रक्षा कीजिए, उद्धार कीजिए! इस विपदा से भगवन्!

[बाहर फिर कोलाहल सुनाई देता है
दौड़ो, दौड़ो,......की आवाजें आती हैं)

चन्द्रा०—यह आवाजें तो लुटेरों की मालुम नहीं होती ?

वीर —(आग में घुसता हुआ अन्दर आ जाता है) ओह ! यहाँ तो कई प्राणी हैं।

चन्द्रा०—कौन ? वीर सेन !

वीर०—चन्द्रासिंह ! तुम भी यहीं हो और इस प्रकार कायर की मौत मर रहे हो ? लज्जा नहीं आती तुम्हें ! चलो, जल्दी निकलो और इन लोगों को भी निकालो। बाहर मेरे साथी खड़े हैं। घबराने की कोई बात नहीं। लुटेरे भाग चुके हैं।

रूपा—भगवन् ने हमारी प्रार्थना सुनली।

(सब लोग आग की लपटों में होते
हुये तेजी से निकल जाते हैं)

दृश्य—३

[स्थान—दयाराम के घर का एक भाग]

(दयाराम चमार गाते २ घर का काम करता जाता है)

गायन

पतितों को पार उतारना, तुम्हें याद हो कि न याद हो।
भक्तों को नाथ उबारना, तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥
मैंने वक्त यूं ही गँवा दिया, तेरा नाम भी न कभी लिया।
मेरे दोष सारे विसारना, तुम्हें याद हो कि न याद हो।
यह दास नाथ अनाथ है, लज्जा तुम्हारे ही हाथ है।

यह अधम है इसको उबारना, तुम्हें याद हो कि न याद हो।

(दयाराम की स्त्री सुखिया का प्रवेश)

सुखिया—हाँ, हाँ, हम पतित हैं, नीच हैं। जब हमही अपने को ऐसा कहते हो, तो बेचारे दुनियावाले क्यों न कहें, वे हमसे घृणा क्यों न करें। अवश्य ही दुतकारेंगे फटकारेंगे भी।

दयाराम—अरे, रे' क्यों? क्या हुआ? किसने क्या कह सुना दिया? कुछ बताओ तो।

सुखिया—बात क्या होती? चौराहे वाले मंदिर में आरती देखने के लिये अपना बालू चला गया, लोगों ने बुरी तरह फटकार कर बाहर निकाल दिया। कहने गले कि चमार: का लड़का भीतर कैसे आगया।

दयाराम—बस, इतनी सी बात है। शांति रखो, सुनो, जब हमें किसी बड़े आदमी से मिलना होता है तो साफ सुथरे कपड़े पहिन कर सावधानी पूर्वक जाते हैं, तो क्या भगवान् के दरबार में जाते समय इन बातों का ध्यान नहीं रखना चाहिये? इस पर भी यदि वे लोग हमसे घृणा करें तो हम दोषी नहीं। यदि हम अपने धर्म और सत्य पर रहें तो भगवान् अवश्य हमारी सहायता करेंगे।

सुखिया—लेकिन् भगवान भी हमसे उदासीन हैं।

दयाराम—नहीं, वह समानदर्शी है, उसके लिये छोटे बड़े सब बराबर हैं। वह ऊँचनीचमें भेद नहीं करता।

सुखिया—तब वह हमें दर्शनों से वंचित क्यों रखता है?

दयाराम—हमारे भाव शुद्ध और भावनायें सच्ची होनी चाहिये। हम अपनी सच्ची श्रद्धा व भक्ति से भगवान् को अपने वश में कर सकते हैं।

शुचि प्रेम सहित होता प्रभुका गुण गान वहीं प्रभु रहते हैं।
भगवान् भक्त के वश में हैं यह शास्त्र हमारे कहते हैं॥

बालू—(आकर) दादा ! दादा !!

दयाराम—हां, बेटा ! क्या बात है ?

बालू—गाय ने तो आज भी दूध नहीं दिया। उसके थनों में बिल्कुल दूध ही नहीं है।

सुखिया—यह क्या बात है कि हमारी गाय का ही दूध कोई चुरा लेता है। कल भी ऐसा ही हुआ था, परसों भी ऐसा ही हुआ। रोजाना ही ऐसा हुआ करेगा तो कैसे काम चलेगा ?

दयाराम—हां, है तो आश्चर्य की ही बात। इसका पता लगाना आवश्यक है। कम से कम चोर का पता तो लगना चाहिये। इस प्रकार चोरी करने से क्या लाभ ? यदि दूध की इच्छा ही है तो मांग कर ले सकता है।

बालू—मैंने तीन दिन से दूध ही नहीं पिया। आज तो मैं जरूर पिऊंगा।

सुखिया—पियेगा कहां से, जब गाय ने दूध ही नहीं दिया।

दयाराम—तेरे लिये दूध का प्रबन्ध मैं करता हूँ। परेशान मत हो।

सुखिया—दूध का प्रबन्ध तो हो जावेगा किन्तु कल तुम स्वयम् गाय की निगरानी करके देखना कि क्या बात है और कौन ऐसा चोर है जो रोजाना हमारी गाय का दूध चुरा लेता है।

दयारा—हां कल अवश्य ऐसा ही करूंगा। चलो बेटा बालू !

(बालू के साथ जाना)

सुखिया—हमारे शत्रुओं की संख्या बढती ही जाती है। लोग हमारे लिये गाय का दूध भी छोडना नहीं चाहते।

भगवान ! हम पर तुम्हारी ऐसी कोप-दृष्टि क्यों है ? हमने ही तुम्हारा क्या बिगाड़ा है जो हम पर नित्य नये संकट ढाहे जा रहे हो ? क्या तुम्हारे हृदय में भी हमारे प्रति हमें दलित समझकर घृणा के भाव उत्पन्न होने लगे हैं ?

(पटाक्षेप)

दृश्य—४

[स्थान—जंगल]

(दयाराम की गाय कुछ दूर चर रही है और वह स्वयं एक ओर खड़ा हुआ है।)

दयाराम—अहा ! कैसा सुहावना समय है। दिन समाप्त होने को है। सूर्य देवता दिन भर अपना कर्तव्य पालन कर अस्ताचल की ओर बढ़े जाते हैं। पश्चिम का आकाश सिंदूरी रंग में खिल उठा है, पक्षीगण अपने नीड़ों की ओर विदाई गीत गाते चले जा रहे हैं। अंधेरा छाया जा रहा है।

सुखिया—(आकर) धन्य महाराज ! गाय की रखवाली इसी प्रकार होती है कि गाय कहीं है और आप स्वयं आनंद में मस्त बने शोभा ही निहार रहे हैं। मैं तो जानती हूँ न, कि इनसे रखवाली हो चुकी।

दयाराम—अरे सचमुच मुझे तो गाय का ध्यान ही नहीं रहा। वैसे तो मैं काफी सावधान हूँ। हाथ में मेरे डंडा है और मैं यही बैठा हूं। क्या चोर का इतना साहस हो सकता है कि ऐसी दशा में वह यहा आ जाये और हमारे सामने ही चोरी करले।

सुखिया—आप तो यहां बैठे हुये हैं और गाय का पता ही नहीं है। बताइये गाय कहां है ?

भगवान महावीर की मूर्ति प्रकट
होने का दृश्य

श्री १००८ महावीर भगवान (चाँदनपुर)

दयाराम—यहीं तो है ?

सुखिया—कहां ?

दयाराम—अभी तो यहीं थी। जरा देखो तो यहीं कहीं होगी।

सुखिया—यहीं कहीं क्या खाक होगी। यह सब आपकी लापरवाही का नतीजा है। क्या इसी तरह रखवाली हुआ करती है। जरूर कोई चोर गाय को कहीं ले गया है और उसका दूध निकाल रहा है।

दयाराम—घबडाने की कोई बात नहीं है अभी पता लग जावेगा। तुम उस तरफ जाकर देखो, मैं इस तरफ देखता हूं। वह अवश्य ही यहीं कहीं आस पास ही होगी। वह कहीं दूर नहीं जा सकती। ठहरो...ठहरो...जरा यहां आओ। उस झाडी की तरफ देखो। वह वहाँ खडी है। किन्तु यह क्या...उसके थनों से तो दूध बहरहा है।

(सुखिया जाते जाते रुक जाती है)

सुखिया—हां सचमुच गाय के थनों से तो दूध बहरहा है।

दयाराम—वहां तो कोई नजर भी नहीं आता। यह कोई जादू तो नहीं है ? हम कोई स्वप्न तो नहीं देख रहे हैं ? ऐसा तो कभी नहीं देखा और न पहले कभी सुना ही है कि गाय अपने आप दूध बहा कर थनों को खाली करदे।

सुखिया—मुझे तो कुछ दाल में काला नजर आता है।

दयाराम—क्या मतलब ?

सुखिया—यहां किसी अज्ञात शक्ति का गुप्त निवास मालूम होता है। क्योंकि बिना किसी प्रभावशाली शक्ति के किसी का यह काम नहीं हो सकता।

दयाराम—तुम्हारा मतलब प्रेतात्माओं से है ?

सुखिया—नहीं, प्रेतात्माओं में मेरा विश्वास नहीं है। अदृश्य अज्ञात शक्ति से मेरा अभिप्राय किसी दैवी शक्ति से है।

दयाराम—हां, तुम्हारा अनुमान सत्य हो सकता है। यह किसी दैवी शक्ति का प्रभाव है जिसने हमें तीन दिन से परेशान कर रक्खा है।

सुखिया—यह टीला जहां गाय खडी है देव का टीला ही तो कह लाता है और कहा जाता है कि यहां किसी देवता का प्रभाव है।

दयाराम—क्या सच ? यह स्थान देव का टीला ही है।

सुखिया—हां, हां, सत्य ही तो है। यह इसी नाम से प्रसिद्ध है।

दयाराम—तब तो निश्चय ही हमारे चोर का पता लग चुका है अवश्य ही किसी दैवी शक्ति ने ही हमारी गाय के दूध की चोरी की है। किन्तु हम अनुमान से ही विश्वास कैसे करलें जब तक कि हम इस को प्रत्यक्ष न देख लें ! हमें प्रयत्न करके इस टीले का रहस्य मालूम करना चाहिये ताकि हृदय को पूर्ण सन्तोष हो जाये।

सुखिया—यह किस प्रकार होगा ?

दयाराम—हम इस टीले को खोदकर देखेगे कि इसमें किस दैवी शक्ति का निवास है। लाओ, एक फावड़ा लाओ, मैं अभी खोदना शुरू करता हूँ।

सुखिया—अभी लाती हूँ।

दयाराम—आज एक महान रहस्य का उद्‌घाटन होने वाला है। हृदय में कुछ विचित्र भाव उत्पन्न हो रहे हैं। ऐसा क्यों है ? क्या कोई नवीन बात प्रकट होने वाली है ?

सुखिया—(आकर) यह लीजिये फावडा तो मैं ले आई। अब टीले को खोदने का काम आपका है।

दयाराम—हां, यह कार्य तो मैं स्वयम् ही करूंगा। चलो, टीले के पास ही तुम भी खडी रहना।

सुखिया—हां, हां, चलिये!

[दोनों टीले के पास जाते हैं। दयाराम टीला खोदता है]

दयाराम—[खोदते-खोदते कुछ समय बाद] ओह! इस टीले की तो थाह मालूम नहीं होती। देखो, टीला कितना खोद लिया गया; किन्तु दूध की धारा अभी तक वैसी ही चमक रही है।

सुखिया—आप पसीने में नहा गये हैं इसलिये अब रहने दीजिये।

दयाराम—हां, पसीने में तो अवश्य नहा रहा हूँ किन्तु शरीर में पहले जैसी ही स्फूर्ति बनी हुई है। थकान अवश्य मालूम होती है किन्तु मन में वैसी ही उमंग मौजूद है। यह दूध की धारा जहां तक जायेगी वहां तक खोदना आवश्यक है। अधूरा कार्य छोडने से क्या लाभ? जब कार्य हाथ में लिया है तो पूर्ण करके ही हटना उचित है।

सुखिया—यह तो सत्य है किन्तु दिन ढल चुका है और रात्रि का अन्धकार बढता जा रहा है। मेरी राय तो यही है कि इस समय इस कार्य को यहीं छोड दिया जावे और कल प्रातःकाल होते ही फिर इस कार्य को आरम्भ करके कल ही समाप्त कर दिया जावे।

दयाराम—यदि तुम्हारी यही हठ है तो जैसा तुम कहती हो वही किया जावेगा। इस कार्य को अभी यहीं छोडकर कल भोर होते ही इसे पूर्ण करने की भरसक चेष्टा करेंगे।

जहां तक होगा कल अवश्य ही इस कार्य को पूरा कर दिया जायेगा।

सुखिया—चलिये तो अब घर चलें। समय काफी होगया है।

दयाराम—चलो। [दोनों का जाना]

दृश्य—५

[स्थान—जंगल (देव का टीला)]

(दयाराम हाथ में फावड़ा लिये आता है)

दयाराम—आहा! वह कौन था? किसके मधुर वचन कानों में अमृत घोल रहे थे? किसने मुझे मोहनिद्रा से जगाया, वह अवश्य कोई अदृश्य शक्ति थी जो मुझे अपने अधूरे काम को पूर्ण करने के लिये प्रेरणा देती थी। मुझे अब जल्दीही भगवान के दर्शन प्राप्त होंगे।

(टीले के पास पहुँच कर खोदने का काम शुरू करता है।)

सुखिया—[आकर] मैं खाना लेकर आगई हूँ। जब आप थक जावें और भूख लगे तो खालेना।

दयाराम—अब तो मैं कार्य पूर्ण करने परही विश्राम करूंगा और खाना भी तभी खाऊंगा।

सुखिया—क्या जब तक कार्य पूरा न होगा आप जलपान भी न करेंगे।

दयाराम—हाँ, मैंने ऐसा ही निश्चय किया है। मेरा ध्यान केवल इस टीले पर ही केन्द्रित है और मेरा मन इसी ओर लगा हुआ है। जब तक इस दूध की धारा का थाह न मिल जावे तब तक मेरे हृदय को शान्ति प्राप्त न होगी।

सुखिया—आपने यह तो कठोर ही प्रण किया है। इस काम का क्या पता कब तक समाप्त हो। यह तो भूमि है, इसकी थाह मिलना साधारण बात नहीं।

दयाराम—कुछ भी हो। मैं जो कुछ निश्चय कर चुका हूं वह अटल है।

निभाया जिसने है अब तक, वही आगे निभायेगा।
वही भगवान निश्चय, लाज भक्तों की बचायेगा॥

सुखिया—यदि आपका यही निश्चय है तो भगवान अवश्य आपकी मनोकामना पूर्ण करेंगे। सच्ची लगन से जो भी कार्य किया जावे वह अवश्य पूर्ण होता है।

[दयाराम फिर खोदने का कार्य करने लग जाता है]

दयाराम—भगवान करे ऐसा ही हो।

सुखिया—भगवान! भक्त की हठ देख रहे हो? उसके प्रण की लाज तुम्हारे ही हाथ है। तुम्हारी ही प्रेरणा से यह सब कुछ हो रहा है और तुम्हारी ही कृपा से यह कार्य पूर्ण होगा।

गाना—

भगवान भक्त की लाज न जाने पावे।
मर्यादा आपकी भी न कहीं मिट जावे॥

सुनते हैं भक्तों पर पड़ती जब विपदा।
आते हो करते हो तुम उनकी रक्षा॥

गुण शास्त्र आदि ने यही आपके गाये।
भगवान भक्त की लाज न जाने पावे॥

इस बेर सुनी नहिं बिनती अगर हमारी।
संसार हंसेगा, होगी हंसी तुम्हारी॥

बल हीन तुम्हारा भक्त कहीं न कहावे।
न भक्त की लाज न जाने पावे॥

[दयाराम टीला खोद रहा है उसका हाथ अचानक रुक जाता है]

दयाराम—हैं? यह क्या हुआ? मेरा हाथ क्यों रुक गया?

सुखिया—क्या बात है?

दयाराम—भूमि सख्त हो गई है। हाथ आगे नहीं चलता।

सुखिया—कोई पत्थर आगया होगा।

[उसी समय आकाशवाणी होती है]

आकाशवाणी—सावधान! इस टीले में भगवान महावीर की पवित्र प्रतिमा है। इसको साधारण पत्थर न समझना। सावधानी से मिट्टी खोदो।

दयाराम—हैं! यह क्या सुनाई दिया? यह किसने कहा कि इस टीले में महावीर भगवान की प्रतिमा है?

[चारों ओर देखता है]

सुखिया—[चारों ओर चकित होकर देखती है] यहां तो कोई भी नजर नहीं आता। मनुष्य क्या यहां तो कोई पशु पक्षी भी इस समय दिखाई नहीं देता।

दयाराम—यह आकाशवाणी है जिसने हमें सावधान किया है। यह रहस्य किसी मनुष्य को क्या मालूम होता?

सुखिया—तब तो हमारा कार्य पूर्ण हो गया।

[दयाराम बड़ी सावधानी से मिट्टी खोदता है]

सुखिया—तुम फावड़े से मिट्टी हटाओ और मैं हाथों से हटाकर साफ करता हूँ। फावड़ा जरा धीरे-धीरे ही चलाना।

[दोनों मिलकर मिट्टी हटाते हैं]

दयाराम—तुम यहां अपना समय नष्ट न करो। तुम गांव में जाकर लोगों को यह शुभ सम्वाद सुनादो। गांव वाले भी तो दर्शन करलें। जब तक सब लोग आवेंगे मैं मिट्टी हटा कर प्रतिमा को निकाल लूंगा। जाओ, जाओ, देर न करो।

सुखिया—अच्छा जाती हूँ और गांव वालों को यह शुभ समाचार सुनाती हूँ। [जाती है]

(दयाराम फिर खोदने लगा) खोदते खोदते प्रतिमा का ऊपरी भाग स्पष्ट दिखाई देता है। दयाराम मिट्टी हटाकर उसे अधिक स्पष्ट कर देता है]

दयाराम—भगवान महावीर की जय !

सुखिया—[गांव वालों के साथ जाकर] जय, जय, महावीर भगवान की जय।

ग्रामीण—[सब मिलकर] भगवान महावीर की जय !

दयाराम—आओ भाई आओ ! सब मिलकर भगवान की प्रतिमा के दर्शन करो।

[सब लोग प्रतिमा के पास जाकर दर्शन करते हैं और जयकार करते हैं]

एक ग्रामीण—बडी विशाल प्रतिमा है।

दूसरा—कैसी भव्य झांकी है।

तीसरा—कैसी सुन्दर और चित्ताकर्षक मूर्त्ति है।

सुखिया—मालूम होता है कि यह प्रतिमा बहुत प्राचीन है और किसी कारण से ज़मीन में किसी समय दब गई होगी।

एक ग्रामीण—हां, भूचाल आदि के अवसर पर भी ऐसा अक्सर होता है।

एक वृद्ध—ऐसा भी सुना गया है कि बहुत वर्षों पहले यहां जिस स्थान पर यह जंगल है वहां बस्ती थी और विदेशियों के आक्रमण के समय जब देवालय आदि भ्रष्ट किये जा रहे थे उस समय किसी व्यक्ति ने प्रतिमा की रक्षार्थ उसे पृथ्वी में गाड दी और इस प्रकार वह नष्ट होने से बच गई। अब तक यह केवल किंवदन्ती ही थी और निश्चित स्थान का भी पता न था; किन्तु अब खोज हो जाने से यह बात प्रत्यक्ष सामने आगई है और यथार्थ होगई है।

दयाराम—यह तो मैंने अपने चोर का पता लगाया है। रोजाना मेरी गाय का दूध चुराने वाले यही तो हैं।

[सब हंसते हैं]

वृद्ध—तुम धन्य हो दयाराम कि तुम्हारी गाय का दूध भगवान ने स्वयम् ही इस प्रकार अपनालिया। ऐसे बडभागी तो संसार में होते ही कहां हैं ? तुम वास्तव में भगवान के सच्चे भक्त हो जिसके कारण हमें भी भगवान के दर्शन हो गये और आज यह शुभ दिन देखने में आया।

दयाराम—मैं किस योग्य हूँ ? यह तो भगवान् की दया है। मैं तो भगवान के चरणों का एक तुच्छ सेवक हूं।

वृद्ध—यह तुम्हारी महानता है। अब इस प्रतिमा को यहां से घर ले चलना चाहिये। वहीं नित्य इसके दर्शन किया करेंगे।

सब—हां यही ठीक है।

वृद्ध—सब मिलकर प्रतिमा को उठाओ।

१ ग्रामीण—चलो सब मिलकर उठायें। यह कौनसा बडा काम है ?

सब—चलो। उठाओ।

दयाराम—भगवान ! क्या यहां से चले जावेंगे ?

(सब मिलकर प्रतिमा को उठाते हैं

किन्तु प्रतिमा जरा भी नहीं हिलती)

१ ग्रामीण—ओह ! पसीने आगये । थक कर चूर होगये किन्तु प्रतिमा टस से मस न हुई । कितनी भारी प्रतिमा है ?

वृद्ध—देव चमत्कारी है और कदाचित् इस समय यहां से नहीं हटना चाहते । इसलिये मेरी राय में इन्हें यहीं रहने दिया जाये ।

दयाराम—प्रतिमा की रक्षार्थ मैं यहीं झोंपडी डालकर रहूंगा और घी का दीपक जलाऊंगा, दूध चढाऊंगा और अपनी बुद्धि के अनुसार पूजन करता रहूंगा ।

सुखिया—हां मेरी भी यही इच्छा है । मैं दूध घी लाती हूं और आप लोग झोंपडी बनाने का प्रबन्ध करिये ।

(जाती है)

वृद्ध—झोंपडी बनाने का काम आज ही शुरू कर देना चाहिये ।

दयाराम—हां ऐसा ही होगा और जब तक झोंपडी तैयार होगी मैं हर समय यहीं रहूंगा और रात को भी यहीं विश्राम करूंगा ।

वृद्ध—हां प्रतिमा की रक्षा होना आवश्यक है ।

सुखिया—(आकर) मैं पूजन का सब सामान ले आई हूं ।

वृद्ध—बस अब दूध चढाओ और घी का दीपक जलादो ।

(प्रतिमा का सब यथाविधि पूजन करते हैं, दूध चढाते हैं, घी का दीपक जलाते हैं । उसी समय आकाश से पुष्प वृष्टि होती है । धीरे-धीरे यवनिका-पात होता है)

सब—जय जय भगवान महावीर की जय ।

ड्राप–सीन

अंक-दूसरा

दृश्य-१

[स्थान—दयाराम की झोंपड़ी]

(कई व्यक्ति बैठे हुये हैं। भगवान महावीर की मूर्ति के चमत्कारों की चर्चाकर रहे हैं, सब अपने अपने कष्ट निवारण की बात और प्रभु भक्ति का महात्म्य एक दूसरे को बता रहे हैं।)

दयाराम—प्रभु का चमत्कार ऐसा ही है। यदि शुद्ध हृदय से भगवान का ध्यान किया जाये तो कोई कारण नहीं कि वह दीन दुखियों की टेर पर ध्यान न दे।

२ व्यक्ति—अच्छा, भाइयो, अब चलना चाहिये।

१ व्यक्ति—हां प्रभु के दर्शन करने थे, सो तो कर लिये अब चलें।
(सब चले जाते हैं)

(मार्ग में जाते हुये आपस में बातचीत करने लगते हैं)

पहला व्यक्ति—अब तो जंगल में मंगल रहने लगा है।

दूसरा—हाँ, जब से भगवान की प्रतिमा निकली है यात्री लोग आते ही रहते हैं और गॉव के ही नहीं बाहर से भी आने जाने वाले भगवान के दर्शन किये बिना नहीं जाते।

तीसरा—इस स्थान का महत्व बढ़ता ही जाता है और लोगों का विश्वास भी दृढ़ होता जा रहा है।

चौथा—भाई चमत्कार को नमस्कार है।

पहला—हां यही बात है।

दूसरा—अब तो यहां कोई अच्छा स्थान बन जाये तो ठीक है

क्योंकि झोंपडी में भगवान की प्रतिमा का रहना ठीक नहीं मालूम होता !

तीसरा—यह कोई साधारण बात है ! इसमें काफी धन की आवश्यकता है। इस गांव में कौन ऐसा है जो इतना पैसा खर्च कर सके।

चौथा—क्या चन्दा करके यह काम नहीं हो सकता ?

दूसरा—चन्दा इतना नहीं हो सकता कि इतना बडा काम हो जावे।

तीसरा—यह काम तो धनी मानी सेठ लोगों के हैं। उन्हीं लोगों की कृपा से इस स्थान की शोभा बढ़ सकती है।

दूसरा—बेचारा दयाराम जहां तक हो सकता है काफी करता है।

तीसरा—हां, वह तो स्वयम् मेहनत मजदूरी करके जो कुछ लाता है सब भगवान की सेवा में ही अर्पित कर देता है।

पहला—चमार होते हुये भी उसके विचार कितने ऊंचे और उत्तम हैं। मुझे तो गांव में उसके समान एक भी व्यक्ति नजर नहीं आता।

दूसरा—जैसा वह है वैसी ही उसकी स्त्री भी है। दोनों ही स्त्री पुरुष भगवान के अनन्य भक्त हैं।

तीसरा—यह सामने से कौन आरहा है ?

चौथा—कोई बैलगाड़ी आरही है। मालूम होता है गाड़ी में स्त्रियां हैं और पुरुष पैदल चल रहे हैं।

तीसरा—होंगे कोई, हमें क्या ? यह तो चलता रहता है। लोग आते जाते ही रहते हैं। नजर तो ऐसा आता है कि कोई परदेशी है।

[सेठ अमरचन्द व उनके नौकर का आना

सेठ—क्यों भाई ? क्या तुम बता सकते हो कि चांदनपुर गांव

यही है और यहीं भगवान की प्रतिमा पृथ्वी से निकली है ?

दूसरा पथिक—जी हां, यही चांदनपुर गांव कहलाता है और भगवान की प्रतिमा इसी गांव में एक टीले के नीचे निकली है। क्या आप लोग भगवान के दर्शनार्थ आये है ?

सेठ—हां भाई। हमने भगवान की महिमा सुनी है इसीलिये हम सपरिवार भगवान के दर्शनार्थ आये हैं। हमारे साथ जो बैलगाड़ी आरही है उसमें मेरी स्त्री है।

तीसरा—क्या हम आपका परिचय जान सकते हैं ?

सेठ—हां क्यों नहीं ? हम बसवा के निवासी हैं और मेरा नाम अमरचन्द है।

दूसरा पथिक—आप परदेशी हैं और हमारे गांव में आये हैं इसलिये हमारे अतिथि है। चलिये हम आपको उस स्थान पर ले चलते हैं जहां भगवान की प्रतिमा निकली है किन्तु वहां चलने से पूर्व हमारा आतिथ्य स्वीकार करना होगा।

सेठ—कष्ट की आवश्यकता नहीं है।

दूसरा पथिक—इसमें कष्ट क्या है। अतिथि सत्कार तो सौभाग्य का विषय है।

[जाना]

दृश्य-२

[स्थान—गाँव]

(सेठ अमर चंद ने पूजा वंदना आदि से निवृत्त होकर गाँव वालों से बातचीत की। गाँव वालों ने एक मंदिर बनवा देने की

आवश्यकता की ओर उनका ध्यान खींचा। सेठजी को बात जच गई और मंदिरका निर्माण आरंभ करा दिया। मंदिर तैयार हो चुका है। सेठ अमरचंद, सेठानी व कुछ अन्य व्यक्ति बातें कर रहे हैं।)

अमरचंद—भगवान की कृपा से मंदिर की पक्की इमारत बनकर पूरी हो चुकी है। यह सब कार्य आपके ही सहयोग से संपन्न हुआ है। अब आगे भी आपही लोगों का सहयोग आवश्यक है।

एक वृद्धः—सेठ जी! आपने जो कुछ किया है वह कभी भुलाया नहीं जा सकता। धर्म के निमित्त इस सुन्दर कार्य की यहाँ महान् आवश्यकता थी।

अमरचंद—इसमें मैंने क्या किया? भगवान् की भक्तिसे मिला हुआ धन उन्हीं के काम में लगा दिया। पहिली बार प्रतिमा के दर्शन करते ही मैंने एक सुन्दर मंदिर बनाने का निश्चय कर लिया था। समय की कमी से मंदिर जैसा बनसका है, बनगया है। अभी मंदिर एक मंजिला ही है भविष्य में इसकी उन्नति होती रहेगी।

एक वृद्ध—प्रारंभ करना ही कठिन होता है, सुधार तो समय २ होते रहते हैं। फिर भी मंदिर सुन्दर व कलायुक्त है।

सेठानी—सुना है कि मंदिर के बनने से सबको हर्ष हुआ है, लेकिन दयाराम दुखी है।

अमरचंद—हाँ, प्रतिमा झोंपड़ी में न रहकर मंदिर में जायगी इसका उसे दुख है, वह उसे अलग नहीं करना चाहता। मंदिर में उसकी सेवा करने की अभिलाषा संभवतया पूर्ण न हो।

सेठानी—दयाराम ने मूर्ति प्रकट की, जो कुछ आज हो रहा है

उस सबका श्रेय उसीको है। उसकी आशाओं पर पानी नहीं फिरना चाहिए। जिस स्थान से प्रतिमा निकली है वहाँ भगवान के चरण स्थापित करने चाहिये।

अमरचंद—बिल्कुल ठीक है। वहाँ भगवान् का चरण मंदिर बनाना जरूरी है।

(प्रतिष्ठाचार्य जी का प्रवेश)

अमरचंद—प्रतिष्ठाचार्य जी। सब काम तैयार है।

प्रतिष्ठाचार्य—हवन विधान आदि क्रियायें संपन्न हो चुकीं। अब तो प्रतिमाको रथ में विराजमान कर मंदिर में लाना शेष है।

अमर०—चलिए, सब वहां हीं चलते हैं।

प्रतिष्ठाचर्य—चलिये। (सबका जाना)

(दृश्य परिवर्तन)

(एक ओर मंदिर की सुंदर इमारत है और दूसरी ओर झोंपड़ी के पास रथ खड़ा है। दयाराम व उसकी स्त्री भी वहाँ उपस्थित हैं। सेठ अमरचंद प्रतिष्ठाचार्य आदि सब आते हैं।)

दयाराम—आह! दिल को समझाता तो बहुत हूँ, किंतु वह नहीं मानता। आज भगवन् मेरी गरीब की कुटिया को छोड़ कर मंदिर में रहने जा रहे हैं।

(सब लोग प्रतिमा को रथ में विराजमान करते हैं)

सब - बोलो भगवान् महावीर की जय।

दयाराम—(रथ की तरफ देखता हुआ) बैठ गये भगवान्! सच मुच यहां से जाने को तैयार हो? क्या श्रावकों का मंदिर तुम्हें इस कुटिया से अधिक प्यारा है? क्या मुझसे रूठ

गय ? यहाँ क्या दुख था जो आलीशान मंदिर में रहने का निश्चय किया ?

किसलिये तोड़ नाता दिया नेह का,
क्यों नहीं प्रीत तुमसे निबाही गई ?
क्या हुआ हमसे अपराध ऐसा कि जो,
हो हमारी तुम्हारी लड़ाई गई ?

सुखिया—स्वामी ! रोने बिलखने से क्या लाभ ? हम शूद्र हैं, पतित हैं, दुनियां वाले नफरत करते हैं। भगवान ने भी हमें त्याज्य समझकर त्याग दिया। लोग बल पूर्वक हमारे भगवान को हमारी इच्छा के विरुद्ध हमारे घर से ले जारहे हैं, लेकिन चुपचाप देखने के सिवा हम कुछ भी नहीं कर सकते। तुम्हें याद है, जब यह निकली थी तो लोग लेजाना चाहते थे किंतु—

दयाराम—हॉ, हॉ, उस समय यह प्रतिमा किसी के उठाने से न उठी और अन्त में यहीं झोपड़ी बनाई। उस समय भगवन् हमसे प्रसन्न थे, लेकिन अब शायद अप्रसन्न हो गये हैं।

सुखिया—अवश्य ही कोई अपराध हुआ है, इसी का यह फल है।

गाना—

तकदीर फिरी, दुनियॉ बदली, भगवान भी हमसे रूठ गये।
मिट्टी में मिले अरमान सभी, दुनियाँ के सहारे छूट गये ॥
जिनको कि समझते थे अपना, अफसोस वही अब ग़ैर हुये।
लुट गया सभी, बरबाद हुये, भाग्य हमारे फूट गये ॥
आंसू भी बाहर आ न सके, आंखों में ही रहकर सूख गये।
दुनियाँ की देखके मनमानी, दिल आज हमारे टूट गये ॥

अमरचद—हम प्रसन्न हैं लेकिन दयाराम का परिवार आंसू बहा

रहा है ।-(दयाराम से) दयाराम ! तुम्हारे इस प्रकार दुखित होने से रंग में भंग होने की आशंका है ।

दयाराम—सेठ साहब ! यह दुख बनाया हुआ नहीं । हम क्या करें हमारा दिल नहीं मानता । नैनों के आंसू नैनों रोक लेना चाहते हैं ।

अमरचंद—तुम लोग इतने दुखी क्यों होते हो । हमने तय किया है कि भगवान की प्रतिमा निकलने के स्थान पर भगवान के चरण स्थापित किये जायेंगे और एक सुंदर मंदिर बनाया जायगा जिसका नाम चरण छत्री होगा ।

सेठानी—लोग वहां दर्शनार्थ आयेंगे और जो चढावा चढेगा वह तुम्हीं को मिलेगा और तुम्हारा मान इस तरह कम न होगा ।

अमरचंद—अब दयाराम का दु:ख अवश्य मिट जावेगा । (सब लोगों से) चलिये रथको बढाइये । समय अधिक हो चुका ।

सब—भगवान महावीर की जय ।

(रथ को चलाते हैं किंतु बैल आगे नहीं बढते)

अमर०—हैं ? यह क्या हुआ ? बैल आगे क्यों नहीं बढते ? रथ में दूसरे बैल लगाओ । शायद ये बैल कमजोर हैं ।
(दूसरे बैल लगाये जाते हैं किन्तु रथ नहीं बढता । सब कोशिश करके थक जाते हैं)

अमर०—सब लोग जोर लगावें तो शायद रथ चल जावेगा ।
(सब मिलकर जोर लगाते हैं किन्तु रथ नहीं डिगता)

अमर०—समझ में नहीं आता कि क्या कारण है । क्या हमसे कुछ अपराध होगया है वो भगवान मंदिर में नहीं जाना चाहते ? क्या

हवन विधान में कुछ त्रुटि रहगई है। जिसका परिणाम यह दिखाई देरहा है। प्रभो! प्रभो! यह क्या माया है? यह समस्या शीघ्र ही सुलझना चाहिये वरना अनर्थ हो जायगा।

(आकाशवाणी होती है)

आकाशवाणी०— जबतक भक्त दयाराम का हाथ न लगेगा यह रथ नहीं चलेगा।

अमर०—हैं? यह आवाज कहां से आई?

प्रतिष्ठाचार्य—यह अकाशवाणी है। भगवान अपने भक्त का मान बढ़ाना चाहते हैं।

अमर०—[दयाराय से] भक्तवर! तुम्हीं अपने हाथों से इस कार्य को पूर्ण करो। सब लोग तुम्हारी ओर उत्सुकता से देख रहे हैं।

दयाराम–[हर्ष से गद्गद् होकर] मुझे आप सब की आज्ञा शिरोधार्य है। यह मेरा सौभाग्य है कि मैं इस सेवा के योग्य समझा गया हूं और भगवान ने इस प्रकार मेरा मान बढ़ाया है।

अमर०—भक्त राज! इस समय ही नहीं भविष्य में भी जब भगवान का रथ चलेगा तो पहले तुम्हारे वंशजों में से किसी का हाथ रथ के पहिये से लगाना आवश्यक होगा। बिना तुम्हारी सहायता के यह कार्य सम्पन्न न हो सकेगा।

प्रतिष्ठाचार्य—तुम्हारा यश संसार में सदैव अमर रहेगा और धार्मिक इतिहास में स्वर्णाक्षरों में चमकता रहेगा।

[दयाराम भगवान का नाम लेकर आगे बढ़ता है और रथ के पहिये के हाथ लगाता है। उसी समय रथ चलता है।]

अंक-तीसरा

दृश्य—१

स्थान······कारागार (भरतपुर राज्य)

[दीवान जोधराज बन्दी के रूप में दिखाई देता है]

गाना—

दीवान—

घटायें घिर रही हैं, दूर किश्ती से किनारा है।
न कोई यहां अपना, न कोई भी सहारा है॥

कैसा जमाना बेदर्द आया।
जीभर के जिसने हमको रुलाया॥कैसा जमाना०॥

रूठी है किस्मत, छूटी है दुनियां—
ठुकरा के सबने हमको मिटाया॥कैसा जमाना०॥

कोई न साथी दुनियां में अपना—
किसको कहें हम अपना पराया॥कैसा जमाना०॥

कोई न साथी दुनियां में अपना—
किसको कहें हम अपना पराया॥कैसा जमाना०॥

किसको सुनाये गम की कहानी—
जग में किसी को अपना न पाया॥कैसा जमाना०॥

मैं आज राजवन्दी के रूप में भरतपुर राज्य के कारागार मे अपने भाग्य पर आंसू बहा रहा हूं। मुझ पर राज विद्रोह का झूठा

दोष लगाया गया है। मैं जानता हूं कि निर्दोष हूं किन्तु महाराज की नजरों में मैं महान अपराधी हूं। निष्कलंक होते हुये भी मैं संसार के सामने कलंकित हो रहा हूं। मुझे इसका दुःख नहीं कि मुझे प्राण दण्ड देकर संसार से विदा कर दिया जायेगा। किन्तु मुझे रञ्ज इसी बात का है कि मेरे सारे जीवन की तपस्या भंग हो गई और जो राजभक्ति मैंने प्रदर्शित की थी उस पर पानी फेर दिया गया।

भगवान! तुम तो अन्तर्यामी हो, घटघट वासी हो। क्या तुम भी मुझे अपराधी समझते हो? नहीं, मुझे विश्वास नहीं होता कि तुम अपने भक्त के प्रति इतने कठोर हो जाओगे। चांदनपुर ग्राम में यहां आते समय मैंने जब तुम्हारे दर्शन किये थे और तुम्हें अपनी दुःख की कहानी सुनाई थी तो उस समय तुम शांत और गम्भीर नजर आरहे थे। क्या कुछ सोच रहे थे प्रभो! क्या अपने भक्त के वक्तव्य पर विश्वास नहीं हुआ? नहीं नहीं, यह तो संभव नहीं मालूम होता।

[कारागार का द्वारा खुलता है और भरतपुर महाराज पधारते हैं]

महाराज—दीवानजी!

दीवान—कौन? महाराज! यह सेवक महाराज के चरणों में प्रणाम करता है।

महाराज—मुझे दुःख है दीवानजी कि मैं इस समय तुम्हें इस दशा में देख रहा हूँ किन्तु राजाज्ञा सबके लिये समान है और इसका पालन करना सबका कर्त्तव्य है। जो अपराध तुमने किया है यदि वही मैंने भी किया होता तो मैं भी इस दण्ड के प्राप्त करने का अधिकारी होता जानते हो दीवानजी! राजद्रोह का अपराध भयंकर एवं सबसे महान है।

दीवान—यही कि अन्तिम समय मैं आपको यह विश्वास दिला सकता कि मैं राजद्रोही नहीं हूं। मैं यह नहीं चाहता कि मुझे प्राण भिक्षा देदी जावे किन्तु मैं केवल अपने झूठे अपराध को धो देना चाहता हूं ताकि मरने के बाद भी मेरा नाम राज्य के इतिहास में कलंकित रूप में प्रकट न हो सके।

महाराज—ह: ह: ह: अपराध करके और अपराध का दण्ड प्राप्त करके यह आशा करना कि यश पर धब्बा न लगे यह कैसी उपहासास्पद बात है। मैं खूब जानता हूं कि तुम्हारी यह युक्तियां दण्ड से बचने के लिये हैं किन्तु याद रक्खो राजाज्ञा कभी नहीं टल सकती और तुम्हें उसका पालन करना ही होगा। अन्तिम समय तुम भगवान से अपने पापों की क्षमा मांग लो ताकि इस जन्म में जो कलंक तुम्हें लगा है वह अगले जन्म में तुम्हारे सत्कार्यों से धुल जाये।

[आवेश में महाराज का जाना]

—परदा गिरता है—

दृश्य—२

स्थान... .....मैदान

(एक ओर दो लट्ठे जमीन में पास-पास गड़े हुये हैं और सामने की ओर एक तोप रक्खी हुई है। पास ही तोप चलाने वाले सैनिक खड़े हैं)

१ सैनिक—आज यहीं दीवान जी का वध होने वाला है।

२ सैनिक—बड़ा अशुभ दिन है आज का।

३ सैनिक—हां इसमें क्या सन्देह है ? ऐसे धर्मात्मा का वध हमें अपने हाथों से करना होगा।

४ सैनिक—यह सारी कार्यवाही मंत्री जी की मालूम होती है। उन्होंने जब यह देखा कि दीवानजी के होते हुए उनकी दाल नहीं गलती तो महाराज को उनके विरुद्ध भड़काना शुरू कर दिया और मोका पाकर राजद्रोह का अपराध लगा दिया।

१ सैनिक—अपराध सिद्ध भी तो कर दिया।

४ सैनिक—सिद्ध करने में क्या लगता है ? झूठे अपराधों को करने में वह सदा से ही कुशल हैं।

२ सैनिक—दीवानजी से उनकी पुरानी शत्रुता चली आ रही है। जब किसी भी प्रकार वश न चला तो उन्होंने यह चाल चली !

३ सैनिक—उन्होंने कुछ अन्य लोगों को भी अपने साथ मिला लिया है।

४ सैनिक—ऐसा करना तो उनके लिये आवश्यक ही था बिना किसी सहायता के ऐसे कार्य कैसे हो सकते हैं ?

२ सैनिक—यह लो दीवानजी भी आ गये। अब तैयार होजाओ निर्दोष के खून से अपने हाथ रंगने के लिये।

[कुछ सैनिक दीवानजी को बन्दी रूप में लेकर आते हैं। साथ में मंत्री व सेनानायक भी हैं]

मंत्री—(आकर) सारा प्रबन्ध हो चुका है ?

१ सैनिक—जी हां, सब तैयार है।

मंत्री—दीवान जी को राजाज्ञा के अनुसार तोप के गोले से उड़ाया जावेगा। इस आज्ञा की घोषणा सबको सुना दी गई है।

(सैनिकों से) जाओ! दीवानजी को सामने गडे हुये लट्ठों से बांध दो।

[सैनिक दीवानजी को लट्ठों के पास ले जाते हैं और उनके हाथ लट्ठों से बांध देते हैं।

सेनानायक—दीवान जी! अब आपका अन्त समय आ पहुँचा है। आप चाहें तो नियमानुसार प्राणभिक्षा के अतिरिक्त अपनी अन्तिम इच्छा प्रकट कर दीजिये।

दीवान—मेरी अन्तिम इच्छा अब यही है कि मैं शीघ्रातिशीघ्र इस संसार से विदा होकर भगवान के चरणों में स्थान पा सकूं।

मंत्री—इसका प्रबन्ध तो हो ही चुका है। अब आप अन्तिम समय भगवान को स्मरण कर लीजिये।

दीवान—भगवान का नाम तो मेरी जुबान पर है और हृदय में हर समय उन्हीं का ध्यान रहता है। उनकी मूर्ति हृदय में सदा विराजमान रहती है।

मंत्री—सैनिको! गोला छोडो।

[सैनिक गोला छोड़ते हैं। आवाज होती है किन्तु निशाना चूक जाता है]

सेनानायक—निशाना चूक गया। गोला फिर छोड़ो। होश्यारी से काम करो, वरना तुम्हें भी दण्ड दिया जायेगा। सैनिकों के लिये निशाने का चूक जाना लज्जा की बात है।

[सैनिक फिर गोला छोड़ते हैं किन्तु गोला ठंडा पड जाता है]

सेनानायक—हैं? क्या इस बार भी वार खाली गया? अवश्य इस में कुछ रहस्य है।
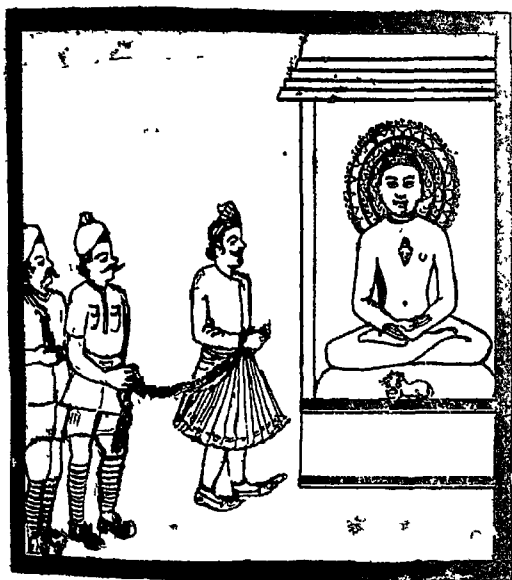
वन्दी जोधराजजी के हृदय में भगवान महावीर की ज्योति झलक रही है।

दीवान जोधराजजी को बांधकर तोप से
उडाया जा रहा है।

मंत्री—इसमें सैनिकों की कार्यवाही मालूम होती है। इन लोगों को इसका दण्ड दिया जायेगा।

सेनानायक—अवश्य! मैं स्वयम् इस बार गोला छोड़ता हूँ।

[स्वयम् सेनानायक गोला छोड़ता है। गोला छूट कर दीवान के लगता है किन्तु दीवान के शरीर पर लगते ही गोला फूटता है और फूल झड़ने लगते हैं]

सेनानायक—इसमें कोई चमत्कार नजर आता है।

मंत्री—किन्तु दीवानजी तो बेहोश नजर आ रहे हैं।

सेनानायक—नहीं, वह भगवान के ध्यान में लीन हैं। महाराज को शीघ्र समाचार भेज देना चाहिऐ।

मंत्री—हां, [एक सैनिक से] जाओ, महाराज को खबर करदो कि दीवान जी पर तोप के गोलों का कोई प्रभाव नहीं हुआ। यहां का सारा हाल उनसे कह देना और पूछ लेना कि अब क्या आज्ञा है?

सैनिक—जो आज्ञा। [जाता है]

सेनानायक—समझ में नहीं आता कि यह क्या मामला है? सैनिकों को हम क्या दोष दें जब कि हमने अपनी आंखों से यह चमत्कार देखा है। हो न हो इसमें अवश्य कुछ रहस्य है।

मंत्री—हो सकता है दीवानजी कोई जादू भी जानते हों।

सेनानायक—यह भी सम्भव है। बिना जादू के ऐसा तो हो नहीं सकता। आज तक कभी हमने ऐसा दृश्य नहीं देखा और न कभी ऐसा सुना ही है।

[महाराज का प्रवेश]

महाराज—[आकर] यह क्या गडवड है ? राजाज्ञा का पालन अभी तक क्यों नहीं हुआ ? क्या इसमें भी कोई षडयंत्र है ?

मंत्री—अन्नदाता ! स्वयम् सेनापतिजी ने इस वार गोला छोड़ा था किन्तु आश्चर्य तो यह है कि वह गोला दीवानजी के शरीर से लगकर फूलों का गुच्छा वन गया।

महाराज—(कड़ककर) दीवान !

दीवान—(आंखें खोलकर) हां महाराज। क्या आज्ञा है ?

महाराज—क्या अपनी रक्षा करने के लिये आपने जादू का प्रयोग शुरू कर दिया है ?

दीवान—महाराजा ! मैं भला जादू क्या जानूं ?

महाराज—तो फिर यह सब क्या हो रहा है ?

दीवान—मैं इस विषय में क्या कह सकता हूँ ?

महाराज—अच्छा। मैं स्वयम् इस वार गोला चलाता हूँ।

[महाराज स्वयम् गोला छोड़ते हैं। गोला दीवानजी के चरण स्पर्श करता हुआ पृथ्वी पर गिर जाता है]

माहाराज—हैं ? क्या गोला पृथ्वी में धंस गया ? कोई चिन्तानहीं एक वार फिर प्रयत्न करता हूं। मंत्रीजी व सेनापतिजी ! आप दोनों दीवानजी के दोनों ओर खडे हो जावें।

[महाराज फिर गोला चलाते हैं। दीवान जी के पास जाते जाते गोले के दो टुकडे हो जाते हैं और दोनों टुकडे मंत्री व सेनानायक के शरीर पर लग कर उन्हें घायल व मूर्छित कर देते हैं]

दीवान—भगवान महावीर की जय।

महाराज—हैं ? यह क्या हुआ ? गोले का विपरीत प्रभाव हुआ ? मंत्री जी व सेनापतिजी घायल हो गये ? गोले के दो टुकडे होकर दोनों के जा लगे ? दीवानजी ! दीवान जी !! यह क्या लीला है ?

दीवान—भगवान महावीर का अद्भुत प्रभाव है महाराज !

महाराज—किन्तु ऐसा क्यों हुआ ? क्या भगवान न्याय नहीं चाहते ? क्या उनके दरबार में भी पक्षपात होता है ?

दीवान—कभी नहीं। वह दूध. का दूध पानी का पानी करके दिखाते हैं। उनके लिये छोटे–बडे, गरीब–अमीर सब समान हैं। वह कभी पक्षपात नहीं करते। वह अपराधियों को उचित दण्ड देकर निर्दोषों की रक्षा करते हैं।

महाराज—क्या मंत्री जी व सेनापति जी अपराधी हैं ?

दीवान—यह तो प्रत्यक्ष ही हैं महाराज। उन्हें उनके अपराध का उचित दण्ड मिला है। भगवान ने आपको सावधान करने के लिये ही यह अभिनय रचाया है। मंत्रीजी व सेनापति जी के अपराध दिखाने के लिये ही भगवान ने उन्हें यह दण्ड दया है।

महाराज—सब अपराधी हैं। मैं भी अपराधी हूँ, सारा संसार अपराधी है। दीवानजी ! मैं तुम्हें बन्धक से मुक्त नहीं कर सकता। मैं देखता हूँ कि मेरी तलवार से तुम अपनी रक्षा किस प्रकार करते हो।

(तलवार निकालता)

दीवाक—जिसने तोह के गोलों से मेरी रक्षा की है उसके लिये तलवार से बचाव करना कठिन नहीं है। मेरा शीश आपकी तलवार का स्वागत करने के लिये सदैव तैयार है।

आपके हाथों से यदि मेरा जीवन समाप्त होगया तो
मुझे इसका किंचित् भी दुख न होगा।

महाराज—यदि ऐसा है तो तैयार हो जाओ।

[तलवार को वार करने के लिये महाराज
आगे बढ़ते हैं उसी समय आकाश में
"देव" प्रकट होते हैं। महाराज
आश्चर्य से उस ओर देखते हैं]

देव—सावधान राजन्! अदि अपना हित चाहते हो तो दीवान
को मुक्त करदो। यह निर्दोष है। वास्तविक अपराधी मंत्री
व सेनापति ही हैं, जिन्होंने दीवान पर झूठा दोष लगाकर
तुम्हारे कान भर दिये हैं। आंखें खोलो और सतर्क रहकर
बुद्धिमानी से शासन कार्य करो।

[देव अंतर्ध्यान हो जाते हैं]

महाराज—यह स्वप्न है या जागृति? दीवानजी! दीवानजी!!
मुझे क्षमा करो, मैंने तुम्हें बहुत दुःख दिया है। मेरी
आंखें खुल गई हैं। मुझे अपने कृत्य पर स्वयम् पश्चा-
ताप हो रहा है। मैं अपने हाथों से तुम्हारे बंधन
खोलता हूं। तुम आज से स्वाधीन हो।

[महाराज अपने हाथों से दीवान जी को
मुक्त करते हैं और गले से लगा लेते हैं]

दीवान—महाराज! मेरे मन में आपके प्रति वैसे ही श्रद्धा के
भाव हैं जैसे पहले थे। भगवान महावीर ने हमारी सुन
ली और मेरे प्राणों की रक्षा करने के साथ ही आपको
भी विनाश के मार्ग की ओर जाने से रोक लिया।
महाराज! मेरा अनुरोध है कि आप चांदनपुर अवश्य
चलें और वहां भगवान महावीर के दर्शन करें।

महाराज—हां, हां; अवश्य। मैंने भी उस क्षेत्र की बहुत प्रशंसा सुनी है। मैं अवश्य तुम्हारे साथ वहां चलूंगा। वहां जाकर मैं भगवान से ही अपने अपराधों की क्षमा याचना करूंगा। भगवान की कृपा से ही मेरी आंखें खुली हैं वरना अभी न जाने क्या २ होता। दीवानजी! चलिये, चांदनपुर चलने की तैयारी करिये।

दीवानजी—जो आज्ञा। (जाते हैं)

दृश्य—४

स्थान……चांदनपुर

[एक ओर मन्दिर का सुन्दर विशाल भवन दिखाई देता है। सब जगह सजावट हो रही है, झंडे लहरा रहे हैं! डेरे तम्बू लगे हुए हैं, दुकानें लगी है, लोगों की चहल पहल जारी है]

[दूसरी ओर रथ खड़ा है और उसमें भगवान की प्रतिमा विराजमान हैं। प्रतिमा के पीछे भट्टारकजी के बैठने का स्थान है जहां वह स्वयम् बैठे हैं, दो श्रावक चंवर ढुरा रहे हैं। दीवानजी भी रथ में बैठे हुये हैं और यात्रियों की भेंट जो भगवान को अर्पित की जा रही है स्वीकार कर रहे हैं। वह भगवान की स्तुति करते हैं और उनके साथ ही अन्य भक्त लोग भी कीर्त्तन करते हैं]

गाना—

भक्तों के हो भगवान तुम्हीं, प्रणमामि प्रभो प्रणमामि प्रभो।
तन मन धन जीवन प्राण तुम्हीं, प्रणमामि प्रभो प्रणमामि प्रभो॥
दुखियों के साथ सदा रहते, तुम हाथ अनाथों का गहते।
रक्षक हो दयानिधान तुम्हीं, प्रणमामि प्रभो प्रणमामि प्रभो॥

पतितों को तुमने तारा है, अधमों को नाथ उधारा है।
हो नाथ उदार महान तुम्हीं, प्रणमामि प्रभो प्रणमामि प्रभो ॥
दीनों के कष्टों को हरके, शरणागत को अपना करके।
देते सुख का वरदान तुम्हीं, प्रणमामि प्रभो प्रणमामि प्रभो ॥

सब—जय, जय, भगवान महावीर की जय।

महाराज—(आकर) अहा! हर्ष का सागर उमड रहा है, और भक्तगण उसमें बेसुध होकर प्रवाहित हो रहे हैं। लोग कैसे उत्साह से इस समारोह में भाग ले रहे हैं। चारों ओर सजावट हो रही है। जंगल में मंगल हो रहा है सुसज्जित रथ में भगवान की मनमोहक पद्मासन वीतराग नग्न दिगम्बर सौम्य मूर्त्ति विराजमान है। कैसी अपूर्व शोभा है? कैसी दिव्य अनुपम छवि है।

१ श्रावक—महाराज! समय हो गया है। हवन विधान भी हो चुका है। अब रथ आगे बढना चाहिए। सारथी का कार्य भार आपको ही ग्रहण करना होगा।

महाराज—मुझे सहर्ष यह सेवा स्वीकार है।

[महाराज आगे बढ़कर रथ में सारथी के स्थान पर बैठते हैं]

सब—जय जय भगवान महावीर की जय।

[रथ को महाराज चलाते हैं किन्तु वह आगे नहीं बढता]

महाराज—[आश्चर्य से] हैं? रथ क्यों नहीं चलता? क्या कारण है?

[सब लोग पहियों को देखते हैं, पृथ्वी को देखते हैं, सब लोग मिलकर जोर लगाते हैं, किन्तु रथ नहीं चलता]

श्रावक—कोई कारण नजर नहीं आता कि रथ क्यों रुक गया है ?

[महाराज फिर प्रयत्न करते हैं किन्तु बैलों के जोर लगाने पर भी रथ आगे नहीं बढ़ता]

महाराज—क्या किया जावे कुछ समझ में नहीं आता ? क्या हम लोगों में श्रद्धा व भक्ति का अभाव है जिससे भगवान हम से असंतुष्ट हो गये हैं ? प्रभो ! हम से क्यों रुष्ट हो गये हैं ? क्या इस प्रकार हमारा अपमान करना चाहते हो ?

दीवान—भगवन ! तुम्हारे दर्शनार्थ देश विदेश से हजारों यात्री आये हैं। क्या वे सब निराश ही वापस लौट जायेंगे ? क्या तुम्हें अपने भक्तों का जरा भी ध्यान नहीं हैं ? क्या हम लोगों का उत्साह भंग करके तुहें प्रसन्नता हो सकेगी ?

[आकाशवाणी होती]

आकाशवाणी—तुम लोगों ने उस भक्त का मान भंग किया है, जिसके कारण तुम आज यह उत्सव मना रहे हो। जब तक भक्त दयाराम के वंशजों में से किसी का हाथ रथ के पहिये में न लगेगा यह रथ नहीं चल सकता ! वह भक्त चमार व ग्वाला होते हुये भी भगवान का अनन्य भक्त था और उसका मान भंग करके काई भी भक्त भगवान को प्रसन्न नहीं कर सकता।

दीवान—धन्य ! धन्य !! भगवान अपने भक्तों का मान भंग होते हुये नहीं देख सकते।

महाराज—यह वास्तव में हमारी भूल ही थी कि हमने उस भक्त के वंशजों को भुला दिया। [श्रावकों से] अब शीघ्र ही दयाराम के वंशजों में से किसी को यहां बुला लाओ। [एक श्रावक जाता है]

दीवान—भगवान न्यायी हैं और समदर्शी भी। उनकी दृष्टि में छोटे-बडे सब समान हैं। जो शुद्ध हृदय से भववान की भक्ति करे वही भगवान को सबसे अधिक प्यारा है।

[श्रावक का एक वृद्ध व्यक्ति को लेकर आना वृद्ध का सबको नमस्कार करना]

श्रावक—यह वृद्ध भक्त दयाराम के परिवार का ही व्यक्ति है और उसी के वंशजों में से है।

महाराज—[वृद्ध से] तुम दयाराम के वंशज हो अतः तुम भी भगवान के कृपा पात्र भक्त कहलाने के अधिकारी हो। इस लिये बुलाया है कि तुम इस रथ के पहिये के हाथ लगाओ ताकि यह आगे बढ सके। इस समय ही नहीं आगे भी प्रति वर्ष जब यह मेला लगेगा तो तुमको या तुम्हारे वंशजों में से किसी को यह कार्य करना होगा!

वृद्ध—यह हमारा महान सौभाग्य है, अन्नदाता! भगवान की जैसी कृपा हमारे पूर्वजों पर रही, वैसी ही हम पर व हमारे बच्चों पर बनी रहे। और हमारे हृदय में भगवान की भक्ति दिन दूनी, रात चौगुनी बढ़ती रहे, यही हमारी वीतराग भगवान से प्रार्थना है।

महाराज—भगवान तुम्हारी प्रार्थना अवश्य स्वीकार करेंगे। चलो कार्य आरम्भ करो।

वृद्ध—भगवान महावीर की जय।

[वृद्ध रथ के पहिये के हाथ लगाता है रथ चलता है। भक्त लोग प्रसन्न होकर भगवान की जय जयकार करते हैं। आकाश से देवगण यह दृश्य देखते हैं और पुष्प वृष्टि करते हैं]

सब—जय जय वीतराग भगवान महावीर की जय।

—ड्राप सीन—

॥ इति शुभम् ॥

श्री महावीर क्षेत्र परिचय

दिगम्बर जैन समाज का यह तीर्थ स्थान देहली से वम्बई जाने वाली वेस्टर्न रेलवे की बडी लाइन पर श्री महावीरजी स्टेशन से ४ मील दूर चांदनपुर (नोरंगाबाद) निजामत डिण्डौन, जयपुर डिवीजन (राजस्थान) में स्थित है। यहां के मन्दिर में परम दिगम्बर अतिशय युक्त महामनोज्ञ श्री महावीर स्वामी की पद्मासन मूर्चि विराजमान है। इसका यश जगद् विख्यात है। यहां पर देश देशांतर से जैन वन्धु ही नहीं किन्तु मीने गूजर सब ही जातियों के भाई वहिन हजारों लाखों की संख्या में भगवान के दर्शनार्थ उपस्थित होते हैं तथा अपनी दुःख गाथा भगवान को सुनाते हैं। जो व्यक्ति एक वार भी भगवान

के दर्शनार्थ उपस्थित हो जाता है उसकी सांसारिक वेदना रूपी ज्वालायें भगवान की परमशांत मुद्रा के दर्शनरूपी गंगाजल से शांत हो जाती हैं। जो नर नारी-भक्ति भाव तथा निर्मल हृदय से भगवान का दर्शन, पूजन व स्तवन करते हैं उनकी सभी प्रकार की मनोकामनायें पूर्ण हो जाती हैं। क्योंकि सच्चे हृदय से की हुई आलोचना या पुकार कभी निरर्थक नहीं जाया करती। यही कारण है कि भारत के दि० जैन तीर्थ क्षेत्रों में यह क्षेत्र समाज के सबसे अधिक भक्ति और आकर्षण का केन्द्र बन गया है। यह भगवान के अतिशय का ही प्रभाव है।

जयपुर रियासत के महाराजाओ की ओर से यह संपूर्ण ग्राम जिसका नाम वर्तमान में नोरंगाबाद है, भगवान् की पूजा सेवा दीप धूप सदावर्त के लिये पुण्यार्थ अर्पण किया हुआ है।

श्री पद्मपुरा क्षेत्र परिचय

इस दिगम्बर जैन अतिशयक्षेत्र का वैशाख शुक्ला ५ सं० २००१ से निर्माण हुआ है जब कि मूला नामक जाट को अपने मकान की नींव खोदते समय श्री पद्मप्रभु भगवान की मनोज्ञ और चमत्कारी दि० जै० मूर्ति प्राप्त हुई। मूर्ति के चमत्कार की प्रसिद्ध भारत के कौने कौने में शीघ्र ही फैल गई और हजारों यात्री दर्शनार्थआने लग गये। क्षेत्र का प्रबन्ध एक प्रबन्धक समिति द्वारा होता है। यहां १ पक्की धर्मशाला १ कच्ची धर्मशाला औषधालय वाचनालय आदि हैं विशाल गोलाकारमंदिर का निर्माण हो रहा है- यहमंदिर पूर्ण बन जाने पर भारत के जैन मंदिरों में अद्वितीय होगा। श्री पद्मपुरा जाने के लिए महावीरजी से जयपुर जाते समय जयपुर माधोपुर लाइन में स्टेशन श्योदासपुरा पर, उतरना चाहिये यहां से ३॥ मील पूर्व की ओर यह क्षेत्र है जहां सड़क बनी हुई है। जयपुर से प्रतिदिन मोटर बस भी यहां आती जाती है।

★ श्री पद्मप्रभु-क्षेत्र नाटक ★

—: गायन :—

जय जय पद्मप्रभु भगवान, तुम्ही हो सर्व गुणों की खान ।।टेक।।
जन जन के तुम बैठे घट में, दीनों के आधार,
संकट काटो, प्रेम भरो प्रभु. होवें आप समान।
तुम्हीं हो सर्व गुणों की खान ।। १ ।।

दर्शन पाकर हम हर्षाये, प्रभु की महिमा जान न पाये,
पूजा भक्ति करने आये, करो प्रभु कल्याण!
तुम्ही हो सर्व गुणों की खान ।। २ ।।

शान्ति, त्याग के हे मधु आगर, दीनन के सर्वज्ञ हितंकर,
"सेठी" के हो सुख के सागर, पद्मप्रभु भगवान!
तुम्ही हो सर्व गुणों की खान ।। ३ ।।

प्रथमांकः—

प्रथम दृश्य

[स्थानः—जगरामपुर [कोटखावदा] मेंजर्र शरीर एवं फटे हुए चिथड़ों द्वारा, एक कुटिया में शिवसिन्धु जाट की पत्नि विचारों में मग्न है। शिव सिन्धु के प्रिय पुत्र मूला और लादू अपनी माँ के पास बैठे हुए हैं। मूला की बहिनें, रामप्यारी, ग्यारसी, हरबाई,

रोटी लेने गई हैं। निर्धनता के कारण, मकान के इर्द गिर्द कूड़ा कचरा पडा हुआ है। दो चार पीतल के बर्तन, आले में रखे हुए हैं]

शिवसिन्धु की पत्नी—[आकाश की ओर देख कर] दीनानाथ, दीन बन्धु ! करुणा सागर ! अब तो इस दुखिया की पुकार सुनो ! हे प्रभु, आप करुणा के अवतार हो, दीनों के नाथ हो, सत्य और त्याग की विमल मूर्ति हो, पतितों के उद्धारक हो, आपकी महिमा अपार है, अलौकिक है। आप ही इस संसार में आकर दीनों का दुख दूर करते हो। मैंने सुना है, आप सदैव दीनों के कष्ट के समय उन्हें दर्शन देकर प्रसन्न करते हो प्रभु, आपके होते हुए यह अपार कष्ट ! अब तो भगवान, यह अपार वेदना सहन नहीं होती। पतिदेव का आश्रय भी समाप्त हो गया। अब मैं इन बच्चों को कैसे धीरज बँधाऊ। हाय ! दोपहरी भी हो गई, बच्चे आते ही होंगे। भगवान, कृपा करो,इस दुखिया को दर्शन दो।

भविष्यवाणी—धैर्य के साथ कर्त्तव्य पथ पर अटल रहो, दुख सहन करने के बाद ही सुख प्राप्त होता है । एक रोज अवश्य तुम्हारा भाग्योदय होगा।

शिवसिन्धु की पत्नि—हे प्रभू ! तेरी महिमा अपार है । (गद्‌गद् होकर) इन मधुर, मनोहर और प्रिय शब्दों ने तो मुझे जीवन का अमिट सुख प्राप्त कराया है।

[बच्चों का प्रवेश]

सब बच्चे—अम्मा ! भूख के मारे प्राण निकले जा रहे हैं, अब तो एक क्षण भी नहीं रहा जाता, मां !

एक बच्चा—मां ! जरा मेरी ओर भी देख मेरा चेहरा भूख के मारे पीला पड़ गया है।

दूसरा बच्चा—मां, दुपहर हो गई, क्या तूने अभी तक रोटी नहीं बनाई ? [रोने लगता है]

माता—प्यारे लाल ! क्यों रो रहा है ? मैं अभी तेरे लिए रोटी बना देती हूं । तब तक तू अपने भाइयों के साथ खेल ।

एक बच्चा—मां, तैंने तो संध्या समय भी इसी प्रकार से कहा था, आज सुबह भी एक दो ग्रास ही तो दिये थे ।

माता—हे भगवान ! बच्चों की इस दुस्सह वेदना को तो मुझ से देखा नहीं जाता। हाय, मेरे नेत्र क्यों नहीं फट जाते मुझे मौत क्यों नहीं आ जाती ?

हे कृपासिन्धु, हे दीनबन्धु,, इन बच्चों पर तो दया करो।
इनकी निर्धनता देख प्रभो इनमें जीवन की ज्योति भरो ॥

[मूर्छित होना]

(मूला का प्रवेश

मूला—मां, मां, ! मां, यह क्या हुआ ? (बच्चों से) तुमने मां से क्या कहा ?

लादू—कुछ नहीं, हमें क्या पता, हम तो रोटी मांग रहे थे ।

मूला—अच्छा लादू, थोड़ा सा उस कटोरे में पानी लाओ ।

[लादू का पानी लाना, मूला का मां पर छींटे देना, मां का होश में आना]

माता—बेटा मूला ! तुम कहां गये थे ?

मूला—मां ! मैं तो यही था ।

माता—नहीं मूला, मुझे ऐसा मालूम होता है कि तुम अपने मामा के यहां गये थे।

मूला—मां, मैं तो कल्लू के खेत में मकई छीलने गया था देखो, मां! वहां से थोड़ी मकई लाया हूँ। इसे पीसकर रोटी बनाओ। क्या तू ने मुझे अभी मामा के यहां देखा था?

माता—बेटा, तुझे देखा तो था, लेकिन......

मूला—ठीक है, मां! तब तो भगवान ने हमें सीधा रास्ता बता दिया, अब हमें मामा के यहां चलना चाहिए।

माता—हां, बेटा! ऐसा तो मैंने भी कई बार सोचा था।

मूला—हां, मां! भगवान ने मुझे शायद स्वप्न में कहा है कि तुम अपने मामा के यहां जाओ, वहां ही से तुम्हारा भाग्योदय होगा।

माता—अच्छा, तो, चलो बेटा, कल हम सब तुम्हारे मामा के यहां चलेंगे।

[दूसरे दिन सब का मामा के गांव के लिए प्रस्थान]

—ड्राप सीन—

प्रथमाङ्कः—

द्वितीय दृश्य

[वे नन्हे २ बच्चे भूखे प्यासे ही मामा के घर पहुंचने की आशा में बढ़ते जा रहे हैं। उनके कोमल पाँवों में ककर एवं काँटों द्वारा छाले पड़ गये हैं। सूर्य भगवान अस्ताचल की ओर जा रहे हैं। मूला, और माता का मार्ग में बात चीत करना, मामा के घर के पास आना तथा उनका मिलन]

मूला—माँ, भगवान भास्कर की स्वर्ण युक्त किरणें, कितनी सुनहली प्रतीत हो रही हैं।

माता—हाँ, बेटा ! जीवन की ऐसी ही प्रवृत्ति है। प्राणी मात्र की इस ही प्रकार की दशा है। कभी प्राणी सुख से रहता है और कभी दुख से। पहिले हम भी सुखी थे। हमारे पास धन धान्य, गाय बैल, वस्त्रादि सभी थे, परन्तु अब हमारा सूर्य डूब गया है।

मूला—हां, मां ! तू सच कह रही है।

माता—लाल ! हम लोग उस समय बड़ी मौज से घी, दूध, गुड़, शक्कर, इत्यादि सभी चीजें खाते थे। आज तुम्हारे पिता की मृत्यु को २॥ वर्ष होगये हैं, तभी से अथाह दुख के सागर में गोते लगा रहे हैं। वेदना हमारी सहचरी हो रही है।

मूला—देखो मां, स्वच्छ नीले आकाश में शीतल किरणों को फैलाता हुआ चन्द्रदेव भी प्रकट हुआ चाहता है।

लादू—मां ! गांव भी पास ही है। अब मैं मामा के यहां जाकर मिठाई खाऊंगा।

माता—हां, बेटा।

[गांव के समीप, माता का बच्चों को समझाना]

माता—देखो, लादू, रामप्यारी, ग्यारसी, बड़े प्रेम से हाथ जोड कर, विनय युक्त मामा से प्रणाम करना। वहां जाकर चुपचाप बैठ जाना, दंगा न करना।

सब—अच्छा मां, ऐसा ही करेंगे।

[मूला का मामा, जगन्नाथ का आना]

बच्चे—मामाजी, प्रणाम !

मामा—आओ, बेटा, आओ लाल ! दुखी मां के जीवन का सहारा, आओ, मेरी आखों का तारा, आओ ।

[मूला के मामा जगन्नाथ का अपनी बहिन के गले लगना, नेत्रों से अश्रु धारा प्रवाहित होना]

बहिन—भाई, अब तो, इन बच्चों की सेवा करने वाला, इन्हें पुत्र तुल्य समझने वाला, इनकी रक्षा करने वाला, तू ही है।

जगन्नाथ—बहिन ! भगवान मालिक है। वह ही सब की रक्षा करता है। मैं तुम्हारी हृदय से सेवा करने के लिए तैयार हूं। तू इस निर्धनता से क्यों घबरा रही है ? यह वेदना, दुःख, आपत्ति तो कुछ समय की ही है। हे बहिन ! भगवान पर विश्वास रख ! ये सारी मुसीबतें शीघ्र ही नष्ट हो जायेंगी।

अच्छा बहिन ! घर चलो, बच्चे भूख के मारे तड़प रहे हैं, इन्हें खाना खिलाओ।

[सबका मामा के घर प्रस्थान]

—ड्राप सीन—

प्रथमाङ्क—

तृतीय दृश्य

[मूला अपनी माता एवं भाई बहिनों के साथ अपने मामा के यहां रह रहा है। मित्रों की बातों द्वारा, मूला के विचार परिवर्तन, यथा, मामा से अलग रहकर, खेती करना, वापिस घर जाना, मकान बनाने की तैयारी करना एवं नींव का श्री गणेश करना]

(मूला के मित्र नन्दू गंगू का हाथ में गेंद लिये हुए आना)

नन्दू—मित्र गंगू! कितना सुहावना मौसम है। पीली मिट्टी कितनी सुन्दर प्रतीत हो रही है। आओ, यहां खेलें।

गंगू—हां, मित्र। मैं भी यही सोच रहा था। खेलने से शरीर में ताकत आती है एवं स्वास्थ्य अच्छा रहता है। आओ खेलें।

नन्दू—मित्र, तुम भी स्वार्थी मालूम होते हो। क्या अकेले ही खेलना जानते हो? आओ, मूला को भी बुलालें।

गंगू—वाह यार, तू ने भी अच्छे मनहूस का नाम लिया। वह तो गरीब है, वह अपने साथ कैसे खेल सकता है? क्या तुझे पता नहीं उसका जीवन तो मामा की रोटियों पर ही निर्भर है।

नन्दू—हां, मित्र, बात तो तू सच्ची कहता है। हम ऐसे गरीब के साथ कभी नहीं खेल सकते। आओ दोनों ही खेलें।

[नन्दू और गंगू गेंद खेलने लग जाते हैं]

(मूला का प्रवेश)

मूला—मित्र नन्दू! क्या मैं भी खेल लूँ?

नन्दू—(क्रोध से) मामा की रोटियां तोड़कर हमारे साथ खेलना चाहता है। दूर हट। वरना मार खायेगा। मूर्ख! गरीब, होकर हमारे साथ खेलने की हविश रखता है।

मूला—(दूर हट कर) क्या कह रहे हो मित्र! गरीब! निर्धन हां, ठीक कह रहे हो। मैं अब स्वयं कमाऊंगा। खुद खेती करूंगा। अलग मकान बनाऊंगा। तभी मेरी तथा मेरे कुटुम्ब की उन्नति हो सकेगी।

[मूला का घर चला जाना]

(मूला के घर, मूला और उसकी माता का वार्तालाप)

मूला—मां! हम कब तक इस निर्धनता के कारण मामा की

रोटियां तोड़ते रहेंगे। मेरा जीवन धिक्कार है, अब मैं स्वयं कार्य करूंगा।

माता—मेरे प्यारे बच्चे! आज तू यह क्या कह रहा है? तुझे किसने बहकाया है? अभी तो तेरी बाल्यावस्था ही है। अपने पास क्या है? कुछ भी नहीं है।

मूला—मां संसार में वही उन्नति कर सकता है जो धैर्य, पुरुषार्थ और विवेक से काम लेता है। अगर हमारे पास धैर्य है, पुरुषार्थ है और विवेक है, तो सब कुछ है।

माता—बेटा! तू मुझे अपने दिल की सच्ची बात बता। जल्द बता, तुझे आज किसने भड़काया है?

मूला—(आंखों में आंसू भरकर) मां! क्या कहूं? क्या बताऊं? कुछ कहा नहीं जाता। मेरा हृदय फटा जाता है। मेरी निर्धनता के कारण मेरे मित्र मुझे अपने साथ नहीं खेलने देते। वे कहते हैं—तू गरीब है; अपने मामा की रोटियां तोड़ता है।

[फूट २ कर रोना]

माता—मेरे नन्हे लाल! तू क्यों रो रहा है? जो आपत्ति में घबराते हैं वे कभी उन्नति नहीं कर सकते।

हे प्रभो! करुणासिन्धु, दीनबन्धु, दीन हितकारी, आप संसार में जन्म लेकर इस अबला का कष्ट क्यों नहीं मिटाते। यह भयावना दृश्य मुझ से देखा नहीं जाता, भगवान! दीनानाथ, दया करो। इस अबला का कल्याण करो।

[मूर्छित होना]

(जगन्नाथ का प्रवेश)

जगन्नाथ—बेटा मूला! आज तुम किन विचारों में मग्न हो।

तुम्हारे नेत्रों से अश्रु धारा क्यों बह रही है? चेहरा पीला क्यों है?

मूला—मामाजी! कोई बात नहीं। अब मैं आप से अलग रह कर स्वयं कार्य करूंगा। मेरी निर्धनता मुझे इस संसार में न रहने देगी।

जगन्नाथ—बेटा! यह क्या कह रहे हो? क्या तम मेरे साथ नहीं रहोगे। बेटा, बताओ, जल्दी बताओ।

मूला—मामाजी! प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है कि वह अपने पैरों पर खड़ा हो। धैर्य और विवेक से काम ले। उद्योग करता रहे। उद्योग ही सफलता की कुञ्जी है। मामाजी! मुझे आज्ञा दो, जिसमें मैं अपने जीवन के लक्ष्य में सफलता प्राप्त कर सकूँ।

जगन्नाथ—अच्छा, बेटा! अगर तुम्हारे इतने उच्च और पवित्र विचार हैं तो मैं तुम्हें मकान के लिए स्थान बताता हूँ। तुम जमीन साफ करो और नींव खोदो।

मूला—बहुत अच्छा, मामाजी! मैं आपका अहसान जन्म भर न भूलूँगा।

[मूला का मामा के चरणों में गिर पड़ना, मामा का आशीर्वाद देना, मामा का मकान के लिए स्थान बतलाना]

—ड्राप सीन—

प्रथमांक—

चतुर्थ दृश्य

[मूला सच्ची लगन एवं स्फूर्ति के साथ जमीन खोद रहा है। भगवान भास्कर अपनी प्रचण्ड किरणों द्वारा अग्नि की वर्षा

कर रहे हैं। लू चल रही है, परन्तु मूला अपने कार्य में फिर भी प्रयत्नशील है। मूला जमीन खोदता जाता है, तथा गाता जाता है। खोदने के साथ उसका फावडा किसी वस्तु से टकराता है, मूला अच्छी तरह देखता है और विस्मित हो जाता है। मूला का गांव के मनुष्यों को बुलाना, मनुष्यों का एकत्रित होना, मूला से हाल पूछना, मूला का हाल बताना]

मूला—(मूला के हाथों में फावडा है, धीरे धीरे वह जमीन खोदता है, खोदते समय गाता जाता है)

गायन—

आफत में फंसा दास तेरा आन बचाले, भगवान बचाले॥
चारों तरफ से आन मुसीबत ने घेरा,
लूटा है दीनता ने दयाशील का डेरा।
अब कुछ तो दया करके दयावान कहाले, भगवान बचाले॥ १॥
मंजिल है बडी दूर, बडा दूर किनारा,
मैं क्षीण तथा क्षुद्र नहीं कुछ भी अधारा,
अब कुछ तो सहारा दे प्रभो, आन बचाले, भगवान बचाले॥२॥
दीनों का तुझे ध्यान नहीं, दीनबन्धु क्यों?
करुणा विना प्रसिद्ध है, करुणानिधान क्यों?
अब जा रही है बात तेरी सोच सुचाले, भगवान बचाले॥३॥

मूला—दीन रक्षक! करुणानिधान! यह जमीन तो बडी कठोर है। भगवान भास्कर, आज आप क्यों नहीं इस बालक पर दया करते? इतनी अधिक अग्नि वर्षा करने पर भी आप शान्त नहीं होते।

एक लडका—अरे, मूला! यह तू क्या कर रहा है?

मूला—अरे, भाई ! मकान की नींव खोद रहा हूँ। साथ ही भगवान का भी स्मरण करता हूँ। क्योंकि उनके नाम से कार्य शीघ्र ही सिद्ध हो जाता है।

एक लड़का—क्या भाई ! भगवान को तुमने देखा है ?

मूला—भाई, भगवान तो सब में हैं। वह वीतराग है, करुणा-निधान हैं। उनके नाम स्मरण करने से प्रत्येक प्राणी का दुख दूर होकर कल्याण होता है।

एक लड़का—अच्छा भाई, अगर भगवान सब जगह हैं तो हमें दिखाई क्यों नहीं देते ?

मूला—भाई, क्या भगवान दिखाई नहीं देते ? देखो, मैं यह कार्य कर रहा हूँ, वह भगवान की शक्ति द्वारा ही कर रहाहूँ। अगर भगवान की ताकत मुझ में नहीं होती तो मैं इतना कार्य कैसे कर सकता हूँ ? प्रत्येक स्थान पर भगवान हैं।

एक लड़का—भाई, तुम्हारी थकावट मेरी आंखों को लज्जित कर रही है। लाओ, मुझे अपना फावड़ा दो, जिससे मैं तुम्हारी मदद कर सकूं।

जो संकटों में दूसरों के काम आता है कभी।
सुख, शान्ति, से रहता हमेशा, कष्ट मिटते हैं तभी ॥

मूला—भाई ! तू सच कहता है। परन्तु मैं अपने लक्ष को प्राप्त करके ही रहूँगा। इसी में मेरे जीवन की उन्नति है।

यदि हों दुख हजारों तो, कभी धीरज न छोड़ूंगा।
बिना खोदे जमीं को मैं, नहीं इस मुख को मोड़ूंगा ॥
प्राण दे दूंगा, मैं भाई, मगर ना लक्ष मोड़ूंगा ॥
श्री भगवान की भक्ति से, मैं अब नाता जोड़ूंगा ॥

एक लड़का—धन्य है भाई ! तुम्हारे इस उच्च आदर्श को, और इतने महान एवं पवित्र विचारों को। तुम ही, देश,

धर्म, जाति और समाज की उन्नति कर सकते हो।
तुम ही भारत के सच्चे सपूत कहा सकते हो।

[लड़के का जाना]

(फावड़ा, किसी कठोर वस्तु से टकराता है, मूला का आश्चर्य में पड़ना, फावड़ा का छूट जाना)

मूला—(आश्चर्यसे) हैं ? यह क्या ? फावड़ा क्यों छूट गया ? यहां ऐसी कौनसी शक्ति है, जिससे मेरे शरीर में हल चल मचगई।

(थोड़ी देर रहकर, मूला गौर से देखता है, कुछ सफेद वस्तु दिखाई देती हैं, मूला कांपता है)

दोड़ो, भाईयो, आओ, आओ, देखो, यहां यह क्या दिखाई दे रहा है ? जल्दी आओ !

[कुछ मनुष्यों का दौड कर आना]

एक आदमी—मूला, तुझे क्या हुआ ? तू क्यों कांप रहा है ?

एक वृद्ध पुरुष—(आगे बढकर) बेटा लाल ! तू इतना भयभीत क्यों हो रहा है ? तेरा चेहरा क्यों मुरझा गया है ?

मूला—(गड्ढे की ओर लेजाकर) इसमें देखिए, यह क्या है ?

एक आदमी—अरे, यह तो कोई मनुष्य सा दृष्टिगोचर होता है।

वृद्ध पुरुष—नहीं, यह तो कोई देवता जान पडता है ।

एक पुरुष—मुझे स्मरण हुआ है कि भैरों ब्राह्मण ने कई वार स्वप्न में सुना है कि इस ग्राम में भगवान प्रकट होंगे।

वृद्ध पुरुष—ओ, भूरा पटेल ! जा ब्राह्मण को बुला ला !

[भूरा पटेल ब्राह्मण के घर जाकर, आवाज लगाता है]

भूरा पटेल—अजी ब्राह्मण महाराज ! कृपा कर शीघ्र बाहर पधारिये।

ब्राह्मण—(बाहर आकर) क्यों ? कहिए, क्या बात है ? आपका यहां कैसे आना हुआ ?

भूरा पटेल—महाराज! भैरों के चबूतरे के पास गांव के सभी प्रतिष्ठित व्यक्ति आपकी याद कर रहे हैं।

[ब्राह्मण महाराज का भूरा पटेल के साथ जाना]

सब व्यक्ति—महाराज प्रणाम!

ब्राह्मण—भगवान तुम्हारा भला करे, तुम्हारी आयु बडी करे। क्यों, क्या काम है? आप लोग यहां क्यों इकट्ठे हुए हैं?

वृद्ध पुरुष—महाराज! यहां कोई मूरत सी दिखाई देती है।

ब्राह्मण—(गड्ढे में देखकर) भाइयो, यह तो भगवान की मूर्त्ति है। मुझे सपने में मालुम हुआ था कि भगवान की मूर्त्ति को कोई निकाल रहा है। मेरा स्वप्न सत्य हुआ। (सोचकर) अच्छा! ठीक है, अब इसे कल खोदना। अंधेरा होता जा रहा है। अगर मूर्त्ति के कहीं जरा भ' लग गई तो बड़ा अनर्थ हो जायगा।

[सबका प्रस्थान]

—ड्राप सीन—

द्वितीयाङ्क—

प्रथम दृश्य

[सभी ग्रामवासी एवं मूला उसी स्थान पर प्रातः काल के समय बड़ी खुशी और उमंग के साथ इकट्ठे होते हैं। मूला पंडितजी को प्रणाम करता है, और पंडितजी के कथनानुसार आस पास से धीरे धीरे जमीन खोदता है। सबको भगवान के दर्शन होते हैं। सभी ग्रामवासी बड़े प्रसन्न होते हैं और भगवान की जय बोलते हैं]

मूला—महाराज प्रणाम।

पंडित—सुखी हो बेटा! मूला! तुम बड़े भाग्यशाली प्रतीत होते हो। धीरे धीरे खोदना आरम्भ करो।

मूला—महाराज! अभी खोदता हूं।

[मूला का धीरे धीरे खोदना, खोदते समय गाना]

गायन—

प्रभो! तेरी कृपा से कष्ट, अब सब जाने वाले हैं।
हृदय से दुःख के बादल! प्रभू अब हटने वाले हैं॥ १॥
यह सुन्दर मूरती मनहर, हृदय में बस गई मेरे।
कृपा कर ज्योति कर दीजे, हृदय में आन कर मेरे॥ २॥
तुम्हारे पुण्य दर्शन से, कर्म सब हटने वाले हैं।
प्रभो! तेरी कृपा से कष्ट, अब सब जाने वाले हैं॥ २॥

(मूला धीरे धीरे मिट्टी हटा रहा है, अचानक भूमि का रंग बदल जाता है। लोगों के चेहरे हर्ष से कमल की भांति खिल जाते हैं! सब मिलकर धीरे धीरे मिट्टी हटाते हैं। भगवान की मनोहर एवं आकर्षक मूर्ति दृष्टिगोचर होती है।)

सब—बोलो, श्री भगवान की जय! जय!! जय!!!

[अचानक आकाश से जय ध्वनि का सुनाई देना]

एक पुरुष—यह मूर्ति तो बहुत विलक्षण प्रतीत होती है। देखो यहां का कितना सुन्दर दृश्य होगया है। सब लोग भगवान के दर्शन पाकर कितने मुग्ध हैं। प्राकृतिक दृश्य कितने मनोहर प्रतीत हो रहे हैं। आकाश में जय ध्वनि हो रही है।

वृद्ध पुरुष—हां, भाइयों! भगवान ने हमारे ग्राम में हमें दर्शन देकर हमारी भलाई चाही है। अब हमें भगवान को किसी पवित्र स्थान पर विराजमान कर देना चाहिए।

मूला—महाराज ! नहा धोकर, दूध से हवन करा कर भगवान को फिर विराजमान करेंगे। मैं अभी नहा कर आता हूं।

[मूला नहा धोकर ग्राम के एक ब्राह्मण के यहां से पवित्र दूध लाकर भगवान का हवन करता है]

मूला—भगवान ! अगर अपने मुझ निर्धन को इतना मान दिया है तो अब उसकी रक्षा भी आप ही के हाथ है।

[मूला भगवान की मूर्त्ति को उठाता है, सब सहारा देते हैं। मूर्त्ति उठजाती है।

सब—बोलो, मूला के भगवान की जय ! जय ! जय !

ब्राह्मण—अच्छा, मूला ! भगवान की मूर्ति को उस चबूतरे पर विराजमान करें।

[मूला और सब का भगवान को विराजमान करना, सबका जय बोलना ! और मूला का निम्न गायन गाना]

मूला— (तर्ज़:-गाये जा गीत मिलन के······

भक्ति करेजा भगवन से, सच्ची लगन से, जगत से तरना है।।टेक।।

काहे पड़ता विषयन के फेर में, काहे लुटाता धन,
काहे हृदय में बैर बसाता, काहे दुखाता मन,
गाये जा गुण भगवन के हृदय का बनके, जगत से तरना है ।।१।।

लुट न जाये अनमोल जीवन, इसका है हमको ग़म,
जो भी करना है सो तू करले, फिर क्या करेंगे हम,
लुटा मन्दिर में, प्रभू चरणन में, जगत से तरना है ।। २ ।।

अंखियां डोले भगवन के द्वारे, दर्शन की है धुन,
"सेठी" प्रभूजी तुमको पुकारे, मेरे भगवन सुन,
काटे कर्मन को, यो दुख जीवन को, जगत से तरना है ।।

ब्राह्मण— (सब ग्रामवासियों से) भाइयों आप लोग सब श्याम को यहां फिर आ जाना, भगवान हम पर बहुत प्रसन्न हैं।

सब—अच्छा, महाराज !

ड्राप–सीन

द्वितीयाङ्क—

द्वितीय दृश्य

[संध्या के समय सभी ग्रामवासी घी के दीपक लेकर वहां पर एकत्रित होते हैं। अपने २ दुखों को भगवान के समक्ष रखते हैं और प्रार्थना करते हैं कि हमारे दुख शीघ्र मिटें। भगवान की कृपा से सबके दुख दूर हो जाते हैं]

गायन—

एक भक्त— (रुमझुम बरसै बादरवा…)

पाप के छाये बादरवा, दुख की घटाएं छाई,
मेरे प्रभु आजा, आजा, मेरे प्रभु आजा ॥ टेक ॥ १ ॥
जीवन का दुर्भाग्य, प्रभू अब आगया, आगया।
अपनी सारी दौलत प्रभू मैं खोगया, खोगया।
कैसे धीर बंधाऊं रे, कष्ट मिटाने आजा।
मेरे प्रभू आजा आजा, मेरे प्रभू आजा ॥ २ ॥
भाई भाई आपस में प्रभु लड़ते हैं, लड़ते हैं।
धन के खातिर जान को अपनी खोते हैं, खोते हैं।
आकर इन्हें समझाओ रे, प्रेम कराने आजा।
शान्ति बंधाजा, आजा, शान्ति बंधाजा ॥ ३ ॥

सच्चे दिल से तेरा गुण जो गाते हैं, गाते हैं।
तेरी कृपा से प्रभू, मोक्ष में जाते हैं, जाते हैं।
क्यों ना कष्ट मिटायेरे, "सेठी" गाये गुण तेरे,
पार लगाजा, आजा, पार लगाजा ॥ ४ ॥

सब—प्रभु, तुम्हारी माया अपरम्पार है। तुम पतितों के कष्ट को मिटाते हो। अज्ञान, अंधकार को मिटाकर, ज्ञान की ज्योति जगाते हो। आप प्रभू अपने सेवकों का मान रखते हो।

एक दर्शक—हे प्रभो करुणासिन्धु, मेरा भाई बीस वर्ष से नेत्र हीन है। अगर वह ठीक होगया तो आपका गुण जन्म भर गाता रहूंगा।

एक स्त्री—भगवान! मेरा बच्चा कई दिनों से सख्त बीमार है, अगर अच्छा होगया तो रोजाना घी का दीपक चढाऊंगी।

वृद्ध पुरुष—हे भगवान्! मेरे बच्चे के निमोनिया हो रहा है अगर ठीक होगया तो आपके रोजाना दर्शन करने आया करूंगा।

एक दर्शक—हे आनन्दकन्द, विघ्न विनाश प्रभो! अगर मेरी बुढिया मां की आंखें ठीक होगई, तो आपके दस सेर घी चढ़ाऊंगा।

[सभी अपने मनोरथों को भगवान के समक्ष रखते हैं, भगवान की अटल श्रद्धा और शुद्ध भावना से मनोरथ पूरे होजाते हैं]

पंडित—भाइयो! भगवान आज प्रकट हुए हैं, अतः आज का दिन याद रखना। भूलना नहीं।

सब—अच्छा महाराज! वैशाख सुदी ५ सं. २००१ सन् १९४४ के दिन को अवश्य याद रखें गे।

ब्राह्मण—अच्छा ! अब हमको चलना चाहिये ।

[भगवान की जय ध्वनि करते हुए, सब प्रस्थान]

—ड्राप सीन—

द्वितीयांक—

तृतीय दृश्य

[भगवान के प्रकट होने का समाचार धीरे धीरे सब जगह फैल जाता है]

(एक निर्धन ग्रामीण स्त्री अपने पुत्र की विकट अवस्था को देखकर रो रही है । उसके सामने उसका बच्चा लेटा हुआ है)

स्त्री—प्रिय लाल ! तेरा मुरझाया हुआ चेहरा मेरे दिल को व्याकुल कर रहा है ? क्या तू भी अब मेरे हाथ से चला जायगा ? हाय, भगवान, मैं कैसे इस बच्चे की रक्षा करू ।

[रोने लगती है]

पडोसिन—अरी बहिन, तू इतनी व्याकुल होकर क्यों रो रही है ? सच सच बता, तुझे क्या दुख है ?

स्त्री—अरी बहिन, मेरे दुख का हाल, क्या कहूँ ? कुछ कहा नहीं जाता । बच्चा कई दिनों से सख्त बीमार है । दिन प्रतिदिन सूखता जा रहा है । बहुतों का इलाज कराया किन्तु कोई लाभ न हुआ ।

पडोसिन—बहिन ! धैर्य रख ! विवेक से काम ले । भगवान का नाम हृदय में लेकर, उन पर पूरा विश्वास करके बाड़ा ग्राम में जा । वहां भगवान की एक मनोहर तथा आकर्षक नग्न मूर्ति प्रकट हुई है । वहां जोभी गये हैं, सब

के मनोरथ पूरे हुए हैं। तू आज वहां पर जरूर जा, तेरा भी बच्चा ठीक हो जायगा।

स्त्री—बहिन! मैं तेरा यह अहसान जन्म भर न भूलूंगी। तू ने मुझे सच्चा रास्ता बतलाया है। मैं भगवान के दर्शन करने अभी जाती हूँ।

पड़ोसिन—क्या तुझे मालूम नहीं मेरी बुढ़िया मां को अब भगवान की ही असीम कृपा से दिखाई देने लगा है?

[स्त्री का प्रस्थान, पतिका प्रवेश, स्त्री का अपने पति से हाल कहना]

स्त्री—(पति से) क्या तुम्हें ज्ञात है कि स्टेशन श्योदासपुरा के पास बाडा ग्राम में भगवान की मूर्ति निकली है? और वहां जो भी जाता है सब की अभिलाषा पूर्ण होती है?

पति—अरे ऐसा तो मैंने भी सुना है। मैं भी तुम से कहना ही चाहता था, परन्तु न कह सका। अब हमको बाडा जाना चाहिए और भगवान के दर्शन करना चाहिए।

[पति, पत्नि अपने बच्चे को गोदी में लेकर भगवान के दर्शन करने जाते हैं। मार्ग में कुछ मनुष्यों से उनकी भेंट]

स्त्री-पुरुष—क्यों भाई! तू इतना खुश होकर कहाँ जा रहा है, जरा हमें भी तो बता!

एक युवक—बाडा ग्राम में जहां भगवान की नग्न मूर्त्ति प्रकट हुई है। हम सब उनहीं भगवान के दर्शन करने जा रहे हैं। वहां जो कोई जाता है, वह खुश होकर आता है।

स्त्री-पुरुष—हां भाई! हम भी अपने बच्चे को लेकर वहां ही जा रहे हैं।

युवक—देखो, सभी तरफ से लोग बाग, अपने कुटुम्ब सहित भगवान के दर्शन करने जा रहे हैं। इधर देखो, ये भगवान के दर्शन करके आये हैं। देखो तो ये कितने खुश हैं। बच्चों की तरह उछल रहे हैं।

स्त्री-पुरुष—भाइयो! आप लोग कहां से पधार रहे हो। कृपा करके हमें भी तो बताओ।

आगन्तुक—भाई! हम लोग भगवान के दर्शन करके आ रहे हैं। यह देखो, भगवान के न्हवन का कपड़ा है। इसके पास रखने से कोई भी हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता है। क्या तुम भी वहीं जा रहे हो?

स्त्री-पुरुष-युवक—(खुशी से) हां भाई! हम भी वहीं जा रहे हैं। अब भगवान के दर्शनों से हमारे भी सब कष्ट मिट जायेंगे।

[भगवान के दर्शन करने चला जाना]

—ड्राप सीन—

तृतीयाङ्क—

प्रथम दृश्य

[एक जैन ने जो कि भगवान के दर्शन करके जयपुर गया था, वहां जाकर सारा हाल जयपुर के प्रतिष्ठित सज्जनों से कहा। जयपुर के कुछ प्रतिष्ठित सज्जन, एवं पंडितगण तथा श्योदासपुरा, चंदलाई, चाटसू आदि के जैन लोग वहां एकत्रित हुए। भगवान को

लेजाने का विचार किया, परन्तु ग्रामीणों की इच्छा के कारण भगवान को नहीं ला सके, कमेटी की स्थापना की गई]

[स्थान बाड़ा ग्राम]

सेठ—पंडितजी, आपने यहां आंकर क्या देखा ?

पंडित—सेठ साहब ! सब कुछ देखा। भगवान की पूजा की, प्रक्षाल की। देखिए, उनकी प्रक्षाल करने से मेरा सिर का दर्द दूर होगया।

सेठ—पंडितजी। यह बात तो सभी जगह सुनाई देती है। परन्तु आपने क्या विशेष बात देखी।

पंडित—अच्छा, आपका अभिप्राय विशेष बात पूछने का है। सेठ साहब ! भगवान की मूर्ति को देखने से प्रतीत हुआ कि ये हमारे छटे तीर्थंकर भगवान पद्म प्रभू की है।

सेठ—पंडितजी, आपने बात तो अच्छी कही, परन्तु आप हमें यह बताओ कि भगवान को आपने पद्मप्रभु कैसे पहिचाना ?

पंडित—सेठ साहब ! भगवान की मूर्ति पर कमल का चिन्ह है।

दिगम्बर मूर्ति है वो, पद्म प्रभू नाथ भगवन की।
कमल का चिन्ह बतलाता, वो मूर्ति जगत बन्दन की।

सब—बोलिए, भगवान पद्मप्रभू की जय ! जय ! जय !!!

सेठ—पंडित जी, हमें भगवान को जयपुर ले चलना चाहिए।

एक व्यक्ति—सेठ साहब ! हम तो भगवान को चाटसू ले जायेंगे। चाटसू पास ही है।

एक दर्शक—हम तो ऐसा विचार कर रहे थे कि भगवान को श्योदासपुरा ले जाया जावे।

ब्राह्मण—सेठ साहब ! सारे ग्रामवासी यह चाहते हैं कि भगवान यहीं पर रहें। देखिये, भगवान को प्रकट करने वाला मूला, इन बातों को सुनकर कितनी देर से रो रहा है ?

सेठ—अच्छा महाराज ! अगर ग्रामवालों की ऐसी ही अभिलाषा है तो भगवान को यहीं रखना चाहिए।

सब—हां, सेठ साहब ! यह विचार तो अति उत्तम है। लेकिन अब जनता काफी आने लग गई है, उनके लिए ठहरने आदि सबका प्रबन्ध जरूरी है। यहां कोई जैनी भाई का मकान नहीं। आस पास के जैनी भाई भी अब इतने बड़े कार्य को कैसे करें ? इसके लिए सभी को मिलकर काम करना पड़ेगा। यह तो अब दिगम्बर जैनों का अतिशय क्षेत्र बन रहा है।

सेठ—हां ! अब हमें यहां के प्रबन्ध के लिए कमेटी का निर्माण करना चाहिए, जिससे यात्रियों को किसी प्रकार का कष्ट न उठाना पड़े और सारा इन्तजाम अच्छी तरह हो।

सब—हां, सेठ साहब ! कमेटी का निर्माण होना तो अत्यन्त आवश्यक है।

—ड्राप सीन—

तृतीयाङ्क—

द्वितीय दृश्य

[सावन का समय है। चारों ओर हरियाली छा रही है। प्रकृति के दृश्य अत्यन्त मनोहर दृष्टिगोचर हो रहे हैं। अनेक भक्त,

एवं-श्रावक ऐसे समय में भगवान पद्मप्रभ के दरबार में भक्ति में लवलीन हैं। श्री राजेन्द्रलाल, जो कि फिरोजाबाद के निवासी हैं वे भी अपनी पत्नि के गर्भस्थ बच्चे की रक्षा के लिए आये हुए हैं। जयपुर के प्रतिष्ठित सज्जन श्री सौभाग्यमलजी जैन भी अपने कुटुम्ब सहित आये हुए हैं]

राजेन्द्र०—भगवान्! आप दीनबन्धु, दीनरक्षक और गुणों केसागर हो। आपके दरबार में जो कोई भी आया है, आपने किसी को भी निराश नहीं लौटाया है। हे प्रभू, तू त्याग और सत्य की विमल मूर्ति है। तेरी मनोहर मूर्ति ने दर्शकों एवं भक्तों के हृदयों में हर्ष का सागर बहा दिया है। भगवान्! मेरी पत्नी के जितने भी बच्चे हुए, सब चले गये। हे नाथ! अगर गर्भस्थ बच्चे की रक्षा होगई, तो आपके गुण जन्म भर गाता रहूँगा।

सौभाग्य०—हे करुणासागर! दीनानाथ! दीनबन्धु! तुम्हारी महिमा अपार है। जिसने भी आपका यश गाया, वह धन सम्पत्ति से भरपूर हुआ। भगवन्! मेरी यह परम इच्छा है कि मैं हमेशा आपके दर्शन करता रहूँ।

एक ग्रामीण—भगवान् की भक्ति से सब कार्य होजाते हैं। आपको मालूम होना चाहिए कि हमारे बाडा ग्राम में हम पीने के लिए पानी के लिए भी तरसते थे। पर आज भगवान् की कृपा से सब कुओं में काफी पानी होगया। यहां जानवरों में रोग हो जाता था। पर जब से मूर्त्ति निकली है किसी जानवर के रोग नहीं

हुआ। हमारी खेती दिन दूनी और रात चौगुनी बढेगी। बाजरा खूब होगा। अब तो गेहूँ भी बहुत होंगे। जौ कभी होते नहीं थे। यह सब भगवान की महिमा ही का प्रताप है। भगवान की भक्ति से सब मनोरथ सफल होते हैं।

राजेन्द्र—हां, भाई तुम्हारा कहना सच है। हमारा कार्य भी पूरा होगा।

गायन—

दुखों में पड़ा भगवान, हम पै दया दिखाना।
दर्शन दिखा के पड़ा, सुखमय हमें बनाना ॥ १ ॥

सर्वस्व देके अपना, कर्त्तव्य पथ बताया।
पड़ा ! दया तू करके, आके उसे बताना ॥ २ ॥

दुर्दशा हो रही है, संसार में हमारी।
तप, त्याग, ज्ञान, का तू सच्चा सबक़ पढाना ॥ ३ ॥

दुख में प्रभू हैं व्याकुल, सारे ही भक्त तेरे।
भक्तों पे कर दया तू, दुख उनका झट मिटाना ॥ ४ ॥

मद लोभ क्रोध माया, संसार में है पाया।
आकर प्रभु तू जगका अज्ञान सब हटाना ॥ ५ ॥

हिंसा व झूंठ चोरी, संसार में बुरी है।
"सेठी" को इनसे प्रभू तू, आकर के झट बचाना ॥६॥

तृतीयांक—

तृतीय दृश्य

[दिनांक २५ जौलाई सन् १९४४ को श्री सौभाग्यमल सकुटुम्ब जयपुर जाने का विचार करते हैं। दिन में एक गाडी वाले

को जाने के लिए कह देते हैं। संध्या समय सौभाग्यमल का स्टेशन प्रस्थान-आकाश में बिजली कडक रही है। अंधकार पूर्ण रात्रि है। जंगल बड़ा डरावना प्रतीत हो रहा है। गाडीवाला रास्ता भूल जाता है। और दूसरे रास्ते पर गाडी को ले लेता है। मार्ग में चोरों का मिलना, सौभाग्यमल एवं उसके कुटुम्ब का भगवान से प्रार्थना करना, सिपाही के भेष में किसी का आना, चोरों को दण्ड देना, एवं सौभाग्यमल का भगवान की जय ध्वनि करते हुए जयपुर प्रस्थान]

सौभाग्य—गाड़ी वाले ! बैल धीरे धीरे क्यों चल रहे हैं ?

गाड़ीवाला—सेठ जी, देखिये, कितना अन्धकार है। हाथ से हाथ नही सूझता, इसके अलावा जंगल कितना भयकर दिखाई देरहा है।

सौभाग्य—तो, फिर क्या होगा ? स्टेशन कितनी दूर है ?

गाड़ी वाला—सेठ साहव ! चिन्ता करने की कोई बात नहीं। आधी दूर आगये हैं। भगवान रक्षा करेंगे।

एक स्त्री—अन्धकार कितना तीव्र होता जा रहा है ? जंगल कितना डरावना मालूम होता है ?

सौभाग्य—सावधानी से बैठो कहीं कोई सामान न गिर पड़े।

गाड़ीवाला—सेठ जी, सामान तो सारा बंधा हुआ है किन्तु यहाँ चोर भी पीछा करते हैं।

सौभाग्य—बोलो ! भगवान, पद्मप्रभू की जय ! जय !! जय !!!

[एक कर्कश आवाज का सुनाई देना]

चोर—यह कौन है ? जो इस समय इस जंगल से गाड़ी लेजा रहा है ?

गाड़ीवाला—सेठ जी, यह तो चोरों की आवाज है।

सौभाग्य—चोर ! (घबराना)

[भगवान से प्रार्थना करना]

गायन—

अब सुनो पद्म भगवान, हरो दुख आन ,
ओ भक्त पियारा, अब तेरा हमको सहारा ॥ १ ॥
तू सर्व शक्ति का दाता है, सारे जगका तू त्राता है
चोरों से शीघ्र छुटाओ, पद्म पियारा ॥ अब तेरा ॥ २ ॥
तू दया; शान्ति का अग्रदूत, मानवता का है प्रिय सपूत ।
श्री पद्म दया कर कष्ट मिटाओ सारा ॥ अब तेरा ॥ ३ ॥
मानवता का तू प्यारा है, भक्तों का पद्म सहारा है ।
यदि कृपा दृष्टि हो जायें, पाऊं सहारा ॥ अब तेरा ॥ ४ ॥
भक्तों की आशा के तारे, श्री पद्म गुणों के भण्डारे ।
"सौभाग्य" का करुणासागर, करो, निस्तारा ॥ अब तेरे ॥५॥

स्त्री—हे प्रभू, तू ही सब का रक्षक है। पद्मप्रभू भगवान की जय ! जय !! जय !!!

चोर—अबे गाडी वाले ! गाडी क्यों नहीं ठहराता ?

सौभाग्य—भाइयो आप लोग कौन हो ?

चोर—क्या तुम जानते नहीं। जो कुछ तुम्हारे पास धन हैं, हमारे सामने रख दो, वरना मार दिये जावोगे।

सौभाग्य—भाई ! हम तो भगवान के दर्शन करने के लिए आये थे। हमारे पास धन नहीं है।

चोर—भगवान कोन हैं ? हम नहीं जानते । जल्दी धन रखते हो या नहीं ?

सौभाग्य—भाई, चोरी करना ठीक नहीं। जो चोरी करता है हमेशा दुख पाता है। क्या तुम लोग भगवान से नहीं डरते जो उन्हीं के दरबार में ऐसा करते हो ?

चोर—या तो राजी से सामान रख दो, वरना तुम्हारी पिटाई करके धन लिया जायगा। देखेंगे फिर तेरे भगवान को।

[भगवान से प्रार्थना करना]

सब—हे प्रभू ! भक्तों की रक्षा का समय यही है

[चोरों का स्त्रियों की तरफ बढ़ना, स्त्रियों का रोना, एक सैनिक भेषधारी का अचानक प्रकट होना एवं स्टेशन तक गाड़ी वाले के साथ जाना]

सैनिक—ये कौन हैं, जो इस समय भगवान के भक्तों को सता रहे हैं ?

चोर—तू कौन है, जो हमारे सामने आया है ? क्या तेरी मौत तुझे यहां ले आई है।

सैनिक—यदि तुम भववान के भक्तों को सताओगे, तो बुरी तरह मेरे हाथों से दण्ड पाओगे।

चोर—हम तेरी इन बातों में नहीं आ सकते।

[चोरों तथा सैनिक में हाथा पाई होना, चोरोंका घायल होना, एवं भगवान पद्मप्रभू की जय बोलना। सौभाग्यमल एवं उसके कुटुम्ब द्वारा भगवान की जय ध्वनि करना एवं सौभाग्यमल द्वारा भगवान की स्तुति करना तथा जयपुर को प्रस्थान]

सोभाग्य—

गायन—

(तर्ज;—जो दिल में खुशी बन कर आये वो दर्द बसाकर···)

श्री पद्म तुम्हारी भक्ति से, हिंसक पापी तक पार हुए।
जो दुख उठाकर आये थे, वो सुख उठा कर चले गए ॥ १ ॥

यह दुर्लभ मानव जीवन पा, जिनने था गँवाया पापों में।
श्री पद्म तुम्हारी करुणा से, वे भवसागर को तैर गए ॥ २ ॥

जो निर्धनता से व्याकुल थे, जो ग्रासों तक पर मरते थे।
श्री पद्म तुम्हारे दर्शन से, वो धन पाकर के मुग्ध हुए ॥ ३ ॥

"मानव" तू मत बन अज्ञानी, श्री पद्म के पथ पर बढता जा।
श्री पद्म की अनुपम भक्ति से, नवज्योति जगाकर चले गये ॥४॥

—ड्राप सीन—

आरती (महावीर स्वामी)

ॐ जय सन्मति देवा, प्रभु जय सन्मति देवा।
वर्द्धमान महावीर वीर अति, जय संकट छेवा ॥ॐ जय० ॥
सिद्धारथ के राज दुलारे त्रिशला के जाये।
कुण्डलपुर अवतार लिया, प्रभु सुनकर हर्षाये ॥ॐ जय० ॥
देव इन्द्र जन्माभिषेक कर, उर प्रमोद भरा।
रूप आपका लख नहीं पाये, सहस आंखधरिया ॥ॐ जय० ॥
जल में भिन्न कमल ज्यों रहिये, घर में बाल यति।
राज पाट ऐश्वर्य छोड़ सब, ममता मोह तजी ॥ॐ जय० ॥
बारह वर्ष छद्मावस्था, आत्म ध्यान किया।
घाति कर्म चकचूर, प्रभु केवल ज्ञान लिया ॥ॐ जय० ॥
पावापुर के बीच सरोवर, आकर योग कसे।
हन अघातिया कर्म दुष्ट सब, शिवपुर जाय बसे ॥ॐ जय० ॥
भूमण्डल के चांदनपुर में, मन्दिर मध्य बसे।
शान्त जिनेश्वर मूरत आपकी, दर्शन पाप नशे ॥ॐ जय० ॥
नत्थो देवी दास कपूरी आकर शरण गही।
दीनदयाला जग प्रतिपाला, आनन्द भरण तुही ॥ॐ जय० ॥

भजन-आरती-संग्रह

महावीर आरती—

ॐ जय जय वीर प्रभो।

शरणागत के संकट भगवन क्षण में दूर करो॥
त्रिशला उर अवतार लिया प्रभु सुर नर हर्षाये।
पन्द्रह मास रतन कुंडलपुर धनपति वर्षाये॥
शुकल त्रयोदशी, चैत्र मास की आनन्द करतारी।
राय सिद्धारथ घर जन्मोत्सव ठाट रचे भारी॥
तीस वर्ष लौं रहे महल में बाल ब्रह्मचारी।
राज त्यागकर यौवन में ही मुनि दीक्षा धारी॥
द्वादश वर्ष किया तप दुद्धर विधि चकचूर किया।
झलके लोकालोक ज्ञान में सुख भरपूर लिया॥
कार्तिक श्याम अमावस के दिन प्रातः मोक्ष चले।
पर्व दिवाली चला जभी से घर-घर दीप जले॥
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी शिव मग परकाशी।
हरि हर ब्रह्मा नाथ तुम्हीं हो जय-जय अविनाशी॥
दीन दयाला जग प्रतिपाला सुर नर नाथ जपै।
सुमरत विघन टरैं इक छिन में पातक दूर भजै॥
चोर भील चंडाल उबारे भव दुख हरण तुही॥
पतित जान "शिवराम" उबारो हे जिन शरण तुही।

भजन-३

आजा मेरे स्वामी मेरी आँखों के सितारे।
हे वीर है वह कौन जो दुःख पीर निवारे ॥टेक॥

होती थी हिंसा घोर था वह एक जमाना।
उस वक्त जुल्म मेटने को आप पधारे ॥ आजा० १ ॥

है आज भी दुनियां को फिर से तेरी जरूरत।
बेचैन है इन्सान क्या हैवान विचारे ॥ आजा० ॥ २ ॥

चारों तरफ है छा रहा अज्ञान अन्धेरा।
भूले हैं मुक्ति मार्ग को ये भारती सारे ॥आजा० ॥ ३ ॥

फिर लौट कर "शिवराम" नहीं मोक्ष से आते।
खुद ही बनो तुम वीर यों सिद्धान्त पुकारे ॥ आजा० ॥ ४ ॥

भजन-४

आजा श्री महावीरजी दीनों के सहारे।
है कौन जो अब आनके दुःख पीर निवारे ॥ टेक ॥

पैग़ामे मोहब्बत हमें नहीं याद वह तेरा।
भाई से भाई लड़ रहे इक देश के प्यारे ॥ आजा० ॥ १ ॥

जुल्मों सितम हैं ढारहे मजहब के दीवाने।
बेमौत बेगुनाह हैं लाखों जान से मारे ॥ आजा० ॥ २ ॥

हा कर दिये बर्बाद हैं घर आग लगा कर।
गाँव के गाँव हो गये खाकिस्तान ये सारे ॥ आजा० ॥ ३ ॥

फिर से अहिंसा धर्म का उपदेश सुनादे।
"शिवराम" हो खुदवीर यों जिनवीर उचारे ॥आजा० ॥ ४ ॥

भजन-४

पल-पल बीते उमरिया मस्त जवानी जाये, प्रभु गीत
गाले गाले प्रभु गीत गाले ॥

प्यारा प्यारा बचपन पीछे खोगया खोगया।
यौवन पाकर तू मतवाला होगया होगया॥
बार-बार नहीं पावेरे गंगा बहती है प्यारे मौका है न्हाले
गाले प्रभु०॥

कैसे कैसे बाँके जग में हो गये हो गये॥
खेलखेलके अन्त जमीं पर सोगये सोगये॥
कोई अमर नहीं आया रे, पंछी ये फूल रंगीले, मुर्झाने वाले
गाले प्रभु०॥

तेरे घर में माल मसाले होते हैं होते हैं।
भूख के मारे कई बिचारे रोते हैं रोते हैं॥
उनकी कौन खबर ले रे जिनके नहीं तनपै कपड़ा रोटियों
के लाले गाले प्रभु०॥

गोरा-गोरा देख बदन क्यों फूला है फूला है।
चार दिन की जिन्दगानी पै भूला है भूला है॥
जीवन सुफल बना लेरे केवल मुनि समझाये ओ जानेवाले
गाले प्रभु०॥

भजन—६

पद्मपुरी (रसिया)

बाड़ा के पद्म जिनेश हमारी पीर हरो, हमारी पीर हरो।
जयपुर राज्य ग्राम बाड़ा है। शहर चाकसू का थाना है॥
सुन्दर सरस स्वदेश हमारी पीर हरो, हमारी०॥ १॥
भैरव यक्ष ग्राम का स्वामी। बतलाई बातें अभिगामी॥
प्रगट होय परमेश हमारी पीर हरो, हमारी०॥ २॥
बैशाख शुक्ल पंचम तिथि आई। तब तहँ प्रगटे त्रिभुवन राई॥
धरे दिगम्बर भेष हमारी पीर हरो, हमारी०॥ ३॥

फैली प्रभु की महिमा भारी । लाखों आते नित नर नारी ॥
मजमा रहे हमेश हमारी पीर हरो, हमारी० ॥ ४ ॥
लाखों जाट पालती आते । मन वांछित फल वे सब पाते ॥
मिट जाय सबका क्लेश हमारी पीर हरो, हमारी० ॥ ५ ॥
प्रत्येक मास की पंचम तिथि को। मेला भरता शुक्ल पक्ष को ॥
घटे बढ़ ना लेश हमारी पीर हरो, हमारी० ॥ ६ ॥
"राज" प्रभु दर्शन को आओ। पूजा रचाओ पुण्य बढ़ाओ ॥
मिटे अशेष क्लेश हमारी पीर हरो, हमारी० ॥ ७ ॥

भजन–७

मन हर तेरी मूरतिया मस्त हुआ मन मेरा ।
तेरा दर्श पाया पाया तेरा दर्श पाया ॥ टेक ॥
प्यारा-प्यारा सिंहासन अति भा रहा भा रहा ।
उस पर रूप अनूप तिहारा छा रहा छा रहा ॥
पद्मासन अति सोहै रे नैना निरख अति चित
ललचाया ॥ पाया तेरा० ॥
प्रभु भक्ती से भव के दुख मिट जाते हैं जाते हैं ।
पापी तक भी भवसागर तिर जाते हैं जाते है ॥
शिवपद वोही पाया रे शरणागती में तेरी जो जीव
आया ॥ पाया तेरा० ॥
सांची कहूँ खोई निधि मुझको मिल गई मिल गई ।
उसको पाकर मनकी अँखियाँ खुल गई खुल गई ॥
आशा पूरी होगी रे आश लगाये "वृद्धी" तेरे
द्वार आया ॥ पाया तेरा० ॥

भक्त की भावना (चलते समय) ८

प्रभु दर्श कर आज घर जा रहे हैं ।
झुका तेरे चरणों में सर जा रहे हैं ॥

यहाँ से कभी दिल न जाने को करता, करें कैसे जाए बिना भी न सरता।
अगरचे हृदय नयन भर आ रहे हैं प्रभु दर्श कर० ॥ १ ॥

हुई पूजा भक्ति न कुछ सेवकाई, न मन्दिर में वहु मूल्य वस्तु चढ़ाई।
यह खाली फकत जोर कर जा रहे हैं, प्रभु दर्श कर० ॥ २ ॥

सुना तुमने तारे अधम चोर पापी, न धर्मी सही फिर भी तेरे हैं हामी।
हमें भी तो करना अमर जा रहे हैं प्रभु दर्श कर० ॥ ३ ॥

बुलाना यहाँ फिर भी दर्शन को अपने, सुमत तुमभरोसेलगेकर्महरने।
जरा लेते रहना खबर जा रहे हैं प्रभु दर्श कर० ॥ ४ ॥

भजन ९

अब तो बन्धाओ धीर हो वीर स्वामी।
कब से खड़ा हूँ तोरे तीर हो वीर स्वामी ॥टेक ॥
सागर से श्रीपाल निकाला, रैन मंजूसा का दुख टाला।
आके हरी भव पीर हो वीर स्वामी ॥ १ ॥
सीता जी की अग्नि परीक्षा करी आन देवों ने रक्षा।
पावक से हुआ नीर हो वीर स्वामी ॥ २ ॥
रानी ने जब सेठ सताया, शूली पर था उसे चढ़ाया।
तुमने हरी दुख पीर हो वीर स्वामी ॥ ३ ॥
मानतुङ्ग जी श्री मुनि राया, तालों में था बन्द कराया।
झड़ पड़ी तुरन्त जंजीर हो वीर स्वामी ॥ ४ ॥
पिंडी फटने के अवसर पर तुमको ही ध्याया था मुनिवर।
प्रगट हुए चन्द्र वीर हो वीर स्वामी ॥ ५ ॥
जिस जिस ने प्रभु तुमको चितारा उसही का दुख तुमने टारा।
'प्रेमी' हुआ है अधीर हो वीर स्वामी ॥ ६ ॥

वीर पालना भजन १०

मणियों के पालने में स्वामी महावीर झूलें।
रेशम की डोरी पड़ी मोतियों से गुथवां लड़ी ॥

त्रिशला माताजी बड़ी देख कर हृदय में फूलें। मणि० ॥

चुटकी बजाय रही हँस के खिलाय रही।
राजा सिद्धारथ मगन होके राज पाट में भूलें ॥ मणि० ॥

कुंडलपुर वासी सारे बोले हैं जय जय कारे।
दर्शन कर प्रेम से महाराज के चरणों में झूलें ॥ मणि० ॥
इन्द्रादि देव आये शीश चरणों में झुकाये।
'किशना' के हृदय की मटकने लगी सारी चूलें ॥ मणि० ॥

वीर कीर्तन ११

जय वीर कहो जय वीर कहो। त्रिसला नन्दन अति वीर कहो ॥
हर श्वांस यही झनकार उठे। धरती नभ सब गुंजार उठे ॥
प्रेमी का प्राण पुकार उठे। जय वीर कहो० ॥ १ ॥
यह दुनिया एक कहानी है। दरिया का बहता पानी है ॥
बस दो दिन की मिजवानी है। जयवीर कहो० ॥ २ ॥
नर जीवन का है सार यही। सुख के पथ का आधार यही ॥
बस लगातार तू तार यही। जयवीर कहो० ॥ ३ ॥
यह संकट भंजन हारा है। भक्तों को तन से प्यारा है ॥
"भगवत" यह नाम सहारा है। जयवीर कहो० ॥ ४ ॥

भजन १२ (तर्ज—कव्वाली)

मेरे भगवान मेरी यही आस है,
पार कर दोगे बेड़ा यह विश्वास है ॥टेक॥
मन के मन्दिर में आँखों के रस्ते तुझे।
मेरे भगवान लाना पड़ा है मुझे ॥
मेरे दिल से न जाना यह अरदास है ॥ मेरे० ॥ १ ॥
तेरे रहने को मन्दिर बनाया है मन।
तेरे चरणों पै अरपन किया तन व धन ॥
मेरे दिल से न जाओगे विश्वास है ॥ मेरे० ॥ २ ॥

प्रेम की डोर से बांध करके प्रभो।
मन के मन्दिर में रक्खूँगा तुमको विभो।
तुम्हें जाने न दूंगा न अवकाश है ॥मेरे०॥ ३ ॥

पद्मपुरी भजन १३

म्हारा पद्म प्रभू जी की सुन्दर मूरत म्हारे मन भाई जी।
बाड़ा में ही देख्या प्रभु बाड़ा में ही देख्या।
बाड़ा में ही देख्या जी ॥ म्हारा० ॥टेक॥
ऐसी सुन्दर लागे प्रभु ऐसी प्यारी लागे।
ऐसी प्यारी लागे जी ॥ म्हारा पद्म प्रभु०॥
वैशाख शुक्ल पंचम तिथि आई।
प्रगटे त्रिभुवन राई जी ॥ म्हारे मन भाईजी
रत्न जडित सिंहासन सोहे।
जहाँ पर आप विराजा जी ॥ म्हारे ० ॥२॥
तीन छत्र थांका सिर पर सोहे।
चौसठ चमर ढुराया जी ॥ म्हारे० ॥ ३ ॥
अष्ट द्रव्य से थाल सजा कर।
पूजा भाव रचाया जी ॥ म्हारे ०॥४॥
सोमा सती ने तुमको ध्याया।
नाग का हार बनाया जी ॥ म्हारे० ॥ ५ ॥
समवशरण में जो कोई आया।
उसका परण निभाया जी ॥ म्हारे ० ॥ ६ ॥
जो कोई अन्धा लूला आया।
उसका रोग मिटाया जी ॥ म्हारे० ॥ ७ ॥
जिनके भूत डाकनी आते।
उनका साथ छुड़ाया जी ॥ म्हारे० ॥ ८ ॥

लाखों जैनाजैनी भाई ।
जय जय शब्द उचारे जी । म्हारे० ॥९॥
आन देव बहुतेरे सेये ।
तुम मिथ्यात्व छुड़ाया जी । म्हारे० ॥१०॥
मूल्या जाट के बैठे घट में ।
नींव खोदने आया जी । म्हारे० ॥११॥
फैली प्रभु की महिमा भारी ।
आते नित नर नारी जी ॥ म्हारे० ॥१२॥
ठाड़ो सेवक अर्ज करे छै ।
जामन मरण मिटावो जी ॥म्हारे० ॥१३॥

भजन १४

(तर्ज–रिमझिम बरसे " ")

दुख के छाये बादरवा दूषित हवायें आई ।
मोरे वीरा आजा आजा मोरे वीरा आजा ॥टेक॥
विपदा के बादल अब घिर घिर आगये आगये ।
ऐसे दुर्दिन में भगवन तुम कहां गये कहां गये ॥
कैसे ये दिन बीते रे जग की विपदा को हरने ।
प्यारे प्रभु आजा आजा प्यारे प्रभु आजा ॥दुख०॥१॥
क्या कहूँ भारत की जनता सो गई सो गई ।
आलस में सो करके सब निधि खो दई खो दई ।
तुम बिन कौन जगायेरे सोई जनता को भगवान् ।
फिर से उठा जा आजा फिर से उठा जा ॥ दुख० ॥ २ ॥
जो जन शुद्ध भाव से तुमको ध्याते हैं ध्याते हैं ।
पापी तक भी भव सागर तिर जाते हैं जाते हैं ॥
फिर क्यों देर लगाये रे "रतन" खड़ा दर तेरे ।
इसे अपनाजा आजा इसे अपनाजा ॥ दुख० ॥ ३ ॥

भजन १५ (पद्मपुरी)

मुझ दुखिया की सुन ले पुकार भगवन पद्मप्रभो ॥ टेक ॥
दीनों के हो तुम प्रतिपालक, धर्म के हो संचालक।
किये अनेकों सुधार भगवन पद्म प्रभो, मुझ० ॥ १ ॥
चारों गति में दुख बहु पाया, काल अनादि दुख में गमाया।
आया तोरे दरबार, भगवन पद्म प्रभो, मुझ० ॥ २ ॥
नर्क गति की करुण वेदना, जन्म मरण कर्मन संग कीना।
मैं भोगे दुख अपार, भगवन पद्म प्रभो, मुझ० ॥ ३ ॥
सदुपदेश दे लाखों तारे, अंजन जैसे अधम उभारे।
अब मेरी ओर निहार, भगवन पद्म प्रभो, मुझ० ॥ ४ ॥
सेवक शान्ति शरणे आया, दर्शन करके पाप नशाया।
जीवन के आधार, भगवन पद्म प्रभो, मुझ० ॥ ५ ॥

महावीर कीर्तन १६

कुंडलपुर के श्री महावीर, भज प्यारे तू जय महावीर।
जय महावीर जय महावीर, भज प्यारे तू जय महावीर ॥
चरण पुजे चांदनपुर तीर, जहाँ नदी बहती गम्भीर।
उस टीले की हो तस्वीर, जहाँ दिया गैया ने छीर।
जहां पड़ी भक्त पर भीर, तहाँ हरी हृदय की पीर ॥
वर्द्धमान स्वामी अति वीर, सन्मति वीर श्री महावीर।
भक्त जनो की बांधो धीर, हो न जाय "किशन" दिलगीर ॥

भजन १७

(तर्ज-रसिया)

चांदनपुर के महावीर हमारी पीर हरो ॥ टेक ॥
जयपुर राज्य गांव चांदनपुर[१] तहां बनों उन्नत जिन मंदिर।

१—भगवन वीर प्रभो।

तट नदी गम्भीर हमारी पीर हरो ॥ चांदन० ॥ १ ॥
पूरव बात चली यों आवे, एक गाय चरने को जावे।
झरजाय उसका छीर ॥ हमारी पीर हरो ॥ चांदन० ॥ २ ॥
एक दिवस मालिक संग आया, देख गया टीला खुदवाया।
खोदत भयो अधीर, हमारी पीर हरो ॥ चांदन० ॥ ३ ॥
रैन मांहि तब सुपना दीना, धीरे धीरे खोद जमीना।
है इसमें तस्वीर, हमारी पीर हरो ॥ चांदन० ॥ ४ ॥
प्रात होत फिर भूमि खुदाई, वीर जिनेश्वर प्रतिमा पाई।
भई इकट्ठी भीड़, हमारी पीर हरो ॥ चांदन० ॥ ५ ॥
तब ही से हुआ मेला जारी, होय भीड़ हर साल करारी।
चैत मास आखीर, हमारी पीर हरो ॥ चांदन० ॥ ६ ॥
लाखों मीना गूजर आवें, नाचे कूदें गीत सुनावें।
जय बोलें महावीर, हमारी पीर हरो ॥ चांदन० ॥ ७ ॥
जुड़े हजारों जैनी भाई, पूजन पाठ करें सुख दाई।
मन वचतन धर धीर, हमारी पीर हरो ॥ चांदन० ॥ ८ ॥
छत्र चंवर सिंहासन लावें, भर भर घृत के दीप जलावें।
बोले जय गम्भीर, हमारी पीर हरो ॥ चांदन० ९ ॥
जो कोई सुमरे नाम तुम्हारा, धन संतान बढे व्योपारा।
होय निरोग शरीर, हमारी पीर हरो ॥ चांदन० १० ॥
'मक्खन' शरण तुम्हारी आया, पुण्य योग से दर्शन पाया।
खुली आज तकदीर, हमारी पीर हरो ॥ चांदन० ११ ॥

भजन—१८ (रथ के समय का)

प्रभु रथ में हुए सवार नकारा बाज रहा ॥ टेक ॥
क्या ठुमक चाल रथ चलता है, वह छतर शीश पे हिलता है।
इत चंवर नाथ पर दुलता है, क्या छाई आज वहार ॥ नकारा० १॥

जिस छवि से नाथ विराज रहे, नासा दृष्टि से साज रहे।
अद्भुत बाजे बाज रहे, सब बोलें जय जय कार ॥ नकारा० ॥२॥
ढोलक और बजे नकारा है, बाजे का स्वर अति प्यारा है।
तबले का ठुमक न्यारा है, झांझन की हो झनकार ॥ नकारा०३॥
कहे "किशन" जारचे वाला है, तेरे नाम पै वो मतवाला है।
सब पियो धर्म का प्याला है, हो भव सागर से पार ॥नकारा०४॥

भजन—१८

हे वीर तुम्हारे द्वारे पर एक दर्श भिखारी आया है।
प्रभु दर्शन भिक्षा पाने को दो नयन कटोरे लाया है॥
नहीं दुनियां में कोई मेरा है आफत ने मुझको घेरा है।
प्रभु एक सहारा तेरा है जगने मुझको ठुकराया है ॥
धन दौलत की कुछ चाह नहीं घरबार छुटे परवाह नहीं।
मेरी इच्छा है तेरे दर्शन की दुनिया से चित्त घबराया है॥
मेरी बीच भंवर में नैया है बस तू ही एक खिवैया है।
लाखों को ज्ञान सिखा तुमने भवसिंधु से पार उतारा है॥
आपस में प्रीत व प्रेम नहीं तुम बिन अब हमको चैन नहीं।
अब तो तुम आकर दर्शन दो त्रिलोकी नाथ अकुलाया है॥
जिनधर्म फैलाने को भगवन कर दिया है तन मन धन अर्पन।
नव युवक मण्डल अपनाओ सेवा का भार उठाया है॥

भजन—२०

सब मिलके आज जय कहो श्रीवीर प्रभु की।
मस्तक झुका के जय कहो श्रीवीर प्रभु की ॥टेक॥
विघनों का नाश होता है लेने से नाम के।
माला सदा जपते रहो श्रीवीर प्रभु की ॥ १ ॥

ज्ञानी बनो दानी बनो बलवान भी बनो ।
अकलंक सम बन के कहो जय वीर प्रभु की ॥ २ ॥
होकर स्वतन्त्र धर्म की रक्षा सदा करो ।
निर्भय बनो अरु जय कहो श्रीवीर प्रभु की ॥ ३ ॥
तुमको भी अगर मोक्ष की इच्छा हुई है "दास" ।
इस वाणी पै श्रद्धा करो श्रीवीर प्रभु की ॥ ४ ॥

आरती २१ (पार्श्वनाथ भगवानकी)

जय पारस जय पारस जय पारस देवा ॥टेक॥
माता तेरी वामा देवी पिता अश्व देवा ।
काशीजी में जन्म लिया था हो देवों के देवा ।
आप तेइसवें हो तीर्थंकर, भक्तों को सुख देवा ।
पाँचों पाप मिटाकर हमरे, शरण देवो जिन देवा ॥जय०२॥
दूजा और कोऊ न दीखे, जो पार लगावे खेवा ।
नवयुवक मंडल बनारहे, जो करे आपकी सेवा ॥जय०३॥

भजन—२२

(तर्ज फिल्म-रामराज्य)

त्रिशला के राज दुलारे की हम कथा सुनाते हैं ।
भारत के उजियारे की हम कथा सुनाते हैं ॥टेक॥
बढ़ गये पाप जब भारी हुए दुखी सभी नर नारी ।
सिद्धारथ के घर में जन्में वीर प्रभु अवतारी ॥
महिमा जिनकी सदा सकल जन गाते हैं ॥ हम०॥
यज्ञ पशु वध हटे सभी दुख कटे, दया में डटे गुणी सुख पाये ।
धर्म बाग फिर खिला, समय शुभ मिला,
गिरा अघ किला भले दिन आये ।
ज्ञानी ध्यानी बने कर्म सब हने,
दुखों में छने नहीं घबराते हैं ॥हम०॥

महावीर कहलायें परमपद पाये,
जगत में नामी सभी को पाये।
ज्ञान दान बहु दिया जगत हित किया,
त्याग के भेद सभी समझाते हैं ॥हम॥
पावांपुर में आन लिया निर्वाण महा सुखकारी।
जिस लिये लिया था योग लिया वही शिव पद भारी
देव मिल "अमृत" दीपावली रचाते हैं ॥हम०॥

भजन २३

(तर्ज-फिल्म-रतन)

जब तुम्हीं चले मुख मोड़ हमें यूं छोड़
ओ पारस प्यारा, अब तम बिन कौन हमारा ॥ टेक ॥
ये बादल घिर घिर आते हैं।
तूफान साथ में लाते हैं ॥
व्याकुल होकर हमने तुम्हें पुकारा ॥ अब तम० १ ॥
आँखों में आँसू बहते हैं।
सब रो रो कर यूं कहते हैं ॥
जब तुम्हीं ने हमसे किया किनारा ॥ अब तुम० २ ॥
होटों पर आहें जारी हैं दिल में याद तुम्हारी है।
ये राज भटकता फिरे है दर दर मारा ॥ अब तुम० ३ ॥

भजन—२४

(तर्ज-कव्वाली)

क्यों न अब तक हमारी सुनाई हुई।
जब चरणों से है लौ लगाई हुई ॥ टेक ॥
तेरे चरणों से जिसने लगाई लगन।

पार भव से किया उसको आनन्दघन ॥
क्यों न हम पर प्रभु रहनुमाई हुई ॥ क्यों० १ ॥

सेठ के पुत्र को सर्प ने था डसा।
उसके मन में तेरा ही विश्वास था ॥
तेरे मन्दिर में विष की सफाई हुई ॥ क्यों० २ ॥

हुक्म राजा ने सूली का जब था दिया।
तब सुदर्शन ने वह हुकम सर धर लिया ॥
सबके दिल पर घटा गम की छाई हुई ॥ क्यों० ३ ॥

सूली देने का सामान तैयार था।
उसके मन में तो केवल तेरा ख्याल था ॥
फिर तो सूली से उसकी रिहाई हुई ॥ क्यों० ४ ॥

प्रेम चरणों से तेरे लगाया हुआ।
तेरा "पदम" मेरे दिल में समाया हुआ ॥
तेरे दर्शन से सबकी भलाई हुई ॥ क्यों० ५ ॥

भजन—२५

हमें वीर स्वामी तुम्हारा सहारा।
कुंडलपुर के राजा सिद्धारथ का प्यारा ॥

जो दर्शन दिये फिर दुबारा भी देना।
वह त्रिशलावतीजी के आँखों का तारा ॥ १ ॥

सुना करता था जो तारीफ स्वामी।
तो वैसा ही पाया नजारा तुम्हारा ॥ २ ॥

अजब मुस्कराहट अजब शान तेरी।
अजब नूर प्यारा है स्वामी तुम्हारा ॥ ३ ॥

जो छीना है दिल को न दिल को हटना।
हटा लोगे दिल को न होगा गुजारा ॥ ४ ॥

करों सेवकों की महावीर रक्षा।
है सब प्राणियों को सहारा तुम्हारा ॥ ५
दया हम पै करना दया के हो सागर।
करोगे तुम्हीं भव सागर से पारा ॥ ६ ॥
सिवा प्रेम के हम पै देने को है क्या।
झुका बस यह चरणों में शीश हमारा ॥ ७ ॥
"किशन लाल" जैनी जन्म जारचे का।
बड़े प्रेम से महावीर पुकारा ॥ ८ ॥

भजन २६

महावीर दया के सागर तुमको लाखों प्रणाम।
श्री चांदनपुरवाले तुमको लाखों प्रणाम ॥

पार करो दुखियों की नैय्या।
तुम बिन जग में कौन खिवैया ॥
मात पिता न कोई भैया।
भगतों के रखवाले तुमको लाखों प्रणाम ॥ महा० ॥ १ ॥

जब ही तुम भारत में आये।
सबको आ उपदेश सुनाये।
जीवों के आ प्राण बचाये।
बन्ध छुड़ाने वाले तुमको लाखों प्रणाम ॥ महा० ॥ २

सब जीवों में प्रेम बढ़ाया।
राग द्वेष सबका छुड़वाया ॥
हृदय से अज्ञान हटाया।
धर्म वीर मतवाले तुमको लाखों प्रणाम ॥ महा० ॥ ३ ॥

समोशरण में जो कोई आया।
उसका स्वामी परण निभाया।
भव सागर से पार लगाया।

भारत के उजियारे तमको लाखों प्रणाम ॥ महा० ॥ ४ ॥
किशन लाल को भारी आशा।
सदा रहे दर्शन का प्यासा।
धर्म पुरा देहली में वासा।
कहतेबूरा वाले तुमको लाखों प्रणाम ॥ महा० ॥ ५ ॥

भजन—२७ (चांदनपुर)

तर्ज-रसिया

भाइयो चलो सभी मिल, महावीर जी के दर्शन करने को।
दर्शन करने को, कर्म जंजीर कतरने को भाइयों० ॥ टेक ॥
अतिशय क्षेत्र जगत विख्याता, चमत्कार तत्काल दिखाता।
ऋद्धि सिद्धि सब होय, पुण्य भंडारा भरने को ॥ भाइयो० ॥ १ ॥
जयपुर राज्य जिला हिंडौना, चांदन गांव वार जिन मौना।
तीर नदी गम्भीर पटोंदा रेल उतरने को ॥ भाइयो० ॥ २ ॥
वनी धर्मशाला चहुँ ओरा, बीच बनो मंदिर चौकोरा।
उन्नत शिखर विशाल बने हैं स्वर्ग पकड़ने को ॥ भाइयो० ॥ ३ ॥
चरण पादुका बनी पिछाड़ी, नशिया कहते सब नर नारी।
इसी जगह निकली थी प्रतिमा, जग अघ हरने को ॥ भाइयो ॥३॥
छत्र चढावे चंवर दुलावे, घृत के भर भर दीप जलावे।
पूजन पाठ भजन विनती, जयकार उचरने को ॥ भाईयो० ॥ ४
चैत सुदी में होता मेला, लाखों गूजर मीना भेला।
जुड़े हजारों जैनी भाई, भव सागर तरने को ॥ भाइयो० ६ ॥
एकम वदी वैशाख हमेशा, रथ निकले श्री वीर जिनेशा।
"मक्खन" भी वहाँ जाय, प्रभु का नाम सुमरने को।
भाइयो चलो सभी मिल महावीरजी के दर्शन करने को ॥ ७ ॥

भजन—२८

पाये पाये जी वीर के दर्शन पायें जिया हर्षाये।
सब टले हमारे पातक पुण्य कमाये ॥टेक॥
भूले भूले अब तक भटके अब ना भटका जाये।
शिव सुख दानी तुमको पाकर कैसे भूला जाये ॥ पाये०॥१॥
भवोदधि तारन तरनजिनेश्वर तुम ग्रन्थों में गाये।
फिर भक्तों की नाव भंवर में कैसे गोता खाये ॥पाये०२॥
विघ्न निवारो संकट टारो राखो चरण निभाये।
फिर 'सोभाग्य' बढ़े भारत का घरर मगंल गाये ॥ पाये०३॥

भजन—२६

व्याकुल मोरे नयननवा, चरण शरण में आया।
दर्श दिखादो स्वामी दर्श दिखादो ॥ टेक ॥
कर्म शत्रु तो घिर घिर सिर पर आरहे आरहे।
भव सागर के दु:ख अनन्ता पा रहे पा रहे ॥
इनसे वेग बचाओ रे अर्ज हमारी मानो।
दु:ख मिटादो स्वामी दु:ख मिटा दो ॥ व्याकुल०॥१॥
तीन भुवन में तुमसा स्वामी और न कोई पातें हैं पाते हैं।
स्वामी तुम बिन गैर और नही पाते हैं पाते हैं ॥
पथ दिखलाओ रे अर्ज हमारी मानो ।
दु:ख मिटादो स्वामी दु:ख मिटादो ॥ व्या ॥ २ ॥
सब जीवों का दुख से वेड़ा पार करो पार करो॥
"सेवक" का भी स्वामी अब उद्धार करो उद्धार करो।
सब ही शीश नमावें रे अर्ज हमारी मानो ।
दु:ख मिटादो स्वामी दु:ख मिटादो ॥ व्या० ॥३॥

भजन—३०

वीर क्या तेरी निराली शान है।
देख के दुनिया जिसे हैरान है ॥टेक॥

जाने क्या जादू भरा है आप में।
हर बशर को आपका ही ध्यान है ॥ वीर० ॥१॥

सैकड़ो मीलों से आते हैं यहा।
दर्श बिन दुनिया तेरे हैरान है ॥ वीर० ॥२॥

जिसने जो हसरत तुम्हे जाहिर करी।
आपने पूरा किया अरमान है ॥ वीर० ॥३॥

जोभी आया आपके दरबार मे।
उसको मुंह मागा दिया वरदान है ॥ वीर० ॥४॥

जीव हिंसा को हटाया आपने।
सारे जीवो पै तेरा अहसान है ॥ वीर० ॥५॥

रास्ता मुक्ति का बतलाया हमें।
तेरा ममनु सारा हिन्दुस्तान है ॥ वीर० ॥६॥

काम धेनु सी है ज्योती आप में।
वो ही शक्ति आप में परधान है ॥ वीर० ॥७॥

है दया करना धर्म इन्सान का।
वीर स्वामी का यही फरमान है ॥ वीर० ॥८॥

"राज" पै भी हो इनायत की नजर।
आपके सन्मुख खड़ा नादान है ॥ वीर० ॥९॥

झण्डा गायन ३१

अभी याद करके फरियाद सुनके, चले आओ हमारे * पद्मा
प्रभु आओ हमारे पद्मा ॥ टेक ॥

---

* वीरा-हमारे वीरा—

भक्ति भाव से पूजा रचाऊंगा, मन मन्दिर में तुमको बिठाऊंगा।
दुखी जान करके, अपना मान करके चले आओ हमारे ॥ १ ॥
अंधियारी रात में मैं हूँ किनारे, अब तो यह नैया है तेरे सहारे।
क्षमा दान करके अपना मान करके चले आओ हमारे ॥ २ ॥
तेरे ही खातर तो निकला हूँ घर से, अब दूर न होना प्रभु मेरी नजर से। हमने लिया शरणा बेड़ा पार करना चले आओ हमारे॥३
दर्शन दिखा के अब मुँह न मोड़ना, आशा लगाये हूँ दिल को न तोड़ना ॥
दास जान करके, खेवनहार बनके, चले आओ हमारे पद्मा प्रभु आओ हमारे पद्मा ॥ ४ ॥

आरती ३२

ओं जय अन्तरयामी स्वामी जय अन्तरयामी।
दुख हारी सुख कारी तुम हो त्रिभुवन के स्वामी।
ॐ जय अन्तर यामी ॥ टेक ॥

नाथ निरंजन सब दुख भंजन सन्तन आधारा।
पाप निकंजन ज मन रंजन सम्पति दातारा ॥
ॐ जय अन्तर्यामी० ॥ १ ॥

करुणा सिन्धु दयाल दया निधि जय जय गुण धारी।
वांछित पूर्ण दुख दल चूरण सब जन सुखकारी ॥
ॐ जय अन्तर्यामी० ॥ २ ॥

ज्ञान प्रकाशी शिवपुरवासी अविनाशी अविकार।
अलख अगोचर शिवमय शंकर शिव रमनी भरतार ॥
ॐ जय अन्तर्यामी० ॥ ३ ॥

जग जग तारक कल-मल-हारक तुम हो दीन दयाल।

जय जय धर्म दिवाकर जग में भव जीवन प्रति पाल ॥
ॐ जय अन्तर्यामी० ॥ ४ ॥
'न्यामत' गुण गावे पाप नशावे चरणन सिर नावे ।
पुनि पुनि अरज सुनावे भगवन शिव कमला पावे ॥
ॐ जय अन्तर्यामी० ॥ ५ ॥

भजन ३३

महावीर स्वामी हो अन्तर यामी,
हो त्रिशला नन्दन काटो भवफन्दन
बाले ही पन में तप कीना वन मे,
दर्श दिखाना भूल न जाना ।
पार लगाना कृपा निधाना,
महिमा तुम्हारी जग में न्यारी ।
सुध लो हमारी हो व्रत के धारी
वनखंड में तप करने वाले, केवल ज्ञान उपाने वाले ।
हो उपदेश सुनाने वाले, हिंसा पाप मिटाने वाले ॥
हो तुम कष्टमिटाने वाले, पशुवन बंध छुड़ाने वाले ।
स्वामी प्रेम बढ़ाने वाले, हो तुम नियम सखाने वाले ॥
पूरण तप के करने वाले, भगतों के दुख हरने वाले ।
पॉवॉपुर में आने वाले, स्वामी मोक्ष में जाने वाले ॥

बधाई ३४

बाजत आज बधाई नगर मे, बधाई नगर में ।
ठौर ठौर पर हर्षित होवत वीर की जय जय भाई नगर में ।
अष्ट द्रव्य ले सब जन पूजन, श्री अर्हन्त रचाई नगर में ॥
नित नित उन्नत करत नार नर, जैनधर्म चितलाई नगर में ।

अनहद बाजे मधुर स्वरों के, सुन सुन 'सुमत' सुहाई नगर में ॥

भजन ३५

तर्ज:—(म्हारा छैल भँवर कसूंबो ")

म्हारा ऋषभ जिनेश्वर नैया म्हारी, भव से पार लगाज्यो ।
केवट बनकर शीघ्र खबर ल्यो, अब मत देर लगाज्यो ॥ टेर ॥

कर्मों की काली घटा, छाय रही चहुँ ओर ।
नैया म्हारी झरझरी, पवन चले झकझोर ॥
म्हारा कर्म जालका फंदा सूँ, प्रभू आकर थे ही छुड़ाज्यो ॥म्हारा०॥१॥

क्रोध, मान, मद, लोभ ये, लूटें धन चारित्र ।
भवसागर के बीचमें, तुमही हो मम मित्र ॥
ओ हितकारी भगवान म्हारो धन चारित्र बचाज्यो ॥म्हारा०॥२॥

दीन गरीबों की टेर सुन, राखीज्यो थे लाज ।
आयो हूँ अब शरणमें, सारो म्हारो काज ॥
अज्ञान तिमिर को दूर भागकर, ज्ञानको दीप' जगाज्यो ॥म्हारा०॥३॥

भजन ३६

तर्ज.–(छुप २ खड़े हो जरूर कोई बात है)

गहरी गहरी नदिया नाव बिच धारा है, तेरा ही सहारा है २ ॥

डगमग करती है कर्मों के भार से,
मारग भूल रहे घोर अंधकार से,
डूबती इस नावका तू ही खेवनहार है–तेरा ही सहारा है २ ॥१॥

अग्नि का नीर हुवा तेरे प्रताप से,
कुष्ट रोग दूर हुआ तेरे नाम जापसे,
भव-भव दुख का तू ही मेटनहार है–तेरा ही सहारा है २ ॥२॥

वीतराग छवि तेरी लगे अति प्यारी है,

चरणों पै जाऊँ नाथ बलि बलिहारी है,
रूप तेरा देखकर 'शान्ति' चित धारा है-तेरा ही सहारा है २ ॥३॥

भजन—३७

तर्जः—(रुमझुम बरसे बादरवा)

वीतराग हित उपदेशी, घट घट के तुम हो ज्ञाता,
विमल गुण धारी धारी० ॥टेर॥
भव-सागर में पाप लुटेरे, लूट रहे लूट रहे।
ऐसे में तुम नाथ छोड़कर कहां रहे, कहां रहे।
दो शक्ति प्रभु ऐसी जी, धर्म—चरित्र बचाऊं,
तुम भवतारी—तारी० ॥ विमल ॥१॥
लख चौरासी योनीमें हम भटक रहे भटक रहे।
क्या क्या वर्णन करें दुःख जो हम सहे, हम सहे।
घट घट के तुम ज्ञाता हो, तुमसे ना कुछ भी छाना,
सुनो ज्ञानभारी-धारी० ॥विमल० ॥२॥
तव स्वरूप पहिचान आन मैं शरण लही, शरण लही।
भवसागरको पार करूं सन्देह नहीं, सन्देह नहीं।
महिमा अपरम्पारा है, 'दीप' है दास तुम्हारा,
जाऊं बलिहारी-हारी ॥ विमल० ॥३॥

भजन—३८

तर्जः—(निर्बल के प्राण पुकार रहे)

भव-भव के बन्धन काट प्रभू, मैं शरण तिहारी आया हूँ।
गतियों के दुख से दुखी हुआ, और कर्मों से घबराया हूँ ॥टेर॥
जो जनम मरण के दुःख सहे, नहिं हमसे बचन मे जाय कहे।
इस दुख से मेरा उद्धार करो, अर्जी ये लगाने आया हूँ ॥१॥

ये क्रोध, मान, मद, लोभ, लुटेरे छूट रहे हैं चौतरफा।
लुट जाय न मेरा रत्नत्रय, मै इसे बचाने आया हूं ॥ २ ॥

संसार समन्दर के अन्दर नैया है भंवर में फंसी हुई।
कर पार इसे खेवट बनकर, तेरी चरण-शरण में आया हूँ ॥३॥

इन लाख चौरासी योनी मे, बिन जाने तेरे भटक रहा।
जब आतम ज्योति जगी तनमे, तब भेद तिहारा पाया हूँ ॥४॥

निर्भय व निडर बनकर "मन्ना" है तेरी भक्ति में लीन हुआ।
पाकर के तुमसा पद्म प्रभु, मन फूला नहीं समाया हूँ ॥५॥

भजन—३६

तर्ज.—(लाल दुपट्टा मलमल का)

लहर लहर लहराये केसरिया झंडा जिनमत का।
यह सबका मन हरषाये केसरिया झंडा जिनमत का

फर फर फर फर करता झंडा गगन शिखा पर डोले।
स्वस्तिकका यह चिह्न अनूठा भेद हृदय के खोले॥
यह ज्ञान की ज्योति जगाये ॥१॥

इसकी शीतल छाया में सब पढ़े 'रतन' जिनवानी।
सत्य अहिंसा प्रेमयुक्त फिर बने देश लासानी॥
यह सत्-पथ पर पहुँचाये ॥२॥

भजन—४०

तर्ज.—(लाल दुपट्टा मलमल का)

हम द्वार तुम्हारे आये, हैं चाव तुम्हारे दर्शन का प्रभुजी'''।
दो नयन कटोरे लाये है, चाव तुम्हारे दर्शनका प्रभुजी'' ॥
फिर फिर के चारों गतियों मे, इधर उधर हम डोले।
मिला न कोई देव अन्य जो, कर्म के बन्धन खोले॥

तुम तारण तरण कहाये ॥ है चाव० ॥१॥
दल दल जगका महा कठिन है, है यह नर्क निशानी ॥
इससे बच कर देव तुम्हारी, पहुँचे शरण सुहानी ॥
बस 'रतन' यही मन भाये ॥ है चाव० ॥२॥

भजन—४१

तर्जः—(बिगडी बनाने वाले)

गीतो के गाने वाले, तू गीत गा ले.
जिनवर की भक्ति को, दिल में बसा ले ।
भावों की तन्त्री, तेरे हाथ में है ।
भक्ती के तारों से इसको सजा ले ॥ जिनवर० ॥१॥
इधर भी तू गादे, उधर भी सुनादे ।
भक्ति की शक्ती से प्रभु को रिझाले ॥ जिनवर० ॥२॥
"रतन" व्यर्थ जगमें न दिल को फंसा तू ।
जगके परिग्रहसे खुदको बचा ले ॥ जिनवर० ॥३॥

भजन—४२

तर्जः—(छोड़ गये बालम, मुझे हाय अकेला...)

पार करो स्वामी मुझे भवसागर से पार करो ।
भार हरो स्वामी मेरे पाप कर्मका भार हरो ॥टेर॥
पतित उधारक सब जग माने दीनानाथ बखाने ।
केवलज्ञानमयी अगनी से अष्ट कर्म तुम जारे ॥१॥
वीतराग छवि तुमरी सोहे जगजीवन मन मोहे ।
बने हमारी सत् पथ दर्शक भ्रम तम अघ सब खोवे ॥२॥
ज्ञान उजागर तुम गुण सागर मैं अल्पज्ञ क्या जानूं ।
धर्म 'दीप' पाऊं वह शक्ती कर्म शत्रु को हानूं ॥३॥

भजन—४३

तर्जः—(जिया बेकरार है)

भवसागर अपार है. टूटी ये पतवार है
जीवन नैया डगमग डोले तेरा ही आधार है ।।टेर।।
पाप पवन ज्यों चले जोरसे नैया डगमग डोले हो ।
कर्म लुटेरे आकरके फिर सम्यक् गठरी खोले ।। १ ।।
क्या अचरज गर बने तुम्ही से पाकरके तव भक्ती हो ।
भवसागर को पार करूं मै दे दो ऐसी शक्ती ।। २ ।।
हूँ अल्पज्ञ नही है शक्ति क्या गुण तेरे गाऊं मैं ।
धर्म 'दीप' अर्जी है तुमसे शिवपुर बस्ती पाऊँ ।। ३ ।।

भजन—४४

तर्ज.—(पंछी बावरा)

मूरख बावरा क्यों देह से प्रीत लगाये ।। टेक ।।
चमक देखि काया की मूरख, फूला नहीं समाये ।
तेल फुलेल लगा दर्पण में देख देख हरषाये ।। १ ।।
कुटुम्ब कबीला अपना माने उन हित पाप कमाये ।
मोह गहलमें सतगुरु वाणी पल पर भी न सुहाये ।। २ ।।
पल पल जीवन बीतरहा है काल खड़ा मुँह बाये ।
चेत चेत ओ भले चेतन "दीप" बुझे पछताये ।। ३ ।।

भजन ४५

तर्जः—(जो दिलमें खुशी बनकर आये)

जो जगमें जन्म लेकर आये, आकर वो जगसे चले गये,
हां चले गये ।
जो मुट्ठी बांधे आये थे, वो हाथ पसारे चले गये, हां चले गये ।।
जीवन के समर में कोई भी, नहिं जीत सका कर्मो से,
हां कर्मो से ।

अरमान भरे दिलको लेकर कर्मो से हारे चले गये, हां चले गये ॥
वो जाने वाले दुनियां से, ये 'लाल-रतन, सब छोड़ गये,
हां छोड़ गये।
ज्यों नग्न दिगम्बर आये थे, त्यों आडम्बर तज चले गये,
हां चले गये ॥

भजन ४६

तर्ज—(सब कुछ लुटाया हमने·· ···)

क्यो जा रहा मुसाफिर, तू पाप की गली में।
विपधर करम डसेंगे, इस पाप की गली में ॥ १ ॥
खंजर तने हुये हैं कांटे बिछे हुये हैं।
बिन मौत तू मरेगा, इस पाप की गली में ॥ २ ॥
पापो से दूर हटकर, सच्चे धर्म पै डटकर।
कांटों को गुल बनाले, इस पाप की गली में ॥ ३ ॥
सच्चे धर्म के पथको, तजना न भूल कर भी।
हरगिज 'रतन' न जाना इस पाप की गली मे ॥ ४ ॥

भजन ४७

तर्ज—(आयेगा आयेगा आयेगा, आनेवाला)

जायेगा, जायेगा, जायेगा, आनेवाला जायेगा।
आकाश एक दुनियां, मानव हैं उसमें तारे,
लेते हैं वे बसेरा, इक रात के सहारे।
है रात्रि भर वे जीते, होता है जब सवेरा,
मानों समाप्त जीवन करके सभी सिधारे ॥
जायेगा, जायेगा, जायेगा, आने वाला जायेगा ॥ १ ॥
है यह सराय दुनियां, कितने ही रोज आते,

अवधी समाप्त करके लाखों हैं रोज जाते ।
क्या धनपती औ' निर्धन, क्या दीन जन बिचारे,
जाते हैं सबही इक दिन, उस मृत्युके सहारे ।
जायेगा, जायेगा, जायेगा आनेवाला जायेगा ॥ २ ॥
बतला ओ मूढ मानव, क्या जगमें ढूंढता है,
यह फूलसी है काया, क्या इसको सूंघता है ।
मुरझायेगी यह इक दिन, लग जायेंगे अंगारे,
जल जल के खाक होंगे, अरमान दिल के सारे ॥
जायेगा, जायेगा, जायेगा, आनेवाला जायेगा ॥ ३ ॥
मुश्किल से मूढ मानव, तू ने ये रूप पाया,
इसका बता "रतन" क्यूं बातों में है बिताया ।
जीवन के पथ पै चल त, कर्तव्य को संभारे,
वरना ये काल शिर पर, तुझको खड़ा पुकारे ॥
जायेगा, जायेगा, जायेगा, आने वाला जायेगा ॥ ४ ॥

भजन ४८

तर्ज—(तुम्हारे लिये हुये बदनाम)

खड़े हम आकर तेरे द्वार, सुना तुम हो जग तारन हार ।
अब तारो या न तारो, तुम्हारी मरजी ॥
मुक्ति महल के हो तुम वासी, क्या दुनियां से मेल,
फिर भी दुनियां खेल रही है, तेरे नाम का खेल,
है सबको तेरा ही आधार, जपे जो तुम्हें लगे भव पार,
अब तारो या न तारो, तुम्हारी मरजी ॥ खड़े० ॥ १ ॥
पाप भार से डगमग डोले आज 'रतन' की नइया,
कोई न सगी, कोइ न साथी, एकाएक खिवैया,
जपूं मैं नाम तेरा हरबार, कि जिससे नाव लगे भवपार,
तुम तारो या ना तारो तुम्हारी मरजी ॥ खड़े० ॥ २ ॥

भजन ४९

तर्ज—(यह दुनियां बसाने को जी चाहता है)

इन कर्मों के धोके मे कोई न आये,

ये इक दिन हंसाये तो, सौ दिन रुलाये ॥ टेक ॥

सुबह राज्य का ताज शिर पर धरा था,

मगर कर्मका चक्र उल्टा फिरा था।

दुपहरी में श्रीराम, बनको सिधाये ॥ इन० ॥ १ ॥

हरिश्चन्द्र राजा हुये सत्य धारी,

की चान्डाल के कर्मवश तावेदारी।

इन कर्मोंने पुत्रादिक को बिकाये ॥ इन० ॥ २ ॥

कर्मों के धोके में जो कोई आया,

उसे नाच नाना तरह से नचाया।

'रतन' कर्म से, प्रभु शरण ही बचाये ॥ इन० ॥ ३ ॥

भजन ५०

तर्ज:—(हमें छोड़ पिया किस देश गये)

तुम वीर जिनेश्वर सुनो व्यथा, हम व्यथा सुनाने आये हैं।
सुन करके तव महिमा गरिमा, हम शरण तिहारी आये हैं ॥
हम लाख चुरासी योनीमें तिर्यंच पशू त्रस थावर में।
कर्मों की जो जो मार सही, तुम जानत हो प्रभु सही सही ॥१॥
जब प्रबल पुण्यका उदय हुआ उत्तम श्रावक कुल प्राप्त हुआ।
भक्ती मे तुमरी लीन रहूँ, सुधि बुधि भी तन की कछु न रहे ॥२॥
ना दौलत माल खजाना ना. ना पुनर्जन्म ना स्वर्ग चहूँ।
मन ज्ञान 'दीप' करलें अपने हम मोक्ष महा पद प्राप्त करें ॥३॥

भजन ५१

तर्जः—(इक दिल के टुकडे हजार हुये)

भव भवके दुखड़े अपार सहे, कभी यहां गिरा कभी वहां गिरा।
गतियों में अकेला भ्रमत फिरा, कभी यहां गिरा कभी वहां गिरा॥
शुभ कर्म उदय हो जानेसे, मानवका जीवन पाया था।
जीवन के थपेड़े लगते ही, कभी यहां गिरा कभी वहां गिरा॥१॥
मलमूत्र भरे उस त्रिस्तर पर, बचपनकी वे घड़ियां बीतीं।
जब पैरोंके बल खड़ा हुआ, कभी यहां गिरा कभी वहां गिरा॥२॥
अलमस्त जवानी आते ही, मैं भूल गया सब अपनापन।
तरुणाईकी मदहोशीमें, कभी यहॉ गिरा कभी वहॉ गिरा॥३॥
यौवनकी हरियाली बीती, और शुष्क बुढ़ापा आ धमका।
कायाका पतझड़ खूब हुआ, कभी यहॉ गिरा कभी वहॉ गिरा॥४॥
झूंठे विषयोंमें फंस करके, जीवन को तमाशा कर डाला।
था 'रतन' वही कंकड़ बनकर कभी यहॉ गिरा कभी वहॉ गिरा॥५॥

भजन ५२

तर्जः—(जो दिल में खुशी बनकर आये)

श्री वीर भजन करले बन्दे, जो कर्म मैल धुल जाये रे॥ टेक॥
जीवन व मरण के दुःखों से;
दुःखों की चारों गतियों से।
कर्मोंके गाढ़े बन्धनसे, जो मुक्ति तुझे मिल जाये रे॥ श्रीवीर०॥१॥
भक्ति में जब वो लीन हुआ;
तो पार किया था अञ्जन को।
तज राग द्वेष भय ग्लानी तू भक्तिमें प्रभुकी घुलजारे॥श्रीवीर०॥२॥

नर जन्म अमोलक पाया है,
अब व्यर्थ इसे मत खोना रे।
मन ज्ञान 'दीप' जग जाने पर, फिर मुक्ति तुम्हें मिल जाये रे ॥३॥

भजन—५३

तर्ज़:—(वो पास रहे या दूर रहे)

भगवन्त भजन क्यों भूला रे बस यह ही एक सहारा है।
संसार रैनका सपना है, ना कोई यहां पर तेरा है ॥टेर॥
ये थैली हेली धन प्यादे, ये साथ चलेंगे ना तेरे।
सिर काल कुदाल लिये ठाडा पलभर का ना पतियारा है ॥१॥
तज राग द्वेषछल माया को, भक्ती रस में तू घुल जारे।
फिर आतम ज्ञान सु 'दीप' जगे और मोक्षपुरी मिलजाये रे ॥२॥

भजन—५४

तर्ज़—(तेरे कूचे में अरमानों की दुनियां)

समझ उठ चेतरे चेतन, भरोसा है नहीं पलका।
खड़ी मुख फाड़ कर मृत्यू, भरोसा है नहीं पलका ॥टेर॥
बालपन खेल में खोया, जवानी नींद भर सोया।
बुढापेमें बढ़ी तृष्णा हुआ नहिं बोझ भी हलका ॥१॥
प्रभूका नाम नहिं लीना उमर सारी बितादी यूं।
बुलावा मौत का आया चखो तब स्वाद निज फलका ॥२॥
सिफारिश भी नही चलती किसी की मौत के आगे।
राम रावण बली हारे पता जिन का न था बल का ॥३॥
विजय गर मृत्यु पर चाहो करो निज आत्म का चिंतन।
ज्ञान का 'दीप' जागेगा दिखेगा मार्ग शिवपुर का ॥४॥

भजन—५५

तर्जः—(हवामें उड़ता जाये)

क्यों जीवन वृथा गमाये, नहीं कोई भरोसा इक पलका ॥होजी०॥
यह् निष्फल बीता जाये नहिं कोई भरोसा इक पलका ॥टेर॥
कल कल कल कल क्या करता यह् मौत शीश पर डोले।
जल जल राख बनेगी काया क्यों नहीं अंखियां खोले ॥१॥
कर कर कुछ सद्‌कार्य जगत में यह् दुनियां है फानी।
विनश जायगी मूरख तेरी पल में मस्त जवानी ॥ २ ॥
तेरा मेरा क्या करता है कौन यहां पर तेरा।
"रतन" जगत की इस सराय में चार दिनों का डेरा ॥३॥

भजन—५६

छोड़ गये स्वामी क्यों मुझ से नाता तोड़ गये।
जाय चढे गिरनार मुझे काहे भटकती छोड़गये ॥
भव भव की यह् प्रीत लगी थी अब काहे बिसराई।
दिल में थी जब ध्यान धरम की मुझसे क्यों प्रीत लगाई।
पशुवन की किलकारी सुनकर कंगना गांठ तुडाई।
छप्पन कोटि सजे यदुवंशी काहे बरात सजाई।
तोड मोड़ सब साज मुझे काहे तड़फती छोड चले ॥
अब संग चलूंगी नाथ मुझे काहे अकेली छोड़ चले ॥

भजन—५७

तर्जः—(मोहन की मुरलिया बाजे)

प्रभु वीत राग हित कारी, मैं लीनी शरण तिहारी।
श्रीपाल का कुष्ट मिटाकर जग से पार लगाया,
सेठ सुदर्शन को शूली से सिंहासन बिठलाया।

तुम हो प्रभु करुणाधारी, प्रभु वीतराग हितकारी ॥
भक्तिवश मेंढक भी था एक फूल चढाने आया।
राह में दब एक हाथी पग से सीधा स्वर्ग सिधाया ।
उसने ली शरण तिहारी प्रभु वीतराग हितकारी।

भजन—५८

शिवपुर पथपरिचायक जयहे, सन्मति युग निर्माता
गङ्गा कल कल स्वर में गाती
तव गुण गौरव गाथा
सुरनर किन्नर तव पद युग में
नित नत करते माथा
हम भी तव यश गाते
सादर शीश झुकाते
हे सद्बुद्धि प्रदाता
दुख हारक सुखदायक जय है, सन्मति युग निर्माता
जयहे, जयहे, जयहे, जय जय जय जय हे, सन्मति युग निर्माता
मङ्गल कारक दया प्रचारक
खग पशु नर उपकारी
भवि जनतारक कर्म विदारक
सब जग तव आभारी
जब तक रवि शशि तारे
तब तक गीत तुम्हारे
विश्व रहेगा गाता
चिर सुख शांति विधायक जयहे, सन्मति युग निर्माता
जयहे, जयहे, जयहे, जय जय जय जय हे सन्मति युग निर्माता
भ्रातृ भावना भुला परस्पर
लड़ते हैं जो प्राणी

उनके उर मे विश्व प्रेम
फिर भरे तुम्हारी वाणी
सब के करुणा जागे
जग से हिंसा भागे
पाए सब सुख साता
हे दुर्जय दु.ख त्रायक जय हे, सन्मति युग निर्माता।
जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय जय हे सन्मति युग निर्माता।

भजन—५६

तर्ज—(बापू की अमर कहानी)

सुनो सुनो ए दुनियां वालो जैन धर्म की अमर कहानी।
आज फूल उठती है छाती, आती है जब याद पुरानी। आती है॥
सबसे पहले ऋषभदेव प्रभु, इसकी नीव जमाने आये।
अखिल विश्व को सद्गृहस्थ का सच्चा पाठ पढ़ाने आये।
राज-पाट को त्याग नगर के बाहिर बन में ध्यान लगाया।
केवल ज्ञान प्राप्त कर जिनने सोता हिन्दुस्तान जगाया॥
दया धर्म का मूल बताया, अधम वही है जो अभिमानी॥१॥
नेमिनाथ भगवान जिन्होंने इसका मर्म बताया सच्चा।
निज स्वारथ वश किसी जीव को तड़फाना है कभी न अच्छा।
पार्श्वनाथ प्रभू के तप आगे क्रूर कमठ राक्षस भी हारा।
खंड खंड गिरि हुए कमठ ने बरसाई जब मूसल धारा।
क्षमा, धैर्य, तप के आगे दुश्मन होते पानी पानी॥ २॥
यह कहने की नही जरूरत महावीर ने क्या बतलाया।
अश्वमेध मेघ यज्ञ का जग से हिंसा-काण्ड हटाया।
गांधीजी ने उसी वीर की सत्य अहिंसा को अपनाया।

अङ्गरेजों को दूर हटा कर भारत को आजाद बनाया।
ये 'अनुप' नित नित्य नया है, नहीं जहां में इसकी सांनी ॥३॥

भजन—६०

तर्ज—(चुप २ खडे हो)

भव भव रुला हूं न पाया कोई पार है,
तेरा ही आधार है तेरा ही आधार है।
सीता के शील को तुमने बचाया है,
सूली से सेठ को आसन बिठाया है।
खिली खिली कलियां किया नागहार है तेरा···
जीवन की नाव ये कर्मों के भार से,
अटकी है कीच बीच रतियों की मारसे।
रही सही मत का तू ही पतवार है तेरा ही···
महिमा का पार जब सुर नर न पा सके,
"सौभाग्य" ये प्रभु गुण तेरे गा सकें।
बार बार आपको सादर नमस्कार है, हो···

भजन [भक्तपुकार] ६१

मैंने छोड़ा सभी घरबार, भगवन तेरे लिये ॥टेक॥
तुम को टीला खोद निकाला, मेहनत से यह छप्पर डाला।
रहे सब ही परिवार ॥ ॥भगवन० १ ॥
जोधराज को तुमने बचाया, फिर मन्दिर उसने बनवाया।
जैनी आरहे अपार ॥ भगवन० २ ॥
दबे पडे जब कोई न आया, तुम्हे न जाने दूं मन भाया।
चाहे हो जाये तकरार ॥भगवन० ३ ॥
चढे वहां घी मेवा नारियल, सोना चांदी केशर तन्दुल।

थी यहां गऊ की धार ॥ भगवन० ४ ॥

जो तुम मंदिर में जाओगे, प्रीत मेरी सब विसराओगे।
हो जाऊंगा मैं तो ख्वार ॥ भगवन ५ ॥

बीबी बच्चे सब चिल्लायें, उधर खडी गया डकरावें।
मर जायें धरणि सर मार ॥ भगवन० ६ ॥

असर किया वो ग्वाल रुदन ने, तभी वहां हितकार गगन से।
सुर द्वारा कराई पुकार ॥ भगवन० ७ ॥

प्रतिमा यहां से जब यह जावे, गाडी को तू हाथ लगावे।
पहले छत्री करैं त य्यार ॥ भगवन० ८ ॥

उसका सदा चढ़ावा खाना, जब चाहे तब दर्शन पाना।
सदा रक्खे खुला दरबार ॥ भगवन० ९ ॥

—:आरती:—

भजन—६२

यह विधि मंगल आरति कीजे,
पंच परम पद भज सुख लीजे ॥ टेक ॥

प्रथम आरति श्री जिन राजा।
भवदधि पार उतार जिहाजा ॥ यह० ॥

दूजी आरति सिद्धन केरी,
सुमरन करत मिटे भव फेरी ॥ यह० ॥

तीजी आरति सूर मुनिन्दा,
जनम मरण दुख दूर करिंदा ॥ यह० ॥

चौथी आरति श्री उवज्झाया।
दर्शन करत पाप पलाया ॥ यह० ॥

पांचवी आरति साधु तुम्हारी।

कुमति विनाशन शिव अधिकारी ॥ यह० ॥
छट्टी ग्यारह प्रतिमा धारी।
श्रावक वन्दूं आनन्द कारी ॥ यह० ॥
सातवीं आरति श्री जिन वाणी।
"द्यानत" स्वर्ग मुक्ति सुखदानी ॥

भजन-६३ [अभिलाषा]

मोरे मन मन्दिर में आन बसो भगवान ॥
घण्टे और घड़ियाल नहीं है। सामग्री का थाल नहीं है ॥
लेकिन एक प्रेम का दीपक। जलता है भगवान ॥ १ ॥ मोरे० ॥
क्रोध नहीं है क्लेश नहीं है। बगुले का सा भेष नहीं है ॥
छोटी सी एक प्रेम कुटी है। प्रेम का है यह स्थान ॥ २ ॥ मोरे० ॥
टूटा फूटा मन्दिर मेरा। पड़ा हुआ है घोर अन्धेरा ॥
तुम आओ तो हो उजियारा। तुम बिन है सुनसान ॥ ३ ॥ मोरे० ॥

भजन-६४

वीरा वीरा मैं पुकारूँ तेरे दर के सामने।
मन तो मेरा हर लिया महावीरजी भगवान ने ॥
मोहिनी छवि को दिखा दो अब मेरे भगवन मुझे।
तेरी चर्चा हम करेंगे, हर बशर के सामने ॥ वीरा० ॥
डूबते श्रीपाल को तुमने बचाया है प्रभो।
द्रौपदी की लाज राखी कौरवदल के सामने ॥ वीरा० ॥
हार का बनकर सरप जब खालिया उस सेठ को।
सोमाने सुमरण किया महावीरजी के नाम को ॥वीरा०॥
चित्त हम सबका भटकता, वीर के दीदार को।
कर जोड़ के देखा करूँ मैं तेरे दर के सामने ॥वीरा०॥

भजन—[श्रद्धा के फूल] ६५

एक प्रेम पुजारी आया है, चरणों में ध्यान लगाने को।
भगवान तुम्हारी मूरत पर श्रद्धा के फूल चढ़ाने को ॥

तुम त्रिशला के दृग तारे हो, पतितों के नाथ सहारे हो।
तुम चमत्कार दिखलाते हो, भक्तों के मान बढ़ाने को ॥ १ ॥

तुमरे वियोग में हे स्वामी, हृदय व्यथा बढ़ती जाती।
भारत में फिर से आजाओ, जिन धर्म का रंग जमाने को ॥ २ ॥

उपदेश धर्म का देकर के, फिर धर्म सिखादो भारत को।
आओ एक बार प्रभु आओ, हिंसा का नाम मिटाने को ॥ ३ ॥

प्रभु तुमरे भक्त भटकते हैं, तेरे नाम को हरदम रटते हैं।
"त्रिलोकी" नित्य तरसता है, प्रभु आपके दर्शन पाने को ॥ ४ ॥

भजन—[वीर पालना] ६६

वीर स्वामी का सुन्दर अधर पालना।
सज रहा सिद्धारथ के घर पालना ॥टेक॥

जिसमें रेशम की सुन्दर पड़ी डोरियाँ।
सच्चे मोती लगाये—चहुँ ओरियाँ ॥

है सुशोभित मह सुन्दर अधर पालना ॥ वीर० ॥ १

झुन झुना माता त्रिशलावती ले रही।
वीर के हाथ में हंस के जब दे रही ॥

वीर का हिल रहा बेखतर पालना ॥वीर० ॥२

देव इन्द्रादि मिल पुष्प बरसा रहे।
सारे नरनारी हृदय में हर्षा रहे।

देखने जा रहा हर बशर पालना ॥ वीर०॥ ३ ॥

जन्म उत्सव का दिन मिल मनाओ सभी।
यह "किशन" ने लिखा है अमर पालना ॥वीर० ॥४

भजन—[वीर भक्ति] ६७

क्यों, ना ध्यान लगाये, वीर से बावरिया ।

जाना देश पराये झमेला दो दिनका ॥टेक॥

जीवन तेरा है एक सपना, इस दुनियां में कोई न अपना ।

हंस अकेला जाय वीर से० ॥ १

माता बहना चाची ताई, पिता पुत्र और भाई जवांई ।

मतलब से प्रीत लगाय, वीर से० ॥ २

जो हैं तुझको सबसे प्यारे, मृतक देख तुमसे हों न्यारे ।

कोई संग में न जाय, वीर से बावरिया० ॥३

जिस तन को तू खूब सजाये, आखिर मिट्टी में मिल जाये ।

फिर पीछे पछताय, वीर से० ॥ ४ ॥

जिस माया पर तू इतराये, आखिर में कुछ कामन आये ।

यहीं पड़ी रहजाये, वीर से० ॥ ५ ॥

धर्म ही आखिर काम में आये, हर दम तेरा साथ निभाये ।

"त्रिलोकी नाथ" समझाय, वीर से० ॥६

भजन—[पद्म प्रभु] ६८

तर्ज—मैं वन की चिड़िया वन के-वन वन डोलूं रे)

मैं कदम कदम पर *पद्म प्रभु की जय बोलूं रे ।

अर पग पग पर अपने साहस को तोलूं रे ॥ टेक ॥

मैं शत्रुन से भिड़ जाऊं, रण धीर वीर कहलाऊं ।

इस कायरता के कण में, रंग रस घोलूं रे ॥ मैं कदम०

हो विषधर की फुंवकारें, चाहे दिग्गज किलकारें ।

मैं सिंहों के झुण्डों में, संग संग डोलूं रे ॥ २

---

*:-वीर प्रभु जय.... ...

गहरे सागर पर्वत हों, दल दल हो दावानल हो।
मैं महाकाल के मुख में, दांत टटोलूं रे ॥ ३
बढ़जा बढ़जा आगे बढ़जा, पुरुषारथ की चोटी चढ़जा।
मैं कर्मभूमि की शूल सेज पर सोलूं रे ॥ ४

भजन—६९

पुजारी ! हृदय के पट खोल।
कोई गावे कोई रोवे, उनसे तू मत बोल ॥ पुजारी ॥
तू न किसी का कोई न तेरा।
नाहक करता मेरा तेरा ॥
तुझे पड़ी है क्या दुनियां की, मत रस में विष घोल ॥पुजारी॥
तेरी सूरत सुन्दर प्यारी।
उसकी विमल छटा है न्यारी ॥
इधर उधर मत फिरे भटकता, व्यर्थ बजावत ढोल ॥ पुजारी॥
तेरे घट में है परमातम।
बना मूढ़ मत भूले आतम ॥
तेरे घट में छिपा हुआ है, तेरा रतन अमोल ॥पुजारी॥
ज्ञान् दीप से तिमिर भगादे।
आतम शक्तिः पुनः सरसादे ॥
भक्ति तुला से मन के मनसे, मन के मन को तोल ॥ पुजारी ॥

भजन—७०

(तर्ज-गांधी तू आज हिन्द की एक श्यान बन गया)

ऐ ! वीर तू संसार का अभिमान बन गया।
जिसने लिया उपदेश, वो इंसान बन गया ॥
बहती थी नदी खून की मजहब के नाम पर।

उस वक्त तू दुनियां पै मिहरवान बन गया ॥
दुनियां को रिहा कर दिया हिंसा के पाप से ।
सुख चैन का पथ लोगों को आसान बन गया ।
बजने लगी राव ओर अहिंसा की दुंदुभी ॥
सुन कर जिसे सारा जहां बलवान बन गया ।
हर दिल में पनपने लगे जब प्रेम के पौधे ॥
तो उजड़ा हुआ चमन फिर से गुलस्तान बन गया ।
शिक्षाएं तेरी गौर से जिस दिल में समाई ।
"भगवत" की नजर में वहां भगवान बन गया ॥

भजन—७१

जब तेरी डोली निकाली जायेगी ।
बिन मुहूरत के उठाली जायगी ॥
उन हकीमों से ये कहदो बाल कर ।
दावा कर ते जो किताबें खोलकर ॥
यह दवा हरगिज न खाली जायेगी ॥ १ ॥
क्यों गुलों पर हो रही बुलबुल निसार ।
है खडा पीछे शिकारि खबरदार ।
मार कर गोली गिराली जायगी ॥ २ ॥
अय मुसाफिर क्यों पसरता है यहां ।
ये मिला तुझको किराये का मकां ।
कोठरी खाली कराली जायगी ॥ ३ ॥
जर सिकन्दर का यहीं पर रहगया ।
मरते दम लुक़मान भी यह कह गया ।
यह घड़ी हरगिज न टाली जायेगी ॥ ४ ॥
चेत "भैया" अब श्री जिन वर भजो ।

मोह रूपी नींद को जल्दी तजो ॥
वरना यह पूंजी उठाली जायगी ॥ ५ ॥

भजन–७२

[तर्ज–रतन फिल्म]

चांदनपुर महावीर, भरो सुख सीर, हरो दुख सारा,
दुनियां में कौन हमारा ॥ टेक ॥

प्रभु चरणों की महिमा भारी । सुन्दर छवि सोहे मन हारी ।
तुम अतिशय की है बलिहारी, प्रभु हमको तारो,
आज न करो किनारा ॥ दुनिया० १
भक्तों का पारावार नहीं, भक्ति का कोई सुम्मार नहीं
कब ही खाली दरबार नहीं । हम दीनों को,
भव सिन्धु से करदो पारा ॥ दुनियां० २ ॥
अपने दिल में जो ध्याता है, वह सफल मनोरथ पाता है ।
नहीं खाली कोई जाता है, है अजब देव भगवान
न कोई विसारा ॥ दुनियां० ॥ ३ ॥
घर बैठे जो गुन गान करै, वह भी सुन्दर जल पान करै ।
कोई विपद न उस पर आन परै प्रभु करो "सुदर्शन" पार
न लावो बारा ॥ दुनियां० ॥

भजन–७३

तेरे दर को छोड़ कर, किस दर जाऊं मैं ।
सुनता मेरी कौन है, जिसे सुनाऊं मैं ॥
जब से नाम भुलायो पदमा, लाखों कष्ट उठाये हैं ।
न जाने इस जीवन अन्दर, कितने पाप कमाये हैं ॥
मेरे दुष्ट कर्म ही मुझ को, तुम से न मिलने देते हैं ।
जब मै चाहूं दर्शन पाना, रोक जब ही वह लेते हैं ॥

छींटा दो प्रभु ज्ञान का शरण में आऊं मैं ॥ पद्मा ॥
मोह मिथ्या में पड़कर स्वामी नाम तिहारा भूला था।
जिसको समझा था सुख मैंने दुख का गोरख धन्धा था।
मोह माया को छोड़ कर शरण खड़ा हूं मैं ॥ पद्मा ॥
बीत चुकी सो बीत चुकी अब, शरण तिहारी आया हूं।
दर्शन भिक्षा पाने को, दो नैन कटोरे लाया हूं।
मन में अपने ज्ञान का दीप चढ़ाऊं मैं।
सुनता मेरी कौन है, किसे सुनाऊं मैं ॥ पद्मा ॥

भजन–७४ [मन की भावना]

महावीर स्वामी मैं क्या चाहता हूं।
फक़त आप का आसरा चाहता हूं ॥ टेक ॥
मिली तुम को पदवी जो निर्वाण पद की।
कि तुझ जैसा मैं भी हुआ चाहता हूं ॥ महावीर० १ ॥
फंसा हूं मैं चक्कर में आवागमन के।
कि अब इससे होना रिहा चाहता हूं ॥ महावीर० २ ॥
दया कर दया कर तू मुझ पर दयालू।
दया चाहता हूं दया चाहता हूं ॥ महावीर० ३ ॥
बुरा हूं भला हूं अधम हूं कि पापी।
क्षमा कर तू मुझ पै क्षमा चाहता हूं ॥ महावीर० ४ ॥

भजन–७५

वीर बिम्ब-महिमा।

नयनों में जिसके समा गई प्रतिमा महावीर की ॥
तारों भरी थी रात सुन्दर वह ख्वाब था, टीले की केवल खुदाई का ख्याल था। ग्वाले की क़िस्मत जगा गई प्रतिमा महावीर की ॥

जयपुर रियासत का शाही फर्मान था, जब तोप का वो निशाना दिवान था ।। गोले को ठण्डा बना गई प्रतिमा महावीर की ।। मन्दिर अनोखा वह तैयार होगा, जिससे अधिक धर्म प्रचार होगा

मन्त्री को सब समझा गई प्रतिमा महावीर की ।।

जब बन्द किया सन् तितालिस का मेला, नाजिम पुलिस भेज फिर तब ही खोला, सुमत नृप को अतिशय दिखा गई प्रतिमा महावीर की ।।

भजन–७६

[तर्ज—फिल्म किस्मत]

नेमी पिया ने जो लिया गिरनार बसेरा ।
घर घर में दिवाली है मेरे घर में अन्धेरा ।।
शादी को छोड़कर मेरे साजन चले गये ।
वह क्या गये सब राज भोग सुख चले गये ।
इस मतवाली दुनियां में अब रह क्या गया मेरा ।। १ ।।
ढूंढूंगी उनको जा अभी अंधियारी रात में,
धर्मानुराग त्याग का दीपक ले हाथ में ।
फिर वो मिलें या ना मिले हो जाए सवेरा ।। २ ।।
सुनती थी जो मैं सच्ची हुई सारी कहानी,
गम्भीर दयावान थी वो उनकी जवानी ।
तड़फाये हुए पशुओं का खुलवा दिया घेरा ।। ३ ।।
वस्तु भली बुरी से भरा ये जहान है,
धरमी की यहां जीत है, पापी की हान है ।
हर तौर फिरे लूटता यह कर्म लुटेरा ।। ४ ।।
माँ बाप आप क्या कहो मैं महँदी रचालूँ,
वर और दूजा वरने को फिर कंगना बंधालूँ,
तप से जलादूँ काम वासनाओं का डेरा ।। ५ ।।

भजन–७७

अरे मूरख मुसाफिर क्यों पड़ा बेहोश सोता है।
संभल उठ बांध ले गठरी समय क्यों व्यर्थ खोता है।।टेक।।
किसी का पल घड़ी छिन में किसी का एक दो दिन में।
बजे जब कूच का डंका तो जाना सब का होता है ॥ १ ॥
खड़ा है काल लेकर मौत का झंडा तेरे सिर पर।
अरे अब चेत चेतन देख क्या दुनियां में होता है ॥ २ ॥
ना तेरे मां बाप दादे सब गये हैं जिस जमालय में।
उसी में सब को जाना है कहो किस किस को रोता है ॥ ३ ॥
बनी है हाड़ चमड़े से रुधिर और मांसमय काया।
झरे दिन रात मल इससे तू क्या मलमल के धोता है ॥ ४ ॥
लड़कपन खेल में खोया जवानी में विषय सेया।
बुढापे में बढ़ी तृष्णा गया नर जन्म थोथा है ॥ ५ ॥
गई सो तो गई अब भी रही को राखले "मक्खन"।
करो निज काज आतम का न खा भवदधि में गोता है ॥ ६।

भजन–७८

तर्ज—(हमारे अंगना बाजे बाजे)

त्रिशला के अंगना, हो त्रिशला के अंगना, बाजे बाजे बाजे, है बधाई ॥ त्रिशला के।
पुरजन हुए हैं मगनवा, गूंजे जय जय गगना ॥ टेर ॥
धन्य धन्य श्री वीर ने, लिया पुण्य अवतार।
पाप भार जग का मिटा, छाया हर्ष अपार ॥
धन्य आज जयन्ती आई आई आई ॥ त्रिशला के ॥ १ ॥
आये इन्द्र सची मिल द्वार, लाये एरावत गज लार।

गाते सुयश गुणगान, भीने भीने गाते, ओ गाते हैं लय तान।
छिम छिम छिम छिम छिम हां छिम छिम छिम छिम छिम।
नाचत हैं सुरनार, सब मिल दे रहे हैं करताल।
जय जय कलश करे "सौभाग्य"॥ बाजे बाजे॥ २॥

भजन—७९

[तर्ज—जिया बेकरार है]

नैया मँझधार है पापों का भार है,
आजा महावीरजी तेरा इन्तजार है ॥टेर॥
खेवटिया विन भवसागर में हम सब बैठे तरसे हों।
आवो खेवन हार, पार करदो नैया निज करसे ॥ १॥
नीच अधम पापी भी भगवन तेरे दर आजाये।
दर दरकी ठोकर से फिर वो सहज मुक्ति पाजाये॥ २॥
हिंसा घर घर नाच रही है इसको शीघ्र हटाजा हो।
सत्य अहिंसा की दुनियां में सुमधुर धार बहाजा॥ ३॥

भजन—८०

[तर्ज—रूम झुम वरसे बादरवा]

फर फर फहरे केशरिया, गगन शिखा पर झण्डा, चित हरसाता साता॥ टेर॥

क्या बालक बूढे हिल मिल आरहे २।
इसकी छांया बैठ वीर गुण गारहे २॥

गायन कैसा प्यारा रे, जोश जगाता दिल में, सुख बरसाता साता सुख बरसाता॥ १॥ फर फर॥

जग दल बल की दलबन्दी से दूर रहो २।
स्वाभिमान रक्षा में दृढ बल पूर रहो २॥

सबको वीर बनाता रे, धर्म दिपाता जग में तप सरसाता साता,
तप सरसाता ॥ २ ॥ फर फर ॥

सत्य अहिंसा के मारग पर बढे चलो बढे चलो।
उन्नति के "सौभाग्य" शिखर पर चढे चलो चढे चलो ॥

मत कायरपन लाना रे, हंस हंस बलि हो जाना यही दर्शाता साता
यही दर्शाता ॥ २ ॥ फर फर ॥

भजन—८१

[तर्ज—म्हारा छैल भँवर कंसूबो]

म्हारी बीच भंवर में नैया अटकी, श्री प्रभु पार लगाजो।
ठोर ठोर अटके नहीं भटके ऐसी सुपथ बताजो ॥ टेर ॥

भव सागर दुख कीच में जीवन टूटी नाव।
मोह भँवर में फंस रही, सूझे नाहीं उपाव ॥

म्हारे क्रोध मान ठग गैल पड्या छै इणनें दूर भगाजो ॥ १ ॥

तरल तरंगें व्यसन की, डगमग रही डुलाय।
पाप पवन करती पतन, तुम बिन कौन सहाय ॥

ओ भवतारी भगवंत, भव भव विपत हटाजो ॥ ३ ॥

साख सुनी ग्रंथन में ऐसी, तारे पतित अनंत।
यह "सौभाग्य" सफल हो जबही, निज पद्मोगुण यंत ॥

म्हारा मन मन्दिर में पावन प्रभु जी आतम ज्योति जगाजो ॥४॥

भजन—८२

[तर्ज—मेरा सुन्दर सपना बीत गया]

तेरी सुन्दर मूरति देख प्रभु।
मैं जीवन दुख सब भूल गया, ये पावन प्रतिमा देख प्रभु ॥ टेर ॥
ज्यों काली घटाएं आती हैं, ज्यों कोयल कूक मचाती है।

मेरा रोम रोम ज्यों पुलकित है, यह चन्द्र छबी जिन देख प्रभु
॥ १ ॥ तेरी ॥

ओ ''' '' दोष के हरन वाले; ओ मोक्ष के वरने वाले।
यह मन भक्ति में लीन हुआ, लीन हुआ हां लीन हुआ,
इसको तू निभाना देख प्रभु ॥ २ ॥ तेरी ॥
हर स्वास में तेरी ही लय हो, कर्मो पर सदा विजय भी हो,
यह जीवन तुझ सा जीवन हो, जीवन हो, हां जीवन हो,
"सौभाग्य" यही लिख लेख प्रभु ॥ ३ ॥

भजन—८३

[तर्ज—लारीलप्पा-]

प्रभुजी तुम्हारा नाम सदा जपता,
वीर नाम वीर नाम सदा रटता।

ओ ओ प्रभु ध्यान से लाखों तर गये ॥

१—त्रिशला के हैं नन्दन प्यारे, सिद्धार्थ के राज दुलारे।
नयनों के हैं तारे ओ प्रभुजी, सबके मन को भाये ॥
२—अहिंसा का पाठ पढाया, दया धर्म का राह बताया।
नैया पार लगाये मेरे प्रभुजी सबके मन को भाये ॥
३—प्रभु तुम्हारे दीवाने हैं, तुम शमा हम परवाने हैं।
शमा पे हम जल जायें हों प्रभुजी, सब के मन को भाये ॥
४—बादल बन कर जग में छा जा, अमृत वाणी फिर वर्षाजा।
युवक मण्डल गुण गाये हो प्रभुजी, सबके मनको भाये ॥

भजन—८४

[तर्ज—गायेजा गीत मिलन के तू अपनी लगन के]

गायेजा गीत प्रभु के तू अपनी लगन से—
कि एक दिन जाना है।

काहे सताये कर्म लुटेरे—काहे देवें दुःख,
तुम बिन मेरा और न कोई तुम से ही लागा है दिल,
प्यासे हैं नैन दर्शन के तेरे चरणन के—
कि एक दिन जाना है ॥ १ ॥

लूट न जाये कर्म लुटेरे मुझको यह है डर,
मैं अकेला यह जग लुटेरा तुम से ही लागा है दिल,
आये हैं शरण तुम्हारे मिटा दे दुख सारे—
कि एक दिन जाना है ॥ २ ॥

डोले नयना प्रभुजी के द्वारे दर्शन की है धुन,
सेवक तेरा तुझको पुकारे विनती मेरी सुन,
अर्ज करें हम सारे लगा दे भव पारे—
कि एक दिन जाना है ॥ ३ ॥

भजन—८५

[तर्ज—तेरे कूंचे में अरमानों की]

तेरे दरबार में स्वामी सहारा लेने आया हूँ।
तेरे दर्शन को पानेकी, तमन्ना लेके आया हूं।
घेरा मोहे अष्ट कर्मो ने, बचाओ आनकर मुझको।
यही अरदास ले करके, तेरे चरणों में आया हूं ॥ १ ॥
हृदय में भक्ति दिल में प्रेम और नयनों में तुम मेरे।
और नयनों में तुम मेरे।
जरा तो देख ले आकर, तेरे दर्शन का प्यासा हूं ॥ २ ॥
आया हूं द्वार पर तेरे, प्रभुजी मुक्ति बतलादो,
प्रभुजी मुक्ति बतला दो।
दया कर तारो सेवक को, शरण तेरी मैं आया हूं ॥ ३ ॥

भजन—८६

[तेरे कूंचे में अरमानों की दुनियां लेके आया हूं]

तेरे चरणों में अय भगवन ये आशा लेके आया हूं,
सुधर जाये मेरा जीवन यह इच्छा लेके आया हूं। टेक
न आवे भाव हिंसा का वचन हितकर सदा बोलूं,
शील संतोषमय जीवन की वांछा लेके आया हूं॥
सभी से प्रेम हो मेरा नहीं हो द्वेष दुष्टों से,
भाव दुखियों पै मै अपना दया का लेके आया हूं।२।
काम अरु क्रोध की अग्नि मेरी हो शांत हे भगवन,
लोभ मद मर्दन की सुचिंता लेके आया हूं॥३॥
रहे नित भाव समता का न ममता हो मुझे पर से,
सफल 'शिवराम' हो मनकी कामना लेके आया हूं।४।

भजन—८७

[तर्ज—जिया बेकरार है छाई बहार है]

जिया बेकरार है मेरी पुकार है,
दर्श स्वामी दो दिखा, मुझे इन्तजार है। टेक।
ओ, जितने देव जगत के देखे, सब ही रागी देखे, हो सब।
तुझको राग और द्वेष नहीं सब, एक तिहारे लेखे हो एक ॥१॥
ओ, सबसे न्यारी तेरी महिमा, कैसे कोई गाये, हो।
तेरा ध्यान धरे जो कोई, तुझसा ही हो जाये, हो० ॥२॥
ओ, हम हैं बैठे आश लगाये, हमको दर्श दिखाना, हो०।
तारन तरन कहाते हो तुम, अपना विरद निभाना, हो ॥३॥
ओ, धर्मी तारे पार अनन्ते, एक अधर्मी तारो, हो।
वीतराग 'शिवराम' हो तुम तो, मेरी ओर निहारो, हो ॥४॥

भजन-८८

[तर्ज, ओ दुनियां बनाने वाले क्या यही है दुनियां तेरी]

ओ मौड सजाने वाले क्या तुमने यह आज विचारी।
हाय करूं क्या नेमि पिया री जाय चढे गिरनारी ।।टेक।।
बारात सजा कर क्यों लाये बलदेव कृष्ण थे क्यों आये।
ओ कंगना बंधाने वाले क्यों कुल की लाज उतारी ॥ १ ॥
हा पशु बंधे जो चिल्लाये तो मौड़ तोड़ कर गिरि धाये।
ओ दया दिखाने वाले क्यों दया न मेरी धारी ॥ २ ॥
नहीं किसी को सताते हो, तुम; प्रेम का पाठ पढाते हो तुम।
ओ प्रेम सिखाने वाले क्यों मुझ से है प्रीति विसारी ॥ ३ ॥
सखी जोग मुझे अब धरना है निज आतम का हित करना है।
शिव नारीको चाहने वाले, अब मैं भी बनू शिव नारी ॥ ४ ॥

भजन-८९

[तर्ज एक दिल के टुकडे हजार हुए]

वह दिन था मुबारिक शुभथी घड़ी, जब जन्मे थे महावीर प्रभू।
तब नरक में भी थी शांतिपडी, जब जन्मे थे महावीर प्रभू ।।टेक।।
तिथि चैत सुतेरस प्यारी थी, वह धन्य थी कुंडलपुर नगरी।
सिद्धार्थ पिता त्रिशला उरसे, वे जन्मे थे महावीर प्रभू ॥ १ ॥
जब धर्म कर्म था नष्ट हुआ, आचार जगत का बिगड़ चला।
तब शुद्धाचार सिखाने को, वे जन्मे थे महावीर प्रभू ॥ २ ॥
जब यज्ञ में लाखों पशुओं का, होता था हा बलिदान महा!
तब हिंसा दूर हटाने को, वे जन्मे थे महावीर प्रभू ॥ ३ ॥
जब कर्त्ता वाद अज्ञान बढा, सिद्धांत कर्म को भूल गये।
तब स्याद्वाद समझाने को, वे जन्मे थे महावीर प्रभू ॥ ४ ॥

जब भटक रहे थे भव बनमें, शिवराह नजर नहीं आता था।
तब मुक्तिका मार्ग दिखाने को, वे जन्मे थे महावीर प्रभु ॥ ४ ॥

भजन–९०

[तर्ज—चुप चुप खड़े हो जरूर कोई बात है]

धन धन कातिक अमावस प्रभात है।
चौदश की रात है यह चौदश की रात है ।टेक

पावा पुरी वन दिल को लुभा रहा।
आनन्द बादल ये कैसा छारहा।
जै जै कार झड़ी लगी मानों बरसात है ॥ १ ॥

ऊषा है फूली सवेरा भी होगया।
रात्रि भी खो गई, अंधेरा भी खो गया।
गगन में बाजे बजें कोई करामात है ॥ २ ॥

गये आज मोक्ष में वीर भगवान जी।
रत्नों की रोशनी देवों ने आन की।
पर्व ये दिवाली चला देशों में विख्यात है ॥ ३ ॥

तभी ज्ञान केवल है गौतम ने पालिया।
वही "शिव" रास्ता हमको दिखा दिया।
खुशियां मनायें क्यों न खुशी की ये बात है ॥४॥

भजन–९१

[तर्ज–तकदीर बनी बनकर बिगड़ी]

अब शरण गही भगवन तेरी कर्मोंने मुझे है ख्वार किया
गतिचार चौरासी लाखविषै है मरन अनंत ही बार किया॥टेर
धन ज्ञान मेरा सब लूट-लिया मुझे रंक निबल करडारा

जो विपत महो न वह तुझ से छुपी,

हर तौर मुझे लाचार किया ॥ १ ॥

नरकों में कभी लेजाकर के मुझे कष्ट महान दिखाये हैं ।

पशु गति में भूख व प्यास सही,

मेरा आन किसीने शिकार किया ॥ २ ॥

नर जन्म है बीता चिन्ता में नित भोग रोग में ग्रस्त रहा

नही स्वर्ग में चैन मिला मुझको,

वहां अंत में हाहाकार किया ॥ ३ ॥

शिवराम बहुत हैरान हुआ अब नाथ मेरा उद्धार करो

जिसने है तुम्हारी शरण गही,

तुमने है उसे भव पार किया ॥ ४ ॥

भजन—६२

[तर्ज—मुहब्बत के धोखे में कोई न आये]

विषयों के धोके में कोई न आये कोई न आये ।

ये इक छिन रमाये तो बरसों रुलाये ॥ टेक ॥

विषय इन्द्री से कष्ट पाते हैं हस्ती,

हां रसना के वश हो के मछली तड़फती ।

भ्रमर नासिका के विषय ने सताये, विषयने सताये ॥ १ ॥

पतंग नेत्र के वश हो दीपक पै जलता,

करण इन्द्री के वश हिरण हाय मरता ।

है एक एक इन्द्री ने ये दुख दिखाये ये दुख दिखाये ॥ २ ॥

जो पांचों ही इन्द्री के वश में हैं होते,

वह नरकों में पड़कर के कर्मों को रोते ।

हा उनकी व्यथा की कौन गाये, कथा कौन गावे ॥ ३ ॥

हो दुनियां में ख्वारी विषय ही के कारण,
है बदनाम अबतक वह कीचक व रावण ।
जो त्याग इन्हें वह शिवानन्द पाये शिवानन्द पाये ॥ ४ ॥

भजन—६३

[तर्ज—मोहब्बत के धोके में कोई न आये फिल्म बड़ी बहिन]

तेरी वीर महिमा को किस तौर गाये ।
जो उपकार तू ने किये क्या बतायें ॥ टेक ॥
था चारों तरफ जब कि छाया अन्धेरा ।
था अज्ञान ने सारे भारत को घेरा ।
था तुमने भगाया उसे फिर भगायें, उसे फिर भगायें ॥ १ ॥
अनेकान्त सिद्धान्त सबको बताया,
करम का मरम था जगत को जताया ।
प्रभू पाठ समता हमें फिर पढ़ायें हमें फिर पढ़ायें ॥ २ ॥
कहीं दीन पशुओं पै चलती छुरी थी,
कहीं यज्ञ हिंसा की रीति बुरी थी ।
थी हिंसा हटाई उसे फिर हटायें, उसे फिर हटायें ॥ ३ ॥
अधम और पतितों को तुमने उभारा,
हमें नाथ है अब तुम्हारा सहारा
हैं शिवराह भूले दया कर दिखाये दया कर दिखायें ॥ ४ ॥

भजन—६४

[तर्ज—जो दिल में खुशी बनकर आये वह दर्द बसाकर चलेगये]

जो दिल में खुशी बनकर आये, वह रंज बसाकर चलेगये ।
जो सुहाग रचाने आये थे वह दुहाग दिला के चलेगये ॥ टेक ॥
पशुवन की पुकार को सुन स्वामी,
गिरनार चढ़े हैं जाकर के, हाय जाकर के,

जो जीव दया चित लाये थे,
वह मुझे रुलाकर चले गये ॥ १ ॥
क्या भूल भई मुझ से स्वामी,
ये पूछ रही हूँ मैं तुम से, हाय मैं तुमसे।
क्यों मौड़ सजा के आये थे,
क्यों कंगना तुड़ा कर चले गये, हाय चलेगये ॥ २ ॥
नौ भव तो रही साथ तुम्हारे,
दशवे में विसारा क्यों हमको,
जो प्रीति बढ़ाने आये थे वह प्रीति हटाकर चलेगये ॥ ३ ॥
मेरे कंथ भये हैं वैरागी,
तो मैं भी बनूंगी वैरागन, हाय वैरागन
वह पंथ बताने आये थे, शिव पंथ बनाकर चले गये ॥ ४ ॥

भजन—६५

[तर्ज—हम दर्द का अफसाना दुनियां को सुनादेंगे]

हर दिल पै अहिंसा का हम सिक्का बिठा देंगे ॥ टेक ॥
हम राग ये मस्ताना दुनियां को सुनादेंगे।
हो जायगी जब दुनियां आबाद अहिंसा की।
गूंजेगी जमाने में आवाज अहिंसा की।
सोती हुई कौमों को हम अब तो जगा देंगे ॥ १ ॥
बेकस बे जबानों पै हा जुल्मों सितम क्यों हों,
जान अपनी सी तुम उनकी क्यों न बराबर समझो।
तुम उनपै दया करना वो तुमको दुआ देंगे ॥ २ ॥
शिवराम सितम है बुरा मत जुल्म करो प्यारो,
तुम दिल में दया धारो, तुम दिल में दया धारो।
पापी से न कर नफरत, हम पाप छुड़ा देंगे ॥ ३ ॥

भजन—९६

[तर्ज—तेरे पूजन को भगवान]

जय २ महावीर भगवान, तुम्हीं हो सर्व गुणों की खान ।।टेक।।

प्रेम भाव की आशा लेकर, आया हूं तव द्वार,
संकट काटो प्रेम भरो प्रभु, होवे तव सम्मान ।
तुम्ही हो सर्व गुणों की खान ।।जय० ।। १ ।।

दर्शन पाकर हम हर्षाए, 'प्रेम' भेंट करने को लाए,
महिमा तेरी जान न पाये, करो प्रभु कल्यान ।
तुम्हीं हो सर्व गुणों, की खान ।।जय० ।। २ ।।

शान्ति प्रेम के हे मधु आगर, दीनन के सर्वज्ञ हितंकर,
'सेठी' के हो सुख के सागर; महावीर भगवान ।
तुम्ही हो सर्व गुणों की खान ।।जय०।।३।।

भजन—९७

तर्ज—आज हिमालय की चोटी से फिर हमने]

महावीर की मधुवाणी ने दुनियां को समझाया है ।
सत्य अहिंसा पथ पर बढ़ने का आदेश बताया है ।। १ ।।

जिसकी आकर्षण प्रतिमा लख मानव जन हर्षाया है ।
उसी दिगम्बर वीर प्रभू ने केशरिया लहराया है ।।२।।

शान्ति, सत्य का अग्रदूत दुनियां को तू मन भाया है ।
अपनी अद्भुत शक्ति से जग का अन्धेरा मिटाया है ।। ३ ।।

विश्वपिता महावीर तुम्हारा गुण वर्णन नहीं आया है ।
समय २ भक्तों को तुमने भव से पार लगाया है ।। ४ ।।

त्रिशला के दृग तारे तुमने जीवन ज्योति जगाया है ।
'सेठी' ने प्रभु के चरणों में अपना शीश झुकाया है ।। ५ ।।

भजन-६८ [वीर प्रार्थना]

श्री महावीर अब सुध लो, शरण हम तेरी आये है।
हृदय की वेदनाओं को मिटाने यहां पै आये हैं ॥ १ ॥
तू है प्रभो दया का सागर, सत्य और प्रेम का आगर ।
अष्ट कर्मो की वेड़ी को तोडने यहां पै आये हैं ॥ २ ॥
तू है प्रभू ज्ञान भंडारा, मानवीय गुणों का प्यारा।
दया हम पै करो प्रभु अब, यही अरदास लाये हैं ॥ ३ ॥
शान्ति और त्याग की मूरत, निराली है तेरी सूरत।
अहिंसा, त्याग मय जीवन बनाने प्रभो आये हैं ॥ ४ ॥
तू त्रिशला का है प्रिय नन्दन, वीर, महावीर, जगवन्दन।
सर्वमित्रों सहित प्रभु हम, तेरा गुण गाने आये हैं ॥ ५ ॥

भजन-६६ वीरगायन

[तर्ज—रुम झुम बरसे बादरवा]

पापके छाये बादरवा, दुख की घटाएं छाई,
प्यारे वीर आजा, आजा, प्यारे वीर आजा ॥ टेक ॥
जीवन का दुर्भाग्य प्रभु अब आगया, आगया।
अपनी सारी दोलत प्रभु मै खोगया, खोगया।
कैसे धीर बंधाऊं रे, कष्ट मिटाने आजा,
वीर प्रभु आजा, आजा, वीरप्रभु आजा ॥ १ ॥
भाई २ आपस में प्रभु लडते हैं, लड़ते हैं।
धन के खातिर जान को अपनी खोते हैं, खोते हैं।
आकर इन्हें समझाओ रे' प्रेम कराने आजा।
शान्ति बंधा जा, आजा, शान्ति बंधाजा ॥ २ ॥
सच्चे दिल से तेरा गुण जो गाते हैं गाते हैं,
तेरी कृपा से प्राण मोक्ष में जाते हैं, जाते हैं।
क्यों न कष्ट मिटाये रे, 'सेठी' गाये गुण तेरे,
पार लगाजा, आजा पार लगाजा ॥ ३ ॥

भजन—१००

महावीर तुम्हारा यश गाने,इक भक्त द्वार पर आया है।
श्री वीर तुम्हारी करुणा से, नव हार गूँथ कर लाया है ॥ १ ॥

तेरी आकर्षण प्रतिमा लख, यह दिल में बहुत हर्षाया है।
हे गुण भंडारे वीर प्रभो, तेरा गुण न गा पाया है ॥ २ ॥

हे शक्ति अपारा वीर प्रभो, नव आशा लेकर आया है।
करुणाकर आशा कर पूरी, अब शरण तिहारी आया है ॥ ३ ॥

हे दीनानाथ दयासागर, महावीर गुणों के मधु आगर।
कृपा कर दर्शन दे दीजे, अरदास प्रभो यह लाया है ॥ ४ ॥

सर्वस्व हृदय के कर्णधार, भारत आशाके नव सितार।
'सेठी' को पार उतारो अब, गुण गाने तेरा आया है ॥ ५ ॥

भजन—१०१

[तर्ज—गम का फसाना किसको सुनाये,]

कर्मों का दुख हम कैसे मिटाये ?
सच्ची लगन से वीर-गुण गाये ॥ १ ॥

वे तो प्रभु हैं दया के सागर,
प्रभु की सेवा में तन मन लुटाये ॥ २ ॥

मानव-हृदय की दिव्य विभूति,
इनके गुणों को कैसे बतायें ॥ ३ ॥

सर्व शक्ति मय मूर्ति प्रभु की;
इनके चरणों मे शीश झुकायें ॥ ४ ॥

विश्वपिता की छवि है निराली,
अहिंसा की शिक्षा इन्हों से पायें ॥ ५ ॥

'सेठी' जो चाहे मुक्ति का मारग,
शान्ति-छवि की शरण मे आवे ॥ ६ ॥

भजन--१०२

[तर्ज—यहां बदला वफा का बेवफाई के सिवा क्या है]

श्री महावीर की सेवा सिवा जग में धरा क्या है।
व्यर्थ के झगडो में फंसकर, कहो तुमने लिया क्या है ॥ १ ॥

पतित-पावन, हृदय-भावन, वीर महावीर जगवन्दन।
कि सेवा करने का तुमने कहो सोचा कभी क्या है ॥ २ ॥
दयालु प्रेम भंडारे, ज्ञान-मय ज्योति के प्यारे।
कहो उस त्रिशला नन्दन को वन्दना की कभी क्या है ॥ ३ ॥
शान्ति और प्रेम की सूरत, निराली वीर की सूरत।
कहो उस सर्वशक्तिमय का पथ तुमने लिया क्या है ॥ ४ ॥
अगर चे चाहता है 'सेठी' तू कल्याण आतम का।
याद रख, वीर की सेवा सिवा जग में धरा क्या है ॥ ५ ॥

भजन—१०३

[तर्ज—मेरे दिल तोड़ने वाले, मेरे दिल की दुआ लेना]

श्री महावीर भक्ति में, तू तन मन धन लुटा देना।
अहिंसा प्रेम का नव पाठ दुनियां को पढ़ा देना ॥ १ ॥
दिव्य पावन विभूति की शक्ति जगको बता देना।
वीर, महावीर का सन्देश घर २ में सुना देना ॥ २ ॥
दयामय, ज्ञान-आगर को हृदय में तू बसा लेना।
धर्म की रक्षा के हेतु, भेट अपनी चढा देना ॥ ३ ॥
लक्ष्य महावीर के जीवन का दुनियां को बता देना।
सत्य और प्रेम के पथ से विश्व जैनी बना देना ॥ ४ ॥
गुणन की खान भगवन का ज्ञान जगको करा देना।
हटा अज्ञान सब जग का ज्ञान ज्योति जगा देना ॥ ५ ॥

दया और प्रेम से बन्धुत्व जग का तुम बढ़ा देना।
जो भूले वीर के पथ को तो 'सेठी' पथ बता देना ॥ ६ ॥

भजन--१०४

(जब तुम्ही चले परदेश)

जय जय जग तारक देव, करे नित सेव, पदम-जिन तेरी,
अब वेग हरो भव फेरी ॥ टेर ॥

तुम विश्व पूज्य पावन पवित्र, हो स्वार्थहीन जग जीवमित्र
हो भक्तों के प्रतिपाल करो मत देरी ॥ अब ॥२

मुनि मानतुंग का कष्ट हरा, पल में सब बंधन मुक्त करा।
रणपाल कुंवर की तुम्हीं ने काटी बेरी ॥ अब ॥ ३

कपि स्वान सिंह अज बैल अली, तारे जिन तव ली शरण भली
भरी हैं अपरंपार कथाएं तेरी ॥ अब ॥ ४

कफ वात पित्त अन्तर कुव्याधि, जादू टोना विपधर विषादि
तुम नाम मंत्र से भीड़ भगे भव केरी ॥ अब ॥ ५

अब महर प्रभु इतनी कीजे, निज पुर में निज पद सम दीजे।
"सौभाग्य" बढ़े, शिव रमा हो पद की चेरी ॥अब॥६

भक्त की पुकार--१०५

वीर प्रभु आना, आना जी पार बेड़ा लगाना लगाना जी ॥ टेक
इन कर्मों ने मुझको घेरा, प्रभु छाया है घोर अन्धेरा।
अब घबरा के तुमको टेरा ॥
भूले को राह बताना२ जी मन मंदिर में आना २ जी ॥ वीर १
तुम मुक्ति के राह बतैया, मेरी डोले है भव बीच नैया।
प्रभु किश्ती के हो तुम खिवैया ॥
अब कृपा की बल्ली लगाना २ जी, मन मंदिर में आना २ जी ॥२

स्वामी मुझको अमर फल खिलादो, इन कर्मों से शीघ्र छुड़ा दो।
अपने चरणों का "दास" बनालो॥
शिवपुर की राह बताना २ जी, मन मंदिर में आना २ जी॥३

भजन-१०६ श्री महावीर जी की महिमा

वीर तुम्हारा ध्यान लगा कर, जिसने आन पुकारा है।
पार हुआ भव दुख से वोही, जिसने लिया सहारा है॥
चांदनपुर प्रभु निकस आपने, जग का काज सवांरा है।
सच्ची भक्ती पूरा करती, मन का भाव विचारा है॥
भवन त्रिशाल दयाल विराजै, पीछे नदी किनारा है।
अन्दर बाहर वेदी ऊपर, काम सुनहरी न्यारा है॥
लगा सामने पंखा खैंचे, गन्दी पवन विनारा है।
धूप की बत्ती घृत का दीपक, सन्मुख जले अपारा है॥
चमक रत्न से रहा सिखर पर, बिजली बल्ब उजारा है।
चार मील कटले तक पक्की, सड़क बनी सुख कारा है॥
छहों धर्मशाला में जारी, जल निर्मल नल द्वारा है।
अंजन से बत्ती खम्भों पर, जले कतार कतारा है॥
वीर चरण पर छतरी अन्दर, चढै दूध की धारा है।
देश देश के यात्री आते, रहती जय जय कारा है॥
फाटक ऊपर निशिदिन बजता, शहनाई नक्कारा है।
घन घन घण्टा घड़ी घूँघरू घड़नावल भंकारा है॥
हारमोनियम बाजा तबला, गुन गायन गुंजारा है।
दर्शन पूजन भवन भावना, रहती बारम्बारा है॥
तीनों शिखर वीर का झंडा, लहर लहर फैरारा है।
स्याह लाल गुल वर्ण वर्ण का, दरशा रहा नजारा है॥
टिकट रेल स्टेशन पर भी, स्वामी नाम तुम्हारा है।

नया कीर्तन "सुमत" आपका, सदा रचे मन हारा है ॥
त्रिशला नन्दन पाप निकन्दन, इतना बोल हमारा है।
ऐसे पुन्य क्षेत्र के दर्शन, हमको हो हर बारा है ॥

भजन—१०७ चाँदनपुर जाते समय

मुझे छेड़ो न छेड़ो दीवाना वीर का ।
देखूँ देखूँ गा चलके, ठिकाना वीर का ॥ टेक ॥

शेर—वीर की भक्ति में रह कर ही मेरा होगा भला।
जाके उनसे ही करूंगा, अपने मैं दिल का गिला ॥
दुःख सुनने को हमारे, कोई हमदर्द न मिला।
प्रेम की अल्फी पहन कर, आज चांदनपुर चला ॥
मुझे छेड़ो न छेड़ो दीवाना वीर का ॥ १ ॥

शेर—दिल में मेरे लग रही है, वीरका जोगी बनूं।
फाड़सर अपना गरेबां जाके कदमों में पडूं ॥
राह में जितनी मुसीबत हों सभी दिल पर सहूं।
दर्शनों से कोई रोके, जब मैं रो रो कर कहूं ॥
मुझे छेड़ो न छेड़ो दीवाना वीर का ॥२॥

शेर—चन्द रोजा जिन्दगी है, बन रहा हूं यों गदा।
छोड़ दुनियां की मोहब्बत, अब तो उस पर हूं फिदा॥
बन गयाहूं मस्त अब तो, होके दुनियां से जुदा।
रोकना कोई न मुझको, बस मेरी सुनलो सदा ॥
मुझे छेड़ो न छेड़ो दीवाना वीरका ॥३

शेर—भाइयो सुनलो फकत, तुमको बताना है यही।
अब 'किशन' और शाम को भी डट के गाना है यही ॥
मुझे छेड़ो न छेड़ो दीवाना वीर का ॥ ४

भजन–१०८ वीर जयन्ति

(चाल—जब से वलम घर आये।)

आओ वीर गुण गाएं प्रभु पै वारि २ जाएं ॥ टेक ॥

तिथि चैत सुतेरस है आई, आहा रुत है वसन्त सुहाई ओ०
वीर की जयन्ति मनाएं ॥ १ प्रभु पै ॥

त्रिशला देवी सिद्धारथ के नन्दा, आज जन्मे हैं वीर जिनन्दा।
फूले ना अंग समाएं ॥ २ ॥ प्रभु पै।

आज हर्षे हैं सुर नर मितारे, शब्द होते हैं जय २ कारे।
नारकी भी टुक सुख पाएं ॥ ३ ॥ प्रभु पै।

प्रभू भक्ति में मन को लगाओ, शिवराम वीर गुण गाओ।
चरणों में सरको झुकाएं ॥ ४ ॥प्रभु पै।

भजन–१०९

(चाल–आवारा हूँ आवारा हूँ या गर्दिश······)

दुखियारा हूँ दुखियारा हूँ इस दुनियां में हे नाथ करम का मारा हूं
घर वार नहीं परवार नहीं, मेरा तो कोई भी यार नहीं।
मेरा तो कोई भी यार नहीं ॥
ली आन शरण, भगवान चरण आधारा हूँ ॥ १ ॥
कुछ ज्ञान नहीं तप ध्यान नहीं, चरणों से लगी है प्रीति मगर
चरणों से लगी है प्रीति मगर ॥
शिवराम तेरा है दास खड़ा कर दीजे मेहर की अब तो नजर
दुनियां में तेरा तकना प्रभु एक सहारा हूँ ॥ २ ॥ दुखियारा हूँ

भजन–११०

(चाल—जब से वलम घर आये जियरा मचल २ जाये।)

क्यों ना प्रभु गुण गाए, उमरिया बीति २ जाये ॥ टेक ॥

ओ-बड़ा मुश्किल है नर तन का पाना,
मत भोगों में इसको गवाना । ओ मत
ऐसा न समय फिर पाये, उमरिया बीति २ जाये ॥ १॥
इस जीवन को ऐसा बनाना याद रखे जो तुझको जमाना
श्रद्धा के फूल जो चढ़ाये, उमरिया ॥ २ ॥
पर सेवा में तन को लगाओ, प्यारे धन से धरम को कमाओ।
धर्म ही तेरे काम आये, उमरिया ॥ ३ ॥
इस दुनियां की प्रीति बिसारो, शिवराम निज आतम चितारो।
गुरु बार २ समझाए, उमरिया ॥ ४ ॥

भजन-१११

(चाल-आजाओ तड़पते हैं अरमाँ अब रात गुजरने वाली है।)
क्यों फूल रहा है तू नादां, यह उमर गुजरने वाली है।
मत करतू गुमां है झूठा जहां, यह उमर गुजरने वाली है॥ टेक॥
मिट्टी में मिले हैं वे छत्रपती, नहीं काल से कोई है एक बचा
रावण हैं कहां, नहीं उसका निशां ॥ १ ॥ यह उमर०
छल कपट से माया है जोड़ धरी, गल मौसे गरीबों के तूने
नहीं साथ चले तेरे माल मकां ॥ २॥ यह उमर०
तू तो महल की गहरी है नीव धरे, सामान करे है सदियों का
दम भर का भरोसा है न यहां ॥ ३ ॥ यह उमर०
शिवराम भजन में मगन रहो, मत पाप की पोट धरो शिरपे
दो दिन का यहां पै तू है लहमां ॥ ४ ॥ यह उमर०

भजन-११२ प्रार्थना

धन्यवाद तेरा गाएं, बिगड़ी बनाने वाले।
अरजी पै ध्यान देना, चरणों में सिर झुकायें॥ टेक॥
हम दास हैं तुम्हारे, तुम नाथ हो हमारे।
हो दीन के दयालू, दुखियों के तुम सहारे॥

हम छोड़ करके तुमको, किस और दर पे जायें ॥ १ ॥
हमने सुना है भगवान, तुमने हैं तारे शूकर।
क्या सिंह और हस्ती, तुमने उभारे कूकर ॥
हम को भी तार दीजे, अपना विरद निभाएं ॥ २ ॥
तुम हो दया के सागर, रागी न तुम न द्वेषी।
सारे जहां में नामी, तुम सब के हो हितैषी ॥
शिवनाथ आज नैया, ये डूबत बचायें ॥ ३ ॥

भजन–११३

(चाल–हम तुम से मोहब्बत करकें...... ।)

हम करके सदा पाप पुण्य करम, रोते भी रहे हंसते भी रहे
नहीं जाना धरम का है हमने मरम, रोते भी रहे हंसते भी रहे
पशु बन कर सहे दुख करूं क्या जिकर।
नहीं मेरी किस ने जरा ली खबर॥
नर बन के लिया सेठ घर में जनम, रोते भी रहे हंसते० ॥१॥
कभी नर्क में जाकर के मार सही।
कथा कष्ट की जाए न हाय कही ॥
सुख स्वर्ग के भोगे बने देव हम, रोते भी रहे हंसते भी० ॥२॥
गति चारों में हाय भटकते फिरे।
हम रोए हँसे नहीं कारज सरे ॥
शिवराम न अब तक मिला पद परम, रोते भी रहे० ॥३॥

भजन–१४ आरती

आरति श्री जिन राज तुम्हारी।
करम दलन संतन हितकारी ॥

सुर नर असुर करत सब सेवा।
तुमही सब देवन के देवा ॥ आ० ॥

पंच महाव्रत दुद्धर धारे।
रागद्वेष परिणाम विडारे ॥ आ० ॥

भव भय भीत शरण जे आये।
ते परमारथ पंथ लगाये ॥ आ० ॥

तुम गुण हम कैसे करि गावें।
गणधर कहत पार नहिं पावें ॥आ०॥

करुणा सागर करुणा कीजै।
"द्यानत" सेवक को सुख दीजै ॥आ०॥

भजन–११५ वर्द्धमान-स्वामी

करौं आरति वर्द्धमान की, पावापुर निर्वाण थान की ॥ टेक ॥

राग बिना सब जग जन तारे,
द्वेष बिना सब कर्म निवारे ॥ करौं ॥

शील धुरंधर शिव तिय भोगी,
मन वच कायन कहिये योगी ॥ करौं ॥

रतन त्रय निधि परिग्रह हारी।
ज्ञान सुधा भोजन व्रत धारी ॥ करौं ॥

लोक अलोक व्याप निज माहीं,
सुखमय इंद्रिय सुख दुख नाहीं ॥ करौं ॥

पंच कल्याणक पूज्य विरागी,
विकल दिगम्बर अम्बर त्यागी ॥ करौं ॥

गुण मणि भूषण भाषित स्वामी।
जगत उदास जगतर स्वामी ॥ करौं ॥

कहे कहां लौं तुम सब जानों।
"द्यानत" की अभिलाष प्रमानों ॥ करौं ॥

भजन—११६ आरती

आरती कीजे महावीर चरण की ॥ टेक ॥

प्रथम आरति गर्भ ग्रहण की, षट्नव मास रतन वरसन की।
दूसरी आरति जन्म समय की, सुरपति ताण्डव निरत करत की
तीसरी आरति तपश्चरण की, लोकान्तिक संबोध करण की।
चोथी केवल ज्ञान रमन की, समोशरण धन देव चरण की ॥
पांचवी आरति मोक्ष गमन की, आवागमन निवार करन की।
आरति कीजे महावीर०॥

भजन—११७ आदिनाथ की

मैं तो आरती उतारूं आदिनाथ की जी।
आदिनाथ की जी ऋषभनाथ की जी ॥ मैं तो ॥

दीप रतन के जलाय जग मग २ ज्योति पाय।
हरष २ उमग २ मैं तो नयन छवि निहारूं आदिनाथ की जी ॥१॥

सहज सुन्दर मूर्त्तिमान, अचल आसन दृढ है ध्यान।
निरख २ अतुल शान, मेरे उमंग भई देख सूरत आपकी जी ॥२॥

ज्योति तुम्हारी जग के नाथ, अघमत हारी दीनानाथ।
चमक २ दमक २ कैसी पुण्य प्रकाशी सोहे महिमा आपकी जी॥३॥

आरती यह मंगल कारी संकट हारी आनन्द कारी।
जय २ शब्द बोल बोल 'वृद्धि' सफल भयो आरती कर आपकीजी॥

भजन—११८ पदम प्रभु की आरती

आरती श्री जिन पद्म तुम्हारी।
प्रगट हुये तुम अतिशय धारी ॥ टेक ॥

तिथि वैसाख पंचमी आई।
जब तुम दरश दिये जिनराई ॥आरती श्रीजिन०॥
धरन भूप के सुत कहलाये।
सुसमा मात उदर प्रगटाए ॥आरती श्रीजिन०॥
कौशांबी भयौ जन्म कल्याना।
सुरपति ताँडव निरत रचाना। ॥आरती श्रीजिन०॥
काम क्रोध मोहादिक मारे।
मान कषाय तजे तुम सारे ॥ आरती श्रीजिन०॥
कर्म घातिया मार भगाये।
जब तुमने केवल पद पाये॥ आरती श्रीजिन० ॥
जग का जो अज्ञान अँधियारा।
ज्ञान भान से किया उजियारा॥ आरती श्रीजिन० ॥
जो यह आरती करै करावै।
'पूरन' नहिं भय रोग सतावै॥ आरती श्रीजिन ॥

भजन–११६ आरती महावीर चांदनपुर की

आरती श्री महावीर तुम्हारी। चांदनपुर के अतिशय धारी॥
कोटि भान से अति छवि छाजै। अन्तरीक्ष तू सदा विराजै॥
तीन छत्र सिर पर अति सोहैं। निरखत सुर नर के मन मोहैं॥
हो तुम अविचल सदा विहारी। आरती श्री महावीर तुम्हारी॥
अभय अनाकुल शिव पद पायौ। जड चेतन षट द्रव्य लखायौ॥
द्वादशाङ्ग को भेद बतायौ। निर्विकार सरवज्ञ कहायौ॥
हो तुम भेष दिगंबर धारी। आरती श्री महावीर तुम्हारी॥
कर्म महाभट दुद्धर मारे। काम कोध से सुभट पछाड़े॥
तृष्णा और मोह मद मारे। तजे राग द्वेषादिक सारे॥
प्रभु तुम गये बाल ब्रह्मचारी। आरती श्री महावीर तुम्हारी॥

भजन–१२० जिनवाणी माता की आरती

जय अम्बे वाणी, माता जय अम्बे वाणी।
तुमको निश दिन ध्यावत, सुर नर मुनि ज्ञानी॥ टेक॥
श्री जिन गिरतें निकसी, गुरु गौतम वाणी।
जीवन भ्रम तम नाशन दीपक दरशाणी॥ जय०॥
कुमत कुलाचल चूरण, वज्र सु सरधानी।
नव नियोग निक्षेपण, देखन दरयाणी॥ जय०॥
पतिक पंक पखालन, पुण्य परम पाणी।
मोह महार्णव डूबत, तारण नौकाणी॥ जय०॥
लोकालोक निहारण, दिव्य नेत्र स्थानी।
निज पर भेद दिखावना सूरत किरणानी॥ जय०॥
श्रावक मुनि गण जननी, तुमही गुण खानी।
सेवक लख सुख दायक, पावन परमाणी॥ जय०॥

भजन–१२१ आरती

ॐ जय प्रभु कष्ट हरो।
हम हैं कृपा भिखारी, हमें नहीं विसरो॥
विश्व भ्रमण से थक कर, चरण शरण आया!
ज्योति पुंज के सन्मुख, आत्म ज्योति लाया॥ १॥
दया धर्म उद्धारक! तुम सुख के दाता।
अखिल विश्व के ईश्वर, घट घट के ज्ञाता॥ २॥
परम शान्ति छविधारी, ज्ञान भरो उरमें।
सुख मग मुझे दिखाओ, पहुँचूं शिवपुर में॥ ३॥
हम हैं दास तुम्हारे, तुम जीवन आशा।
"भगवत" हमें न भूलो, पूरो अभिलाषा॥ ४॥

भजन-१२२ आरतो [महावीर स्वामी]

मैं तो आरती उतारूं महावीर की रे।
महावीर की रे, मुक्ति धीर की रे ॥ टेक ॥

हृदय पट खोल, भांक तले हिडौंल।
मधुर नाम मुख बोल, मैं तो आरती उतारूं ॥
मै तो चरण पखारूं महावीर के रे ॥ १ ॥

करके पूजन भजन सवेरी, शिखर विशाल की ले ले फेरी।
बिनती खूब उचारूं महावीर की रे ॥
मै तो आरती उतारूँ, महावीर की रे॥ २ ॥

घर के काम सभी ठुकरा कर, बारम्बार यहाँ पर आकर।
चरण छवि निहारूं, महावीर की रे।
मैं तो आरती उतारूं महावीर की रे ॥ ३ ॥

भजन-१२३ आरती श्री शान्तिनाथजी की

जय जिनवर देवा प्रभु जय जिनवर देवा।
शान्ति विधाता शिव सुख दाता शान्ति नाथ देवा ॥ टेक ॥

ऐरा देवी धन्य जगत में जिस उर आन बसे।
विश्वसेन कुल नभ में मानों पूनम चंद्र लसे ॥ १ ॥

कृष्ण चतुर्दशी जेठ मास की आनन्द करतारी।
हथनापुर में जन्म महोत्सव ठाठ रचे भारी ॥ २ ॥

बाल्यकाल्य की लीला अद्भुत सुर नर मन भाई।
न्याय नीति से राज्य कियो चिर सबको सुखदाई ॥ ३ ॥

पंचम चक्री काम द्वादशम सोल्हम तीर्थङ्कर।
त्रय पदधारी तुमही मुरारी ब्रह्मा शिवशंकर ॥ ४ ॥

भवतन भोग समझ क्षण भंगुर मुनि व्रत धार लिये।
षट् खण्ड नवनिधि रतन चतुर्दश तृणवत् छार दिये ॥ ५ ॥

दुद्धर तप कर कर्म निवारे केवल ज्ञान लहा।
दे उपदेश भविक जन बोधे ये उपकार महा ॥ ६ ॥
शान्तिनाथ है नाम तिहारा सब जग शांति करो॥
अरज करे शिवराम चरण में भव आताप हरो ॥ ७ ॥

भजन–१२४ जिन दर्शन का

प्रभु देखा तुम्हारा आज मुखड़ा प्रभु ॥ टेक ॥
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, तुमसा न कोई नजर पड़ा। प्रभु ॥ १ ॥
तीन छत्र सिर ऊपर सोहैं, चंवर सुरेश ढुरावे खड़ा ॥ २ ॥
और देव तुम आगे फीके, ज्यों हीरों में कांच टुकड़ा ॥ ३ ॥
तुम प्रभु मोक्ष महलकी सीढ़ी, 'मक्खन' को भी दीजे चढ़ा ॥४॥

भजन–१२५ महावीर की अमर कहानी

सुनो सुनो दुनिया वालो महावीर की अमर कहानी ॥ सुनो ॥
तीस वर्ष का त्रिशलानन्दन सन्मति घर से निकला।
सिद्धार्थ नृप का प्रिय कुमार वह कर्म काटने निकला।
राजपाट परिवार त्याग के वह जंगल में आया।
बाहर भीतर हुवा दिगम्बर ज्ञान ध्यान में ध्याया ॥ सुनो ॥
घोर तपस्या करके उसने बारह वर्ष विताये।
कर्म काट के केवल पाया सब प्राणी हर्षाये।
यज्ञों में नर पशु मरते थे आकर शीघ्र बचाये।
मोह नींद से जगा जगाकर सम्यक् ज्ञान कराये ॥ सुनो ॥
धर्म देशना देकर जग को सुख में उसे बनाया।
स्याद्वाद का पाठ पढ़ा के हट का भूत भगाया।
मोक्ष मार्ग बतला कर प्रभु ने प्राणी मुक्त कराया।
पांवापुर के बीच सरोवर बन्धन तज शिव पाया ॥ सुनो ॥

बापू ने भी शिक्षा ले कुछ देश मुक्त करवाया।
चला गया जो वीर मार्ग से लौट न जग में आया।
सत्य अहिन्सा ज्ञान रूप जो वीर ने धर्म बताया।
सिद्ध कहे सुज्ञों ने उसको भक्ति से अपनाया ॥ सुनो ॥ सुनो ॥

भजन-१२६ महावीर की प्यारी वाणी

सुनो सुनो ऐ दुनिया वालो महावीर की प्यारी वाणी ।
जिसने जग के लिये सुखों की हंसते हंसते की कुर्वानी ॥ सुनो ॥
धर्म अहिन्सा मुख्य बताया सब धर्मो का राजा।
नहीं मारना किसी जीव को सब पर दया दिखाना।
चीटी से हाथी तक जितने दिखते तुम्हें जिनावर।
सभी चाहते सुख से रहना आतम एक बराबर।
पेड़ वनस्पती पानी आदिक इनमें जीव निशानी ।
इसी लिये तो बतलाया है पियो छानकर पानी ॥ सुनो ॥
झूठ बराबर पाप न कोई झूठा ठोकर खाता ।
घर बाहर और राजसभा में कही न आदर पाता!
घर वाली माता पुत्रादि भी विश्वास न लावें ।
सत्य कभी न छोड़ो चाहे प्राण भले ही जावें ।
बड़े बड़े मुनि ऋषियों ने है इसकी महिमा जानी ॥
गांधी जी ने इसकी रक्षा हित त्यागी जिन्दगानी ॥ सुनो ॥
चोरी करने वाले डाकू लुच्चे चोर कहाते ॥
नाम न लेता इनका कोई सुन कर सब घवराते।
वहुत चोर तो चोरी करते ऊंचे से गिर जाते।
पकड़े जाने पर जेलों में डण्डे जूते खाते।
बड़े बड़े डाकू चोरों ने हार अन्त में मानी।
धर्म अचौर्य से निज जीवन सुफल वनाओ प्राणी ॥ सुनो ॥
पर की स्त्री माता पुत्री बहना को ना घूरो।
अपनी बहन सुता सम जानो काम वासना चूरो।

पूजा

चांदनगांव महावीर स्वामी पूजा

छन्द

श्री वीर सन्मति गांव चांदन मे प्रकट भये आय कर।
जिनको वचन मन कायसे मैं पूजहूं सिर नाय कर॥
हुये दयामय नार नर लखि, शान्ति रूपी वेष को।
तुम ज्ञान रूपी भानु से कीना सुशोभित देश को॥
सुर इन्द्र विद्याधर मुनि, नरपति नवावें शीश को।
हम नमत हैं नित चावसों, महावीर प्रभु जगदीश को॥

ॐ ह्रीं श्री चांदनगांव महावीर स्वामिन् अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री चांदनगांव महावीर स्वामिन् अत्र तिष्ठ अत्र ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं श्री चांदनगांव महावीर स्वामिन् मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्॥

अथाष्टक

क्षीरोदधि से भरि नीर, कंचन के कलशा।
तुम चरणनि देत चढाय, आवागमन नशा॥
चांदनपुर के महावीर, तेरी छवि प्यारी।
प्रभु भव आताप निवार तुम पद बलिहारी॥ १॥

ॐ ह्रीं श्री चांदनगांव महावीर स्वामिने, जलं॥

मलयागिर और कपूर, केशर ले हरषों।
प्रभु भव आताप मिटाय, तुम चरणनि परसों॥चांदन०॥चन्दनं
तंदुल उज्वल अति धोय, थारी में लाऊँ।
तुम सन्मुख पुञ्ज चढाय, अक्षय पद पाऊं॥ चांदन०॥ अक्षतं॥

बेला केतकी गुलाब, चंपा कमल लऊं ।
दे काम बाण करि नाश, तुम्हरे चरण दऊं ॥चांदन०॥नैवद्यम्
फेनी गुंजा अरु स्वार, मोदक ले लीजे ।
करि क्षुधा रोग निरवार, तुम सन्मुख कीजे ॥चांदन ०॥ नैवैद्यम् ॥
घृत में कर्पूर मिलाय, दीपक में जारों ।
करि मोह तिमिर को दूर, तुम सन्मुख वारों ॥चांदन०॥ दीपं०॥
दश विधि ले धूप बनाय, तामें गन्ध मिला ।
तुम सन्मुख खेऊं आय, आठों कर्म जला ॥चांदन०॥ धूपं०॥
पिस्ता किसमिस बादाम, श्रीफल लोंग सजा ।
श्री वर्द्धमान पद राख, पाऊं मोक्ष पदा ॥ चांदन० ॥ फलं ० ॥
जल गन्ध सु अक्षत पुष्प, चरुवर जोर करों ।
ले दीप धूप फल मेलि, आगे अर्घ्य करों ॥ चांदन० ॥ अर्घं ०॥

चरणों का अर्घ

जहां काम धेनु नित आय, दुग्ध जु बरसावै ।
तुम चरननि दरशन होत, आकुलता जावै ॥
जहां छतरी बनी विशाल, तहां अतिशय बहु भारी ।
हम पूजत मन वच काय, तजि संशय सारी ॥ चांदन०॥
ॐ ह्रीं टोंक में स्थापित श्री महावीर चरणेभ्यो अर्घं ॥

टीले में विराजमान का अर्घ

टीले के अन्दर आप सोहैं पद्मासन,
जहां चतुरनिकाई देव, आवें जिन शासन ।
नित पूजन करत तुम्हार कर में ले झारी,
हम हूं वसु द्रव्य बनाय, पूजें भरि थारी ॥चांदन०॥

ॐ ह्रीं चांदनपुर महावीर जिनेन्द्राय टीले में विराजमान समय का अर्घं ।

पंचकल्याणक

कुण्डलपुर नगर मंझार त्रिशला उर आयो।
सुदि छठि असाढ सुर आई, रतनजु वरसायो ॥ चांदन०

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय आषाढ सुदि छठ गर्भमंगल प्राप्ताय

जनमत अनहद भई घोर, सब जग सुख छाई।
तेरस शुक्ला की चैत्र सुरगिरि ले जाई ॥ चांदन०

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय चैत्र सुदि तेरस जन्म मंगल प्राप्ताय अर्घं

कृष्णा मंगसिर दश जानि, लौकान्तिक आये।
करि केश लोंच तत्काल, झट वन को धाये ॥ चांदन०

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय मंगसिर बुदि दशमी तप मंगल प्राप्ताय अर्घं।

वैसाख सुदि दशमांहि, घाती क्षय करना।
पायो तुम केवल ज्ञान, इन्द्रन की रचना ॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनाय वैसाख सुदी दशमी केवल ज्ञान प्राप्ताय अर्घं।

कर्तिक जु अमावस कृष्ण पावापुर ठाहीं।
भयो तीन लोक में हर्ष, पहुँचे शिव माहीं ॥ चांदन०

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनाय कार्तिक बदी अमावस मोक्ष मंगल प्राप्ताय अर्घं।

जयमाला

मंगलमय तुम हो सदा, श्री सन्मति सुख दाय।
चांदनपुर महावीर की, कहूं आरती गाय ॥

पद्धरी छन्द।

जय जय चांदनपुर महावीर, तुम भक्त जनों की हरत पीर।
जड चेतन जग के लखत आप, दई द्वादशांग वानी अलाप ॥१॥

अब पंचम काल मंझार आय, चांदनपुर अतिशय दई दिखाय
टीलेके अन्दर बैठ वीर, नित हरा गाय का आप चीर ॥२॥

ग्वाला को फिर आगाह कीन, जब दर्शन अपना आप दीन।
मूरत देखी अति ही अनूप, है नग्न दिगम्बर शांति रूप ॥३॥

तहां श्रावक जन बहु गये आय, किये दर्शन मन वचन काय।
है चिह्न शेर का ठीक जान, निश्चय है ये श्री वर्द्धमान ॥४॥

सब देशन के श्रावक जु आय, जिन भवन अनूपम दियो बनाय
फिर शुद्ध दई वेदी कराय, तुरत हिं गजरथ फिर लियो सजाय॥५॥

ये देख ग्वाल मन में अधीर, मम गृह को त्यागो नहीं वीर।
तेरे दर्शन बिन तजूं प्राण, सुन टेर मेरी कृपा निधान ॥६॥

कीने रथ में प्रभु विराजमान, रथ हुआ अचलगिरि के समान।
तब तरह तरह के किये जोर, बहुतक रथ गाडी दिये तोड़ ॥७॥

निशि मांही स्वप्न सचिवहिं दिखात, रथ चले ग्वाल का लगतहाथ।
भोरहि झट चरण दियो बनाय संतोष दियो ग्वालहिं कराय ॥८॥

करि जय जय प्रभु से करी टेर, रथ चल्यो फेर लागि न देर।
बहु नृत्य करन बाजे बजाइ, स्थापन कीने तहं भवन जाइ ॥९॥

इक दिन मंत्री को लगा दोष, धरि तोप कही नृप खाई रोष।
तुम को जब ध्याया वहां वीर, गोला से झट बचगया वजीर ॥१०॥

मंत्री नृप चांदन गांव आय दर्शन करि पूजा की बनाय।
करि तीन शिखर मंदिर रचाय, कंचन कलशा दीने धराय ॥११॥

यह हुकम कियो जयपुर नरेश, सालाना मेला हो हमेश।
अब जुडन लगे बहु नर औ नार, तिथि चैत सुदी पूनों मंझार।

मीना गूजर आवें विचित्र सब वर्ण जुड़े करि मन पवित्र।
बहु न्रित करत गावें सुहाय, कोई कोई घृत दीपक रह्यो चढ़ाय॥

कोई जय जय शब्द करैं गंभीर, जय जय जय है श्री महावीर।
जैनी जन पूजा रचत आन, कोई छत्र चमर के करत दान ॥१४॥

जिसकी जो मन इच्छा करंत, मन वांछित फल पावै तुरन्त।
जो करै बंदना एक बार, सुख पुत्र संपदा हो अपार ॥१५॥
जो तुम चरणों में रखै प्रीत, ताको जग में को सकै जीत।
है शुद्ध यहां का पवन नीर, जहां अति विचित्र सरिता गंभीर ॥१६॥
'पूरनमल' पूजा रची सार हो भूल लेउ सज्जन सुधार।
मेरा है शमशाबाद ग्राम, त्रयकाल करूं प्रभु को प्रणाम ॥१७॥

घत्ता

श्री वर्द्धमान तुम गुणनिधान, उपमा न बनी तुम चरणनकी।
है चाय यही नित बनी रहै, अभिलाषा तुमरे दर्शन की॥
ॐ ह्रीं श्री चांदनगांव महावीर जिनेन्द्राय जयमालार्घं निर्व०॥

॥ दोहा ॥

अष्ट कर्म के दहन को, पूजा रची विशाल।
पढे सुने जो भाव से, छूटे जग जंजाल॥
संवत जिन चौवीस सो, है बासठ की साल।
एकादश कार्तिक बदि पूजा रची सम्हाल॥

इत्याशीर्वादः।

पद्मपुरी (बाडा) श्री पद्म प्रभ-पूजा

॥ दोहा ॥

श्रीधर नन्दन पद्म प्रभु, वीतराग जिन नाथ।
विघन हरण मंगल-करन, नमों जोरि जुग हाथ॥
जन्म महोत्सव के लिए, मिल कर सब सुर राज।
आये कोसाम्बी नगर, पद पूजा के काज॥

पद्मपुरी में पद्म प्रभु, प्रकटे प्रतिमा रूप ।
परम दिगम्बर शान्तिमय, छवि साकार अनूप ।।
हम सब मिल करके यहां, प्रभु पूजा के काज ।
आह्वानन करते सुखद, कृपा करो महाराज ।।
ॐ ह्रीं श्री पद्म प्रभु जिनेन्द्राय ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्
ॐ ह्रीं श्री पद्म प्रभु जिनेन्द्राय ! अत्र तिष्ठ २ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्री पद्म प्रभु जिनेन्द्र ! अत्रमम सन्निहितो । भव भव वषट्

[अष्टक]

क्षीरोदधि उज्वल नीर, प्रासुक गन्ध भरा
कंचन झारी में लेय, दीनो धार धरा ।।
बाड़ा के पद्म जिनेश, मंगल रूप सही ।
काटो सब क्लेश महेश मेरी अर्ज यही ।।
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय जन्म मृत्यु विनाशनाय जलं !
चन्दन केशर करपूर, मिश्रित गन्ध धरो ।
शीतलता के हित देव, भव आताप हरो ।। बाड़ा के० ।।
ॐ ह्रीं श्री पद्म प्रभु जिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दनं ।
ले तन्दुल अमल अखंड, थाली पूर्ण भरो ।
अक्षय पद पावन हेतु, हे प्रभु पाप हरो ।। बाड़ा के० ।।
ॐ ह्रीं श्री पद्म प्रभु जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं ।
ले कमल केतकी बेल, पुष्प धरूं आगे ।
प्रभु सुनिये हमरी टेर, काम कला भागे ।। बाड़ा के० ।।
ॐ ह्रीं श्री पद्म प्रभु जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं ।
नैवेद्य तुरत बनवाय, सुन्दर थाल सजा ।
मम क्षुधा रोग नश जाय, गाऊं वाद्य बजा ।। बाड़ा के० ।।
ॐ ह्रीं श्री पद्म प्रभु जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशाय नैवेद्यं ।
हो जगमग २ ज्योति, सुन्दर अनयारी ।

ले दीपक श्री जिनचन्द, मोह नशे भारी ॥ वाड़ा के० ॥

ॐ ह्रीं श्री पद्म प्रभु जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं

ले अगर कपूर सुगन्ध, चन्दन गन्ध महा ।

खेवत हों प्रभु ढिग आज, आठों कर्म दहा ॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपं ।

श्रीफल बादाम सुलेय, केला आदि हरे ।

फल पाऊं शिव पद नाथ, अरपं मोद भरे ॥ वाड़ा के० ॥

ॐ ह्री पद्म प्रभु जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्तये फलं ।

जल चन्दन अक्षत पुष्प, नेवज आदि मिला ।

मैं अष्ट द्रव्य से पूज, पाऊं सिद्ध सिला ॥ वाडा के० ॥

ॐ ह्रीं श्री पद्म प्रभु जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ।

अर्घ चरणों का

चरण कमल श्री पद्म के, वन्दों मन वच काय ।

अर्घ चढ़ाऊं भाव से कर्म नष्ट होजाय ॥ वाड़ा के० ॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्र के चरणों में अर्घ०

भूमि में विराजमान समय का अर्घः—

धरती में श्री पद्म की पद्मासन आकार
परम दिगम्बर शांति मय, प्रतिमा भव्य अपार
सौम्य शक्ति अति कान्तिमय, निर्विकार साकार
अष्ट द्रव्य का अर्घ ले, पूजों विविध प्रकार ॥वाड़ा॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय भूमि में स्थित समय अर्घं

[पंच कल्याणक]

[हर एक दोहा के बाद नीचे लिखी अंचली पढ़ना चाहिये]

श्री पदम प्रभु जिनराज जी, मोहें राखो हो सरना ॥

॥ दोहा ॥

माघ कृष्ण छट में प्रभो, आये गर्भ मझार।
मात सुसीमा का जनम, किया सफल करतार ॥श्री पद्म०
ॐ ह्रीं माघ कृष्ण षष्ठी दिने गर्भ मंगल प्राप्ताय श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा
कातिक सुद तेरस तिथि, प्रभो लियो अवतार।
देवो ने पूजा करी, हुआ मंगलाचार ॥ श्री पद्म०
ॐ ह्रीं कातिक शुक्ल त्रयोदश्यां जन्म मंगल प्राप्ताय श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।
कार्तिक शुक्ल त्रयोदशी, तृणवत बंधन तोड।
तपधारो भगवान ने, मोह कर्म को मोड़ ॥ श्री पद्म०
ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्ल त्रयोदश्यां तप कल्याणक प्राप्ताय श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।
चैत्र शुक्ल की पूर्णिमा, उपज्यो केवल ज्ञान।
भव सागर से पार हो दिया भव्य जन ज्ञान ॥ श्री पद्म०
ॐ ह्रीं चैत्र शुक्ल पूर्णिमायां केवल ज्ञान प्राप्ताय श्री पद्म प्रभु जिनेन्द्राय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।
फागुन बदी सुचोथ को, मोक्ष गये भगवान।
इन्द्र आय पूजा करी, मैं पूजौं धर ध्यान ॥ श्री पद्म०
ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी दिने मोक्ष मंगल प्राप्ताय श्रीपद्म प्रभु जिनेन्द्राय,अर्घं निर्वपामीति स्वाहा.

जयमाल

दोहा—चौतीसों अतिशय सहित, बाड़ा के भगवान्।
जय माला श्री पद्म की, गाऊं सुखद महान ॥

पद्धरी छन्द

जय पद्मनाथ परमात्म देव। जिनकी करते सुर चरण सेव ॥
जय पदम २ प्रभु तन रसाल। जय २ करते मुनिगन विशाल ॥

कोशाम्बी में तुम जन्म लीन। बाड़ा में बहु अतिशय करीन ॥
एक जाट पुत्र ने जमीं खोद। पाया तुम को होकर समोद ॥
सुनकर हर्षित हो भविक वृन्द। आकर पूजाकी दुख निकन्द ॥
करते दुखियों का दुःख दूर। हो नष्ट प्रेत बाधा जरूर ॥
डाकिन शाकिन सब होय चूर्ण। अन्धे हो जाते नेत्र पूर्ण ॥
श्रीपाल सेठ अंजन सुचोर। तारे तुमने उनको विभोर ॥
अरु नकुल सर्प सीता समेत। तारे तुमने निज भक्त हेत ॥
हे संकट मोचन भक्त पाल। हमको भी तारो गुण विशाल ॥
विनती करताहूँ बार बार। होवे मेरा दुःख क्षार क्षार ॥
मीना गूजर सब जाट जैन, आकर पूजें कर तृप्त नैन ॥ ६ ॥
मन वच तन से पूजे जो कोय, पावे वे नर शिव सुख जु सोय।
ऐसी महिमा तेरी दयाल, अब हम पर भी होवो कृपाल ॥ ७ ॥
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा

पूजा विधि जानूं नहीं जानूं अह्वान।
भूल चूक सब माफ कर. दया करो भगवान ॥

इत्याशीर्वादः।

अहिच्छत्र पार्श्वनाथ

चालीसा

शीश नवा अरिहंत को, सिद्धन करूं प्रणाम।
उपाध्याय आचार्य का, ले सुखकारी नाम ॥
सर्वसाधु और सरस्वती, जिन मंदिर सुखकार।
अहिच्छत्र और पार्श्व को, मन मन्दिर में धार ॥

॥ चौपाई ॥

पारस नाथ जगत हितकारी। हो स्वामी तुम व्रत के धारी ॥
सुर नर असुर करें तुम सेवा। तुम ही सब देवन के देवा ॥

तुम से करम शत्रु भी हारा । तुम कीना जगका निस्तारा ॥
अश्व सैन के राज दुलारे । वामा की आँखों के तारे ॥
काशी जी के राव कहाए। सारी परजा मौज वड़ाए ॥
इक दिन सब मित्रों को लेके। सैर करन को बन में पहुँचे ॥
हाथी पर कस कर अम्बारी । इक जङ्गल में गई सवारी ॥
एक तपस्वी देखा वहां पर। उससे बोले वचन सुना कर ॥
तपसी ! तू क्यों पाप कमाए। इस लकड़ में जीव जलाए ॥
प्रभुने जभी कुदाल उठाया। उस लकड़ को चीर गिराया ॥
निकले नाग नागनी कारे । मरने के थे निकट बिचारे ॥
रहम प्रभू के दिल में आया। जभी मन्त्र नवकार सुनाया ॥
मर कर वो पाताल सिधाए । पद्मावति धरणेन्द्र कहाए ॥
तपसी मर कर देव कहाया । नाम कमठ ग्रंथों में गाया ॥
एक समय श्री पारस स्वामी । राज छोड कर वन की ठानी ॥
तप करके सब करम खपाए। इक दिन कमठ वहांपर आए ॥
फौरन ही प्रभु को पहिचाना। बदला लेने को दिल ठाना
बहुत अधिक वारिस बरसाई। बादल गरजे बीजि गिराई ॥
बहुत अधिक पत्थर बरसाए। स्वामी तन को नहीं हिलाए ॥
पद्मावति धरणेन्द्र भी आये। प्रभु की सेवा में चित लाये ॥
पद्मावति ने फन फैलाया । उस पर स्वामी को बैठाया ॥
धरणेन्द्र ने फन फैलाया। प्रभु के सरपर फौरन छाया ॥
यही जगह अहिच्छत्र कहाए। पात्र केशरी जहां पर आए ॥
वह पंडित ब्राह्मण विद्वाना । जिनको जाने सकल जहाना ॥
शिष्य पांचसौ संग में आए। सब कट्टर ब्राह्मण कहलाए ॥
पार्श्व नाथ का दर्शन पाया। सब ने जैन धरम अपनाया ॥
अहिच्छत्र थी सुन्दर नगरी। जहां सुखी थी परजा सगरी ॥
राजा श्री वसु पाल कहाये। वो इक जिन मन्दिर बनवाये ॥

प्रतिमा पर पालिश करवाया । फौरन इक मिस्त्री बुलवाया ॥
वह मिस्तरी मांस खाता था । इससे पालिश गिरजाता था ॥
मुनि ने उसे उपाय बताया । पारश दर्शन व्रत दिलवाया ॥
मिस्त्री ने व्रत पालन कीना । फौरन ही रंग चढ़ा नवीना ॥
गदर सतावन का किस्सा है । इक माली को यों लिक्खा है ॥
माली एक प्रतिमा को लेकर । झट छुप गया कुए के अन्दर ॥
उस पानी का अतिशय भारी । दूर होय सारी बीमारी ॥
जो अहिच्छत्र हृदय में ध्यावे । सो नर उत्तम पदवी पावे ॥
पुत्र सम्पदा की बढ़ती हो । पापों की इक दम घटती हो ॥
है तहसील आंवला भारी । स्टेशन पर मिले सवारी ॥
राम नगर इक ग्राम बराबर । जिसको जाने सब नर नार ॥
चालीसे को "चन्द्र" बनाये । हाथ जोड़ कर शीश नवावे ॥

॥ सोरठा ॥

नित चालीसहिं वार, पाठ करे चालीस दिन ।
खेय सुगन्ध अपार, अहिच्छत्र में आयके ॥
होय कुबेर समान, जन्म दरिद्री होय जो ।
जिसके नहिं संतान, नाम वंश जग में चले ॥

❀ इति ❀

श्री महावीर चालीसा

शीश नवा अरिहंत को, सिद्धन करूं प्रणाम ।
उपाध्याय आचार्य का, ले सुखकारी नाम ॥१॥
सर्वसाधु और सरस्वती, जिन मन्दिर सुखकार ।
महावीर भगवान को, मन मन्दिर में धार ॥२॥

* चौपाई *

जय महावीर दयालु स्वामी, वीर प्रभू तुम जग में नामी ।
वर्धमान है नाम तुम्हारा, लगे हृदय को प्यारा प्यारा ॥
शांति छवि और मोहनी मूरत, शान हंसीली सोहनी सूरत ।
तुम ने वेष दिगम्बर धारा, कर्म शत्रु भी तुम से हारा ॥
क्रोध मान और लोभ भगाया, माया ने तुमसे डर खाया ।
तू सर्वज्ञ सर्व का ज्ञाता, तुझको दुनिया से क्या नाता ॥
तुझमें नहीं राग और द्वेष, वीतराग तू हितोपदेश ।
तेरा नाम जगत में सच्चा, जिसको जाने बच्चा बच्चा ॥
भूत प्रेत तुम से भय खावें, व्यंतर राक्षस सब भग जावें ।
महा व्याध मारी न सतावे, महा विकराल काल डर खावे ॥
काला नाग होय फन धारी, या हो शेर भयंकर भारी ।
ना हो कोई बचाने वाला, स्वामी तुम्हीं करो प्रतिपाला ॥
अग्नि दावानल सुलग रही हो, तेज हवा से भड़क रही हो ।
नाम तुम्हारा सब दुख खोवे, आग एक दम ठंडी होवे ॥
हिंसामय था भारत सारा, तब तुमने कीना निस्तारा ।
जन्म लिया कुण्डलपुर नगरी, हुई सुखी तब प्रजा सगरी ॥
सिद्धारथजी पिता तुम्हारे, त्रिसला के आंखों के तारे ।
छोड़े सब झंझट संसारी, स्वामी हुए बालब्रह्मचारी ॥
पंचम काल महा दुखदाई, चांदनपुर महिमा दिखलाई ।
टीले में अतिशय दिखलाया, एक गाय का दूध गिराया ॥
सोच हुआ मन में ग्वाले के, पहुँचा एक फावड़ा ले के ।
सारा टीला खोद भगाया, तब तुमने दर्शन दिखलाया ॥
जोधराज को दुख ने घेरा, उसने नाम जपा जब तेरा ।
ठंडा हुआ तोप का गोला, तब सबने जयकारा बोला ॥

मन्त्री ने मन्दिर बनवाया, राजा ने भी दरब लगाया।
बड़ी धर्मशाला बनवाई, तुमको लाने की ठहराई ॥
तुमने तोड़ी बीसों गाडी, पहिया मसका नहीं अगाड़ी।
ग्वाले ने जो हाथ लगाया, फिरतो रथ चलता ही पाया ॥
पहले दिन बैसाख वदी के, रथ जाता है तीर नदी के।
मैना गूजर सब आते हैं, नाच कूद चित उमगाते हैं ॥
स्वामी तुमने प्रेम निभाया, ग्वाले का तुम मान बढ़ाया।
हाथ लगे ग्वाले का जब ही, स्वामी रथ चलता है तब ही ॥
मेरी है टूटी सी नैय्या, तुम बिन कोई नहीं खिवैया।
मुझ पर स्वामी जरा कृपा कर, मैं हूं प्रभु तुम्हारा चाकर ॥
तुमसे मैं अरु कुछ नहीं चाहूं, जन्म २ तुम दर्शन पाऊं।
चालीसे को 'चन्द्र' बनावे, वीर प्रभु को शीश नावे ॥

॥ सोरठा ॥

नित चालीसहिं बार, पाठ करे चालीस दिन।
खेय सुगन्ध अपार, वर्धमान के सामने ॥
होय कुबेर समान, जन्म दरिद्री होय जो।
जिसके नहिं संतान, नाम वंश जग में चले ॥

॥ इति महावीर चालीसा ॥

श्री पद्मप्रभ चालीसा

दोहा

शीश नवा अरिहंत को, सिद्धन करूं प्रणाम।
उपाध्याय आचार्य का, ले सुखकारी नाम ॥
सर्व साधु और सरस्वती, जिन मन्दिर सुखकार।
पद्मपुरी के 'पद्म' को, मन मन्दिर में धार ॥

ॐ चौपाई ॐ

जय श्रीपद्मप्रभु गुणधारी, भविजन के तुमहो हितकारी ।
देवों के तुम देव कहाओ, पाप भक्त के दूर हटाओ ॥
तुम जग में सर्वज्ञ कहाओ, छट्ठे तीर्थंकर कहलाओ ।
तीनकाल तिहूँ जगकी जानो, सब बातें क्षणमें पहिचानो ॥
वेष दिगम्बर धारन हारे, तुमसे कर्म शत्रु भी हारे ।
मूर्ति तुम्हारी कितनी सुन्दर, दृष्टि सुखद जमती नासापर ॥
क्रोधमान मदलोभ भगाया, राग द्वेष का लेश न पाया ।
वीतराग तुम कहलाते हो, सब जगके मन को भाते हो ॥
कौशांबी नगरी कहलाए, राजा धारण जी बतलाए ।
सुन्दर नार सुसीमा उनके, जिसके उरसे स्वामी जन्मे ॥
कितनी लम्बी उमर कहाई, तीस लाख पूरब बतलाई ।
इकदिन हाथी बंधा निरखकर, झट आया वैराग्य उमड़कर
कार्तिक सुदी त्रयोदश भारी, तुमने मुनि पद दीक्षा धारी ॥
सारे राजपाट को तज के, जभी मनोहर वन में पहुँचे ॥
तपकर केवल ज्ञान उपाया, चैत सुदी पंदरस कहलाया ।
एकसौदस गणधर बतलाए, मुख्य वज्र चामर कहलाए ॥
लाखों मुनि अर्जिका लाखों, श्रावक और श्राविका लाखों ।
असंख्यात तिर्यंच बताये, देवी देव गिनत नहीं पाये ॥
फिर सम्मेद शिखर पर जाके, शिव रमणी को लीपरनाके ।
पंचम काल महा दुखदाई, जब तुमने महिमा दिखलाई ॥
जयपुर राज्य ग्राम बाड़ा है, स्टेशन शिवदास पुरा है ।
मूला नाम जाट का लड़का, घर की नींव खोदने लागा ॥
खोदत खोदत मूर्ति दिखाई, उसने जनता को बतलाई ।
चिन्ह कमल लख लोग लुगाई, पद्म प्रभु की मूर्ति बताई ॥
मनमें अति हर्षित होते हैं, अपने दिल का मल धोते हैं ।
तुमने यह अतिशय दिखलाया, भूत प्रेत को दूर भगाया ॥

भूत प्रेत दुख देते जिसको, चरणों में लाते हैं उसको।
जब गंधोदक छींटा मारे, भूत प्रेत सब आप बंकारे॥
जपने से तब नाम तुम्हारा, भूत प्रेत वह करे किनारा॥
ऐसी महिमा बतलाते हैं, अन्धे भी आंखें पाते हैं॥
प्रतिमा श्वेत वर्ण कहलाये, देखत ही हृदय को भाये।
ध्यान तुम्हारा जो धरता है, इस भव से वह नर तरता है।
अन्धा देखे गूंगा गाये, लंगड़ा पर्वत पर चढ़ चाये।
बहरा सुन २ कर खुश होवे, जिस पर कृपा तिहारी होवे॥
मैं हूं स्वामी दास तुम्हारा, मेरी नैया कर दो पारा।
चालीसे को 'चन्द्र' बनावे, पद्म प्रभू को शीश नवावे॥

※ सोरठा ※

नित चालीसहिं बार, पाठ करे चालीस दिन।
खेय सुगन्ध अपार, पद्मपुरी में आय के॥
होय कुबेर समान, जन्म दरिद्री होय जो।
जिसके नहिं सन्तान, नाम वंश जग में चले॥

॥ इति पद्मप्रभु चालीसा॥

बाहरमासा राजुलजी का

राग मरहटी (झड़ी)

मैं लूंगी श्री अरहंत सिद्ध भगवन्त साधु सिद्धान्त चार का शरना,
निर्नेम नेम बिन हमें जगत में क्या करना॥ टेक॥

अषाढ़ मास (झड़ी)

सखि आया अषाढ़ घनघोर मोर चहुं ओर मचा रहे शोर इन्हें समझाओ। मेरे प्रीतम की तुम पवन परीक्षा लाओ। हैं कहां बसे भरतार, कहां गिरनार, महाव्रत धार, बसे किस बन में। क्यों बांध मोड़ दिया तोड़ क्या सोची मन में॥

(झर्वटें)

जा जा रे पपैया जा रे, प्रीतम को दे समझारे।
रही नौभव संग तुम्हारे, क्यों छोड़ दई मझधारे॥

(झड़ी)

क्यों बिना दोष भये रोष नहीं सन्तोष यही अफसोस बात नहिं बूझी। दिये जादों छप्पन कोड़ छोड़, क्या सूझी। मोहि राखो शरण मंझार, मेरे भर्तार, करो उद्धार. क्यों दे गये झुरना। निर्नेम नेम बिन हमें जगत में क्या करना॥

श्रावण मास (झड़ी)

-सखि श्रावण संवर करे, समन्दर भरे, दिगम्बर धरे, सखी क्या करिये। मेरे जी में ऐसी आवे महाव्रत धरिये। सब तजूं साज शृंगार, तजूं संसार, क्यों भव मंझार में जी भरमाऊं। क्यों पराधीन तिरिया का जन्म नहिं पाऊं॥

(झर्वटें)

सब सुनलो राजदुलारी, दुख पड गया हम पर भारी।
तुम तज दो प्रीति हमारी, करदो संयम की तैयारी॥

(झड़ी)

अब आगया पावस काल, करो मत टाल, भरे सब ताल, महा जल बरसै। बिन परसे श्री भगवन्त मेरा जी तरसै। मैंने तज दई तीज सलौन, पलट गई पौन, मेरा है कौन, मुझे जग तरना। निर्नेम नेम बिन हमें जगत में क्या करना।

भादों मास (झड़ी)

सखी भादों भरे तलाव, मेरे चित चाव, करूंगी उछाव, से सोलह कारण। करूं दस लक्षण के व्रत से पाप निवारण। करूं रोट तीज उपवास, पंचमी अकास, अष्टमी खास, निशल्य मनाऊं। तप कर सुगन्ध दशमी को कर्म जलाऊँ॥

(झर्वटें)

सखि दुद्धर रस की धारा, तजि चार प्रकार अहारा।
करूं उग्र उग्र तप सारा, ज्यों होय मेरा निस्तारा॥

(झड़ी)

मैं रत्नत्रय व्रत धरूं, चतुर्दशी करूं जगत से तिरूं, करूं पखवाडा। मैं सब से छिमाऊं दोष तजूं सब राडा। मैं सातों तत्व विचार कि गाऊं मल्हार, तजा संसार, ता फिर क्या करना। निर्नेम नेम बिन हमें जगत में क्या करना॥

आसोज मास (झड़ी)

सखि आगया मास कुवार, लो भूषण तार, मुझे गिरनार की दे दो आज्ञा। मेरे पाणिपात्र आहार की है प्रतिज्ञा। लो तार ये चूडा-मणी, रतन की कणी, सुनो सब जणी, खोल दो बैनी। मुझको अवश्य परभात ही दीक्षा लेनी॥

(झर्वटे)

मेरे हेतु कमण्डलु लावो, इक पींछी नई मँगावो।
मेरा मतना जी भरमावो, मत सूते कर्म जगावो॥

(झड़ी)

है जग में असाता कर्म, बडा बेशर्म, मोह के मर्म से धर्म न सूझै। इसके वश अपना हित कल्याण न बूझै। जहाँ मृग तृष्णा की धूर, वहाँ पानी दूर, भटकना भूर वहाँ जल भरना। निर्नेम नेम बिन हमें जगत में क्या करना॥

कार्तिक मास (झड़ी)

सखि कार्तिक काल, अनन्त श्री अरहन्त की सन्त महन्त ने आज्ञा पाली। धर योग यत्न भव भोग की तृष्णा टाली। सजे चौदह गुण अस्थान स्वपर पहचाने तजे मक्कान महल दीवाली। लगा उन्हें मिष्ट जिन धर्म अमावस काली॥

(झर्वटें)

उन केवल ज्ञान उपाया, जग का अन्धेर मिटाया।

जिसमें सब विश्व समाया, तन धन सब अथिर बताया॥

है अथिर जगत सम्बन्ध, अरी मति मन्द, जगत का अन्ध है धुन्ध पसारा। मेरे प्रीतम ने सत जान के जगत बिसारा। मैं उनके चरण की चेरी, तू आज्ञा दे मां मेरी, है मुझे एक दिन मरना। निर्नेम नेम बिन हमें जगत में क्या करना॥

अगहन मास (झड़ी)

सखि अगहन ऐसी घड़ी, उदय में पड़ी मैं रह गई खड़ी, दरस नहिं पाये। मैं सुकृत के दिन विरथा योंही गॅवाये। नहिं मिले हमारे पिया, न जप तप किया, न संयम लिया अटक रही जग में। पड़ी काल अनादि से पाप की वेड़ी पग में॥

(झर्वटें)

मत भरियो मांग हमारी, मेरे शील को लागे गारी।

मत डारो अॅजन प्यारी, मैं योगन तुम संसारी॥

(झड़ी)

हुये कन्त हमारे जती, मैं उनकी सती, पलट गई रती तो धम नहिं खण्डू। मैं अपने पिता के वंश को कैसे भण्डू। मैं मंडा शील सिंगार अरी नथ तार गये भर्तार के संग आभरना। निर्नेम नेम बिन हमें जगत में क्या करना॥

पौष मास (झड़ी)

सखि लगा महीना पोह ये माया मोह जगत से द्रोहरु प्रीत करावै, हरे ज्ञानावरणी ज्ञान अदर्शन छावै। पर द्रव्य से ममता हरे तो पूरी परै जु सम्बर करै तो अन्तर टूटै। अरु ऊँच नीच कुल नाम की संज्ञा छूटै॥

(झर्वटें)

क्यों ओछी उमर धरावै, क्यों सम्पति को विलगावै ॥
क्यों पराधीन दुख पावै, जो संयम में चित लावै ॥

(झड़ी)

सखि क्यों कहलावै दीन क्यों हो छवि छीन क्यों विद्या हीन मलीन कहावै । क्यों नारि नपुंसक जन्म में कर्म नचावै। वे तजैं शील श्रृंगार रुलै संसार जिन्हें दरकार नरक में पड़ना । निर्नेम नेम विन हमें जगत मे क्या करना ॥

माघ मास (झड़ी)

सखि आगया मास वसन्त, हमारे कन्त, भये अरहन्त, वो केवल ज्ञानी । उन महिमा शील कुशील की ऐसे बखानी । दिये सेठ सुदर्शन शूल, भई मखतूल, वहां वरसे फूल हुई जयवाणी । वे मुक्ति गये अरु भई कलंकित राणी ॥

(झर्वटें)

कीचक ने मन ललचाया, द्रौपदी पर भाव धराया ।
उसे भीम ने मार गिराया, उने किया तैसा फल पाया ॥

(झड़ी)

फिर गह्या दुर्योधन चीर, हुई दिलगीर जुड़ गई भीर लाज अति आवै। गये पाण्डु जुये में हार न पार बसावै । भये परगट शासन वीर, हरी सब पीर, बंधाई धीर, पकर लिये चरना । निर्नेम नेम बिन हमें जगत में क्या करना ॥

फागुन मास (झड़ी)

सखि आया फाग बड़ भाग तो होरी त्याग अठाई लाग के मैना सुन्दर । हरा श्रीपाल का कुष्ट कठोर उदम्बर । दिया धवल सेठ ने डार, उदधि की धार तो हो गये पार, वे उस ही पल में । अरु जा परणी गुणमाल न डूबे जल में ॥

(झवेंटें)

मिली रैन मंजूषा प्यारी, निज ध्वजा शील की धारी ॥
परी सेठ पै मार करारी, गया नर्क में पापाचारी ॥

(झड़ी)

तुम लखो द्रोपदी सती, दोष नहिं रती, कहैं दुर्मती पद्मके बन्धन। हुआ घात कि खण्ड जरूर शील इस खण्डन। उन फूटे घडे मंझार दिया जल डाल तो बे आधार थमा जल झरना। निर्नेम नेम बिन हमें जगत में क्या करना ॥

चैत्र मास (झड़ी)

सखि चैत्र में चिन्ता करे न कारज सरे शील से टरे कर्म की रेखा। मैने शील से भील को होता जगत गुरु देखा। सखि शील में सुलसां तिरी सुतारा फिरी खलासी करी श्री रघुनन्दन। अरु मिली शील परताप पवन से अंजन ॥

(झवेंटें)

रावण ने कुमत उपाई, फिर गया विभीषण भाई।
छिन में जा लंक गमाई, कुछ भी नहिं पार बसाई ॥

(झड़ी)

सीता सती अग्नि में पड़ी तो उस ही घड़ी वह शीतल पडी चढ़ी जल धारा। खिल गये कमल भये गगन में जय जयकारा। पद पूजे इन्द्र धर्णेन्द्र, भई शीतेन्द्र, श्री जैनेन्द्र ने ऐसा बरना। निर्नेम नेम बिन हमें जगत में क्या करना ॥

वैसाख मास (झड़ी)

सखी आई बैसाखी मेख लई मैं देख ये ऊरध रेख पडी मेरे कर में। मेरा हुआ जन्म यूं ही उग्रसेन के घर में। नहिं लिखा करम में भोग, पडा है जोग, करो मत शोग जाऊँ गिरनारी। है मात पिता अरु भ्रात से क्षमा हमारी ॥

(झड़ी)

मैं पुण्य प्रताप तुम्हारे, घर भोगे भोग अपारे।
जो विधि के अंक हमारे, नहिं टरे किसी के टारे ॥

(झड़ी)

मेरी सखी सहेली बीर, न हो दिलगीर धरो चित धीर मैं क्षमा कराऊं। मैं कुल को तुम्हारे कबहुं न दाग लगाऊं। वह ले आज्ञा उठ खडी, थी मंगल घड़ी, जा बन में पड़ी सुगुरु के चरना। निर्नेम नेम बिन हमें जगत में क्या करना ॥

जेठ मास (झड़ी)

अजी पड़े जेठ की धूप खडे सब भूप वह कन्या रूप सती बड भागन। कर सिद्धन को प्रणाम किया जग त्यागन। अजि त्यागे सब संसार चूड़ियां तार कमण्डलु धार कै लई पिछौटी। अरु पहरकै साडी श्वेत उपाटी चोटी।

(झर्वटें)

उन महा उग्र तप कीना, फिर अच्युत्येन्द्र पद लीना।
है धन्य उन्हीं का जीना, नहीं विषयन में चित दीना ॥

(झड़ी)

अजी त्रियावेद मिट गया, पाप कट गया, बढ़ा पुरुषारथ। करे धर्म अरथ फल भोग रुचे परमारथ। वो स्वर्ग सम्पदा भुक्ति जायगी मुक्ति, जैन की उक्ति में निश्चय धरना। निर्नेम नेम बिन हमें जगत में क्या करना ॥

जो पढ़े इसे नर नारि बढे परिवार सबै संसार में महिमा पावें। सुन सतियनशील कथान विघ्न मिट जावे। नहिं रहैं सुहागिन दुखी होय सब सुखी, मिटे बेरुखी पावें वे आदर। वे होय जगत में महा सतियों की चादर।

(झर्वंदं)

मैं मानुष कुल में आया, अरु जाति यती कहलाया।
है कर्म उदय की माया, विन संयम जन्म गंवाया॥

(झड़ी)

ग्राम, संवत्, कवि वंश, नाम—
है दिल्ली नगर सुवास, वतन है खास फाल्गुन मास, अठाइ आठै, हो उनके नित कल्याण छपा कर बाटें। अजी विक्रम अब्द उनीस पै धर पैंतीस श्री जगदीश का ले लो शरणा। कहैं दास नैनसुख दोष पै दृष्टि न धरना। मैं लूंगी श्री अरहन्त सिद्ध भगवन्त साधु सिद्धान्त चार का सरना. निर्मम नेम बिन हमें जगत में क्या करना॥

अथ अठाई रासा

बरत अठाई जे करे ते पावें भव पार प्राणी। टेक
जम्बूद्वीप सुहावणों, लख योजन विस्तार प्राणी॥ १॥
भरत क्षेत्र दक्षिण दिशा, पोदण पुर तिह सार प्राणी।
विद्यापति विद्याधरो, सोमाराणी राय प्राणी। वरत०॥ २॥
चारण मुनि तहँ पारणें, आये राजा गेह प्राणी।
सोमा राणी अहार दे पुन्य, बढ़ो अति नेह प्राणी। वरत०॥ ३॥
तिसी समय नभ देवता, चले जात विमान प्राणी।
जै जै शब्द भयो घनो मुनिवर, पूछ्यो ज्ञान प्राणी। वरत०॥ ४॥
मुनिवर बोले सुन राणी, नन्दीश्वर की जात प्राणी।
जे नर करहीं स्वभाव सो, ते पावै शिव कांत प्राणी। वरत०॥ ५॥
यह बचन राणी सुनो, मन में भयो आनन्द प्राणी।
नन्दीश्वर पूजा करें, ध्यावें आदि जिनेन्द्र प्राणी। वरत०॥ ६॥
कार्तिक फागुन साढ़ में पालें मन वच देह प्राणी।
वसु दिवस पूजा करै तीन भवान्तर लेय प्राणी। वरत०॥ ७॥
विद्यापति मुनि चालियो, रच्यो विमान अनूप प्राणी।

राणी बरजै राय को तू तो मानुष भूप प्राणी । वरत० ॥८॥
मानुषोत्र लंघत नहीं मानुष जेती जात प्राणी ।
जिन वाणी निश्चय सही तीन भवन विख्यात प्राणी । वरत० ॥६॥
सो विद्यापति ना रह्यो, चलो नन्दीश्वर दीप प्राणी ।
मानुषोत्र गिरिसो मिलो जाय न मान महीप प्राणी । वरत० ॥१०॥
मानुषोत्र की भेटतैं पर्‍यो धरणी सिर भार प्राणी ।
विद्यापति भव चूरियो, देव भयो सुरसार प्राणी । वरत०॥११॥
दीप नन्दीश्वर छिनक में, पूजा बसु विधि ठान प्राणी ।
करी सुमन वच काय से, माला दई करमान प्राणी । वरत०॥१२॥
आनन्द सों फिर घर आयो, नन्दीश्वर कर जात प्राणी ।
विद्यापति का रूप कर, पूछे राणी बात प्राणी । वरत०॥१३॥
राणी बोली सुन राजा यह तो कबहु न होय प्राणी ।
जिन वाणी मिथ्या नहीं, निश्चय मन में सोय प्राणी । वरत०॥१४॥
नन्दीश्वर की जयमाला, राय दिखाई आन प्राणी ।
अब तू सांचो मोहि जाणो, ' जन करी बहु मान प्राणी । वरत०॥१५॥
राणी फिर तासो कहै, यह भव परसै नाहि प्राणी ।
पश्चिम सूर्य उदय हुए, जिन वाणी शुचि ताहि प्राणी । वरत०॥१६॥
राणी सों नृप फिर बोल्यो, बावन भवन जिनालय प्राणी ।
तेरह तेरह में वन्दे, पूजन करीं तत्काल प्राणी । वरत० ॥१७॥
जयमाला तहां मो मिलि आयों हूँ तुझ पास प्राणी ।
अब तू मिथ्या मत माने, पूजा भई अवश्य प्राणी । वरत०॥१८॥
पूरब दक्षिण में वन्दे, पच्छिम उत्तर जात प्राणी ।
मैं मिथ्या नहीं भाष हूँ, मोहि जिनवर की आण प्राणी । वरत०॥१६॥
सुनि राजा से सब कही, जिन वाणी शुभ सार प्राणी ।
ढाई दीपन लंघई, मानुष जन विस्तार। प्राणी । वरत०॥२०॥
विद्यापति से सुर भयौ, रूप धरौ शुभ सोई प्राणी ।

राणी की स्तुति करी, निश्चय समकित तोय प्राणी ॥ वरत० ॥२१॥
देव कहे अब सुन राणी मानुषोत्र मिलो जाय प्राणी।
तिहतें चय मैं सुर भयो, पूज नन्दीश्वर आय प्राणी ॥ वरत० ॥२२॥
एक भवांतर मो रहो, जिन शासन प्रमाण प्राणी।
मिथ्याती माने नहीं श्रावक निश्चय आण प्राणी ॥ वरत० ॥२३॥
सुरचय तहां हथिनापुरी राज कियो भरपूर प्राणी।
परिग्रह तज संयम लियो, करम महा गिर चूर प्राणी ॥ वरत० ॥२४॥
केवल ज्ञान उपार्ज कर, मोक्ष गयो मुनिराय प्राणी।
शाश्वत सुख बिलसै सदा, जन्म मरण मिटाय प्राणी ॥ वरत० ॥२५॥
अब राणी की सुनो कथा, संयम लीनो सार प्राणी।
तप कर चय के सुर भयो, बिलसे सुख अपार प्राणी ॥ वरत० ॥२६॥
गज पुर नगरी अब तरो, राज करो बहु भाय प्राणी।
सोलह कारण भाइयो धर्म सुनो अधिकाय प्राणी ॥ वरत० ॥२७॥
मुनि संघाटक आइयो, माली सार जणाय प्राणी।
राजा बन्दो भाव सो, पुन्य बढो अधिकाय प्राणी ॥ वरत० ॥२८॥
राजा मन वैरागियो, संयम लीनो सार प्राणी।
आठ सहस्र नृप साथले, यह ससार असार प्राणी ॥ वरत० ॥२९॥
केवल ज्ञान उपार्ज के, दोय सहस्र निर्वाण प्राणी।
दोय सहस्र सुख स्वर्ग, के भोगे भोग सुथान प्राणी ॥ वरत० ॥३०॥
चार सहस्र भू लोक में, हन्डे बहु संसार प्राणी।
काल पाय शिवपुर गये, उत्तम धर्म विचार प्राणी ॥ वरत० ॥३१॥
वरत अंठाई जे करें, तीन जन्म परमाण प्राणी।
लोकालोक सु जाणही, सिद्धारथ कुल ठाण प्राणी ॥ वरत० ॥३२॥
भव समुद्र के तरण को, बावन नौका जान प्राणी।
जो जिय करें स्वभाव सो, जिनवर सांच बखान प्राणी ॥ वरत० ॥३३॥
मन वच काया जे पढैं, ते पावै भव पार प्राणी।

विनय श्रीति सखसौं भएँ जनेम सफल संसार प्राणी।
वरत अठाई जेपढैं, ते पावैं भव पार प्राणी ॥ ३४ ॥
इति श्री अठाई रासा समाप्तम्

अञ्जना सती का जीवन (लावनी)

पतिव्रता एक नार अञ्जना, राजा महेन्द्र की लड़की ॥ टेक ॥
अशुभ करम पूरब से आयो, दासी संग बन बन फिरती।
मान सरोवर तट के ऊपर, सिंह जडी के हुए पती ॥ १ ॥
चकवा चकवी वियोगन देखे, तब त्रिया की सूरत धरी।
जभी पवन जी ने आधी रैन को, राह लई अपने घर की ॥ ४ ॥
गप्त त्रिया से जाय महल में, बात कही है तन मन की।
हाथ जोड़ कर कहे अञ्जना, सुनो नाथ मेरे प्राणपति ॥ ३ ॥
कुछ निशानी मुझको दीजो, सासु पूछे केतुमती।
कड़ा मुद्रिका दिया निशानी राह लई है कटघर की ॥ ४ ॥
गर्भवती जब देखी अञ्जना, सासु पूछे केतुमती।
आधी रात को विमान बैठकर, आये मेरे प्राणपती ॥ ५ ॥
मेरी न मानो दासी से पूछो, वो तुम से कहदे सच्ची।
जा दिन से वर माला डाली, वा दिन छुटा तेरा पती ॥ ६ ॥
अब कैसे तुझे गर्भ रहा है, पुत्र बुलायो लङ्का पति।
हाथ जोड़ कर कहे अञ्जना, सुनो सास मेरी केतुमती ॥ ७ ॥
कड़ा मुद्रिका दिया निशानी, निकल गये मेरे प्राण पती।
तू झूठी तेरी दासी झूठी, वा दूती तेरी पक्की ॥ ८ ॥
कुल को कलंक लगाया पापिन, जा मैं फर्क ना एक रती।
दोनों को दिया देश निकाला, दासी संग बन बन फिरती ॥ ६ ॥
मात पिता घर गई अञ्जना, वहां पर देखी गर्भवती।
बिन आदर वो घर से निकाली, दासी संग बन बन फिरती ॥१०॥
निराश होकर गई बनों में, वहां पर देखे मुनी जती।

बन्दन कर पूरब ले पूछे, कैसे छुटे मेरे प्राण पती ॥ ११ ॥

कहैं मुनीश्वर सुनो अञ्जना, धर्म ध्यान राखो मन में ।
चर्म शरीरी पुत्र होयगा, पति मिले थोड़े दिन में ॥ १२ ॥

दे उपदेश मुनीश्वर चाले, पुत्र होय तेरे बन में ।
सुन्दर मूरत जब देखी पुत्र की, तेजी जैसी सूरज में ॥ १३ ॥

अञ्जना का एक मामा था, आ निकला इस ही बन में ।
सती अञ्जना पुत्र सहित, चली जभी मामा संग में ॥ १४ ॥

खेलत बालक विमान में से, आन गिरा है परवत में ।
टूक टूक हो गये शिला के, अचरज माना है मन में ॥ १५ ॥

खेलत बालक मामा देखा, खुशी हुआ अपने मन में ।
मामा ने प्यार करके, उठा लिया है गोदिन में ॥ १६ ॥

तन्नू लाल यह देख तमाशा, खुशी हुआ अपने मन में ।
चिरंजीवो बालक तेरा, यह आनन्द बरस रहा मन में ॥ १७ ॥

॥ इति शुभम् ॥

वृहद् अर्घावली

१ देव शास्त्र गुरू का अर्घ

जल परम उज्ज्वल गंध अक्षत, पुष्प चरु दीपक धरुँ ।
वर धूप निरमल फल विविध, बहु जनम के पातक हरूँ ॥
इह भांति अर्घ चढ़ाय नित भवि, करत शिव पंकति मचूं ।
अरिहंत श्रुत सिद्धान्त गुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूं ॥
दोहा—वसुविधि अर्घ संजोयके, अति उछाह मन कीन ।
जासों पूजों परम पद, देव शास्त्र गुरु तीन ॥
ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घं ॥

२ बीस तीर्थंकर अर्घ

जल फल आठों द्रव्य, अर्घ कर प्रीति धरी है ।

गणधर इन्द्रन हूतैं थुति पूरी न करी है ॥
द्यानत सेवक जानके, जगतै लेहु निकार ।
सीमंधर जिन आदि दे बीस विदेह मंझार ॥
श्री जिन राज हो भव तारण तरण जिहाज ।

ॐ ह्रीं श्री बीस विरहमान जिनेन्द्राय सीमंधरजी, जुगमंदरजी बाहुजी, सुबाहुजी संजातकजी, स्वयंप्रभुजी, ऋषभाननजी, अनन्तवीर्यजी, सूरप्रभुजी, विशालकीर्तिजी, वज्रधरजी, चन्द्राननजी, चन्द्रबाहुजी, भुजङ्गमजी, ईश्वरजी, नमीश्वरजी, वीरसेनजी, महाभद्रजी, देवयशोधरजी, अजितवीर्यजीभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं ॥

३ अकृत्रिम चैत्यालय अर्घ

वसु कोटि सुछप्पन लाख ऊपर, सहस सत्याणवे मानिये ।
सत चार पै गिनले इक्यासी, भवन जिनवर जानिये ॥
तिहु लोक भीतर सासते सुर असुर नर पूजा करें ।
तिन भवन को हम अर्घ लेकै पूजि हैं जग दुख हरें ।

ॐ ह्रीं तीन लोक सम्बन्धी आठ करोड़ छप्पन लाख सत्तानवे हजार चारसो इक्यासी अकृत्रिम चैत्यालयेभ्यो अर्घं ॥

४ तीन लोक सम्बन्धी कृत्रिम अकृत्रिम चैत्यालय अर्घ

सात करोड़ बहत्तर लाख पाताल विषै जिन मन्दिर जानो ।
मध्यहि लोक मे चार सौ अट्ठावन व्यंतर ज्योतिष के अधिकानो ॥
लाख चौरासी हजार सत्तानवे तेईस ऊरध लोक बखानो ।
इक २ मे प्रतिमा शत आठ नमो कर जोड़ त्रिकाल सयानो ॥

ॐ ह्रीं तीन लोक सम्बन्धी कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्यो अर्घं ॥

५ सिद्ध परमेष्ठी का अर्घ

जल फल वसु वृन्दा अरघ अमंदा जगत अनंदा के कंदा।
मेटो भव फन्दा सब दुख दंदा, हीराचन्दा तुम बन्दा॥
त्रिभुवन के स्वामी त्रिभुवन नामी अन्तरयामी अभिरामी।
शिवपुर विश्रामी निज निधि पामी सिद्ध जजामि सिरनामी॥

ॐ ह्रां नमो सिद्धाणं सिद्ध चक्राधिपतये सिद्ध परमेष्ठिने अर्घं॥

६ श्री ऋषभनाथ तीर्थंकर का अर्घ

जल फलादि समस्त मिलाये के, जजत हूं पद मंगल गाय के।
भगत वत्सल दीन दयाल जी, करहु मोहि सुखी लखि हाल जी॥
ॐ ह्रीं श्रीऋषभ देव जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं॥

७ श्री अजितनाथ तीर्थंकर का अर्घ

जल फल सब सज्जे बाजत वज्जे गुन गन रज्जे मनमज्जे।
तुव पद जुग मज्जे सज्जन जज्जे ते भव भज्जे निज कज्जे॥
श्री अजित जिनेशं नुतनाकेशं चक्र धरेशं खग्गेशं।
मन वांछित दाता त्रिभुवन त्राता पूजों ख्याता जग्गेशं॥
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्ये अर्घे॥

८ श्री शंभवनाथ तीर्थंकर का अर्घ

जल चन्दन तन्दुल प्रसून चरु, दीप धूप फल अर्घ किया।
तुमको अरपों भाव भगति धर, जै जै जैशिव रमनि पिया॥
शम्भव जिनके चरन चरचते, सब आकुलता मिट जावै।
निज निधि ज्ञान दरश सुख वीरज, निराबाध भवि जन पावै॥
ह्रीं श्री शंभवनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घं॥

९ श्री अभिनन्दननाथ तीर्थंकर का अर्घ॥

अष्ट द्रव्य संवारि सुन्दर, सुजस गाय रसाल ही। नाचत रचत

जजों चरन जुग, नाय नाय सुभाल ही ॥ जय कलुषताप निकंद श्री अभिनन्द, अनुपम चंद है। पद इन्द्र वृन्द जजे प्रभु, भवदंद फन्द निकंद है ॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं ॥

१० ॥ श्री सुमतिनाथ तीर्थंकर का अर्घ ॥

जल चन्दन तन्दुल प्रसून चरु, दीप धूप फल सकल मिलाय।
नाचि राचि शिरनाय समरचें; जय जय जय जय जय जिन राय ॥
हरिहर वन्दित पाप निकंदित, सुमति नाथ त्रिभुवन के राय।
तुम पद पद्म सद्म शिवदायक, जजत, मुदित मन उदित सुभाय ॥
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घं ॥

११ ॥ श्री पद्मप्रभ तीर्थंकर का अर्घ ॥

जल फल आदि मिलाय गाय गुन, भगतभाव उमगाय। जजों तुमहिं शिवतियबर, जिनवर आवागमन मिटाय ॥ मन वच तन त्रय धार देत ही, जनम जरा मृत जाय। पजौं भावसों, श्री पद्म नाथ पद सार पजौ भावसौं ॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ ॥

१२ ॥ श्री सुपार्श्व नाथ तीर्थंकर का अर्घ ॥

आठो दरब साजि गुण गाय, नाचत राचत भगति बढ़ाय। दया निधि हो, जय जगवन्धु दया निधि हो ॥ तुम पद पूजों मन वच काय, देव सुपारस शिवपुर राय। दयानिधि हो, जय जगवन्धु दया निधि हो ॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं ॥

१३ ॥ श्री चन्द्रप्रभ तीर्थंकर का अर्घ ॥

सजि आठों दरब पुनीत, आठों अङ्ग नमों।
पूजों अष्टम जिन मीत, अष्टम अवनिगमों ॥

श्री चंदनाथ द्युतिचंद, चरनन चंद लगै।
मन वच तन जजत अमंद, आतम जोति जगे ॥
ॐ ह्रीं श्री चन्द्र प्रभुजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अघ ॥

१४ ॥ श्री पुष्पदन्त नाथ तीर्थंकर का अर्घ ॥

जल फल सकल मिलाय मनोहर, मन बच तन हुलसाय।
तुम पद पूजों प्रीति ल्याय के जय जय त्रिभुवन राय ॥
मेरी अरज सुनीजे; पुष्पदंत जिनराय, मेरी अरज सुनीजे ॥
ॐ ह्रीं श्री पुष्पन्दत नाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ ॥

१५ ॥ श्री शीतल नाथ तीर्थंकर का अर्घ ॥

श्रीफलादि वसु प्रासुक द्रव्य साजे, नाचे रचे मचत बज्जत सज्ज बाजे। रोगादि दोष मल मर्द न हेतु येवा।
चर्चौं पदाब्ज तव शीतल नाथ देवा ॥
ॐ ह्री श्री शीतल नाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ ॥

१६ ॥ श्री श्रेयांस नाथ तीर्थंकर का अर्घ ॥

जल मलय तन्दुल सुमन चरु दीप धूप फलावली।
करि अरघ चर्चों चरन जग प्रभू मोहि तार उतावली ॥
श्रेयांस नाथ जिनंद त्रिभुवन चंद आनन्द कन्द हैं।
दुख दंद फन्द निकंद पूरन चन्द जोति अमंद हैं ॥
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांस नाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ।

१७ ॥ श्री वासपूज्य तीर्थंकर का अर्घ ॥

जल फल द्रव्य मिलाय गाय गुन, आठों अङ्ग नमाई।
शिव पद राज हेत हे श्रीपति, निकट धरों यह लाई ॥
वासुपूज्य वसु पूजततुज पद, वासव सेवत आई।
बाल ब्रह्मचारी लख जिनको, शिवतिय सन्मुख धाई ॥
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अघ ॥

१८ श्री विमल नाथ तीर्थंकर का अर्घ

आठों दरव संवार, मनसुख दायक पावनं।
जजौं अरघ भरथार, विमल विमल शिवतिय रमन॥
ॐ ह्रीं श्री विमल नाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घं॥

१९ श्री अनन्त नाथ तीर्थंकर का अर्घ

शुचि नीर चन्दन शालि शंदन सुमन चरु दीवाधरों।
अरु धूप जुत, अरघ करि, कर जोर जुग विनति करों॥
जगपूज परम पुनीत मति, अनंत संत सुहावनो।
शिव कन्त वंत महंत ध्याओ, भ्रन्त तंत नशावनों॥
ॐ ह्रीं श्री अनन्त नाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घं॥

२० श्री धर्म नाथ तीर्थंकर का अर्घ

आठों दरव साज शुचि चितहर, हरषि हरषि गुन गाई।
बाजत दृम दृम दृम मृदंग गत, नाचत ता थेई थाई॥
परम धरम-शम रमन धरम जिन अशरन शरन निहारी।
पूजों पाय गाय गुन सुन्दर, नाचौ दै दै तारी॥
ॐ ह्रीं श्री धर्म नाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घं॥

२१ श्री शान्ति नाथ तीर्थंकर का अर्घ

वसु द्रव्य संहारी तुम ढिग धारी, आनन्द कारी दृग प्यारी।
तुम हो भवतारी, करुनाधारी, यातै थारी शरनारी॥
श्री शान्ति जिनेशं, नुतशक्रेशं वृष चक्रेशं चक्रेशं।
हनि अरि चक्रेशं, हे गुनधेशं, दया मृतेशं, मक्रेशं॥
ॐ ह्रीं श्री शांति नाथ जिनेंद्राय अनर्घपदप्राप्ताय अर्घं॥

२२ श्री कुंथ नाथ तीर्थंकर का अर्घ

जल चन्दन तंदुल प्रसून चरु, दीप धूप लेरी।
फल जुत जजन करो मन सुख धरि: हरो जगत फेरी॥

कुंथ सुन अरज दास केरी, नाथ सुन अरज दास केरी।
भव सिन्धु परयो हों नाथ निकारो बांह पकर मेरी ॥
प्रभु सुन अरज दास केरी नाथ सुन अरज दास केरी।
जगजाल परयो हों वेग निकारो बांह पकर मेरी ॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्य पदप्राप्तये अर्घं ॥

२३ श्री अरनाथ तीर्थंकर का अर्घं

सुचि स्वच्छ पीटरं, गंध गहीरं तंदुल शीरं, पुष्प चरूं।
वर दीपं धूपं, आनन्द रूपं लैफल भूपं, अर्घ करूं॥ प्रभु
दीन दयालं, अरिकुलकालं विरद विशालं सुकुमालम्।
हनि मम जंजालं, हे जगपालं, अरगुनमालं वर भालम्॥

ॐ ह्रीं श्री अरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्ताये अर्घं ॥

२४ श्री मल्लि नाथ तीर्थंकर का अर्घं

जल फल अरघ मिलाय गाय गुन पूजों भगति बढ़ाई।
शिव पद राज हेत हे श्रीधर, शरन गही मैं आई॥
राग-द्वेष-मद मोह हरन को, तुम ही हो वर वीरा।
यातें शरन गही जगपतिजी, बेग हरौ भव पीरा॥

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं

२५ श्री मुनिसुव्रत नाथ तीर्थंकर का अर्घं

जल गंध आदि मिलाय आठों, दरब अरघ सजों वरों।
पूजों चरनरज भक्ति जुत, जातें जगत सागर तरों॥
शिवसाथ करत सनाथ सुव्रतनाथ, मुनि गुन माल हैं।
तसु चरन आनंद भरन तारन, तरन विरद विशाल हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं

२६ श्री नमिनाथ तीर्थंकर का अर्घं

जल फलादि मिलाय मनोहरं, अरघ धारत की भव भौ हरं।

जजतु हौं नमि के गुन गायकें, जुग पदांबुज प्रीति लगायकें ॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं ॥

२७ श्री नेमिनाथ तीर्थंकर का अर्घ

जल फल आदि साज शुचि लीने, आठों दरब मिलाय ।
अष्टम छिति के राज करन कों, जजों अङ्ग वसु नाय ॥
दाता मोक्ष के, श्री नेमिनाथ जिनराय, दाता ॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं ॥

२८ श्री पार्श्वनाथ भगवान का अर्घ

जल आदि साजि सब द्रव्य लिया ।
कन थार धार नुत नृत्य किया ॥
सुख दाय पाय यह सेवत हौं ।
प्रभु पार्श्व सार्वगुन वेवत हौं ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्व नाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं

२६ श्री महावीर भगवान का अर्घ

जल फल वसु सजि हिमथार, तन मन मोद धरों ।
गुण गाऊँ भवदधितार, पूजत पाप हरों ॥
श्री वीर महा अति वीर सन्मति नायक हो ।
जय वर्द्धमान गुन धीर सन्मति दायक हो ॥

ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं ॥

३० चौबीस तीर्थङ्कर का अर्घ

जल फल आठों शुचि सार, ताको अर्घ करों ।
तुम को अरपों भवतार, भवतरि मोक्ष वरों ॥
चौबीसौं श्री जिन चन्द, आनन्द कन्द सही ।
पद जजत हरत भव फंद पावत मोक्ष मही ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अर्घं ॥

३१ पंच परमेष्ठी का अर्घ

मन माहिं भक्ति अनादि नमिहों देव अरहन्त को सही।
श्री सिद्ध पूजूँ अष्ट गुण मय सूरिगुण छत्तीस ही॥
अङ्ग पूर्व धारी जजौ उपाध्याय साधु गुण अठबीस जी।
ये पंचगुरू निरग्रन्थ सुमंगल दायी जगदीश जी॥

ॐ ह्रीं श्री अरहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय सर्व साधु पंच परमेष्टिभ्यो अर्घ॥

३२ निर्वाण क्षेत्र का अर्घ

जल गंध अच्छत फूल चरु फल, दीप धूपायन धरौं।
"द्यानत" करो निरभय जगत तैं, जोर कर विनती करौं॥
सम्मेद गिर गिरनार चम्पा, पावापुर कैलाश कौं।
पूजों सदा चौबीस जिन निर्वाण भूमि निवास कौं॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति तीर्थङ्कर निर्वाण क्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

३३ पंच बालयति का अर्घ

सजि वसु विधि दरव मनोग, अर्घ बनावत हों।
वसु कर्म अनादि संजोग, ताहि नशावत हों॥
श्री वासु पूज्य मल्लि नेमि, पारस वीर यती।
नमूं मन बच तन धरि प्रेम, पांचों बाल जती॥

ॐ ह्रीं श्री वासपूज्य, मल्लिनाथ, नेमिनाथ पार्श्वनाथ महावीर पंच बालयती तीर्थंकरेभ्यो अर्घं॥

३४ सप्त ऋषि का अर्घ

जल गंध अक्षत पुष्प चरुवर, दीप धूपसु लावना।
फल ललित आठों द्रव्य मिश्रित, अर्घ कीजे पावना॥
मन्वादि चारण ऋद्धि धारक, मुनिन की पूजा करूँ।
ता करें पातिक हरें सारे, सकल आनन्द विस्तरूँ॥

ॐ ह्रीं श्रीमनु, सुरमनु, श्रीनिचय, सर्व सुन्दर, जयवान, विनय लालस, जयमित्र सात ऋषिभ्यो अर्घ ॥

३५ पंच मेरु का अर्घ

आठ दरबमय अरघ बनाय, "द्यानत" पूजौं श्रीं जिनराय।
महासुख होय, देखें नाथ परम सुख होय॥
पाँचो मेरु असी जिन धाम, सब प्रतिमाजी को करो प्रनाम।
महा सुख होय, देखे नाथ परम सुख होय॥

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धी जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घं ॥

३६ नन्दीश्वर द्वीप का अर्घ

यह अर्घ कियो निज हेतु, तुमको अरपत हों।
'द्यानत" कीनो शिव खेत, भूप समरपत हों॥
नन्दीश्वर श्री जिनधाम, बावन पूज करों।
वसुदिन प्रतिमा अभिराम, आनन्द भाव धरों॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्व दक्षिण पश्चिमोत्तरे द्विपंचाशत जिनालयस्थ जिन प्रतिमाभ्यो अर्घं ॥

३७ सोलह कारण का अर्घ

जल फल आठों दरब चढ़ाय "द्यानत" वरत करो मन लाय।
परम गुरू हो, जय जय नाथ परम गुरू हो॥
दर्श विशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर पद दाय॥
परम गुरू हो जय जय नाथ परम गुरू हो॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शन विशुद्धि, विनय सम्पन्नता, शीलव्रतेष्वनतीचार, अभीक्ष्णज्ञानोपयोग, संवेग, शक्तितस्त्याग, शक्तितस्तप, साधुसमाधि, वैयावृत्तिकरण, अर्हद्भक्ति, आचार्यभक्ति, बहुश्रुतभक्ति, प्रवचनभक्ति, आवश्यकापरिहाणि, मार्गप्रभावना, प्रवचनवात्सल्येति षोडसकारणभावनाभ्यो अर्घ ॥

३८ दश लक्षण अर्घ

आठों दरब सम्हार, "द्यानत" अधिक उछाह सों।
भव आताप निवार, दस लक्षण पूजूं सदा॥
ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच संयम, तप, त्याग, आकिंचन, ब्रह्मचर्य, दश लक्षण धर्मेभ्यो नमः अर्घं॥

३९ रत्नत्रय का अर्घ

आठों दरव निरधार, उत्तम सों उत्तम लिये।
जन्म रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भजों॥
ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यक् दर्शन अष्ट विध सम्यक् ज्ञान त्रयोदश प्रकार सम्यक् चारित्रेभ्यो अर्घं॥

४० जिनवाणी (श्री शास्त्रजी) का अर्घ

पृष्ठ १० छपी जिनवाणी स्तुति पढ़कर अर्घ चढ़ाना चाहिये।
ॐ ह्रीं श्री प्रथमानुयोग करणानुयोग चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग अनेक नय जिनवाणी मंडितेभ्यो अर्घं॥

श्री सिद्ध क्षेत्र सम्बन्धी अर्घ

४१ जम्बू स्वामी

मथुरा नगरी अति सुख दाता, जम्बू-स्वामी मुक्ति विधाता।
तीजे केवल ज्ञानी ध्यावो, सिद्ध स्थान पूजों निज पावो॥
चौरासी का मन्दिर भारी, उपवन माहिं महा सुख कारी।
बड़े उछाह थकी हम पूजें, जातें आनन्द मारग सूझें॥
ॐ ह्रीं तृतीय श्रुत केवली जम्बू स्वामिनः मथुरा नगरी सिद्ध क्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

४२ सोनागिर क्षेत्र

नंगानंग कुंवरद्व राज कुमारजू,
मुक्ति गये सोनागिर सो हितकारजू।

साढ़े पाँच किरोड़ भये शिवराज जी,
पूजों मन वच काय लहो सुख सारजी ॥
तिन्के चरण रजों मे मन वच काय के ।
भवदधि उतरों पार शरण में आय के ॥

ॐ ह्रीं नंगानंग कुमारादि साढ़े पांच किरोड़ मुनी मोक्ष पदप्राप्तेभ्यो सोनागिर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।

४३ पटनापुर क्षेत्र (सेठ सुदर्शन मुक्तिस्थान)

शूली तें सिंहासन कीना, सेठ सुदर्शन निज सुख भीना ।
मुक्तिगये पटना पुर वासी; पूजों द्रव्य लाय बड़ भागी ॥
पटना में सरवर विच मानूँ, जिन मंदिर सुन्दर पहिचानूं ।
हम पूजें बड़ भाग हमारा, पूजें सिद्ध क्षेत्र सुख कारा ॥

ॐ ह्रीं श्री सुदर्शन श्रेष्ठिनः निर्वाणास्पद पाटलिपुत्रस्थाराम सिद्धे क्षेत्रेभ्यो अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।

४४ पावांपुर क्षेत्र

पावांपुर सरवर के वीच महावीर जी ।
सिद्ध भये हनि कर्म करें सुर सेव जी ॥
तिनके चरण जजों मैं मन वच काय के ।
भवदधि उतरों पार शरण में आय के ॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर सिद्ध पद प्राप्तेभ्योः श्री पावांपुर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो अर्घ ।

४५ गुणावा क्षेत्र

नगर नवादा नाम बताया, स्वामी गौतम गणधर-राय ।
ताल तीर शिव स्थान सिधाया, पूजों अरघ लाय शुभभाय ॥
गुण अनन्त के धारक नाथा, सिद्ध भये शिव स्वातमसाथा ।
लोकालोक निहार जिनंदा, सो थल हम पूजें सुख कन्दा ॥

ॐ ह्रीं गौतम गणधरस्य नवादा ग्रामस्य सरोवर क्षेत्रेभ्यो सिद्ध पद प्राप्तेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

४६ चम्पापुर क्षेत्र

(६) चम्पापुर ते मोक्ष गये जिनराज जी,
बास पूज्य महाराज करम क्षय कार जी।
तिनके चरण जजों मैं मन वच काय के,
भवदधि उतरों पार शरण में आय के॥

ॐ ह्रीं वासपूज्य सिद्धपद प्राप्तेभ्यो श्री चम्पापुर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो अर्घं।

४७ श्री सम्मेद शिखर संबंधी पर्वत पर टोंक टोंक प्रति जलादि द्रव्य चढाने की विधि

(१) दोहा—कुँथुनाथ जिनराज का, कूट ज्ञान धर जेह।
मन वच तन कर पूजहूं, शिखर सम्मेद यजेह।

ॐ ह्रीं श्री कुंथनाथ जिनेन्द्रादि ९६ कोड़ा कोड़ी ९६ करोड़ ३२ लाख ९६ हजार ७४२ मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणाविंरद को मेरा मन वचन काय करि बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्री गौतम स्वामी आदि गणधर देव गुणावा ग्राम के उद्यान आदि भिन्न भिन्न स्थानों से निर्वाण पधारे हैं तिन के चरणारविंद को जलादि अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

(२) दोहा—नमिनाथ जिनराज का कूट मित्रधर जेह।
मन वच तन कर पजहूं शिखर सम्मेद यजेह॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्रादि नौसे कोड़ा कोड़ी एक अरब ४५ लाख ७ हजार ९४२ मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिन के चरणारविन्द को मेरा नमस्कार हो। जलादि अर्घ॥ २॥

(३) दोहा—अर नाथ जिनराज का नाटक कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ शिखर सम्मेद यजेह ॥

ॐ ह्रीं श्री अर नाथ जिनेन्द्रादि ९९ करोड़ ९९ लाख ९९ हजार मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविन्द को जलादि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(५) दोहा—मल्लिनाथ जिनराज का संबल कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूं शिखर सम्मेद यजेह ॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्रादि ९६ करोड़ मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणाविन्द को जलादि अर्घं।

(६) दोहा—श्रेयांश नाथ जिनराज का संकुल कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूं शिखर सम्मेद यजेह ॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांस नाथ जिनेन्द्रादि मुनि ९६ कोड़ा कोड़ी ९६ करोड़ ९६ लाख ९ हजार ५४२ मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिन के चरणाविन्द को अर्घं।

(७) दोहा—पुष्पदन्त जिनराज का सुप्रभ कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूं शिखर सम्मेद यजेह ॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्रादि मुनि एक कोड़ा कोड़ी ९९ लाख ७ हजार ४८० मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविन्द को अर्घं।

(८) दोहा—पद्म प्रभु जिनराज का मोहन कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूं शिखर सम्मेय यजेह ॥

ॐ ह्रीं श्री पद्म प्रभु जिनेन्द्रादि ९९ करोड़ ८७ लाख ४३ हजार ७९० मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविंद को अर्घं

(९) दोहा—मुनिसुव्रत जिनराज का निर्जर कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ शिखर सम्मेद यजेह ॥

ॐ ह्रीं श्री मुनि सुव्रतनाथ जिनेन्द्रादि ९९ कोड़ा कोड़ी ९७ करोड़ ९ लाख ९९९ मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनको० अर्घं।

(१०) दोहा—चन्द्र प्रभु जिन राज का ललित कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ शिखर सम्मेद यजेह ॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्रादि ६८४ अरब ७२ करोड़ ८० लाख ८४ हजार मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके० अर्घं।

(११) दोहा—ऋषभदेव जिन सिद्ध भये, गिरीकैलाश से, जोय।
मन वच तन कर पूजहूँ शिखर नमूँ पद दोय।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्रादि कैलाश पर्वत से सिद्ध भये तिनके चरणारविन्द को अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(१२) दोहा—शीतलनाथ जिनराज का कूट विद्युत वर जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ शिखर सम्मेद यजेह ॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्रादि, १८ कोड़ा कोड़ी ४२ करोड़ ३२ लाख ४२ हजार ९०५ मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविंद को अर्घं।

(१३) दोहा—अनन्त नाथ जिनराज का कूट स्वयम्भू जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ शिखर सम्मेद यजेह ॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्रादि ९६ कोड़ा कोड़ी ७० करोड़ ७० लाख ७० हजार ७०० मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिन० अर्घं।

(१४) दोहा—सम्भवनाथ जिनराज का धवल कूट धर जेह।
मन वच तन कर पूजहूं शिखर सम्मेद यजेह ॥

ॐ ह्रीं श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्रादि ९ कोड़ा कोड़ी ७२ लाख ४२ हजार ५०० मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविंद को अर्घं

(१५) दोहा—वास पूज्य जिन सिद्ध भये चम्पापुर से जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ शिखर सम्मेद यजेह ॥

ॐ ह्रीं श्री वासपूज्य जिनेन्द्रादि चम्पापुर से सिद्ध भये तिनके चरणारविंद को अर्घं।

(१६) दोहा—अभिनन्दन जिनराज का आनन्द कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूं शिखर सम्मेद यजेह॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दन नाथ जिनेन्द्रादि ७२ कोड़ा कोड़ी ७० करोड़ ७० लाख ४२ हजार ७०० मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविंद को अर्घ।

(१७) दोहा—धर्मनाथ जिनराज का कूट सुदत्त वर जेह।
मन वच तन कर पूजहूं शिखर सम्मेद यजेह॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्रादि २९ कोड़ा कोड़ी १९ करोड़ ९ लाख ९ हजार ७९५ मुनि सिद्ध भये तिनके चरणारविंद को अर्घ

(१८) दोहा—सुमतिनाथ जिनराज का अविचल कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूं शिखर सम्मेद यजेह॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्रादि मुनि १ कोड़ा कोड़ा ८४ करोड़ ७२ लाख ८१ हजार ७०० मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिन के चरणारविंद को अर्घ।

(१९) दोहा—शांतिनाथ जिनराज का कूट कुन्दप्रभ जेह।
मन वच तन कर पूजहूं शिखर सम्मेद यजेह॥

ॐ ह्रीं शांतिनाथ जिनेन्द्रादि ९ कोड़ा कोड़ी ९ लाख ९ हजार ९९९ मुनि बस कूट से सिद्ध भये तिन के चरणारविंद को अर्घ।

(२०) दोहा—महावीर जिन सिद्ध भये पावांपुर से जोय।
मन वच तन कर पूजहूं दरस करत सुख होय॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर स्वामी पावांपुर से सिद्ध भये तिन के चरणारवद को अर्घ।

(२१) दोहा—सुपार्श्वनाथ जिनराज का प्रभास कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूं शिखर सम्मेद यजेह॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्रादि ४९ कोड़ा कोड़ी ८४ करोड़ ७२ लाख ७ हजार ७४२ मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविंद को अर्घ।

(२२) दोहा—विमल नाथ जिनराज का कूट सुबीर है जेह।
मन वच तन कर पूजहूं शिखर सम्मेद यजेह॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्रादि ७० कोड़ा कोड़ी ६० लाख ६ हजार ७४२ मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविंद को अर्घं।

(२३) दोहा—अजितनाथ जिनराज का सिद्धवर कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूं शिखर सम्मेद यजेह॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्रादि १ अरब ८० करोड़ ५४ लाख मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविंद को अर्घं।

(२४) दोहा—नेमिनाथ जिन सिद्ध भये सिद्ध क्षेत्र गिरनार।
मन वच तन कर पूजहूं भवदधि पार उतार॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ भगवान गिरनार पर्वत से मोक्ष गये तिनके चरणारविंद को अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(२५) दोहा—पार्श्वनाथ जिनराज का स्वर्ण भद्र है कूट।
मन वच तन कर पूजहूं जाऊं कर्म से छूट॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रादि ८२ करोड़ ८४ लाख ४५ हजार ७४२ मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविन्द को अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इस कूट का शुद्ध भाव से ध्यान धरने से व दर्शन करने से पशु गति से छुटकारा हो जाता है।

४८ खण्डगिरी क्षेत्र

जल फल वसु दरब पुनीत, लेकर अर्घ करूं।
नाचूं गाऊं इस भांति, भवतर मोक्ष वरूं॥
श्री खण्डगिरी के शीस, दशरथ तनय कहे।
मुनि पंच शतक शिवलीन, देश कलिंग दहे॥

ॐ ह्रीं श्री कलिंग देश मध्ये खण्डगिरी सिद्धक्षेत्रेभ्यो दशरथ राजा के सुत तथा पंच शतक मुनि सिद्धपदप्राप्तेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

४९ उदय गिरी क्षेत्र

जल फल वसु द्रव्य पुनीत, लेकर अर्घ करूं।
नाचूं गाऊं इह भाँति, भवतर मोक्ष वरूं॥
श्री उदय गिरी के शीश, गुफा अनेक कही।
तिनमें जिन बिम्ब अनूप, पूजत सौख्य लही॥

ॐ ह्रीं उदयगिरी क्षेत्राय अर्घं०।

५० बाहुबली स्वामी का अर्घ

आठ दरब करसे फैलाय अर्घ बनाय तुम्हैहि चढ़ायो। मेरो आवागमन मिटाय, दाता मोक्षके श्री बाहुबली जिनराज, दाता मोक्ष के॥ ॐ ह्रीं श्री बाहुबली स्वामिने अर्घं०॥

५१ (गुणावा) गौतम स्वामी का अर्घ

सब अष्ट द्रव्य करि त्यार, प्रभुढिग जोड़ि धरों।
पन्ना प्रति मंगलकार, शिव पद जाय वरों॥
जग की भव ताप निवार, पूजा सुखदायी।
धन नगर गुणावासार गौतम शिव पाई॥

ॐ ह्रीं श्री गुणावासिद्धक्षेत्राय मोक्ष प्राप्ताय गौतम स्वामिने अर्घं०॥

५२ सम्मेद शिखर का अर्घ

जल गंधाक्षत पुष्प सु नेवज लीजिये।
दीप धूप फल लेकर अर्घ सुदीजिये॥
पूजों शिखर सम्मेद सुमनबचकायजी।
नरकादिक दुख टरे अचल पद पायजी॥

ॐ ह्रीं सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्राय अर्घं०।

५३ पावागढ का अर्घ

वसु द्रव्य मिलाई भवजन भाई, धर्म सहाई अर्घ करूं।
पूजा को गाऊ हर्ष चढाऊं, खूब नचाऊं प्रेम भरूं॥
पावागिरि बन्दों मन आनन्दो, भव दुख खंदो चित धारी।
मुनि पांच जुकोड़ं भव दुख छोड़ं, शिव सुख जोड़ं सुख भारी॥

ॐ ह्रीं जम्बू द्वीप भरत क्षेत्र वर्तमान काल सम्बन्धी श्री पावागिरि सिद्ध क्षेत्रेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं।

५४ गिरनारक्षेत्र का अर्घ

अष्ट द्रव्य का अर्घ संजोवो, घण्टा नाद बजाई।
गीत नृत्य कर जजों "जवाहर" आनन्द हर्ष बधाई॥
जम्बू द्वीप भरत आरज में, सोरठ देश सोहाई।
सेसावन के निकट अचल तहं, नेमिनाथ शिव पाई॥

ॐ ह्रीं जम्बू द्वीप भरत क्षेत्रे वर्तमानकाल सम्बन्धी श्री गिरनार गिरि सिद्ध क्षेत्र से नेमिनाथ संबूकुमार प्रद्युम्नकुमार अनिरुद्धकुमार एवं बहत्तर करोड़ सप्तसै मुनि मोक्ष पद प्राप्तये अर्घं॥

इति

नैमित्तिक पूजायें

रविव्रत पूजा

यह भजवन हितकार, सु रविव्रत जिन कही।
करहु भव्यजन लोक, सुमत देके सही॥
पूजों पार्श्व जिनेन्द्र त्रियोग लगाय के।
मिटै सकल संताप मिले निध आयके॥
मति सागर इक सेठ कथा ग्रन्थन कही।
उन्हीं ने यह पूजा कर आनन्द लही॥

तातें रविव्रत सार, सो भविजन कीजिये।
सुख सम्पति सन्तान, अतुल निध लिजिये ॥

दोहा—प्रणमो पार्श्व जिनेश को, हाथ जोड़ शिर नाय।
परभव सुख के कारने, पूजा करूं बनाय ॥
एतवार व्रत के दिना, एहीं पूजन ठान।
ता फल स्वर्ग सम्पति लहै निश्चय लीजे मान ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ २ ठः ठः प्रतिष्ठापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्, सन्निधीकरणम्।

अष्टक।

उज्ज्वल जल भर कर अति लायो रतन कटोरन माहीं।
धार देत अति हर्ष बढावत जन्म जरा मिट जाहीं ॥
पारसनाथ जिनेश्वर पूजों रविव्रत के दिन भाई।
सुख सम्पति बहु होय तुरत ही आनन्द मंगलदाई ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

मलयागिरि केशर अति सुन्दर कुंकुम रंग बनाई।
धारदेत जिन चरनन आगे भवआताप नशाई ॥
पारस नाथ जिनेश्वर पूजो रविव्रत०। चन्दनम् ॥ २ ॥
मोती सम अति उज्ज्वल तन्दुल ल्यायो नीर पखारो।
अक्षय पद के हेतु भावसों श्री जिनवर ढिग धारो ॥
पारसनाथ जिनेश्वर पूजों रविव्रत०। अक्षतं ॥ ३ ॥
केला अर मचकुन्द चमेली पारिजात के ल्यावो।
चुन चुन श्री जिन अग्र चढ़ाऊं मनवाञ्छित फल पावो ॥
पारसनाथ जिनेश्वर पूजों रविव्रत के दिन भाई।
सुख सम्पति बहु होय तुरत ही आनन्द मंगलदाई ॥ ॥ पुष्पं ॥
बावर फेनी गुंजा आदिक घृत में लेत पकाई।

कञ्चन थार मनोहर भरके चरनन देत चढ़ाई ॥ पारस० नैवेद्यं ॥
मणिमय दीप रतनमय लेकर जगमग जोति जगाई।
जिनके आगे आरति करिके मोह तिमिर नश जाई ॥ पारस० दीपं
चूरनकर मलियागिरि चन्दन धूप दशांग बनाई।
तट पावक में खेय भावसों कर्म नाश हो जाई ॥ पारस० धूपं
श्रीफल आदि बदाम सुपारी भांति भांति के लावो।
श्रीजिनचरन चढ़ाय हरष कर तातैं शिवफल पावो ॥ पारस० फलं
जल गन्धादिक अष्ट दरब ले अर्घ बनाओ भाई।
नाचत गावत हर्ष भाव सों कञ्चन थार भराई ॥ पारस० अर्घं

गीता छन्द ।

मन वचन काय विशुद्ध करके पार्श्वनाथ सु पूजिये।
जल आदि अर्घ बनाय भविजन भक्तिवन्त सु हूजिये ॥
पूज्य पारसनाथ जिनवर सकल सुख दातार जी।
जे करत हैं नरनार पूजा लहत सुक्ख अपार जी ॥ पूर्णार्घं

❀ जयमाला ❀

दोहा—यह जग में विख्यात है, पारशनाथ महान।
जिनगुन की जयमालिका, भाषा करों बखान ॥

पद्धरी छंद

जय जय प्रणमों श्री पार्श्वदेव, इन्द्रादिक तिनकी करत सेव।
जय जय सु बनारस जन्म लीन्ह, तिहुं लोक विषै उद्योत कीन ॥१॥
जय जिनके पितु श्री विश्वसेन, तिनके घर भए सुख चैन एन।
जय बामा देवी मात जान, तिनके उपजे पारस महान ॥ २ ॥
जय तीन लोक आनन्द देन, भविजन के दाता भए एन।
जल जिनने प्रभु का शरण लीन, तिनकी सहाय प्रभुजी सो कीन ॥३॥
जय नाग नागनी भये अधीन, प्रभु चरनन लाग रहे प्रवीन।
तजके सो देह स्वर्ग सुजाय, धरणेन्द्र पदमावति भये आय ॥ ४ ॥

जे चोर अञ्जना अधम जान, चोरी तज प्रभुको धरो ध्यान ।
जे मतिसागर इक सेठ जान जिन रविव्रत पूजा करी ठान ॥ ५ ॥
तिनके सुत थे परदेश माहिं, जिन अशुभ कर्म काटे सु ताहि ।
जे रविव्रत पूजन करी सेठ, ता फलकर सबसे भई भेट ॥ ६ ॥
जिन जिन ने प्रभु का शरण लीन, तिन रिद्धि सिद्धि पाई नवीन ।
जे रविव्रत पूजा करहि जेय, ते सौख्य अनन्तानन्त लेय ॥ ७ ॥
धरणेन्द्र पद्मावति हुए सहाय, प्रभु भक्ति जान ततकाल जाय ।
पूजा विधान इहि विध रचाय, मन वचन काय तीनों लगाय ॥ ८ ॥
जो भक्तिभाव जयमाल गाय, सो ही सुख सम्पति अतुल पाय ।
बाजत मृदंग वीनादि सार, गावत नाचत नाना प्रकार ॥ ९ ॥
तन नन नन नन ताल देत, सन नन नन सुर भर सु लेत ।
ता थेई थेई थेई पग धरत जाय, छम छम छम छम घुंघरू बजाय ।
जे करहि विरत इहि भांत भांत, ते लहहि सौख्य शिवपुर सुजात ॥

❋ दोहा ❋

रविव्रत पूजा पार्श्व की, करे भविक जन कोय ।
सुख सम्पति इह भव लहै, तुरत सुरग पद होय ॥

अडिल्ल-रविव्रत पार्श्व जिनेन्द्र पूज्य भव मन धरें ।
भव भव के आताप सकल छिन में टरें ॥
होय सुरेन्द्र आदि पदवी लहै ।
सुख सम्पति सन्तान अटल लक्ष्मी रहै ॥
फेर सर्व विध पाय भक्ति प्रभु अनुसरै ।
नाना विध सुख भोग बहुरि शिव तियवरै ॥

इत्याशीर्वादः ।

रविव्रत जाप्यमंत्र

ॐ नमो भगवते चिंतामणि पार्श्वनाथ सप्तफणं मंडिताय ॐ ह्रीं श्री धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय मम ऋद्धि सिद्धि वृद्धि सौख्यं कुरु २ स्वाहा । [१०८ लवंग से जाप्य] ॥ इति ॥

श्री कलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-पूजा १८८

ह्रूंकारं ब्रह्मरुद्रं स्वपरिकलितं वज्ररेखाष्टभिन्नम्।
वज्रस्याग्रांतराले प्रणवमनुपमानाहतं संश्रणीयं ॥
वर्णान्साद्यान्सपिंडान् हभमरघझसखान् वेष्टयेत्तद्दन्ते।
वज्राणां यन्त्रमेतत् परकृतमशुभं दुष्टविद्यां विहन्ति ॥ १ ॥
पिंडस्थान्पापनोदान् हभमरघझसखान् शांतियुक्तान्विदध्युः।
शाकिन्यो यान्तु नाशं वरलकयहसैस्तेनयुक्तै र्महोग्राः ॥
यन्त्रं श्रीखण्डलिप्तं लिखतु शुचिवसाः कांस्यपात्रे सुमंत्री।
लेखिन्या दर्भजात्या निखिलजनहितं तस्य सौख्यं बिभर्ति ॥ २ ॥

अर्कश्चन्द्रः कुजः सौम्यः गुरुः शुक्रः शनैश्चरः।
राहुः केतुः ग्रहाः शान्ति यान्ति यन्त्र स्थापने ॥३॥

सिद्धं विशुद्धं महिमानिवेशं, दुष्टारिमारि-ग्रहदोषनाशम्।
सर्वेषु योगेषु परं प्रधानं, संस्थापये श्रीकलिकुण्डयंत्रम् ॥४॥

ॐ ह्रीं श्री क्लीं ऐं अर्हं कलिकुण्डदण्ड-श्रीपार्श्वनाथ धरणेन्द्र पद्मावती-सेवित अतुल-बलवीर्यपराक्रम सर्वविघ्न-विनाशन अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टक

गङ्गापगातीर्थसुनीरपूरैः, शीतैः सुगन्धैर्घनसारमिश्रैः।
दुष्टोपसर्गैकविनाशहेतुं, समर्चये श्रीकलिकुण्डयन्त्रम् ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीं ऐं अर्हं कलिकुण्डदण्ड-श्रीपार्श्वनाथ धरणेन्द्र पद्मावती सेविताय अतुल-बलवीर्यपराक्रमाय सर्वविघ्न विनाशनाय ह्म्ल्व्यूं भ्म्ल्व्यूं म्म्ल्व्यूं रम्ल्व्यूं घ्म्ल्व्यूं झ्म्ल्व्यूं स्म्ल्व्यूं ख्म्ल्व्यूं जन्म जरा मृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

श्रीचन्दनैर्गन्ध विलुब्धभृङ्गैः, सर्वोत्तमैर्गन्धविलासयुक्तैः।
दुष्टोपसर्गैकविनाशहेतुं, समर्चये श्रीकलिकुण्डयन्त्रम् ॥ चंदनं
चन्द्रावदातैः सरलैः सुगन्धै-रनिंद्यपात्रैर्वरशालिपुञ्जैः।
दुष्टोपसर्गैकविनाशहेतुं, समर्चये श्रीकलिकुण्डयन्त्रम् ॥ अक्षतं
मन्दारजातीवकुलादिकुन्दैः, सौरभ्यरम्यैः शतपत्रपुष्पैः।
दुष्टोपसर्गैकविनाशहेतुं, समर्चये श्रीकलिकुण्डयन्त्रम् ॥ पुष्पं
वाष्पायमाणैः घृतपूरपूरैः, नानाविधैः पात्रगतैरसाढ्यैः।
दुष्टोपसर्गैकविनाशहेतुं, समर्चये श्रीकलिकुण्डयन्त्रम् ॥ नैवेद्यं
विश्वप्रकाशैः कनकावदातैर्दीपैः सुकर्पूरमयैर्विशालैः।
दुष्टोपसर्गैकविनाशहेतुं, समर्चये श्रीकलिकुण्डयन्त्रम् ॥ दीपं
कर्पूरकृष्णागरुचन्दनाद्यैः, धूपैः सुगन्धीकृतदिग्विभागैः।
दुष्टोपसर्गैकविनाशहेतुं, मचये श्रीकलिकुण्डयन्त्रम् ॥ धूपं
खर्जूरराजादवनालिकेरैः, पूंगीफलैर्मोक्षफलाभिसारैः।
दुष्टोपसर्गैकविनाशहेतुं, समर्चये श्रीकलिकुण्डयन्त्रम् ॥ फलं
जलगन्धाक्षतपुष्पैर्नैवेद्यैः, दीपधूपफलनिकरैः।
श्रीकलिकुण्डाय वरं ददामि कुसुमांजलिं विमलम् ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुण्डदण्ड श्रीपार्श्वनाथाय -धरणेन्द्रपद्मावती सेविताय अतुलबलवीर्यपराक्रमाय सर्वविघ्नविनाशनाय ह्म्ल्व्र्यूं भ्म्ल्व्र्यूं म्म्ल्व्र्यूं र्म्ल्व्र्यूं घ्म्ल्व्र्यूं झ्म्ल्व्र्यूं स्म्ल्व्र्यूं ख्म्ल्व्र्यूं अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

जयमाल

वरसम्मत्तविहूसणाहं भव्वयणाहं जिणवर सुमिरणो।
णासइ पाउ असेस लहु तमु जेम दिवायर विथरणो ॥ १ ॥
सुदुद्धरअंजनपव्वयकाउ, दिसाकरि तासण मेह णिणाउ।
सदप्पुवि चिघुण देइ करिंदु, मणम्मि भरंतहं देवजिणंदु ॥ १ ॥
पसुत्तु समुट्ठिउ दन्ति समूहुं, महाबल लोल लुलाविय जोहु।

सरोसु ण देइ कमं ण मइंदु, मणम्मि० ॥ २ ॥
तमालमहीरुह झंपडसीसु दिणेसरसंणिहु लोयण भीसु।
पसण्णु हवेइ पिसाउ रउद्दु, मणम्मि० ॥ ३ ॥
विर्यभियवेल णहंगणि बोलु, जलुब्भव जीव पयासिय रोलु।
अथाहु वि गोपयमित्तु समुद्दु, मणम्मि० ॥ ४ ॥
फुरंतफनामणिरुद्धदियंतु, तिलोयखयंकरु णाइं कयंतु।
बलेवि ण डंकइ कूरु फणिंद, मणम्मि० ॥ ५ ॥
दुसंचर तोरणिपव्वयदुग्गि, असंख महीरुह भीसणमग्गि।
कहिं पिण लग्गइ तक्कर विंद, मणम्मि० ॥ ६ ॥
घिएणइ सित्तउ तिव्वु जलंतु, जगत्तउजालइणाइगिलिंतु।
ससोसिही वेइ मुह जिमचन्दु, मणम्मि० ॥ ७ ॥
णिमीलियबंधवसज्जणचक्खु, अणेय पयार पयासिय दुक्खु।
विहट्टइ संखलबंधु रउद्द, मणम्मि० ॥ ८ ॥
मणोहरइंदियसोक्खणिवार, भयंदरसूलसिलेसमसार।
पणासइ रोउ तहाजरविंदु, मणम्मि० ॥ ९ ॥
दुलंघु रणम्मिणु पासहवूहु, ण मारि वि सक्कइ सत्तु समूहु।
किवाणु वि होइ अलंअर विंदु, मणम्मि० ॥ १० ॥

घत्ता

चरखगि दुभ्भायंतहं गारुडियहं फिट्टइ विसुजिह।
भव्वयणहं णयणाणंदिजिणु सुमरंतहं उवसग्गुतिहं ॥

छन्द—कन्दर्पद्विपकुंभदारुणहरिः कर्म्माद्रिभेदाशनिः।
मिथ्याज्ञानतमो विनाशतरणिः क्रोधादियत्तीश्वरः ॥
अज्ञानद्रुमखंडनैकपरशुः, मुक्तांगना वल्लभः।
श्रीमत् पार्श्व जिनेश्वरो भयहरो कुर्यात्सतां मंगलं ॥ ११ ॥

अथ जयमाल-शार्दूल छन्द

प्रोद्यत्सन्मणि नागनायकफटाटोपोल्लसन्मण्डपम्।
सद्भक्त्यानमदिन्द्रमौलिमणिभाभास्वत्पदाम्भोरुहम् ॥

प्रोन्मीलन्नवनीरदालिपटलीशङ्कासमुत्पादकम् ।

ध्यायेत् श्री कलिकुण्डदण्डविलसच्चंडोग्रपार्श्वप्रभुम् ॥

छन्द

सुसिद्ध विशुद्ध विबोधनिधान, विकाशितविश्व विवेकविधान ।
विडम्बितकाम जगज्जय चण्ड, सदा सदयोदय जय कलिकुंड ॥१॥

पयोधि-पयोधर-धीर-निनाद निराकृत-दुर्मत-दुर्मदवाद ।
असत्यपथैकपतत्पविदण्ड, सदा सदयोदय जय कलिकुण्ड ॥ २ ॥

निराकुल निर्मलशील निरीह, निराश निरञ्जन संयमसिंह ।
विपाटित-दुष्ट-मदद्विपगंड, सदा सदयोदय जय कलिकुंड ॥ ३ ॥

कषाय-चतुष्टय-काष्ठ-कुठार, निरामय नित्य नरामर-सार ।
विदीर्ण-घनाघन-विघ्न-करंड, सदा सदयोदय जय कलिकुंड ॥ ४ ॥

अनल्प वितल्प विलीन विकल्प, विशल्य विशूल विसर्प विदर्प ।
विरोग विभोग विखंड विमुंड, सदा सदयोदय जय कलिकुंड ॥५॥

फणीश नरेश सुरेश महेश, दिनेश शुभेश गणेश गुणेश ।
वितर्क विकासित-सत्कज-खंड, सदा सदयोदय जय कलिकुंड ॥६॥

विशोक विशंक विमुक्तकलंक, विकासित-विश्व विदूरित-पंक ।
कलामल केवल चिन्मयपिंड, सदा सदयोदय जय कलिकुंड ॥७॥

निकन्दितमोहमहीरुहकन्द वरप्रद सत्पद सम्पदमन्द ।
त्रिदंड विखंडित माय-विहंड, सदा सदयोदय जय कलिकुंड ॥८॥

मालिनी छन्द

कलिलदमनदक्षंयोगियोगोपलक्षं,

ह्यविकलकलिकुंडोद्दंडपार्श्वप्रचंडं ।

शिवसुखशुभसंपद्वासवल्लीवसंतं,

प्रतिदिनमहमीडे वर्द्धमानर्द्धिसिद्धयं ॥

आशीर्वाद (स्रग्धरा छन्द)

सर्पत्सर्पत्सदर्पोत्फटतरलतरोत्तारफुत्कारवेला-

संघट्टोत्पत्तिवाताहतशठकमठोद्भूतजीमूतजातः ।

खेलत्स्वर्गापगांतर्जलधितललसल्लोलडिंडीरपिंड-

व्याजाच्छ्रीपार्श्वराजोज्ज्वलविजययशो राजहंसोऽवताद्वः ॥१॥

अथ आनन्द स्तवन छन्द

प्रणम्य देवेन्द्रनुतं जिनेन्द्रं सर्वज्ञमत्र प्रतिबोधसंज्ञं।
स्तोष्ये सदाहं कलिकुण्डयन्त्रं सर्वांगविघ्नौघविनाशदक्षम्॥
नित्यं स्मरंतोपि हि येपि भक्त्या शक्त्या स्तुवंतोपि जपन्सुमन्त्रं।
पूजां प्रकुर्वन् हृदये दधानाः स चेप्सितं यच्छति यन्त्रराजः ॥२॥
गृहांगणे कल्पतरुः प्रसूतश्चिंतामणिस्तस्य करे लुलोठ।
गौस्तस्य तुल्यास्ति च कामधेनोर्यस्यास्ति भक्तिः कलिकुण्डयन्त्रे ॥३॥
नमामि नित्यं कलिकुण्डयन्त्रं सदा पवित्रं कृतरत्नपात्रम्।
रत्नत्रयाराधनभावलभ्यं सुरासुरैर्वंदितमाद्यमीड्यम् ॥४॥
सिंहेभसर्पाग्निजलाब्धिचौरविषादयोऽन्ये च सदापि विघ्नाः।
व्याध्यादयो राजकुलोद्भवं भगं नश्यंत्यवश्यं कलिकुण्डपूजया ॥५॥
दुःखादिबन्धं निगडं निदानं त्रुट्यंति शीघ्रं प्रजपन्सुमन्त्रम्।
ज्वरातिसारग्रहणीविकाराः प्रयांति नाशं कलिकुण्डपूजया ॥६॥
बन्ध्यापि नारी बहुपुत्रयुक्ता संसारशक्ता प्रियचित्तरक्ता।
यस्यास्तिचित्ते कलिकुण्डचिंता नमाम्यहं तं सततं त्रिकालम् ॥७॥
अनर्थसर्वप्रतिघातदक्षं सौख्यं यशः शान्तिकपौष्टिकाढ्यम्।
नमाम्यहं तं कलिकुण्डयन्त्रं विनर्गतं यज्जिनराजवक्त्रात् ॥८॥

मालिनी छन्द

भुवनमिदमनिद्यं देवराजाभिवन्द्यं
पठति च वरभक्त्या सर्वदा योपि शांत्यै।
सकलसुखमनल्पं कल्पयावत्प्रपेदे
विनिहतविषविघ्नं यन्त्रराजप्रसादात् ॥९॥

॥ महार्घं ॥

जाप्य मन्त्र १

ॐ ह्रीं श्री क्लीं ऐं अर्हं कलिकुण्डदण्ड श्रीपार्श्वनाथ धरणेन्द्र-पद्मावतीसेवित अतुलबलवीर्यपराक्रम ममात्मविद्यां रक्ष रक्ष परविद्यां छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि स्फ्रां स्फ्रीं स्फ्रूं स्फ्रौं स्फ्रः हूं नमः स्वाहा ॥१॥

द्वितीय मन्त्र २

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्रीपार्श्वनाथ धरणेन्द्रपद्मावतीसेवित ममेप्सितं कार्यं कुरु कुरु स्वाहा ॥२॥

तृतीय मन्त्र

ॐ ह्रीं श्री क्लीं ऐं अर्हं कलिकुण्डदण्डस्वामिन्नतुलबलवीर्य पराक्रम ममात्मविद्यां रक्ष रक्ष परविद्यां छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि स्फ्रां स्फ्रीं स्फ्रूं स्फ्रौं स्फ्रः हूं फट् स्वाहा ॥३॥

मंत्रस्तोत्रम् १८६

श्रीमद्देवेन्द्र-वंद्यामल-मणि-मुकुट-ज्योतिषाञ्चक्रवाड़ै-
र्व्यालीढं पादपीठं शठ-कमठ-कृतोपद्रवाबाधितस्य ।
लोकाऽलोकावभासि-स्फुरदुरु-विमल-ज्ञान-सद्दीपदीप-
प्रध्वस्तध्वान्तजालस्य वितरतु सुखं पार्श्वनाथस्य नित्यं ॥ १ ॥

ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः प्रभास्वन्मरकत-मणिभाऽऽक्रान्त-मूर्तिर्हि वं मं
बं सं तं बीजमन्त्रैः कृतसकलजगत् क्षेम-रक्षोरु-रक्षः ।
क्षां क्षीं क्षूं क्षौं समस्त-क्षिति-तल-महित-ज्योतिरुद्योतितीर्थं
क्षैं क्षों क्षौं क्षः क्षीं बीजात्मक-सकल-तनोःपार्श्वनाथस्य नित्यम् ॥२॥

ह्रींकारं रेफयुक्तं रर रर रर रां देव सं संयुतं ह्रीं ।
क्लीं क्लूं द्रां द्रीं पुरेभं भयदमलकुला पंचकोद्भाषि हूं हूं ॥
दूं दूमत्युष्णवर्णैरणिलमिह जगन्मे विधेद्ध्याशु वश्यं ।
वा वं मंत्रं पठन्तं त्रिजगदधिपते ! पार्श्व ! मां रक्ष नित्यं ॥ ३ ॥

ओं क्रों ह्रीं सर्ववश्य कुरु कुरु सरसं कामणं तिष्ठ मत्तं ।
हैं हैं हैं रक्ष रक्ष प्रभलभलमहाभैरवातिप्रभीतेः ।
द्रां द्रीं द्रूं द्रावय द्रावय हन हन फट् फट् वषट् भिन्धि भिन्धि ।
स्वाहा मन्त्रं पठन्तं त्रिजगदधिपते ! पार्श्व ! मां रक्ष नित्यम् ॥ ३ ॥
हं जं ज्वीं दवीं च हं सः कुवलयकलितैः रंजितांगप्रसूनैः ।
जं वं ह्वः पक्षि हं हं हर हर हर हंतं पक्षिपः पक्षिकोपम ।
वं जं हं सः पं वं जं सर सर सर सूं स स्वधाबीजमन्त्रै-
स्त्रायस्व स्थावरादि—प्रबल-विष-सुसंहारिम्भदः पार्श्वनाथः ॥ ५ ॥
क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः एतैरहिपति-रतमंत्राक्षरैरीथ नित्यं ।
हा हाकारोग्रनादैर्ज्वलदनलशिखाकल्पदीर्घोर्ध्वकेशैः ।
पिंगाक्षैः लोलजिह्वैर्विषम-विषधराऽलंकृतैस्तीक्ष्णदंष्ट्रैः ।
भूतैः प्रेतैः पिशाचैरनखकृतमहोपद्रवाद्रक्षरक्ष ॥ ६ ॥
ओं ओं ऊः शाकिनीनां सपदि हरमदं छिंद भिंद द्वयं च
श्मौं दसं तं दिव्यदीर्घागतिमतिकथितस्तंभनं सं विधेहि ।
फट् फट् फट् सर्वरोगग्रहमरणभयोच्चाटनं चैव पार्श्व ।
त्रायस्वाशेषदोषादमरनरवरैर्नूतपादारविन्दः ॥ ७ ॥
इत्थं मन्त्राक्षरोत्थं वचनमनुपमं पार्श्वनाथस्य नित्यम् ।
विद्वेषोच्चाटनस्तंभनवशकृतः पापरोगापहेति ।
प्रोत्सर्पज्जंगम-स्थावरविषम-विषध्व वनं स्वायुरारो-
ग्यैश्वर्योपाद भक्त्या स्मरति पठति यो स्तौति तस्येष्टसिद्धिं ॥ ८ ॥

॥ महर्घं ॥

श्री ऋषि-मण्डल पूजा भाषा

स्थापना ॥ दोहा ॥

चौबीस जिन पद प्रथम नमि, दुतिय सुगणधर पाय ।
त्रितिय पंच परमेष्ठि को, चौथे शारद माय ॥

मन वच तन ये चरन युग, करहूँ सदा परनाम।
ऋषि मण्डल पूजा रचों, बुधि बल द्यो अभिराम॥

अडिल्ल छन्द

चौबीस जिन वसु वर्ग पंच गुरू जे कहे।
रत्नत्रय चव देव चार अवधी लहे॥
अष्ट ऋद्धि चव दोय सूर ह्रीं तीन जू।
अरहंत दश दिग्पाल यन्त्र में लीन जू॥

दोहा—यह सब ऋषि मण्डल विषै, देवी देव अपार।
तिष्ठ तिष्ठ रक्षा करो, पूजूं वसु विधि सार॥

ॐ ह्रीं वृषभादि चौबीस तीर्थङ्कर अष्ट वर्ग अर्हंतादि पंच-पद दर्शन ज्ञान चारित्र सहित चतुर्निकाय देव चार प्रकार अवधिधारक श्रमन अष्ट ऋद्धि संयुक्त बीस चार सुरि तीन ह्रीं अर्हंत बिम्ब दश दिग्पाल यन्त्र सम्बन्धी परम देवाः अत्र अव-तर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्॥

अथाष्टक

हरिगीताछन्द।

क्षीर उदधि समान निर्मल तथा मुनि चित सारसो।
भरभृङ्ग मणिमय नीर सुन्दर तृषा तुरित निवारसो॥
जहँ सुभग ऋषि मण्डल विराजैं पूजि मन वच तन सदा।
तिस मनोवांछित मिलत सब सुख स्वप्न में दुख नहिं कदा॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव विनाशन समर्थाय यन्त्र सम्बन्धि परम देवाय जलं॥ १

मलय चन्दन मँगाय सुन्दर गंध सों अलि झंकरै।
सो लेहु भविजन कुंभ भरिके तप्त दाह सबै हरे॥
जहँ सुभग ऋषि०। तिस मनो०॥ चंदनं॥

इन्दु किरण समान सुन्दर ज्योति मक्ता की हरै ।
हाटक रकेबी धारि भविजन अखय पद प्राप्ती करैं ॥
जहँ सुभग ऋषि० । तिष मनो० ॥ अक्षतं ॥

पाटल गुलाब जुही चमेली मालती बेला घने ।
जिस सुरभितैं कलहंस नाचत फूल गुँथि माला बने ॥
जहँ सुभग ऋषि०, तिस मनो० । पुष्पं

अर्द्ध चन्द्र समान फेनी मोदकादिक ले घने ।
घृत पक्व मिश्रित रस सु पूरे लख क्षुधा डायनि हने ॥
जहँ सुभग ऋषि० । तिस मनो० ॥ नैवेद्यं ॥

मणि दीप ज्योति जगाय सुन्दर वा कपूर अनूपकं ।
हाटक सुथाली मांहि धरिके वारि जिनपद भूपकं ॥
जहँ सुभग ऋषि० । तिस मनो० ॥ दीपं ॥

चन्दन सु कृष्णागरु कपूर मँगाय अग्नि जराइये ।
सो धूप-धूम्र आकाश लागी मनहुँ कर्म उड़ाइये ॥
जहँ सुभग ऋषि० । तिसमनो० ॥ धूपं ॥

दाडिम सु श्रीफल आम्र कमरख और केला लाइये ॥
मोक्ष फल के पायवे की आश धरि करि आइये ॥
जहँ सुभग ऋषि० । तिसमनो० ॥ फलं ॥

जल फलादिक द्रव्य लेकर अर्घ सुन्दर कर लिया ।
संसार रोग निवार भगवन् वारि तुम पद में दिया ॥
जहँ सुभग ऋषि मण्डल विराजैं पूजि मन वच तन सदा ॥
तिस मनोवांछित मिलत सब सुख स्वप्न में दुख नहिंकदा ॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव विनाशन समर्थाय यन्त्र सम्बन्धि परम देवाय अर्घं ॥ ६

अर्घावली

आडिल्ल छन्द

वृषभ जिनेश्वर आदि अन्त महावीर जी।
ये चउवीस जिनराज हनों भवपीरजी॥
ऋषि मण्डल बिच ह्रीं विषैं राजै सदा।
पूजूं अर्घ बनाय होय नहिं दुख कदा॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव विनाशन समर्थाय वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थङ्कर परम देवाय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा॥

आदि कवर्ग सु अन्तजानि शाषासहा।
ये वसुवर्ग महान यन्त्र में शुभ कहा॥
जल शुभ गन्धादिक वर द्रव्य मँगायके।
पूजहू दोउ करजोर शीश निज नायके॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव विनाशन समर्थाय अष्टवर्ग कवर्गादि देशावासाहा हम्ल्व्यूं परम यंत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

कामिनी मोहनी छन्द

परम उत्कृष्ट परमेष्ठी पद पांच को।
नमत शत इन्द्र खगवृन्द पद सांच को॥
तिमिर अघनाश करण को तुम अर्क हो।
अर्घ लेय पूज्य पद देत बुद्धि तर्क हो॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव विनाशन समर्थाय पंच परमेष्ठि परम देवाय अर्घ॥

सुन्दरी छन्द

सुभग सम्यग् दर्शन ज्ञान जू। कह चारित्र सुधारक मान जू॥
अर्घ सुन्दर द्रव्य सु आठ ले। चरण पूजहुं साज सु ठाठ ले॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव विनाशन समर्थाय सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

भवनवासी देव व्यन्तर जोतिषी कल्पिन्द्र जू ।
जिनगृह जिनेश्वर देव राजै रत्न के प्रतिबिम्ब जू ॥
तोरण ध्वजा घण्टा विराजै चॅवर ढरत नवीन जू ।
वर अर्घ ले तिन चरण पूजों हर्ष हिय अति लीन जू ॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव विनाशन समर्थाय भवनेन्द्र-व्यंतरेन्द्र ज्योतिषेन्द्र कल्पेन्द्र चतुःप्रकारदेवगृहे श्रीजिनचैत्यालय संयुक्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा—अवधि चार प्रकार मुनि, धारत जे ऋषिराय ।
अर्घलेय तिन चर्ण जजि, विघन सघन मिट जाय ॥

ॐ ह्रीं सर्वापद्रव विनाशन समर्थेभ्यो चतुःप्रकार अवधि-धारक मुनिभ्यो अर्घं ॥

भुजंगप्रयात छंद

कही आठ ऋद्धि धरे जे मुनीशं ।
महा कार्यकारी बखानी गनीशं ॥
जल गंध आदि दे जजों चर्न नेरे ।
लहों सुक्ख सवेरे हरो दुःख फेरे ॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवविनाशन समर्थेभ्यो अष्टऋद्धिसहितमुनिभ्यो अर्घं ।

श्री देवी प्रथम बखानी, इन आदिक चौबीसों मानी ।
तत्पर जिन भक्ति विषै हैं, पूजत सब रोग नशै हैं ॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवविनाशन समर्थेभ्यो श्री आदि चतुर्विंशति-देविभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

हंसा छन्द

'यन्त्र विषैं वरन्यो तिरकोन, ह्रीं तहतीन युक्त सुखभोन ।
जल फलादि वसु द्रव्य मिलाय, अर्घ सहित पूजू शिरनाय ॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवविनाशनसमर्थाय त्रिकोणमध्ये तीन ह्रीं संयुक्ताय अर्घं ।

तोमर छन्द

दस आठ दोष निरवारि, छियालीस महागुण धारि।
वसु द्रव्य अनूप मिलाय, तिन चर्न जजों सुखदाय ॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवविनाशन समर्थाय अष्टादशदोषरहिताय छीयालीस महागुणयुक्ताय अरहंत परमेष्ठिभ्यो अर्घं।

सोरठा

दश दिश दस दिग्पाल, दिशानाम सो नामवर।
तिनगृह श्रीजिन आल, पूजों मैं वन्दों सदा ॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवविनाशन समर्थेभ्यो दश दिग्पालेभ्यो जिन-भक्तियुक्तेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा—ऋषि मण्डल शुभयन्त्र के, देवी देव चितारि।
अर्घ सहित पूजहुं चरन, दुख दारिद्र निवारि ॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवविनाशनसमर्थेभ्यो ऋषिमण्डल सम्बन्धि-देवीदेवेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा—चौबीसों जिन चरन नमि, गणधर नाऊँ भाल।
शारद पद पंकज नमूं, गाऊँ शुभ जयमाल ॥

जय आदीश्वर जिन आदिदेव, शत इन्द्र जजें मैं करहुं सेव।
जय अजित जिनेश्वर जै अजीत, जे जीत भये भव तें अतीत ॥

जय सम्भव जिन भवकूप माँहि, डूबत राखहु तुम शर्ण आंहि।
जय अभिनन्दन आनन्द देत, ज्यों कमलों पर रवि करत हेत ॥

जय सुमति सुमति दाता जिनन्द, जै कुमति तिमिर नाशन दिनन्द।
जय पद्मालंकृत पद्मदेव, दिन रयन करहुं तव चरन सेव ॥

जय श्री सुपार्श्व भवपाश नाश, भवि जीवन कूँ दियो मुक्तिवास।
जय चन्द जिनेश दया निधान, गुणसागर नागर सुख प्रमान ॥

जय पुष्पदन्त जिनवर जगीश, शत इन्द्र नमत नित आत्मशीश।

जय शीतल बच शीतल जिनन्द, भवताप नशावत जगत चन्द ॥
जय जय श्रेयांस जिन अति उदार, भवि कण्ठ मांहि मुक्ता सुहार।
जय वासुपूज्य वासव खगेश, तुम स्तुति करि पुनि नमि हैं हमेश ॥
जय विमल जिनेश्वर विमलदेव, मल रहित विराजत करहुं सेव।
जय जिन अनन्त के गुण अनन्त, कथनी कथ गणधर लहे न अंत ॥
जय धर्म धुरन्धर धर्मधीर, जय धर्म चक्र शुचि ल्याय वीर।
जय शान्ति जिनेश्वर शान्तभाव, भव वन भटकत शुभ मग लखाव ॥
जय कुन्थु कुन्थुवा जीव पाल, सेवक पर रक्षा करि कृपाल।
जय अरहनाथ अरि कर्म शैल, तपवज्र खण्ड लहि मुक्ति गैल ॥
जय मल्लि जिनेश्वर कर्म आठ मल डारे पायो मुक्ति ठाठ।
जय सुव्रत मुनि सुव्रत धरन्त, जय सुव्रत व्रत पालत महन्त ॥
जय नम्मि नमत सुर वृन्द पांय, पद पंकज निरखत शीश नाय।
जय नेमि जिनन्द दयानिधान, फैलायो जग में तत्वज्ञान ॥
जय पारस जिन आलस निवार, उपसर्ग रुद्र कृत जीत धारि।
जय महावीर महाधीरधार भवकूप थकी जग तैं निकार ॥
जय वर्ग आठ सुन्दर अपार, तिन भेद लखत बुध करत सार।
जय परमपूज्य परमेष्ठि सार, जिन सुमरत बरसे अनन्द धार ॥
जय दर्शन ज्ञान चरित्र तीन, ये रत्न महा उज्ज्वल प्रवीन।
जय चार प्रकार सुदेव सार, तिनके गृह जिन मन्दिर अपार ॥
जो पूजै वसुविधि द्रव्य ल्याय, मैं इत जांज तुम पद शीश नाय।
जो मुनिवर धारत अवधि चारि, तिन पूजै भवि भवसिन्धु पार ॥
जो आठ ऋद्धि मुनिवर धरन्त, ते मोपै करुणा करि महन्त।
चौबीस देव जिन भक्ति लीन, बन्दन ताको सु परोक्ष कीन ॥
जे ह्रीं तीन त्रिकोण मांहि, तिन नमत सदा आनन्द पाहिं।
जय जय जय श्री अरहंत बिम्ब, तिन पद पूजूं मैं खोई डिंब ॥
जो दस दिग्पाल कहे महान, जे दिशा नाम सो नाम जान।

जे तिनके गृह जिनराज धाम, जे रत्नमई प्रतिमाभिराम ॥
ध्वज तोरन घण्टा युक्तसार, मोतिन माला लटकैं अपार ।
जे ता मधि वेदी है अनूप, तहँ राजत हैं जिनराज भूप ॥
जय मुद्रा शान्ति विराजमान, जा लखि वैराग्य बढ़े महान ।
जे देवी देव सु आय आय, पूजें तिन पद मन वचन काय ॥

जल मिष्ट सु उज्ज्वल पय समान, चन्दन मलियागिर को महान ।
जै अक्षत अतियारे सुलाय, जे पुष्पन की माला बनाय ॥
चरु मधुर विविध ताजी अपार, दीपक मणिमय उद्योतकार ।
जे धूप सु कृष्णागरु सुखेय, फल विविध भाँति के मिष्ट लेय ॥
वर अर्घ अनूपम करत देव, जिनराज चरण आगे चढ़ेव ।
फिर मुखतैं स्तुति करते उचार, हो करुणानिधि संसार तार ॥
मैं दुःख सहे संसार ईश, तुमतैं छानी नांही जगीश ।
जे इह विधि मौखिक स्तुति उचार, तिन नशत शीघ्र संसार भार ॥
इह विधि जो जन पूजन कराय, ऋषि मंडल यंत्र सु चित्त लाय ।
जे ऋषि मण्डल पूजा करन्त, ते रोग शोक संकट हरन्त ॥
जे राजा रन कुल वृद्धि जान, जल दुर्ग सुगज केहरि वखान ।
जे विपत चोर अरु कहि मसान, भय दूर करै यह सकल जान ॥
जे राजभ्रष्ट ते राज पाय, पय भ्रष्ट थकी पद शुद्ध थाय।
धन अर्थी धन पावै महान, यामे संशय कछु नाहिं जान ॥
भार्या अर्थी भार्या लहन्त, सुत अरथी सुत पावे तुरन्त ।
जे रूपा सोना ताम्रपत्र, लिख तापर यन्त्र महा पवित्र ॥
ता पूजैं भागे सकल रोग, जे वात पित्त ज्वर नाशि शोग ।
तिन गृह तैं भूप पिशाच जान, ते भाग जांहि संशय न आन ॥
जे ऋषि मण्डल पूजा करन्त, ते सुख पावत कहिं लहै न अन्त ।
जब ऐसी मैं मन मांहि जान, तब भाव सहित पूजा सुठान ॥
वसुविधि से सुन्दर द्रव्य ल्याय, जिनराज चरण आगे चढ़ाय ।

फिर करत आरती शुद्ध भाव, जिनराज सभी लख हर्ष आव।
तुम देवन के हो देव देव, इक अरज चित्त में धारि लेव॥
जे दीन दयाल दया कराय, जो मैं दुखिया इह जग भ्रमाय।
जे इस भव वन में वास लीन, जे काल अनादि गमाय दीन॥
मैं भ्रमत चतुर्गति विपिन मांहि, दुख सहे सुख को लेश नांहि।
ये कर्म महारिपु जोर कीन, जे सत्तसाने ते दुःख दीन॥
ये काहू को नहिं डर धराय, इनतैं भयभीत भयो अघाय।
यह एक जन्म की बात जान, मैं कह न सकत हूँ देवमान॥
जब तुम अनन्त परजाय जान, दरशायो संसृति पथ विधान।
उपकारी तुम बिन और नांहि, दीखत नाहीं इस जगत मांहि॥
तुम सब लायक ज्ञायक जिनन्द, रत्नत्रय सम्पति द्यो अमन्द।
यह अरज करूं मैं श्री जिनेश, भव भव सेवा तुम पद हमेश॥
भव भव में श्रावक कुल महान, भव भव में प्रकटित तत्वज्ञान।
भव भव में वृत हो अनागार, तिस पालन तैं हों भवाब्धि पार॥
ये योग सदा मुझको लहान, हे दीनबन्धु करुणा निधान।
"दौलत ओसेरी" मित्र दोय, तुम शरण गही हरषित सुहोय॥

छन्द घत्ता

जो पूजे ध्यावे भक्ति बढ़ावे,
ऋषि मण्डल शुभ यन्त्र तनी।
या भव सुख पावे, सुजस लहावे,
पर भव स्वर्ग सुलक्ष धनी॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव विनाशन समर्थाय रोगशोक-सर्व-सङ्कट हराय सर्वशान्तिपुष्टिकराय, श्रीवृषभादि चौवीस तीर्थङ्कर अष्ट वर्ग अरहंतादि पंचपद दर्शन ज्ञान चारित्र सहित चतुर्णिकाय देव चव प्रकार अवधिधारक श्रमन अष्ट ऋद्धि संयुक्त वीस चार सूरितीन ह्रीं अर्हतबिम्ब दशदिग्पाल यन्त्र सम्बन्धि परमदेवाय जयमाला पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

आशीर्वाद

ऋषि मण्डल शुभ यन्त्र को, जो पूजे मन लाय।
ऋद्धि सिद्धी ता घर बसै, विघन सघन मिट जाय॥

विघन सघन मिट जाय, सदा सुख वो नर पावै।
ऋषि मण्डल शुभ यन्त्र तनी, जो पूज रचावै॥
भाव भक्ति युत होय, सदा जो प्राणी ध्यावै।
या भव में सुख भोग, स्वर्ग की सम्पति पावै॥
या पूजा परभाव मिटे, भव भ्रमण निरन्तर।
यातै निश्चय मान करो, नित भाव भक्तिधर॥

इत्याशीर्वादः। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

॥ इति श्री ऋषि मण्डल पूजा सम्पूर्णम्॥

नवग्रह निवारक समुच्चय पूजा

अर्कचन्द्र कुज सौम गुरु शुक्र शनिश्चर राहु।
केतु गृहा रिष्ट नाशने श्रीजिनपूजरचाहु॥

ॐ ह्रीं सर्व ग्रह विघ्न अरिष्टनिवारक श्री चतुर्विंशति जिन अत्रावतर अवतर संवौषट् आह्वाननं, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं, अत्र मम संन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अथाष्टक

क्षीर सिंधु समान उज्वल नीर निरमल लीजिये।
चौबीस श्री जिन चरण आगे धार त्रय शुभ दीजिये॥
रवि सौम भूमिज सौम्य गुरु कवि शनितमो पूत केतवे।
पूजिये चौबीस जिन ग्रहारिष्ट नाशन हेतवे॥
ॐ ह्रीं सर्व ग्रहारिष्ट निवारक चतुर्विंशति जिनेभ्यो जलं।
श्री खंड कुंकुम हिम सुमिश्रित घिसौं मनकर चाव सो।

चौबीस श्री जिनराज अघहर चरण चरचों भावसों ॥

॥ रवि० ॥ चन्दनं

अक्षत अखंडित शालि सम्भव पुंज मुक्ता फल समं।
चौबीस श्री जिन चरण पूजत नास ह्वै नव ग्रह भ्रमं ॥

॥ रवि० ॥ अक्षतं

कुन्द कमल गुलाब केतिक मालती जाहि जुही।
काम बान विनाश कारण पूजि जिन माला गुही ॥

॥ रवि० ॥ पुष्पं

फेनी सुपारी पूवा पापर लेहु मोदक घेवरं।
शत छिद्र आदिक विविध व्यञ्जन क्षुधाहर बहुसुख करं ॥

॥ रवि० ॥ नैवेद्यं

मणिमय जगमग जोति तम हर प्रभू आगे लाइये।
अज्ञान नाशक निज प्रकाशक मोहि तिमिर नसाइये ॥

॥ रवि० ॥ दीपं

कृश्नागरु घन सार मिश्रित लौंग चन्दन लेइये।
ग्रहारिष्ट नाशन हेत भविजन धूप जिनपद खेइये ॥

॥ रवि० ॥ धूपं

बादाम पिस्ता सेव श्रीफल मोच निंबू सदा फलं।
चौबीस श्री जिन चरण पूजत मनोवांछित शुभ फलं ॥

॥ रवि० फलं

जल गंध सुमन अखण्ड तन्दुल चरु सु दीपक धूपकं।
फल दर्व शुद्ध दधीच मिश्रित अर्घ देय अनूपकं ॥

॥ रवि० ॥ अर्घं

प्रत्येक अर्घ

अडिल्ल—सलिल गंधले फूल सुगन्धित लीजिए।
तन्दुल ले चरु दीपक धूप खेवीजिये ॥

फल ले अर्घ बनाय प्रभू पद पूजिये।
रवि अरिष्ट को दोष तुरत तहं धूजिये॥

ॐ ह्रीं रवि अरिष्ट निवारक श्री पद्म प्रभु जिनेन्द्राय अर्घं ॥१॥

जल चन्दन बहु फूल सु तन्दुल लीजिये।
दुग्ध शर्करा राशि हित सु व्यंजन कीजिये॥
दीप धूप फल अर्घ बनाय धरीजिये।
शीस जिनन्द को नवाय अरिष्ट हरीजिये॥

ॐ ह्रीं चन्द्रारिष्ट निवारक चन्द्र प्रभु जिनेन्द्राय अर्घं ॥२॥

सुरभित जल श्री खंड कुसुम तन्दुल भले।
व्यञ्जन दीपक धूप सदा फल सो रले॥
वासु पूज्य जिनराय अर्घ शुभ दीजिये।
मंगल ग्रह को रिष्ट नाश कर लीजिये॥

ॐ ह्रीं भौमारिष्ट निवारक वासु पूज्य जिनाय नमः अर्घं ॥३॥

शुभ सलिल चंदन सुमन अक्षत क्षुधाहरचरु लीजिये।
मणिदीप धूप सुफल सहित वसु दरब अर्घ जू दीजिये॥
विमलनाथ अनन्तनाथ सु धर्मनाथ जु शांतये।
कुंथ अर जु नमि जिन महावीर आठ जिनं यजे॥

ॐ ह्रीं सोम ग्रहारिष्ट निवारक अष्ट जिनाय अर्घं ॥४॥

जल चन्दन फूलं तंदुल मूलं चरु दीपक ले धूप फलं।
वसु विधि से अर्चे वसु विधि चर्चे कीजै अविचल मुक्ति थरं॥
ऋषभ अजित संभव अभिनंदन सुमति सुपारस नाथ वरं।
शीतलनाथ श्रेयांस जिनेश्वर पूजत सुर गुरु दोष हरं॥

ॐ ह्रीं सुर गुरु दोष निवारक वसु जिनवराय अर्घं ॥ ५ ॥

जल चन्दन ले पुष्प और अक्षत घने।
चरु दीपक बहु धूप सु फल अति सोहने॥
गीत नृत्य गुण गाय अर्घ पूरन करैं।

पुष्पदंत जिन पूज शुक्र दूषण हरै ॥

ॐ ह्रीं शुक्रारिष्ट निवारक पुष्पदंत जिनाय अर्घं ॥६॥

प्राणी नीरादिक वसु दर्ब ले
मन बच काय लगाय ॥
अष्ट कर्म को नाशह्वै अष्ट महा गुण पाय हो।
प्राणी मुनिसुव्रत जिन पूजिये ॥
ए जी रवि सुत सहज दुख जाय।
प्राणी मुनिसुव्रत जिन पूजिये ॥

ॐ ह्रीं शनि अरिष्ट नाशक मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घं ॥७॥

जल गंध पुष्प अखण्ड अक्षत चरु मनोहर लीजिये।
दीप धूप फलौघ सुन्दर अर्घ जिन पद दीजिये ॥
जब राहु गोचर राशि में दुख देइ दुष्ट सुभावसों।
तब नेमि जिनके भाव सेती चरण पूजे चावसों ॥

ॐ ह्रीं राहु अरिष्ट नाशक नेमिनाथ जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं ॥ ८ ॥

सुमन सुलाय तंदुल अघ हारी।
चरु दीप धूप फल लाय अर्घ करों भारी ॥
मैं पूजों मल्लि जिनेश पारस सुखकारी।
ग्रह केतु अरिष्ट निवार मन सुख हितकारी ॥

ॐ ह्रीं केतु अरिष्ट निवारक मल्लि पारस जिनेभ्यो अर्घं ॥ ८ ॥

रवि शशि मङ्गल सौम्य गुरु भृगु शनि राहु सुकेतु।
इनको रिष्ट निवार करे अर्चे जिन सुख हेतु ॥

ॐ ह्रीं सर्व ग्रहारिष्ट निवारक चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घं ॥०१॥

अथ जयमाला

दोहा—श्री जिनवर पूजा किये, गृह अरिष्ट मिट जाय।
पंच ज्योतिषी देव सब, मिल पूजैं प्रभु पाय ॥

पद्धड़ी छन्द

जय जय दिन आदिं महन्त देव, जय अजित जिनेश्वर करहु सेव।
जय जय संभव संभव निवार, जय जय अभिनन्दन जगत सार॥२
जय सुमति सुमति दायक विशेष, जय पद्म प्रभू लखि पद्म रेख।
जय जय सुपास हर करम पास, जय चन्द्रप्रभू सुख के निवास॥३
जय पुष्पदंत कर कर्म अन्त, जय शीतल जिन शीतल करन्त।
जय श्रेय करन श्रेयांस देव, जय वासुपूज्य पूजत सुमेव॥४
जय विमल विमल कर जगत जीव, जय जय अनंत सुखलहि सदीव
जय धर्म धुरन्धर धर्मनाथ, जय शांति जिनेश्वर मुक्ति नाथ॥५
जय कुंथनाथ शिव सुख निधान, जय अर जिनेश्वर सुकृत खान
जय मल्लिनाथ पद पद्म भास, जय मुनिसुव्रत कर व्रत प्रकाश॥६
जय जय नमि देव दयाल सन्त, जय नेम नाथ जस गुण अनन्त।
जय पारस प्रभु सङ्कट निवार, जय वर्द्धमान आनन्द कार॥७॥
नव ग्रह अरिष्ट जब होय जाय, तब पूजो श्री जिनदेव पाय।
मन वच तन कर सुख सिंधु होय, गृह शांति रीति इह कहिये लोय॥८

(घत्ता)

चौबीसों जिनदेव प्रभू ग्रह सम्बन्ध बिचार।
पुनि पूजों प्रत्येक तुम ज्यों सुख पावो सार॥
ॐ ह्रीं नवग्रह निवारक चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घं।

श्री नवग्रह निवारक पूजा समाप्त

पद्मावती पूजा

॥ छप्पय ॥

जग जीवन को शरण, हरण भ्रम तिमिर दिवाकर।
गुण अनन्त भगवन्त कंथ, शिवरमणि सुखाकर॥
शिशनवदन लजिसदन, कोटिशशिसदन विराजैं।
उरगलच्छन पगधरण, कमठ मदखंडन साजैं॥

अनन्त चतुष्टय लक्षिकर, भूषित पारस देव।
त्रिविधिनमौं शिरनाय के, करूँ पद्मावति सेव ॥१॥

दोहा—आह्वानन बहुविधिकरौं, इस थलतिष्ठो आय।
सत्य मात पद्मावती, दर्शन दीजो धाय ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं पार्श्वनाथ भक्त धरणेन्द्र भार्या श्री पद्मावती महा देव्यै अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं। अत्रतिष्ठतिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्रमम सन्निहितो भवभव वषट् सन्निधीकरणं ॥

गङ्गा हृदनीरं सुरभिससीरं आकतक्षीरं ले आयो।
रतनन की झारी भरिकरिधारी आनन्द कारी चितचायो ॥

पद्मावतिमाता जगविख्याता, दे मोहि साता मोद भरी।
मैं तुम गुणगाऊँ हर्ष बढ़ाऊँ, बलबलि जाऊँ धन्यघरी ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं श्री पार्श्वनाथ भक्ता धरणेन्द्र भार्यायै श्रीपद्मावत्यै महादेव्यै जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

गोशीरघिसायो केशरलायो, गँधबनायो स्वच्छमई।
आतापविनाशे चितहुल्लासे सुरभि प्रकाशे शीतमई ॥
पद्मा० ॥ चँदन ॥

मुक्ताउनहारं अक्षतसारं, खण्ड निवारं गन्धभरे।
शशिज्योतिसमानं मिष्टमहानं शक्तिप्रमानं पुञ्जधरे ॥
पद्मा० ॥ अक्षतं ॥

चम्पारु चमेली केतकिसेली, गंधजुफैली चहुँ ओरी।
चितभ्रमरलुभायो मनहरषायो तुमढिग आयो सुन मोरी ॥
पद्म० ॥ पुष्पं ॥

घेवरघृतसाजे खुरमाखाजे, लाडू ताजे थार भरे।
नैनन सुखदाई तुरत बनाई कीरत गायी अग्र धरे ॥
पद्मा० ॥ नैवेद्यं ॥

दीपकशशिजोतं तमक्षयहोतं ज्ञानउद्योतं छायरहो।

कुमतिविनाशी सुमतप्रकाशी, समताभाषी सरनलह्यो ॥
पद्मा० ॥ दीपं ॥

कृष्णागरुधूपं सुरभि अनूपं, मनवचरूपं खेवतहौं।
दशदिश अलि छाये वाद्य बजाये, तुम चरणाग्रेसेवतुहौं ॥
पद्मा० धूपं ॥

बादाम सुपारी श्रीफलभारी आनन्दकारी भरिथारी।
तुमचरन चढ़ाऊँ चित्त उमगाऊँ वांछित पाऊँ बलिहारी ॥
पद्मा० फलं ॥

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु चितदीपधूपफल लायधरे।
शुभ अर्घ बनायो पूजनधायो तूर बजायो नृत्य करे ॥
पद्मा० ॥ अर्घं ॥

ॐ ह्रीं श्रीं ऐं श्री पार्श्वनाथ भक्ता धरणेन्द्रभार्यायै श्री पद्मावत्यै महादेव्यै अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ जयमाला

श्री पद्मावति मायगुण, अनेक तन शोभते।
अब वर्णन जयमाल के, सुनौं सुजन मनलायके ॥ १ ॥

पद्धरी छन्द

जय तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ, प्रणमूं तिरकाल नवाय माथ।
तिनमुख ते वानी खिरी सार, सब जीवन का आनन्दकार ॥
छद्मस्थ अवस्था को जु वर्ण, सुनियो भवि चित्त लगाय कर्ण।
इक दिन हय चढ़ि पार्श्वनाथ, अरु सखा अनेकों लिये साथ ॥
गंगा तट आये मोद ठान, तहाँ तापस कुतप करै अयान।
इक काष्ठथूल में नागदोय, तापसको कुछ नहिंज्ञान सोय ॥
वह काष्ठ अग्नि में दियो लगाय उरगनिको संकट परो आय।
यह भेद जान श्रीपार्श्वदेव तापस के ढिंग आ ये स्वयमेव ॥
तासों बोले नहिं ज्ञान तोय हिंसामय तप करिकुगति होय।

चीरौ जुकाष्ठ तत्काल सोय, काढेसुनागिनी नाग दोय ।।
तिनके जुकंठ गत रहे प्रान, पारस प्रभु करुणाधर महान
तिनके बचनामृत हैं महान निर्मल भावों से सुने कान ।।
तत्काल पुण्यसमुदाय होय उत्तम गति बन्धकियो सुदोय ।
संन्यास कियो मन को लगाय, धरणेन्द्र पद्मावति लहाय ।।
सोही पद्मावति मात सार, नित प्रति पूजौ मैं बार बार ।
बहुतें जीवन उपकार कीन, मेरी वारी मैं बहुत दीन ।।
जल आदिक वसु विधि द्रव्यलाय गुणगान गाय बाजे बजाय ।
घननन घननन घण्टा अरन्त, तननन २ नूपुर तुरन्त ।।
ताथेइथेइ २ घुन्घुरु करंत, झुकि झुकि झुकि झुकि फिर पग धरंत ।
बाजत सितार मिरदंग साज, बीना मुरली मधुरी अवाज ।।
करि नृत्यगान बहु गुण बखान कहलौं महिमा वरनें अयांन ।
"सेवक" पर सदा सहाय कीन, विनती मोरी सुनियो प्रवीन ।।

घत्ता

पद्मावति माता तुमगुण गाता आनन्द दाता कष्ट हरौ ।
सनि माता मोरी शरण जु तोरी लखि मम ओरी धीर धरों ।।

पूर्णार्घ

दोहा—हेमाता मम उर विषैं, पूरण तिष्ठो आय ।
रहै सदैव दयालुता, कहता सेवक गाय ।।

इत्याशीर्वादः ।

श्रीक्षेत्रपाल पूजा

क्षेत्रपालाय जज्ञेस्मिन, अत्र क्षेत्राधिरक्षणे ।
वलिं ददामि यस्याग्रे, वेद्यां विघ्नविनाशिने ।।१।।
ओं क्लीं आं क्रों ह्रीं अत्र क्षेत्रपालाय कुमुदांजन चामर पुष्पदंत जय विजय अपराजितमणिभद्र पंच क्षेत्रपालाय अत्रावतरावत संवौषद् आह्वाननं, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट सन्निधिकरणं ।

सद्येनाति सुगंधेन, स्वच्छेन, बहुलेन च ।
स्नापनं क्षेत्रपालस्य, तैलेन प्रकरोम्यहं ॥१
ओं आं श्रीं क्रीं क्रों श्री क्षेत्र पालाय कुमुदांजनचामर पुष्पदंत जय विजय अपराजित मणिभद्र पंच क्षेत्र पालाय तैलम् ॥

सिंदूरैरारुणाकारै पीतवर्णो सुसंभवै ।
चर्चनं क्षेत्रपालस्य, सिदूरैः प्रकरोम्यहं ॥२ सिंदूरं
सद्यपूतैः महास्निग्धैः समांगल्यै सपिंडकैः ।
क्षेत्रपालमुखे दद्यात् गुडं विघ्नविनाशिनैः ॥३ गुडं
तिलपिंडस्तु पिंडेन माषस्य वकुलादिभिः ।
ददामि क्षेत्रपालस्य विश्वविघ्नविनाशिने । ४ तिलं
भो क्षेत्रपाल जिनश्यति पंकभाला दंष्ट्रा कराल जिनशासन, वैरि काला, तैलाहि जन्मगुड चंदन पुष्प धूपैः ।
भोग्यं प्रतिक्ष जगदीश्वर जन्न काले ॥ अर्घं ५

अथाष्टक

क्षीर,हीर गौर नीरपुर वारि धारया । मन्द बूंद चन्दनादि सौरभेन सारया । भूत प्रेत राक्षसादि दुष्ट कष्ट नाशनं ।
शान्ति सिद्धि ऋद्धि वृद्धि क्षेत्रपाल चर्चनं ॥ १ जलं
अर्क तर्क वर्जनैरनर्घ चन्द्रनन्दनैः । कुंकुमादि मिश्रितै रणाङ्घ्रिः षट् पदाश्रितैः । भूत प्रेत० शान्ति० ॥ चन्दनं
औषधीश सिंधुफेन हार भासमुज्वलैः अक्षतै सुलक्षणैः जोति खंड वर्जितैः ॥ भूत० ॥ शान्ति ॥ अक्षतं
पारिजात वारि जात कुन्द हेम केतकी, मालती सुचंपकादि सार पुष्प मालया ॥ भूत० शान्ति ॥ पुष्पं
व्यंजनेन पायसादिभिः समं लसद्रसैः मोदकोदनादि स्वर्ण भाजन सुसंस्थिलैः ॥ भूत० ॥ शान्ति ॥ नैवेद्यं
रत्न धेनु सर्पिषादि दीपकै शिखोज्वलैः, वर्टि धार तोय कोप

कंपरूप वर्जितैः ॥ भूत० ॥ शान्ति० ॥ दीपं

सिल्पता सिता गुरु प्रधूप केल मिश्रितैः, वाद्यमान वर्धमान

मानती मनोहरैः ॥ भूत० ॥ शान्ति० ॥ धूपं

श्रीफल, चककरी सुदाडिमादिभिःफलैः । स्वादभि सौरभादिष्ट

जंजरादि मोदनैः भूत० ॥ शान्ति० ॥ फलं

जीवनासिताऽगुरु द्रवाद्तैः प्रसूनकैः । चारू चरु प्रदीपकैः

भूपकैः फलोत्करैः ॥ भूत० ॥ शान्ति० ॥ अर्घं

लक्ष्मं धान्यकरं जगत्सुखकरं सुदीर्घकायावरं ।

रात्रौ जागरवाहनं सुखकरं वरवारपाणीधर ॥

निर्विघ्नं भयनाशनं भयहारं भूतादिरक्षाकरं ।

बन्दे श्रीजिनसेवकं हरिहरं श्री क्षेत्रपालं परं ॥

जयमाला

सुरासुर खेचर पूजित पाद, गुणाकर सुन्दर कृत शुभनाद ।
मनोहर पन्नगकण्ठ विशाल, सदा शुभ हो जय क्षेत्र सुपाल ॥ १ ॥

सुडाकिन शाकिन नासन वीर, सुजाकिन राकिन भ्रंशन धीर ।
अनोपम मस्तक शोभित बाल, सदा शुभ हो जय क्षेत्र सुपाल ॥ २ ॥

सुलंकिन हाकिन पन्नग त्रास, कु भूपति तसकर दुर्भिक्ष नाश ।
निशाकर शेखर मंडित भाल, सदा शुभ हो जय क्षेत्र सुपाल ॥ ३ ॥

समुदगल सादूबल सूकर वृन्द, सुराक्षस भोजस दुर्लभ कन्द ।
सदामल कौमल अङ्ग विशाल, सदा शुभ हो जय क्षेत्र सुपाल ॥ ४ ॥

सुचित्रक कुञ्जरशागर पार, गु दुर्जन सैचन शत्रु संहार ।
सुकम्पित किन्नर भूत रसाल, सदा शुभ हो जय क्षेत्र सुपाल ॥ ५ ॥

सुऋद्धि समृद्धि सुदायक सूर, सुपुत्र सुमित्र कलित्रकपूर ।
सुरंजित वासुर कांतिविशाल, सदा सुभ हो जय क्षेत्र सुपाल ॥ ६ ॥

सुकन्दुर कुण्डल हार सुवाद्य, सुसेघर सुस्वर किंकिनि नाद ।
भयंकर भीषण भासुर काल, सदा शुभ हो जय क्षेत्र सुपाल ॥ ७ ॥

सु कामिनि खेलत दिव्य शरीर, सु वाहन हासन मोदन धीर।
सुभाषत रोजत विश्व विचाल, सदा शुभ हो जय क्षेत्र सुपाल ॥ ८ ॥
सुथापित निरमल जैन सु वाक्य, न कंपित दुर्भिक्ष दुस्तर साक्य।
प्रकाशित जैन सुधर्म रसाल, सदा शुभ हो जय क्षेत्र सुपाल ॥ ९ ॥
सु भाषित श्रेय सु भव्य सुवंश, सहोदय जैन सरोवर हंस।
महाशुभ सागर केलि विशाल, सदाशुभ हो जय क्षेत्र सुपाल ॥ १० ॥

घत्ता

असम सुख सारं त्रीक्षा द्रषा करालं।
रचकर करज डीलं, दीर्घ जिह्वाकरालं ॥
सुघट विकृत चक्रं शांति दास प्रशस्यं।
भजतु नमतु जैनं, भैरवं क्षेत्रपालं ॥

ॐ आं श्रीं क्लीं क्रीं श्री क्षेत्रपालाय कुमुदांजन चामर पुष्पदंत, जय विजय अपराजित मणिभद्र पंच क्षेत्रपालाय महार्घं ॥

क्षेत्रपाल स्तुति

क्षेत्रपाल तुम रक्षा करते, भवि जीवन के दुःख सब हरते।
जो जिन भक्त करै मन लाई, तिन ऊपर जब संकट आई ॥ १ ॥
तिन की तुमने रक्षा कीनी, दुख को टारि शांति तुम कीनी।
दुर्जन मोचक शत्रु विदारक, रिद्धि सिद्धि तुम सब सुखदायक ॥ २ ॥
पुत्र कलित्र नारि को देवो, धन सम्पति सुख सब ही देवो।
भूत प्रेतादिक सब भय मानै, दुर्भिक्ष आदिक दुख सब हानै ॥ ३ ॥
जो तुम को धर ध्यान मनावै, उसकी सब वांछा हो जावै।
तुमरे नाम लैत से राई, दुख सब छिन में जाय पलाई ॥ ४ ॥
क्षेत्रपाल पूजूं जिन सेवक, नर अरु नारि बाल तुम "सेवक"।
इत्यादिक गुण कहां तक गाऊं, मनवांछित वर तुमसे पाऊं ॥ ५ ॥

॥ इति ॥

श्री सम्मेदशिखरपूजाविधान ।

दोहा—सिद्धक्षेत्र तीरथ परम, है उत्कृष्ट सु थान ॥
शिखर सम्मेद सदा नमौ, होय पापकी हान ॥ १ ॥
अगिनत मुनि जहँ तें गए, लोक शिखिरके तीर ।
तिनके पद पंकज नमौं, नासै भवकी पीर ॥ २ ॥

अडिल्ल छन्द–है वह उज्जल क्षेत्र सु अति निर्मल सही ।
परम पुनीत सुठौर महा गुनकी मही ॥
सकल सिद्धि दातार महा रमनीक है ।
वंदौ निजसुख हेत अचल पद देत है ॥ ३ ॥

सोरठा—शिखिर सम्मेद महान, जगमैं तीर्थ प्रधान है॥
महिमा अद्भुत जान, अल्पमती मैं किम कहो ॥ ४ ॥

पद्धरी छन्द

सरस उन्नत क्षेत्र प्रधान है । अति सु उज्जल तीर्थ महान है ॥
करहि भक्तिसु जे गुनगायन कै । वरहि शिव सुर नर सुख पाय कै ॥

अडिल्ल छन्द—सुर हरि नरपति आदि सु जिन बंदन करैं ॥
भव सागर तै तिरे नहीं भवदधि परैं ॥
सुफल होय जो जन्म सु जे दर्शन करै ॥
जन्म जन्म के पाप सकल छिन में टरैं ॥ ६ ॥

पद्धरी छन्द

श्री तीर्थंकर जिनवरसु बीस । अरु मुनि असंख्य सब गुनन ईश ॥
पहुचे जहँ थे केवल सुधाम । जिन सबको अब मेरी प्रणाम ॥ ७ ॥

गीता छन्द—सम्मेदगढ़ है तीर्थ भारी सबन को उज्ज्वल करे ।
चिरकाल के जे कर्म लागे दरश तै छिन में टरे ॥
है परम पावन पुन्य दायक अतुल महिमा जानिये ।
है अनूप सरूप गिरिवर तासु पूजा ठानिये ॥ ८ ॥

दोहा—श्री सम्मेद शिखर महा, पूजो मन वच काय।
हरत चतुर गति दुःख को, मन वांछित फल दाय ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अत्रावतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

❀ अथाष्टक ❀

क्षीरोदधि सम नीर सु उज्ज्वल लीजिये।
कनक कलस में भरके धारा दीजिए॥
पूजौं शिखिर सम्मेद सु मन वच काय जू।
नरकादिक दुःख टरै अचल पद पाय जू।

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं॥

पयसौं घिस मलयागिरि चन्द ल्याइये।
केशर आनि कपूर सुगन्ध मिलाइये॥ पूजौं०

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं॥

धवल सु उज्ज्वल खासे धोयके।
हेम वरनके थार भरौं शुचि होयके॥ पूजौं०

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तायअक्षतं॥

फूल सुगन्ध सुल्याय हरष सौ आन चढ़ायो।
रोग शोग मिट जाय मदन सब दूर पलायौ॥ पूजौं०

ॐ ह्रीं सम्मेद शिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो कामवानविध्वंसनाय पुष्पं॥

षट्रस नैवेद्य कनक थारी भर ल्यायो।
क्षुधा निवारण हेतु सु पूजौ मन हरषायो॥ पूजौं०

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोगविनाश नाय नैवेद्यम्॥

लेकर मणिमय दीप सुज्योति उद्योत हो।

पूजत होत स्वज्ञान मोह तम नाश हो ॥ पूजौं०

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्योमोहन्धकारविनाशनाय दीपं ॥

दश विधि धूप अनूप अग्नि में खेवहूँ।

अष्ट कर्म को नाश होत सुख पावहूँ ॥ पूजौं०

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखिरसिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं ॥

केला लोंग सुपारी श्रीफल ल्याइये।

फल चढ़ाय मन वांछित फल सु पाइये ॥ पूजौं०

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखिरसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्ताय फलं ॥

जल गंधाक्षत फूल सु नेवज लीजिये।

दीप धूप फल लेकर अर्घ चढ़ाइये ॥ पूजौं०

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखिरसिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घं।

॥ पद्धरी छंद ॥

श्री बीस तीर्थंङ्कर हैं जिनेन्द्र। अरु हैं असंख्य बहुते मुनेन्द्र।

तिनकौं कर जोर करों प्रणाम। तिनको पूजों तज सकल काम ॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घं

ढाल जोगी रासा

श्री सम्मेद शिखर गिर उन्नत शोभा अधिक प्रमानों।

विंशति तिंह पर कूट मनोहर अद्भुत रचना जानों ॥

श्री तीर्थङ्कर बीस तहां से शिवपुर पहुँचे जाई।

तिनके पद पंकज युग पूजौं प्रत्येक अर्घ चढाई ॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम सिद्धवर कूट मनोहर आनन्द मङ्गल दाई।

अजित प्रभु जहँ ते शिव पहुँचे पूजो मन, वचकाई ॥

कोड़ि जु अस्सी एक अरब मुनी चौवन लाख सुगाई।

कर्म काट निर्वाण पधारे तिनको अर्घ चढाई ॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धवरकूटते श्री अजितनाथ

जिनेन्द्रादि एक अरब अस्सी कोड़ि चौवन लाख मुनि सिद्धपद प्राप्ताय सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

धवल कूट सो नाम दूसरो है सबको सुखदाई।
सम्भव प्रभु सो मुक्ति पधारे पाप तिमिर मिट जाई ॥
धवल दत्त हैं आदि मुनीश्वर नव कोड़ा कोड़ी जानो।
लक्ष बहत्तर सहस बयालिस पंच शतक रिषि मानो ॥
कर्म नाश कर अमरपुरी गए बन्दौं शीस नवाई।
तिनके पदयुग जजौं भाव सौं हरष हरष चित लाई ॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर धवल कूटतें सम्भवनाथ जिनेन्द्र मुनि नव कोडा कोडी बहत्तर लाख ब्यालीस हजार पांच से मुनि सिद्धपद प्राप्ताय सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं ॥ ३ ॥

चौपाई

आनन्द कूट महा सुख दाय। प्रभु अभिनन्दन शिवपुर जाय।
कोडा कोडी बहत्तर जान। सत्तर कोडि लाख छत्तीस मान ॥
सहस बयालिस शतकजु सात। कहें जिनागम में इस भांत।
ये ऋषि कर्म काट शिव गये। तिनके पद युग पूजत भये ॥

ॐ ह्रीं श्री आनन्द कूटतें अभिनन्दननाथ जिनेन्द्रादि मुनि बहत्तर कोड़ा कोड़ी अरु सत्तर कोडि छत्तीस लाख ब्यालीस हजार सातसै मुनि सिद्धपद प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४

अडिल्ल छन्द

अविचल चौथी कूट महा सुखधाम जी
जहँ ते सुमति जिनेश गए निर्वाण जी ॥
कोडा कोडी एक मुनीश्वर जानिये।
कोडि चौरासी लाख बहत्तर मानिये ॥
सहस इक्यासी और सातसै गाइये।
कर्म काट शिव गये तिन्हें सिर नाइये ॥

सो थानक मैं पूजौं मन वच काय जू।
पाप दूर हो जाय अचल पद पाय जू ॥

ॐ ह्रीं श्री अविचल कूटतैं श्री सुमति जिनेन्द्रादि मुनि एक कोड़ा कोड़ि चौरासी कोड़ि बहत्तर लाख इक्यासी हजार सात सै मुनि सिद्धपद प्राप्ताय सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं ॥ ५ ॥

अडिल्ल छन्द

मोहन कूट महान परम सुन्दर कहौ।
पद्मप्रभु जिनराथ जहाँ शिवपद लहौ ॥
कोड़ि निन्यानवे लाख सतासी जानिये।
सहस तेतालिस और मुनीश्वर मानिये ॥
कहें जवाहरदास सु दोय कर जोर कै।
अविनाशी पद देउ कर्म ने खोय कै ॥

ॐ ह्रीं श्री मोहन कूटतैं श्री पद्मप्रभु मुनि निन्यानवे कोड़ि सतासी लाख तेतालीस हजार सातसै सत्तावन मुनि निर्वाण पद प्राप्ताय सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा—कूटप्रभास महान्, सुन्दर जनमन मोहिनो।
श्री सुपार्श्व भगवान, मुक्ति गये भव नाश कर ॥
कोड़ा कोड़ि उनचास कोड़ि चोरासी जानिये।
लाख बहत्तर जान, सात सहस अरु सातसै ॥
और कहे बयालीस, जहँ ते मुनि मुक्ति गये।
तिनको नमूं नित शीस दास जवाहर जोर कर ॥

ॐ ह्रीं प्रभास कूटतें श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्रादि मुनि उनचास कोड़ा कोड़ि बहत्तर लाख सात हजार सातसै बयालिस मुनि सिद्धपद प्राप्ताय सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं ॥ ७ ॥

दोहा

पावन परम उतङ्ग है ललित कूट है नाम।
चन्द्र प्रभु मुक्ति गये, बन्दों आठों याम ॥

नवसै अरब जु जानिये, चौरासी रिषि मान।
कोड़ि बहत्तर इमि कहे, अस्सी लाख प्रमान ॥
सहस चौरासी पाँचसै, पचपन मुनिवर जान।
ललिट कूट से शिव गये, वन्दत करौं प्रणाम ॥

ॐ ह्रीं श्री ललित कूटतैं श्री चन्द्र प्रभु जिनेन्द्रादि मुनि नवसै चौरासी अरब बहत्तर क्रोड़ अस्सी लाख चौरासी हजार पांचसै पचपन मुनि सिद्धपद प्राप्ताय अर्घं ॥ ८ ॥

॥ पद्धरी छन्द ॥

श्री सु प्रभ कूट सुनाम जान। जहँ पुष्पदन्त को मुक्त थान।
मुनि कोड़ा कोड़ी कहे जु भाख। नव ऊपर नव घर कहे लाख ॥१॥
चार शतक कहे सहस सात। ऋषि अस्सी और कहे विख्यात।
मुनि मुक्ति गये वसु कर्म काट। वंदों कर जोर नवाय माथ ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्री सुप्रभ कूटतैं पुष्पदन्त जिनेन्द्रादि मुनि एक कोड़ा कोड़ी निन्यानवे लाख सात हजार चार से अस्सी मुनि सिद्धपद प्राप्ताय सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं ॥ ६ ॥

* सुन्दरी छन्द *

सुभग विद्युतकूट सु जानिये।
परम अद्भुत तापर मानिये ॥
गये शिवपुर शीतलनाथ जी।
नमहुं तिन पदकरिधरि माथजी ॥
मुनि जु कोड़ाकोड़ि अष्टहु मानिये।
मुनि जो कौड़ा ब्यालिस जानिये ॥
कहैं और जू लाख बत्तीस जू।
सहस बयालीस कहे यतीश जू ॥

और तहंसै नौसै पांच सुजानिये।
गये मुनि शिवपुरको और जू मानिये॥
करहि पूजा जे मन लाय कै।
धरहि जन्म न भवमें आयकैं॥

ॐ ह्रीं सुभग विद्युत कूटतैं श्री शीतल नाथ जिनेन्द्रादि मुनि अष्ट कोड़ा कोड़ि बयालिस लाख बत्तीस हजार नौ सौ पाँच मुनि सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं॥ १०॥

ढाल जोगी रासा

कूटजू संकुल परस मनोहर श्रीयाँस जिनराई।
कर्म नाश कर अमरपुरी गये, बन्दों शीश नवाई॥
कोड़ा कोड़ी जु है छियानवे छियानवे कोड़ प्रमानो।
लाख छियानवे साढ़े नवसै इकसठ मुनीश्वर जानो॥
ता ऊपर ब्यालिस कहे हैं श्री मुनि के गुन गावै।
त्रिविध योग कर जो कोई पूजै सहजानंद पद पावै॥

ॐ ह्रीं संकुल कूटतें श्रीयांसनाथ जिनेन्द्रादि मुनि छियानवे कोड़ा कोड़ि छियानवे लाख साढ़े नौ हजार बयालिस मुनि सिद्धपद प्राप्ताय सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं॥ ११॥

॥ कुसुमलता छन्द॥

श्री मुनि संकुल कूट परम सुन्दर सुखदाई।
विमल नाथ भगवान जहाँ पंचम गति पाई॥
सात शतक मुनि और बयालिस जानिये।
सत्तर कोड़ सात लाख हजार छैः मानिये॥

ॐ ह्रीं श्रीसंकुल कूटतैं श्री विमलनाथ जिनेन्द्रादि मुनि सत्तर कोड़ सात लाख छः हजार सातसै ब्यालिस मुनि सिद्धपद प्राप्ताय सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ १२॥

कूट स्वयंभू नाम परम सुन्दर कहो।
प्रभु अनंत जिननाथ जहाँ शिवपद लहो॥
मुनि जु कोड़ा कोड़ि, छिआनवे जानिये।
सत्तर कोड़ जु सत्तर लाख बखानिये॥
सत्तर सहस जु और सातसै गाइये।
मुक्ति गये मुनि तिन पद शीश नवाइये॥
कहे जवाहरदास सुनो मन लायकै।
गिरवर को नित पूजों मन हरषायकै॥

ॐ ह्रीं स्वयंभू कूटतैं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्रादि मुनि छिया-नवे कोड़ा कोड़ि सत्तर लाख सात हजार सातसै मुनि सिद्धपद प्राप्ताय सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं॥ १३॥

॥ चौपाई ॥

कूट सुदत्त महा शुभ जानो। श्री जिनधर्म नाथ को थानो।
मुनि जु कोड़ा कोड़ उनतीस। और कहे ऋषि कोड़ उन्नीस॥
लाख जु नव्वै नौ सहस सुजानो। सात शतक पचानव मानो।
मोक्ष गये वसु कर्मन चूर। दिवस रैन तुमही भरपूर॥

ॐ ह्रीं श्री सुदत्त कूटतैं श्रीधर्मनाथ जिनेन्द्रादि मुनि उनतीस कोड़ा कोड़ी उन्नीस कोड़ नव्वे लाख नौ हजार सातसै पचानवे मुनि सिद्धपद प्राप्ताय सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं॥ १४॥

है प्रभासी कूट सुन्दर अति पवित्र सो जानिये।
शान्तिनाथ जिनेन्द्र जहाँ ते परम धाम प्रवानिये।

ॐ ह्रीं प्रभास कूटतै श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्रादि नौ कोड़ा कोड़ी नौ हजार नौ सै निन्यानवै मुनि सिद्धपद प्राप्ताय सिद्धि क्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ १५॥

गीता छन्द

ज्ञानधर शुभ कूट सुन्दर परम मन को मोहनो।
जहं ते श्री प्रभू कुन्थ स्वामी गये शिवपुर को मनो॥

कोडा कोडी छियानवे मुनि कोडि छियानवे जानिये।
लाख बत्तीस सहस छानवे अरु सौ सात प्रमानिये॥

दोहा—और कहे ब्यालीस जो, सुमरो हिये मझार।
जिनवर पूजो भाव सो, कर भव दधि तें पार॥

ॐ ह्रीं ज्ञानधर कूटतें श्रीकुन्थनाथ स्वामी और छियानवे कोड़ा कोड़ी मुनि छियानवै कोड़ि बत्तीस लाख छियानवे हजार अरु सात सौ ब्यालीस मुनि सिद्धपद प्राप्ताय सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ १६॥

दोहा—कूट जू नाटक परम शुभ, शोभा अपरम्पार।
जहंते अर जिनेन्द्र जी, पहुँचे मुक्ति मझार॥
कोड़ि निन्यानवे जानि मुनि, लाख निन्यानवे और।
कहे सहस निन्यानवै, बन्दों कर जुग जोर॥
अष्ट कर्म का नाश कर, अविनाशी पद पाय।
ते गुरु मम हृदये बसो, भव दधि पार लगाय॥

ॐ ह्रीं नाटक कूटते श्री अरनाथ जिनेन्द्रादि मुनि निन्यानवे कोड़ि निन्यानवै लाख निन्यानवे हजार मुनि सिद्धपद प्राप्ताय सिद्ध क्षेत्रेभ्यो अर्घं॥ १७॥

अडिल्ल छन्द—कूट संबल परम पवित्र जू।
गये शिवपुर मल्लि जिनेश जू॥
मुनि जु छियानवे कोड़ि प्रमानिये।
पद जिनेश्वर हृदय मानिये॥

ॐ ह्रीं संबल कूटतैं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्रादि छियानवे कोड़ा कोड़ि मुनि सिद्धपद प्राप्ताय सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं॥ १८॥

॥ ढार परमादी की चाल में॥

मुनिसुव्रत जिनराज सदा आनन्द सुख दाई।
सुन्दर निर्जर कूट जहां तै शिवपुरि पाई॥

निन्यानवे कोड़ा कोड़ि कहे मुनि कोड़ि सत्तावन।
नौ लाख जोर मुनेन्द्र कहे नौसै निन्यावन ॥

सोरठा—कर्मनाश ऋषिराज, पंचम गति के सुख लहे।
तारन तरन जिहाज, मो दुख दूर करौ सकल ॥

॥ भुजंग प्रयात ॥

बली मोह की फौज प्रभु जी भगाई,
जग्यो ज्ञान पंचम महा सौख्यदाई।
समोशरण धरनेन्द्र ने तब बनायो,
तबे देव सुरपति सबे शीस नायो ॥
जय जय जिनेन्द्र सुशब्दं उचारी,
भये आज दर्शन सबै सौख्यकारी।
गये सर्व पातिक प्रभु ध्यानही तें,
जबे दर्श कीने प्रभू दूर हीतें ॥
सुनी नाथ श्रवणन जु तेरी बड़ाई,
गही शरण हमने तुम्हारी सु आई।
बली कर्म नाशे जबै मुक्ति पाई,
तुम्हें हाथ जोरें सदा शीश नाई ॥ १६ ॥

ॐ ह्रीं श्री निर्जर कूटतैं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्रादि मुनि निन्यानवे कोड़ा कोड़ी सत्तावन कोड़ि नौलाख नौ शत निन्यानवे मुनि सिद्धपद प्राप्ताय अर्घं ॥ १६ ॥

॥ ढार जोगी रासा ॥

एक मित्रधर कूट मनोहर सुन्दर अति छवि छाई।
श्री नमि जिनेश्वर मुक्ति जहाँ तें शिवपुर पहुँचे जाई ॥
नौसै कोड़ा कोड़ि मुनीश्वर एक अर्ब ऋषि जानो।
लाख सैंतालीस सात अर्ब नौसैं बियालिस मानो ॥

दोहा—वसु कर्मन को नाशकर, अविनाशी पद पाय।
पूजों चरन सरोज ज्यों, मन वांछित फल दाय॥

ॐ ह्रीं श्री मित्रधर कूटतें श्रीनमिनाथ जिनेन्द्रादि मुनि नौसै कोड़ा कोड़ि एक अरब सैंतालिस लाख सात हजार नौसै बियालिस मुनि सिद्धपदप्राप्ताय सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं॥ २०॥

दोहा—सुवर्णभद्र जु कूटतैं श्री प्रभु पारसनाथ।
जहँ तैं शिवपुर को गये, नमों जोड़ि जुग हाथ॥

त्रिभंगी छन्द

मुनिकोड़िबियासी लाखचोरासी शिवपुरवासी सुखदाई।
सहस पैंतालिस सातसौ ब्यालिस तजिके आलस गुणगाई॥
भवदधितें तारण पतितउधारण सबदुखहारण सुखकीजे।
यह अरज हमारी सुनि त्रिपुरारी शिवपद भारी मोहिदीजे॥

पद्धरी छन्द

यह दर्शनकूट अनन्त लह्यो। फल षोड़शकोटि उपवास कह्यो।
जग में यह तीर्थ कह्यो भारी। दर्शनतें पाप कटैं सारी॥

मोतीदाम छन्द

टरें गति बन्दत नर्क तिर्यञ्च। कबहुँ दुखको नहीं पावें रञ्च।
यही शिवको जगमें है द्वार। अरे नर बन्दों कहत 'जवाहर'॥

दोहा—पारशप्रभु के नाम तें, विघन दूर टरि जाय।
ऋद्धिसिद्धनिधि आनकैं, मिलि हैं निशिदिन आय॥ २१॥

ॐ ह्रीं सुवर्णभद्र कूटतें श्री पार्श्वनाथ स्वामी बयालीस कोड़ि चौरासी लाख पैंतालीस हजार सातसै बयालीस मुनि सिद्धपद प्राप्ताय सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं॥ २१॥

अडिल्ल छन्द

जे नर परमसुभावते पूजा करें,
हरि हलि चक्री होय राज्यपद खंड करें।

फेरि होय धरणेंद्र इद्रपददवी धरें,
नाना विधसुख भोगि वहुरि शिवतियवरें ॥
आशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

अथ समुच्च्य पूजा

यावि‍धि बीस जिनेन्द्र कूं, वीसों शिखर महान ।
और असंख्य मुनि सहज ही पहुँचे शिवपुर थान ॥
ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्र अत्रअवतर २ संवौषट् आह्वाननं ।
ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः स्थापनं ।
ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रअत्रममसन्निहितो भववषट्सन्निधिकरणं

❀ अथाष्टक ❀

गीतिका छन्द—पदमद्रह को नीर निरमल, हेमझारी में भरों ।
तृषारोग निवारने को, चरणतर धारा करों ॥
सम्मेद गढ़तें मुनि असंख्ये, करमहर शिवपुर गये ।
सो थान परम पवित्र पूजौं, तासु फल पुनि संचये ॥
ॐ ह्रीं असंख्यात मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यो श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।
चन्दन कपूर मिलाय केशर, नीर सों घसि लाइये ॥
जिनराज पाप विनाश हमरे, भवाताप मिटाइये ॥ सम्मे०
ॐ ह्रीं असंख्यात मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यो श्रीसम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।
चन्द्र के सम ल्याय तन्दुल, कनक थारन में भरों ।
अक्षय सु पदके कारणे, जिनराज पद पूजा करौं ॥ सम्मे०
ॐ ह्रीं असंख्यात मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यो श्रीसम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षतम ॥ ३ ॥

कुन्द कमलादिक चमेली, गन्ध कर मधुकर फरें।
मदन बाण विनाशवे को, प्रभु चरण आगे धरें॥ सम्मे०

ॐ ह्रीं असंख्यात मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यो श्रीसम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो पुष्पं ॥ ४ ॥

नेवज मनोहर थाल में भर, हरषकर ले आवने।
करहु पूजा भावसों नर, थमा रोग मिटावनें॥ सम्मे०

ॐ ह्रीं असंख्यात मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यो श्रीसम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

दीप ज्योति प्रकाश करके, प्रभू के गुण गावनें।
मोह तिमिर विनाश करके, ज्ञानं भानु प्रकाशनें॥ सम्मे०

ॐ ह्रीं असंख्यात मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यो श्रीसम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो दीपं ॥ ६ ॥

वर धूप सुन्दर ले दशांगी, ज्वलनमाहिं सु खेइये।
वसु कर्मनाशन के सुकारण, पूज प्रभु को कीजिये॥ सम्मे०

ॐ ह्रीं असंख्यात मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यो श्रीसम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो धूपं ॥ ७ ॥

उत्कृष्ट फल जगमांहि जेते, ढूंढ़ करके लाइये।
जो नेत्र रसना लगें सुन्दर, फल अनूप चढ़ाइये॥ सम्मे०

ॐ ह्रीं असंख्यात मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यो श्रीसम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो फलं ॥ ८ ॥

वसुद्रव्ययुत शुभ अर्घ लेकर, मन प्रफुल्लित कीजिये।
तुमदास यह वरदान मांगे, मोक्ष लक्ष्मी दीजिये॥ सम्मे०

ॐ ह्रीं असंख्यात मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यो श्रीसम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं ॥ ९ ॥

नित करें नर नारि पूजा, भक्ति भाव सु लायके।
तिनको सुजस क्या कहें, 'जवाहर' हर्ष मनमें धारके॥ सम्मे०

ते होय सुरेश नरेश खगपति, सनभ्र पूजाफल यही।
सम्मेदगिरि की करहु पूजा, पाय हो शिवपुर मही ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं असंख्यात मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यो श्रीसम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो महा अर्घं ॥ १० ॥

॥ अथ जयमाला ॥

कवित्त—परम शिखरसम्मेद सबहिको है सुख करता।
बन्दे जे नरनारि तिन्हों के अघ सब हरता ॥
नरक पशू गति टरें सुक्ख जग के बहु पावें।
नरपति सुरपति होंय फेरि शिवपुर को पावें ॥ १ ॥

दोहा—जे तीरथ बंदे नहीं, सुनें धर्म्म नही सार।
ते भव बनमें भ्रमहिंगे, कबहुँ न पावें पार ॥ २ ॥
नरभव उत्तम पायकें, श्रावककुल अवतार।
पूजा जिनवर की करें, ते उतरें भवपार ॥ ३ ॥
सबविधिजोग जु पायके, शिखर न बंदे सार।
रतन पदारथ पाय ते, देत समुद्र में डार ॥ ४ ॥

महार्घम्।

❀ ढार कार्तिक की ❀

प्राणी हो आदीश्वर नाथ जी, अष्टापद शिव थान हो।
पूजत सुर नर हरि सकल, सो पावे शिवपद जान हो ॥
प्राणी पूजो अर्घ चढ़ाय के, इह नाशे भव भव भीत हो।
प्राणी पूजो मन बचकाय के ॥

ॐ ह्रीं ऋषभनाथ जिनेन्द्रादि दश हजार मुनि सिद्धपद प्राप्ताय श्री कैलाश गिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

नं० १५ वासुपूज्य

सोरठा—वासुपूज्य जिनराज, चम्पापुरा ते शिवगये।
मन वच जोग लगाय, पूजों पदजुग अर्घ लें ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं वासपूज्य जिनेन्द्रादि एक हजार मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यो सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

नेमिनाथ ऊर्जयंतकूट ।

दोहा—नेमीश्वर तजि राजमति, लीनी दीक्षा जाय ।
सिद्ध भये गिरनार तें पूजो अर्घ बनाय ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्रादि संबुप्रद्युम्न अनिरुद्ध इत्यादि बहत्तर कोड़ि सात सौ मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यो श्री गिरनार सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

महावीर ।

सुन्दरी छन्द

वर्द्धमान जिनेश्वर पूजिये, सकल पातक दूर सु कीजिये ।
गये पांवापुर तें मुक्ति को, तिनहि पूजत अर्घसंयुक्त सों ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं महावीर जिनेन्द्रादि षड्विंशति मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यो पांवांपुरस्थपद्मसरोवरे सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

चौबीसगणधरप्रथम टोंक ।

दोहा—तीर्थंकर चौबीस के, गणनायक हैं जेह ।
तिनको पूजो अर्घ ले मन, बचधरि सनेह ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतिजिन गणधर चरणकमलेभ्यो अर्घं निर्वपामीति०

दोहा—सिद्धक्षेत्र जे और हैं, भरत क्षेत्र के मांहि ।
और जु अतिशय क्षेत्र हैं, कहे जिनागम मांहि ॥
तिनको नाम जु लेत ही, पाप दूर हो जाय ।
ते सब पूजों अर्घ ले भव भव कूं सुखदाय ॥

सोरठा—दीप अढ़ाई माहिं, सिद्ध क्षेत्र जे और हैं ।
पूजों अर्घ चढ़ाय, भव भवके अघ नाश है ॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र सम्बन्धी सिद्धक्षेत्रेभ्यो अतिशय क्षेत्रेभ्यो अर्घं ।

॥ अथ जयमाला ॥

॥ चौपाई ॥

मन मोहन तीरथ शुभ जानो। पावन परम सु क्षेत्र प्रमानो॥
उन्नत शिखिर अनूपम सोहै। देखत ताहि सुरासुर मोहै॥

दोहा—तीरथ परम सुहावनो, शिखिर सम्मेद विशाल।
कहत अल्पबुधि उक्ति सो, सुखदायक जयमाल॥

॥ चौपाई ॥

सिद्ध क्षेत्र तीरथ सुखदाई। बन्दत पाप दूर हो जाई॥
शिखर शीस पर कूट मनोज्ञ। कहे बीस अतिशोभा योग्य॥३॥
प्रथम सिद्ध शुभ कूट सुनाम। अजितनाथ की मुक्ति सुधाम॥
कूट तनो दर्शन फल कहो। कोड़ि बत्तीस उपवासफल लहो॥४॥
दूजो धवल कूट है नाम। सम्भव प्रभु जहँ ते निर्वाण॥
कूट दरश फल प्रोषध मानो। लाख वयालिस कहै बखानो॥५॥
आनन्द कूट महा सुखदाई। जहँ ते अभिनन्दन शिव जाई॥
कूट तनौ बन्दन इम जांनौ। लाख उपास तनौ फल मानौ॥६॥
अविचल कूट महा सुख वेश। मुक्ति गये जहँ सुमति जिनेश॥
कूट भाव धर पूजे कोई। एक क्रोड़ प्रोषध फल होई॥७॥
मोहन कूट मनोहर जान। पद्म प्रभू जहँ ते निर्वाण॥
कूट पुन्य फल लहै सुजान। कोड़ उपास कहें भगवान॥ ८॥
मन मोहन शुभ कूट प्रभास। मुक्ति गये जहँ नाथ सुपार्श्व॥
पूजै कूट महा फल सोई। कोड़ि बत्तीस उपवास फल होई॥ ९॥
चन्द्र प्रभु को मुक्ति सुधामा। परम विशाल ललित घट नामा॥
दर्शन कूट तनो इम जानो। प्रोषध सोला लाख बखानो॥ १०॥
सुप्रभ कूट महा सुखदाई। प्रोषध जहँ तै पुष्पदन्त शिव जाई॥
सो विद्युतवर कूट महान। मोक्ष गये शीतल धर ध्यान॥११॥
पूजैं त्रिविध योग कर कोई। किोड़ि उपवास तनौ फल होई॥

पूजैं कूट महा फल होय। कोड़ि उपवास कहो जिन सोय ॥ १२ ॥
संकुल कूट महा शुभ जान । श्री श्रेयांस गये शिव थान ॥
कूट तनौ अब दर्शन सुनौ । कोड़ि उपवास जिनेश्वर भनौ ॥ १३ ॥
संकुल कूट परम सुखदाई। विमल जिनेश जहाँ शिव जाई ॥
मन बच दर्श करे जो कोई। कोड़ि उपवास तनो फल होई ॥१४॥
कूट स्वयं प्रभु सुभग सुठाम। गये अनन्त अमरपुर धाम
यही कूट को दर्शन करै। कोड़ि उपवास तनो फल धरै ॥ १५ ॥
है सुदत्तवर कूट महान । जहं तैं धर्मनाथ निर्वाण ॥
परम विशाल कूट है सोई। कोड़ि उपवास दर्श फल होई ॥ १६ ॥
परम विशाल कट शुभ कहो। शांति प्रभु जहं तें शिव लहो ॥
कूट तनो दर्शन है सोई। एक क्रोड़ि प्रोषध फल होई ॥ १७ ॥
परम ज्ञानधर है शुभ कूट । शिवपुर कुन्थ गये अघ छूट ॥
इनको पूजे जो कर जोड़ि। फल उपवास कहो इक कोड़ि ॥ १८ ॥
नाटक कूट महा शुभ जान । जहं तें अरह मोक्ष भगवान ॥
दर्शन करैं कूट को जोई। छियानवै कोड़ि उपवासफल होई ॥ १९ ॥
संवल कूट मल्लि जिनराय । जह तें मोक्ष गये निज काय ॥
कूट दर्श फल कहो जिनेश। कोड़ि एक प्रोषध फल वेष ॥ २० ॥
निर्जर कूट महा सुखदाई । मुनिसुव्रत जहँ ते शिव जाई ॥
कूट तनो दर्शन है सोई। एक कोड़ि प्रोषध फल होई ॥ २१ ॥
कूट मित्रधर तें नमि मोक्ष । पूजत आय सुरासुर जक्ष ॥
कूट तनो फल है सुखदाई। कोड़ि उपवास कहे जिन राई ॥ २२ ॥
श्री प्रभु पार्श्वनाथ जिनराज । दुरगति तें धूरें महाराज ॥
सुवर्णभद्र कूट को नाम। जहंते मोक्ष गये जिन धाम ॥ २३ ॥
तीन लोक हित करतें अनूप । वन्दत ताहि सुरासुर भूप ॥
चिंतामणि सुर वृक्ष समान। ऋद्धि सिद्धि मङ्गल सुख दान ॥ २४ ॥
नव निधि चित्रा वेलि समान । जातें सुक्ख अनूपम जान ॥

पार्श्व और काम सुर धेन । नाना विध आनन्द को देन ॥ २५ ॥
व्याधिविकार जाहिं सब भाज । मन चिन्तै पूरे सब काज ॥
भवदधि रोग विनाशक होई । जो पद जग में और न कोई ॥ २६ ॥
निर्मल परम धाम उत्कृष्ट । वन्दत पाप भजे और दुष्ट ॥
जो नर ध्यावत पुण्य कमाय । जस गावत सब कर्म नशाय ॥ २७ ॥
कटें अनादि कर्म के पाप । भजे सकल छिन में सन्ताप ॥
सुरनर इन्द्र फणिन्द्र जु सबै । और खगेन्द्र मृगेन्द्र गु नमैं ॥ २८ ॥
नित देवांगना करे उचार । नाचत गावत विविध प्रकार ॥
बहुविधिभक्ति करें मन लाय । विविध प्रकार वादित्र वजाय ॥ २९ ॥
द्रुम द्रुम द्रुमता बाजें मृदङ्ग । घन घन घंटा बाजें मुँह चङ्ग ॥
झन झन झनियां करे उचार । सर २ सारङ्गी धुन उचार ॥ ३० ॥
मुरली बीन बजे घन मिष्ट । पटहा नूर सुरान्वित पुष्ट ॥
नित सुर गण श्रुति गावत सार । सुरगन नाचत वहुत प्रकार ॥३१॥
झननन झननन नूपुर तान । तननन तननन तौरत तान ॥
ता थेई थेई थेई थेई थेई चाल । सुर नाचत निज नावत सुभाल ॥
गावत नाचत नाना रङ्ग । लेत जहाँ शुभ आनन्द संग ॥
नित प्रति सुर जहँ वन्दे जाय । नानाविध मंगल को गाय ॥ ३३ ॥
आनन्द धुनि सुन मोर जु सोय । प्रापति वृष की अति ही होय ॥
तातें हमको दे सुख सोई । गिर वन्दन कर धर शुभ दोई ॥ ३४ ॥
मारुत मन्द सुगन्ध चलेय । गन्धोदक तहाँ नित वरषेय ॥
जिय की जाति विरोध न होई । गिरिवर वंदे कर धर दोई ॥३५॥
ज्ञान चरित तप साधन सोई । निज अनुभव को ध्यान सु होई ॥
शिव मन्दिर को धारैं सोई । गिरिवर वन्दे कर धर दोई ॥ ३६
जो भवि वन्दे एक जु वार । नरक निगोद पशू गति टार ॥
सुर शिवपदकूं पावे सोय । गिरवर वन्दे कर धर दोय ॥ ३७

ताकी महिमा अगम अपार। गणधर कबहुँ न पावैं पार ॥
तुम अद्भुत मैं शक्ति कर हीन। कही भक्ति बस केवल लीन ॥३८

घता—श्रीसिद्धखेतं अतिसुख देतं। त्वरित भवदधि पार करा ॥
अरु कर्म विनाशै सुक्ख पयासे केवल भासे सुक्ख करा ॥ ३६

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखर सिद्धपद प्राप्ताय सिद्धक्षेत्रेभ्यो महार्घं

दोहा—शिखरसम्मेद पूजैं सदा, मनवच तन नर नारि।
सुर शिवके जे फल लहैं, कहते दास जवाहरि ॥

॥ इति श्रीसम्मेदशिखर पूजा समाप्तम् ॥

बाहुबली स्वामी पूजा

दोहा

कर्म अरि गण जीति के, दर्शायो शिव पंथ।
प्रथम सिद्ध पद जिन लयो; भोगभोमि के अंत ॥
समर दृष्टि जल जीत लहि, मल्ल युद्ध जय पाय।
वीर अग्रणी बाहुवली, बन्दों मन वच काय।

श्री श्रीमत् गोमटेश्वर बाहुवली स्वामी अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ॥

अथाष्टक (चाल जोगी रासा)

जन्म जरा मरनादि तृषा कर, जगत जीव दुःख पावे।
तिहि दुख दूर करन जिन पद को, पूजन जल ले आवे ॥
परम पूज्य वीराधिवीर जिन, बाहुवली बल धारी।
जिनके चरण कमल को नित प्रति, धोक त्रिकाल हमारी ॥

ॐ ह्रीं कर्मारि विजयी वीराधिवीर श्री गोमटेश्वर बाहुवली परम योगीन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं ॥

यह संसार मरुस्थल अटवी, तृष्णा दाह भरी है।
तिहि दुख टारन चंदन लेके, जिन पद पूज करी है ॥
परम पूज्य० ॥ जिनके० ॥ चन्दनं ॥

स्वच्छ सालि शुचि नीरज रजसम, गंध अखंड प्रचारी।
अक्षय पद के पावन कारन, पूजे भवि जग तारी ॥
परम पूज्य० ॥ जिनके० ॥ अक्षतं ॥

हरिहर चक्रपति सुर दानव, मानव पशु वस पाके।
तिहि मकरध्वज नाशक जिनको, पूजों पुष्प चढ़ाके
परम पूज्य० ॥ जिनके० ॥ पुष्पं ॥

दुखद त्रिजग जीवन को अतिही, दोष क्षुधा अनिवारी।
तिहि दुख दूर करन को चरु वर, ले जिन पूज प्रचारी ॥
परम पूज्य० ॥ जिनके० ॥ नैवेद्यं ॥

मोह महातम में जग जीवन, शिव मग माहि लगावे।
तिहि निरवारन दीपक करले जिन पद पूजन आवे ॥
परम पूज्य० ॥ जिनके० ॥ दीपं ॥

उत्तम धूप सुगन्ध बनाकर, दश दिशि में महकावे।
दश विधि बन्ध निवारन कारन, जिनवर पूज रचावे ॥
परम पूज्य० ॥ जिनके० ॥ धूपं० ॥

सरस सुवरण सुगन्ध अनूपम, स्वच्छ महाशुचि लावे।
शिव पद कारण जिनवर पद की फलसों पूज रचावे ॥
परम पूज्य० ॥ जिनके० ॥ फलं ॥

वसु विधि के वस वसुधा वही, पर वस अति दुख पावे।
तिहि दुःख दूर करन को भविजन अर्घ जिनाग्र चढ़ावे ॥
परम पूज्य० ॥ जिनके० ॥ अर्घं ॥

जयमाला—दोहा

आठ कर्म हनि आठ गुण, प्रगट करे जिन रूप।
सो जयवन्तो भुजबली, प्रथम भये शिव भूप ॥

कुसुमलता छन्द

जय जय जय जगतारन शिरोमणि क्षत्रिय वंश असंश महान।
जय जय जय जग जन हितकारी, दीनों जिन उपदेश प्रमाण ॥
जय जय चक्रपति सुत जिनके, सत सुत ज्येष्ठ भरत पहिचान।
जय जय श्री ऋषभदेव जिनसों जयवंत सदा जग जान ॥
जिनके द्वितीय महादेवी सुचि नाम सुनन्दा गुण की खान।
रूप शील सम्पन्न मनोहर तिनके सुत भुजबली महान ॥
सवा पंच शत धनु उन्नत तनु हरित वरण सोभा असमान।
वैडूर्यमणि पर्वत मानो नील कुलाचल सम थिर जान ॥
वैजयंत परमाणु जगत में तिनकरि रचौ शरीर प्रमाण।
सत वीरत्व गुणाकर जाको निरखत हरि हरषे उर आन ॥
धीरज अतुल वज्र सम नीरज सम वीराग्रणि अति बलवान।
जिन छबि लखि मनु शशि छवि लाजै, कुसुमायुध लीनों सुखमान ॥
बालसमैं जिन बाल चन्द्रमा, शशि से अधिक धरे दुतिसार।
जो गुरुदेव पढ़ाई विद्या शस्त्र शास्त्र सब पढ़ी अपार ॥
ऋषभदेव ने पोदनपुर के नृप कीने भुजबली कुमार।
दई अयोध्या भरतेश्वर को आप बने प्रभुजी अनगार ॥
राजकाज षटखण्ड महीपति सब दललै चढ़ि आये आप।
वाहुबली भी सन्मुख आये मंत्रीन तीन युद्ध दिये थाप ॥
दृष्टि नीर अरु मल्ल युद्ध में दोनों नृप की जो बलधाम।
वृथा हानि रुक जाय सैन्य की यातैं लड़िये आपो आप ॥
भरत भुजवली भूपति भाई उतरे समर भूमि में जाय।
दृष्टि नीर रण थके चक्रपति मल्ल युद्ध तब करो अघाय ॥
पगतल चलत चलत अचला तब, कम्पत अचल शिखर ठहराय।
निवध नील अचला धर मानौं भये चलाचल क्रोध वसाय ॥

भुज विक्रम बल बाहुबली ने लये चक्रपति अधर उठाय।
चक्र चलायो चक्रपति तब सो भी विफल भयो तिहिठाय॥
अति प्रचंड भुज दण्ड सुंड सम नृप सार्दूल बाहुबली राय।
सिंहासन मँगवाय जा समै अग्रज को दीनों पधराय॥
राजरमा रामासुर धनु में जोवन दमक दामिनी जान।
भोग भुजंग जंग सम जग को त्याग कीनों तिहि थान॥
अष्टापद पर वीर नृप वीर व्रती धर कीनों ध्यान।
अचल अङ्ग निरभङ्ग सङ्ग तज सम्वत सरलों एक स्थान॥
विष धर वम्बी करी चरणतल ऊपर वेली चढ़ा अनिवार।
युग जङ्घा कटि बाहु वेढ़िकर पहुँची वक्षस्थल पर सार॥
सिर के केश बढ़े जिस मांही नभचर पक्षी वसे अपार।
धन्य धन्य इस अचल ध्यान को, महिमा सुर गावै उरधार॥
कर्मनाशि शिव जाय बसे प्रभु, ऋषभेश्वर से पहिले जान।
अष्ट गुणांकित सिद्ध शिरोमणि जगदीश्वर पद लयो प्रमान॥
वीर व्रती वीराग्र गन्य प्रभु बाहुबली जग धन्य महान।
वीरव्रती के काज जिनेश्वर नमें सदा जिन बिम्ब प्रमाण॥

दोहा

श्रवण बेलगुल विंध्यगिरि, जिनवर बिम्ब प्रधान।
छप्पन फुट उतंग तन, खड्गासन अमलान॥ १॥
अतिशय वन्त अनन्त बल, धारक बिम्ब अनूप।
अर्घ चढ़ाय नमो सदा जय जय जिनवर भूप॥ २॥

ॐ ह्रीं कर्मारि विजयी वीराधिवीर श्री गोमटेश्वर बाहुबली परमयोगीन्द्राय नमः महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इत्याशीर्वादः

जम्बू स्वामी पूजा

(चौरासी मथुर)

चौबीसौ जिन पाय, पंच परम गुरु बन्दि के।
पूज रचों सुखदाय, विघ्न हरो मङ्गल करो॥

अडिल्ल छन्द—विद्युत मालिदेव चये जम्बू भये,
कामदेव अवतार अन्त केवल गये।
कलयुग कारे पाख वरांगनि शिववरी।
आवो आवो स्वामी भक्ति मम उर भरी॥ १॥

ॐ ह्रीं श्री जम्बू स्वामी अष्टकर्म विनाशाय, अत्रावतरावतर संवौषट्।

सिंह पीठ मम देइ कमल उर सोहनो।
तिष्ठो तिष्ठो तीर्थ भविक मन मोहनो॥
अब मोहि चिन्ता कौन सिद्ध कारज भये।
आतम उपभव पाप सकल सुर थिर भये॥ २॥

ॐ ह्रीं श्रीजम्बूस्वामी अष्टकर्मविनाशाय अत्रतिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

स्वामि आपनो स्वरूप मोहि इक कीजिये।
मैं हूँ पूजक भक्त आज चित दीजिये॥
या संसार असार असाता के विषै।
तो सूँ तन मन होय सकल आनन्द जगै॥ ३॥

ॐ ह्रीं श्री जम्बू स्वामी, अष्ट कर्म नाशाय अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अथ अष्टक)

गंगादिक जल लेय रत्न भारी भरूं।
जै जै कर उच्चारि धारिदे प्रति करूँ॥
सिद्ध चक्र कू वंद्य जम्बू पूजा करूं।

ज्ञानावरणि कर्म तनी थिति को हनूं ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्री जम्बू स्वामी जन्म, जरा मृत्यु विनाशाय जलं ।

बावन चन्दन ल्याय और मलयागिरी ।
केशर द्रव्य मिलाय घिसाय इकमिक करी ॥
सिद्ध चक्र कू वंद्य जम्बू पूजा करूं ।
दर्शनावरणि कर्म तनि थिति को हनूं ॥ चन्दनं ॥

तन्दुल मुक्ता जिम इन्दु करण जिसे ।
दीर्घ अखण्डन कोर पूज करिये तिसे ॥
ज्योति सरूपी धाय जम्बू पूजा रचूं ।
अन्तराय क्षय कीन अक्षय पद मैं चहूँ ॥ अक्षतं ॥

पारिजात चन्दन अरु मेरु सुहावनै ।
संतानक सुन्दर के, पुहप, मँगावनै ॥
अलख रूप अवधार जम्बू पद को जजूं ।
मोहन कर्म निवार कामते ना लजूं ॥ पुष्पं ॥

सुन्दर घृत मिष्टान्न विविध मेवा जितै ।
मैदा सहित मिलाय पिंड करिये तितै ॥
समहसार मम बन्दि भरे आगे धरूं ।
जम्बू स्वामि मनाय वेदनी कूं हरूं ॥ नैवेद्यं ॥

चन्द्रकांति और सूर्यकांति शुभ मणि भली ।
और सनेही बात जोय आनन्द रली ॥
अष्टम गुण जुत ध्यान जम्बू पूजूँ सदा ।
चार आयु तिथि भेदि मरूं नहीं मैं कदा ॥ दीपं ॥

धूप दशांग मंगाय अग्नि संग खेय ही ।
धूपायन जु कनक मय सार जु लेव ही ॥
नीच गोत्र अर ऊँच गोत्र नहिं पाय हो ।
आतम रूप ध्याय निरंजन ध्याय हो ॥ धूपं ॥

श्रीफल लौंग बदाम छुहारे लाय के ।
एला पुंगी आदि मनोज्ञ मनाय कें ॥

अष्ट गुणायुत ध्याय सकल भव कू हरूँ।
नाम करम भड़ जाय प्रभु पायन परूँ॥ फलं॥

ज्ञायक सम्यक शुद्ध ज्ञान केवल मय सोहे।
केवल दर्शन प्राप्ति अगुरु लघु सुख में जो है॥
इक में नेक समाहि हर्ष भारी गुन तेरो।
अव्याबाध निवारि अर्घ दे चरनन चेरो॥ अर्घं॥

जयमाला दोहा

वर्द्धमान जिन बन्द के, गुरु गौतम के पाय।
और सुधर्म गणी प्रणम्य, जम्बूस्वामि मनाय॥

(पद्धरी छन्द)

जय विद्युत मालीदेव सार, पंचम सु दिव्य महिमा अपार।
जय राजग्रहि पुर सेठ ध्यान, उपजे मनमथ अंतम सुजान॥
लघु वय में उर वैराग्य धार, जगसम अथिर जान्यो कुमार।
तब सब परिवार उछाह ठान, ब्याही वनिता जिन वय समान॥
रतनन के दीपक दिये महल, वनिता बैठिं जुतकाम शैल।
तिन सो ज्ञानादिक वच उचार, रामादिक हित किनी सुनार॥
तब विद्युतप्रभ तहाँ चोर आय, रसभीनी अष्ट कथा सुनाय।
ताको वैराग्य कथा प्रकाश, निक तत्व दिखाओ चिद विलास॥
जग अथिर रूप थिर नाहिकोय, नहिं सरण जीव कूँ आन होय।
संसार भ्रमण विधियाँ चं ठानि, इक जीव भ्रमति नहिं साथ आन॥
षट द्रव्य भिन्न सत्ता लखाय, जिय अशुचि देह मांही रमाय।
आश्रय पर भो जंय प्रीति होय, संवर चित् निज अनभूत होय॥
तपकर वसुविधि सत्ता नसाय, निज स्वयंसिद्ध त्रिलोक गाय।
निज धर्म लखै कोई प्रभाव, प्रलभनहिं आतमज्ञान भानु॥
द्वादश भावन इहि भाति भाव वहुजन युतभैटं वीर पाय।
दीक्षा धर केवल ज्ञानथाय, रिद्धि सप्तम लई महिमा अपार॥

सन्मति गौतम धर्मो मुनीस, शिवपाय तबै केवल जगीश।
वानी जु खिरी अच्छरन रूप, तत्वन को भाषो हम सरूप॥
आयो पर २ का ज्ञान होय, चेतन बंधै चवभाँति सोय।
तब निज अनुमति प्रकाशपाय, सत्ता सुकर्म आठैं अघाय॥
चव बंध रहित तब सर्व जीव, सिद्धालय थिरता कै सदीव।
षट द्रव्य बखानों भेद रूप, चैतन्य और पुद्गल सरूप॥
चालन सचारि थिति सहाय, वतरावन द्रव्यन कू सुभाय।
पुनि सर्व द्रव्यता में समाय, अवकाश प्रीतप अलोक गाय॥
मुनि श्रावक को आचार भाष, आचार्य ग्रन्थ ग्रन्थन में प्रकाश।
पुनि आरज खण्ड विहार कीन, जम्बू वन में थिति जोग लीन॥
सब करमन को चय करि मुनीश, शिव वधू लही विसवास बीस।
मथुरा तै दक्षिण कोस आध, छत्री महिमा है है अगाध॥
भुज मण्डल में जेभव्य जीव, कार्तिकवदि रथ काढत सदीव।
केऊ पूजत केऊ नृत्य ठान, केऊ गावत विधि सहित तान॥
जिस द्योस होत उत्सव महान, पूरत भव्यन को पुन्य आन।
पद कमल प्राग तुम दास होय। निज भक्त विभव दे आज मोय॥
घत्ता—जल चन्दन लाये, अच्छत मिलाये,पोहोप सुहाये मन भाये।
नैवैद्यं दीपं दस विधि धूपं फलरू अनूपं शत गाये।
सुवरन के थालं भरिजु रसालं फिर त्रिकालं सिर नाये॥
गुण माल तिहारी मम उरधारी जग उधारी सुख पाये।
ॐ ह्रीं श्री जम्बू स्वामी सिद्ध परमेष्ठिने पूर्णार्घं।

दोहा—महिमा जम्बू स्वामि की, मोपे कही न जाय।
कै जाने केवल मुनि, कै उन माहि समाय॥

इत्याशीर्वादः।

सोलहकारण के सोलह अर्घ

दर्शन शुद्ध न होवत जो लग, तो लग जीव मिथ्याती कहावे।
काल अनन्त फिरो भवमें, महा दुःखन को कहुं पारन पावे।
दोष पचीस रहित गुण अम्बुधि, सम्यक्दर्श शुद्ध ठहरावै।
ज्ञान कहे नर सोई बड़ो, मिथ्या तज जिन मारग ध्यावै।

ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धिभावनायै नमो अर्घं।

देव तथा गुरुराय तथा, तप संयम शील व्रतादिक धारी।
पापके हारक काम के छारक, शल्य निवारक कर्म निवारी।
धर्म के धीर कषाय के भेदक, पंच प्रकार संसार के तारी।
ज्ञान कहे विनय सुखकारक भाव धरो मन राखो विचारी॥

ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नता भावनायै नमो अर्घं।

शील सदा सुख कारक है, अतिचार विवर्जित निर्मल कीजे।
दानव देव करें तसु सेव, विषानल भूत पिशाच पसीजे॥
शील बडो जगमें हथियार जु, शील को उपमा काहेकी दीजे।
ज्ञान कहे नहीं शील बराबर, तातें सदा दृढ शील धरीजे॥

ॐ ह्रीं शील भावनायै नमो अर्घं।

ज्ञान सदा जिनराज को भाषित, आलस छोड पढे जो पढावे।
द्वादश दोई अनेक हूं भेद, सुनाम मती श्रुति पंचम पावे॥
चार हूं भेद निरंतर भाषित, ज्ञान अभीक्ष्ण शुद्ध कहावे।
ज्ञान कहे श्रुत भेद अनेकजु, लोकालोक हि प्रकट दिखावे॥

ॐ ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै नमो अर्घं।

भ्रातन-तातन पुत्र कलत्रन, दुर्जन सज्जन ये सब खोटो।
मन्दिर सुन्दर काय सखा, सब को इह को हम अन्तर मोटो॥
भाउके भाव धरी मन भेदन, नाहिं संवेग पदारथ छोटो।
ज्ञान कहे शिवसाधन को जिमि, साह को काम करे जु बणोटो॥

ॐ ह्रीं संवेगभावनायै नमो अर्घं।

पात्र चतुर्विध देख अनूपम, दान चतुर्विध भाव से दीजै।
शक्ति समान अभ्यागत को अति आदर से प्रणिपत्य करीजै॥
देवत जे नर दान सुपात्रहि, तास अनेकहि कारण सीजे।
बोलत ज्ञान देहि शुभ दान जु, भोग सुभूमि महा सुख लीजै॥

ॐ ह्रीं शक्तितस्त्यागभावनायै नमो अर्घं।

कर्म कठोर गिरांवन को निज, शक्ति समान महातप कीजे।
बारह भेद तपे तप सुन्दर, पाप जलांजलि काहेन दीजे॥
भाव धरी तप घोर करी, नर जन्म सदा फल काहेन लीजे।
ज्ञान कहे तप जे नर भावत, ताके अनेकहि पातक छीजे॥

ॐ ह्रीं शक्तितस्तपोभावनायै नमो अर्घं।

साधु समाधि करो नर भावक, पुण्य बडो उपजे अघ छीजे।
साधु की संगति धर्म को कारण, भक्ति करे परमारथ भीजे।
साधु समाधि करे भव छूटत, कीर्तिछटा त्रैलोक में गाजे॥
ज्ञान कहे यह साधु बडो गिरि शृंग गुफा बिच जाई विराजे।

ॐ ह्रीं साधुसमाधिभावनायै नमो अर्घं।

कर्म के योग व्यथा उदई मुनि, पुंगव को तसु भेषज कीजे॥
पित्त कफानल सांस-भगन्दर, ताप को शूल महागद छीजे।

भोजन साथ बनाय के औषध, पथ्य कुपथ्य विचार के दीजे ॥
ज्ञान कहे नित ऐसी वैया,-वृत्य करे तसु देव पसीजे ॥

ॐ ह्रीं वैयावृत्यकरणभावनायै नमो अर्घं ।

देव सदा अरिहंत भजो जेई दोष, अठारह किये अति दूरा ।
पाप पखाल भये अति निर्मल, कर्म कठोर किये चकचूरा ॥
दिव्य अनन्त चतुष्टय शोभित, घोर मिथ्यान्ध निवारण शूरा ।
ज्ञान कहे जिनराज अराधो, निरंतर जे गुण मन्दिर पूरा ॥

ॐ ह्रीं अर्हंभक्तिभावनायै नमो अर्घं

देवत ही उपदेश अनेकसु, आप सदा परमारथ धारी ।
देश विदेश विहार करें दश, धर्म धरें भवपार उतारी ॥
ऐसे अचारज भाव धरी भज, सो शिव चाहत कर्म निवारी ।
ज्ञान कहे गुण भक्ति करो नर, देखत हो मन मांहि विचारी ॥

ॐ ह्री आचार्यभक्तिभावनायै नमो अर्घं ।

आगम छन्द पुराण पढावत, साहित्य तर्क वितर्क बखाने ।
काव्य कथा नव नाटक पूजन, ज्योतिष वैद्यक शास्त्र प्रमाने ॥
ऐसे बहुश्रुत साधु मुनीश्वर, जो मन में दोउ भावन आने ।
बोलत ज्ञान धरा मनसानजु; भाग्य विशेषतें जानहीं जाने ॥

ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्तिभावनायै नमो अर्घं ।

द्वादश अंग उपांग सदागम, ताकी निरंतर भक्ति करावे ।
वेद अनूपम चार कहे तस, अर्थ भले मन मांहि ठरावे ॥
पढ बहु भाव लिखो निज अक्षर, भक्ति करी बहु पूज रचावे ।
ज्ञान कहे जिन आगम भक्ति, करो सद बुद्धिबहुश्रुत पावे ॥

ॐ ह्रीं प्रवचन भक्ति भावनायै नमो अर्घ ।

भाव धरे समता सब जीव सों स्तोत्र पढे मुख से मनहारी ।
कायोत्सर्ग करे मन प्रीति सू, वन्दन देव तनो भव सारी ॥
ध्यान धरी मद दूर करी दोउ, वैर करे पडकम्मन भारी ।
ज्ञान कहे मुनि सों धनवन्तजु, दर्शन ज्ञान चरित्र उधारी ॥

ॐ ह्रीं आवश्यकपरिहाणि भावनायै नमो अर्घं ।

जिन पूजा रचो परमारथ सूं, जिन आलय नृत्य महोत्सव ठाणो ।
गावत गीत बजावत ढोल, मृदंग के नाद सुधांग बखानो ॥
संघ प्रतिष्ठा रचो जल जातरा, सद् गुरू को सामों करि आणो ।
ज्ञान कहे जिन मार्ग प्रभावना, भाग्य विशेष सुजानहिं जाणो ॥

ॐ ह्रीं मार्ग प्रभावना भावनायै अर्घं ।

गौरव भाव धरी मनसे मुनि पुङ्गव की नित वत्सल कीजे ।
शील के धारक भव्य के तारक, तामुनिरंतर स्नेह धरीजे ॥
धेनु यथा निज बालक के अपने जिय छोडिन और पतीजे ।
ज्ञान कहे भविलोक सुनो जिन वत्सल भावधरे अघ छीजे ॥

ॐ ह्रीं प्रवचनवात्सल्य भावनायै नमो अर्घं ।

सोनागिरि पूजा ।

अडिल्ल छंद

जम्बू द्वीप मझार भरत क्षेत्र सुकहों ।
आर्यखण्ड सुजान भद्रदेशे लहो ॥

सुवर्णगिरि अभिराम सुपर्वत है तहां।
पंचकोड़ि अरु अर्द्ध गये मुनि शिव जहां ॥ १ ॥
सोनागिरिके शीसपर, बहुत जिनालय जान।
चन्द्रप्रभू जिन आदिदे पूजों सब भगवान ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं सोनागिर क्षेत्रामुक्त जिन समूह अत्रवत्रवतर संवौषट-आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ॥ अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अथाष्टकं।

पद्मद्रहको नीर ल्याय गंगासे भरके।
कनक कटोरि माँहिं हेम थारन में धरके ॥
सोनागिरिके शीस भूमि निर्वाण सुहाई।
पंचकोड़ि अरु अर्द्ध मुक्ति पहुँचे मुनिराई ॥
चन्द्र प्रभु जिन आदि सकल जिनवर पद पूजो।
स्वर्ग मुक्ति फल पाय जाय अविचल पद हूजो ॥
सोनागिरि के शीसपर, जेते सब जिनराज।
तिनपद धारा तीन दे, तृषा हरणके काज ॥
ॐ ह्रीं श्रीसोनागिरि निर्वाणक्षेत्रेभ्यो ॥ जलं ॥ १ ॥

केसर आदि कपूर मिले मलयागिरि चन्दन।
परमल अधिकी तास और सब दाह निकन्दन ॥ सोनागिरि० ॥
सोनागिरिके शीसपर जेते सब जिनराज।
ते सुगन्धकर पूजिये, दाह निकन्दन काज। सुगन्धं ॥ २ ॥

तंदुल धवल सुगन्ध ल्याय जल धोय पखारो।
अक्षय पदके हेतु पुंज द्वादश तहां धारो। सोनागिरि० ॥
सोनागिरिके शीसपर, जेते सब जिनराज ॥
तिन पद पूजा कीजिये, अक्षय पदके काज ॥ अक्षतं ॥ ३ ॥

बेला और गुलाब मालती कमल मंगाये।
पारिजात के पुष्प ल्याय जिन चरण चढाये॥ सोनागिरि०॥

सोनागिरिके शीसपर, जेते सब जिनराज॥
ते सब पूजों पुष्प ले मदन विनाशन काज॥ पुष्पं॥ ४॥

विजन जो जगमांहि खांडघृत माहि पकाये।
मीठे तुरत बनाय हेम थारी भर ल्याये॥ सोनागिरि०॥

सोनागिरिके शीसपर, जेते सब जिनराज।
ते पजों नैवेद्य ले, क्षुधा हरणके काज॥ नैवेद्यं॥ ५॥

मणिमय दीप प्रजाल धरौं पंकति भरथारी।
जिन मन्दिर तम हार करहु दर्शन नरनारी॥ सोनागिरि०॥

सोनागिरिके शीसपर, जेते सब जिनराज।
करों दीपले आरती, ज्ञान प्रकाशन काज॥ दीपं॥ ६॥

दशविधि धूप अनूप लेय भाजनमें डालो।
जाकी धूम सुगन्ध रहे भर सर्व दिसालों॥ सोनागिरि०॥

सोनागिरिके शीसपर, जेते सब जिनराज।
धूप कुम्भ आगे धरों, धर्म दहनके काज॥ धूपं॥ ७॥

उत्तम फल जग माहिं बहुत मीठे अरु पाके।
अमित अनार अचार आदि अमृत रस छाके॥ सोनागिरि०॥

सोनागिरिके शीसपर, जेते सब जिनराज।
उत्तम फल तिन ले मिलो, कर्म विनाशन काज॥ फलं॥ ८॥

जल आदिक वसु द्रव्य अर्घ करके धर नाचो।
बाजे बहुत बजाय पाठ पढके मुख सांचो॥ सोनागिरि०॥

सोनागिरिके शीसपर जेते सब जिनराज।
ते हम पूजें अर्घ ले, मुक्ति रमणके काज॥ अर्घं॥ ९॥

श्री जिनवरकी भक्ति सो जे नर करत हैं।
फल वांछा कुछ नांहि प्रेम उर धरत हैं॥

ज्यों जगमाहिं किसानसु खेतीको करें।
नाज काज जिय जान सुभूस आपही भरें॥
ऐसे पूजादान भक्ति वश कीजिये।
सुख सम्पति गति मुक्ति सहज कर लीजिये ॥पूर्णार्घं॥

जयमाला।

सोनागिरिके शीसपर। जिन मंदिर अभिराम।
तिन गुणकी जयमालिका। वर्णत आशाराम॥ १॥

गिरि नीचे जिन मंदिर सुचार। ते यतिन रचे शोभा अपार॥
तिनके अति दीर्घ चौक जान। तिनमें यात्रा मेलें सु आन ॥२॥
गुमठी छज्जे शोभित अनूप। ध्वज पंकति सोहैं विविधरूप॥
वसु प्रातिहार्य तहां धरे आन। सब मंगलद्रव्यनि की सुखान॥ ३॥
दरवाजोंपर कलशा निहार। करजोर सुजय जय ध्वनि उचार॥
इक मंदिरमें यति राजमान। आचार्य विजयकीर्ति सुजान॥ ४॥
तिन शिष्य भागीरथ विबुध नाम। जिनराज भक्ति नहीं और काम।
अब पर्वतको चढ़ चलो जान। दरवाजो तहां इक शोभमान ॥५॥
तिस ऊपर जिन प्रतिमा निहार। तिन वंदि पूज आगे सिधार॥
तहां दुःखित भुखितको देत दान। याचक जन तहां हैं अप्रमाण॥
आगे जिन मंदिर दुहू ओर। जिन गान होत वाजित्र शोर॥
माली बहु ठाढे चौक पौर। ले हार कलगी तहां देत दौर ॥ ७॥
जिन यात्री तिनके हाथ मांहि। बखशीस रीझ तहां देत जांहि॥
दरवाजो तहां दूजो विशाल। तहां क्षेत्रपाल दोऊ ओर लाल ॥८॥
दरवाजे भीतर चौक माहिं। जिन भवन रचे प्राचीन आहिं॥
तिनकी महिमा वरणी न जाय। दो कुंड सुजलकर अति सुहाय॥
जिन मंदिरकी वेदी विशाल। दरवाजो तीजो बहुसुढाल॥
ता दरवाजे पर द्वारपाल। लेलकुट खडे अरु हाथ माल ॥ १०॥
जे दुर्जनको नहीं जान देय। ते निंदकको ना दरश देय॥

चल चंद्रप्रभूके चौकमाहिं । दालाने तहां चौ तर्फ आयें ॥ ११ ॥
तहां मध्य सभामंडप निहार । तिसकी रचना नाना प्रकार ॥
तहां चंद्र प्रभुके दरश पाय । फल जात लहो नरजन्म आय ॥१२॥
प्रतिमा विशाल तहां हाथ सात । कायोत्सर्ग मुद्रा सुहात ॥
वंदे पूजें तहां देय दान । जननृत्य भजनकर मधुर गान ॥ १३ ॥
ताथेई थेई थेई बाजत सितार । मृदंग वीन मुहचंग सार ॥
तिनकी ध्वनि सुन भवि होत प्रेम जयकार करत नाचत सु एम ।
ते स्तुति कर फिर नायशीस । भवि चले मनोकर कर्म खीस ।
यह सोनागिरि रचना अपार । वरणन करको कवि लहै पार ॥१५॥
अति तनक बुद्धि आशासुपाय । वश भक्ति कही इतनी सुगाय ॥
मैं मन्दबुद्धि किम लहों पार । बुद्धिवान चूक लीजो सुधार ॥१६॥

सोनागिरि जय मालिका, लघुमति कही वनाय ।
पढ़े सुने जो प्रीतिसे, सो नर शिवपुर जाय ॥ १७ ॥

इत्याशीर्वादः ।

इतिश्री सोनागिरि पूजा सम्पर्ण ।

पावापुर सिद्धक्षेत्र पूजा ।

दोहा–जिहि पावापुर छिति अर्घाति, हत सन्मत जग दीश ।
भये सिद्ध शुभ पानसो, जजों नाय निज शीश ॥

ॐ ह्रीं श्री पावापुर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो अत्र अवतर अवतर । अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ॥ अत्रममसन्निहितो भवभववषट्सन्निधीकरणं । परि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ अष्टक ॥ गीतका छंद ॥

शुचि सलिल शीतौ कलिल रीतौ श्रमन चीतो लै जिसो ।
भर कनक झारी त्रिगद हारी दै त्रिधारी जित तृषो ॥
वर पद्मवन भर पद्मसरवर वहिर पावा ग्रामही ।

शिव धाम सन्मति स्वामि पायो जजों सो सुख 'दासही ॥
ॐ ह्रीं श्री पावापुर क्षेत्राय वीरनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

भव भ्रमत भ्रमत अशर्म्म तपकी तपन कर तप ताईयो।
तसु वलय कंदन मलय चंदन उदय संग घिस ल्याइयो ॥
॥ वरपद्म० ॥ सुगंधं ॥

तंदुल नवीने खंड लीने लै महीने ऊजरे।
मणि कुन्दइन्दु तुषारद्युति जित कण रकावीमें धरे ॥ वरपद्म० अक्षतं

मकरंद लोभन सुमन शोभन सुरभ चोभन लेयजी।
मद समर हरवर अमर तरके प्रान दृग हरवेयजी ॥ वरपद्म० ॥पुष्पं ॥

नैवेद्य नवन छुध मिटावन सेव्य भावन युत किया।
रस मिष्ट पूरत इष्ट सूरतेलेय कर प्रभु हित हिया ॥ वरपद्म०॥ नै० ॥

तम अज्ञ नाशक स्वपर भासक ज्ञेय परकाशक सही।
हिम पात्रमें धर मौल्य विनवर द्योत धर मणि दीपही ॥वरपद्म०॥दीपं॥

आमोदकारी वस्तु सारी विध दुचारी जारनी।
तसु तूप कर कर धूप लै दश दिश सुरभ विस्तारनी ॥ वरपद्म० ॥ धूपं ॥

फल भक्र पक्र सुचक्र सोहन सुक्र जनमन मोहने।
वर रस पूरत लख तुरत मधु रत लेय कर अत सोहने ॥ वरपद्म० ॥ फलं ॥

जल गंध आदि मिलाय वसु विध थार स्वर्ण भरायकें।
मन प्रमुद भाव उपाय करलै आय अर्घ बनायकें ॥ वरपद्म० अर्घं ॥

॥ अथ जयमाला ॥

दोहा—चरम तीर्थ करतार श्री, वर्द्धमान जगपाल।
कल मल दल विध विकल हुय, गाऊंतिन जयमाल ॥१॥

॥ पद्धडि छंद ॥

जय जय सुवीर जिन मुक्ति थान। पावापुर वन सर शोभवान ॥
जे शित असाढ़ छट स्वर्ग धाम। तज पुष्पोत्तर सु विमान ठान ॥१॥

कुंडलपुर सिद्धारथ नृपेश। आये त्रिशला जननी उरेश ॥
शित चैत्र त्रियोदश युत त्रिज्ञान। जन्में तम अज्ञ निवार भान ॥२॥
पूर्वान्ह धवल चतुदशि दिनेश। किये नहुन कनकगिरि शिर सुरेश।
वय वर्ष तीस पद कुमर काल। सुख द्रव्य भोग भुगते विशाल ॥३॥
मारगशिर अलि दशमी पवित्र। चढ़ चंदप्रभू शिवका विचित्र ॥
चलपुरसे सिद्धन शीश नाय। धारो संयम वर शर्म्मदाय ॥ ४ ॥
गत वर्ष दुदश कर तप विधान। दिन शिन वैशाख दशै महान।
रिजुकुला सरिता तट स्व सोध। उपजायो जिनवर चरम बोध ॥५॥
तबही हरि आज्ञा शिर चढ़ाय। रचियो समवश्रित धनद राय।
चतु सघ प्रभृत गौतम गनेश। युत तीस वरप विहरे जिनेश ॥६॥
भवि जीवन देशन विविध देत। आये वर पावानग्र खेत ॥
कार्तिक अलि अन्तम दिवस ईश। व्युतसर्गासन विध अघतिपीश॥७॥
ह्वे अकल अमल इक समय मांहि। पंचम गति निवेश श्री जिनाह ॥
तब सुरपति जिन रवि अस्त जान। आये जु तुरत स्व स्व विमान ॥८॥
कर वपु अरचा थुति विविध भांत। लै विविध द्रव्य परमल विख्यात॥
तब ही अगनींद्र नवाय शीश। संस्कार देह श्री त्रिजगदीश ॥ ९ ॥
कर भस्म नंदना स्व स्व महीय। निवसे प्रभु गुन चितवन स्वहीय।
पुन नर मुनि गनपति आय आय। वंदी सोरज सिर ल्याय २ ॥१०॥
तबहीसें सो दिन पूज्यमान। पूजत जिनगृह जन हर्ष मान।
मैं पुन २ तिस भुवि शीश धार। वंदों तिन गुणधर हृद मझार ॥११॥
जिनहीका अब भी तीर्थ एह। वर्तत दायक अति शर्म्म गेह ॥
अरु दुःषम अवसान ताहि। वर्तैगो भव थित हर सदाहि ॥१२॥

॥ कुसमलता छंद ॥

श्री सन्मत जिन अंघ्रि पद्म जी युग जजै भव्यजो मन वच काय।
ताके जन्म जन्म संतत अघ जावहिं इक छिन माहिं पलाय ॥

धनधान्यादि शर्म्म इन्द्रीजन लह सो शर्म्म अतेन्द्री पाय।
अजर अमर अविनाशि शिव थल वर्णी दौल रहै थित थाय।
॥ इत्याशीर्वादः ॥

चंपापुर सिद्धक्षेत्र पूजा।

दोहा—उत्सव किय पनवार जहं, सुरगन युत हरि आय।
जजों सुथल वसपूज्य सुत चम्पापुर हर्षाय ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री चंपापुर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वानं ॥१॥

अत्र तिष्ठतिष्ठ ठः ठः स्थापनं, अत्र मम सन्नि-हतौ भव भव वषट् सन्निधीकरणं। परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

अष्टक ॥ ढाल नन्दीश्वर पूजनकी ॥

सम अमिय विगत त्रस वारि, लै हिम कुंभ भरा।
लख दुखद त्रिगद हरतार, दै त्रय धार धरा ॥
श्री वासुपूज्य जिनराय, निर्वृत थान प्रिया।
चम्पापुर थल सुखदाय, पूजों हर्ष हिया ॥

ॐ ह्रीं श्री चम्पापुर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय जलं ॥

काशमीर नीर मथगार, अति पवित्र खरी।
शीतलचन्दन संगसार, लै भव तापहरी ॥ श्री वासुपूज्य० ॥सुगंधं॥२॥

मणिद्युत समखंड विहीन, तंदुल लैनीके, ।
सौरभ युत नववर वीन, शाल महानीके ॥श्री वासुपूज्य०॥ अक्षतं ॥३॥

अलि लुभन शुभन दृग घ्राण, सुमन सुरन द्रुमके।
लैवाहिम अजु नवान, सुमन दमन झूमके ॥ श्री वासुपूज्य० ॥
॥ पुष्पं ॥ ४ ॥

रस पुरत तुरत पकवान, पक्क यथोक्त घृतो।
क्षुध गदमद प्रदमन जान, लैविध युक्तकृती ॥श्री वासुपूज्य०॥नैवेद्यं ५॥

तमअज्ञ प्रनाशक सूर, शिव मग परकाशी ।
लै रत्नदीप द्यु तपूर, अनुपम, सुखराशी ॥ श्रीवासु० ॥ दीपं ॥ ६ ॥
वर परमल द्रव्य अनूप, शोध पवित्र करी ।
तसुचूरण कर कर धूप, लैविध कंजहरी ॥ श्रीवासु० ॥ ७ ॥
फल पक्क मधुररस वान, प्रासुक वहुविधके ।
लख सुखद रसन दृग घ्रान, लैप्रद पद सिधके ॥श्रीवासु ॥८॥फलं॥
जल फल वसु द्रव्य मिलाय, लैभर हिमथारी ।
वसु अंग धरा पर ल्याय, प्रमुद रव चितधारी ॥श्रीवासु०॥अर्घं॥

॥ अथ जयमाल ॥

दोहा—भये द्वादशम तीर्थपति, चंपापुर शुभ थान ।
तिन गुणकी जयमाल कछु, कहों श्रवण सुख दान ॥

॥ पद्धड़िछन्द ॥

जय जय श्री चंपापुर सो धाम । जहां राजत नृप वसुपज नाम ॥
जगपौन पल्यसे धर्महीन । भवभ्रमन दुःखमय लख प्रवीन ॥ १ ॥
उर करुणा धर सो तम विडार । उपजे किरणावलि धर अपार ॥
श्रीवासपूज्य तिन तने वाल । द्वादशम तीर्थ कर्ता विशाल ॥ २ ॥
भवभोग देहसे विरत होय । वय वाल माहिं ही नाथ सोय ॥
सिद्धन नम महा व्रत भार लीन । तप द्वादश विध उग्रोग्र कीन ॥
तहं मोह सप्तत्रय आयु येह । दशप्रकृति पूर्व ही क्षय करेह ॥
श्रेणीजु क्षपक आरूढ होय । गुण नवम भाग नव माहिं सोय ॥४॥
सोलह वसु इक इक षट इकेय । इक इक इक इम इन क्रम सहेय ॥
पुन दशम थान इक लोभटार । द्वादशम थान सोलह विडार ॥५॥
ह्वे अंतिम चतुष्टय युक्त स्वाम । पायो सब सुखद संयोग ठाम ॥
तह काल त्रिगोचर सर्व गेय । युगपत हि समय महि लखेय ॥६॥
कछु काल दुविध वृष अमिय वृष्टि । कर पोषें भव भवि धान्य सृष्टि ॥
इक मास आयु अवशेष जान । जिन योगनकी सुप्रवर्त हान ॥ ७ ॥

ताही थल तृतिशित ध्यान ध्याय । चतुदशम थान निवसे जिनाय ॥
तह दुचरम समय मझार ईश । प्रकृति जुवहत्तर तिनति पीश ॥८॥
तेरहको चरम समय मझार । करके श्री जगतेश्वर प्रहार ॥
अष्टमि अवनी इक समयम द्र । विवसे पाकर निज अचल रिद्ध ॥९॥
युत गुण वसु प्रमुख अमित गुणेश । ह्वे रहे सदाही इसहिं वेश ॥
तबहीसे भो थानक पवित्र । त्रैलोक्य पूज्य गायों विचित्र ॥
मैं तसु रज निज मस्तक लगाय । बन्दों पुन पुन भूवि शीशनाय ॥
ताही पद वांछा उर मझार । घर अन्य चाह बुद्धि विडार ११॥

दोहा–श्री चंपापुर जो पुरुष, पूजै मनवच काय ।
वर्णि "दौल" सो पायही, सुख सपति अधिकाय ॥

॥ इत्यादि आशीर्वाद ॥
इति श्री चंपापुर सिद्धक्षेत्र पूजा समाप्तम् ।

अकृत्रिमचैत्यालय पूजा ।

चौपाई ।

आठ किरोड़ रु छप्पन लाख । सहस सत्याणव चतुशत भाख ॥
जोड इक्यासी जिनवर थान । तीनलोक आह्वान करान ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसबन्ध्यष्टकोटिषट्पञ्चाशल्लक्षसप्तनवति सहस्र-चतुःशतैकाशीति अकृत्रिमजिनचैत्यालयानि अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बध्यष्टकोटिषट्पञ्चाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्र-चतुःशतैकाशीतिअकृत्रिमजिनचैत्यालयानि अत्र तिष्ठत तिष्ठत । ठःठः

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बध्यष्टकोटिषट्पञ्चाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रच-तुःशतैकाशीति अकृत्रिम जिन चैत्यालयानि अत्र मम सन्निहितानि भवत भवत वषट् ।

छंद त्रिभंगी ।

छिरोदधिनीरं, उज्जल सारं, छान सुचीरं, भरि भारी ।
अति मधुरलखावन, परम सुपावन, तृषा वुझावन, गुण भारी ॥
वसुकोटि सु छप्पन्न लाख सताणव, सहस चारसत इक्यासी ।
जिनगेह अकीर्तिम तिहुंजगभीतर, पूजत पद ले अविनासी ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्वन्ध्यष्टकोटिषट्पञ्चाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीतिअकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो जलं निर्वपामि० ॥१॥

मलयागर पावन, चंदन वावन, तापवुझावन, घसि लीनो ।
धरी कनककटोरी, द्वै कर जोरी, तुमपद ओरी, चित दीनो ॥वसु०॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्ध्यष्टकोटिषट्पञ्चाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीतिअकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो चंदनं निर्वपामि ॥ २ ॥

बहुभांति अनोखे, तंदुल चोखे, लखि निरदोखे, हम लीने ।
धरि कंचनथाली, तुमगुणमाली, पुंजविशाली कर दीने ॥ वसु० ॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्ध्यष्टकोटिषट्पञ्चाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीतिअकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो अक्षतान् निर्वपामि ॥३॥

शुभ पुष्प सुजाती, है बहु भांति, अलि लिपटाती, लेय वरं ।
धरि कनक-रकेबी करगह लेवी, तुमपद जुगकी, भेट धरं ॥
बसुकोटि सुछप्पन, लाख सताणव; सहस चारसत, इक्यासी ।
जिनगेह अकीर्तिम तिहुंजगभीतर, पूजत पद ले, अविनाशी ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्ध्यष्टकोटिषट्पञ्चाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीतिअकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो: पुष्पं निर्वपामि ॥४॥

खुरमा गिंदौड़ा; बरफी पेड़ा, घेवर मादक, भरि थारी ।
विधिपूर्वक कीने, घृतपयभीने, खंडमें लीने, सुखकारी ॥ वसु० ॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्ध्यष्टकोटिषट्पञ्चाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीतिअकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामि ॥ ५ ॥

मिथ्यात महातम, छाय रह्यो हम, निजभव परणति, नहिं सूजे ।
इहकारण पाकै, दीप सजाकैं, थ धराकैं, हमपूजैं ॥ वसु० ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्ध्यष्टकोटिषट्पञ्चाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्र-चतुःशतैकाशीतिअकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो दीपं निर्वपामि ॥ ६ ॥

दशगंध कुटाकें, धूप बनाके, निजकर लेकें, धरि ज्वाला ।
वसु धूम उड़ाई, दशदिश छाई, बहु महकाई, अति आला ॥वसु०॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्ध्यष्टकोटिषट्पञ्चाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्र-चतुःशतैकाशीति अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥ ७ ॥

बादाम छुहारे, श्रीफल धारे, पिस्ता प्यारे द्राखवरं ।
इनआदि अनोखे, लखिनिरदोखे, थालयजोखे, भेट धरं ॥ वसु० ॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्ध्यष्टकोटिषट्पञ्चाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्र-चतुःशतैकाशीति अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो: फलं निर्वपामि० ॥ ८ ॥

जल चंदन तंदुल, कुसुम रु नेवज, दीप धूप फल, थाल रचौं ॥
जयघोष कराऊं, बीन बजाऊं, अर्घ चढ़ाऊं, खूब नचौं ॥ वसु० ॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्ध्यष्टकोटिषट्पञ्चाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्र-चतुःशतैकाशीतिअकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामि० ॥९॥

अथ प्रत्येक अर्घ ।

चौपाई ।

अधोलोक जिन आगमसाख । सात कोड़ि अरु बहत्तर लाख ॥
श्रीजिनभवनमहा छवि देइ । ते सब पूजौं वसुविध लेई ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं मध्यलोकसम्बन्धिसप्तकोटिद्विसप्ततिलक्षाकृत्रिमश्री-जिन चैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामि ॥ १ ॥

मध्यलोकजिनमंदिरठाठ । साढ़ेचारशतक अरु आठ ॥
ते सब पूजों अर्घ चढ़ाय । मनवचतन त्रयजोग मिलाय ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं मध्यलोकसम्बन्धिचतुःशताष्टपञ्चाशतश्रीजिनचैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामि ॥ २ ॥

अडिल्ल ।

ऊर्द्धलोकके माहिं भवनजिन जानिये
लाख चौरासी सहस सत्यानव मानिये ।
तापै धरि तेईस जजौं शिरनायकैं ।
कंचनथालमझार जलादिक लायकैं ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं ऊर्द्धलोकसम्बन्धिचतुरशीतिसप्तनवति सहस्रत्रयोविंशति श्रीजिनचैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं ॥ ३ ॥

गीताछन्द ।

बसुकोटि छप्पनलाख ऊपर, सहसत्याणव मानिये ।
सतच्यारपैं गिनले इक्यासी, भवनजिनवर जानिये ॥
तिहुँलोकभीतर सासते, सुर असुर नर पूजा करैं ।
तिन भवनको हम अर्घ लेकैं, पूजि हैं जगदुख हरैं ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्धष्टकोटिपट्पञ्चाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीतिअकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामि ॥४॥

अथ जयमाला ।

दोहा

अब वरणं जयमालिका, सुनो भव्य चित लाय ।
जिनमंदिर तिहुं लोकके, देहुं सकल दरसाय ॥ १ ॥

पद्धड़िछंद ।

जय अमल अनादि अनंत जान । अनिमितजु अकीर्तम अचल मान ।
जय अजय अखंड अरूपधार, षट् द्रव्य नहीं दीसैं लगार ॥ २ ॥

जय निराकार अविकार होय। राजत अनंत परदेश सोय।
जय शुद्ध सुगुण अवगाह पाय दशदिशामाहिं इहविध लखाय ॥३॥
यह भेद अलोकाकाश जान। तामध्य लोक नभ तीन मान ॥
स्वयमेव बन्यौ अविचल अनंत अविनाशि अनादि जु कहत संत॥४॥

पुरुषाअकार ठाढो निहार। कटि हाथ धारि द्वै पग पसार॥
दच्छिन उत्तरदिशि सर्व ठौर। राजू जु सात भाख्यो निचोर ॥५॥
जय पूर्व अपर दिश घाटबाधि। सुन कथन कहूँ ताको जु साधि॥
लखि श्वभ्रतलें राजू जु सात। मधिलोक एक राजू रहात ॥ ६ ॥
फिर ब्रह्मसुरग राजु जु पांच। भू सिद्ध एक राजू जु सांच॥
दश चार ऊंच राजु गिनाय। षट्द्रव्य लये चतुकोण पाय ॥ ७ ॥
तसु बातवलय लपटाय तीन। इह निराधार लखियो प्रवीन॥
त्रसनाड़ी तामधि जान खास। चतुकोन एक राजू जु व्यास ॥८॥
राजू उतंग चौदह प्रमान। लखि स्वयंसिद्ध रचना महान॥
तामध्य जीव त्रस आदि देय। निज थान पाय तिष्ठे भलेय ॥९॥
लखि अधोभागमें श्वभ्रस्थान। गिन सात कहे आगम प्रमान॥
षटथानमाहिं नारकि बसेय। इक श्वभ्रभाग फिर तीन भेय ॥१०॥
तसु अधो भाग नारकि रहाय। फुनि ऊर्ध्वभाग द्वय थान पाय॥
वस रहे भवन व्यंतर जु देव। पुर हर्म्य छजै रचना स्वमेव ॥११॥
तिह थान गेह जिनराज भाख। गिन सातकोडि बहतर जु लाख॥
ते भवन नमों मनवचन काय। गतिश्वभ्रहरन हारे लखाय॥ १२ ॥
पुनि मध्यलोक गोलाअकार। लखि दीप उदाय रचना विचार॥
गिन असंख्यात भाखे जुसंत। लखि संभुरमन सबके जुअंत॥१३॥
इक राजुव्यासमें सर्व जान। मधिलोकतनों इह कथन मान॥
सबमध्य दीप जंबू गिनेय। त्रयदशम रुचिकवर नाम लेय ॥१४॥
इन तेरहमें जिनधाम जान। सतचार अठावन है प्रमान॥
खग देव असुर नर आय आय। पद पूज जांय शिर नाय नाय॥

जय उद्ध लोकसुर कल्पवास । तिहँ थान छजे जिनभवन खास ॥
जय लाखचुरासीपै लखेय । जय सहस सत्याणव और ठेय ॥१६॥
जय बीसतीन फुनि जोड़ देय । जिनभवन अकीर्तम जान लेय ॥
प्रतिभवन एक रचना कहाय । जिनबिंब एक सत आठ पाय ॥१७॥
शतपंच धनुष उन्नत लसाय । पदमासन युत वर ध्यान लाय ॥
शिर तीन छत्र शोभित विशाल । त्रय पादपीठ मणिजड़ित लाल ॥
भामंडलकी छवि कौन गाय । फुनि चँवर ढुरत चौसठि लखाय ॥
जय दुंदुभिरव अद्भुत सुनाय । जयपुष्पवृष्टि गंधोदकाय ॥१६॥
जय तरुअशोक शोभा भलेय । मंगल विभूति राजत अमेय ।
घटतूप छजे मणिमाल पाय । घटधूमधूम्र दिग सर्व छाय ॥२०॥
जयकेतुपंक्ति सोहै महान । गंधर्वदेव गुन करत गान ॥
सुर जनम लेत लखि अवधि पाय । तिस थान प्रथम पूजन कराय
जिनगेहतणो वरनन अपार । हम तुच्छबुद्धि किम लहत पार ॥
जयदेव जिनेसुर जगत भूप । नमि 'नेम' नंगे निज देह, रूप ॥२२

दोहा ।

तीनलोकमें सासते, श्रीजिनभवन विचार ॥
मनवचतन करि शुद्धता, पूजौं अरघ उतार ॥ २३ ॥

ॐ ह्रीं त्रैक्यसम्बन्ध्यष्टकोटिषट्पंचासल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीतिअकृत्रिमश्रीजिनचैत्यालयेभ्यो अर्घ्यंनिर्वपामि ॥२३॥
(यहां विसर्जन भी करना चाहिये ।)

कवित्त ।

तिहुँ जगभीतर श्रीजिनमंदिर, बने अकीर्त्तम अति सुखदाय ।
नर सुर खग करि वंदनीक जे, तिनको भविजन पाठ कराय ॥
धनधान्यादिक संपति तिनके, पुत्रपौत्र सुख होत भलाय ।
चक्री सुर खग इंद्र होयके, करम नाश सिवपुर सुख थाय ॥२४॥
(इत्याशीर्वादाय पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।)

सहस्त्रकूटजिन चैत्यालय पूजा।

हरिगीतिका छन्द।

सहसकूट जिनचैत्य परमसुन्दर सुखकारी।
पावनपुन्यनिधान दरस है जग अघहारी॥
रोगशोकदुख हरैं विपति दारीद्र नसावैं।
जो जन प्रीति लगाय नियमसे नित गुन गावें॥

ॐ ह्रीं सहस्त्रकूटजिनचैत्यालयानि! अत्र अवतरत अवतरत संवौषट
ॐ ह्रीं सहस्त्रकूटजिनचैत्यालयानि! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः।
अत्र मम सन्निहितानि भवत भवत वषट्।

नीरगंगको सुचि ल्यायके, कनक कुम्भनमें सु भरायके।
धार दे जिन सम्मुख हूजिये, सहसकूट जिनालय पूजिये॥

ॐ ह्रीं सहस्त्रकूटजिनचैत्यालयेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जगतमें जे गंध सुहावनी, ल्यायकर ले अति मन भावनी।
तापहर जिन सम्मुख हूजिये, सहसकूट जिनालय पूजिये॥

ॐ ह्रीं सहस्त्रकूटजिनचैत्यालयेभ्यश्चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अमल तन्दुल श्वेत मंगाइये, जासतैं अक्षयपद पाइये।
थालभर जिन सम्मुख हूजिये, सहसकूट जिनालय पूजिये॥

ॐ ह्रीं सहस्त्रकूटजिनचैत्यालयेभ्यः अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कल्पवृक्षनके अतिसोहने, फूल करमें ले मनमोहने।
मदनहर जिन सम्मुख हूजिये, सहसकूट जिनालय पूजिये॥

ॐ ह्रीं सहस्त्रकूटजिनचैत्यालयेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

निज सु आतमके हितकारने, भूखकी बाधा सु विडारनें।
चरु सु ले जिन सम्मुख हूजिये, सहसकूट जिनालय पूजिये॥

ॐ ह्रीं सहस्रकूटजिनचैत्यालयेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जगत जीवन मोह भरा हिये, तासुके तम नाशनके लिये ।
दीप ले जिन सम्मुख हूजिये, सहसकूट जिनालय पूजिये ॥

ॐ ह्रीं सहस्रकूटजिनचैत्यालयेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

धूप ले धूपायन डारने, अष्ट कर्मनके अघ जारने ।
कर्म हर जिन सम्मुख हूजिये, सहसकूट जिनालय पूजिये ॥

ॐ ह्रीं सहस्रकूटजिनचैत्यालयेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

मधुरफल उत्तम संसारमें, शिवप्रियाहित भरकर थारमें ।
शिवपतिके सम्मुख हूजिये, सहसकूट जिनालय पूजिये ॥

ॐ ह्रीं सहस्रकूटजिनचैत्यालयेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल सु आदिक द्रव्य सुधामई, सुखदपद कर धर ले सही ।
शुद्ध मन जिन सन्मुख हूजिये, सहसकूट जिनालय पूजिये ॥

हरिगीतिका छन्द ।

वसुविधि द्रव्य मिलाय, परमसुन्दर सुखदाई ।
पूजै श्रीजिनसहसकूट, मंगलमय भाई ॥
ऋद्धि सिद्धि दातार, और भव रोग मिटावे ।
श्रद्धा भक्तिसहित, पूर्ण जो अर्घ चढ़ावे ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं सहस्रकूटजिनचैत्यालयेभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला ।

दोहा ।

सहसकूट जिनभवनकी, भक्ति हियेमें धार ।
सुनो सरस जयमाल यह, तज मन सकल विकार ॥ १ ॥

पद्धरी छन्द ।

सहसकूट जिनभवन सार, हैं भव्यलोकके जे मझार ।
कृत्रिम सु अकृत्रिम दो प्रकार, भाषे जिनवर जगमें निहार ॥
जिनमें जिन प्रतिमाको प्रमाण, है सहस एक वसु अधिक जान ।
पाषान धातुमइ अति पवित्र, रचना है सुखदायक विचित्र ॥
जिस नाम लेत सब हरे ताप, भव भवके नाशें सकल पाप ।
है तीन लोक आनन्ददाय, सुर नर खग पूजन आय आय ॥
कोटीभट राजा श्रीपाल, और अनेकन नृप निहाल ।
सहसकूट जिनभवन बंद, कर्मनके कांटे अमित फंद ॥ ५ ॥
सोहै रचना अद्भुत अटूट, श्रीजिनवर आलय सहसकूट ।
है बनौ अनूपम अति विशाल, ताको कछु वर्णन करहिं लाल ।
है भरत क्षेत्रके मध्य धाम, इक आप बुन्देला खण्ड धाम ।
ताको जु केन्द्रअति विशदगात, है झाँसीनगर सुजग विख्यात ॥
तहां श्रीजिन मन्दिर है महान, तामें वेदी सोभै प्रधान ।
वर सहसकूट जिन भवनसार, है धातु मई रचना अपार ॥
तहं स्तुतिवन्दन कर हि भव्य, अरचें नित लेकर अटूट द्रव्य ।
हमहू तिनकी पूजन रचाय, कर रहे सकल मन वचन काय ॥

घत्ता ।

सहसकूट जिनभवन हैं अनूपम, जाकी सेव करे मन ल्याय ।
ताके मन अति सुमति प्रकाशै, दुर्गति जगकी जाय पलाय ॥
वृद्धि होय नित सम्पति गृहमें, तातैं धर्म बुद्धि हुलशाय ।
पात्र धर्मका वन "वसन्त" जग, अनुक्रम करके शिवसुख पाय ॥

ॐ ह्रीं सहस्रकूटजिनचैत्यालयेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

इत्याशीर्वादः (पुष्पाजलिं क्षिपेत्)

रक्षा बंधन पूजा।

(श्री विष्णुकुमार पूजा)

अडिल्ल छन्द

विष्णुकुमार महामुनि की ऋद्धि भई। नाम विक्रिया तास सकल आनन्द ठई॥ सो मुनि आये हथनापुर के बीचमें। मुनि बचाये रत्नाकर बन-बीचमें॥१॥ तहां भयो आनन्द सर्व जीवन घनो। जिम चिन्तामणि रत्न एक पायो मनो॥ सब पुर जैं जै कार शब्द उचरत भये। मुनिको देय आहार आप करते भये॥२॥

ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमार मुनिभ्यो अत्र अवतर २ संवौषट् इत्याह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः प्रतिस्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधि करणम्।

चाल—सोलह कारण पूजा की। अथाष्टकं॥

गंगाजल सम उज्वल नीर, पूजों विष्णुकुमार सुधीर।
दयानिध होय, जय जगबन्धु दयानिध होय॥
सप्त सैंकड़ा मुनिवर जान, रक्षा करी विष्णुभगवान।
दयानिध होय जय जगबन्धु दयानिध होय॥१॥

ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमार मुनिभ्यो नमः जन्म जरामृत्यु विनाशनाय जलं

मलयागिर चंदन शुभसार, पूजों श्रीगुरुवर निर्धार।
दयानिध होय, जय जगबन्धु दयानिध होय॥
सप्त सैंकड़ा मुनिवर जान, रक्षा करी विष्णुभगवान।
दयानिध होय, जय जगबन्धु दयानिध होय॥२॥

ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमार मुनिभ्यो नमः भव आतापविनाशनाय चन्दनं।

श्वेत अखंडित अक्षत लाय, पूजों श्रीमुनिवर के पाय।
दयानिध होय, जय जगवन्धु दयानिध होय॥
सप्त सैंकड़ा मुनिवर जान, रक्षा करी विष्णुभगवान।
दयानिध होय, जय जगवन्ध दयानिध होय॥३॥
ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमार मुनिभ्यो नमः अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं।
कमल केतकी पुष्प चढ़ाय, मेटो कामवाण दुखदाय।
दयानिध होय, जय जगवन्धु दयानिध होय॥
सप्त सैकड़ा मुनिवर जान, रक्षा करी विष्णुभगवान।
दयानिध होय, जय जगवन्धु दयानिध होय॥४॥
ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमार मुनिभ्यो नमः कामवाण विध्वंशनाय पुष्पं।
लाडू फेनी घेवर लाय, सब मोदक मुनि चरण चढ़ाय।
दयानिध होय, जय जगवन्धु दयानिध होय॥
सप्त सैकड़ा मुनिवर जान, रक्षा करी विष्णुभगवान।
दयानिध होय, जय जगवन्धु दयानिध होय॥५॥
ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमार मुनिभ्यो नमः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं।
घृत कपूर का दीपक जोय, मोहतिमर सब जावै खोय।
दयानिध होय, जय जगवन्धु दयानिध होय॥
सप्त सैकड़ा मुनिवर जान, रक्षा करी विष्णु भगवान।
दयानिध होय, जय जगवन्धु दयानिध होय॥६॥
ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमार मुनिभ्यो नमः मोहान्धकार विनाशनाय दीपं
अगर कपूर सुधूप वनाय, जारे अष्ट कर्म दुखदाय।
दयानिध होय, जय जगवन्धु दयानिध होय॥

सप्त सैकड़ा मुनिवर जान, रत्ता करी विष्णु भगवान।
दयानिध होय, जग जगवन्धु दयानिध होय ॥७॥
ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमार मुनिभ्यो नमः अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं।
लौंग लायची श्रीफल सार, पूजों श्रीमुनि सुख दातार।
दयानिध होय, जय जगवन्धु दयानिध होय ॥
सप्त सैंकड़ा मुनिवर जान, रत्ता करो विष्णु भगवान।
दयानिध होय, जय जगवन्धु दयानिध होय ॥८॥
ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमार मुनिभ्यो नमः मोत्तफलप्राप्तये फलं।
जलफल आठों द्रव्य संजोय, श्रीमुनिवर पद पूजों दोय।
दयानिध होय, जय जगवन्धु दयानिध होय ॥
सप्त सैकड़ा मुनिवर जान, रत्ता करी विष्णु भगवान।
दयानिध होय, जय जगवन्धुदयानिध होय ॥६॥
ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमार मुनिभ्यो नमः अनर्घपद प्राप्तये अर्घं।

अथ जयमाला

दोहा—श्रावण सुदी सु पूर्णिमा, मुनि रत्ता दिन जान।
रत्तक विष्णुकुमार मुनि, तिन जयमाल बखान॥

चाल—छन्द भुजङ्गप्रयात

श्री विष्णु देवा करूं चर्ण सेवा।
हरो जानकी वाधा सुनो टेर देवा॥
गजपुर पधारे महा सुखकारी।
धरो रूप वामन सु मनमें विचारी॥२॥
गये पासवलि के हुआ वो प्रसन्ना।
जो मांगो सो पावो दिया ये वचन्ना॥

मुनि तीन डग मांगी धरनी सु तापै।
दई ताने ततछिन सु नहिं ढील थापै ॥३॥
कर विक्रिया मुनि सु काया बढ़ाई।
जगह सारी लेली सु डग दो के मांही॥
धरी तीसरी डग बली पीठ-मांही।
सु मांगी क्षमा तब बलीने बनाई॥४॥
जलकी सुवृष्टि करी सुखकारी।
सरव अग्नि क्षणमें भई भस्म सारी॥
टरे सर्व उपसर्ग श्री विष्णुजी से।
भई जै जैकारा सरव नग्रही से॥५॥

चौपाई।

फिर राजाके हुक्म प्रमान, रक्षा बन्धन बंधी सुजान।
मुनिवर घर घर कियो बिहार, श्रावक जन तिन दियो अहार॥
जाघर मुनि नहिं आये कोय, निज दरवाजे चित्र सुलोय।
स्थापन कर तिन दियो अहार, फिर सब भोजन कियो सम्हार।
तबसे नाम सलूना सार, जैन धर्म का है त्यौहार॥
शुद्ध क्रिया कर मानो जीव, जासों धर्म्म बढ़ै सु अतीव॥
धर्म्म पदारथ जगमें सार, धर्म्म बिना झूठो संसार।
सावन सुदि पूनम जब होय, यह दो पूजन कीजै लोय॥
सब भाइनको दो समझाय, रक्षाबन्धन कथा सुनाय।
मुनिका निज घर करो अकार, मुनि समान तिन देउ अहार॥
सबके रक्षा बन्धन बांध, जैन मुनिन की रक्षा जान।
इस विधसे मानो त्योहार, नाम सलूना है संसार॥११॥

घत्ता—

मुनि दीनदयाला सब दुःख टाला, आनन्द माला सुखकारी।
'रघु सुत' नित बंदे आनंद कंदै, सक्ख करन्दे हितकारी॥१४॥

इति श्री विष्णुकुमार मुनिभ्यो महा अर्घ निर्वपामीति।

दोहा—विष्णुकुमार मुनि चरण, जो पूजे धर प्रीत।
'रघु सुत' पावै स्वर्गपद, लहै पुन्य नवनीत ॥

इत्याशीर्वादः ।

हस्तिनागपुरक्षेत्रपूजा ।

छप्पय छन्द । स्थापना ।

प्रथम द्वीप शुभ क्षेत्र भरत दक्षिण दिश छाजै ।
आर्य खंड मझार देश कुरुजाङ्गल राजै ॥
उत्तम तीर्थ हस्तनागपुर नगर महाजी ।
शांति कुंथु अरनाथ गर्भ तप जन्म लहा जी ॥
भुक्तिथान यह प्रथम जिन थित मल्लिनाथ सम्वादथल ।
पावन वरिषतिस भूमिनित, जजन करैं भव्य जन सकल ॥

ॐ ह्रीं हस्तनागपुरक्षेत्रस्थितजिनालयजिनाः अत्रावतरतावतरत संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् सन्निधिकरणम् ।

अष्टक ।

चाल नन्दीश्वराष्टक ।

जल सुभग सुरसरीन्याय हाटक कुम्भ भरा,
त्रयधार ढार सुखदाय जरमर जन्म जरा ।
श्री गजपुर नगर सुथान श्री जिन चैत्य महा,
सुर नर नित वंदत आन भव तज मोक्ष लहा ॥

ॐ ह्रीं श्रीगजपुरजिनालयजिनेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ।

चंदन कपूर घिसाय कुंकुम संग रला ।

प्रभु पद पूजूं हर्षाय भव आताप दला ॥ श्री गजपुर० ॥

ॐ ह्रीं श्रीगजपुरजिनालयजिनेभ्यः चन्दनं नि० ।

वर उत्तम अक्षत श्वेत शशि सम अनियारे ।

जिनवर ढिंग पुंज करेय अक्षत विधि धारे ॥ श्री गजपुर० ॥

ॐ ह्रीं श्रीगजपुरजिनालयजिनेभ्यो अक्षतं ।

पण वर्ण सुगन्ध अनूप कुसुम विविध लाये ।

मनमथ मद हर जगभूप लख पूजन आये ॥ श्री गजपुर० ॥

ॐ ह्रीं श्रीगजपुरजिनालयजिनेभ्यः पुष्पं नि० ।

मोदक बहु सरस सुहाल गुंजा मिष्ट सुधा ।

नेवज कीजे तत्काल नासैं रोग क्षुधा ॥ श्री गजपुर० ॥

ॐ ह्रीं श्रीगजपुरजिनालयजिनेभ्यो नैवेद्यं नि० ।

मणि दीपक ज्योति जगाय अद्भुत उजियारे ।

मिथ्यातम मोह पलाय निज गुण विस्तारे ॥ श्री गजपुर० ॥

ॐ ह्रीं श्रीगजपुरजिनालयजिनेभ्यो दीपं नि० ।

अष्टांग दशांग सुचूर गंध हुताशन में ।

खेऊं जिनराज हजूर विध अरि नाशन में ॥ श्री गजपुर० ॥

ॐ ह्रीं श्रीगजपुरजिनालयजिनेभ्यो धूपं नि० ।

श्रीफल बादाम छुहार पूंगी दाख खरे ।

एलादिक फल अविकार सुवरण थाल भरे ॥ श्री गजपुर० ॥

ॐ ह्रीं श्रीगजपुरजिनालयजिनेभ्यः फलं नि० ।

हरगीता छन्द ।

शुभ गंधवारि अखंड अक्षत पुष्प नेवज धूप जी,

वर दीप उत्तम फल मिलाय बनाय अर्घ अनूप जी ।

जिननाथ चरणाम्बुज सदा भवि जजो चित हर्षाय,

भर थार जटित जवाहर निशदिन शुद्ध मन वच काय जी ॥

ॐ ह्रीं हस्तिनागपुरक्षेत्रस्थजिनालयजिनभ्यो अर्घं नि० ।

जयमाला ।

दोहा—बारण पुरवर क्षेत्र की, अर्चन कर हितकार ।
अब जयमाला तास की, सुनो सुबुध चित्त धार ॥ १ ॥

पद्धरी छन्द ।

यह प्रथम जिनेन्द्र आहार नग्र, दानीपति भूप श्रेयांस अग्र ।
षोडश सतरा अठदश जिनेश, त्रप कल्याणक पूजें सुरेश ॥
अरु समवशरण थित मल्लिदेव, अरु पांडुभूत हू नग्र एव ।
तहां मघवा आये बार बार, संज सेन अमरजुत सपरिवार ॥
अद्भुत रचना हरि करी सार, बहु रत्नवृष्टि नाटक अपार ।
कर कर सहस्रभुज देव ईश, नाटे नटवावत नाय शीश ॥
तिस क्षेत्रतनी महिमा महान, को वर्णसके कवि स्वल्पज्ञान ।
श्री जिनमन्दिर राजत उतङ्ग, अरु शिखर कलश बहु धुज सुरङ्ग ॥
बन महा विकट निर्भय विकार, तरु-पुष्प वेल फल फलत सार ।
है कूप नीर जुत मिष्ट मिष्ट, बहु धर्मशाल तहां इष्ट इष्ट ॥
नितप्रति निशिदिन भवि जजन हेत, धर उर प्रमोद संघनसमेत ।
कर अर्चक श्रीजिनचंद्र ईश, ते लहत पुण्य अति शुभगरीश ॥
वंदत बन में तप टोंकजाय, मन वचन काय आनन्द पाय ।
यह अतिशय वरनन सदाकाल, सब टरत विघन अघके जंजाल ॥
कार्तिक शुक्ला पूनम सुजोय, उत्सव यात्रा प्रति वर्ष होय ।
आवत श्रावक बहु देश देश, चढ़िवाहन सजि सर्व भेष ॥
रथ गजारूढ़ जिनबिम्ब सार, मङ्गल जय जय जय जय उचार ।
बहु भक्ति करत गुण गाय गाय, निरतत संगीतादिक रचाय ॥

ढप ताल मुरज धुन करत घोर, संसागृदि सारङ्गी तान शोर।
करताल बजत टनटन ननाय, वीना तन ननतन तन ननाय ॥
सैनाय बांसुरी शब्द तूर, सैतार सुरावर श्रवन पूर।
थेई थेई गत नाचत मनुज नार, गावत मङ्गल गुण गण अपार ॥
मनु आनन्दघरझर लग्योआय, मिथ्यात कलुष ततछिण पलाय।
प्राकृत सम्यक्त गुण निजाधीन, सरधाजुत शंकादिक विहीन ॥
नरके प्रसाद नर स्वर्ग जाय, अनुक्रम शिवपुर को राजथाय।
यह जानत सुबुध नित नमन ठान, अरचा कीजे बहु पुन्यवान ॥
हम यह निशि वंदत है त्रिकाल त्रय जोग जुगतकर धर सुभाल।
मन वांछित तरुफल है प्रत्यक्ष, है क्षेत्र जवाहर दानदक्ष।

दोहा—गजपुर तीरथ राज की, महिमा अगम अपार।
सुनत लखत परसत बढ़त संचय पुण्य भंडार ॥ १६ ॥

महार्घं।

जो पूजैं जिन पद कमल, गजपुर क्षेत्र सुजाय।
धर्म अर्थ लहि काम जुत, मोक्ष रमन सुख पाय ॥ १७ ॥

इत्याशीर्वादः।

अनन्तव्रत पूजा।

अडिल्ल छन्द।

श्रीजिनराज चतुर्दश, जग जयकारजी,
कर्म नाश भवतार सु, शिवसुखधारजी।
संवौषट ठः ठः सु, वषट यह उच्चरूं।
आह्वानन स्थापन, निज सन्निधि करूं।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभाद्यनन्तनाथपर्यन्तचतुर्दशजिनेन्द्रा अत्र अवतरत अवतरत, संवौषट्। अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः। अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् सन्निधापनम्।

गीता छन्द।

गंगादि तीरथका सुजल भर, कनकमय भृङ्गार मैं,
चउदशजिनेश्वर चरणयुगपरि, धार डारौं सार मैं।
श्री वृषभ आदि अनन्त जिन, पर्यन्त पूजों ध्याय के,
करि व्रत अनंत सुकर्म हनिके, लहों शिवसुख जाय के।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभाद्यनन्तनाथपर्यन्तचतुर्दशजिनेन्द्रेभ्यो जलम्।

चन्दन अगर घनसार आदि, सुगन्ध द्रव्य घसाय के।
सहजहिं सुगंध जिनेन्द्रके पद, चर्च हों सुखदाय के॥ श्री०

ॐ ह्रीं श्रीवृषभाद्यनन्तनाथपर्यन्तचतुर्दशजिनेन्द्रेभ्यः चन्दनम्।

तंदुल अखंडित अतिसुगन्ध, सुमिष्ट लेके कर धरौं।
जिनराज तुम चरनन निकट, भविपाय पूजों शुभ धरों॥ श्री०

ॐ ह्रीं श्रीवृषभाद्यनन्तनाथपर्यन्तचतुर्दशजिनेन्द्रेभ्यो अक्षतम्।

चम्पा चमेली केतकी पुनि, मोगरा शुभ लायके।
केवड़ा कमल गुलाब गैंदा, जुही सुमाल बनाय के॥ श्री०

ॐ ह्रीं श्रीवृषभाद्यनन्तनाथपर्यन्तचतुर्दशजिनेन्द्रेभ्यः पुष्पम्।

लाडू कलाकंद सेव घेवर, और मोती चूर ले।
गूजा सुपेड़ा खीर व्यंजन, थाल में भरपूर ले॥ श्री०

ॐ ह्रीं श्रीवृषभाद्यनन्तनाथपर्यन्तचतुर्दशजिनेन्द्रेभ्यो नैवेद्यम्।

ले रत्न जड़ित सुआरती, तामांहि दीप संजोय के।

जिनराज तुम पद आरतीकर, तिमिर मिथ्या खोयके ।। श्री०

ॐ ह्रीं श्रीवृषभाद्यनन्तनाथपर्यन्तचतुर्दशजिनेन्द्रेभ्यः दीपम् ।

चन्दन अगर तगर सिलारस, कर्पूरकी करि धूप को ।
तागन्ध तें अलि हों चकित सो, खेऊं निकट जिन भूपको ।। श्री०

ॐ ह्रीं श्रीवृषभाद्यनन्तनाथपर्यन्तचतुर्दशजिनेन्द्रेभ्यो धूपम् ।

नारिंग केला दाख दाड़िम, बीजपूर मंगाय के ।
पुनि आम्र और बादाम खारकं, कनक थार भराय के ।।श्री०

ॐ ह्रीं श्रीवृषभाद्यनन्तनाथपर्यन्तचतुर्दशजिनेन्द्रेभ्यो फलम् ।

जल सुचन्दन अखत पुष्प, सुगन्ध बहुविध लाय के ।
नैवेद्य दीप सु धूप फल इन, को जु अर्घ बनाय के ।। श्री०

ॐ ह्रीं श्रीवृषभाद्यनन्तनाथपर्यन्तचतुर्दशजिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यम् ।

जयमाला, पद्धरी छन्द ।

जय वृषभनाथ वृषको प्रकाश, भविजनको तारे पाप नाश ।
जय अजितनाथ जीते सुकर्म, ले क्षमा खड्ग भेदे जु मर्म ।।

जय संभव जग सुखके निधान, जग सुखकरता तुम दियो ज्ञान ।
जय अभिनंदन पद धरो ध्यान, तासों प्रगटे शुभज्ञान भान ।।

जय सुमति सुमति के देनहार, जासों उतरे भवउदधि पार ।
जय पद्म पद्म पदकमल तोहि, भविजन अति सेव मगनहोहिं ।।

जय २ सुपार्श्व तुम नमत पांय, क्षय होत पाप बहु पुन्य थांय ।
जय चंद्रप्रभ शशिकोटि भान, जगका मिथ्यातम हरो जान ।।

जय पुष्पदंत जग मांहि सार, पुष्पकको मार्‌यो अति सुमार ।
करि धर्मभाव जग में प्रकास, हर पापतिमिर दियो मुक्तिवास ।।

जय शीतलजिन हरभव प्रवीन, हर पापताप जग सुखी कीन ।
श्रेयांस कियो जग को कल्यान, दे धर्म दुखित तारे सुजान ।।

जय वासुपूज्य जिन नमों तोहि, सुर नर मुनि पूजत गर्व खोहि।
जय विमल २ गुण लीन भेय, भवि करे आप सम सगुण देय॥
जय अनंतनाथ करि अनंतवीर्य, हरि घातकर्म धरि अनंत धीर्य।
उपजायो केवल ज्ञानभान, प्रभु लखे चराचर सब सुजान॥
दोहा—ये चौदह जिन जगत में, मंगलकरण प्रवीन।
पापहरन बहुसुख करन, सेवक सुखमय कीन॥
ॐ ह्रीं श्रीवृषभाद्यनन्तनाथपर्यन्तचतुर्दशजिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं।

समुच्चय

श्रीतीसचौबीसीजीकी पूजा।

पांच भरत शुभ क्षेत्र पांच ऐरावते,
आगत-नागत वर्तमान जिन सास्वते।
सो चौबीसी तीस जजूं मन लायके,
आह्वानन विधि करूँ बार त्रय गायके॥

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धी - पंचभरत - पंचऐरावत - क्षेत्रस्था भूतानागतवर्तमान - सम्बधिचतुर्विंशतितीर्थंकरा अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् इति आह्वाननं। अत्र अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनं अत्र मम सन्निहिता भवत २ वषट् सन्निधीकरणम्।

अष्टक।

नीर दधि क्षीर सम ल्यायो, कनकको भृङ्ग भरवायो.
अबै तुम चरण ढिंग आयो, जनम जरा रोग नशवायो।
द्वीप अढ़ाई सरस राजे, क्षेत्र दस ता विषैं छाजे,
सात शत बीस जिनराजे, जे पूजतां पाप सब भाजें॥ १॥

ॐ ह्रीं पंचभरतपंचैरावतक्षेत्रस्थभूतानागतवर्तमानकालसंबन्धि-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुरभिजुत चन्दनं ल्यायो, संग करपूर घसवायो,
धार तुम चरण ढरवायो, भव आताप नशवायो ॥ द्वीप० ॥

ॐ ह्रीं पांच भरत पांच ऐरावत क्षेत्र संबन्धी तीस चौबीसी सात सौ बीस जिनेन्द्रेभ्यः चन्दनं नि० ।

चन्द्रसम तन्दुलं सारं, किरण मुक्ता जु उनहारं,
पुञ्ज तुम चरण ढिंग धारं, अक्षयपद प्राप्तिके कारं ।
द्वीप अढ़ाई सरस राजे क्षेत्र दस ता विषें छाजे,
सात शत बीस जिनराजे, पूजतां पाप सब भाजे ॥

ॐ ह्रीं पांच भरत पांच ऐरावत क्षेत्र संबन्धी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनेन्द्रेभ्यो नमः अक्षतं नि० ।

पुष्प शुभ गन्धजुत सो है, सुगन्धित नास मन मोहै ।
जजत तुम मदन छय होवे, मुकति पर पलकमें जोवे ॥ द्वीप० ॥

ॐ ह्रीं पांच भरत पांच ऐरावत क्षेत्र संबन्धी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनेन्द्रेभ्यो नमः पुष्पं नि० ।

सरस व्यंजन लिया ताजा, तुरत बनवायकें खाजा ।
चरन तुम जजों हो महाराजा, क्षुधादिक पलकमें भाजा ॥ द्वीप० ॥

ॐ ह्रीं पांच भरत पांच ऐरावत क्षेत्र संबन्धी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनेन्द्रेभ्यो नमः नैवेद्यं नि० ।

दीप तप नाशकारी है, सरस शुभ जोतिधारी है ।
होंय दशों दिश उजारी है, धूम्र मिस पाप छारी है ॥ द्वीप० ॥

ॐ ह्रीं पांच भरत पांच ऐरावत क्षेत्र संबन्धी तीस चोवीसी के सात सौ बीस जिनेन्द्रेभ्यो नमः दीपं नि० ।

सरस शुभ धूप दस अंगी, जलाऊं अग्निके संगी ।
करमकी सेन चतुरंगी चरन तुम पूजतें भङ्गी ॥ द्वीप० ॥

ॐ ह्रीं पांच भरत पांच ऐरावत क्षेत्र संबन्धी तीस चौबीसी के सात सौबीस जिनेन्द्रेभ्यो नमः धूपं नि० ।

मिष्ट उत्कृष्ट फल ल्यायो, अष्ट अरि दुष्ट नशवायो ।
श्रीजिन भेंट धरवायो, कार्य मनवांछता पायो ॥ द्वीप० ॥

ॐ ह्रीं पांच भरत पांच ऐरावत क्षेत्र संबन्धी तीस चौबीसी के सात सौबीस जिनेन्द्रेभ्यो नमः फलं नि० ।

द्रव्य आठों जु लीना है, अर्घ करमें नवीना है ।
पूजते पाप छीना हैं, 'भानमल' जोर कीना है ॥ द्वीप० ॥

ॐ ह्रीं पांच भरत पांच ऐरावत क्षेत्र संबन्धी तीस चौबीसी के सात सौबीस जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घं नि० ।

प्रत्येक अर्घ ।

जम्बूद्वीपकी प्रथममेरुकी, दक्षिणदिशा भरत शुभ जान ।
तहां चौबीसी तीन विराजें, आगत नागत औ वर्तमान ॥
तिनके चरणकमलकी निशदिन, अर्घ चढ़ाय करूंउर ध्यान ।
इस संसारभ्रमणतें तारो, अहो जिनेश्वर ! करुणावान ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुकी दक्षिण दिशा भरत क्षेत्र संबन्धी तीन चोबीसी के वहत्तर जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घं ।

सुदर्शन मेरुकी उत्तर दिश में, ऐरावत क्षेत्र शुभ जान।
आगत नागत वर्तमान जिन, बहत्तर सदा सास्वते ज्ञान॥ तिन०

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुकी उत्तर दिशा ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धी तीन चौबीसी के बहत्तर जिनेन्द्रेभ्यो नमः। अर्घ।

खण्ड धातकी विजय मेरुके, दक्षिण दिशा भरत शुभ जान।
तहां चौबीसी तीन विराजे, आगत नागत अरु वर्तमान॥
तिनके चरणकमलको निशिदिन अर्घ चढ़ाय करूं उर ध्यान।
इस संसार भ्रमणतैं तारो, अहो जिनेश्वर! करुणावान॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्ड द्वीपकी पूर्व दिशि विजय मेरुकी दक्षिण दिशि भरतक्षेत्र सम्बन्धी तीनचौबीसीके बहत्तर जिनेंद्रेभ्यो अर्घ।

इसी द्वीपकी प्रमथ शिखरिकौ, उत्तर ऐरावत जु महान।
आगत नागत वर्तमान जिन, बहत्तरि सदा सासते जान॥
तिनके चरण कमलको निशिदिन, अर्घ चढ़ाइ करूं उर ध्यान।
इस संसारभ्रमणतें तारो, अहो जिनेश्वर! करुणावान॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड द्वीपकी पूर्व दिशि विजय मेरुकी उत्तर दिशि ऐरावतक्षेत्र सम्बन्धी तीनचौबीसी के बहत्तरि जिनेंद्रेभ्यो अर्घ।

खंड धातकी अचल सुमेर, दक्षिण तास भरत बहु घेर।
तामें चौबीसी त्रय जान, आगत नागत और वर्तमान॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्ड द्वीपकी पश्चिम दिशा अचलमेरुकी दक्षिण दिशा भरतक्षेत्र सम्बन्धी तीनचौबीसी के बहत्तर जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ।

अचल मेरुकी उत्तर दिश जान, ऐरावत शुभ क्षेत्र बखान।
तामें चौबीसीत्रय जान, आगत नागत और वर्तमान॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्डकी पश्चिम दिशा अचलमेरुकी उत्तर दिशा ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धी तीनचौबीसीके बहत्तर जिनेशेभ्यो नमः अर्घ।

द्वीप पुष्करकी पूरब दिशा, मंदिरमेरुकी दक्षिण भरत-सा।
ताविषे चौबीसी तीन जू, अर्घ लेय जजूं परवीन जू॥

ॐ ह्रीं पुष्कर द्वीपकी पूरब दिशा मन्दरमेरुकी दक्षिण दिशा भरत क्षेत्र सम्बन्धी तीनचौबीसी के बहत्तर जिनालयेभ्यो नमः अर्घं।

गिरि सु मंदर उत्तर जानिये, ताके पूर्व दिशा बखानिये।
ताविषे चौबीसी तीन जू, अर्घलेय जजूं परवीन जू॥

ॐ ह्रीं पुष्कर द्वीपकी पूर्व दिशा मन्दरमेरुकी उत्तर दिशा ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धी तीन चौबीसी के बहत्तर जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घं।

पश्चिमपुष्करगिरि विद्युतमाल, ताके दक्षिण भरतक्षेत्र है सुविशाल।
तामें चौबीसी हैं जु तीन, वसु द्रव्य लेय जजूं परवीन॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीपकी पश्चिम दक्षिण दिशा भरत क्षेत्र संबंधी तीन चौबीसीके बहत्तर जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घं।

याही गिरिके उत्तर जु ओर, ऐरावत क्षेत्र बनो निहोर।
तामें चौबीसी है जु तीन, वसु द्रव्य लेय जजूं परवीन॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्कर द्वीपकी पश्चिम दिशा विद्युत माली मेरुकी उत्तर दिशा ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धी तीन चौबीसीके बहत्तर जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घं!

द्वीप अढ़ाईके विषै, पंचमेरु हित दाय।
दक्षिण उत्तर तासके, भरत ऐरावत भाय॥
भरत ऐरावत भाय, एक क्षेत्रके मांही।
चौबीसी हैं तीन, दसों दिशि ही के मांही॥
दसों क्षेत्रके सातसौ बीस जिनेश्वर।
अर्घ ल्याय करजोड़ि, जै जै रविमल सुमनकर॥

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धी भरतैरावत क्षेत्रके विषै तीस चौबीसी जी के सातसै बीस जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घं नि०।

जयमाला।

दोहा—चौबीसों तीसों नमों, पूजा परम रसाल।
मन, वच तन को शुद्धकर, अब वरणों जयमाल॥
जय द्वीप अढ़ाई में जु सार, गिरि पांच मेरु उन्नत अपार।
तागिरि पूर्व-पश्चिम जु ओर, शुभ क्षेत्र विदेह बसै जु ठौर॥
ता दक्षिण क्षेत्र भरत सु जानि, है उत्तर ऐरावत महान।
गिरि पांचतनें दश क्षेत्र जोय, छवि ताकी वरनन सकै कोय॥
ताको वरणूं वरणन विशाल, तैसा ही ऐरावत है रसाल।
इस क्षेत्र बीच विजयार्द्ध एक, वा ऊपर विद्याधर अनेक॥
इस क्षेत्र विषें षट खंड जानि, तहां छहोंकाल बरतै महान।
जो तीन कालमें भोग भूमि, दस जाति कलपतरु रहे भूमि॥
जब चौथो काल लगै जु आय, तब कर्म भूमि वर्ते सुहाय।
तब तीर्थंकर को जन्म होय, सुरलेय जजैं गिरि पर सुजोय॥
बहु भक्ति करें सब देव आय, ताथेई थेइ की तान ल्याय।
हरि तांडव नृत्य करे अपार, सब जीवन मन आनन्दकार॥

इत्यादि भक्ति करिके सुरेन्द्र, निजथान जाय जुत देव वृन्द ।
इहविधि पांचों कल्यान होय, हरिभक्ति करै अति हर्ष जोय ॥
या कालविषें पुण्यवंत जीव, नरजन्मधार शिव लहै अतीव ।
तब श्रेष्ठ पुरुष परवीन होय, सब याही काल विषै जु होय ॥
जब पंचम काल करे प्रवेश, मुनिधर्म तणों नहीं रहे लेश ।
विरले कोई दक्षिन देश मांहि, जिनधर्मी नर बहुते जु नाहिं ॥
जब षष्ठम काल करे प्रवेश, तब धर्म रंच नहिं रहे लेश ।
दश क्षेत्रन में रचना समान, जिनवाणी भाष्यो सो प्रमाण ॥
चौबीसी होइके क्षेत्र तीन, दश क्षेत्रनिमें जानो प्रवीन ।
आगत व अनागत वर्तमान, सतसातशतक अरु बीसजान ॥
सबही महाराज नमूं त्रिकाल, मम भवसागरतें लेहु निकाल ।
यह वचन हिये में धार लेव, मम रक्षा करहु जिनेन्द्र देव ॥
'विमल' की बिनती सुनहु नाथ, मैं पांय परू जुग जोरि हाथ ।
मम वांछित कारज करौ पूर, यह अरज हृदय में धरि जरूर ॥

घत्ता—शत सात जु बीसं श्रीजगदीशं, आगतनागत अरु वर्ततु हैं ।
मन वच तन पूजै, सुध मन हूजै, सुरग मुक्ति पद पावत हैं ॥

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धी दश क्षेत्रनिके विषै तीस चौबीसीके सातसौबीस जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घं नि० ।

दोहा—सम्बत् सत उन्नीस के, ता ऊपर पुनि आठ ।
पौष कृष्ण तृतीया गुरू, पूरन भयो जु पाठ ॥
अक्षर मात्रा की कसर, बुद्ध जन शुद्ध करेय ।
अलप बुद्धि मो सोचकें, दोष कबहु नहिं देय ॥
पढ़ौ नहीं व्याकरण मैं, पिंगल देख्यो नाहिं ।
जिनवाणी परसादतें, उमंग भई घट मांहि ॥
मान बड़ाई ना चहूं, चहूं धर्मको अंग ।
नित प्रति पूजा कीजियो, मनमें धारि उमंग ॥

इत्याशीर्वादः ।

महाव्रतों का अर्घ ।

उदक चन्दन तन्दुल पुष्पकैः, चरु सुदीप सुधूप फलार्घकैः ।
धवल मंगलगान रवाकुले, जिन गृहे जिन वृत्तमहं यजे ॥

ॐ ह्रीं श्री महाव्रतेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

महामुनियों का अर्घ ।

ज्ञान के उजागर सहज सुख सागर, सुगुण रत्नाकर वैराग रस भरे हैं । शरण को आते हरि, मरण को भय न करि, करण सों पटि दे चरण अनुसरे हैं । धर्म मण्डन भरम के विहंडन, परम नरम-होयकर करमन सों अडे हैं । ऐसे मुनिराज भूमि लोक में विराजमान, निरखत बनारसी नमस्कार करै हैं ॥

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधचारित्रधारक मुनिवरेभ्योऽर्घं नि० ।

शांति पाठ

शास्त्रोक्त विधि पूजा महोत्सव सुरपति चक्री करै ।
हम सारिखे लघु पुरुष कैसे यथा विधि पूजा करैं ॥
धन क्रिया ज्ञान रहित न जाने रीत पूजन नाथजी ।
हम भक्तिवश तुम चरण आगे जोड़ लीने हाथ जी ॥१॥

दुख हरण मंगल करण आशा भरण जिन पूजा सही ।
यह चित्त में सरधान मेरे शक्ति धो स्वयमेव ही ॥
तुम सारिखे दातार पाये काज लघु जाचूं कहा ।
मुझ आप सम करलेहु स्वामी यह एक बांछा महा ॥२॥

संसार भीषण विपन में वसु कर्म मिलि आतापियो ।
तिस दाहतैं अकुलित चितनैं शांतिथल कहूँ ना लियो ॥

तुम मिले शांतिस्वरूप शांतिकरण समरथ जगपती।
वसु कर्म मेरे शान्ति करदो शान्ति में पंचम गती ॥३॥
जबलौं नहीं शिव लहूं तबलौं देवये धन पावना।
सतसंग शुद्धाचरण श्रुत अभ्यास आतम भावना॥
तुम बिन अनन्तानन्त काल गयो रुलत जगजाल में।
अब शरण आयो नाश दुख करजोड़ नांवत भाल में ॥४॥
दोहा—कर प्रमाण के मानतें गगन नपें किहि भन्त।
त्यों तुम गुण वर्णन करूं कविनहिं पावें अन्त ॥
पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अथ विसर्जन पाठ

सम्पूर्ण विधि कर वीनऊँ इस परम पूजन ठाठ में।
अज्ञान वश शास्त्रोक्त विधितै चूक कीन्हों पाठ में॥
सो होहु पूरण समस्त विधिवत् तुम चरण की शरणतैं।
बन्दों तुम्हें कर जोड़ कर उद्धार जम्मन मरणतैं ॥१॥
आह्वानन स्थापन तथा सन्निधिकरण विधान जी।
पूजन विसर्जन यथाविधि जानूं गुण खान जी॥
जो दोष लागो सो नसो सब तुम चरण की शरणतैं।
बन्दों तुम्हें कर जोड़ कर उद्धार जम्मन मरणतैं ॥२॥
तुम रहित आवागमन आह्वानन कियो निज भाव में।
विधि यथाक्रम निजशक्ति सम पूजन कियो अतिचाव में॥
करहूं विसर्जन भाव ही में तुम चरण की शरण तैं।
बन्दों तुम्हें कर जोड़ कर उद्धार जम्मन मरण तैं ॥३॥
दोहा—तीन भवन तिहु काल में, तुमसा देव न और।
सुखकारन संकटहरन, नमों युगल करजोर ॥४॥ इतिविसर्जन

बारह मासा मुनिराज

(राग मरहटी)

मैं वन्दूं साधु महन्त बड़े गुणवन्त सभी चित्त लाके।
जिन अथिर लखा संसार बसे वन जाके ॥ टेर ॥

चित चैत में व्याकुल रहे काम तन दहे न कुछ बन आवे। फूली बनराई देख मोह भ्रम छावै। जब शीतल चले समीर स्वच्छ हो नीर भवन सुख भावे। किस तरह योग योगीश्वर से बन आवे।

झड़—जिस अवसर श्री मुनि ज्ञानी, रहें अचल ध्यान में ध्यानी। जिन काया लखी पयानी, जग ऋद्धि खाक सम जानी। उस समय धीर धर रहैं अमर पद लहैं ध्यान शुभ ध्याके। जिन अथिर० ॥ १ ॥

जब आवत है बैसाख होय तृण खाक तप्त से जल के। सब करें धाम विश्राम पमन झल झलकैं। ऋतु गर्मी में संसार पहिने नर नार वस्त्र मलमल के। वे जल से करते नेह जो हैं जीव-स्थल के॥

झड़—जिस समय मुनी महाराजे, तन नग्न शिखिर गिर राजे। प्रभु अचल सिंहासन राजे। कहो क्यों न कर्म दल लाजे। जो घोर महा तप करें मोक्ष पद धरैं बसै शिव जाके। जिन अथिर लखा० ॥२॥

जब पड़े ज्येष्ठ में ज्वाला होय तन काला धूप को मारी। घर बाहर पग नहिं धरै कोई घरबारी। पानी से छिड़के धाम करें विश्राम सकल नर नारी। घर खस की टटियाँ छिपैं लूहकी मारी॥

झड़—मुनिराज शिखिर गिर ठाड़े दिन रैन ऋद्धि अतिबाढ़े। अति तृषा रोग भय बाढ़े, तब रहै ध्यान में गाढ़े। सब सूखे सरवर नीर जले शरीर रहै समझाके। जिन अथिर लखा० ॥३॥

अषाढ़ मेघ का जोर बोलते मोर गरजते बादल। चमके बिजली कड़ कड़ै पड़ैं धारा जल॥ अति उमड़े नदियाँ नीर

गहर गम्भीर भरे जल से थल। भोगी को ऐसे समय पड़े कैसे कल ॥

जड़—उस समय मुनी गुणवन्ते, तर वर तट ध्यान धरन्ते। अति काटें जीव अरु जन्ते, नहीं उनका सोच करन्ते। वे काटें कर्म जञ्जीर नहीं दिलगीर रहैं शिव पाके। जिन अथिर लखा० ॥४॥

झड़—श्रावण में हैं त्योहार झूलती नार चढ़ीं हिंडोले। वे गावें राग मल्हार पहन नये चोले ॥ जग मोह तिमिर मन वसे सर्व तन कसे देत झक झोले। उस अवसर श्रीमुनि राज बनत हैं भोले ॥

झड़—वे जीतें रिपु से लरके कर ज्ञान खड्ग ले करके। शुभ शुक्ल ध्यान को धरके, पर फुल्लित केवल वर के ॥ नहीं सहैं वो यमकी त्रास लहैं शिव वास अघात नशाके। जिन अथिर ॥५॥

भादव अंधियारी रात सूझे ना हाथ घुमड़ रहे बादर। बन मोर पपीहा कोयल बोले दादुर ॥ अति मच्छर भिन्न भिन्न करें सांप फुंकारें पुकारें थलचर। बहु सिंह बघेरा गज घूमें वन अन्दर ॥

झड़—मुनिराज ध्यान गुण पूरे, तब काटें कर्म अंकूरे। तनु लिपटतु कान खजूरे, मधु मक्ख ततइयें भूरे ॥ चिटियों ने विल तन करे आप मुनि खड़े हाथ लटकाके। जिन० ॥६॥

आश्विन में वर्षा गई समय नहीं रही दशहरा आया। नहिं रही वृष्टि अरु कामदेव लहराया ॥ कामी नर करें किलोल बनावें डोल करें मन भाया। हैं धन्य साधु जिन आतम ध्यान लगाया ॥

झड़—वसु याम योग में भीने, मुनि अष्ट कर्म क्षय कीने। उपदेश सवनको दीने, भवि जन को नित्य नवीने ॥ हैं धन्य धन्य मुनिराज ज्ञान के ताज नमूं शिर नाके। जिन अथिर लखा ॥ ७ ॥

कार्तिक में आया शीत भई विपरीत अधिक सरदाई। संसारी खेलें जुआ कर्म दुखदाई॥ जग नर नारी का मेल मिथुन सुख केल करे मन भाई। शीतल ऋतु कामीजन को है सुखदाई॥

झड़—जब कामी काम कमावें, मुनिराज ध्यान शुभ ध्यावें। सरवर तट ध्यान लगावें, सो मोक्ष भवन सुख पावें॥ मुनि महिमा अपरम्पार न पावे पार कोई नर गाके। जिन अथिर लखा० ॥८

अगहन में टपके शीत यही जगरीति सेज मन भावे। अति शीतल चले समीर देह थर्रावे॥ शृङ्गार करे कामिनी रूप रस ठनी साम्हने आवे। उस समय कुमति बन सबका मन ललचावे।

झड़—योगीश्वर ध्यान धरें हैं, सरिता के निकट खड़े हैं। तहाँ ओले अधिक परे हैं, मुनि कर्म का नाश करे हैं॥ जब बर्फ पड़े घनघोर, करें नहीं शोर जयी दृढ़ता के। जिन अथिर लखा॥ ९॥

यह पौष महीना भला शीत में घुला कांपती काया। वे धन्य गुरू जिन इस ऋतु ध्यान लगाया॥ घरबारी घर में छिपै वस्त्र तन लिपैं रहै जैड़ाया। तज वस्त्र दिगम्बर हो मुनि ध्यान लगाया॥

झड़—जल के तट जग सुखदाई, महिमा सागर मुनिराई। धर धीर खड़े हैं भाई, निज आतम से लवलाई॥ है यह संसार असार वे तारण हार सकल वसुधा के। जिन अथिर लखा संसार ॥१०॥

है माघ बसन्त बसन्त नार अरु कंथ युगल सुख पाते। वे पहिने वस्त्र बसन्त फिरें मदमाते॥ जब चढ़ै मयन की, शयन पड़ैं नहीं चैन कुमति उपजाते। हैं बड़े धीर जन बहुधा वे डिग जाते॥

झड़—तिस समय जु हैं मुनि ज्ञानी। जिन काया लखी पयानी। भवि डूबत बोधे प्रानी, जिन ये बसन्त जिय जानी॥ चेतन सो खेलें होरी, ज्ञान पिचकारी योग जल लाके। जिन अथिर लखा० ॥

जब लगे महीना फाग करें अनुराग सभी नर नारी। लै फिरैं फैंट में गुलाल कर पिचकारी॥ जब श्री मुनिवर गुणवान अचल धर ध्यान करें तप भारी। कर शील सुधारस कर्मन ऊपर डारी॥

झड़—कीर्ति कुमकुमें बनावें, कर्मों से फाग रचावें। जो वारा-मासा गावें, सो अजर अमर पद पावें॥ यह भाखे जीयालाल धर्म गुणमाल योग दर्शाके। जिन अथिर लखा संसार बसे वन जाके॥

इति श्री मुनिजी का वारामासा समाप्तम्॥

बारहमासा वज्रदन्त

[यति नयन सुख दास कृत]

सवैया—वन्दूं मैं जिनन्द परमानन्द के कन्द जगवन्द विमलैंदु जड़ता ताप हरनकूं। इन्द्र धरणिन्द्र गौतमादिक गणेन्द्र जाहि सेव राव रंक भव सागर तरनकूं॥ निर्बन्ध निर्द्वन्द दीन बन्धु दयासिन्धु करे उपदेश परमारथ करनकूं। गावे नैनसुखदास वज्रदन्त बारहमास मेटो भगवन्त मेरे जन्म मरनकूं॥१

दोहा—वज्रदन्त चक्रेश की, कथा सुनो मन लाय।
कर्म काट शिवपुर गये, बारह भावन भाय॥२

बैठ वज्रदन्त आय आपनी सभा लगाय ताके पास बैठे राय बत्तीस हजार हैं। इन्द्र कैसे भोगसार राणी छाणव हजार पुत्र एक सहस्र महान् गुणागार हैं॥ जाके पुण्य प्रचण्ड से नये हैं बलबंड शत्रु हाथ जोड़ मान छोड़ सवैं दरवार हैं। ऐसो काल पाय माली लायो एक डाली तामें देखो अलि अम्बुज मरण भयकार हैं॥३

अहो यह भोग महा पाप को संयोग देखो डाली में कमल तामें भौंरा प्राण हरे हैं। नाशिका के हेतु भयो भोग में अचेत

सारी रैन के कलाप में विलाप इन करे हैं ॥ हम तो पांचों ही के भोगी भये जोगी नाहिं विषय कषायन के जाल मांहिं परे हैं। जो न अब हित करूँ जाने कौन गति परूँ सुतन बुलाके यों बच अनुसरे हैं ॥ ४ ॥

अहो सुत जग रीति देख के हमारी नीति भई है उदास बनोबास अनुसरेंगे। राजभार सीस धरो परजा का हित करो हम कर्म शत्रन की फौजन सू लरेंगे ॥ सुनत वचन तब कहत कुमार सब हम तो उगाल कूं न अङ्गीकार करेंगे। आप बुरो जान छोड़ो हमें जग जाल बोड़ो तुमरे ही संग महाव्रत धरेंगे ॥ ५ ॥

॥ चौपाई ॥

सुत आषाढ़ आयो पावस काल। सिर पर गर्जत यम विकराल ॥
लेहुराज सुख करहुँ विनती। हम बन जाय बड़ेन की रीति ॥ ६ ॥

गीता छन्द—जांय तप के हेत बन को भोग तज संशय धरें। तज ग्रन्थ सब निर्ग्रन्थ हो संसार सागर से तरें ॥ यही हमारे मन बसी तुम रहो धीरज धार के। कुल आपने की रीति चालो राजनीति विचार के ॥ ७ ॥

॥ चौपाई ॥

पिता राज तुम कीनो वौन। ताहि ग्रहण हम समरथ हौन ॥
यह भौंरा भौगन को व्यथा। प्रगट करत करकंगन यथा ॥ ८ ॥

गीता छन्द—यथा करका कांगना सन्मुख प्रगट न जरा परे। त्योंही पिता भौंरा निरखि भव भोग से मन थर हरे ॥ तुमने जो बन के वास ही को सुख अङ्गीकृत किया। तुमरी समझ सोई समझ हमरी हमें नृप पद क्यों दिया ॥ ९ ॥

॥ चौपाई ॥

श्रावण पुत्र कठिन बनवास। जल थल सीत पवन के त्रास ॥
जो नहिं पले साधु आचार। तो मुनि भेष लजावे सार ॥ १० ॥

छन्द—लाजे श्री मुनी भेष तातैं देह का साधन करो। सम्यक्त युतव्रतपंच में तुम देश व्रत मन में धरो॥ हिंसा असत चोरी परिग्रह ब्रह्मचर्य सुधार के। कुल आपने की रीति चालो राजनीति विचार के॥ ११॥

॥ चौपाई॥

पिता अङ्ग यह हमरो नाहिं। भूख प्यास पुद्गल परछांहि॥
पाय परीषह कबहुं न भजैं। धर सन्यास मरण तन तजैं॥ १२॥

छन्द—संन्यास धर तनकूं तजें नहिं डंश मंसक से डरें। रहें नग्न तन वन खण्ड में जहाँ मेघ मूसल जल परें॥ तुम धन्य हो बड़ भाग तज के राज तप उद्यम किया। तुमरी समझ सोई समझ हमरी हमें नृप पद क्यों दिया॥ १३॥

॥ चौपाई॥

भादों में सुत उपजे रोग। आवें याद महल के भोग॥
जो प्रमाद वस आसन टले। तो न दयाव्रत तुमसे पले॥१४॥

छन्द—जब दयाव्रत नहिं पले तब उपहास जग में विस्तरे। अर्हत और निर्ग्रंथ की कहो कौन फिर सरधा करे॥ तातै करो मुनि दान पूजा राज काज संभाल के। कुल आपने की॥१५॥

॥ चौपाई॥

हम तजि भोग चलेंगे साथ। मिटे रोग भव भव के तात॥
समता मन्दिर में पग धरें। अनुभव अमृत सेवन करैं॥१६॥

छन्द—करैं अनुभव पान आतम ध्यान वीणा कर धरें। आलाप मेघ मल्हार सो हैं सप्तभंगी स्वर भरे। धृग् धृग् पखावज भोग कू सन्तोष मन में कर लिया। तुमरी समझ सोई समझ० ॥१७॥

॥ चौपाई॥

आशुज भोग तजे नहि जांय। भोगी जीवन की डसि खांय॥
मोह लहर जिया की सुध हरे। ग्यारह गुण थानक चढ़ गिरे॥१८॥

छन्द—गिरे थानक ग्यारवें से आय मिथ्याभू परे। विन भाव की थिरता जगत में चतुर्गति के दुःख भरे॥ रहे द्रव्य लिङ्गी जगत् में विन ज्ञान पौरुष हार के। कुल आपने की रीति चालो राजनीति विचार के॥१६॥

॥ चौपाई ॥

विषे विड़ार पिता तन कसें। गिर कन्दर निर्जन बन बसें॥
महामंत्र को लखि परभाव। भोग भुजङ्गन चाले घाव॥२०॥

छन्द—घाले न भोग भुजङ्ग तब क्यों मोह की लहरा चढ़े। परमाद तज परमात्मा प्रकाश जिन आगम पढ़े। फिर काल लब्धि उद्योत होय सुहोय यों मन थिर किया॥तुमरी समझ॥२१॥

॥ चौपाई ॥

कातिक में सुत करें विहार। कांटे कांकर चुभें अपार॥
मारें दुष्ट खैंच के तीर। फाटे उर थरहरे शरीर॥२२॥

छन्द—थरहरे सगरी देह अपने हाथ काढ़त नहि बने। नहि और काहू से कहें तब देह की थिरता हनें। कोई खैंच वांधे थम्भ से कोई खाय आंत निकाल के। कुल आपने की रीति चालो राजनीति विचार के॥२३॥

॥ चौपाई ॥

पद पद पुण्य धरा में चलें। कांटे पाप सकल दल मलें॥
क्षमा ढाल तल धरें शरीर। विफल करें दुष्टन के तीर॥२४॥

छन्द—कर दुष्ट जन के तीर निष्फल दया कुंजर पर चढ़ें। तुम संग समता खडग लेकर अष्ट कर्मन से लड़ें॥ धन धन्य यह दिनवार प्रभु तुम योग का उद्यम किया। तुमरी समझ सोई समझ हमरी हमें नृप पद क्यों दिया॥२५॥

॥ चौपाई ॥

अगहन मुनि तटनी तट रहें। ग्रीषम शैल शिखर दुख सहें॥
पुनि जब आवत पावस काल। रहें साध जन वन विकराल॥२६॥

छन्द—रहें वन विकराल में जहाँ सिंह श्याल सतावहीं। कानों में वीछू बिल करें और व्याल तन लिपटावहीं॥ दे कष्ट प्रेत पिशाच आन अङ्गार पाथर डारके। कुल आप ने की रीति चालो राजनीति विचार के॥२७॥

॥ चौपाई ॥

हे प्रभु बहुत बार दुःख सहे। बिना केवली जाय न कहे॥
शीत उष्ण नर्कन के तात। करत याद कम्पे सब गात॥२८

छन्द—गात कम्पे नर्क से लहे शीत उष्ण अथाय ही। जहाँ लाख योजन लोह पिण्ड सुहोय जल गल जाय ही॥ असिपत्र वन के दुःख सहे परवस स्ववस तपना किया। तुमरी समझ सोई समझ हमरी हमें नृपपद क्यों दिया॥२९॥

॥ चौपाई ॥

पौष अर्थ अरु लेहु गयंद। चौरासी लख लख सुखकन्द॥
कोड़ि अठारह घोड़ा लेहु। लाख कोड़ि हल चलत गिनेहु॥३०

छन्द—लेहु हल लख कोड़ि षटखण्ड भूमि अरु नवनिधि वड़ी। लो देश को विभूति हमारी राशि रत्नन की पड़ी। धर देहुं सिरपर छत्र तुमरे नगर घोख उचारिके। कुल आपने की रीति चालो राजनीति विचार के॥३१॥

॥ चौपाई ॥

अहो कृपानिधि तुम परशाद। भोगे भोग सबै मरयाद॥
अब न भोग की हमकूं चाह। भोगन में भूले शिव राह॥३२

छन्द—राह भूले मुक्ति की बहु वार सुरगति संचरे। जहां कल्प वृत्त सुगन्ध सुन्दर अपछरा मन को हरे॥ उदधि पी नहिं

भया तिरपत ओष पी कै दिन जिया । तुमरी समझ सोई समझ हमरी हमें नृप पद क्यों दिया ॥ ३३ ॥

॥ चौपाई ॥

माघ सघैन सुरन तै सोय । भोग भूमियन तैं नहिं होय ॥
हर हरि अरु प्रति हरि से वीर । संयम हेत धरें नहिं धीर ॥ ३४

छन्द—संयम कूं धीरज नहिं धरें नहिं टरें रण में युद्ध सूं । जो शत्रु गण गजराज कूं दलमले पकर विरुद्ध सूं । पुनि कोटि सिल मुद्गर समानी देय फैंक उपार के । कुल आपने की० ॥३५॥

॥ चौपाई ॥

बंधयोग उद्यम नहिं करें । एतो तात कर्म फल भरें ॥
बांधे पूर्व भव गति जिसी । भुगतें जीव जगत् में तिसी ॥ ३६ ॥

छन्द—जीव भुगतें कर्म फल कहो कौन विधि संयम धरें । जिन बंध जैसा बांधियो तैसाही सुख दुख सो भरें । यों जान सबको बंध में निर्बंध का उद्यम किया । तुमरी समझ सोई समझ हमरी हमें नृप पद क्यों दिया ॥ ३७ ॥

॥ चौपाई ॥

फाल्गुन चाले शीतल वायु । थर थर कम्पे सबकी काय ॥
तब भव बंध विदारण हार । त्यागें मूढ़ महाव्रत सार ॥ ३८ ॥

छन्द—सार परिग्रह व्रत विसारें अग्नि चहुँदिशि जा रही । करें मूढ़ सीत वितीत दुर्गति गहें हाथ पसारही । सो होय प्रेत पिशाच भूतरु ऊत शुभगति टारके । कुल आपने की रीति० ॥ ३९ ॥

॥ चौपाई ॥

हे मतिवन्त कहा तुम कही । प्रलय पवन की वेदन सही ॥
धारी मच्छ कच्छ की काय । सहे दुख जलचर पर जाय ॥ ४० ॥

छन्द—पाय पशु परजाय परवस रहे सिंग बंधाय के। जहाँ रोम रोम शरीर कम्पे मरे तन तरफाय के। फिर गेर चाम छवेर स्वान सिचना मिल श्रोणित पिया। तुमरी समझ सोही समझ हमरी हमें नृप पद क्यों दिया ॥ ४१ ॥

॥ चौपाई ॥

चैत लता मदनोदय होय। ऋतु वसन्त में फूले सोय॥
तिन की इष्ट गन्ध के जोर। जागे काम महाबल फोर ॥४२

छन्द—फोर बलको काम जागे लेय मन पुरछी नहीं। फिर ज्ञान परम निधान हरिके करे तेरा तीन ही। इतके न उतके तब रह गए कुगति दोऊ कर भार के॥ कुल आपने की रीतिं चालो राजनीति विचार के ॥४३

॥ चौपाई ॥

ऋतु वसन्त वन में नहिं रहें। भूमि पसाण परीषह सहें॥
जहाँ नहिं हरति काय अंकूर। उड़त निरन्तर अहनिशि धूर ॥४४

छन्द—उड़े वन की धूर निशि दिन लगें काँकर आयके सुन शब्द प्रेत प्रचण्ड के काम जाँय पलाय के। मत कहो अब कछु और प्रभु भव भोग में मन काँपिया। तुमरी समझ सोइ समझ हमरी हमें नृप पद क्यों दिया ॥४५

॥ चौपाई ॥

मास वैशाख सुनत अरदास। चक्री मन उपज्यो विश्वास।
अब बोलन को नाही ठौर। मैं कहूं और पुत्र कहे और ॥४६

छन्द—और अब कछु मैं कहुँ नहीं रीति जग की कीजिये। एक बार हमसे राज लेके चाहे जिसको दीजिये। पोता था एक षटमास का अभिषेक कर राजा कियो। पितु संग सग जगजाल सेती निकस वन मारग लियो ॥४७

॥ चौपाई ॥

उठे वज्रदन्त चक्रेश। तीस सहस भूप तजि अलवेश।
एक हजार पुत्र बड़भाग। साठ सहस्र सती जग त्याग ॥ ४८

छन्द—त्याग जगकूँ ये चले सब भोग तज ममता हरी।
शमभाव कर तिहुँलोक के जीवों से यों विनती करी
अहो जेते हैं सब जीव जग में क्षमा हम पर कीजियो।
हम जैन दीक्षा लेत है तुम वैर सब तज दीजियो ॥ ४९

छन्द—वैर सबसे हम तजा अर्हत का शरण लिया।
श्रीसिद्ध साहूकी शरण सर्वज्ञ के मत चित दिया।
यों भाष पिहिताश्रव गुरुन ढिंग जैन दीक्षा आदरी।
कर लौंच तज के सोच सबने ध्यान में दृढ़ता धरी ॥५०

॥ चौपाई ॥

जेठ मास लू ताती चले। सकै सर कपिगण मदगलें ॥
ग्रीषम काल शिखर के सास। धरो अतापन योग मुनिश ॥५१

छन्द—धरयोग आतापन सुगुरु ने तब शुक्ल ध्यान लगाइयो।
तिहुँ लोकभानु समान केवल ज्ञान तिन प्रगटाइयो।
वज्रतन्त मुनीश जग तज कर्म के सन्मुख भये।
निज काज अरु परकाज करके समय में शिवपुर गये।

॥ चौपाई ॥

सम्यक्त्यादि सुगुण आधार। भये निरंजन निर्आकार ॥
आवागमन तलांजलि दई सब जीवन की शुभगति भई ॥५३

छन्द—भई शुभगति सबन की जिन शरण जिनपति की लई।
पुरुषार्थ सिद्ध उपाय से परमारथ की सिद्धी भई।
जो पढ़े बारामास भावन भाये चित्त हुलसाय के।
तिनके हों मंगल नित नये अरु विघ्न जाय पलायके ॥५४

दोहा

नित नित तत्र मंगल बढ़ैं, पढ़े जो यह गुणमाल।
सुरनर के सुख भोग कर, पावैं मोक्ष रसाल ॥ ५५ ॥

सवैया—दो हजार मांहितैं तिहत्तर घटाय अब विक्रम को सवत् विचार कै धरस हूँ। अगहन असि त्रयोदशी मृगांक वार अर्द्ध निशा मांहि याहि पूर्ण करत हूँ ॥ इति श्री वज्रदन्त चक्रवर्ति को वृत्तान्त रच के पवित्र नैन आनन्द भरत हूँ। ज्ञानवन्त करो शुद्ध जान मेरी बाल बुद्धि दोष पै न रोष करो पायन हरत हूँ ॥५६

इति वज्रदन्त चक्रवर्ति का बारहमासा सम्पूर्णम् ॥

अथ पखवाड़ा

वानी एक नमों सदा, एक दरव आकाश ।
एक धर्म अधर्म दरब, पडवा शुद्ध प्रकाश ॥

दोज दुनंद सिद्ध संसार, संसारी त्रस थावर धार।
सुपर दया दोनों मन धारो, राग दोष तजि समता करो ॥

तीज त्रिपात्र दान नित भजो, तीन काल सामायिक सजो।
त्रै उत्पात ध्रौव्य पद साध, मन वच तन थिर होय समाध ॥

चौथ चार विधि दान विचार, चारों आराधन संभार।
मैत्री आदि भावना चार, चार बंधसों भिन्न निहार ॥

पांच पंच लब्धि लहि जीव, भज परमेष्ठी पंच सदीव।
पांच भेद स्वाध्याय बखान, पांचों पैतारे पहचान ॥

छठ छः लेश्या के पुरनाम, पूजा आदि करो षट काम।
पुद्गल के जानो षट भेद, छहों काल लखि कै सुख वेद ॥

सातैं सात नरक मे डरो, सात खेत धन जल सो भरो।
सातों नय समझो गुणवंत, सात तत्त्व सरधा करि संत ॥

आठें आठ दरस के अंग, ज्ञान आठ विध सहो अभंग।
आठ भेद पूजा जिन राय, आठ योग कीजे मन लाय॥
नौमी शील बाढि नौ पाल, प्रायश्चित नौ भेद संभाल।
नौ चायिक गुण मन में राख, नौ कषाय की तजि अभिलाख॥
दशमी दश पुदगल पर जाय, दशों बंध हर चेतन राय।
जनमत दश अतिशय जिन राज दशविधि परिग्रह सों क्या काज॥
ग्यारह ग्यारह भाव समाज, सब अहमिन्द्र ग्यारह राज।
ग्यारह जोग सुरलोक मझार, ग्यारह अंग पढ़े मुनिसार॥
बारह बारह विध उपयोग, बारह प्रकृति दोष की रोग।
बारह चक्रवर्ति लखि लेहु, बारह अव्रत को तज देहु॥
तेरसि तेरे श्रावक थान, तेरह भेद मनुज पहचान।
तेरह राग प्रकृति सब निंद, तेरह भाव अयोग जिनन्द॥
चौदस चोदह पूरव जान, चौदह बाहिज अंग बखान।
चौदह अन्तर परिग्रह डार, चौदह जीव समास विचार॥
मावस सम पन्द्रह परमाद, कदम भूमि पन्द्रह अनाद।
पंच शरीर पन्द्रह रूप, पन्द्रह प्रकृति हरें मुनि भूप॥
सोलह कषाय राह घटाय, सोलह कला सम भावन भाय।
पूरन मासी सोलै ध्यान, सोलै स्वर्ग कहे भगवान्॥
सब चर्चा की चर्चा एक, आतम पर पर टेक।
लाख कोटि ग्रन्थन को सार, भेद ज्ञान अरु दया विचार॥
दोहा—गुण विलास सब तिथि कही, है परमारथ रूप।
पढ़े सुने जो मन धरे, उपजे ज्ञान अनूप॥

वैराग्यभावना भजन

संत साधो बन के विचरूं, वह घड़ी कब आयगी।
शान्ति तब मेरे वैराग्य की छा जायगी॥ टेक॥

मोह ममता त्याग दूं सब कुटुम्ब परिवार से,
छोड़ दूं झूठी लगन धन धाम और घर बार से।
मोह तज दूं महलो मन्दिर और चमन गुलजार से॥
बन में जा डेरा करूँ मुँह मोड़ इस संसार से॥ १॥

इस जगत में जो पदारथ आ रहे मुझको नजर,
थिर नहीं हैं एक इनमें, है यह सब के सब अथिर।
जिन्दगी का क्या भरोसा, यह रही हर दम गुजर॥
दम है जब तक दममें दम है दममें दम से बे खबर॥२

कौन सी वह चीज है जिस पर लगाऊँ दिल यहाँ,
आज जीवन बन रहा, जो कल भला वह फिर कहाँ।
माल ओ धन की सब हकीकत है जमाने पर अयां॥
क्या भरोसा लक्ष्मी का अब यहाँ और कल वहाँ॥ ३॥

बाप मां अरु बहन भाई बेटा बेटी नार क्या,
सब सगे अपनी गरज के यार क्या परिवार क्या।
बात मतलब से करे सब जगत क्या संसार क्या॥
बिन गरज पूछे न कोई बात क्या तकरार क्या॥ ४॥

था अकेला हूँ अकेला अरु अकेला ही रहूँ,
जो पड़े दुख में सहे अरु जो पड़े सो मैं सहूँ।
कौन है अपना सहायक कौन का शरणा गहूँ॥
फिर भला किसको जगत में अपना हमराही कहूँ॥ ५॥

ज्ञान रूपी जाल से अग्नि क्रोध की शीतल करूँ,
मान माया लोभ राग अरु द्वेष आदिक परिहरूँ।
बसमें विषयों को करूँ अरु सब कषायों को हरूँ॥
शुद्ध चित आनन्द से मैं ध्यान आतम का धरूँ॥ ६॥

जग के सब जीवों से अपना प्रेम हो अरु प्यार हो,
और मेरी इस देह से संसार का उपकार हो।

ज्ञान का प्रचार हो अरु देश का उद्धार हो॥
प्रेम अरु आनन्द का व्यवहार घर घर द्वार हो॥ ७॥
काल सर पर काल का खंजर लिए तय्यार है,
कौन बच सकता है इससे इसका गहरा वार है।
हाय जब हर हर कदम पर इस तरह से हार है॥
फिर न क्यों वह राह पकड़ूं सुख का जो भण्डार है॥८॥
प्रेम का मन्दिर बना कर ज्ञान देव कूं दूं बिठा।
और आनन्द शान्ति के घड़ियाल घण्टे दूं बजा॥
और पुजारी बनके दूं मैं सबको आतम रस चखा।
यह करूँ उपदेश जग में कर भला तो होगा भला॥ ९॥
आय वह कब शुभ घड़ी जब बन विचरता मैं फिरूँ।
शान्ति से तब शान्ति गंगा का मैं निर्मल जल पिऊँ॥
"ज्योति" से गुणज्ञान की अज्ञान सब जग का दहूं।
होय सब जगका भला यह बात मैं हर दम चहूं॥ १०॥

भावना भजन

भावना दिन रात मेरी सब सुखी संसार हो।
सत्य संयम शील का व्यवहार घर घर बार हो॥ टेक॥
धर्म का प्रचार हो और देश का उद्धार हो।
और यह उजड़ा हुआ भारत चमन गुलजार हो॥ १॥
रोशनी से ज्ञान की संसार में परकाश हो।
धर्म की तलवार से हिंसा का सत्यानाश हो।
शान्ति अरु आनन्द का हर एक घर में वास हो।
वीर वाणी पर सभी संसार का विश्वास हो॥ ३॥
रोग और भय शोक होवें दूर सब परमात्मा।
करसके कल्याण "ज्योति" सब जगत की आत्मा॥४॥

पद्मावती स्तोत्र

जिन शासनी हंसासनी पद्मासनी माता ।
भुज चारते फल चारु दे पद्मावती माता ॥ टेक ॥

जब पार्श्वनाथजी ने शुकल ध्यान अरम्भा;
कमठेश ने उपसर्ग तब किया था अचम्भा ।
निज नाथ सहित आय के सहाय किया है,
जिन नाथ को निज माथ पै चढ़ाय लिया है ॥ जिन० ॥ १ ॥

फल बीन सुमन लीन तेरे शीश विराजै ।
जिनराज तहां ध्यान धरें आप विराजै ।
फनिइन्द ने फनि की करी जिनन्द पै छाया,
उपसग वर्ग मेट के आनन्द बढ़ाया ॥ जिन० ॥ २ ॥

जिन पार्श्व को हुवा तभी केवल सुज्ञान है,
समवादी सरन की बनी रचना महान है ।
प्रभू ने दियो धर्मार्थ काम मोक्ष दान है,
तब इन्द्र आदि ने किया पूजा विधान है ॥ जिन० ॥ ३ ॥

जब से किया तुम पार्श्व के उपसर्ग का विनाश,
तब से हुवा जस आपका त्रैलोक में प्रकाश ।
इन्द्रादि ने भी आपके गुण में किया हुलास,
किस वास्ते कि इन्द्र खास पार्श्व का है दास ॥ जिन० ॥ ४ ॥

धर्मानुराग रंग से उमंग भरी हो,
संध्या समान लाल रंग अंग धरी हो ।
जिन संत शीलवन्त पै तुरन्त खड़ी हो,
मनभावती दरसावती आनन्द बड़ी हो ॥ जिन० ॥ ५ ॥

जिन धर्म की प्रभावना का किया है,
तिन साध ने भी आपकी सहाय किया है ।

तब आपने उस बात को बनाय दिया है,
जिन धर्म के निशान फहराय दिया है ॥ जिन० ॥ ६ ॥

था बौध ने तारा का किया कुम्भ में थापन,
अकलंकजी से करते रहे वाद बेहापन ।
तब आपने सहाय किया धाय मात धन,
तारा का हरा मान हुवा बौध उत्थापन ॥ जिन० ॥ ७ ॥

इत्यादि जहां धर्म का विवाद पड़ा है,
तहां आपने परवादियों का मान हरा है ।
तुमसे यह स्यादवाद का निशान खरा है,
इस वास्ते हम आपसे अनुराग धरा है ॥ जिन० ॥ ८ ॥

तुम शब्द ब्रह्मरूप मन्त्र मूर्ति धरैया,
चिन्तामनी समान कामना की भरैया ।
जप जाप जोग जैन की सब सिद्ध करैया,
परवाद के प्रयोग की तत्काल हरैया ॥ जिन० ॥ ९ ॥

लखि पार्श्व तेरे पास शत्र त्रास तें भाजै,
अंकुश निहार दुष्ट जुष्ट दर्प को त्याजै ।
दुःख रूप खर्व गर्व को वह वज्र हरै है,
कर कंज में इक कंज सो सुख पुंज भरै है ॥ जिन० ॥१०॥

चरणारविन्द में है नूपुरादि आभरन,
कटि में है सार मेखला प्रमोद की करन ।
उर में है सुमन माल सुमन भान की माला,
पट रंग अंग संग सों सोहै विशाला ॥ जिन० ॥११॥

करकज चारु भूषन सों भूरि भरा है,
भवि वृंद को आनन्द कंद पूरि करा है ।
जुग भान कान कुंडल सों जोति धरा है,
शिर शीस फूल २ सों अतूल धरा है ॥ जिन० ॥१२॥

मुख चन्द को अमंग देख चंद भी हूँ थम्भा,
छवि हेर हार हो रहा रम्भा को अचम्भा ।
दृग तीन सहित लाल तिलक भाल धरे हैं,
विकसित मुखारविन्द सों आनंद भरे हैं ॥ जिन० ॥१३॥

जो आपको त्रिकाल लाल चाल सो ध्यावै,
विकराल भूमिपालु उसे भाल झुकावै ।
जो प्रीत सो प्रतीत सपरीति बढ़ावे,
सो रिधि सिधि वृद्धि नवो निधि की पावे ॥ जिन० ॥१४॥

जो दीप दान के विधान से तुम्हें जपै,
तो पाप के निधान तेज पुंज से दिपै ।
जो भेद मंत्र निवेद किया है,
सो बाध के उपाध सिद्ध साथ लिया है ॥ जिन० ॥१५॥

धन धान्य का अर्थी है सो धन धान्य को पावै,
सन्तान का अर्थी है सो सन्तान खिलावै ।
निजराज का अर्थी है सो फिर राज लहावै,
पद भ्रष्ट सुपद पायकै मनमोद बढ़ावै ॥ जिन० ॥१६॥

ग्रह क्रूर व्यन्तराल व्याल जाल पूतना,
तुम नाम के सुनत ही सों भागे हैं भूतना ।
कफ वात पित्त रक्त रोग शोक शाकिनी,
तुम नाम तैं डरी मही परात डाकिनी ॥ जिन० ॥१७॥

भयभीत की हरनी है तुही मात भवानी,
उपसर्ग दुर्ग द्रावती दुर्गावती रानी ।
तुम संकटा समस्त कष्ट काटनी दानी,
सुख सार की करनी तू शंकरीश महारानी ॥ जिन० ॥१८॥

इस वक्त में जिन भक्त को दुख व्यक्त सतावै,
ऐ बात तुझे देखिके क्या दर्द ना आवै ।

सब दिन से तो करती रही जिन भक्त पै छाया,
किस वास्ते उस बात को ऐ मात भुलाया ॥ जिन० ॥१६॥
हो मात मेरे सर्व ही अपराध छिपा कर,
होता नहीं क्या बाल से कुचाल यहां पर,
कुपुत्र तो होते हैं जगत मांहि सरासर,
माता न तजै तिनसों कभी नेह जन्म भर ॥ जिन० ॥२०॥
अब मात मेरी बात को सब भांत सुधारो,
मन कामना को सिद्ध करो विघ्न विदारो ।
मति देर करो मेरी ओर नेक निहारो,
करकंज की छाया करो दुख दर्द निवारो ॥ जिन० ॥२१॥
ब्रह्मंडनी सुखमंडनी खलमंडनी ख्याता,
दुख टारिके परिवार सहित दे मुझे साता ।
तज के विलम्ब अंबजी अवलम्ब दीजिये,
वृष चन्द नन्द वृन्द को आनन्द दीजिये ॥ जिन० ॥२२॥
जिन धर्म से डिगने का कहीं आपड़े कारन,
तो लीजिये उबार मुझे भक्त उदारन ।
निज कर्म के संजोग से जिस जोन में जावो,
तहां दीजिये सम्यक्त्व जो शिव धाम को पांवो ॥ जिन० ॥२३॥
जिन शासिनी हंसासनी पदमावती माता,
भुज चारतें फल चारु दे पदमावती माता ॥ जिन० ॥२४॥

शास्त्र भक्ति

अकेला ही हूँ मै कर्म सब आये सिमटिके ।
लिया है मैं तेरा शरण अब माता सटकि के ॥
भ्रमावत है मोको-करम दुःख देता जनम का ।
करों भक्ति तेरी, हरो दुख माता भ्रमण का ॥ १ ॥

दुःखी हुआ भारी, भ्रमत फिरता हूँ जगत में,
सहा जाता नाहीं अकल घबराई भ्रमण में।
करों क्या मा मोरी, चलतवश नाहीं मिटन का ॥करों भक्ति ॥२॥
सुनो माता मोरी, अरज करता हूँ दरद में;
दुखी जानों मोकों; डरप कर आयो शरण में।
कृपा ऐसी कीजे, दरद मिट जावे मरण ॥ करों भक्ति० ॥३॥
पिलावे जो मोकों सुबुधकर प्याला अमृत का;
मिटावै जो मेरा, सरब दुख सारा फिरन का।
पडूँ पावां तेरे हरो दुख सारा फिकर का ॥ करूं भक्ति० ॥४॥

सवैया

मिथ्यातम नाशवे को, ज्ञान के प्रकाशवे को।
आया परमास वे को भानुसी वखानी है ॥
छहों द्रव्य जान वे को, वसु विधि मानवे को।
स्व पर पिछान वे को परम प्रमानी है ॥
अनुभौ बताय वें को, जीव के जताय वे को।
काहू न सताय वे को भव्य उर आनी ॥
जहाँ तहाँ तारवे को, पार के उतार वे को।
सुख विस्तार वे को, ऐसी जिन वाणी है ॥५॥

दोहा—जिनवानी की स्तुति करैं, अल्प बुद्धि परमान।
पन्नालाल विनति करैं, दे माता मोहि ज्ञान ॥६॥
हे जिन वाणी भारती, तोहि जपूं दिन रैन।
जो तेरा शरणा गहै, सुख पावै दिन रैन ॥७॥
जा वानी के ज्ञान तैं, सूझै लोका लोक।
सो वाणी मस्तक चढो, सदा देत हों धोक ॥८॥

॥ इति ॥

स्व० त्यागी दौलतरामजी वर्णी कृत

श्रीनयनागिरि पूजा।

दोहा।

पावन परम सुहावनो, गिरि रेशिन्दि अनूप।
जजहुँ मोद उर धार अति, कर त्रिकरण शुचिरूप ॥

ॐ ह्रीं श्रीनयनागिरिसिद्धक्षेत्रसे वरदत्तादि पच ऋषिराज सिद्धपद प्राप्तये अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अति निर्मल क्षीरधि वारि, भर हाटक झारी।
जिन अग्र देय त्रय धार, करन त्रिरुग छारी ॥
पन वरदत्तादि मुनीन्द्र, शिवथल सुखदाई।
पूजों श्रीगिरिरेशिन्दि, प्रमुदित चित थाई ॥

ॐ ह्रीं श्री गिरिरेशिन्दिसिद्धक्षेत्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं नि० ॥ १ ॥

मलयागिरि चन्दन सार, केशर रंग घसी।
शीतल वासित सुखकार, जन्मातापकसी ॥ पनवर० ॥ चन्दनं
शुचि विमल नवल अति श्वेत, द्युति जित सोमतनी।
सो ले पद अक्षय हेत, अक्षत युक्त अनी ॥ पन वर० ॥ अक्षतं
शुभ सुमन त्रिदश-तरुकेय, स्वच्छ करण्ड भरी।
मदब्रह्म तनुज हरनेय, भेंट जिनाग्र धरी ॥ पन वर० ॥ पुष्पं
क्षुध फणहि विहंगमनाथ, नेवज सद्यानी। कर विविध मधुर रस साथ, विधि युत अमलानी ॥ पन० ॥ नैवेद्य

मिथ्यातम भानन भानु, स्वपर उजास कृती ।
ले मणिमय दीप सुभानि, विमल प्रकाश धृती ॥ प० ॥ दीपं
कर्मेन्धन जारन काज, पावक भाव मही ।
वर दश विधि धूपहि साज, खेय उछाह गही ॥ प० ॥ धूपं
दृग घ्राण रसन मन प्रीय, प्रासुक रस भीने । लख दायक
मोक्ष पदीय, लै फल अमलीने ॥ प० ॥ फलं
शुचि अमृत आंद समग्र, सजि वसु द्रव्य प्रिया ।
धारों त्रिजगतपति अग्र, धर वर भक्त हिया ॥ प० ॥ अर्घं

जयमाला ।

दोहा ।

जग बाधक विधि बाधकर, ह्वै अवाध शिव धाम ।
निवसे तिन गुण धर सुहृद, गाऊँ वर जयदाम ॥१॥

पद्धरी छंद ।

जय जय जिन पार्श्व जगत्रि स्वाम । भवदधि तारण तारी ललाम ॥
हनि घाति चतुक ह्वै युक्त सन्त । दृगज्ञान शर्म वीरज अनन्त ॥१॥
सो समवशरण कमला समेत । विहरत विहरत पुर ग्राम खेत ॥
सुर नर मुनिगण सेवत कृपाल । आये भव हितु तिहिं अचल भाल ॥२॥
अरु वरदत्तादि मुनीन्द्र पंच । चतुर्विधि हनि केवल ज्ञान संच ॥
लख सर्व चराचर त्रिजग केय । त्रैकालिक युगपद् पद अमेय ॥३॥
निज आनन द्वै विध वृषस्वरूप । उपदेश भरण भवि भर्म कूप ॥
दृगज्ञान चरण सम्यक प्रकार । शिवपथ साधक कह त्रिजग तार ॥४॥
अरु सप्त तत्त्व षट द्रव्य केव । पंचास्तिकाय नव पदन भेव ॥
दृग कारण सो दरशाय ईश । तिहि भूधर शिर पुनि अघाति पीश ॥५॥

पंचमगति निवसे तब सुरेश। आके ले सुरगण संग अशेष॥
रेशिन्दि शिखर रज शीस ल्याय। किय पंचम कल्यानक उछाय॥६॥
मैं तिन पद पावन चाह ठान। बंदों पुनि पुनि सो सुखद थान॥
मन वच तन तिन गुण स्व उर धार। 'वर्णी दौलत' अनचाह हार॥७

ॐ ह्रीं श्रीगिरिरेशिन्दिसिद्धक्षेत्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा।

आनंद कन्द मुनीन्द्र गुण, धर उरकोष मझार।
पूजें ध्यावें सो सुधी, ह्वै लघु महि भव पार॥८॥

इत्याशीर्वादः।

पं० दरयावजी चौधरी कृत

श्रीद्रोणागिरि पूजा।

सिद्धक्षेत्र परवत कहो, द्रोनागिरि तसु नाम।
गुरुदत्तादि मुनीश नमि, मुक्ति गये इहि ठाम॥ १॥
इहि थल जिन प्रतिमा भवन, बने अपूरव धाम।
तिन प्रति पुष्प चढ़ाइये, और सकल तज काम॥ २॥

ॐ ह्रीं श्रीद्रोणागिरि सिद्धक्षेत्रसे गुरुदत्तादि मुनि सिद्धपद प्राप्तये अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

सरस छीर सु नीर गहीर ले, जिन सुचरनन धारा दीजिए।
नशत जन्म जरा मरन रोग हैं, मिटत भवदुख शिवसुख होत हैं॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणागिरि सिद्धक्षेत्राय जन्ममृत्यु विनाशनाय जलं नि०॥१॥

अगर कुमकुम चन्दन गारिये, जिन चढ़ाय सो ताप निवारिये।
जगत जन जे भव आताप ते, चर्च जिनपद अघ इमि नाशते ॥ चंदनं
देवजीरो उर सुख दासके, पावनी घन केशर आदिके।
सरस अनयारे अनवीध ले, पुंज निजपद आनन तीन दे ॥ अक्षतं
सरस बेला और गुलाब ले, केवरो इत आदि सुवास ले।
जिनचढ़ाय सुहर्षे सुपाव ते, मदनकाम व्यथा सब नाशते ॥ पुष्पं
पूरियाँ पेड़ादि सु आनिये, खोपरा खुरमादिक जानिये।
सरस सुन्दर थार सु धारिये, जिन चढ़ाय छुधादि निवारिये ॥ नैवेद्यं
रतन मणिमय जोति उद्योत है, मोह तम नशि ज्ञानहु होत है।
करत जिन तट भविजन आरती, सकल जन्मन ज्ञान सु भासती ॥ दीपं
कूट वसु विधि धूप अनूप है, महका रही अति सुन्दर अग्नि है।
खेइये जिन अग्र सु आयकें, ज्वलन मध्य सु कर्म नशायकें ॥ धूपं
नारियल सु छुहारे ल्याइये, जायफल बदाम मिलाइये।
लायची पुंगी फल ले सही, जजत शिवपुरकी पावै मही ॥ फलं
जल सु चन्दन अक्षत लीजिये, पुष्प धर नैवेद्य गनीजिये।
दीपधूपसुफल बहुसाजहीं, जिनचढ़ाय सुपातकभाजहीं ॥ अर्घं
करत पूजा जे मन लायकें, हेत जिन कल्यान सु पायकें।
सरस मंगल नित नये होत हैं, जजत जिनपद ज्ञान उदोत हैं ॥ अर्घं

जयमाला।

ये ही भावना भायकें, करों आरती गाय।
सिद्धक्षेत्र वर्णन करों, छंद पद्धड़ी गाय ॥ १ ॥

श्रीसिद्धक्षेत्र पर्वत सु जान। श्रीद्रोणागिरि ताको सु नाम॥
तहँ नदी चन्द्रभाग प्रमान। मगरादि मीन तामें सुजान॥ १॥
ताको अति सुन्दर बहे नीर। सरिता सुजान भारी गँभीर॥
यात्री सु देश देशनके आये। अस्नान करत आनन्द पाय॥ २॥
फलहोड़ी ग्राम कह्यो बखान। जिन मन्दिर तामें एक जान॥
पूजा सु पाठ तहां होत नित्त। स्वाध्याय वाचना में सुचित्त॥ ३॥
अब गिरि उतंग जानो महान। ता ऊपरको लागे शिवान॥
तरुवर उन्नत अति सघन पाँत। फल फूल लगे नाना सु भाँत॥४॥
तहँ गुफा रही सुन्दर गहीर। मुनिराज ध्यान धारे तपीस॥
गिरि शीस वीस जिन बने धाम। अब और होय तिनको प्रनाम॥५॥
तहँ झालर घँटा बजे सोय। वादित्र बजें आनन्द होय॥
तहँ प्रातिहार्य मंगल सुदर्व। भामंडल चन्द्रोपक सुसर्व॥ ६॥
जिनराज विराजत ठाम ठाम। वंदत भविजन तज सकल काम॥
पूजा सु पाठ तहँ करे आय। ताथेई थेई थेई आनन्द पाव॥ ७॥
अब जन्म सुफल अपनो सु जान। श्री जिनवर पद पूजे सु आन॥
मैं भ्रम्यो सदा या जग मझार। नहिं मिली शरन तुमरी अपार॥८॥

सोरठा।

सिद्धक्षेत्र सु महान, विघन हरन मंगल करन।
वन्दत शिवसुख थान, पावत जे निश्चय भजे॥ १॥

ॐ ह्रीं श्रीद्रोणागिरि सिद्धक्षेत्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

गीतिका छन्द।

जाके सुपुत्र पौत्रादि सम्पति, होंय मंगल नित नये।
जो जजत भजत जिनेन्द्रपद, अब तासु विघन सु नशि गए॥

मैं करों थुती निज हेत मंगल, देत फल वांछित सही।
'दरयाव' है जिन दास तुमरो, आश हम पूरन भई॥

इत्याशीर्वादः।

स्व० कवि जवाहरलालजी कृत

श्रीगिरनार पूजा।

छप्पय।

श्रीगिरनार शिखर परवत, दक्षिण दिश सोहे।
नेमीनाथ जिन मुक्तिधाम, सब जन मन मोहे॥
कोड़ बहत्तर सात शतक, मुनि शिवपद पायो।
ताथल पूजन काज, भविक चित अति हर्षायो॥
तिस तीरथराज सु क्षेत्रको, आह्वानन विधि ठानकर।
पूजूं त्रिजोग मनवचन तन, श्रावकजन गुन गानकर॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीगिरनार सिद्धक्षेत्रसे श्रीनेमिनाथसंबुकुमार प्रद्युम्नकुमार अनिरुद्धकुमार और बहत्तर करोड़ सातसे मुनि मोक्षपद प्राप्तये अत्र अवतर अवतर संवौषट् आव्हाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

प्रभु तुम राजा जगत के, कर्म देहि दुख मोय।
करूं यथारथ वीनती, हमपै करुणा होय॥

चाल लावनीकी।

तीरथ गढ़ गिरनारको, नित पूजो हो भाई।
हेम अंग भर तीरथादिक, शुभ प्रासुक पावन लाई॥
जन्म मरण जरा नाशन कारन, धार देहुं ढरकाई॥ भ०

जंबूदीप भरत आरजमें, सोरठ देश सोहाई ।
सेसावनके निकट अचल तहँ, नेमिनाथ शिवपाई ॥ भ०

ॐ ह्रीं श्री गिरनार सिद्धक्षेत्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

सुन्दर चन्दन कदली नन्दन, केशर संग घसाई ।
भव दुख ताप मिटावन लख के, अरचों जिन पद आई ॥ भ० चंदनं

शसि सम श्वेत वर्ण मुक्ता शित, अछत अखंड सुहाई ।
चरन शरन प्रभू अचै निधि लख, पूंज दिये सो पाई ॥ भ० अक्षतं

कुसुम वर्णपन विविध गंध जुत, चुन चुन भेंट धराई ।
पूजन किय हो शील वर्द्धना, मनोबाण जय लाई ॥ भ० पुष्पं

खाजा ताजा मोदक गूजा, फेणी सरस बनाई ।
षट्रस व्यञ्जन मिष्ट सुधामय, हेम थार भर लाई ॥ भ० नेवेद्यं

दीप ललित कर घृत पूरित भर, उज्वल जोति जगाई ।
करों आरती जिनपदकेरी, मिथ्या तिमिर पलाई ॥ भ० दीपं

अगर तगर कपूर चूर बहु, द्रव्य सुगंध मिलाई ।
खेय धनजंय धूप धूम मिस, वसु विधि देय जराई ॥ भ० धूपं

एला दाड़िम श्रीफल पिस्ता, पुंगीफल सुखदाई ।
कनक पात्रधर भविजन पूजें, मनवांछित फल पाई ॥ भ० फलं

अष्ट द्रव्यका अर्घ संजोवो, घंटा नाद बजाई ।
गीत नृत्यकर जजों 'जवाहर,' आनन्द हर्ष बधाई ॥ भ० अर्घं

जयमाला ।

उर्जयंति गिरिराज मनोहर, देखत ही मन मोहे ।
राजुलपति शिवथान विराजे, उत्तम तीरथ जो है ॥
पुत्र पौत्र हरि कृष्ण प्रचुर मुनि, पंचमगति तहँ पाई ।
तास तनी महिमाको वरने, श्रवण सुनत हरषाई ॥ १ ॥
जै जै जै नेमि जिनन्द चन्द्र । सुर नर विद्याधर नमत इन्द्र ॥
जै सोरठ देश अनेक थान । जूनागढ़पै शोभित महान ॥२॥
तहां उग्रसेन नृप राजद्वार । तोरण मंडप शुभ बने सार ॥
जै समुद विजय सुत व्याहकाज । आये हर बलि जुत आन साज ॥३
तहँ जीव बँधे लख दया धार । रथ फेर जंतु बंधन निवार ॥
द्वादश भावन चिंतवन कीन । भूषण वस्त्रादिक त्याग दीन ॥४॥
तज परिग्रह परिणय सर्व संग । ह्वै अनागार विजई अनंग ॥
धर पंच महाव्रत तप मुनीश । निज ध्यान धरो हो केवलीश॥५॥
इस ही सुथान निर्वाण थाय । सो तीरथ पावन जगत माय ॥
अरु शंभु आदि प्रद्युम्न कुमार । अनिरुद्ध लही पदमुक्ति धार ॥६॥
पुनि राजुल हू परिवार छांड़ । मन वचन कायकर जोग मांड ॥
तप तप्यौ जाय तिय धीर वीर । सन्यास धार तजकें शरीर ॥७॥
तिय लिंग छेद सुर भयो जाय । आगामी भवमैं मुक्ति पाय ॥
तहँ अमरगण उर धर आनन्द । नितप्रात पूजत हैं श्रीजिनन्द ॥८॥
अरु निरतत मघवा युक्तनार, देवनकी देवी भक्ति धार ॥
ता थेई२ थेई२ करनजाय । फिर फिर फिर फिरकी लहाय ॥९॥

मुहचंग बजावत तारबीन । तननन तननन तन अति प्रवीन ॥
कंसाल ताल मिरदंग और । झालर घंटादिक अमित शोर ।१०॥
आवत श्रावकजन सर्व ठाम । बहु देश देश पुर नगर ग्राम ॥
हिलमिल सब संघ समाज जोर । हय गय बाहन चढ़ रथ बहोर ।१।
जात्रा उत्सव निशिदिन कराय । नर नारिउ पावत पुण्य आय ॥
को बरनत तिस महिमा अनूप । निश्चय सुर शिवके होय भूप ।१२।
श्रीनेमी जिनन्दा आनन्द कंदा, पूजत सुर नर हित धारी ।
तिस नमत जवाहर'जुग कर शिरधर, हर्ष धार गढ़ गिरनारी ।१३।

ॐ ह्रीं श्रीगिरनार सिद्धक्षेत्रसे नेमिनाथ शंबु प्रद्युम्न अनिरुद्ध और बहत्तर कोटि सातसौ मुनि मोक्षपद प्राप्तये महार्घ निर्वपामीति स्वाहा ।

जे नर बंदत भाव धर, सिद्धक्षेत्र गिरनार ।
पुत्र पौत्र सम्पति लहे, पूरन पुण्य भंडार ॥ १४ ॥
सम्बत् विक्रमराय प्रमान । वसु जुग निधि इक अंक सुजान ॥
पौष मास पख सोम बखान । पंचमि तिथि रविवार शुभ जान ।१५।
रच्यौ पाठ पुजन सुखदाय । पढ़त सुनत चित अति हुलसाय ॥
जात्रा करें धन्य ते जीव । पावें फल ह्वै शिवतीय पीव ॥१६॥

इत्याशीर्वादः ।

श्रीशत्रुंजय पूजा ।

(श्रीयुत भगोतीलालजी कृत)

श्री शत्रुंजयशिखर अनूप । पांडव तीन बड़ेशुभ भूप ॥
आठ कोडि मुनि मुक्ति प्रधान । तिनके चरण नमूं धर ध्यान ।१।

तहाँ जिनेश्वर बहुत सरूप । शान्तिनाथ शुभ मूल अनूप ॥
तिनके चरण नमूं त्रिकाल । तिष्ठ तिष्ठ तुम दीनदयाल ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीशत्रुंजय सिद्धक्षेत्रसे आठ कोडि मुनि और तीन पांडव मोक्षपद प्राप्तये अत्र अवतर अवतर संवौषट आह्वानन । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

क्षीरोदधि नीरं उज्जल सीरं, गंध गहीरं ले आया ।
मैं सन्मुख आया धारदिवाया, शीस नवाया खोलहिया
पांडव शुभतीनं सिद्ध लहीनं, आठकोडि मुनि मुक्तगये ।
श्रीशत्रुंजयपूजों सन्मुखहूजो, शान्तिनाथ शुभमूलनये ॥

ॐ ह्रीं श्रीशत्रुंजय सिद्धक्षेत्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीती स्वाहा ॥ १ ॥

मलयागिरि लाऊं गंध मिलाऊं, केशर डारा रंग भरी । जिनचरन चढाऊं सन्मुख जाऊं, व्याधि नशाऊं तपत हरी ॥ पां० ॥ चन्दनं
तन्दुल शुभ चोखे बहुत अनोखे, लखि निर्दोषे पुंज धरूं ।
अक्षयपद दीजो सब सुख कीजो, निजरस पीजो चरणपरूं ॥
पांडव ॥ अक्षतं

शुभ फूल सुवासी मधुर प्रकासी, आनंद रासी ले आयो ।
मो काम नशाया शील बडाया, अमृत छाया सुख पायो ॥
पांडव ॥ पुष्पं

नेवज शुभ लाया थार भराया, मंगल गाया भक्ति करी ।
मो क्षुधा नशाया सुख उपजाया, ताल लजाया सेव करी ॥
पांडव ॥ नैवेद्यं

दीपक ले आया जोति जगाया, तुम गुण गाया चरण परूं।
मैं शरणे आयां शीस नवाया, तिमिर नशाया नृत्य करूं ॥
पांडव ॥ दीपं

दश गंध कुटाई धूप बनाई, अग्नि डार जिन अग्र धरों। तुम कर्म
जराई शिव पहुँचाई, होय सहाई कष्ट हरो ॥ पां० ॥ धूपं
फल प्रासुक चोखे बहुत अनोखे, लख निर्दोखे भेट धरूं।
सेवककी अरजी चितमें धरजी, कर अब मरजी मोक्ष वरूं ॥
पांडव ॥ फलं

वसु द्रव्य मिलाई थार भराई, सन्मुख आई नजर करो। तुम
शिवसुखदाई धर्म बढ़ाई, हर दुखदाई अर्घ करो ॥पां०॥ अर्घं
पूरण अर्घ बनाय कर, चरणनमें चित लाय।
भक्तिभाव जिनराजकी, शिव रमणी दरशाय ॥ पूर्णार्घं

जयमाला।

जय नमन करूं शिर नाय नाय, मोकूं वर दीजे हे जिनाय॥
तुम भक्ति हियेमें रही छाय, सो उरुग उमग अरु प्रीति लाय।१
जय तुम गुण महिमा है अपार, नहिं कवि पंडितजन लहेंपार॥
जय तुच्छ बुद्धि मैं करत गान,तुम भक्ति हिये में रहीआन॥२॥
जय श्रीशत्रुंजय शिखर जोय, निर्वाणभूमि जानो जु सोय॥
जहां पांडव तीन जु मुक्ति होय, जय राय युधिष्ठिर भीम जोय॥३॥
जय अरजुन जानो धनुष धीर, तासम नहिं जानो कोई वीर॥
जय आठकोड़ मुनी और सोय, तिन वरी नारि रंभा जु लोय॥४॥

जय सही परीषह बीस दोय, जय यथाख्यात चारित्र होय ॥
जय कायर कंपे सुनो जोय, वे ध्यानारूढ़ भये जु सोय ॥५॥
जय बारह भावन भाव सोय, तेरह विधि चारित धरो सोय ॥
जय कर्म करे चकचूर जोय, अरु सिद्ध भये संसार खोय ॥६॥
जय सेवक जनकी करहु सोय, जय दर्शन ज्ञान चारित्र होय ॥
जय रुलो नहीं संसार माय, अरु थोडे दिनमें मुक्ति पाय ॥७॥
जय 'धर्मचन्द्रजी' मुनीम सोय, मो अल्प बुद्धिसों मेल होय ॥
वे धर्मजिन हैं बहुत जोय, सो कही उन्होंने मोहि सोय ॥८॥
तुम शत्रुंजय पूजा बनाय, तो बांचे भविजन प्रीति लाय ॥
जय 'लाल भगोतीलाल' मोय, तिन रची पाठ पूजन जु सोय ॥९॥
जय घाट बाढ़ कछु अर्थ होय, सोधो समार जैसे जु सोय ॥
जय भूल चूक जामें जु होय, सो पंडितजन शोधो जु लोय ॥१०॥
जय सम्वतसर गुनईस जोय, अरु ता ऊपर गुनचास होय ॥
जय पौष सुदी द्वादश जु होय, अरु वार शुक्र जानो जु सोय ॥११
जय सेवक विनवे जोर हाथ, मो मिले अखयपद वेग नाथ ॥
जय चाह रही नहीं और कोय, भवसिंधु उतारो पार मोय ॥१॥

भक्तिभाव उर लाय, करके जिनगुण पाठको ॥
मंगल आरती गाय, चरणन शीस नवायके ॥१२॥

ॐ ह्रीं श्रीशत्रुंजय सिद्धक्षेत्र से तीन पांडव और आठ कोटि मुनि मोक्षपद प्राप्ताये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरषाय गाय जिनेन्द्र पूजूं, कृत कारित अनुमोदना ।
शुभ पुण्य प्रापति अर्थ तिनकी, करी बहु विधि थापना ॥१३॥

जिनराज धर्म समान जगमें, और नाहीं हित घना।
ताते सु जानों भव्य तुम, नित पाठ पूजन भावना ॥१४॥

इत्याशीर्वादः।

श्रीतारंगागिरि पूजा।

(श्रीयुत पं० दीपचन्दजी परवार कृत)

वरदत्तादिक ऊंठ कोटि मुनी जानिये,
मुक्ति गये तारंगागिरिसेमानिये।
तिन सबको शिरनाय सु पूजा ठानिये,
भवदधि तारन जान सु विरद वखानिये ॥

ॐ ह्रीं श्रीतारंगागिरिसे वरदत्तादि साढ़े तीन कोटि मुनी मोक्षपद प्राप्तये अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

शीतल प्रासुक जल लाय, भ'जन में भरके,
जिन चरनन देत चढ़ाय, रोग त्रिविधि हरके।
तारंगागिरिसे जान, वरदत्तादि मुनी,
सब ऊंठ कोटि परमान, ध्याऊं मोक्षधनी ॥

ॐ ह्रीं श्रीतारंगागिरि सिद्धक्षेत्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

मलयागिरि चन्दन लाय, केशर माँहि घसे, जिन चरण जजूं चितलाय, भव अताप नसे। तारंगा ॥चन्दनं॥

तदुल अखंड भर थार, उज्ज्वल अति लीजे,
अक्षयपद कारणसार, पुंज सु ढिग कीजे। तारंगा ॥अक्षतं॥
चंपा गुलाब जुहि आदि, फूल बहुत लीजे।
पूजों श्रीजिनवर पाद, कामविथा छीजे। तारंगा ॥पुष्पं॥
नाना पकवान बनाय, सुवरण थाल भरे।
प्रभुको अरचों चित लाय, रोग क्षुधादि टरे। तारंगा॥नैवेद्यं
दीप कपूर जगाय जगमग ज़ोति लसे।
करूं आरती जिन चितलाय. मिथ्या तिमिर नसे।तारंगा॥दीपं
कृष्णागरु धूप सुवास खेऊं प्रभु आगे।
जल जाय कर्मकी राशि ध्यानकला जागे ॥तारंगा॥ धूपं
श्रीफल कदली बादाम पुंगलीफल लीजै।
पूजों श्रीजिनवर धाम शिवफल पालीजे। तारंगा ॥ फलं
शुचि आठों द्रव्य मिलाय, तिनको अर्घ करों।
मन वच तन देहु चढाय, भवतर मोक्ष वरों।तारंगा॥ अर्घं

जयमाला

वरदत्तादि मुनीन्द्र, ऊंठ कोटि मुक्तहि गये।
चंदत सुर नर इन्द्र, मुक्ति रमनके कारणे ॥ १ ॥

गुजरात देशके मध्य जोन, इक सोहे ईडर संस्थान।
ताकि दिशि पच्छिम में बखान, गिरि तारंगा सोहे महान ॥१॥
तहंते मुनि ऊंठ करौड़ सोय, हनि कर्म सबे गये मोक्ष सोय।
ता गिरिपर मंदिर है विशाल, दर्शनतें चित होवे खुशाल॥२॥

नायक सुमूल संभव अनूप, देखते भवि ध्यावत निज स्वरुप। पुनि तीन टोंकपर दर्श जान, भविजन वंदत उर हर्ष ठान ॥३॥ तहां कोटि शिला पहली प्रसिद्ध, दूजो तीजो है मोक्ष सिद्ध। तिनपर जिनचरण विराजमान, दर्शन फल इम पुनिये सुजान ॥४॥ जो बंदे भविजन एक बार, मनवांछित फल पावे अपार। वसु विधि पूजे जो प्रीती लाय, दारिद्र तिनको क्षणमें पलाय ।५॥ सब रोग शोक नाशे तुरंत, जो ध्यावे प्रभुको पुण्यवंत। अरु पुत्र पोत्र सम्पति होय, भव भवके दुःख डारे सु खोय ॥६॥ इत्यादि महिमा है अपार, वर्णन कर कवि को लहे पोर। अब बहुत कहा कहिये बखान, कहें 'दीप' लहें ते मोक्षथान ॥७॥

ॐ ह्री श्रीतारंगागिरिसे वरदत्त सागरदत्तादि साड़े तीन कोटि मुनि मोक्षपद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तारगा वंदों मन आनन्दो. ध्याऊं मन वच शुद्ध करो।
सब कर्म नशाऊं शिवफल पाऊं, ऊंठ कोठि मुनिराजवरा ॥

इत्याशीर्वादः।

श्री पावागढ पूजा

(श्रीयुत धर्मचन्दजी कृत)

श्रीपावागिरि मुकति शुभ, पांच कोडि मुनिराय।
लाड नरेंद्र को आदि दे, शिवपुर पहुंचे जाय ॥१॥

तिनको आह्वानन करों, मन वच काय लगाय ।
शुद्ध भावकर पूजजों, शिव सन्मुख चितलाय ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीपावागिरिसिद्धक्षेत्र से लाड नरेन्द्र आदि पांच करोड मुनि सिद्धपदप्राप्तये अत्र अवतर अतवर संवौषट आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

जल उज्ज्वललीनो प्रासुककीनो, धारसु दीनोहितकारी ।
जिन चरनचढाऊं कर्मनशाऊं, शिवसुखपाऊं वलिहारी ॥
पावागिरि बन्दों मनआनन्दो, भवदुखखंदो चितधारी ।
मुनिपांचजुकोडं भवदुखछोडं, शिवसुखजोडं सुखभारी ॥

ॐ ह्रीं श्रीपावागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

चन्दन घसि लाऊं गंध मिलाऊं, सब सुखपाऊं हर्ष वडो ।
भववाधा टारो तपतनिवारो, शिवसुखकारो मोद वडो ।चंदनं
गजमुक्ताचोखे बहुत अनोखे, लखनिरदोखे पुंज करूं ।
अक्षयपद पाऊं और न चाऊं, कर्मनशाऊं चरणपरूं ।पा.।अक्षतं
शुभ फूल मंगाऊं गन्ध लखाऊं, वहु उमगाऊं भेट धरूं ।
ममकर्म नशावो दाह मिटावो, तुमगुन गाऊं ध्यान धरूं ।पा.।पुष्पं
नेवज बहुताजे उज्ज्वल साजे, सबसुख काजे चरन धरूं ।
मो भूखनशावे ज्ञान जगावे, धर्म वढावे चैन करूं ।पा.नैवेद्यं
दीपककी जोतं तम छय होतं, बहुत उद्योतं लाय धरूं ।
तुम आरतिगाऊं भक्तिवढाऊं, खूब नचाऊं प्रेम भरूं ।पा.।दीपं

बहु धूप मंगाऊं गंध लगाऊं, बहु महकाऊं दश दिशिको।
धर अग्नि जलाई कर्मखिपाई, भवजनभाई सब हितको
॥ पा० ॥ धूपं

फल प्रासुक लाई भवजन भाई, मिष्ट सुहाई भेट करूं।
शिवपदकीआशामनहुल्लासा, करखुहलासामोच करूं ।पा०। फलं-
वसु द्रव्य मिलाई भवजन भाई, धर्म सहाई अर्घ करूं।
पूजा को गाऊं हर्ष चढाऊं, खूब नचाऊं प्रेम भरूं ॥पा०॥अर्घं

जयमाला।

करके चोखे भाव, भक्ति भाव उर लायके।
पूजों श्रीजिनराय, पावागिरि वंदों सदा॥

श्रीपावागिरि तीर्थ बडो है, वंदत शिवसुख होई।
रामचन्द्रके सुत दोय जानो, लाड नरेन्द्र जु सोई॥
इनहि आदि दे पांच कोटि मुनि, शिवपुर पहूँचे जाई॥
सेवक दो कर जोर बीनवे, मन वच कर चितलाई ॥१॥
कर्म काट जे मुक्त पधारे, सब सिद्धनमें जोई।
सुख सत्ता अरु बोध ज्ञानमय, राजत सब सुख होई॥
दर्श अनंतो ज्ञान अनंतो, देखे जाने सोई।
समय एकमें सब ही झलके, लोकालोक जु दोई ॥ २ ॥
ज्ञान अतेंद्री पूरन तिनके, सुक्ख अनंतो होई।
लोक शिखरपर जाय बिराजे, जामन मरन न होई॥
जा पदको तुम प्राप्त भये हो, सो पद मोहि मिलाई।
भक्ति भावकर निशिदिन बन्दो, निशिदिन शीस नवाई ॥३॥

'धर्मचन्द्र' श्रावककी विनती, धर्म बडो हित दाई।
जो कोई भविजन पूजन गावें, तन मन प्रीति लगाई ॥
सो तैसो फल जल्दी पावे, पुण्य बढे दुख जाई।
सेवकको सुख जल्दी दीजो, सम्यक् ज्ञान जगाई ॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीपावागढसे लाड नरेन्द्र और पांच करोड मुनि मोक्ष पद प्राप्तये महार्घ निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीजिनवरराई करमन भाई, धर्म सहाई दुख छीजे।
पूजा नित चाहूं भक्ति बढाऊं, ध्यान लगाऊं सुख कीजे ॥
सुन भवजन भाई द्रव्य मिलाई, बहु गुन गाई नृत्य करौं।
सब ही दुख जाई बहु उमगाई, शिवसुख पाई चरन परो ॥५॥

इत्याशीर्वादः।

श्रीगजपंथ पूजा।

(श्रीयुत किशोरीलालजी कृत)

श्रीगजपंथ शिखर जगमें सुखदायजी।
आठ कोडि मुनिराय परमपद पायजी।
और गये बलभद्र सात शिवधामजी।
आह्वानन विधि करूं त्रिविध धर ध्यानजी ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीगजपंथाचलसे सप्त बलभद्र आदि आठ कोडि मुनी सिद्ध पद प्राप्तये अत्रावतर अवतर संवौषट आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

कंचन मणिमय झारी लेके, गंगाजल भर ल्याई ।
जन्म जरा मृत नाशन कारन, पूजों गिरि सुखदाई ॥
बलभद्र सात वसु कोडी मुनिश्वर, यहांपर करम खपाई
केवल लही शिवधाम पधारे, जजूं तिन्हें शिरनाई ॥

ॐ ह्रीं श्रीगजपंथसिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

मलयागिरि चन्दन घसि, केशर सुवरण भृंग भराई ।
भव आतापनिवारन कारन, श्रीजिनचरण चढाई ॥ब०॥ चन्दनं

अक्षत उज्वल चन्द्रकिरण सम, कनक थाल भर लाई । अक्षय सुख भोगनके कारन, पूजुं देह हुलसाई । बलभद्र० । अक्षतं ।

पुण्य मनोहर रंग सुरंगी, आवे बहु महकाई कामबाणके नाशन कारन, जिनपद भेंट धराई ॥बल०॥पुष्पं

घेवर बावर लाडू फेनी, नेवज शुद्ध कराई । क्षुधावेदनी रोग हरन को, पूजो श्रीजिनराई ॥ बल० ॥ नैवेद्यं

बाती कपूर दीप कंचनमय, उज्ज्वल जोति जगाई । मोहतिमिरके दूर करन को, करो आरती भाई ॥बल०॥ दीपं

अगर तगर कृस्नागरु लेके, दस गंध धूप बनाई । खेय अगनिमें श्रीजिन आगे करम जरें दुखदाई ॥बल०॥धूपं

फल अति उत्तम पूंगी खारक, श्रीफल आदि सुहाई । मोक्ष महाफल चाखन कारन, भेट धरों गुणगाई ॥ बल० ॥ फलं

जल फल आदि वसु दरव अति,
उत्तम मणिमय थाल भराई ।
नाच नाच गुण गाय गायके,
श्रीजिन चरन चढाई ।। अर्घ

जयमाला ।

गजपंथ गिरिवर शिखर उन्नत, दरश लख सब अघ हरे ।
नर नारि जे तिन करत वंदन, तिन सुजश जग विस्तरे ।
इस थांनतें मुनि आठ कोडि, परमपदकूं पायके ।
तिनकी अबे जयमाल गाऊं, सुनो चित हुलसायके ॥ १ ॥
जय गजपंथा गिरिशिखर सार । अति उन्नत है शोभा अपार ॥
ताकी दच्छिण दिश नगर जान । मसरूल नाम ताको प्रधान ॥२॥
तहाँ धरमशाला बनी महान । ता मध्य लसे जिनवर सुथान ।
तहाँ बने शिखर शोभित उतंग । यह चित्र विचित्र नाना सुरंग॥३॥
चारों दिशिगुमठी लसत चार । चित्राम रचित नोना प्रकार ॥
तिनके ऊपर ध्वजा फहरात । मानुष बुलावत करत हाथ ॥४॥
तहाँ गुम्मजमें श्रीपार्श्वनाथ । राजत पुनि प्रतिमा है विख्यात ॥
तिन दरशन वंदन करन जात । पूजत हैं नित प्रति भव्य भ्रात ॥५॥
जिन मन्दिरमें रचना विशेष । आरास रचित अद्भुत अनेक ॥
वेदी उज्ज्वल राजत रंगीन । अति ऊँचे सोहे शिखर तीन ॥६॥
तिनके ऊपर कलशा लसंत । चन्द्रोपम ध्वज दर्पन दिपंत ॥
त्रय कटनी खंभा चार माह । इन्द्रनको छबि वरनी न जाय ॥७॥

ऊपरली कटनी मध्य जान । अन्तिम तीर्थेश विराजमान ॥
भामंडल चँवर सु छत्र तीन । पुनि चरण पादुका द्वय नवीन ॥८॥
पुनि पद्मावति अरु क्षेत्रपाल । तिष्ठत ता आगे रत्नपाल ॥
सन्मुख हस्ती घूमे सदीव । जहाँ पूजा करते भव्य जीव ॥९॥
आगे मंडप रचना विशाल । तहाँ सभा भरे हैं सदा काल ॥
जहाँ बाँचत पंडित शास्त्र आय । कोई जिनवर गुण मधुरगाय॥१०॥
कोई जाप जपे चरचा करंत । कोई नृत्य करत बाजे बजंत ॥
नौबत झालर घंटा सु झांझ । पुनि होत आरती नित्य सांझ॥११॥
मन्दिर आगे सुन्दर अरन्य । तरु फल फलन दीसे रमन्य ॥
अति सघन वृक्ष शीतल सु छाँय । जहाँ पथिक लेत विश्राम आय१२
इस उपवनमें बहु विध रसाल । चाखत जात्री होवें खुशाल ॥
नीबू नारंगी अनार जाम । सीताफल श्रीफल केल आम ॥१३॥
अमली जामन ककड़ी अरंड । कैथोड़ी ऊंचे लगे झुंड ॥
सेतूत लेसवो अरु खजूर । खारक अंजीर अरीठ पूर ॥१४॥
फफनेस बोर बड़ नीम जान । पुनि पुष्पवाटिका शोभमान ॥
चंपो जु चमेलि गुलाब कुंज । जाई जु मोगरो भ्रमर गुंज ॥१५॥
गुलमहदी और अनेक बेल । तिन ऊपर पक्षी करत केल ॥
या बाग माहिं गंभीर कूप । शीतल जल मिष्ट सु दुग्धरूप ॥१६॥
ता पीवत ही गद सकल नाश । यह अतिशय क्षेत्रतनो प्रकाश ॥
बँगला विशाल रमणीक जान । भट्टारक तिष्ठनको सु थान ॥१७॥
परकोट बनो चउ तरफ सार । मध दरवाजो अति शोभकार ॥
ताके ऊपर नौबत बजंत । सुनके जात्री आनंद लहंत ॥१८॥

यहाँ दंडकवनकी भूमि संत । तसु निकट शहर नाशिक वसंत ॥
तहाँ गंगा नाम नदी पुनीत । वैष्णवजन ठाने धर्म तीर्थ ॥१६॥
पुनि त्रिम्बक सीतागुफा कीन । गजपंथा धाम सबमें प्रचीन ॥
भट्टारकजी हिमकीर्ति आय । वंदे गजपंथा शिखर जाय ॥२०॥
मन्दिरकी नींव दई लगाय । पुनि पैड़ी ऊपरको चढ़ाय ॥
दो शतक पिचोत्तर है सिवान । तसु आगे मोटी भीत ठान ॥२१॥
इक होद भरचो निर्मल सु नीर । शीतल सु मिष्ट राजत गँहीर ॥
भवि प्रक्षालित वसु दरव आन । कोई तीर्थ जान करहै सनान ॥२२॥
त्रय गुफा मध्य दरशन करंत । बलभद्र सात तिष्ठत महंत ॥
इक बिम्ब लसत उन्नत विशाल । श्रीपार्श्वनाथ वंदत त्रिकाल ॥२३
द्रव मानभद्र इक चरण पाद । मुनि आठ कोड़ि थल है अनाद ॥
वंदन पूजन कर धरत ध्यान । निज जन्म सुफल मानत सुजान ॥२४
यहाँसे उतरत गिरितट सु थान । इक कुंड नीर निर्मल वखान ॥
इक छत्री उज्ज्वल है पुनीत । भट्टारकजी क्षेमेन्द्रकीर्ति ॥२५॥
तिनके सु चरणपादुक रचाय । अवलोकन कर निजथल सु आय ॥
कोई फेरी पर्वतकी करंत । इमि वंदनकर अति सुख लहंत ॥२६॥
श्रीमुनीकीर्ति महाराज-आय । श्रावकजनको उपदेश थाय ॥
पुनि नानचंद अरु फतहचंद । शोलापुरवासी धरमकंद ॥२७॥
हूमड़ जैनी उपदेश धार । करवाई प्रतिष्ठा बिम्बसार ॥
संवत् उगणीस अरु तियाल । सुदि तेरस माघतनी विशाल ॥२८
कल्यान पाँच कीनों उछाव । करवाये अति उत्तम सुनाव ।
श्रीमहावीर अन्तिम तीर्थेश । पधराये वेदीमें जिनेश ॥२९॥

भट्टारकजी दियो सूर मंत्र। कीने पुनि जंत्र अनेक तंत्र ॥
मानस सु थंभ रचिये उतंग। कञ्चन कलशा शोभे उचंग ॥३०॥
बहु संघ जुर तिनकू बुलाय भक्ती कीनी उर हरष ल्याय ॥
बहु विधि पकवान बनाय सार। जौनार दई आनँद धार ॥३१॥
सुदि पूनम माघतनी सुजान। पूरण हुतो उत्सव महान ॥
याही तिथिकूँ उत्तम सुजोय। यात्रा उत्सव हर साल होय ॥३२॥
पुनि सदाव्रत नित प्रति बटंत। कोई विमुख जाय नहिं साधु संत ॥
यहाँ देश देशके संघ आय। उत्सव करते हैं पूजन कराय ॥३३॥
दे दरब करत भंडार सोय। कोई करत रसोई मुदित होय ॥
बहु मर्यादा अद्भुत सु ठाठ। आवे जात्री मुख करत पाठ ॥३४॥
सवंत उगणीसौ उणचास। बुध अष्टम रवि दिन पौष मास ॥
ये पूजन विधि कीनी बनाय। सज्जन प्रति विनती यही भाय ॥३५
जो भूलचूक तुम भंग होय। तुम शुद्ध करो बुधिवान लोय ॥
गजपंथ शिखर मुनि आठ कोड़। बलभद्र सात नमि हाथ जोड़॥३६
यह गजपंथा शिखरकी। पूज रची सुखदाय ॥
'लालकिशोरी' तुच्छ-बुध। हाथ जोड़ सिरनाय ॥३६॥

ओं ह्रीं श्रीगजपंथ सिद्धक्षेत्रसे सात बलभद्र और आठ करोड़ मुनि मोक्षपद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जय जय भगवंता श्रीगजपंथा, वंदत संता भाव धरं।
सुर नर खग ध्यावें भगत बढावें, पूज रचावें प्रीति करं ॥

फल सुरपद पावें अमर कहावें, नरपद पावें शिव पावें।
यह जान स भाई जात्र कराई, जग जस थाई सुख पावें ॥३८॥

इत्याशीर्वादः ।

श्री तुंगीगिरि पूजा ।

(श्रीयुत स्व० पं० सवाई सिंगई गोपालसाहजी कृत)

—:ऽऽऽऽऽ:—

सिद्धक्षेत्र उत्कृष्ट अति, तुंगीगिरि शुभ थान
मुकति गये मुनिराज जे, ते तिष्ठहु इत आन ॥

ॐ ह्रीं श्रीमांगीतुंगी सिद्धक्षेत्रसे राम, हनू, सुग्रीव, सुडील, गव, गवाख्य, नील, महानील और निन्यानवे करोड़ मुनि मोक्षपद प्राप्तये अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्रमम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

गंगाजल प्रासुक भर झारी, तुव चरनन ढिग धारों ।
परिग्रह तिसना लगी आदिकी, ताको ह्वै निरवारो ॥
रामहनू सुग्रीव आदि जे, तुंगागिरि थित थाई ।
कोडी निन्यानवे मुकत गये मुनि, पूजो मन वच काई ॥

ॐ ह्रीं श्रीतुंगीगिरी सिद्धक्षेत्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

चन्दन केशर गार, भली विधि धार देत पग आगे ।
भव भरमन आताप जासतें, पूजत तुरतहिं भागे ॥ रा. । चन्दनं

मुक्ताफल सम उज्ज्वल अक्षत, थार धारकर पूजों ।
अक्षयपदकों प्रापतिकारन या समऔर न दूजो ॥ राम० अक्षतं ॥
कमल केतकी वेल चमेली, आपर अलि गुंजावे ।
पुष्पनसों अरचों तुम चरनन, कामविथा मिट जावे । रा० । पुष्पं ॥
गूंजा खाजे व्यंजन ताजे, तुरतहिं घृत उपराजे । दृग
सुख कारन सन्मुख धारे, क्षुधावेदनी भाजे । रा० । नैवेद्यं ॥
दीप रतनकर सुरपति पूजत, हम कपूर धर खासे । नाशे
मिथ्यातम अनादिका, ज्ञान भानु परकाशे । राम० दीपं ॥
अगर तगर कृष्णागरु चन्दन, जे सुवास मन भावें । खेवंत
धूप धूमके मिसकर, दुष्टकरम उड जावें । रा० । धूपं ॥
श्रीफल पुंगी शुचि नारंगी, केला आम्र सुवासी । पूजत अष्ट
करम दल धूजत, पाऊँ पद अविनासी ॥ रा० ॥ फलं ॥
जल फलादि वसु दरव साजके, हेमपात्र भर लाऊँ । मन वच
काय नमूं तुव चरना, बार बार शिरनाऊँ ॥ रा० ॥ अर्घं ॥

जयमाला ।

राम हनू सुग्रीव आदि जे, तुंगीगिरि थित थाय ।
कोडि निन्यानवे मुकति गये मुनि, पूजों मन वच काय ॥ १ ॥

तुम पद प्रापत कारने, सुमरों तुम गुणमाल ।
मति माफक वरनन करों, सार सुभग जयमाल ॥ २ ॥

धन्य धन्य मुनिराज, कठिन व्रतधारी ।
भव भवमें सेवा चरन मिले मुह थारी ॥

दो पर्वत हैं अति तुंग चूलिका भारी।
मानो मेरु शिखर उनहार दृगन सुखकारी ॥ ३ ॥
पहलो है मंगी नाम तुंगी है दूजो ।
जहाँ चढत जीव थक जात करम चिर धूजो ॥
अति सुन्दर मन्दिर लखत भइ सुध म्हारी ।
भव भवमें सेवा चरन मिले मुह थारी ॥
धन्य धन्य मुनिराज कठिन व्रत धारी ।
भव भवमें सेवा चरन मिले मुह थारी ॥ ४ ॥
जहाँ राम हनू सुग्रीव सु खग बलधारी ।
अरु गत्र गवाक्ष महानील नील अघहारी ॥
इन आदि निन्यानवे कोड़ि मुनी तप कीना ।
लयो पंचमगतिको वास बहुरि गत रही ना ॥५॥
मैं पूजों त्रिकरन शुद्धनसे अघ भारी ।
भव भवमें सेवा चरन मिले मुह थारी ॥
तुम विरत अहिंसा लिया दयाके कारन ।
ता पोखनको वच झूठ किया निरवारन ॥ ६ ॥
पुनि भये अदत्ता वस्तु सरबके त्यागी ।
नव वाढ़ सहित व्रत ब्रह्मचर्य अनुरागी ॥
चउवीस परिग्रह त्याग भये अनगारी ।
भव भवमें सेवा चरन मिले मुह थारी ॥ ७ ॥
षट्काय दयाके हेतु निरख भू चाले ।
वच शास्त्र उकत अनुसार असतको टाले ॥

भोजनके षट् चालीस दोष निरवारे।
लख जंतु वस्तको लेय देख भू धारे॥ ८॥
पन करन विषै चकचूर भये अविकारी।
भव भवमें सेवा चरन मिले मुह थारी॥
षट् आवश्यक नित करें नेम निरवाहे।
तज न्हवन क्रिया जलकाय घात न चाहैं॥ ९॥
निज करसों लुचे केश राग तन भागी।
बालकवत निर्भय रहे वस्त्रके त्यागी॥
कबहुं दंतधवन नहीं करें दया व्रतधारी।
भव भवमें सेवा करन चरन मिले मुह थारी॥१०॥
बिन जाँचे भोजन लेय उदंड अहारी।
लघु भुक्ति करें इक बार तपी अधिकारी॥
जामें आलस न बढ़े रोग ह्वै हीना।
निशि दिन रस आतम चखे करे विधि छीना॥११॥
कर घात करम चउ नाश ज्ञान उजयारी।
भव भवमें सेवा चरन मिले मुह थारी॥
दे भव्यनको उपदेश अघाती जारे।
भये मुकतिरमाके कंत अष्ट गुन धारे॥ १२॥
तिन सिद्धनिको मैं नमों सिद्धिके काजा।
सिधथलमें दे मुह वास त्रिजगके राजा॥
नावत नित माथ 'गुपाल' तुम्हें बहु भारी।
भव भवमें सेवा चरन मिले मुह थारी॥१३॥

ॐ ह्रीं श्रीमांगीतुंगी सिद्धक्षेत्रसे राम हनू सुग्रीव सुडौल गव गवाख्य नील महानील और निन्यानवे करोड़ मुनि मोक्षपद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

तुम गुनमाला परम विशाला, जो पहरे नित भव्य गले ।
नाशैं अघजाला ह्वै सुख हाला, नित प्रति मंगल होत भले॥१४॥

इत्याशीर्वादः ।

श्रीकुंथलगिरि पूजा ।

(श्रीयुत कन्हैयालालजी कृत)

तीरथ परम पवित्र अति, कुंथ शैल शुभ थान ।
जहांते मुनि शिवथल गये, पूजों थिर मन आन ॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथलगिरि सिद्धक्षेत्रसे कुलभूषण देशभूषण मुनि मोक्ष पद प्राप्तये अत्र अवतर संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

अष्टक ।

उत्तम उज्ज्वल नीर चीर सब छानके ।
कनक पात्रमें धार देत त्रय आनके ॥
पूजों सिद्ध सु क्षेत्र हिये हरषायके ।
कर मन वच तन शुद्ध करमवश टारके ॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथलगिरिसिद्धक्षेत्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

चंदन दाह निकंदन केशर गारकें ।
अरचों तुम ढिग आय शुद्ध मन धारकें ॥ पूजों० ॥ चन्दनं
तंदुल सोम समान अखंडित आनकें ।
हाटक थार भराय जजों शिर नायके ॥ पूजों० ॥ अक्षतं
सुरद्रुम सम जे पुष्प सुगंधित लायकें ।
दहन काम पन बाण धरों सुख पायकें ॥ पूजों० ॥ पुष्पं
व्यंजन विविध प्रकार पगे घृत खांडके ।
अरपत श्रीजिनराज छुधा ढिग छांड़के ॥ पूजों० ॥ नैवेद्यं
कनक थारमें धार कपूर जलायके ।
बोध लह्यो तम नाश मिथ्या भ्रम जालके ॥ पूजों० ॥ दीपं
अगर आदि दस वस्तु गन्ध जुत मेलके ।
करम दहनके काज दहों ढिग शैलके ॥ पूजों० ॥ धूपं
फल उत्कृष्ट सु मिष्ट जे प्रासुक लायके ।
शिवफल प्रापति काज जजों उमगायके ॥ पूजों० ॥ फलं
जल फलादि वसु दरव लेय श्रुत ठानके ।
अर्घ जजों तुम पाय हरष मन आनके ॥ पूजों० ॥ अर्घं

जयमाला ।

तुम गुन अगम अपार गुरु, मैं बुद्धि कर हों बाल ।
पै सहाय तुव भक्तिवश, वरनत तुव गुनमाल ॥ १ ॥

कुल ऊँच राय सुत अति गंभीर, कुलभूषण दिशभूषण हुवे वीर । लख राज-ऋद्धिका अति असार ॥ वय बाल

माहिं तप कठिन धार ॥ २ ॥ द्वादश विधि अन्नकी सहत पीर, तेरह विधि चारित धरत वीर। गुन मूल बीस अरु आठ धार। सहैं परीषह दस अरु आठ चार ॥ ३ ॥ भू निरखि जंतु कर तित विहार। धर्मोपदेश देते विचार ॥ मुनि भरमत पहुँचे कुंथ शैल। पाहन तरु कंटक कठिन गैल ॥ ४ ॥ निर्जन वन लख भये ध्यान लीन। सुर पूरव अरि उपसर्ग कीन ॥ बहु सिंह सरप अरु दैत्य आय। गरजत फुंकारत मुख चलाय ॥ ५ ॥ तहाँ राम लखन सीता समेत ता दिन थिति कीनी थी अचेत ॥ मुनिपर वेदन यह लखत घोर। दोउ वीर उचारे वच कठोर ॥ ६ ॥ रे देव; दुष्ट तूं जाति नीच। मुनि दुखित किये तुझ आई मीच ॥ हम आगे तू कित भाग जाय। तुह देहैं दुकृतकी सजाय ॥ ७ ॥ यह कह दोऊ कर धनुष धार। हरि बल लख सुर हरपौ अपार ॥ तब मान सीख मुनि चरण धार। तो छिन घाते विधि घाति चार ॥ ८ ॥ उपजत केवल सुरकलप आय। रचि गंधकुटी पद शीस नाय ॥ सुन निज भवसुर आनंद पाय। जुग विद्या दे निज थल सिधाय ॥९॥ प्रभु भाखे दो विधि धर्म सार। सुन धारे जिनते भये पार ॥ मुनिराज अघाती घात कीन। गति पंचम थित अचल लीन ॥ १० ॥ पूजा सुर नर निरवान कीन। गत ऊंचतनो फल सुफल लीन ॥ भव भरमत हम बहु दुःख पाय। पूजें तुम चरण चित्त लाय ॥ ११ ॥ अरजी सुन कीजे महर आप।

तासों मेरा भव भ्रमन ताप ।। विनवे अधिकौ क्या 'कनईलाल'।
दुख मेट सकल सुख देव हाल ।। १२ ।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथलगिरि सिद्धक्षेत्रसे कुलभूषण देशभूषण मुनि मोक्ष पद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

तुम दुख हरता सब सुख करता, भरता शिवतिय मोखपती ।
भं शरने आ ो तुम गुन गायो, उमगायो ज्यों हती मती ।।१३।।

इत्याशीर्वादः ।

श्री मुक्तागिरि पूजा ।

(स्व० कवि जवाहरलालजी कृत)

मुक्तागिरि तीरथ परम, सकल सिद्ध दातार ।
तातें पावन होत निज, नमों सीस कर धार ।। १ ।।
येही जंबूद्वीप मध्य भरतक्षेत्र सो जानिये ।
आरज सो खंड मझार, जाके परम सुन्दर मानिये ।।
ईशान दिशि अचला जु पुरकी, नाम मुक्तागिरि तहां ।
कोड़ि साड़े तीन मुनिवर, शिवपुरी पहुँचे जहां ।। २ ।।
पारसप्रभुको आदि दे, चौवीसों जिनराय ।
पूजों पद जुग पद्म सम, सुर शिवपद सुखदाय ।।

ॐ ह्रीं श्री मुक्तागिरिसिद्धक्षेत्रसे साड़े तीन करोड़ मुनि मोक्षपद प्राप्तये अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

परम प्रासुक नीर निर्मल, क्षीर दधि सम लीजिये।
हेम झारी मांहि भरके, धार सुन्दर दीजिये॥
तीर्थ मुक्तागिरि मनोहर, परम पावन शुभ कहो।
कोटि साडे तीन मुनिवर, जहांते शिवपुर लहो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुक्तागिरिसिद्धक्षेत्राय जन्म जरा मृत्य विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥ १॥

चंदन सु पावन दुख मिटावन, अति सुगंध मिलाइये॥
डार कर कर्पूर केसर, नीर मो घिसलयाइये॥ तीर्थ०॥ चन्दनं
विमल तंदुल ले अखंडित, ज्योति निशिपति सम धरे॥
कनक थारी मांहि धरके, पूज कर पावन परे॥ तीर्थ० अक्षतं
सुरवृक्षके सम फूल लेकर, गन्धकर मधुकर फिरें॥
मदनशाण विनाशवेंकों, प्रभु चरन पूजा करें॥ तीर्थ०॥ पुष्पं
छहों रसकर युक्त नेवज, कनक थारीमें भरों॥
भावसे प्रभु चरन पूजों, क्षुधादिक मनकी हरो॥ तीर्थ०। नैवेद्यं
रतनदीप कपूर बाती, जोत जगमग होत है॥
मोहतिमिर विनाशवेंको, भानु सम उद्योत है॥ तीर्थ० दीपं
कूट मलयागिरि सो चन्दन, अगर आदि मिलाइये॥
ले दशांगी धूप सुंदर, अगन माहि जराइये॥ तीर्थ०। धूपं
ल्याय एला लोंग दाडिम, और फल बहुते घने॥
नेत्र रसना लगे सुंदर, फल अनूप चढावने॥ तीर्थ०॥ फलं
जल गंध आदिक द्रव्य लेके, अर्घ कर ले आवने।
लाय चरन चढाय भविजन, मोक्षफल को पावने॥ ती०॥ अर्घं

मुक्तागिरिके सीसपर, वहुत जिनालय जान।
तिनकी अब जयमालिका, सुनो भव्य दे कान॥ १॥

जयमाला।

श्री मुक्तागिरि तीरथ विशाल महिमा जाकी अद्भुत रसाल॥ जुग पर्वत वीच परे दो कोन। मुक्तागिरि जहां सुखको सु भौन॥ २॥ चढिय सिवान जहां ऊपर सो भान। दहलानेपर सो सार जान। यात्री जहां डेरा करें आय। अती मुदित ह्वै चित्त उमगाय॥ ३॥ ऊपर शुचि जलसों भरे कुंड। जहँ सपरे यात्रिनके सु झुंड॥ वहु विधिकी द्रव्यधरी सो धोय। पूजनको भविजन चले सोय॥ ४॥ जहां मन्दिर वीच वने रसाल। पारसप्रभुकी मूरत विशाल॥ पूजत जहां भविजन हरष धार। भव भवको पुण्य भरे भंडार॥ ५॥ बावन जगह दर्शन जिनेश। पूजत जिनवरको सुर महेश॥ इक मन्दिरमें भुयरो जु सोय। प्रतिमा श्रीशांतिजिनेश होय॥ दर्शन कर नरभव सुफल होय।जहां जन्म जन्मके पाप खोय॥ ७॥ मेढ़ागिरिका हैं गुफा भाय। मन्दिर सुन्दर इक खास काय॥ प्रतिमा श्रीजिनवर देवराज। दर्शन कर पूरन होय काज॥ ८॥ मेढागिरिके ऊपर सुजान। द्वय टोक वनी अति सौम्यमान॥ इक पांडे बालक मुनि कराय। इक भागवलीकी जान रमाय॥ ९॥ जहां श्रीजिनवरके चरण सार वंदत मनवांछित

सुखदातार ॥ बावन मन्दिर जहँ शोभकार । महिमा तिनकी अद्भुत अपार ॥ १० ॥ जहँ सुर आवत नित प्रति महेश । स्तुति करते प्रभु तुम दिनेश ॥ जहाँ सुर नाचत नाना प्रकार । जै जै जै जै जै धुनि उचार ॥ ११ ॥ थै थै थै अब नाचत सुचाल । अति हर्ष सहित नित नमत भाल ॥ मुहचंग उपंग सु तूर सजे । मुरली स्वर बीन प्रवीन बजे ॥१२॥ द्रुम द्रुम द्रुम द्रुम बाजत मृदंग । झननननन नूपुर सु रंग ॥ तननननननन परे तसु तान । घननन घंटा करत ध्यान ॥ १३ ॥ इहि विधि वादित्र बाजें अपार । सुर गावत अब नाना प्रकार । अतिशय जाके हैं अतिविशाल । जहाँ केसर अब बरसे त्रिकाल ॥ १४ ॥ अनहद नित बजें बाजे अपार । गंधोदकादिक वर्षाकी वहार । तहां मारुत मंद सुगंध सोय । जिय जंत जहां न विरोध होय ॥ १५ ॥ अतिशय जहां नाना प्रकार । भविजन हियमें हरख धार ॥ जहां कोड़ जु साडे तीन मान मुनि मोक्ष गये सुनिये सुजान ॥ १६ ॥ बंदत जवाहर अब बार बार । भवसागरसे प्रभु तार तार ॥ प्रभु अशरन शरन अधार धार । सब विघ्न तूल गिरि जार जार ॥ १७ ॥ तू धन्य देव कृपानिधान । अज्ञान मिथ्यातम हरन भान । प्रभु दयासिंधु जै जै महेश । भव बाधा अब मेटो जिनेश ॥ १८ ॥ मैं बहुत भ्रम्यो चिरकाल काल । अब हो दयाल मुझे पाल पाल । तातें मैं तुमरे शरण आय । यह अरज करूं पग शीस नाय ॥ १९ ॥ मम कर्म बंध

देऊ चूर चूर आनंद अनूपम पूर पूर ॥

ॐ ह्रीं श्रीमुक्तागिरि सिद्धक्षेत्रसे साढ़े तीन करोड़ मुनि सिद्धपद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

मुक्तागिरि पूजे अति सुख हूजे, ऋद्धि होय है भर पूरी ।
अति कर्म विनाशे ज्ञान प्रकाशे, शिव पदवीको सुखकारी ॥२०॥
अठरा सो इक्यानवे, वैशाख मास तम लीन ।
तिथि दशमी शनिवारकी, पूजा समापत कीन ॥ २१ ॥

इत्याशीर्वाद ।

श्रीसिद्धवरकूट पूजा ।

(स्व भट्टारक महेन्द्रकीर्त्तिजी कृत)

सिद्धकूट तीरथ महा है, उत्कृष्ट सुथान ।
मन वच काया कर नमों, होय पापकी हान ॥ १ ॥
दोय चक्री मन्मथ जु दस, गये तहँते निर्वान ।
पद पंकज तिनके नमों, हरे कर्म बलवान ॥ २ ॥
रेवाजीके तटनतें, हूंठ कोडि मुनि जान ।
कर्म काट तहँते गये, मोक्षपुरी शुभ थान ॥ ३ ॥
जगमें तीर्थ प्रधान है, सिद्धवरकूट महान ।
अल्पमती मैं किमि कहों अद्भुत महिमा जान ॥ ४ ॥

इन्द्रादिक सुर जाय, तहां बन्दन करें ।
नागपति तहँ आय, बहुत थुति उचरें ॥

नरपति नित प्रति जाय, तहां बहु भावसों।
पूजन करहिं त्रिकाल, भगत बहु चावसों ॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धवरकूटसे दो चक्री दश काम कुमारादि साढ़ें तीन करोड़ मुनि सिद्धपद प्राप्तये अत्र अवतर संवौषट् आव्हाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

उत्तम रेवा जल ल्याय; मणिमय भर भारी।
प्रभु चरनन देऊं चढ़ाय, जन्म जरा हारी॥
द्वय चक्री दस कामकुमार, भवतर मोक्ष गये।
तातें पूजो पद सार, मनमें हरष ठये॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धवरकूटसिद्धक्षेत्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥ १॥

मलयागिरि चन्दन ल्याय, केशर शुभ डारी।
प्रभु चरनन देत चढाय, भव भय दुखहारी॥ द्वय चक्री। चन्दनं
तंदुल उज्ज्वल अविकार, मुक्तासम सोहे।
भरकर कंचनमय थाल, सुर नर मन मोहे॥द्वय चक्री०॥ अक्षतं
ले पहुपसुगंधित सार, तापर अलि गाजे।
जिन चरनन देत चढाय, कामव्यथा भाजे॥द्वयच०॥ पुष्पं
नेवज नाना परकार, षट्रस स्वाद मई। पद पंकज देऊँ चढाय, सुवरन थार लई॥ द्वय चक्री० ॥ नैवेद्यं
मणिमय दीपकको ल्याय, कदली सुत वाती।
जोती जगमग लहकाय, मोह तिमिर घाती॥ द्वय०॥ दीपं

कृष्णागरु आदिक ल्याय, धूप दहन खेई ।
वसु दुष्ट करम जर जांय, भव भव सुख लेई ॥द्रय०॥ धूपं
श्रीफल दाख बदाम, केला अमृत मई ।
लेकर बहु फल सुख धाम, जिनवर पूज ठई ॥द्रय० फलं
जल चन्दन अत्तत लेय, सुमन महा प्यारी ।
चरु दीप धूप फल सोय, अरघ करो भारी ॥द्रय० ॥ अर्घं

जलमाला ।

सिद्धवर कूट सुथानकी, रचना कहूँ बनाय । अति विचित्र रमनाक अति, कहत अल्प कर भाय ॥ १ ॥ जय पर्वत अति उन्नत विशाल । तापर त्रय मन्दिर शोभकार ॥ तामें जिनबिम्ब विराजमान । जय रतनमई प्रतिमा बखान ॥ २ ॥ ताकी शोभा किमि कहे सोय । सुरपति मन देखत थकित होय ॥ तिन मन्दिरकी दिशि चार जान । तिनकूं वरनू अब प्रीति ठान ॥ ३ ॥ ताकी पूरब दिशि ताल जान, तामें सु कमल फूले महान ॥ कमलनपर मधुकर भ्रमे जोय, ता धुनकर पूरित दिशा होय ॥ ४ ॥ ता सरवर पर नाना परकार । द्रुम फल रहे अति शोभकार ॥ छह ऋतुके वृत्त फूले फलाय । ऋतुराज सदा क्रीडा कराय ॥ ५ ॥ मंदिरनकी दच्छिन दिशा सार । सुरनदी वहे रेवा जु सार । ताके तट दोनों अति पवित्र । विद्याधर बहु विधि करें नृत्य ॥ ६ ॥ फिर तहँ ते उत्तर दिशा जान । इक कुंड

बना है शोभमान। ता कुंड बीच जात्री नहाय। तिन बहुत जनमके पाप जाय ॥ ७ ॥ ता कुंड ऊपर अति विचित्र। इक पांडूशिला है अति पवित्र ॥ तिस थान विच देवेन्द्र सोय। जिनबिम्बधरे हैं सीस जोय ॥ ८ ॥ ताकी पश्चिम दिशि अति विशाल। कावेरी सोहे अति रसाल ॥ इन आदि मध्य जे भूमि जान। जय स्वयं सिद्ध परवत महान ॥ ६ ॥ तापर तप धारो दोय चक्रीश। दशकुमार भये जगतईश ॥ इन आदि मुनि आहूठ कोड़। तिनको वंदों मैं हाथ जोड़ ॥ १० ॥ इनको केवल उपज्यो सुज्ञान। देवेन्द्र जुआसन कँपो जान ॥ तब अमर पुरीतें इन्द्र आय। तहँ अष्ट द्रव्य साजे बनाय ॥ ११ ॥ तब पूजा ठाने देव इन्द्र। सब मिलकें गावें शतक इन्द्र ॥ तहँ यात्री आवें झुंड झुंड। सब पूज धरें तंदुल अखंड ॥ १२ ॥ कोई श्रीफल ल्यावे अरु बदाम। कोई पुंगीफल को सु नाम ॥ कोई अमृत-फल केला सु ल्याय। कोई अष्टद्रव्य ले पूज ठाय ॥ १३ ॥ कोई सूत्र पढ़ें अति हर्ष ठान। कोई शास्त्र सुनें बहु प्रीति मान। कोई जिनगुन गावें सुर संगीत। कोई नाचें गावें धरें प्रीत ॥ १४ ॥ इत्यादि ठाठ नितप्रति लहाय बरनन किम मुखतें कहो जाय ॥ सुरपति खगपति को जु सोय। रचना देखत मन थकित होय ॥ १५ ॥ सुर नर विद्याधर हर्ष मान। जिन गुन गावें हिय प्रीति ठान ॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धवरकूटसिद्धक्षेत्रेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जो सिध वर पूजे, अति सुख हूजे, ता गृह संपति नाहिं टरे।
ताको जस सुर नर मिल गावें, 'महेन्द्रकीर्ति' जिनभक्त करे ॥१६॥

सिद्धवरकूट सुथानकी, महिमा अगम अपार।
अल्पमती मैं किमि कहों, सुरगुरु लहैं न पार ॥१७॥

इत्याशीर्वादः।

चूलगिरि (बावनगजा) की पूजा।

(श्रीयुत छगनजी कृत)

आर्या क्षेत्र विहार बोध भवि ये दशग्रीव सुत भ्रातना।
सम्यक्तादि गुणाष्ट प्राप्ति शिव कर्मारि घाती हना॥
ता भगवान प्रति प्रार्थना सुध हृदै त्वद्भक्ति ममवासना।
आह्वानन विमुक्तनाथ तु पुनः अत्राय तिष्ठो जिना॥

ॐ ह्रीं श्रीबड़वानी चूलगिरिसे इन्द्रजीत कुंभकर्णादि मुनि सिद्धपद प्राप्तये अत्र अवपर अवतर संवौषट् आह्वाननं अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

पंचम उदधि सम नीर ले, त्रय धार तिन चरणन करों।
चिर रुजग जन्म जरारु अतक्र, ताहि अब तो परिहरों॥
दशग्रीव अंगज अनूज आदि, ऋषीश जहँतें शिव लही।
सो शैल बड़वानी निकट गिरिचूलकी पूजा ठही॥

ॐ ह्रीं श्रीचूलगिरिसिद्धक्षेत्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

घसि मलय कुमकुम शुद्ध जो, अलिगण न छोडे तासको।
सो गंध शीतल कंद सज, भव- विरह हर भवतापको ॥
दश० । चन्दनं ।

शशि वर्ण खंडन मुक्त शोभा, मुक्त नहिं ताकी धरें।
सो शालि तंदुल करन मंगल, वेग भयक्षयकी हरें। दश. ।अक्षतं

सुरद्रुम निपज सुरलोकके, बहु वर्ण फूल मंगाइये।
अथवा कनक कृत वेल मोगर, चंपकादि चुनाइये ॥द०॥ पुष्पं

कृत सूपकार अनूप छह रस, युक्त अमृत मान जो।
सो चारुचरु जिन अग्र धर, निज भूख वेदन टारि जो ॥
दश० । नैवेद्यं

बहु मूल्य रत्न उद्योतयुत, भय वायु वरजित जो जगे।
सो दीप कंचन थाल धर,अरि दुष्ट मोहादिक भजे ॥द०॥दीपं

दश गंध कृष्णागरु कपूरादिक, सुगंधित ल्यावने।
दहि ज्वलन मध्य मनो भवान्तर, सर्वके विधि जालने ।द०।धूपं

सौमनस नंदन वृक्षके युत, मिष्ट ता फल लेयके।
ता देखते दृग घ्राण मोहे, मोक्षपुर कूं वेयके ॥द०॥ फलं

सजि सौंज आठों होय ठाड़ो, हरष बाढ़ो कथन विन।
हे नाथ भक्तिवश मिलजो, पुर न छूटे एक दिन ॥द०॥ अर्घं

जयमाला ।

करमन कर चकचूर, वसिय शिवालय जाय तुम ।
मेरी आशा पूर, वहुत दुखी संसारमें ॥ १ ॥

वंदों श्री युगल ऋपीश स्वाम । कर कर्म युद्ध लहि मोक्ष वाम ॥ है इन्द्रजीत तुम सत्य नाम । कामेन्दु मोहको कियो काम ॥ २ ॥ हो कुंभकर्ण सार्थक हि आप। भवकर्ण ज्ञान तुम कुंभ थाप ॥ कर्मन कृत वंदों गृह मझार । बलि वासुदेवने दये डार ॥ ३ ॥ सत ज्ञान वानि सम्यक्त युक्त । जानों सत चारित आप युक्त ॥ विधु रिपु दुखदाई मूल जान । तापै तुमने खैंची कमान ॥ ४ ॥ औ सर्व जीवसों क्षमा धार । भाई अनुप्रेक्षा परम सार । तन आदि अथिर दीखे समस्त । है नेह करन सम कौन वस्त ॥ ५ ॥ अशरण न शरण कहुँ जगत माहिं । अहमिन्द्रादिक मृत्यू लहाहिं ॥ भववनमें है नहि सार कुच्छ । तीर्थंकर त्यागें जान तुच्छ ॥ ६ ॥ ये जीव भ्रमत एकाकि आप । नहीं संग मित्र सुत मात बाप । ये देह अन्य फिर कौन मुज्झ । वश मोह परत न हिये सुज्झ ॥ ७ ॥ पल रुधिर पीव मल मूत्र आदि । इनकर निपजी तन होय खाद ॥ जोगनहि चपलता कर्म द्वार । तिन रोक हिये संवर विचार ॥ ८ ॥ तपवल छूटन विधि करम सुक्ख । तिहुंलोक भ्रमत लहि जीव दुक्ख ॥ विन बोध भ्रम्यो चहुँ गति मझार । शिवकर्त्ता धर्म कहेन

धार ॥ ९ ॥ यो चिंतत बहु जन लार लेय। जिनदीक्षा धारी हित करेय ॥ अट्ठाइस गुण मुनि मूल धार। चारों अराधना कु' अराध ॥ १० ॥ नाना विधि आसन धार धार। तप करत युद्ध विधि मार मार ॥ चउ घाति नाश केवल उपाय। भवि जीव बोध जिनवृषलगाय ॥११॥ करके विहार भवि सुक्खमाय। बड़वानी आये अल्प आय॥ गिरि चूल तिष्ठ करि कर्म नाश। छिनमें संसार कियो विनाश ॥ १२ ॥ अति आनंददायक सिद्धक्षेत्र। पूजों भवि जीव निजात्म हेत ॥ धन धन्य तिनहिको भाग्य जान। तिन पुण्यबंध होवे महान ॥ १३ ॥ इन्द्रादि आय उत्सव अनूप। कीनो लहि हर्षित भये भूप ॥ ता गिरिकी उत्तरि दिशि मझार। रेवा सरिता है पूर्ण वार ॥ १४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीबड़वानी-चूलगिरिसे इन्द्रजीत कुंभकर्णादि मुनि सिद्धपद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

गिरिराज अनूपम पूजे भूपम, तिन भवि कूपम जल दीना।
यामें शक नाहीं कर्म नशाहीं, 'छगन' मगन होय थुति कीना।१५

इत्याशीर्वादः।

श्रीगुणावा सिद्धक्षेत्रकी पूजा।

(बाबू पन्नालालजी कृत)

धन्य गुणावा थान, गौतमस्वामी शिवगए।
पूजहु भव्य सुजान, अहि निशि करि उर थापना ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीगुणावासिद्धक्षेत्रसे श्रीगौतमस्वामी सिद्धपद प्राप्तये अत्र अवतर अवतर संवौषट् आव्हाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अति शुद्धसुधा सम तोय, हेमाचल सोहे।
जर जनम मरन नहिं होय, सब ही मनमोहे ॥
जगकी भव ताप निवार, पूजों सुखदाई।
धन नगर गुणावा सार, गौतम शिवपाई ॥

ॐ ह्री श्री गुणावासिद्धक्षेत्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

केशर करपूर मिलाय, चन्दन घिसवाई।
अरचों श्रीजिन ढिगजाय, सुन्दर महकाई ॥ चन्दनं ॥
अति शुद्ध अखंड विशाल, तंदुल पुंज धरे।
भरि भरि कंचनमय थाल, पूजों रोग टरे ॥ अक्षतं ॥
गेंदा गुलाब कनेर, पुष्पादिक प्यारे।
सो करिकरि ढेर सुढेर, कामानल जारे ॥ पुष्पं ॥
अति घेवर फेनी ताप, नेवज स्वाद भरी।
सब भूख निवारनकाज, प्रभु ढिग जोय धरी ॥ नैवेद्यं ॥

घृतसे भरि सुवरण दीप, जगमग जोति थसे।
करि आरति जाय समीप, मिथ्या तिमिर नसे ॥ दीपं ॥
कपूर सुगंधित पूर, अगर तगर डारों।
श्रीचरनन खेवों धूप, करम कलंक जारों ॥ धूपं ॥
पिस्ता बादाम सुपारि, श्रीफल सुखदाई।
मन वांछित दातार, ऐसे जिनराई ॥ फलं ॥
सब अष्ट द्रव्य करि त्यार, प्रभु ढिग जोरि धरों।
'पन्ना' प्रति मंगलकार, शिवपद जाय वरों ॥ अर्घं ॥

जयमाला।

गौतम स्वामीजी भये, गणधर-वीर-प्रधान।
तिनकी कछु जैमाल अब, सुनों भव्य धरि ध्यान॥ १ ॥

वंदो श्रीमहावीर जिनंदा। पाप निकंदन आनंद कंदा ॥ जिन परताप भये बहुनामी। जै जै जै श्रीगौतम स्वामी ॥ २ ॥ भयो जहां प्रभु केवलज्ञाना। समोशरण इन्द्रादिक ठाना ॥ खिरी दिव्यध्वनि नहि भगवान-गणधर नहिं कोई गुणवान ॥ ३ ॥ तब विद्यारथि भेष बनाई। वासक गौतमके ढिग जाई ॥ पूछत अर्थ सूत्र यों भाषित। षड्द्रव्य पंचास्तिकाय भाषित ॥ ४ ॥ यह सुनि गौतम वचन उचारे। तोसों करूं वाद क्या प्यारे ॥ चलि अपने गुरू वीर नजीका। करिहें शास्त्रार्थ तहं नीका ॥ ५ ॥ ऐसी कह ततकाल सिधारे। समोशरणमें आप पधारे ॥ देखत

मानथंभको जोहीं । खंडित भयो मान सब योंही ॥ ६ ॥
भूल गये सब वाद विवादा । कीनी थुति सब छांड़ि
विषादा ॥ सोई गणधर भये प्रधाना । धन्य धन्य जैवंत
सुजाना ॥ ७ ॥ धन्य गुणावा नगर सुहाई । जहंते उन
शिवलछमी पाई ॥ सुन्दर ताल नगर अति सोहैं । ताविच
मंदिर जन मनमोहे ॥ ८ ॥ चरण पादुका बने अनूपा ।
पूरब धर्मशाल अरु कूपा ॥ सन्मुख वेदी अति सुखदाई ।
वीरचरण प्रतिमादि सुहाई ॥ ६ ॥ चारों ओर चरण
चौबिसी । तिन लखि हर्ष होत अति हीसी ॥ पूजनीक
अति ठाम अपारो । दुखदारिद्र नशावन हारा ॥ १० ॥
जो पढे पढ़ावे पूज रचावे, सो मनवांछित फल पावे ॥
सुत लाभ विहारि आज्ञाकारी, 'पन्ना' जगत न भरमावे ॥११॥

ॐ ह्रीं श्रीगुणावा सिद्धक्षेत्रेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

शहर हाथरस पास, मनोहर ग्राम विसाना ।
तामधि श्रावक लोग, बसे सब ही बुधवाना ॥
सँवत् शत उनईस, तासुपै धारि वहत्तर ।
विक्रम साल प्रमान, जेठ मासा बीतन पर ॥१२॥

इत्याशीर्वादः ।

श्रीपटना सिद्धक्षेत्र (सुदर्शन) पूजा।

(बाबू पन्नालालजी कृत)

उत्तम देश बिहारमें, पटना नगर सुहाय।
सेठ सुदर्शन शिव गये, पूजों मन वच काय ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीपटना सिद्धक्षेत्रसे सुदर्शन सेठ सिद्धपद प्राप्तये अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ: तिष्ठ: ठः ठः स्थापनं अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्

नित पूजोरे भाई या श्रावक कुलमें आयकें।
नित पूजोरे भाई श्रीपटना नगर सुहावनों ॥
गँगाजल अति शुद्ध मनोहर, झारी कनक भराई।
जन्म जरा मृत नाशन कारन, ढारों नेह लगाई ॥ नि० ॥
जँबूद्वीप भरत आरजमें, देश बिहार सुहाई।
पटना नगरी उपवनमें, शिव सेठ सुदर्शन पाई ॥ नि० ॥

ॐ ह्रीं श्रीपटनासिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

चंदन चंद्र मिलायसु उज्ज्वल, केशर संग घिसाई। महक उड़े सब दिशनु मनोहर, पूजों जिनपद राई ॥नि०॥ चन्दनं

शुद्ध अमल शशि सम मुक्ताफल, अक्षत पुंज सुहाई। अक्षय पदके कारण भविजन, पूजों मन हरषाई ॥ नि० अक्षतं।

पांचों विधि के पुष्प सुगँधित, नभलों महक उड़ाई ।
पूजों काम विकार मिटावन, श्रीजिन के ढिग जाई
॥ नित० ॥ पुष्पं

उत्तम नेवज मिष्ट सुधासम, रस संयुक्त बनाई ।
भूख निवारन कंचन थारन, भर भर देहु चढ़ाई ॥नि०॥नैवेद्यं

मनिमय भाजन घृतसे पूरित, जगमग जोति जगाई । सब
मिल भविजन करो आरती, मिथ्या तिमिर पलाई ॥नि०॥दीपं०

अगर तगर कपूर सुभवन द्रव्य सुगंध मंगाई ।
खेवो धूप धूमसे वसुविधि, करम कलंक जराई ॥ नि० ॥ धूपं

एला केला लोंग सुपारी, नरियल फल सुखदाई ।
भर भर पूजों थाल भविकजन, वांछित फल पाई ॥नि०॥ फलं ।

अष्ट दरब ले पूज रचाओ, सब मिल हर्ष बढ़ाई ।
झालर घंटा नाद बजाओ, 'पन्ना' मंगल गाई ॥ नि० ॥ अर्घं

जयमाला ।

सेठ सुदर्शन जे भये, शीलवान गुणखान ।
तिनकी अब जैमालिका, सुनहु भव्य दे कान ॥ १ ॥

जै सेठ सुदर्शन शीलवंत । जग छाय रही महिमा
अनंत ॥ तिनकी कछु मैं जैमाल गाय । उर पूज रचाऊँ
हर्ष ठाय ॥ २ ॥ जै भरतक्षेत्र मधि अंग देश । चंपापुर

सोहे तहँ विशेष । नृप धात्रीवाहन राज गेह । प्रिय अभयमती सौं अति सनेह ॥ ३ ॥ तहँ मुख्य सेठ इक वृषभदास । तिन सेठानी जिनमतिय खास ॥ तिन चाकर ग्वाला सुभग नाम । मुनि देखे वनमें एक जाम ॥ ४ ॥ सो महामंत्र नवकार पाय । अति भयो प्रफुल्लित कही न जाय ॥ पुनि एक दिवस गंगा मँझार । वह डूबतमें जापत मंत्र सार ॥५॥ तुरतहिं मर सेठ घरे विशाल । सुत भयो सुदर्शन भाग्य-शाल ॥ सबको सुखदाई मिष्ट वैन । निज कपिल यार सँग दिवस रैन ॥६॥ पढ़ि खेल कूद भयो अति सयान । तब सेठ मनोरमा सँग सुजान ॥ शुभ साइत व्याह दियो कराय । सो भोगत सुख अति हर्ष ठाय ॥७॥ पुनी कछुक काल भीतर इकंत । एक सुत भयो अति रूपवंत । तब सेठ सुदर्शन धीरवान । निज काम करैं अति हर्ष ठान ॥ ८ ॥ तब कपिल नारि आसक्त होय । घर सेठ बुलाये तुरत सोय ॥ तहँ सेठ नपुंसक मिस बनाय । निज शील लियो ऐसे बचाय ॥ ९ ॥ जब खबर सुनी रानी तुरंत । मन करी प्रतिज्ञा दीढवंत ॥ मैं भोग करूं वासूं सिहाय । तब ही मम जीवन सुफल थाय ॥ १० ॥ इन सेठ अष्टमी कर उपास । मरघटमें ध्यानारूढ़ खास ॥ तहँ चेली उनके पास जाय । रानीको हाल दियो सुनाय ॥ ११ ॥ तहँ सेठ निरुत्तर देखि हाय । निज कन्धेपै धरिके उठाय ॥ फिर पहुँची रानी पास जाय । उन अचल देख तुरतै रिसाय ॥ १२ ॥ यों

खबर करी नृप पास जाय। मो शील विगारयो सेठ आय ॥
यों सुनत वैन नृप क्रोध छाय। मारनको हुकम दियो
सुनाय ॥ १३ ॥ तहाँ करी प्रतिज्ञा शीलवंत। मुनि पदवी
धारूं यदि बचंत ॥ सो देव करी रक्षा सु आय। पुनि
दीक्षित ह्वै वनको सिधाय ॥ १४ ॥ सो करत करत कछु
दिन विहार। तब आए पटना नगर सार ॥ तहँ देवदत्ता
वेश्या रहाय। मिस भोजन मुनि लीने बुलाय ॥ १५ ॥
उन कामचेष्टा कर सिहाय। झट सेठ लिये शय्या गिराय॥
लख ऐसो मनमें कर विचार। उपसर्ग मेरो यदि हो
निवार ॥ १६ ॥ सन्यास धरूं नगरी न जाऊँ। वन ही
वन करत तप फिराऊँ ॥ यह देख वेश्या निरूपाय। निशि
प्रेतभूमि दीने पठाय ॥ १७ ॥ तहँ रानी व्यंतर जोनि
पाय। नाना उपसर्ग कियो वनाय ॥ मुनि पुण्यभावसे यक्ष
आय। तब लिए सेठ तुरतै बचाय ॥ १८ ॥ सो कठिन
तपस्या कर निदान। भयो सेठ जहाँ केवल सु ज्ञान ॥
सो कछुक काल करके विहार। उन मुक्ति वरी अति
श्रेष्ठ नार ॥ १९ ॥

घत्ता।

इक ग्वाल गमारा जप नवकारा, सेठ सुदर्शन तन पाई।
सुत लालबिहारी आज्ञाकारी, 'पन्ना' यह पूजा गाई ॥२०॥

ॐ ह्रीं श्रीपटनासिद्धक्षेत्रेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इत्याशीर्वादः।

श्रीराजगृहीजी क्षेत्र पूजा।

(मुनीम मुन्नालालजी परवारकृत)

जम्बू द्वीप मझार, दक्षिण भरत सु क्षेत्र है।
ता मधि अति विख्यात, मगध सुदेश शिरोमणी॥ १॥
मगध देशकी राजधानि मोहै मही।
राजगृही विख्यात पुरातन है मही॥
तिस नगरीके पास महां गिरि पांच हैं।
अति उतंग तिन सिखर सु शोभा लहात हैं॥ २॥
विपुलाचल, रतना, उदयागिरि जानिये।
सोना गिरि व्यवहार सुगिरि, शुभ नाम ये॥
तिनके ऊपर मंदिर परम विशालजी॥ ३॥
एकोनविंशति बने सु पूजहु लालजी॥ ३॥
तीर्थंकर तेईसके, समोशरण सुखदाय।
करि विहार तहँ आय हैं, वासुपूज्य नहिं आय॥ ४॥
चोवीसों जिन राजके, बिम्ब चरण सुखदाय।
तिन सबकी पूजा करों, तिष्ठ तिष्ठ इत आय॥ ५॥

ॐ ह्रीं श्री राजगृही सिद्धक्षेत्रके पंच पर्वतोंपर उनईस मंदिरस्थ जिन बिंब व चरण समूहेभ्यो अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

क्षीरोदधि पानी, दूध समानी, तसु उनमांनी, जल लायो।
तसु धार करीजे, तृषा हरीजे, शांति सुदीजे, गुण गायो॥१॥

श्री पंच महागिर, तिन परम मंदिर, शोभित सुन्दर, सुख कारी।
जिन बिंव सुदर्शन, आनंद बरसत, जन्म मृत्यु भय दुख हारी ।।

ॐ ह्रीं श्रीराजगृही सिद्धक्षेत्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।

मलया गिर पावन, केसर बावन, गंध घिसा कर ले आयो । मम दाह निकंदो भव दुख दंदौ तुम पद वंदौं सिरनायो ।। श्री० ।। चन्दनं० ।।

अक्षत अनियारे, जल सु पखारे पुंज तिहारे, ढिग लाये । अक्षय पद दीजे, निज समकीजे, दोष हरीजे, गुण गाये ।। श्री० ।। अक्षतं ।।

बेला सुचमेली, कुन्दवकौली, चंप जुहीले गुलाब धरों । अति प्रासुक फूला हे गुण मूला, काम समूला नाश करौ ।। श्री० ।। पुष्पं०।।

फेंनी अरु बावर, लाडू घेवर, तुम पद ढिग धर, सुखपाये। मम क्षुधा हरीजे समता दीजे, विनती लीजे गुण गाये ।। श्री० ।। नैवेद्यं

दीपक उजियारा, कपूर प्रजारा, निजकर धारा अर्ज करूं । मम तिमिर हरीजे ज्ञान सुदीजे कृपा करीजे पांव परूं ।। श्री०।। दीपं०।।

दश गंध कुटाया, धूप बनाया, अग्नि जलाया, कर्म नशै । मम दुख करो दूरा करमहिं चूरा आनंद पूरा सुख विलसे ।। श्री० ।। धूपं

बादाम छुहारे, पिस्ता प्यारे, श्रीफल धारे, भेंट करूं।
मन वांछित दीजे शिव सुख कीजे ढील न कीजे मोद धरूं
॥ श्री० ॥ फलं

वसु द्रव्य मिलाये, भवि मन भाये, प्रभु गुण गाये,
नृत्यकरों। भवभव दुखनाशा शिव मग भासा चित्त हुलाशा
सुक्ख करौ ॥ श्री० ॥ अर्घं

अथ प्रत्येक अर्घ।

अंतिम तीर्थंकर वीर स्वामी, समोशरण युत आय हैं।
तहँ राय श्रेणिक पूज्यकर, उन धर्म सुनि सुख पाय हैं॥
गौतम सु गणधर, ज्ञान चहु धर, भव्य संबोधे तहां।
सो वाणिरचना ग्रंथ मांही, आज प्रचलित है यहां॥
सो विपुलाचल सीस पर, छह मंदिर विख्यात।
द्वय प्रतिमा शोभा धरें, चरण पादुका सात॥

ॐ ह्रीं श्री विपुलाचलपर्वत पर सात मंदिरस्थ द्वय प्रतिमा व सात युगल चरणकमलेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

रतनागिरि पर दो मंदिर सोहैं सही।
प्रतिमा दो रमनीय परम शोभा लही॥
चरण पादुका चार भीतरे सोहनी।
एक पादुका दूजे मंदिर में बनी॥
वसु विधि द्रव्य मिलायकर, दोइ कर जोडे सार।
प्रभु से हमरी वीनती, आवागमन निवार॥

ॐ ह्रीं श्री रत्नागिर पर्वतपर दो मंदिरस्थ दो प्रतिमा व पांच युगल चरणकमलेभ्यो अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥

उदयागिर पर मंदिर दो हैं विशाल जी ।
श्री पारस प्रभु आदि बिंब छह हाल जी ॥
चरण पादुका तीन विराजत हैं सही ।
दर्शन हैं छह जगह परम शोभा लही ॥
अष्ट द्रव्य ले थार, मन वच तनसे पूज हों ।
जन्म मरण दुख टार, पाऊं शिव सुख परमगति ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्री उदयागिरि पर्वतपर दो मंदिरस्थ छह प्रतिमा व तीन युगल चरणकमलेभ्यो अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥

श्रमणागिरके सीसपर, दो मंदिर सुविशाल ।
आदिनाथजी मूल हैं, दर्शन भव्य निहाल ॥
द्वय प्रतिमा इक चरण तह, राजत है सुखकार ।
अष्ट द्रव्य युत पूज हैं, ते उतरे भव पार ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्री श्रमणागिर पर्वतपर दो मंदिरस्थ दो प्रतिमा व युगल चरण कमलेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

श्री गिरि व्यवहार अनूप जान । तह मंदिर सात बने महान । तिनके अति उन्नत सिखर सोय । देखत भवि मन आनंद होय अरु टूटे मंदिर पड़े सार । पुनि गुफा एक अद्भुत प्रकार । सबमें प्रतिमा सु विराजमान । पुनि चरण तहां सु अनेक जान ॥ ले अष्ट द्रव्य युत पूज कीन । मन

वच तन कर त्रय धोक दीन। सब दुष्ट करम भये चूर चूर।
जासे सुख पाया पूर पूर ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्री व्यवहारगिर पर्वतपर सात मंदिर व टूटे मंदिर व एकगुफामें अनेक प्रतिमा व चरणकमलेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

जयमाला।

उन्नत पर्वत पांच पर, उनईस जिनालय जान।
मुनिसुव्रत जिनराजके, कल्याणक चहु जान॥

बनो राजगृह नग्र अनूप। बनी तह खाई कोट सु कूप। बने तहं बाग महा रमनीक। फले फल फूल सु वृक्ष जुठीक॥ तहां नरनार सु पंडित जान। करें नित पात्रनको बहु दान। करै नित श्रावक शुभ षट् कर्म। सु पूजन वंदन आदिक धर्म॥ रहै बन मुनिवर अर्जिका जान। करैं नित भक्ति सु श्रावक आन। हैं राय सु मित्र महा गुणवान। सबै गुण ईश सु पंडित जान॥ सु नारि पद्मावति नाम सु जान सबै गुण पूरित रूप महान। जु श्रावण दोज वदी दिन सार। सुपन सोलह दिखे निशसार॥ सु होत प्रभात पतिय ढिग जाय। सुपन फल सुनि मन हर्ष लहाय। प्रभु तीर्थंकर गर्भ मझार। अपराजित से आये गुणधार। सु सेव करें नित देविय आय। नगर नर नार जु हर्ष लहाय। यों सुख में भये नव माह व्यतीत। वदी वैशाख दशमि शुभमीत॥ सुजन्म प्रभु को भयो सुखदाय। सु

आसान कंपो तबै हरिराय। अवधिकर इन्द्र जनम प्रभु जान। किया परिवार सहित सु पयान ॥ प्रदक्षिण तीन नगर दी आय। शचीधर हर्ष प्रभू गृह जाय। सु सुखनिद्रा माता को धार। प्रभु कर लेय किया नमस्कार। सु लेय हरी निज गोदहिं धार। सुनेत्र सहस धर रूप निहार- ऐरावत गज चढि मेरुपै जाय। सु पांडुक पर प्रभु को पधराय॥ सहस अरु आठ कलश शुभ लेय। क्षीरोदधि नीरसे धार ढरेय। सु भूषण बहु प्रभुको पहराय। सु नृत्य किया वादित्र बजाय। सु पूज रु भक्ति तहां बहु कीन। सु जन्म सफल अपनो करलीन। सु लाय पिता कर सौंप विराट। सु नृत्य किया अति आनंद ठाट॥ मुनिसुव्रत नाम तबै हरि धार। जु श्यामवरण छवि है सुखकार। प्रभु क्रमसो योवन पद धार। सु राज रु भोग अनेक प्रकार॥ जु एक दिना सु महल्ल मभार। बिठे शत खण्ड पे थे सुखकार। आकाश मभार बदल इक देख। तत्क्षण चित्र लिखत शुभपेख॥ जु लिखितहि ताहि विलाय सुजान। लहो वैराग्य परम सुख खानि। सु भावत भावन बारह सार। वदी वैशाख दशमि सुखकार॥ सु आय लोकांत नियोग सुकीन। सु इंद्रहिं कांध चले सु प्रवीन। तहां वन जायके लुंच विशाल। धरो तप दुद्धर बारा प्रकार॥ सुघाति करम हनि ज्ञान सु पाय वदी वैशाख की नौमि

सुहाय । समवसृति इंद्र तहां रचि सार ! प्रभु उपदेश दे भव्यहिं तार ॥ यही कल्याण चहू सुखकार । सु राज गृही नगरी वो पहार । प्रभु मुनिसुव्रत मेरे हो स्वामि । देवहु निज वास हमें अभिराम ॥ सु नाश अघाति सम्मेद से जाय । सु निरजर कूट ते मोक्ष सिधाय । सु अंतिम प्रभु महावीर जिनाय । आये विपुलाचलपै सुखदाय ॥ जु रायसु श्रेणिक भक्ति समेत । सु प्रश्न हजारों किये धर्म हेत । सु गौतम गणधरजी सुखकार । सु उत्तर देय सु भव्यहि तार । जु श्रेणिक क्षायक सम्यकधार । प्रकृति तीर्थंकर बंध जु सार । वही जिन वानिका अवलों प्रकाश । सु ग्रंथनमांहि जु देखो हुलास ॥ जिनेश्वर और तहां इकवीस । विहार करंत रहे गिरि सीस । सु वानि खिरी भवि जीवनकाज । सुनी तव भव्य तजा गृहराज ॥ सु पर्वत पास हैं कुंड अनेक । भरे जल पूरित गर्भ सु टेक । करै तहं यात्रि सु आय स्नान । सु द्रव्य मनोरम धोवत जान ॥ सु चालत वंदन हरषहि धार । सु वंदन ते कर्म होवत क्षार । करें पुनि लौट सु आय स्नान । थकावट जाव सु सुक्ख महान ॥ बनी धर्मशाला महा रमणीय सु यात्रि तहां विश्राम सुलीय । प्रभु पद वांदत मैं हरषाय । मुझे नित दर्शन दो सुखदाय ॥ जु अल्पहि बुद्धि थकी मैं बनाय । सुधारहु भूल जु पंडित भाय । दुहु कर जोड नमैं "मुन्नालाल" । प्रभु मुझे वेग करो जु निहाल ॥ मुनिसुव्रत वंदित, मन आनंदित, भव

दुख दंदहि जाय पलाय। श्री पंच पहाडी, अति सुख कारी, पूजन भविजन शिव सुखदाय ॥

ॐ ह्रीं श्री राजगृही सिद्धक्षेत्रेभ्यो महार्घ निर्वपामीति स्वाहा

पंच महा गिरि राजको, पूजे मन वच काय।
पुत्र पौत्र संपति लहे, अनुक्रम शिवपुर जाय ॥

इत्याशीर्वादः।

श्री मंदारागिरिजी पूजन।

(मुनीम मुन्नालालजी परवार कृत)

अंग देशके मध्य है चंपापुर सुख खानि।
राय तहां वसु पूज्य हैं, विजया देवी रानि ॥ १ ॥

वासुपूज्य तसु पुत्र तीर्थपद धारजी।
गर्भ जन्म तिन चंपानगर मझारजी ॥
तप करते यह वन चंपापुर के सही।
ज्ञान ऊपजो ताही बनके मध्य ही ॥ २ ॥
मोक्ष गये मंदारशैलके सिखर तें।
पर्वत चंपा पास सु दीसत दूर तें ॥
सो पंच कल्याणक भूमि पूजता चावसो।
वासुपूज्य जिनराज तिष्ठ इत आवसो ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिन पंच कल्याणक भूमिभ्यो अत्र अवतर अवतर संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ-ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

पद्म द्रहको नीर उज्वल, कनक भाजनमें भरों।
मम जन्म मृत्यु जरा-निवारन, पूज प्रभुपदकी करों॥
श्री वासु पूज्य जिनेंद्रने गर्भ, जन्म लिया चंपापुरी।
श्री तपसु ज्ञान अरन्य शैल, मंदारते शिव तिय वरी॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिन पंचकल्याणक भूमिभ्यो जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर कपूर वो मलय बावन, घिस सुगन्ध बनाइया।
संसारताप विनाश कारण भर कटोरि चढाइया॥ चन्दनं॥
देव जीर सुवास तंदुल, अमल भवि मन मोहये।
सो हेम थारहि धरत पदढिग, अखय शिवपद चाहिये॥अक्षतं॥
बेला चमेली चंपा जूही, गुलाब कुन्द मंगायके।
चुन चुन धरू अति शुद्ध पहुपहिं, काम मूल नशायके॥पुष्पं॥
फैनी सु बाबर लाडू घेवर, पूवा शुद्ध बनाइया।
वर हेम भाजन धरत पद ढिग, जजत भूख भगाइया॥नैवेद्यं॥
बाती कपूरकी धार घृतमें, दीप ले आरति करों।
अज्ञान मोहनि अंध भाजत, ज्ञान भानु उदय करों॥ दीपं॥
ले गंध दशविधि चूर भूर, सु अग्नि मध्य जरावही।
मम कर्म दुष्ट अनादि जलते, धूम तिन सु उडावही॥धूपं॥
श्री फल सु आम्र नारंगी केला, जायफल घो लाइये।

ते धरत प्रभु ढिग चरण भेंट, सु मोय शिवफल चाहिये ॥फलं॥
जल फल मिलाय सु अर्घ लेकर, कनक भाजनमें धरों।
मम दुःख भव भव दूर भाजत, पूज्य प्रभु पदकी करौं ॥अर्घं॥

अथ जयमाला।

सत्तर धनु तन तुंग है, वर्ण सु छवि है लाल।
दशवें दिव ते चय भये, लक्ष बहत्तर साल ॥ १ ॥
जन्में शतभिषा नक्षत्रमें, बाल ब्रह्म व्रत लेय।
महिष चिन्ह पद पद लसे, गाऊं गुण सुख देय ॥ २ ॥

जय वासुपूज्य करुणा निधान, भवदधिसे तारन हार जान। वसुपूज्य नृपति चंपापुरीश, विजया देवी रानी सुधीश ॥ ताके शुभ गरभ रहो महान, वदि छट असाड़की तिथिय जान। तव छप्पन देवी रहत लार, माताको सेवत अधिक प्यार ॥ सुखसें नव माह भये व्यतीत, फागुन वदि चौदश दिन सु चीत। प्रभु जन्म भयो आनन्दकार, तव इन्द्रनि मुकुट नये सु वार ॥ स्वर्गनवासी घर घंट नाद, ज्योतिष इन्द्रनि घर सिंहनाद। पुनि भवनवासि घर वजे शंख, व्यंतर घर पट पट वजे झंख ॥ अनहद सुनि प्रभुका जन्म जान, चल सात पैंड़ कीनी प्रणाम। पुनि परिजनयुत सजि चले सोय, चतुरनिकायनि हार हर्ष होय ॥ ऐरावत गज चढ़ि स्वर्गराय, पुरि परदक्षिण दी तीन जाय। तब शची प्रसूतहि थान जाय, माताको सुख निद्रा कराय ॥ दूजो सुत

धरि प्रभु गोद लेय, सौधर्म ईशकर प्रभुहिं देय। हरि नेत्र सहसकर रूप देख, नहिं तृप्त होत फिर फिर सु देख ॥ ईशान इन्द्र सिर छत्र धार, तीजे चौथे हरि चवर ढार। जय जय नभमें करि शब्द जोय, गये पांडुक वन हरि प्रमुद होय ॥ तित शिला पांडुपर प्रभु विठाय, क्षीरोदधि जल निजकर सु लाय। सिर सहस कलश अरु आठ ढार, आभूषण शचि पहिराये प्यार ॥ पुनि अष्ट द्रव्य युत पूज कीन, निज जन्म सफल सब हरि गिनीन। बहु उत्सव करत जु नगर आय, पितु गोद धार हरि थान जाय ॥ प्रभु लाल वरण छवि शोभ लीन, नहिं राज किया नहि भोगकीन। सो कुंवर काल वैराग्य धार, फागुन वदि चौदस सुक्खकार ॥ भावन भाइ बारह प्रकार, दिव ब्रह्म रिषी चलि हर्ष धार। तिन आय विराग प्रशंस कीन, देवनि हरि युत चलि हर्ष लीन ॥ प्रभु सुख पालहिं चढ गमन कीन, चंपा वनमें कच लोंच कीन। तबही मनपर्यय ज्ञान धार, तप करत प्रभू बारह प्रकार ॥ बाईस परीषह वह सहंत, पुनि क्षपकश्रेणि चढ़ घातिहंत। सुदि माघ द्वितीया कर्म जार, उपजो पद केवल सुक्खकार ॥ तब इन्द्र हुकम धरनेन्द्र चाल, देवनि जानी मन हर्ष धार। समोसृत बहु विधि युत सो बनाय, वेदी सुकोट बाहर सभाय ॥ प्रभु दिव्यध्वनि उपदेश देय, मुनि भविजन मन आनंद लेय। केई मुनिवर केई गृही व्रत, केई अर्जिक श्रावकनी पवित्र ॥ सो कर विहार प्रभु देश देश,

मेटे भविजीवनिके कलेश। रहिआयु शेष जब मास एक, तब आये गिरि मंदार टेक॥ तहं धार योग आघाति नाश, भये सिद्ध अनंते गुणनिरास। भादौं सुदि चौदस रान्ह काल, मुनि चौरानव युत शिवविशाल॥ रह गये केश अरु नख जु शेष, उडि गये सर्व पुद्गल प्रदेश। तब इन्द्र अवधि प्रभु मोक्ष जान, मंदार शिखर आये सु जान॥ चतुरनिकायनि मन हर्ष धार, प्रभुको शरीर रचियो जु सार। वसु विधिसे तिनकी पूज कीन, पुनि अग्नि कुमार पद धोक दीन॥ तिन मुकटसे अग्नि भई तयार, ताकर कीना प्रभु संस्कार। जय जय करते निज थान जाय, सो पूज्य क्षेत्र भवि सुक्खदाय॥ ता पर्वतपर मंदिर विशाल, तामें युग चरण चतुर्थ काल। पुनि छोटा मंदिर एक और, त्रय युगल चरण हैं भक्ति ठौर॥ प्रभु पंच कल्याणक युत जिनेश, मेटो हमरे भव भव कलेश। सो चरण सीस धारत त्रिकाल, नमि अरज करत है "मुन्नालाल"॥ वंदित मन वांछित फल लहाय, पूजे ते वसु विधि अरि नशाय। हम अल्प बुद्धि जयमाल गाय, भवि करो शुद्ध पंडित सुभाय॥

मन वच तन वंदित कर्म निकंदित, जन्म २ दुख जाय पलाय।
श्रीगिरि मंदारा, दुख हरतारा, सुख दातारा, मोक्ष दिवाय॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिन पंच कल्याणक भूमिभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वासु पूज्य जिनराज, तुम पद युगपर शीस धरूं ।
सरे हमारे काज, याते शिव पद सुख लहूं ॥

इत्याशीर्वादः ।

कैलाश गिरि पूजा ।

श्री कैलाश पहाड़ जगत् परधान कहा है,
आदिनाथ भगवान जहाँ शिववास लहा है ।
नाग कुमार महाव्याल व्याल आदि मुनिराई,
भये तिहि गिरिसों मोक्ष थापि पूजों सिरनाई ॥

श्री कैलाश पहाडसों, आदिनाथ जिन देव ।
मुनी आदि जे शिव गये, थापि करो पद सेव ॥

ॐ ह्रीं कैलाश पर्वत से श्री आदिनाथ स्वामी और नागकुमारादि मुनि मोक्ष पद प्राप्ताय अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् । तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट् ।

नदगंग सु निरमल नीरलाय, करि प्रासुक भरु कुंभन भराय।
जिन आदि मोक्ष कैलाशथान, मुन्यादि पाद जजु जोरि पानि॥

ॐ ह्रीं कैलाश पर्वत से श्री आदिनाथ भगवान और नागकुमारादि मोक्ष पद प्राप्तेभ्यो जलं ।

मलयागिरि चन्दन को घसाय, कुंकुमयुत भरु कुंभन भराय ।

जिन आदि मोक्ष कैलाश थान, मुन्यादि पाद जजु जोरि पान ॥ चन्दनं ॥

जिनवा कमोद वर शालिलाय, खंड हीन धोयथारा भराय ।
जिन आदिमोक्ष कैलाश थान, मुन्यादि० ॥ अक्षतं ॥

सुवेल चमेली जुही लेय, पाटिल वारिज थारी भरेय ।
जिन आदि मोक्ष कैलाश थान, मुन्यादि० ॥ पुष्पं ॥

मोदक घेवर खाजे बनाय, गोझा सुहाल भरि थाल लाय ।
जिन आदि मोक्ष कैलाश थान, मुन्यादि० ॥ नैवेद्यं ॥

घृत करपूर मणि के दीप जोय, जिन से प्रकाश तम क्षीण होय । जिन आदि मोक्ष कैलाश थान, मुन्यादि० ॥ दीपं ॥

वर धूप दशांगी अग्नि धार, जसु धूम घटा छाये अपार ।
जिन आदि मोक्ष कैलाश थान, मुन्यादि० ॥ धूपम् ॥

फल चोचमोच नरियार जेय, दाड़िम नारंग भरिथारलेय ।
जिन आदिमोक्ष कैलाश थान, मुन्यादि० ॥ फलम् ॥

जल आदिक आठों द्रव्य लेय, भरि स्वर्ण थार अर्घहि करेय ।
जिन आदिमोक्ष कैलाश थान, मुन्यादि० ॥ अर्घं ॥

जयमाला (छन्द त्रिभंगी)

कैलाशपहारा, जग उजियारा, जिन शिव गाया ध्यान धरो । वसु द्रव्यन लाई, तिहि थल जाई, जिन गुण गाई पूज करो ॥

अयोध्यापुरी बहु शोभमान, है आदिनाथ जिन जन्म थान । भये भोग भूमि को अन्तजान, प्रभु कर्म भूमि रचना करान । असि मसि कृषि वाणिज वृत्तिजान, पशु पालन बतलायो योजनान । करि राज जगत् सों ह्वे उदास, दे सुतहि कियो जा वन निवास । तप धरत मन पर्यय लहाय, रिपु घाति नाश केवल लहाय । हरि आज्ञासों धन देव आय, तिन समव शरण रचना कराय । ता मध्य गन्ध कुटी बनाय, मणि सिंहासन तापर दिपाय । ता ऊपर वारिज हेम मान, अंतरीक्ष विराजै देव जान । प्रभु वाणि खिरैं वृष वृष्टि होय, सुनि २ समझे सब जीवसोय । निज वैभवयुत भरतेश आय, है पूजौ जिन पद शीश नाय । हरि आन जजत जिन चरण कीन, करवे विहार हित जिनय कीन । प्रभु विहरे आरज देश जान, कैलाश शैल दिय ध्यान आन । प्रभु कर्म अघाती घात कीन, पंचम गति स्वामी प्राप्त कीन । हरि आन चिता रचि दाह दीन, धरि चार शीश सुर गमनकीन । ह्यां सों औरहु मुनि सुजान, हनिकर्म लयो है मोक्ष थान । गिरि को वैढे खातिक सुजान, अरु मान सरोवर झील मान । तासों यात्रा है कठिन जान, नहिं सुलभ किसी दिशसो बखान । है आठ सहस्र पैड़ी प्रमान, तासों अष्टापद नामजान । सुत कन्हईलाल भगवानदास, कर जोरि नमै थल शिव निवास । मांगत जिनवर मुनिवर दयाल, भव भ्रमण काट द्यो शिव विठाल ।

आदिश्वर ध्यावे, भाव, लगावे, पूज रचावे, चावन सों।
सो होय निरोगी, बहु सुख भोगी, पुण्य उपावे भावन सों।

ॐ ह्रीं श्री कैलाश पर्वत से श्री आदिनाथ भगवान और नाग कुमारादि मोक्ष प्राप्तेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जे पूजैं कैलाश आदि जिनरायको, पढ़ैं पाठ बहु भांति सुभाव लगाय को। ते धन धान्यहि पुत्र पौत्र सम्पत्ति लहैं, नर सुर सुख को भोगि अन्त शिवपुर रहैं॥

इत्याशीर्वादः।

श्री खंडगिरि क्षेत्र पूजा।

(मुनीम मुन्नालालजी कृत)

अंगवंग के पास है देश कलिंग विख्यात।
तामें खंडगिरी बसत दर्शन भये सुखात॥ १॥
जसरथ राजा के सुत अतिगुणवान जी।
और मुनीश्वर पंच सैंकड़ा जान जी॥
अष्टकरम कर नष्ट मोक्षगामी भये।
तिनके पूजहुँ चरण सकल मम मल छये॥ २॥

ॐ ह्रीं श्रीकलिंगदेशमध्य खंडगिरीजी सिद्धक्षेत्र से सिद्धपद प्राप्त दशरथ राजा के सुत तथा पंचशतक मुनि अत्र अवतरत अवतरत। अत्र तिष्ठत २ ठः ठः। अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट्।

अष्टक ।

अति उत्तम शुचि जल ल्याय, कंचन कलशभरा ।
करु धार सु मनवचकाय, नाशत जन्म जरा ॥
श्री खंडगिरी के शीश जसरथ तनय कहे ।
मुनि पञ्चशतक शिवलीन देश कलिंग दहे ॥

ॐ ह्रीं श्री खंडगिरि क्षेत्र से दशरथराजा के सुत तथा पांचशतक मुनि सिद्धपदप्राप्तेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं नि० ।

केशर मलयागिरि सार, घिसके सुगंध किया । संसार ताप निरवार, तुमपद वसत हिया ॥२॥ श्री०॥ चन्दनं०
मुक्ताफल की उनमान, अक्षत शुद्ध लिया । मम सर्व दोष निरवार, जिनगुण मोय दिया ॥३॥ श्री० ॥ अक्षतं०
ले सुमन कल्पतरु थार, चुन २ ल्याय धरूं । तुम पदढिग धरतहि वाण काम समूल हरूं ॥४॥ श्री० ॥ पुष्पं०
लाडू घेवर शुचि ल्याय, प्रभुपद पूजनको । धारूं चरनन ढिग आय, मम क्षुध नाशनको ॥५॥ श्री० ॥ नैवेद्यं०
ले मणिमय दीपक धार दोय कर जोड़ धरो । मम मोहांधेर निवार, ज्ञान प्रकाश करो ॥६॥ श्री० ॥ दीपं०
ले दशविधि गंध कुटाय, अग्निमझार धरूं । मम अष्ट करम जल जाय, यातें पांय परूं ॥७॥ श्री० ॥ धूपं०
श्रीफल पिस्ता सु वदाम, आम नरंगि धरूं । ले प्रासुक हेमके थार, भवतर मोक्ष वरूं ॥८॥ श्री० ॥ फलं०

जल फल वसु द्रव्य पुनीत, लेकर, अर्घ करूं। नाचूं गाऊं इहभांत, भवतर मोक्ष वरूं ॥६॥ श्री० ॥ अर्घं०

जयमाला।

देश कलिंगके मध्य है, खंडगिरी सुखधाम।
उदयागिरि तसु पास है, गाऊं जय जय धाम ॥

श्री सिद्ध खंडगिरिक्षेत्र पात, अतिसरल चढाइ ताकी सुजात। अति सघन वृक्ष फलरहे आय, तिनकी सुगंध दश-दिश जुछाय ॥ ताके सुमध्य में गुफा आय, तब मुनि सु नाम ताको कहाय। तामें प्रतिमा दशयोग धार, पद्मासन हैं हरि चंवरढार ॥ ता दक्षिण हैं सु गुफा महान, तामें चौबीसो भगवान जान। प्रतिप्रतिमा इन्द्र खडे दुओर, कर चंवर धरें प्रभुभक्ति जोर ॥ आजूबाजू खड़ि देवि द्वार, पद्मावति चक्रेसरी सार। करि द्वादश भुजि हथियार धार, मानहुं निदक नहिं आवें द्वार ॥ ताके दक्षिण चलि गुफा आय, सतबखरा है ताको कहाय। तामें चौबीसी बनी सार, अरु अय प्रतिमा सब योग धार ॥ सबमें हरि चमर सुधरहिं हाथ, नित आय भव्य नावहि सुमाथ। ताके ऊपर मंदिर विशाल, देखत भविजन होते निहाल ॥ ता दक्षिण टूटी गुफा आय, तिनमें ग्यारह प्रतिमा सुहाय। पुनि पर्वतके ऊपर सु जाय, मंदिर दीरघ बन रहा भाय ॥ तामें प्रतिमा मुनिराज मान, खडगासन योग धरें महान्। ले अष्ट द्रव्य

तसु पुञ्जकीन, मन वच तन करि भव धोक दीन ॥ मानो जन्म सफल अपना सुभाय, दर्शन अनूप देखो है आय। अब अष्टकरम होंगे चूर-चूर, जातें सुख पाहैं पूर पूर ॥ पूरब उत्तर द्वय जिन सुधाम, प्रतिमा खडगासन अति तमाम। पुनि चबूतरामें प्रतिमा बनीय, बारह भुजी है दर्शनीय ॥ पुनि एक गुफामें बिम्बसार, ताको पूजनकर फिर उतार। पुनि और गुफा खाली अनेक, ते हैं मुनिजनके ध्यान हेत ॥ पुनि चलकर उदयगिरी सुजाय, भारी भारी गुफा हैं लखाय। एक गुफामें बिम्ब विराजमान, पद्मासन धर प्रभु करत ध्यान ॥ ताको पूजन मनवचनकाय, सो भवभवके दुख जावें पलाय। जिनमें एक हाथी गुफा महान् तामें इक लेख विशाल धाम ॥ पुनि और गुफामें लेख जान, पढते जिनमत मानत प्रधान। तहं जसरथ नृपके पुत्र आय, संगमुनि पंचशतक ध्याय ॥ तप बारह विधिका यह करंत, बाईस परीषह वह सहंत। पुनि समिति पंचयुत चलें सार, दोषा छ्यालिस टल कर आहार इस बिध तप दुद्धर करत जोय, सो उपजे केवलज्ञान सोय। सब इन्द्र आय अति भक्तिधार, पूजा कीनी आनंद धार ॥ पुनि धर्मोपदेश दे भव्यपार, नाना देशनमें कर विहार। पुनि आय याही शिखर थान, सो ध्यान योग्य आघाति हान। भये सिद्ध अनंते गुणान ईश, तिनके युगपदपर धरत शीष। तिन सिद्धनको पुनि २ प्रणाम, सो सुक्ख लेय अविचल सुधाम ॥

वंदत भवदुख जावे पलाय, सेवक अनुक्रम शिवपद लहाय।
ता क्षेत्र को पूजत मैं त्रिकाल, कर जोड़ नमत हैं मुन्नालाल॥
श्री खंडगिरि क्षेत्रं, अतिसुख देतं तुरतहि भवदधि पार करे।
जो पूजे ध्यावे करम नशावे, वांछित पावे मुक्ति वरे॥

ॐ ह्रीं श्री खंडगिरि सिद्ध क्षेत्राय जयमाला अर्घं नि०

श्री खंडगिरी उदयागिरी, जो पूजै त्रैकाल।
पुत्र पौत्र संपति लहे, पावे शिवसुख हाल॥

इत्याशीर्वाद.।

श्रीपावागिरि सिद्धक्षेत्र पूजा।

पावागिरिवर सिहरे, सुवण्णभद्दाइ मुणिवरा चउरो।
चेलणाणई तडग्गे, णिव्वाण गयाणमो तेसि॥ १३॥

[निर्वाण-काण्ड।]

स्थापना

वरनगरी के निकट सुसुन्दर पावागिरिवर जाना,
ताके समीप सु नदी चेलना, तट ताका परमाना।
सुवर्णभद्र आदि मुनि चारों तहँ ते मोक्ष विराजे,
हम थापन कर पूजें तिनको पाप ताप सब भाजे॥ १॥

ॐ ह्रीं श्रीसुवर्णभद्रादिचतुर्णाम् मुनीनां निर्वाणास्पदे चेलनानदीतटे श्रीपावगिरिसिद्धक्षेत्र—अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितं भव २ वषट् सन्निधिकरण।

शुद्ध प्राशुक नीर निरमल लायकर झारी भरौं,
तब चरणतल त्रय धार देकर जन्ममृत्यु जरा हरौं,
श्री पावागिरिवर चेलना तट सिद्धक्षेत्र महान है,
गये मोक्ष चारों सुवर्णभद्रादि मुनी को प्रणाम है ॥१॥

ॐ ह्रीं सुवर्णभद्रादिचतुर्णाम मुनीनां निर्वाणास्पदे चेलना-नदीतटे श्री पावा गिरिसिद्धक्षेत्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं ।

केशर कपूर मिलाय चन्दन घिस कटोरी लाय हूँ,
इस भवताप नशायवे को नाथ चरण चढ़ाय हूँ ।
श्रीपावागिरिवर चेलना तट सिद्धक्षेत्र महान है,
गये मोक्ष चारों सुवर्णभद्रादि मुनी को प्रणाम है ॥२॥ चन्दनं
उज्वल अखण्डित लेय अक्षत धोय थाली में भरौं,
देवो अक्षयपद हमें प्रभु जी चरण में अक्षत धरौं ।
श्री पावागिरिवर चेलना तट सिद्धक्षेत्र महान है,
गये मोक्ष चारों सुवर्णभद्रादि मुनीको प्रणाम है ॥३॥ अक्षतान्
मकरन्द लोभन विविध पुष्प सुलाय थाली में धरौं,
चरण में करके समर्पित कामवाण सबैं हरौं ।
श्रीपावागिरिवर चेलना तट सिद्धक्षेत्र महान है,
गये मोक्ष चारों सुवर्णभद्रादि मुनी को प्रणाम है ॥४॥ पुष्पं
पकवान नाना भांतिके लेकर कनक थाली भरौं,
क्षुध रोग नाशन कारणे नैवेद्य ले आगे धरौं ।
श्रीपावागिरिवर चेलना तट सिद्ध क्षेत्र महान है,
गये मोक्ष चारों सुवर्णभद्रादि मुनी को प्रणाम है ॥५॥ नैवेद्यं

अज्ञानध्वान्त महान् अंधकार करि राख्यो सबै,
निज-पद सुभेद पिछान कारण दीप ले आयो अबै।
श्रीपावागिरिवर चेलना तट सिद्धक्षेत्र महान है,
गये मोक्ष चारों सुवर्णभद्र दि मुनी को प्रणाम है ॥६॥ दीपं
वसुकर्म दुष्ट महाबली ने सब जगत वश में कियो,
हों धूमके मिस नाश कारण धूप प्रभू ढिंग क्षेपियो।
श्रीपावागिरिवर चेलना तट सिद्धक्षेत्र महान है,
गये मोक्ष चारों सुवर्णभद्रादि मुनी को प्रणाम है ॥७॥ धूपं
लेय करके फल मनोहर पक्वयुक्त सुपावना,
इस फल का फल हो मोक्षफल ये ही हमारी भावना।
श्रीपावागिरिवर चेलनातट सिद्धक्षेत्र महान है,
गये मोक्ष चारों सुवर्णभद्रादि मुनी को प्रणाम है ॥८॥ फलं
जल से लेकर फल तलक सब अष्टद्रव्य मिलायकर,
हम मांगते हैं अनर्घपद प्रभु अर्घ चरण चढाय कर।
श्री पवागिरिवर चेलना तट सिद्धक्षेत्र महान है,
गये मोक्ष चारों सुवर्णभद्रादि मुनी को प्रणाम है ॥९॥ अर्घ

जयमाला।

पावागिरि सिद्धक्षेत्र है, पावन परम विशाल।
अल्प बुद्धिसे कहत हों, तिनकी यह जयमाल ॥
श्री सिद्धक्षेत्र पर्वत सुजान, श्रीपावागिरि ताको सुनाम।
तहां नदी चेलना बहे नीर, सरिता छोटी पर है गँभीर ॥

तहाँ सुवरणभद्र मुनीश चार, कर कर्मछार गये शिवमँझार।
तातैं श्रीसिद्धक्षेत्र जान, बन्दो पुनि-पुनि सो सुखदथान ॥३॥
ताके समीप है ऊन ग्राम, है छोटा पर सुन्दर सुजान।
दक्षिणदिशिका भूपति बलाल, था रोग भयङ्कर कठिन हाल ॥
कछु कारणवश इस थान आय, तब रोगमुक्त नैरोग्य थाय।
तब हर्षधार हिय भक्ति लाय, निन्यानवे चैत्यालय बनाय ॥
शत चैत्यालय में एक न्यून, होने से नाम हुआ है ऊन।
गिरि पर है मन्दिर एक हाल, कारीगिरीमें अद्भुत विशाल॥
तहँ प्रतिमा तीन विराजमान, कायोत्सर्ग स्थित हैं महान्।
उनमें दो प्रतिमा पांच हाथ, है मध्य की प्रतिमा आठ हाथ॥
तीनों प्रतिमा सुन्दर ललाम, करजोड़ि करौं तिनको प्रणाम।
सम्वत् उन्नीस जु शतक और, तो ऊपर इक्यानवे जोड़ ॥
है कृष्णपक्ष आषाढ़ मास, बुधवार तिथी अष्टमी खास।
ताही दिन आया स्वप्न सांच, अरु प्रतिमा प्रगटी तहां पांच।
तामें एक प्रतिमा है मनोज्ञ, श्री वीर प्रभु की दरशयोग्य।
अङ्कित सम्वत् बारासौ जान, अरु ता ऊपर बावन प्रमाण॥
तिन प्रतिमाकी छवि कहि न जाय, देखतही सम्यक् प्रगट थाय
दरशनही से कलुष हरन्त, मिथ्यात्व पाप सबही दुरन्त ॥
जुत विभव परम वर्जित सुसङ्ग, लखि नग्न अङ्ग लाजे अनङ्ग।
ऐसे पावागिर सिद्धथान, अरु अतिशय क्षेत्र जु है महान् ॥
इसलिए पुनीत सु है अपार, दर्शन करि हो जग-जलधि-पार।
इमि जानि वंदना कर उदार, लूटो शुभ पुण्यतणां भंडार ॥

तुम धारत हो करुणा अपार, हे देव ! सुनो मेरी पुकार।
मेरी करनी पर मत निहार, निज प्रणतपाल प्रणको विचार ॥
विधिबंधयोग्य दुरभाव हानि, करि चायिक भव कृपानिधान।
यह मांगतहूं कर जोड़ि देव, भव भव पाऊँ तुव चरण सेव॥
पावागिरिक्षेत्रं अतिसुख देतं, तुरतहिं भवदधि पार करैं।
'विष्णु' नित ध्यावे, कर्म नशावे, वांछित पावे मुक्ति वरैं ॥

ॐ ह्रीं सवर्णभद्रादि चतुर्णा मुनीनां निर्वाणास्पदे चेलना-नदी तटे, श्रीपावागिरिसिद्धक्षेत्राय अनर्घ पदप्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पावागिरिक्षेत्र की नित पूजा करौ,
गुण को गावो भक्तिभाव हिरदे धरौ।
इस जगमें हो धर्म कृपासे सुख घना,
'विष्णु' मनमें धरो नित्य शुभ भावना।

इत्याशीर्वादः।

श्री गौतम गणपति पूजा

श्री गौतम गणईश शीश यह तुम्हैं नमाकर,
आह्वानन अब करूँ आय तिष्ठो मानस पर।
पाके केवल ज्योति ज्ञाननिधि हुए गुणाकर,
निज लक्ष्मी का दान करो मेरे घट आकर ॥

श्री गौतम गणईश जी, तिष्ठो मम उर आय।
ज्ञान-लक्ष्मी-पति बने, मेरी मानव काय॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णामावस्यायां कैवल्यलक्ष्मी प्राप्ताय श्रीगौतम-गणपतिजिनेन्द्र! अत्र, अवतर अवतर सम्वौषट्।

अत्र तिष्ठ, तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणम्।

गाङ्गेय वारि शुचि प्रासुक दिव्य ज्योति, जन्मादि कष्ट निज वारण कों लिया मैं। संसार के अखिल त्रास निवारने को योगीन्द्र गौतम-पदाम्बुज-में चढ़ाता।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णामावस्यायां कैवल्यलक्ष्मीप्राप्ताय श्रीगौतम-गणेशाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूरयुक्त मलयागिरि को घिसाया, संसार ताप शमनार्थ इसे बनाया। संसार के अखिल त्रास निवारने को, योगीन्द्र गौतम-पदाम्बुज-में चढ़ाता॥ चन्दनं॥
मुक्ताभ अक्षत सुगन्धि चुना चुना के, व्याधिघ्न अक्षत-पदार्थ सजा सजा के। संसार के अखिल त्रास निवारने को योगीन्द्र गौतम-पदाम्बुज-में चढ़ाता॥ अक्षतं॥
कन्दर्प दर्प दलनार्थ नवीन ताजे, बेला गुलाब मचकुन्द सुपारजाती। संसार के अखिल त्रास निवारने को, योगीन्द्र गौतम-पदाम्बुज-में चढ़ाता॥ पुष्पं॥
क्षीरादि मिश्रित अमोघ बल प्रदाता, पक्वान्न थाल यह

भूख निववारने को। संमार के अखिल त्रास निवारने को,
योगीन्द्र गौतम-पदाम्बुज-में चढ़ाता ॥ नैवेद्यं ॥
रत्नादि दीप नवज्योति कपूर-वर्ती उद्दाम-मोह-तम तोम
सभी हटाने। संसार के अखिल त्रास निवारने को,
योगीन्द्र गौतम-पदाम्बुज-में चढ़ाता ॥ दीपं ॥
अज्ञान मोह मद से भव में भ्रमाता, ये दुष्ट कर्म, तिस
नाशन को दशांगी। संसार के अखिल त्रास निवारने को,
योगीन्द्र गौतम-पदाम्बुज-में चढ़ाता ॥ धूपं ॥
केला अनार सहकार सुपक्व जामू, ये सिद्धमिष्ट फल
मोक्षफलाप्ति को में। संमार के अखिल त्रास निवारने
को, योगीन्द्र गौतम- पदाम्बुज में चढ़ाता ॥ फलं ॥
पानीय आदि वसु द्रव्य सुगन्धयुक्त, लाय प्रशान्त मन
से निज रूप पाने। संसार के अखिल त्रास निवारने को,
योगीन्द्र गौतम-पदाम्बुज में चढ़ाता ॥ अर्घ्यं ॥

जलमाला।

वीरजिनेश्वर के प्रथम गणधर—गौतम पाँय।
नमन करूं कर जोड़ कर स्वर्ग मोक्ष फल दाय।।

जय देव ! श्रीगौतम गणेश्वर प्रार्थना तुमसे करूं,
सब हटा दो कष्ट मेरे अर्घ्य ले आरति करूं।
दुष्ट काल कराल पंचम में सहारा उठ गया,
नेतृत्वहीन हुए सभी जन आर्ष पथ सब मिट गया ॥१॥

तत्वार्थ चिन्तन सत्यपर्थ औ सत्य सत्याचार का,
है ठिकाना अब न भारत में गृहस्थाचार का।
मार्ग नाना पकड़ जगजन मुक्ति अपनी चाहते,
आत्म वैभव शून्य हो भौतिक विभूति निगाहते ॥२॥
आत्म तंत्र-स्वतंत्रता का सत्य शिव था पंथ जो,
खोदिया वह ज्ञान सारा मोह ममता तंत्र हो।
हे गणेश ! कृपा करो, अब आत्मज्योति पसार दो,
हम हैं तुम्हारे सदय हो दुर्वासनायें मार दो ॥३॥
क्या दशा तुमको सुनाऊँ जो हमारी हो गई,
आत्मनिधि सब खो गई विज्ञान धारा सोगई।
ज्ञानभौतिक, शानभौतिक मानभौतिक शेष है,
विज्ञान भौतिक रक्तसारा बना भारतदेश है ॥४॥
न्याय नीति तिलाञ्जली देकर निकाले देश से,
देशके बाजार काले कर दिये निज वेश से।
कालिमा से व्याप्त सब व्यापार धन्दे कर दिये,
नैतिक पतन की चरम सीमायुक्त नयपथ कर दिये ॥५॥
वीर प्रभुनिर्वाण-क्षणमें था सम्हाला आपने,
अब छोड़ तुमको जाऊँ कहां घेरा चहूँ दिशि पापने।
है दिवस वह ही नाथ ! स्वामी वीरके निर्वाण का,
जगके हितैषी विज्ञ गौतम ईश केवल ज्ञान का ॥६॥
नाथ ! अब करके कृपा हमको सहारा दीजिये,
दीपमाला आरती पूजा ग्रहण मम कीजिये।

ऐसी दशा जब देशकी तब धर्म का क्या रूप हो,
तुमही बताओ नाथ ! जब यह जगत तमका तूप हो ॥७॥
कैसे बचावें सत्य अपना और सत्याचार को,
जब हाय ! पैसा ! हाय पैसा ! कर रहा संसार हो ।
इस विषम-भवकी भंवरसे कैसे नौका पार हो,
मांझी लुटेरे, पथिक डाकू, दस्यु-कर-पतवार हो ॥८॥
महावीर स्वामी की की प्रव्रज्या के समय जो हाल था,
दीन दुखिया प्राणियों का जीवनत्व मुहाल था ।
वह ही दशा भारतधरा की नीति भ्रष्टाचार से,
आओ ! सम्हालो ! सदय होकर आत्म करुणाधार से ॥
हैं सभी जन आपके अब ज्ञानसे भरदो हिया,
गौतम दिया गणपति दिया, बोले सभी अनुपम दिया ।
तेरे दिये बिन जग अंधेरा क्योंकि वह केवल दिया,
इसलिये हे नाथ ! अब चहु ओर कर दो निज दिया ॥
है अनूठा शक्तिशाली उदय जहँ पाता दिया,
अज्ञान तम के तामको चैतन्य 'मणि' करता दिया ।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णा मावस्यायां कैवल्यलक्ष्मी प्राप्ताय गौतमः गणेशाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा—ज्योतिपुञ्ज गणपति प्रभो ! दूर करो अज्ञान ।
समता रस से सिक्त हो नया उगे उर भानु ॥

इत्याशीर्वादः ।

ऋषि-मंडल-स्तोत्र

आद्यंताक्षरसंलक्ष्यमक्षरं व्याप्य यत्स्थितम् ।
अग्निज्वालासमं नादं बिन्दुरेखासमन्वितं ॥ १ ॥
अग्निज्वालासमाक्रान्तं मनोमलविशोधनं ।
दैदीप्यमानं हृत्पद्मे तत्पदं नौमि निर्मलं ॥ युग्मं ॥
ॐ नमोर्हद्भ्य ईशेभ्य ॐ सिद्धेभ्यो नमो नमः ।
ॐ नमः सर्वसूरिभ्यः उपाध्यायेभ्य ॐ नमः ॥ ३ ॥
ॐ नमः सर्वसाधुभ्यः तत्त्वदृष्टिभ्य ॐ नमः ।
ॐ नमः शुद्धबोधेभ्यश्चारित्रेभ्यो नमो नमः॥ ४ ॥
श्रेयसेस्तु श्रीयेस्त्वेनहर्हदाद्यष्टकं शुभं ।
स्थानेष्वष्टसु संन्यस्तं पृथग्बीजसमन्वितम् ॥ ५ ॥
आद्यं पदं शिरो रक्षेत् परं रक्षतु मस्तकं ।
तृतीतं रक्षेन्नेत्रे द्वे तुर्यं रक्षेच्च नासिकां ॥ ६ ॥
पंचमं तु मुखं रक्षेत् षष्ठ रक्षतु घटिकां ।
सप्तमं रक्षेन्नाभ्यंतं पादांतं चाष्टमं पुनः ॥ ७ ॥ युग्मं ॥
पूर्वं प्रणवतः सांतः सरेफो द्वित्रिपंचषान् ।
सप्ताष्टदशसूर्या कान् श्रितो बिंदुस्वरान् पृथक् ॥ ८ ॥
पूज्यनामाक्षराद्यास्तु पंचदर्शनबोधकं ।
चारित्रेभ्यो नमो मध्ये ह्रीं सांतसमलंकृतं ॥ ९ ॥
जंबूवृक्षधरो द्वीपः क्षीरोदधि–समावृतः ।
अर्हदाद्यष्टकैरष्टकाष्ठाधिष्ठैरलंकृतः ॥ १ ॥

तन्मध्ये संगतो मेरुः कूटलक्षैरलंकृतः ।
उच्चैरुच्चैस्तरस्तारतारामंडलमंडितः ॥ २ ॥
तस्योपरि सकारांतं बीजमध्यास्य सर्वगं ।
नमामिबिम्बमार्हत्यं ललाटस्थं निरंजनं ॥ ३ ॥ विशेषकं ॥
अक्षयं निर्मलं शांतं बहुलं जाड्यतोज्झितं ।
निरीहं निरहंकारं सारं सारतरं घनं ॥ ४ ॥
अनुद्भूतं शुभं स्फीतं सात्विकं राजसं मतं ।
तामसं विरसं बुद्धं तैजसं शर्वरीसमं ॥ ५ ॥
साकारं च निराकरं सरसं विरसं परं ।
परापरं परातीतं परं परपरापरं ॥ ६ ॥
सकलं निष्कलं तुष्टं निर्भृतं भ्रान्तिवर्जितं ।
निरजनं निराकाक्षं निर्लेपं वीतसंशयं ॥ ७ ॥
ब्रह्माणमीश्वरं बुद्धं शुद्धं सिद्धमभंगुरं ।
ज्योतिरूपं महादेवं लोकालोकप्रकाशकं ॥ ८ ॥ कुलकं ॥
अर्हदाख्यः सवर्णान्तः सरेफो बिंदुमंडितः ।
तुर्यस्वरसमायुक्तो बहुध्यानादिमालितः ॥ ९ ॥
एकवर्णं द्विवर्णं च त्रिवर्णं तुर्यवर्णकं ।
पंचवर्णं महावर्णं सपरं च पपरापरं ॥ १० ॥ युग्मं ॥
अस्मिन् बीजे स्थिताः सर्वे ऋषभाद्या जिनोत्तमाः ।
वर्णैर्निजैर्निजैर्युक्ता ध्यातव्यास्तत्र संगताः ॥ ११ ॥
नादश्चंद्रसमाकारो बिंदुर्नीलसमप्रभः ।
कलारुणसमाक्रांतः स्वर्णाभः सर्वतोमुखः ॥ १२ ॥

शिरःसंलीन ईकारो विनीलो वर्णतः स्मृतः ।
वर्णानुसरिसंलीनं तीर्थकृन्मंडलं नमः ॥ १३ ॥ युग्मं ॥
चंद्रप्रभपुष्पदन्तौ नादस्थितिसमाश्रितौ ।
बिंदुमध्यंगतौ नेमिसुव्रतौ जिनसत्तमौ ॥ १४ ॥
पद्मप्रभवासुपूज्यौ कलापदमधिश्रितौ ।
शिर ईस्थितिसंलीनौ पार्श्वपार्श्वौ जिनोत्तमौ ॥ १५ ॥
शेषास्तीर्थकराः सर्वे रहःस्थाने नियोजिताः ।
मायाबीजाक्षरं प्राप्तश्चतुर्विंशतिरर्हतां ॥ १६ ॥
गतरागद्वेषमोहाः सर्वपापविवर्जिताः ।
सर्वदा सर्वलोकेषु ते भवतु जिनोत्तमाः ॥ १७ ॥ कलापकं ।
देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादितसर्वांगं मां मा हिंसतु पन्नगाः ॥ १८ ॥
देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादितसर्वांगं मां मा हिसतु नागिनी ॥ १९ ॥
देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादितसर्वांगं मां मा हिंस तु गोनसाः ॥ २० ॥
देवदेव............वृश्चिकाः ॥ २१ ॥
देवदेव............काकिनी ॥ २२ ॥
देवदेव............डाकिनी ॥ २३ ॥
देवदेव............शाकिनी ॥ २४ ॥
देवदेव............राकिनी ॥ २५ ॥
देवदेव............लाकिनी ॥ २६ ॥

देवदेव············शाकिनी ॥ २७ ॥

देवदेव············हाकिनी ॥ २८ ॥

देवदेव············राक्षसाः ॥ २९ ॥

देवदेव············व्यंतराः ॥ ३० ॥

देवदेव············भेकसाः ॥ ३१ ॥

देवदेव············ते ग्रहाः ॥ ३२ ॥

देवदेव············तस्कराः ॥ ३३ ॥

देवदेव············वह्नयः ॥ ३४ ॥

देवदेव············शृङ्गिणः ॥ ३५ ॥

देवदेव············दंष्ट्रिणः ॥ ३६ ॥

देवदेव············रेलपाः ॥ ३७ ॥

देवदेव············पक्षिणः ॥ ३८ ॥

देवदेव············मुद्गलाः ॥ ३९ ॥

देवदेव············जृंभकाः ॥ ४० ॥

देवदेव············तोयदाः ॥ ४१ ॥

देवदेव············सिंहकाः ॥ ४२ ॥

देवदेव············शूकराः ॥ ४३ ॥

देवदेव············चित्रकाः ॥ ४४ ॥

देवदेव············हस्तिनः ॥ ४५ ॥

देवदेव············भूमिपाः ॥ ४६ ॥

देवदेव············शत्रवः ॥ ४७ ॥

देवदेव············ग्रामिणः ॥ ४८ ॥

देवदेव…………दुर्जनाः ॥ ४६ ॥

देवदेव …………व्याधयः ॥ ५० ॥

श्रीगौतमस्य या मुद्रा तस्या या भुवि लब्धयः ।
ताभिरभ्यधिकं ज्योतिर्र्हः सर्वनिधीश्वरः ॥५१॥

पातालवासिनो देवा देवा भूपीठवासिनः ।
स्वःस्वर्गवासिनो देव सर्वे रक्षंतु मामितः ॥५२॥

येऽवधिलब्धया ये तु परमावधिलब्धयः ।
ते सर्वे मुनयो दिव्या मां संरक्षंतु सर्वतः ॥५३ ॥

ॐ श्री ह्रींश्च धृतिर्लक्ष्मी गौरी चंडी सरस्वती ।
जया वा विजया क्लिन्नाऽजिता नित्या मदद्रवा ॥५४॥
कामांगा कामबाणा च सानंदा नंदमालिनी ।
माया मायाविनी रौद्री कला काली कलिप्रिया ॥५५॥

एताः सर्वा महादेव्यो वर्तंते या जगत्त्रये ।
मम सर्वाः प्रयच्छंतु कान्तिं लक्ष्मीं धृतिं मतिं ॥५६॥

दुर्जना भूतवेतालाः पिशाचा मुद्गलास्तथा ।
ते सर्वे उपशाम्यंतु देवदेवप्रभावतः ॥५७॥

दिव्यो गोप्यः सुदुष्प्राप्यः श्रीऋषिमंडलस्तवः ।
भाषितस्तीर्थनाथेन जगत्त्राणकृतोऽनघः ॥५८॥

रणे राजकुले वह्नौ जले दुर्गे गजे हरौ ।
श्मशाने विपिने घोरे स्मृतो रक्षति मानवं ॥५९॥

राज्यभ्रष्टो निजं राज्यं पदभ्रष्टा निजं पदं ।
लक्ष्मीभ्रष्टाः निजं लक्ष्मीं प्राप्नुवंति न संशयः ॥६०॥

भार्यार्थी लभते भार्यां पुत्रार्थी लभते सुतं ।
धनार्थी लभते वित्तं नरः स्मरणमात्रतः ।६१॥

स्वर्णे रूप्येऽथवा कांस्ये लिखित्वा यस्तु पूजयेत् ।
तस्यैवेष्टमहासिद्धिगृहे वसति शाश्वती ॥६२॥

भूर्जपत्रे लिखित्वेदं गलके मूर्ध्नि वा भुजे ।
धारितः सर्वदा दिव्यं सर्वभीतिविनाशनं ॥६३॥

भूतैः प्रेतैर्ग्रहैर्यक्षैः पिशाचैर्मुद्गलैस्तथा ।
वातपित्तकफोद्रेकैर्मुच्यते नात्र संशयः ॥६४॥

भूर्भुवःस्वस्त्रयीपीठवर्त्तिनः शाश्वता जिनाः ।
तैः स्तुतैर्वंदितैर्दृष्टैर्यत्फलं तत्फलं स्मृतेः ॥६५॥

एतद्गोप्यं महास्तोत्रं न देयं यस्य कस्यचित् ।
मिथ्यात्ववासिनो देये बालहत्या पदे पदे ॥६६॥

आचाम्लादितपः कृत्वा पूजयित्वा जिनावलि ।
अष्टसाहस्रिको जाप्यः कार्यस्तत्सिद्धिहेतवे ॥६७॥

शतमष्टोत्तरं प्रातर्ये पठंति दिने दिने ।
तेषां न व्याधयो देहे प्रभवंति च संशयः ॥६८॥

अष्टमासावधि यावत् प्रातः प्रातस्तु यः पठेत् ।
स्तोत्रमेतन्महातेजस्त्वर्हद्बिंबं स पश्यति ॥६९॥

दृष्टे सत्यार्हते बिंबे भवे सप्तमके ध्रुवं ।
पदं प्राप्नोति विश्रस्तं परमानंदसंपदा ॥७०॥ युग्मं
इदं स्तोत्रं महास्तोत्रं स्तुतीनामुत्तमं परं ।
पठनात्स्मरणाज्जाप्यात् च सर्वदोषैर्विमुच्यते ॥७१॥

कल्याण मन्दिर स्तोत्र

भाषानुवाद

दोहा ।

परमज्योति परमातमा, परमज्ञान परवीन ।
वंदों परमानंदमय, घट घट अंतरलीन ॥१॥

चौपाई (१५ मात्रा)

निर्भयकरन परम परधान । भवसमुद्र जलतारण जान ॥
शिवमन्दिर अघहरण अनिन्द । वन्दुहुं पासचरण अरविन्द ।२।
कमठमानभंजन वरवीर । गरिमासागर गुणगंभीर ॥
सुरगुरु पार लहें नहिं जासु । मैं अजान जपों जस तासु ॥३॥
प्रभुस्वरूप अति अगम अथाह । क्यों हमसे इह होय निवाह ।
ज्यों दिनअंध उलूको पोत । कहि न सकै रविकिरनउदोत
॥४॥ मोहहीन जानै मनमाहिं । तोउ न तुमगुण वरणे
जाहिं ॥ प्रलयपयोधि करै जल वौन । प्रगटहिं रतन गिनै

तिहि कौन ॥५॥ तुम असंख्य निर्म्मलगुणखानि । मैं मतिहीन कहों निजवानि ॥ ज्यों बालक निज बांह पसार । सागरपरिमित कहै विचार ॥६॥ जो जोगीन्द्र करहिं तप खेद । तऊ न जानहिं तुमगुणभेद ॥ भगतिभाव मुझ मन अभिलाख । ज्यों पंखी बोलहिं निज भाख ॥७॥ तुम जस-महिमा अगम अपार । नाम एक त्रिभुवन आधार ॥ आवै पवन पद्मसर होय । ग्रीषमतपत निवारै सोय ॥८॥ तुम आवत भविजन मनमाहिं । कर्मनिबंध सिथिल हो जाँहिं ॥ ज्यों चंदनतरु बोलहिं मोर । डरहिं भुजङ्ग लगे चहुंओर ॥९॥ तुम निरखतजन दीनदयाल । संकटतें छूटहिं ततकाल ॥ ज्यों पशु घेर लेहिं निशिचोर । ते तज भागहिं देखत भोर ॥१०॥ तू भविजन तारक किम होह । ते चित धार तरहिं लै तोह ॥ यह ऐसै करि जान स्वभाउ । तिरै मसक ज्यों गर्भितवाउ ॥११॥ जिन सब देव किये वश वाम । तैं छिनमें जीत्यो सो काम ॥ ज्यों जल करै अग्निकुलहानि । बड़वानल पीवै सो पानि ॥१२॥ तुम अनन्त गरुवा गुण लिये । क्योंकरभक्ति धरूं निजहिये ॥ ह्वै लघुरुप तिरहि संसार । यह प्रभुमहिमा अथक अपार ॥१३॥ क्रोध निवार कियो मनशांति । कर्म सुभटजीते किहिं भांति ॥ यह पटतर देखहु संसार । नीलवृच्छ ज्यों दहै तुसार ॥१४॥ मुनीजनहिये कमल निज टोहि । सिद्धरूप समध्यावहि तोहि ॥ कमल-कर्णिका विन नहिं और । कमलबीज उपजनकी ठौर ॥ १५॥

जब तुह ध्यानधरै मुनि कोय । तब विदेश परमातम होय ॥ जैसे धातु शिलातन त्याग । कनकस्वरूप धवैं जब आग ॥१६॥ जाके मन तुम करहु निवास । विनस जाय क्यों विग्रह तास ॥ ज्यों महन्त बिच आवै कोय । विग्रह मूल निवारै सोय ॥१७॥ करहिं विबुध जे आतम ध्यान । तुम प्रभावतें होय निदान ॥ जैसें नीर सुधा अनुमान । पीवत विष विकारकी हान ॥१८॥ तुम भगवंत विमल गुणलीन । समलरूप मानहिं मतिहीन ॥ ज्यों नीलिया रोग दृग गहै । वर्ण विवर्ण संखसौं कहै ॥१९॥

दोहा ।

निकट रहत उपदेश सुनि, तरुवर भये अशोक ।
ज्यों रवि ऊगत जीव सब, प्रगट होत भुविलोक ॥२०॥
सुमनवृष्टि जो सुरकरहि, हेठ वीटमुख सोहिं ।
त्यों तुम सेवत सुमनजन, बंध अधोमुख होहिं ॥२१॥
उपजी तुम हिय उदधितैं, वाणी सुधा समान ।
जिहिं पीवत भविजन लहहिं, अजर अमर पदथान ॥२२॥
कहहिं सार तिहुलोकको, ये सुरचामर दोय ।
भावसहित जो जिन नमें, तसुगति ऊरध होय ॥२३॥
सिंहासन गिरि मेरु सम, प्रभुधुनि गरजित घोर ।
श्याम सुतन घनरूप लख, नाचत भविजन मोर ॥२४॥
छवि हत होंहिं अशोकदल, तुमभामंडल देख ।

वितराग के निकट रह, रहत न राग विशेख ॥२५॥
शीखि कहै तिहुंलोकको, यह सुरदुंदुभि नाद ।
शिवपथ सारथिवाह जिन, भजहु तज परमाद ॥२६॥

तीन छत्र त्रिभुवन उदित, मुक्तागण छविदेत ।
त्रिविधिरूप धर मनहुं शशि, सेवत नखतसमेत ॥२७॥

पद्धरिछन्द ।

प्रभु तुम शरीर दुति रतन जेम । परताप पुंज जिम शुद्ध हेम ॥ अति धवलसुजस रूपा समान । तिनके गढ़ तीन विराजमान ॥२८॥ सेवहिं सुरेन्द्र कर नमित भाल । तिन शीसमुकुट तज देहिं माल ॥ तुम चरण लगत लहलहैं प्रीति । नहिं रमहि और जन सुमनरीति ॥२९॥ प्रभुभोग विमुख तन कर्म दाह । जन पार करत भवजल निवाह ॥ ज्यों माटीकलश सुपक्क होय । ले भार अधोमुख तिरहि तोय ॥३०॥ तुम महाराज निर्धन निराश । तज विभव विभव सब जग विकाश ॥ अत्तर स्वभावसैंलिखैं न कोय । महिमा अनन्त भगवंत सोय ॥३१॥ कोप्यो सु कमठ निज वैर देख । तिन करी धूल वर्षा विशेख ॥ प्रभु तुम छाया नहिं भई हीन । सो भयो पापी लंपट मलीन ॥३२॥ गरजंत घोर घन अंधकार । चमकंत विज्जु जलमुसलधार ॥ वरषंत कमठ धरध्यान रुद्र । दुस्तर करंत निजभवसमुद्र ॥३३॥

वस्तु छन्द ।

मेघमाली मेघमाली आप बल फोरि ।
भेदे तुरत पिशाचगण, नाथ पास उपसर्ग करण ।
अग्नि जाल झलकंत मुख, धुनि करत जिमि मत्तवारण ॥
कालरूप विकराल तन, मुंडमाल तिहं कंठ ।
ह्वै निशंक वह रंकनिज, करै कर्म दृढगंठ ॥

चौपाई ।

जे तुम चरणकमलतिहुंकाल । सेवहिं तज माया जंजाल । भाव भगतिमन हरष अपार । धन्य २ जग तिन अवतार ॥३५॥ भवसागरमहं फिरत अजान । मैं तुम सुजश सुन्यो नहीं कान ॥ जो प्रभुनाम मंत्र मन धरै। । तासों विपति भुजंगम डरै ॥३६॥ मनवांछित फल जिनपदमांहिं । मैं पूरब भव पूजे नाहिं ॥ माया मगन फिरयो अज्ञान । करहिं रंकजन मुझ अपमान ।३७। मोहतिमर छायो दृग मोहि । जन्मांतर देख्यो नहिं तोहि ॥ तो दुर्जन मुझ संगति गहैं । मरमछेद के कुवचन कहैं ॥३८॥ सुन्यो कान जस पूजे पाय नैनन देख्यो रूप अघाय ॥ भक्ति हेतु न भयो चित चाव । दुखदायक क्रिरियाविन भाव ॥३९॥ महाराज शरणागत पाल । पतितउधारण दीनदयाल ॥ सुमिरण करहुँनाथ निज शीस। मुझ दुख दूर करहु जगदीश ।४०॥ कर्मनिकन्दनमहिमा सार । अशरणशरण सुजश विसतार ॥ नहिं सेये प्रभु तुमरे

पाय तो मुझ जन्म अकारथ जाय ॥४१॥ सुरगण वन्दित दया निधान । जगतारण जगपति जगजान ॥ दुखसागरतें मोहि निकासि । निर्भयथान देहु सुखराशि ॥४२॥ मैं तुम चरणकमल गुन गाय । बहुविधि भक्तिकरी मनलाय ॥ जन्मजन्म प्रभु पावहुँ तोहि । यह सेवा फल दीजे मोहि ॥४३॥

बोधकान्त वेसरी छन्द । षट्पद

इहिविधि श्रीभगवंत, सुजश जे भविजन भाषहिं ।
ते निज पुण्य भंडार, संच चिरपाप प्रणासहिं ॥
रोमरोम हुलसंति अंग प्रभु गुणमनध्यावहिं ।
स्वर्गसंपदा भुंज, वेग पंचम गति पावहिं ॥
यह कल्याणमन्दिर कियो, कुमुदचन्द्र की बुद्धि ।
भाषा कहत बनारसी, कारण समकितशुद्धि ।४४॥

इति श्रीकल्याणमन्दिरस्तोत्रं ।

तत्वार्थसूत्र पूजा

षट् द्रव्य को जामें कह्यो जिनराज-वाक्य प्रमाण सो,
किय तत्त्व सातों का कथन जिन-आप्त-आगम मानसों ।
तत्वार्थ-सूत्रहि शास्त्र सो पूजौ भविक मन धारि के,
लहि ज्ञान तत्त्व विचार भल शिव जा भवदधि पारके ॥

जामें षट द्रव्यहि कह्यौ, कह्यौ तत्त्व पुनि सात।
सो दश सूत्रहिं थापि के, जजें कर्म कटि जात॥

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवद्वादशांगसारभूत श्रीतत्वार्थसूत्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठः। अत्र मम सन्निहितं भव भव वषट।

सुरसरी कर नीर सुलाय के, करि सुप्रासुक कुम्भ भरायके।
जजन सूत्रहि शास्त्रहि को करों, लहि सुतत्व-ज्ञानहि शिव वरों॥

ॐ ह्रीं श्री तत्वार्थ सूत्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयदारु पवित्र मंगाय के, घसि कपूरवरेण मिलाय के।
जजन सूत्रहि शास्त्रहि०॥ चंदनं०

भिनव शालि सुगंधित लाय के, खंड विवर्जित थाल भराय के। जजन सूत्रहि शास्त्रहि०॥ अक्षतं०

सुमन वेल चमेलिहि केवरा, जिन सुगंध दशोंदिश विस्तरा।
जजन सूत्रहि शास्त्रहि०॥ पुष्पं०

वर सुहाल सुफेनिहि मोदका, रसगुला रसपूरित ओदका।
जजन सूत्रहि शास्त्रहि०॥ नैवेद्यं०

घृत कपूर मणीकर दीयरा, करि उद्योत हरौ तम हीयरा।
जजन सूत्रहि शास्त्रहि०॥ दीपं०

बहु सुगंधित धूप दशांग ही, धरि हुताशन धूम उठाव ही।
जजन सूत्रहि शास्त्रहि०॥ धूपं०

क्रमुक दाख बादाम अनार ला, नरंग नीबुहि आमहि श्रीफला।
जजन सूत्रहि शास्त्रहि० ॥ फलं०

जल सुचन्दनआदिकद्रव्य ले, अरघ के भरि थालहि ले भले। जजन सूत्रहि शास्त्रहि को करों, लहि सुतत्त्व ज्ञानहिं शिववरों। अर्घं

विमल विमल वाणी, श्री जिनवर बखानी,
सुन भये तत्वज्ञानी ध्यान-आत्म पाया है।
सुरपति मनमानी सुरगण सुखदानी,
सु भव्य उर आना, मिथ्यात्व हटाया है॥
समझहि सब नीके, जीव समवशरण के,
निज २ भाषा मांहि अतिशय दिखानी है।
निरअक्षर अक्षर के अक्षरन सों शब्द के,
शब्द सों पद बने जिन जू बखानी है॥

पादाकुलक छन्द

संसार मोह में मोह तरा, प्रगटी जिनवाणी मोहहरा।
ऊद्धरत होत तम नाश करा, प्रणमामि सूत्र जिनवाणिवरा॥
अति मोनसरोवर झील खरा, करुणारस पूरित नीर भरा।
दश धर्म बहे शुभ हंस तरा, प्रणमामि सूत्र जिनवाणिवरा॥
कल्पद्रुम के सम जान तरा, रत्नत्रय के शुभ पुष्ट वरा।
गुण तत्व पदार्थन पात्र फरा, प्रणमामि सूत्र जिनवाणिवरा॥
वसुकर्म महारिपु दुष्ट खरा, तसु उपजी फैली बेली वरा।
तसु नाशन काहि कुठार करा, प्रणमामि सूत्र जिनवाणि वरा॥

मद मायर लोभऽरु क्रोध धरा, ए कषाय महादुखदाय तरा।
तिन नाशि भवोदधि पार करा, प्रणमामि सूत्र जिनवाणि वरा॥
वर षोडश कारण भाव धरा, षट् कायन रच्छण नियम करा।
मद आठहु मदि के गर्द करा, प्रणमामि सूत्रजिनवाणिवरा॥
जिणवाणि न जाने त्रिजगत फिरा, जड़ चेतनभाव न भिन्नकरा।
नहिं पायो आतम बोध वरा, प्रणमामि सूत्र जिनवाणिवरा॥
शुभकर्म उद्योत कियो हियरा, जिनवाणिहि ज्ञान जग्यो जियरा
भवभरमणहर शिवमार्ग धरा, प्रणमामि सूत्र जिनवाणिवरा।
सुत कन्हैयालाल परणाम करा, भगवानदास जिहि नाम धरा।
जिनवाणि वसो नित तिहि हियरा, प्रणमामि सूत्र जिनवाणिवरा
जिन वाणी माता, सब सुख दाता, भव भरमणहर मुक्तिकरा।
शुभ सूत्रहि शास्त्रहि, वारहि वारहि दास जोरिकर नमन करा॥

ॐ ह्रीं श्रीतत्वार्थ सूत्राय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

जो पूजै ध्यावैं भक्ति चढ़ावैं जिन वाणी सेती,
ते पावहिं धन धान्य संपदा पुत्र पौत्र जेती।
निरुग शरीर लहैं कीरति जग हरै भ्रमण फेरी,
अनुक्रम सेती लहैं मोक्षथल तहंके होय बसेरी॥

इति श्री तत्वार्थ सूत्र पूजा समाप्त।

श्री भक्तामर स्तोत्र पूजा

ओं जय, जय, जय। नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु।

अनुष्टुप्।

परमज्ञान धाणासि, घातिकर्म प्रघातिनं।
महा धर्म प्रकर्त्तारं, वंदेह मादि नायकं ॥१॥

भक्तामर महास्तोत्रं, मंत्रपूजां करोम्यहं।
सर्वजीव हितागारं, आदिदेवं नमाम्यहं ॥२॥

ओं ह्रीं श्री आदिदेव अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं। ओं ह्रीं श्री आदिदेव अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ओं ह्रीं श्री आदिदेव अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अथाष्टकं।

सुरसुरी नदसंभृत जीवनैः सकल ताप हरैः सुख कारणैः। वृषभनाथ वृषांक समन्वितं, शिवकरं प्रयजे हत किल्विषं ॥१॥

ओं ह्रीं वृषभनाथ जिनेन्द्राय जलं।

मलय चंदन मिश्रित कुंकुमैः सुरभितागत षट्पद नंदनैः ॥वृषभ०॥ चंदनं ॥२॥

कमल जाति समुद्भवतंदुलैः परम पावन पंच सुपुंजकैः ॥ वृषभ० अक्षतं ॥३॥

जलज चंपक जाति सुमालती, वकुल पाड़ल कुंद सु पुष्पकैः । वृषभ० । पुष्पं ॥४॥

वटक खज्जक मंडुक पाय सै विध मोदक व्यंजन सद्रसै । वृषभ० नैवेद्यं ॥५॥

रविकर द्युति सन्निभ दीपकैः प्रवल मोह घनांध निवारकैः । वृषभ० दीपं ॥६॥

स्वगुरु धूपभरै घंटनिष्ठितैः प्रतिदिशं मिलितालि समूहकैः । वृषभ० । धूपं ॥७॥

सरस निंबुकलांगलि दाड़िमैः कदलि पुंग कपित्थ शुभैः फलैः । वृषभ० । फलं ॥८॥

सलिल गंध शुभाक्षतपुष्पकैश्चरुसु दीप सु धूप फलार्घकैः । जिनपतिं च यजे सुखकारकं, वदति मेरु सु चन्द्र यतीश्वरं । अर्घ ॥६॥

प्रत्येक श्लोक पूजा

(भक्तामर स्तोत्र का एक एक श्लोक पढ़ कर नीचे लिखे क्रम से ओं ह्रीं बोल कर अर्घ चढ़ाना चाहिये)

ओं ह्रीं प्रणतदेव समूह मुकुटाग्रमणि महापापांधकार विनाशकाय श्रीं आदिपरमेश्वराय अर्घ ॥ १ ॥

ओं ह्रीं गणधर चारण समस्त रूपींद्रचंद्रादित्यसुरेन्द्रनरेन्द्रनरेन्द्रव्यंतरेन्द्रनागेंद्र चतुर्विधमुनींद्रस्तवितचरणारविंदाय श्रीआदिपरमेश्वराय अर्घ ॥ २ ॥

ओं ह्रीं विगतबुद्धिगर्व्वोपहारसहित श्रीमानतुंगाचार्य भक्तिसहिताय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घं ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं त्रिभुवनगुणसमुद्र· चंद्रकांतमणितेजशरीरसमस्त सुरनाथ स्तवित श्री आदिपरमेश्वराय अर्घं ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं समस्त गणधरादि मुनिवर प्रतिपालक मृगबालवत श्री आदिनाथ परमेश्वराय अर्घं ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं श्री जिनेन्द्र चन्द्रभक्ति सर्वसौख्यं तुच्छभक्ति बहु सुखदायकाय श्रीजिनेन्द्राय आदि परमेश्वराय अर्घं ॥ ६ ॥

ओं ह्रीं अनंत भव पातक सर्व विघ्नविनाशकाय तव, स्तुतिसौख्यदाय· काय श्रीआदि परमेश्वराय अर्घं ॥ ७ ॥

ओं ह्रीं जिनेन्द्र स्तवन सत्पुरुषचित्त चमत्काराय श्रीआदि परमेश्वराय अर्घ ॥ ८ ॥

ओं ह्रीं जिनपूजनस्तवन कथाश्रवणेन समस्त पाप विनाशकाय जग- त्त्रय भव्यजीव सर्वविघ्ननाशसमर्थाय च श्रीआदि परमेश्वराय-अर्घं ॥६

ओं ह्रीं त्रैलोक्यगुणमण्डितसमस्तोपमासहिताय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घं ॥ १० ॥

ओं ह्रीं श्रीजिनेन्द्र दर्शनेन अनंत भव सञ्चित अघसमूह विनाशकाय श्रीप्रथम जिनेन्द्राय अर्घं ॥ ११ ॥

ओं ह्रीं त्रिभुवन शांते स्वरूपाय त्रिभुवन तिलकाय मानाय श्री आदि परमेश्वराय अर्घं ॥ १२ ॥

ओं ह्रीं त्रैलोक्यविजयरूप अतिशय अनंतचंद्र तेजोजित सदातेज पूजमानाय श्रीआदि परमेश्वराय अर्घं ॥ १३ ॥

ओं ह्रीं शुभगुणातिशयरूप त्रिभुवनजीत जिनेन्द्र गुण विराजमानाय श्रीप्रथमजिनेन्द्राय अर्घं ॥ १४ ॥

ओं ह्रीं मेरुचन्द्र अचलशील शिरोमणि व्रतोद्यराजमंडित चतुर्विध वनिता विरहित शीलसमुद्राय श्रीआदिपरमेश्वराय अर्घं ॥ १५ ॥

ओं ह्रीं धूम्रस्नेह वातादि विघ्नरहिताय त्रैलोक्य परम केवल दीपकाय श्री प्रथमजिनेन्द्राय अर्घं ॥ १६ ॥

ओं ह्रीं राहु चन्द्र पूजित कर्म प्रकृति क्षयति निरावरण ज्योतिरूप लोकद्वयावलोकि सदोदयादि परमेश्वराय अर्घं ॥ १७ ॥

ओं ह्रीं नित्योदय रूप और राहु करके हू ना ग्रसे जाय ऐसे त्रिभुवन सर्व कला सहित विराजमानाय श्री आदि परमेश्वराय अर्घं ॥ १८ ॥

ओं ह्रीं चन्द्र सूर्योदयास्त रजनी दिवस रहित परम केवलोदय सदादीप्ति विराजमानाय श्री आदि देवाय आदि परमेश्वराय अर्घं ॥ १६ ॥

ओं ह्रीं हरि हरादि ज्ञानरहिताय सर्वज्ञ परम ज्योति केवलज्ञान सहिताय श्री आदि परमेश्वराय अर्घं ॥ २० ॥

ओं ह्रीं त्रिभुवन मनमोहन जिनेन्द्ररूप अन्य दृष्टान्त रहित परम बोध मंडिताय श्री आदि जिनाय अर्घं ॥ २१ ॥

ओं ह्रीं त्रिभुवन वनितोपमारहित श्री जिनवर माताजनित जिनेन्द्र पूर्व दिग भास्कर केवल ज्ञान भास्कराय श्री आदिब्रह्मा जिनाय अर्घं ॥ २२ ॥

ओं ह्रीं त्रैलोक्य पावनादित्यवर्ण परमाष्ठोत्तर शतलक्षण नव शत व्यंजनाय समुदाय एक सहस्र अष्ट मंडिताय श्री आदिजिनेंद्राय अर्घं ॥ २३ ॥

ओं ह्रीं ब्रह्मा विष्णु श्रीकण्ठ गणपति त्रिभुवने दैवत्व सेविताय सेविकाय श्री आदि परमेश्वराय अर्घं ॥ २४ ॥

ओं ह्रीं बुद्धिदर्शक शेषधर ब्रह्मादि समस्तानन्तनामसहिताय श्री आदि जिनेन्द्राय अर्घं ॥२५॥

ओं ह्रीं अधोमध्योद्र्ध्व लोकत्रय कृताहोरात्रिनमस्कार समस्तार्तिरौद्र विनाशक त्रिभुवनेश्वर भवोदधि तरण-तारण समर्थाय श्री आदि परमेश्वराय अर्घं ॥२६॥

ओं ह्रीं परमगुणाश्रित एकादि अवगुणरहिताय श्री आदि परमेश्वराय अर्घं ।

ओं ह्रीं अशोक वृक्ष प्रातिहार सहिताय श्री आदि परमेश्वराय अर्घं ।।२८।।

ओं ह्रीं सिंहासन प्रातिहार्य सहिताय श्री प्रथम जिनेन्द्राय अर्घं।।२९।।

ओं ह्रीं चतुः षष्ठि चामर प्रातिहार्य सहिताय श्रीप्रथम जिनेन्द्राय अर्घं ।।३०।।

ओं ह्रीं छत्रत्रय प्रातिहार्य सहिताय श्री आदि परमेश्वराय अर्घं ।।३१।।

ओं ह्रीं अष्टादश कोटि वादित्र प्रातिहार्य सहिताय श्री परमादि जिनाय अर्घं ।।३२।।

ओं ह्रीं समस्त पुष्प जाति वृष्टि प्रातिहार्य सहिताय श्री आदि जिनेंद्राय अर्घं ।।३३।।

ओं ह्रीं कोटि भास्कर प्रभा मंडित भामंडल प्रातिहार्य सहिताय श्री परमादि जिनाय अर्घं ।।३४।।

ओं ह्रीं सलिल जलधर पटलगर्जितध्वनि योजन प्रमाण प्रातिहार्य सहिताय श्री आदि परमेश्वराय अर्घं ।।३५।।

ओं ह्रीं हेम कमलोपरि गमन देवकृतातिशय सहिताय श्री आदि परमेश्वराय अर्घं ।।३६।।

ओं ह्रीं धर्मोपदेश समये समवशरण विभूति मंडिताय श्री आदि परमेश्वराय अर्घं ३७।।

ओं ह्रीं मस्तकगलितरण सुर गजेन्द्र महादुर्द्धर भय विनाशकाय श्री जिनादि परमेश्वराय अर्घं ।।३८।।

ओं ह्रीं आदिदेव नाम प्रसादान्महासिंह भय विनाशकाय श्री युगादि परमेश्वराय अर्घं ।।३९।।

ओं ह्रीं महावह्नि विश्वभक्षण समर्थ जिननाम जल विनाशकाय श्री आदि ब्रह्मणे अर्घं ।।४०।।

ओं ह्रीं रक्तनयन सर्प जिन नागदमन्योषधि समस्त भय विनाशकाय श्री जिनादि परमेश्वराय अर्घं ॥४१॥

ओं ह्रीं महासंग्राम भयविनाशकायसर्वांगरक्षणकराय श्री प्रथमजिनेंद्राय अर्घं ॥४२॥

ओं ह्रीं महारिपुयुद्धे जयदायकाय श्री आदि परमेश्वराय अर्घं ॥४३॥

ओं ह्रीं महासमुद्र चलित वातमहादुर्जय भय विनाशकाय श्री जिनादि परमेश्वराय अर्घं ॥४४॥

ओं ह्रीं दश प्रकार ताप जलंधराष्टादश कुष्ट सन्निपात महद्रोग विनाशकाय परमकामदेवरूप प्रकटाय श्रीजिनेश्वराय अर्घं ॥४५॥

ओं ह्रीं महाबंधन आपाद कंठ पर्यन्त वैरिकृतोपद्रव भय विनाशकाय श्री आदि परमेश्वराय अर्घं ॥४६॥

ओं ह्रीं सिंह गजेन्द्र राक्षस भूत पिशाच शाकिनी रिपु परमोपद्रव भय विनाशकाय श्री जिनादि परमेश्वराय अर्घं ॥४७॥

ओं ह्रीं पठक पाठक श्रोता व श्रद्धावान मानतुंगाचार्यादि समस्त जीव कल्याणदाय श्री आदि परमेश्वराय अर्घं ॥४८॥

वन सुगंध तंदुल पुष्पकैः प्रवर मोदक दीपक धूपकैः ।
फल वरैः परमात्म पदप्रदं, प्रवियजे श्रीआदि जिनेश्वरं ॥

ओं ह्रीं अष्ट चत्वारिंशत्कमलेभ्यः पूर्णार्घं ।

जयमाला

श्लोक—प्रमाणद्वय कर्त्तारं स्याद्स्ति वाद वेदकं ।
द्रव्यतत्व नयागार मादिदेवं नमाम्यहं ॥१॥

छन्द ।

आदि जिनेश्वर भोगागारं, सर्व जीववर दया सुधारं ।
परमानंदरमासुखकंदं, भव्यजीव हितकरणममंदं ॥ २ ॥

परम पवित्र वंशवर मंडण, दुख दारिद्र काम बल खंडन। वेदकर्म दुर्जय बल दंडण, उज्ज्वल ध्यान प्रति शुभ मंडण ॥३॥ चतु अस्सीलक्ष पूर्व जीवित पर, धनुष पंच शत मानस जिनवर। हेमवर्ण रूपौघ विमल कर, नगर अयोध्या स्थानक व्रत धर ॥४॥ नाभिराज परमात्म सुवेता, माता मरुदेवी गुण गेता। सोल स्वप्न पर भेद विख्याता, त्रिभुवननायक पुत्र विधाता ॥ ५ ॥ गर्भकल्याणक सुरपति कीधा, जन्म कल्याणक मेरु शिर सीधा। स्वयं स्वयंभू दीक्षा धारी, केवल बोध सु त्रिभुवन प्यारी ॥६॥ अष्ट गुणाकर सिद्ध दिवाकर, परम धर्म विस्तारण जय भर। शीत ताप रहितं भव हारी, सर्व सौख्य निरुपम गुणधारी ॥७॥

घत्ता—जय आदि सु ब्रह्मा, त्रिभुवन ब्रह्मा, ब्रह्मास्वात्म
स्वरूप परं। जय बोध सु ब्रह्मा, पंच सु ब्रह्मा, ब्रह्मा
सुमति जलधि निकरं।

ॐ ह्रीं श्री आदि परमदेवाय जलमालाघे निर्वपामीति स्वाहा ॥

शार्दूल विक्रीडित।

देवोऽनेक भवार्जितो गत महा पापः प्रदीपानलः।
देवः सिद्धवधू विशाल हृदयालंकार हारोपमः॥
देवोष्टादश दोष सिंदुर घटा दुर्भेद पंचाननो।
भव्यानां विदधातु वांछित फलं श्री आदिनाथो जिनः॥

श्लोक—लक्ष्मीचंद्रगुरुर्जीतो मूलसंघ विदाग्रणी।
पट्टाभयचंद्रो देवो दयानंद विदांवरः॥

रत्नकीर्ति कुमुदेन्दु सुमतिः सागरोदितः ।
भक्तामर महास्तोत्र पूजा चक्री गुणाधिका ॥

इति श्री मानतुङ्गाचार्य विरचित भक्तामर स्तोत्र पूजा समाप्त ।

भक्तामर ऋद्धि मंत्र

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो अरिहंताणं णमो जिणाणं ह्रां ह्रीं ह्रं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं स्वाहा ।

(मंत्र) ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं ब्लूं क्रौं ॐ ह्रीं नमः स्वाहा ।

(विधि) श्रद्धापूर्वक प्रतिदिन ऋद्धि और मंत्र १०८ बार जपने से समस्त विघ्न नाश होते हैं ॥१॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हंणमो ॐ ह्रीं जिणाणं (मंत्र) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं नमः (विधि) श्रद्धा सहित लगातार ७ दिन तक १००० बार ऋद्धि-मंत्र जपने से समस्त रोग शान्त हो जाते हैं ॥२॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हंणमों परमोहि जिणाणं ।

(मंत्र) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सिद्धेभ्यो बुद्धेभ्यः सर्वसिद्धिदायकेभ्यो नमः स्वाहा ।

(विधि) श्रद्धापूर्वक सात दिन तक प्रतिदिन त्रिकाल १०८ बार ऋद्धि मंत्र जपने से सर्व सिद्धियां प्राप्त होती हैं ॥३॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहि जिणाणं (मंत्र) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं जलयात्रा देवताभ्यो नमः स्वाहा (विधि) सात दिन तक प्रति दिन १००० बार श्रद्धा पूर्वक ऋद्धि-मंत्र जपने तथा २१ कंकरियों को क्रमशः एक २ कंकरी को उक्त मंत्र से मंत्रित कर जल में डालने से जाल में मछलियां नहीं फंसती ॥४॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहि जिणाणं (मंत्र) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं क्रौं सर्व संकट निवारणेभ्यः सुपार्श्व यक्षेभ्यो नमो नमः स्वाहा।

(विधि) श्रद्धा सहित ७ दिन तक प्रतिदिन ऋद्धि-मंत्र का १००० बार जप करने से सब तरह के संकट शमन हो जाते हैं ॥५

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो कुट्ठबुद्धीणं (मंत्र) ॐ ह्रीं श्रां श्रीं श्रूं श्रः हं सं थ थ थः ठः ठः सरस्वती भगवती विद्या प्रसादं कुरु २ स्वाहा।

(विधि) २१ दिन तक प्रतिदिन १००० बार ऋद्धि-मंत्र को श्रद्धा सहित जपने से बहुत शीघ्र विद्या आती है ॥६॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीज बुद्धीणं (मंत्र) ॐ ह्रीं हं सं श्रां श्रीं क्रौं क्लीं सर्वदुरितसंकटक्षुद्रोपद्रवकष्ट निवारणं कुरु २ स्वाहा।

(विधि) २१ दिन तक प्रति दिन १०८ बार ऋद्धि-मंत्र भाव सहित जपने से किसी प्रकार का विष नहीं चढता। तथा कंकरी को १०८ बार मंत्रित कर सर्प के सिर पर मारने से सर्प कीलित हो जाता है ॥७॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो अरिहंताणं णमो पादाणु सारिणं (मंत्र) ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं स्वाहा। ॐ ह्रीं लक्ष्मण रामचन्द्र देव्यै नमः स्वाहा (विधि) २१ दिन तक प्रति दिन श्रद्धा सहित ऋद्धि-मंत्र का जाप करने से सब प्रकार के अरिष्ट मिट जाते हैं ॥८॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं णमो संभिण्ण सोदराणं ह्रां ह्रीं ह्रूं फट् स्वाहा (मंत्र) ॐ ह्रीं श्रीं क्रौं मर्वीं रः रः हं हः नमः स्वाहा (विधि) श्रद्धापूर्वक चार कंकरी १०८ बार मंत्र कर

चारों दिशाओं में फेंकने से पंथ कीलित हो जाता है तथा सप्तभय भाग जाते हैं ॥६॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयंबुद्धीणं (मंत्र) जन्म सघ्यानतो जन्मतो वा मनोत्कर्षधृतावादि-नोयानात्तान्ताभावे प्रत्यक्षा बुद्धान्मनो ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं ह्रः श्रां श्रीं श्रूं श्रः सिद्धबुद्धकृतार्थो भव २ वषट् सम्पूर्णं स्वाहा (विधि) श्रद्धा पूर्वक नमक की ७ डली लेकर प्रत्येक को १०८ बार मंत्रित कर खाने से कुत्ते के विष का असर नहीं होता ॥१०॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेय बुद्धीणं (मंत्र) ॐ ह्रीं श्री क्लीं श्रीं कुमति निवारिण्यै महामायायै नमः स्वाहा (विधि) श्रद्धा सहित २१ दिन तक प्रतिदिन १०८ बार ऋद्धि मंत्र जपने से जिसे बुलाने की उत्कंठा हो वह आ सकता है ॥११॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हंणमो वोहि बुद्धीणं (मंत्र) ॐ आं आं अं अः सर्व राजा प्रजा मोहिनी सर्वजन वश्यं कुरु कुरु स्वाहा (विधि) श्रद्धा सहित ४२ दिन तक प्रति दिन १००० ऋद्धि-मंत्र जपना चाहिए। एक पाव तिल तैल को उक्त मंत्र से मंत्रित कर हाथी को पिलाने से उसका मद उतर जाता है ॥१२॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो ऋजुमदीणं (मंत्र) ॐ ह्रीं श्रीं हं सः ह्रौं ह्रां ह्रीं द्रां द्रीं द्रौं द्रः मोहनी सर्वजनवश्यं कुरु २ स्वाहा।

(विधि) श्रद्धा सहित ७ दिन तक प्रति दिन १००० ऋद्धि-मंत्र का जप करने तथा ७ कंकरियों को १०८ बार मंत्रित कर चारों ओर फेंकने से चोर चोरी नहीं कर पाते और रास्ते में भय नहीं रहता ॥१३॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो विपुल मदीणं (मंत्र) ॐ नमो भगवती गुणवंती महा मानसी स्वाहा (विधि) श्रद्धापूर्वक ७ कंकरियों को २१ बार मंत्रित कर चारों ओर फेंकने से आधि-

व्याधि शत्रु आदि का भय मिट जाता है और लक्ष्मी की प्राप्ति होती है ॥१४॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो दशपुव्वीणं (मंत्र) ॐ नमो भगवती गुणवती सुसीमा पृथ्वी वज्रशृंखला मानसी महामानसी स्वाहा (विधि) श्रद्धापूर्वक १४ दिन १००० जाप करे। २१ बार तेल मंत्रित कर मुख पर लगाने से सभा में सम्मान बढ़ता है ॥१५

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो चवदश पुव्वीणं (मंत्र) ॐ णमो मंगला सुसीमा नाम देवी सर्व समीहितार्थ वज्र शृंखलां कुरु २ स्वाहा (विधि) ६ दिन तक प्रतिदिन श्रद्धा सहित १००० ऋद्धि-मंत्र जपने से राज-दरबार में प्रतिवादी की हार होती है; और शत्रु का भय नहीं रहता ॥१६॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हंणमो अट्ठांग महा कुशलाणं (मंत्र) ॐ णमो णमि ऊण अट्ठे मट्ठे क्षुद्र विघट्ठे क्षुद्रपीड़ा जठरपीड़ा भंजय २ सर्वपीड़ा सर्वरोग निवारणं कुरु २ स्वाहा। (विधि) श्रद्धा सहित ७ दिन तक १००० जाप जपना चाहिये, अछूता पानी २१ बार मंत्रित कर पिलाने से शारीरिक सभी रोग दूर हट जाते हैं ॥१७॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउयणयद्धिपत्ताणं (मंत्र) ॐ नमो भगवते जय विजय मोहय २ स्तम्भय २ स्वाहा (विधि) श्रद्धा सहित ७ दिन तक १००० जाप जपना चाहिये। १०८ बार ऋद्धि मंत्र जपने से शत्रु सैन्य स्तम्भित हो जाती है ॥१८॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हंणमो विज्जाहराणं (मंत्र) ॐ ह्रां ह्रीं ह्रं ह्रः यक्ष ह्रीं वषट् नमः स्वाहा (विधि) श्रद्धा सहित ऋद्धि-मंत्र को १०८ बार जपने से अपने पर प्रयोग किये गये दूसरे के मंत्र जादू टोना टोटका मूठ उच्चाटनादि का भय नहीं रहता ॥१९॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हंणमो चारणाणं (मंत्र) ॐ श्रां श्रीं श्रं श्रः शत्रुभय निवारणाय ठः ठः स्वाहा (विधि) श्रद्धा सहित प्रतिदिन ऋद्धि-मंत्र को १०८ बार जपने से सन्तान सम्पत्ति सौभाग्य वुद्धि और विजय की प्राप्ति होती है ॥२०॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हंणमो पण्णसमणाणं (मंत्र) ॐ नमः श्री मणिभद्र जय विजय अपराजित सर्व सौभाग्यं सर्व सौख्यं कुरु २ स्वाहा (विधि) श्रद्धा सहित मंत्र को ४२ दिन तक १०८ बार जपने से सब अपने वशवर्ती होते हैं और सुख सौभाग्य बढ़ता है ॥२१॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हंणमो आगासगामिणं (मंत्र) ॐ णमो वीरेही जृंभय २ मोहय २ स्तम्भय २ अवधारणं कुरु २ स्वाहा (विधि) श्रद्धा सहित हल्दी की गांठ को मंत्रित कर चबाने से डाकिनी शाकि ी भूत पिशाच चुडैलादि भाग जाते हैं ॥२२॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाणं (मंत्र) ॐ नमो भगवती जयावती मम समीहितार्थं मोक्ष-सौख्यं कुरु २ स्वाहा (विधि) श्रद्धासहित ऋद्धि-मंत्र को १०८ बार जपकर अपने शरीर की रक्षा करे, पश्चात इसी मंत्र से झाड़ने पर प्रेत बाधा दूर होती है ॥२३॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठि विसाणं (मंत्र) स्थावर जंगम वायकृतिमं सकलविषं यद्भक्तेः अप्रणमिताय ये दृष्टिविषयान्मुनीन्ते वड्ढमाण स्वामी सर्व हितं कुरु २ स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रं ह्रः अ सि आ उ सा झ्रां झ्रौं स्वाहा (विधि) राख मंत्रित कर शिर में लगाने से शिर पीडा दूर होती है ॥२४॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हंणमो उग्गतवाणं (मंत्र) ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा झ्रां झ्रौं स्वाहा। ॐ नमो भगवते जयविजयापराजिते सर्व सौभाग्यं सर्व सौख्यं कुरु २ स्वाहा। (विधि) श्रद्धा

सहित प्रति दिन ऋद्धि मंत्र के जपने से नजर उतरती है और अग्नि का असर आराधक पर नहीं होता ॥२४॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्त तवाणं (मंत्र) ॐ नमो ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रूं ह्रूं परजन शान्ति व्यवहारे जयं जय कुरु २ स्वाहा। (विधि) श्रद्धा सहित ऋद्धि मंत्र द्वारा तेल को मंत्रित कर सिर पर लगाने से आधा शीशी (अर्द्ध शिर) की पीड़ा दूर होती है ॥२६॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्ततवाणं (मंत्र) ॐ नमो चक्रेश्वरी देवी चक्रधारिणी चक्रेणानुकूलं साधाय २ शत्रुनुन्मूलयोन्मूलय स्वाहा (विधि) श्रद्धा सहित ऋद्धि मंत्र की उपसना से आराधक को शत्रु भी हानि नहीं पहुँचा सकता ॥२७॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो महातवाण (मंत्र) ॐ नमो भगवते जय-विजय जृंजय मोहय मोहय सर्वसिद्धि सम्पत्ति सौख्यं कुरु २ स्वाहा (विधि) प्रति दिन श्रद्धा सहित ऋद्धि-मंत्र १०८ बार जपने से सभी अच्छे कार्य सिद्ध होते हैं और व्यापार में भी लाभ होता है ॥२८॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरतवाणं (मंत्र) ॐ ह्री णमो णमि ऊण पासं विसहर फुलिगमंतो विसहर नाम रकार मंतो सर्व सिद्धि मी हे इह सगरंताण मरणो जा गई कप्पथुमच्चं सर्व सिद्धि ॐ नमः स्वाहा (विधि) श्रद्धा सहित प्रतिदिन १०८ बार ऋद्धि-मंत्र जपने से हर प्रकार की नेत्र पीड़ा दूर होती है ॥२६॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुणाणं (मंत्र) ॐ नमो अटठे मट्ठे क्षुद्रविघट्ठे क्षुद्रान् स्तम्भय २ रक्षां कुरु कुरु स्वाहा (विधि) श्रद्धा पूर्वक ऋद्धि मंत्र की आराधना करने से शत्रु का शौर्य नष्ट होता है ॥३०॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं नमो घोर गुण परक्कमाणं (मंत्र) ॐ उव सग्गहरं पास वंदामि कम्मघणमुक्कं विसहर विसणिण्णासिणं मंगल कल्लाण आवासं ॐ ह्रीं नमः स्वाहा (विधि) श्रद्धा सहित ऋद्धि-मंत्र को जपने से राज्य मान्यता होती है और हर जगह सम्मान प्राप्त होता है ॥३१॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर बंभचारिणं (मंत्र) ॐ नमो ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः सर्व दोष निवारणं कुरु २ स्वाहा (विधि) श्रद्धा सहित ऋद्धि मन्त्र द्वारा कुंआरी कन्या के हाथ से काते गये सूत को मंत्रित कर गले में बाँधने से संग्रहणी तथा उदर की भयानक पीडा दूर होती है ॥३२॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हंणमो सव्वोसहि पत्ताणं (मंत्र) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं ध्यान सिद्धि परम योगीश्वराय नमो नमः स्वाहा

(विधि) श्रद्धा सहित ऋद्धि मंत्र द्वारा कच्चे धागे को मंत्रित कर हाथ में बांधने से एकांतरा तिजारी तापज्वरादि सब रोग दूर होते हैं ॥३३॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो खिल्लोसहि पत्ताणं (मंत्र) ॐ नमो ह्रीं श्री क्लीं ऐं ह्रौं पद्मावत्यै नमो नमः स्वाहा। (विधि) श्रद्धा सहित ऋद्धि मंत्र द्वारा कच्चे धागे को मंत्रित कर कमर में बांधने से असमय में गर्भ का पतन नहीं होता ॥३४॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हंणमो जल्लोसहि पत्ताणं (मंत्र) ॐ नमो जय विजया पराजित महालक्ष्मी अमृतवर्षिणी अमृत-स्राविणी अमृतं भव भव वषट् सुधाय स्वाहा। (विधि) श्रद्धा सहित ऋद्धि मंत्र की आराधना से चोरी मरी मृगी दुर्भिक्ष राजभय आदि नष्ट हो जाते हैं ॥३५॥

(ऋद्धि) ॐ अर्हंणमो विप्पोसहि पत्ताणं (मंत्र) ॐ ह्रीं कलिकुण्डदण्डस्वामिन् आगच्छ २ आत्ममंत्रान् आकर्षय २ आत्म

मन्त्रान् रक्ष २ परमंत्रान् छिन्द २ मम समीहितं कुरु २ स्वाहा। (विधि) श्रद्धा सहित १२००० ऋद्धि मंत्र का जाप जपने से सम्पत्ति का लाभ होता है ॥३६॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्ह णमो सव्वोसहिपत्ताणं (मंत्र) ॐ नमो भगवते अप्रतिचक्रे ऐं क्लीं व्लूं ॐ ह्रीं मनोवांछित सिद्धयै नमो नमः अप्रतिचक्रे ह्रीं ठः ठः स्वाहा (विधि) श्रद्धा सहित ऋद्धि मंत्र द्वारा थोड़ा सा जल मंत्रित कर मुंह पर छींटा देने से दुर्जन पुरुष वश में हो जाया करते हैं और उनकी जुबान बन्द हो जाती है ॥३७

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणवलीणं (मंत्र) ॐ नमो भगवते महानागकुलोच्चाटनी कालदष्टमृतकोत्थापिनी परमंत्र प्रणाशिनी देवि-देवते ह्रीं नमो नमः स्वाहा। (विधि) श्रद्धा सहितं ऋद्धि-मंत्र का आराधन करने से हस्ति का मद नाश होता है और अर्थ प्राप्ति होती है ॥३८॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचवलीणं (मंत्र) ॐ नमो एषु वृत्तेषु वर्द्धमान तव भय हरं वृत्ति वर्णायेषु मंत्राः पुनः स्मर्तव्या अतोना परमंत्र निवेदनाय नमः स्वाहा (विधि) श्रद्धा सहित ऋद्धि मंत्र का आराधन करने से जंगल का राजा सिंह भी परास्त हो जाता है और सर्प का भय भी नहीं रहता ॥३६॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायवलीणं (मंत्र) ॐ ह्रीं श्रीं ह्रां ह्रीं अग्नि उपशम कुरु २ स्वाहा (विधि) श्रद्धा सहित ऋद्धि मंत्र का आराधन करने से अग्नि का भय मिट जाता है ॥४०॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हंणमो रवीसवीणं (मंत्र) ॐ नमो श्रां श्रीं श्रूं श्रः जलदेवि कमले पद्म हृद निवासिनी पद्मोपरि संस्थिते सिद्धि देहि मनोवांछितं कुरु २ स्वाहा। (विधि) श्रद्धा सहित ऋद्धि मंत्र जपने और झाड़ने से सर्प का विष उतर जाता है ॥४१॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हंणमो सप्पिसवाणं (मंत्र) ॐ नमो नमिऊण विषहर विष प्रणाशन रोग शोक दोष ग्रह कप्पदुमच्चजाई सुहनाम गहणसकल सुहदे ॐ नमः स्वाहा। (विधि) श्रद्धा सहित ऋद्धि-मंत्र की आराधना से भयंकर युद्ध का भय मिट जाता है ।।४२

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हंणमो महुरसवाणं (मंत्र) ॐ नमो चक्रेश्वरी देवी चक्रधारिणी जिनशासनसेवाकारिणी क्षुद्रोपद्रवविनाशनी धर्म शांति कारिणी नमः कुरु २ स्वाहा। (विधि) श्रद्धा सहित ऋद्धि मंत्र जपने से भय मिटता है और सब प्रकार की शांति प्राप्त होती है ।।४३।।

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमीयसवीणं (मंत्र) ॐ नमो रावणाय विभीषणाय कुंभकरणाय लंकाधिपतये महाबल पराक्रमाय मनश्चिंतितं कुरु २ स्वाहा (विधि) श्रद्धा सहित ऋद्धि मंत्र की आराधना से सब प्रकार की आपत्तियां हट जाती हैं ।।४४।।

(ऋद्धि) ॐ अर्हं णमो अक्खीणमहाणसाणं (मंत्र) ॐ नमो भगवती क्षुद्रोपद्रवशांतिकारिणी रोगकष्टज्वरोपशमं शांति कुरु २ स्वाहा (विधि) श्रद्धा सहित ऋद्धि मंत्र की आराधना से सब रोग नाश होते हैं तथा उपसर्ग आदि का भय नहीं रहता ।।४५।।

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं (मंत्र) ॐ णमो ह्रां ह्रीं श्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ठः ठः जः जः क्ष्रां क्ष्रीं क्ष्रूं क्ष्रः क्षयः स्वाहा (विधि) श्रद्धा सहित ऋद्धि मंत्र की आराधना से आराधक बंधनों से निर्मुक्त होकर निर्भय हो जाता है ।।४६।।

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्डमाणाणं (मंत्र) ॐ नमो ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः क्षय श्रीं ह्रीं फट स्वाहा (विधि) श्रद्धा सहित प्रतिदिन ऋद्धि मंत्र को १०८ बार जपने से शत्रु वश में होता है। विजय लक्ष्मी प्राप्त होती है और शस्त्रादि के घाव शरीर में नहीं हो पाते ।।४७।।

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वसाहूणं (मंत्र) महति महावीर वडढमाण बुद्धि रिसीणं ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा झौं झौं स्वाहा। (विधि) श्रद्धा सहित ४९ दिन तक १०८ बार ऋद्धि मंत्र जपने से मनोवांछित समस्त कार्यों की सिद्धि होती है ॥४८॥

श्री शांतिनाथ स्तव

हे शान्तिनाथ ! जगपूज्य, प्रभो, दयालो,
देवेन्द्र, विश्वसुत, शुद्ध सुवर्ण देह,
तेरे मनोरम पद द्वय में रचो ये—
सद्भाव भक्ति परि पूरित चित्त मेरा ॥१॥

कैसी मनोज्ञ रमणीय, सुशान्त, तेरी—
ध्यानस्थ मूर्ति भगवन् यह सोहती है,
संसार ताप हरणार्थ मना स्वयं ही—
श्रीः शान्ति की सकल आकर ही खडी हो ॥२॥

तेरे प्रभो वचन की विमल प्रभा से,
अज्ञान अन्ध तम है किसका न जाता ?
विद्युच्छटा अनुपम स्थिर शक्ति शाली,
जो छा रहे तम कहाँ फिर है दिखाता ॥३॥

हे नाथ ? दर्शन किये तव शान्ति आवे,
आवे न पास दुख दारिद, क्लेश जावे,
छावे महा जगत में यश, रत्न पावे
धावे सुमार्ग पर, ठोकर भी न खावे ॥४॥

आकाश चुम्बन करे भगवान तेरा—
प्रासाद सुन्दर, ध्वजा उडती वहाँ सो—
जो आत्मसिद्धि करके जग जीतते हैं,
उनका प्रभाव यह है, बतला रही है ॥५॥

आनन्द-मंगल सदा उस ठौर होवे,
आरोग्य-सौख्य-धन-धान्य समृद्धि होवे,
विद्वेष भाव सबका सब दूर होवे,
होवे जहाँ भजन-पूजन नित्य तेरा ॥ ६ ॥

हे शान्तिनाथ भगवान तुझे नमूँ मैं,
देवाधिदेव जगदीश तुझे नमूँ मैं,
त्रैलोक्य-शान्ति कर देव तुझे नमूँ मैं,
स्वामिन् नमूँ जिन नमूँ भगवन् नमूँ मैं ॥ ७ ॥

तू बुद्ध तू जिन मुनिन्द्र विभू स्वयम्भू,
तू राम कृष्ण जगदीश दयालु, दाता,
अल्ला, रहीम, रहमान, खुदा, करीम,
तू गाड, तू अहुरमज्द, महेश, मौला ॥ ८ ॥

है ज्ञान दर्पण महोज्वल नाथ तेरा,
आश्चर्य कारक महा जिसमें पडे हैं—
त्रैलोक्य के सकल भाव त्रिकाल के भी,
होवे भ विष्य उसमें अति उच्च मेरा ॥ ९ ॥

जो शुद्ध बुद्ध कर निर्मल वृत्तियों को—
श्री शांतिनाथ प्रभु के स्तव को पढेंगे,
होंगे सभी विमलकीर्ति महासुखी वे,
संसार को अतुलशांति भरा करेंगे ॥ १० ॥

पार्श्वनाथ स्तव

हे पार्श्वनाथ, परमेश, महोपदेशी,
हे अश्वसेन सुत, शामलशालि देह,

वामाङ्गजात, करुणा कर लोक बन्धो,
तेरे सदा चरण ही मम आसरा है ॥ १ ॥

संसार का तरण तारण तू कहाया,
तेरा किये स्मरण हर्ष न कौन पाया,
पाया सुभक्ति तव जो वह मोक्ष पाया,
तेरे सदा चरण को मम आसरा है ॥ २ ॥

तूने सहे कमठ के उपसर्ग भारी,
तूने अनन्त जग के उपकार कीन्हे।
आदर्श भव्य जन का भगवान है तू,
तेरे सदा चरण हो मम आसरा है ॥ ३ ॥

तूने कुमारपन से सब योग साधा,
भाई सदा सकल जीवन की भलाई।
तत्त्वार्थ का मरम मानव को बताया,
तेरे सदा चरण ही मम आसरा है ॥ ४ ॥

निर्व्याज बन्धु जगनायक तू जगत् का,
तेरी करे न किसका हित दिव्य वाणी।
तेरा प्रभाव किससे हिये पै पडे ना,
तेरे सदा चरण ही मम आसरा है ॥ ५ ॥

बारुद आग लगने पर ज्यों उडे, त्यों,
नाना भवोद्भव महागिरी पापके भी।
देवेन्द्र ! दर्शन किये तव नष्ट होते,
तेरे सदा चरण ही मम आसरा है ॥ ६ ॥

जो साम्यभाव धर जीव दया प्रचारे,
हैं क्रूर जन्तुगण भी उनके हितैषी।
ये बात नाथ अहिछत्र बता रहा है,
तेरे सदा चरण ही मम आसरा है ॥ ७ ॥

तु वीतराग भगवान् ! मुनीन्द्र है तू,
इष्टोपदेश—कर तू जग पूज्य है तू।
मेरा 'नमोऽस्तु' भगवन् तुझको हमेशा,
तेरे सदा चरण ही मम आसरा है ॥ ८ ॥
हो देश में सब जगह सुख शांति पूरी,
हिंसा प्रवृत्ति जग से उठ जाय सारी।
पावे प्रमोद सब राष्ट्र कुटुम्ब मेरा,
कल्याण तू कर सदा भगवन् नमस्ते ॥ ९ ॥
जो भव्य शुद्ध बन के स्तव को पढेगा,
कल्याण भाव जग का हिय में धरेगा।
सम्मान्य हो सकल का हित वो करेगा,
संसार के कुपथ सागर को तिरेगा ॥ १० ॥

श्री वीर स्तव

श्रीमन्, महावीर, विभो मुनिन्दो,
देवाधिदेवेश्वर, ज्ञानसिन्धो,
स्वामिन् तुम्हारे पदपद्म का हो—
प्रेमी सदा ही यह चित्त मेरा ॥ १ ॥
स्वामिन्, किसका न बुरा विचारूँ,
सन्मार्ग पै मैं चलते न हारूँ,
तत्त्वार्थ श्रद्धान सदैव धारूँ,
दो शक्ति, हो उत्तम शील मेरा ॥ २ ॥
सदा भलाई सबकी करूँ मैं,
सामर्थ्य पा जीव दया धरूँ मैं
संसार के क्लेश सभी हरूँ मैं,
हो; ज्ञान, चारित्र, विशुद्ध मेरा ॥ ३ ॥

स्वामिन्, तुम्हारी यह शान्त मुद्रा,
किस के लगाती हिय में ना मुद्रा,
कहे उसे क्या यह बुद्धिक्षुद्रा,
स्वीकारिये नाथ प्रणाम मेरा ॥ ४ ॥

प्रभो तुम्हीं हो निकटोपकारि,
प्रभो तुम्हीं हो भव दुःख हारी,
प्रभो तुम्हीं हो शुचि पंथ चारी,
हो नाथ साष्टाङ्ग प्रणाम मेरा ॥ ५ ॥

जो भव्य पूजा करते तुम्हारी,
होती उन्हीं की गति उच्च प्यारी,
प्रसिद्धि है "दादुरफूल" वारी,
सम्पूर्ण है निश्चय नाथ मेरा ॥ ६ ॥

मेरी प्रभो दर्शन शुद्धि होवे,
सद्भावना पूर्ण समृद्धि होवे,
पांचों व्रतों की शुभ सिद्धि होवे,
सदबुद्धि पै हो अधिकार मेरा ॥ ७ ॥

आया नहीं गौतम विज्ञ जौलौं
खिरी न वाणी तव दिव्य तौलौं,
पीयूष से पात्र भरा सतौलौं,
मैं पात्र होऊँ अभिलाष मेरा ॥ ८ ॥

प्रभो तुम्हें ही दिन रात ध्याऊँ,
सदा तुम्हारे गुन गान गाऊँ,
प्रभावना खूब करूँ कराऊँ,
कल्याण होवे सब भांति मेरा ॥ ९ ॥

श्री वीर के मारग पै चले जो,
श्री वीर पूजा मनसे करें जो,

सद्भव्य वीर स्तव को पढ़ें जो,
वे लब्धियाँ पा सुखपूर्ण होंवे ॥ १० ॥

जैन तीर्थ और उनका यात्रा मार्ग

आगरा

यह शहर सुन्दर और हिन्दुस्तान भरमें प्रसिद्ध है। संसार का प्रसिद्ध बादशाह शाहजहाँ का बनाया हुआ ताजमहल इसी शहर में है। इस शहर के कई रेलवे स्टेशन हैं। आगरा सिटी और आगरा फोर्ट दोनों स्टेशन शहर में हैं। आगरा फोर्ट स्टेशन से १ मील दूर मोतीकटरा की जैन धर्मशाला में ठहरना चाहिये। बेलनगंज के मन्दिर की धर्मशाला भी ठीक है।

यहाँ करीब ३० जैन मंदिर है। रोशन मुहल्ले के जैन मंदिर में श्री शीतलनाथजी की प्रतिमा बड़ी सुन्दर तथा विस्तृत आकार वाली है। इस शहर में कई जैन पाठशाला और विद्यालय हैं।

ताजमहल के सिवा यहां अकबर का लाल पत्थर का किला, शीश महल, जुम्मा मसजिद आदि सुदर देखने योग्य स्थान हैं। आगरा फोर्ट से फिरोजाबाद का टिकिट लेना चाहिये।

फीरोजाबाद

यह शहर स्टेशन से १ मील दूर है। शहर में जैन धर्मशाला में ठहरना चाहिये। यहाँ चूड़ियाँ, ग्लास, चिमनी आदि शीशे के सामान तैयार करने के बहुत से कारखाने हैं। यहाँ ७ जैन मन्दिर

हैं। पंचायती मंदिर में हीरे की एक आठ अंगुल प्रमाण प्रतिमा तथा एक प्रतिमा श्री चन्द्र प्रभु स्वामी की स्फटिक मणि से निर्मित विराजमान है। यहाँ से शिकोहाबाद जाना चाहिये।

शिकोहाबाद

यह शहर स्टेशन से आधा मील दूर है। यहाँ एक जैन मंदिर है। यहाँ तांगे से बटेश्वर को जा सकते हैं। यहाँ से शौरीपुर १ मील है। स्टेशन से ११ मील सड़क से जाकर जमुना नदी का कच्चा पुल है और पुल से दो मील बटेश्वर है।

बटेश्वर

यह छोटा गाँव प्राचीन और अच्छा है। गाँव में १ जैन मंदिर है इस मंदिर की नींव जमुना नदी में है। इसमें अजितनाथ भगवान की एक विशाल और सुंदर प्रतिमा है। यहाँ से १ मील दूर शौरीपुर (जंगल) में कई प्राचीन मंदिर और एक नया मंदिर है। यहाँ नेमिनाथ भगवान की १ प्रतिमा तथा चरण पादुका है। कई खंडित प्रतिमायें भी हैं।

यहाँ के लिये दूसरा रास्ता आगरे से भी है। वापिस शिकोहाबाद जाकर फर्रुखाबाद जाना चाहिये।

फर्रुखाबाद

यह शहर स्टेशन से १॥ मील दूर है। रेशमी व सूती कपड़ों की छपाई का काम अच्छा होता है, कपड़े देश-विदेश में सब जगह जाते हैं। यहाँ ३ मंदिर हैं। यहाँ से छोटी लाइन द्वारा कायमगंज का टिकिट लेना चाहिये।

कायमगंज

यह शहर स्टेशन से १ मील दूर है, एक जैन मंदिर है। यहाँ से ६॥ मील कंपिलाजी अतिशय क्षेत्र है, पक्की सड़क है।

श्री कंपिलाजी अतिशय क्षेत्र

वह छोटासा गाँव है। यहां एक धर्मशाला और एक विशाल मन्दिर है। यह स्थान विमलनाथ भगवान की जन्मभूमि है। यहां प्रति वर्ष चैत्र मास में रथोत्सव होता है। कायमगंज स्टेशन से कानपुर सैन्ट्रल का टिकट लेना चाहिये।

कन्नौज

यह शहर बहुत पुराना है। यहाँ इत्र-तेल का बड़ा व्यापार है, प्रसिद्ध होने से माल देश विदेश भेजा जाता है दो जैन मन्दिर मुहल्ला छिपैटी में हैं।

कानपुर

रेलवे स्टेशन (सैन्ट्रल) शहर में ही है वहाँ से आधी मील दूर लाठी मुहाल में जैन धर्मशाला है। यह व्यापारिक स्थान है। कपड़ा बहुत बनता और बाहर जाता है। लाल इमली मिल्स यहीं पर है और भी कई मिले हैं। यहाँ २ मन्दिर हैं। अनाज और चांदी सोने का व्यापार भी बहुत होता है। श्वेतांबरियों का कांच का मन्दिर देखने योग्य है। यहां से इलाहाबाद या लखनऊ जाना चाहिये।

लखनऊ

स्टेशन से एक फर्लांग दूर पर मुन्नालाल कागजी जैन की धर्मशाला है यहां ६ मन्दिर हैं। शहर में चौक बाजार अमीनाबाद पार्क, इमाम बाड़ा अजायबघर आदि देखने योग्य हैं। यहां के चिकन, पल्ले की टोपियां आदि प्रसिद्ध हैं। आबहवा अच्छी है।

इलाहाबाद

रेलवे स्टेशन से १ मील दूर चौक के पास जैन धर्मशाला है। आसपास चार शिखर बंद मंदिर हैं। किले में अक्षयवट नामका वृक्ष है इसी वृक्ष के नीचे भगवान आदिनाथ ने तप धारण किया था। यहां ६ वर्ष बाद अर्धकुंभ और १२ वर्ष बाद बड़ा कुंभ का मेला लगता है। २१ से ४० लाख तक यात्री आते हैं। गंगा, यमुना और सरस्वती तीन नदियों का संगम है।

यहां हाईकोर्ट, खुशरो बाग, युनिवर्सिटी, किला, आनंदभवन आदि दर्शनीय स्थान हैं। यहां से फैजाबाद जाना चाहिये।

फैजा बाद

धर्मशाला स्टेशन के पास ही है, शहर आधा मील दूर है। यहां एक मंदिर है। यहां से ४ मील दूर इक्के तांगे से अयोध्या जा ा चाहिये।

अयोध्या

मुहल्ला कटरा में एक मंदिर, एक धर्मशाला और ७ टौंके हैं। आदिनाथ, अजितनाथ, अभिनंदन, सुमतिनाथ और अनन्तनाथ

इन ५ तीर्थंकरों की जन्मभूमि है। यह स्थान हिन्दुओं का पवित्र तीर्थ है। पूजन प्रक्षाल का प्रबंध अच्छा है। यहां से बनारस कैन्ट जावें।

बनारस

स्टेशन से २ मील दूर मैदागिन में जैन मंदिर और विशाल धर्मशाला है। यह सुपार्श्वनाथ और पार्श्वनाथ स्वामी की जन्मभूमि है। यहां जैन मंदिर और चैत्यालय कुल ११ हैं। ३ मदिर भदैनी घाट पर हैं, ये मंदिर बड़े सुन्दर हैं और काशी स्याद्वाद जैन महाविद्यालय यहीं पर है। जैनियों में न्याय; व्याकरण आदि के विद्वान् बनाने वाला यही विद्यालय है। महामना मालवीयजी द्वारा संस्थापित हिन्दू यूनिवर्सिटी अवश्य देखना चाहिये।

बनारस की जरी के सच्चे काम की साड़ियां बहुत मनोहर और चित्ताकर्षक होती हैं।

यहां हिन्दुओं के हजारों मंदिर हैं। यहां का मनिकर्णिका घाट, क्वींस कालेज, मान मंदिर आदि देखने योग्य हैं। यहाँ से मोटर द्वारा सिंहपुरी (सारनाथ) और चन्द्रपुरी के दर्शन करने जाना चाहिये।

सिंहपुरी

बनारस से ५ मील दूर है। यहां श्रेयांसनाथजी का जन्म हुआ था। यहां के जैन मंदिर में भगवान की मूल नायक प्रतिमा बड़ी मनोहर है। बौद्ध मंदिर भी देखने योग्य है। एक अजायबघर भी है।

चन्द्रपुरी

चंद्रपुरी एक छोटा सा गांव है। गंगा के किनारे एक मंदिर और धर्मशाला है। यहां चन्द्रप्रभु का जन्म हुआ था। वापिस मोटर से बनारस जाकर आरा का टिकट लेना चाहिये।

आरा

स्टेशन से एक मील दूर चौक बाजार में बाबू हरप्रसादजी की धर्मशाला है। इसीके पास स्व० बाबू देवकुमारजी का बनवाया हुआ जैन सिद्धांत भवन बड़े विशाल रूप में है। बहुत से प्राचीन ग्रन्थों का संग्रह किया है। आरा में लगभग तीस मंदिर हैं। जैन बाला विश्राम धनुपुरा में है, जो विदुषी पं० चंदाबाईजी की देख रेख में चलता है। एक नसिया शहर के बाहर है। यहां से पटना जाना चाहिये।

पटना

यह गुलजार बाग क्षेत्र है। स्टेशन के पास ही एक धर्मशाला और एक मंदिर है। यहां से सेठ सुदर्शन को मोक्ष प्राप्त हुआ था। यहां कुल ६ मंदिर है। हाईकोर्ट, गंगानदी की छटा देखने योग्य है। इसका पुराना नाम पाटलिपुत्र है। हाथ की कारीगरी की वस्तुएं अच्छी मिलती हैं।

बिहार-शरीफ

पटना से यहां आना चाहिये। स्टेशन के सामने ही धर्मशाला है। एक मंदिर है, जिसमें प्रतिमायें बड़ी ही मनोहर है। यह शहर बड़ा है। कई चीजे देखने योग्य है। बिहार से बड़गांव रोड

को जाना चाहिये वहां से २॥ मील दूर दि० जैन धर्मशाला है वहां तांगे से जाना चाहिये। यही गांव कुण्डलपुर बोला जाता है।

कुण्डलपुर

इस दर्शनीय स्थान पर जमीन के अंदर से एक विशाल नगरी और जैन मूर्तियां निकली हैं। एक विशाल भवन बौद्ध धर्म का भी निकला है। इसके संबंध में कहा जाता है कि यह बौद्ध धर्म का विद्यालय और छात्रालय है और यहां कई हजार विद्यार्थी अध्ययन करते थे। दिगम्बरी धर्मशाला में एक मन्दिर है जिसमें महावीर स्वामी की प्रतिमा बड़ी सुंदर है। यह महावीर स्वामी का जन्म स्थान है। बड़गांव स्टेशन वापिस आकर राजगृही की टिकटें लें।

राजगृही

स्टेशन के पास २ धर्मशालाएँ हैं। यहाँ श्वेतांम्बरी मंदिर में भी २ श्यामवर्णीय मनोहर प्रतिमा दिगंबर रूप में हैं। यहाँ से पंच पहाड़ों की वंदना शुरु होती है। विपुलाचल पर्वत पर महावीर भगवान् का समवशरण आया था। इस पर्वत पर चार मंदिर और २ चरण पादुका हैं। उदयगिरि पर दो मंदिर और २ चरण पादुका, रत्नगिरि पर एक मंदिर और एक चरण पादुका, सोनागिरि पर दो मंदिर प्रति बिंब और एक चरण पादुका और पाँचवें पहाड़ वैभार गिरि पर ५ मंदिर हैं। एक प्राचीन मंदिर वहाँ से दूर है।

यहाँ के राजा श्रेणिक ने भगवान् से बहुत से प्रश्न कर जीवों को धर्म-मार्ग का ज्ञान कराया था। यह क्षेत्र भगवान् मुनिसुव्रतनाथ

का जन्म स्थान है। पहाड़ की तलहटी में राजा श्रेणिक के भवन चिह्न पाये जाते हैं। एक मील दूर गणधर स्वामी के चरणों सहित एक मंदिर है। यहाँ निर्मल गर्म जल से भरे बहुत से कुंड हैं। यहाँ से १२ मील दूर पावापुरी बैलगाड़ी से जाना चाहिये।

पावापुरी

यहाँ से महावीर स्वामी का मोक्ष कल्याणक हुआ है। यहां तालाब के मध्य में एक श्री जिन मंदिर है, वहाँ पर ३ चरण पादुका हैं। ३-४ और भी दिगम्बर मंदिर हैं। महावीर स्वामी का ज्ञान कल्याण का स्थान यहीं पर ऋजु कला नदी के तट पर है। यहाँ से गुणावा तीर्थ १३ मील की दूरी पर है। बैलगाड़ी से जाना चाहिये।

गुणावा

यह पवित्र क्षेत्र जंगल में है यहां से श्री गौतम स्वामी ने निर्वाण प्राप्त किया था। यहां भी छोटे तालाब के बीच में एक सुंदर मंदिर है। यहां से १॥ मील दूर ई० आई० आर० का रेल्वे स्टेशन है। जहां से एक लाइन गया को और दूसरी लखी सराय, भागलपुर, कलकत्ता जाती है। यहाँ से नाथ नगर जावें।

नाथनगर

स्टेशन से आधी मील दूर २ मंदिर और दो धर्मशाला हैं। यहां एक छोटा सा पहाड़ है जिस पर कई पुराने मंदिर हैं। यहां से भागलपुर जाना चाहिये।

भागलपुर

स्टेशन से आधी मील दूर जैन धर्मशाला है। यहाँ का टसरी कपड़ा अच्छा होता है। यह व्यापारिक स्थान है। यहां के मंदिरों का दर्शन कर मंदारा हिल का टिकट लें।

मंदारगिरी

यह एक गाँव है। यहां धर्मशाला और १ चैत्यालय है। यहां से १ मील दूर मंदार गिरि पहाड़ है, यह पहाड़ श्री वासुपूज्य भगवान् का मोक्ष कल्याण का स्थान है। पहाड़ के ऊपर दो प्राचीन शिखर बंद मंदिर हैं। पहाड़ की चढ़ाई करीब ६ फर्लांग है। भागलपुर आकर गयाजी को जावें।

गया

जैन धर्मशाला स्टेशन से १॥ मील है। स्टेशन बहुत बड़ा है। यह हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ स्थान है। यहां पर २ जैन मंदिर हैं जैनियों के घर लगभग ३५–४० हैं। गया से बुद्ध गया तक पक्की सड़क है, यहां अशोक का बनाया हुआ एक विशाल बौद्ध मंदिर है।

कुलहा पहाड़

गया से ३८ मील दूरी पर है, इसे जैनी पहाड़ के नाम से पुकारते हैं। ३० मील पक्की सड़क है और बाकी कच्चा रास्ता। पहाड़ की तलहटी में एक पेड़ के नीचे पत्थर के टुकड़ों पर पार्श्वनाथ की पद्मासन प्रतिमा २ फीट ऊँची विराजमान है। अन्य मत वालों ने दही और सिन्दूर लगाकर विरूप कर रखा

है और द्वारपाल के नाम' से पुकारते हैं। और भी प्रतिमायें जहाँ कहीं यों ही पड़ी हैं। शीतलनाथ भगवान् का गर्भ और जन्म कल्याण इस पहाड़ से १ मील दूर भद्रलपुर गांव में हुए थे।

गया से पारसनाथ (ईसरी) स्टेशन जाना चाहिये। पारसनाथ स्टेशन के पास एक धर्मशाला है, यहां से सम्मेद शिखर का पहाड़ दिखाई देता है। यहां १४ मील पक्की सड़क है, गाड़ी या मोटर से शिखरजी के पहाड़ की तलहटी में जाना चाहिये। इस स्थान का नाम मधुवन है।

कुलहा पहाड़ जाने के लिये २० मील पक्की सड़क जिंदापुर डोंकी तक है। डोंकी ग्राम से बाइ तरफ कच्ची सड़क जाती है वहां से ३ मील अमारूत ग्राम है, वहां से ६ मील हंटरगंज थाना है। यात्रियों को यहां से सामान साथ लेना चाहिये। इसके बाद लीलांजन तथा फल्गु नदी उतर कार ६ मील हतवरिया गांव जाना चाहिये। यहां एक धर्मशाला है इससे १ मील दूरी पर पर्वत आता है।

मधुवन

यहां कई धर्मशालायें हैं। तेरापंथी और वीसपंथी की दो कोठियां हैं और कई जैन मन्दिर हैं, जिनकी रचना बड़ी ही सुन्दर है। यहां खाने पीने पूजन आदि का सामान मिलता है। कोठियां बहुत विशाल और रमणीक हैं।

यहां पहाड़ पर जाने के लिये डोली इत्यादि भी मिल जाती हैं, डोली आदि के लिये १ दिन पहिले ही मुनीम लोगों से कहने की आवश्यकता है।

पहाड पर वन्दना करने वाले भाइयों को प्रात काल ३ वजे उठकर स्नान करके तैयार हो जाना चाहिये ।

पहिली उपरैली कोठी से ही चढाई प्रारंभ होती है । इससे २ मील की चडाई पर गंधर्व नाला पडता है और फिर १ मील की चढाई पर दो मार्ग हैं, जिसमें पहिला दाईं तरफ का मार्ग श्री पार्श्व-नाथ टोंक के लिये है और दूसरा वाईं तरफ का मार्ग सीता नाले होकर गौतमस्वामी की टोंक पर पहुँचता है । सबसे पहिले गोतम स्वामी की टोंक से वंदना शुरु करने के लिये वाईं तरफ वाले रास्ते से जाना चाहिये । इस स्थान से १ मील चलकर सीता नाला आता है, यहाँ से सामग्री धोकर १ मील पक्की सीडियों से चढाई चढते हुये १ मील कच्ची सड़क से पर्वत के ऊपर पहुँच जाते हैं । इस प्रकार ६ मील की चडाई है ।

पहिले पहल गौतम स्वामी की टोंक है, इसके वाद वायें हाथ की तरफ वंदना करके जाना चाहिये । फिर दूसरी श्री कुंथनाथजी की है यहाँ कुछ विश्राम कर फिर पूर्व की तरफ ३री श्री नेमि-नाथजी की, ४ थी अरहनाथजी की, ५ वीं श्री मल्लिनाथजी की, ६ वीं श्री श्रेयांसनाथजी की, ७ वीं श्री पुष्पदंतजी की, ८ वीं श्री पद्मप्रभूजी की, ९ मीं श्री मुनिसुव्रतनाथजी, १० वीं श्री चंद्रप्रभूजी की टोंक वहुत ऊँची है और दूरी पर है । फिर वहाँ से ११ वीं श्री आदिनाथजी की, १२ वीं श्री शीतलनाथजी की, १३ वीं श्री अनतनाथजी की, १४ वीं श्री संभवनाथजी, १५ वीं श्री वासुपूज्य जी की, १६ वीं श्री अभिनंदनजी की है यहां से जल मंदिर होकर श्री गौतम स्वामी की टोंक पर आना चाहिये । फिर पश्चिम दिशा में जाना चाहिये ।

वहाँ से १७ वीं श्री धर्मनाथजी, १८ वीं श्री सुमतिनाथजी की, १९ वीं श्री शांतिनाथजी की, २० वीं श्री महावीरजी की, २१ वीं

श्री सुपार्श्वनाथजी की, २२ वीं श्री विमलनाथजी की, २३ वीं श्री अजितनाथजी की, २४ वीं श्री नमिनाथजी की टोंकों की वंदना करके २५ वीं श्री पार्श्वनाथजी भगवान की टोंक की वंदना करनी चाहिये। यह टोंक सबसे ऊँची और बड़ी है। यहां कुछ विश्राम कर थकावट दूर कर लेनी चाहिये।

इस पर्वत राज से बहुत से तीर्थंकर और अनंत मुनिराज निर्वाण पधारे हैं। श्री सम्मेद शिखर की चढ़ाई ६ मील टोंकों की वंदना ६ मील, उतार ६ मील कुल १८ मील की वंदना होती है। इसकी परिक्रमा २८ मील है। इस पर्वतराज का प्रभाव अचिंत्य है। थकावट जरा भी मालूम नहीं होती। फिर वापिस उतर कर मधुवन धर्मशाला में आना चाहिये और नीचे के मंदिरों के दर्शन करें।

यह तीर्थराज अनादि कालका है। इस परम पवित्र गिरिराज की भाव सहित पूजन वंदना करने वाला भव्य जीव ४९ भवमें अवश्य मोक्ष प्राप्त कर लेता है, उसे नरक और पशुगति नहीं प्राप्त होती।

यहां की यात्रा करके पारसनाथ वापिस आना चाहिये और हवड़ा का टिकट लेना चाहिये।

कलकत्ता

हवड़ा स्टेशन से करीब १ मील दूर श्री दि० जैन भवन (धर्मशाला) बहुत सुंदर बना हुआ है। शहर के मध्य में है। प्रबंध बहुत अच्छा है। यहाँ रसोई और कमरों की बड़ी सुविधा

है। कलकत्ते का प्रसिद्ध बाजार हरीसन रोड पास ही है। रामकिशनदास सरावगी की धर्मशाला हरीसन रोड में ही है।

यात्रियों को नं० १६११, हरीसन रोड, (बांगड़-बिल्डिंग) में जिनवाणी प्रचारक कार्यालय अवश्य देखना चाहिये। यहां से जैन साहित्य प्रकाशित होता है, बड़े २ जैन ग्रंथ, पुराण, सास्त्र सभी मिलते हैं। इसके संचालक बा० दुलीचन्दजी परवार हैं।

पहिला बड़ा मंदिर चावल पट्टी में है। दूसरा मंदिर पुरानी बाड़ी के नाम से प्रसिद्ध है। तीसरा लोअर चीतपुर रोड में नया मंदिर के नाम से संगमरमर का बना हुआ है। चौथा मंदिर बेलगछिया में खुली जगह पर हरीसन रोड से ३ मील है। पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा मनोज्ञ और मोहक है। यहां धर्मशाला भी है।

यहां हर साल कार्तिक सुदी १५ को बहुत बड़ा रथोत्सव होता है। यह शहर व्यापारिक दृष्टि से बड़ा अच्छा है। यहां से विदेशों में माल आता जाता है।

यहां टकसाल, चिड़ियाघर, अजायबघर, बुटेनीकल-गार्डन, फोर्टविलियम का किला, सेंटपाल गिरजा आदि देखने योग्य हैं।

खंडगिरि क्षेत्र का मार्ग

कलकत्ते से भुवनेश्वर का टिकट लेना चाहिये; वहां से ५ मील पश्चिम पुरी जिले में उदयगिरी और खंडगिरी दो पहाड़ियां हैं। भुवनेश्वर से गाड़ियों में जाना होता है। बीच में भुवनेश्वर

गाँव पड़ता है। हिन्दुओं का बड़ा भारी तीर्थ है। यहां से खंड-गिरी जाना चाहिये, इस मार्ग में घना जंगल है। इन पहाडियों के बीच १ तंग घाटी है, पत्थर काटकर गुफा में और मंदिर बनाये गये हैं।

खंडगिरि

यहां तीन धर्मशालायें हैं यह ग्राम छोटा है। पहाड़ की सीधी चढ़ाई पर सीढ़ियों के सामने १ खण्डगिरि गुफा है अन्दर और भी ४ गुफायें हैं। एक गुफा में १॥ हाथ की कायोत्सर्ग प्रतिमा विराजित है। गुफाओं से आगे एक जैन मंदिर है। दक्षिण दिशा की तरफ बड़ा जैन मंदिर है। कई गुफायें और छोटे २ मंदिर और भी हैं।

उदयगिरि

दूसरा पहाड़ उदयगिरि है। कई बड़ी २ गुफायें कोठरियां पहाड़ काटकर बनाई हैं। महाराजा खारवेल के समय का २५०० वर्ष पुराना एक शिला लेख है। चढ़ाई पर जय विजय गुफा और रानी का महल मिलते हैं। कई और भी गुफायें तथा कुण्ड हैं। एक द्वार पर जैन प्रतिमा का चिन्ह बना हुआ है।

पुरी

वापिस भुवनेश्वर लौटकर पुरी का टिकट लेना चाहिये। पुरी हिन्दुओं का प्रसिद्ध तीर्थ है। जगन्नाथ पुरी के नाम से मशहूर है। स्टेशन से १॥ मील दूरी पर है। जगन्नाथजी का मंदिर देखने योग्य है। मंदिर के दक्षिण द्वार पर श्री आदिनाथजी की प्रतिमा

मनोहर है। समुद्र तट की आवहवा अच्छी है। राजा लोगों के मकान और छतरियाँ सुंदर वनी हैं खुरदा रोड होकर मद्रास जावें।

मद्रास

दक्षिण भारत का सुन्दर और प्रसिद्ध व्यापारिक शहर है। वंदरगाह वहुत वड़ा है। स्टेशन के पास हिन्दुओं की धर्मशाला है। समुद्र के किनारे होने से जलवायु उत्तम है। एक चैत्यालय और एक मंदिर है।

इसके सिवाय हाईकोर्ट, अनाथालय, मच्छी भवन, मरीना, चिड़ियाघर, अजायवघर आदि दर्शनीय स्थान हैं। अजायवघर में पत्थर और धातु की वहुत सी मूर्तियाँ हैं, १५ मूर्तियाँ पद्मासन करीव ५ फीट ऊँची हैं। विक्टोरिया पब्लिक हाल में गोमट्ट-स्वामी की प्रतिमा दर्शनीय है। रामेश्वरम् और लंका को रास्ता यहीं से जाता है। पोन्नूर का टिकट लेना चाहिये। गाँव से ६ मील दूर तीरु मलाई पहाड़ पर जाते हैं। पहाड़ की मढ़ी भगलय तक रास्ता ठीक है आगे २ मील तक खराव है।

पहाड़ ३५० गज ऊँचा है। १०० गज की चढाई पर ४ मंदिर हैं आगे एक गुफा में वड़ी २ प्रतिमा हैं। आगे ३ मंदिर और हैं जैनियों की संख्या अधिक है। वापिस पोन्नूर लौटकर मद्रास होकर वैंगलोर जावें।

वैंगलोर

स्टेशन से १ मील दूर चीक पीठ में जैनियों का मंदिर है और धर्मशाला है। वैंगलोर की छावनी दक्षिण भारत में पड़ी है।

यहाँ मैसूर नरेश का माल, सरकारी आफिस, लाल बाग, अजायब घर आदि देखने योग्य हैं। यह स्वास्थ्य के लिये अच्छा स्थान है। बैंगलोर के गलीचे सुंदर होते हैं। यहां से आरसी केरी स्टेशन जाना चाहिये।

आरसी केरी

स्टेशन पर १ छोटी हिन्दू धर्मशाला है, एक जैन मदिर है जिसमें १ प्रतिमा धातु से बनी गोमट्ट स्वामी की प्रभाव युक्त है। एक सहस्त्रकूट चैत्यालय भी है। इसे जैन बस्ती के नाम से बोलते हैं. आरसी केरी से हासन का टिकट लेना चाहिये। हासन से १६ मील दूरी पर जैनबद्री मोटर द्वारा जाना चाहिये। यहाँ जैनबद्री को श्रवण बेल गोला कहते हैं। इधर इसी नाम से पूछा जाता है।

श्रवण बेल गोला (जैनबद्री)

यह एक जैनियों का पवित्र अतिशय क्षेत्र है। इसका नाम 'श्रवण बेल गोल' पड़ जाने के सम्बन्ध में कहा जाता है कि श्री नेमिचंद्र सिद्धांत चक्रवर्ति के समय में श्री रामचंद्रजी ने गोमट्ट-स्वामी की प्रतिमा को निर्मानित कराया था। उसकी प्रतिष्ठा राजा चामुण्डराय ने कराई और इसका पंचामृत से सर्वांग पूजन अभिषेक किया और उसे अभिमान भी हुआ कि कोई अन्य ऐसा नहीं कर सकता। उसने फिर उत्सव कराया लेकिन मूर्ति के शिरो भाग से जल से भरे सैंकड़ों कलश खाली किये जाने पर भी नाभि भाग से नीचे एक बूंद न गिर सकी। कारण तो ज्ञात नहीं, लेकिन कहा जाता

है कि राजा का मान भंग करने के लिये यह हुआ। राजा को आश्चर्य हुआ। उसी समय एक गरीब वुढ़िया पंचामृत द्रव्यों से भरा हुआ। 'वेलिया गोल' नामक लोटा लेकर आई। राजा से स्वीकृति लेकर उसने प्रतिमा का अभिषेक किया। वुढ़िया के एक ही लोटे से सिर से पैर तक प्रतिमा भीग गई। राजा को अपने अभिमान पर पश्चाताप हुआ। शुद्ध अन्तःकरण से प्रार्थना करके क्षमा मांगा और पूजन की और उसकी मनोवृत्ति पूर्ण हो गई। इसलिये इसका नाम श्रवण वेलगोल पड़ गया।

यहाँ पर एक वहुत बड़ा तालाव है। किसी जैनी राजा ने बनवाया था। इधर उधर दो पहाड़ हैं, बड़े का नाम विंध्यागिरि और छोटे का चन्द्रागिरि है। पहिले मुनि महाराज पहाड़ों से उतर कर अहार लेने आते थे। इसलिये जैन वद्री नाम पड़ा। भंडार वस्ती नाम का लाखों रुपयों का मन्दिर है। मंदिर प्राचीन है और दूसरा श्री भट्टारकजी का है।

बड़ी पहाड़ी पर चढने के लिये मार्ग में एक फाटक आता है, सीढियाँ बड़ी सुन्दर बनी हैं। चढाई में ३ दरवाजे मिलते हैं। चढ़ाई केवल ६ फर्लांग है। बीच में एक मंदिर आता है जिसमें १॥ गज ऊँची पार्श्वनाथ भगवान की पद्मासन प्रतिमा है। मंदिर से थोड़ी दूर श्री गोमट्ट स्वामी के मंदिर के कोट की ड्योढी मिलती है, ड्योढी के फाटक में घुसते ही दोनों तरफ दो मूर्तियाँ हैं। आगे एक छोटा मंदिर आने के बाद बड़ा मंदिर बाहुवलि स्वामी का मिलता है। इस मंदिर में प्रवेश करते ही श्रीजी की विशाल प्रतिमा के दर्शन होते हैं।

भगवान् बाहुवलि की मूर्ति ५२ फुट के लग भग ऊँची है। सारे संसार भर में इस विशालता की मूर्ति दूसरी नहीं मिलती। इसलिये भारतीय प्राचीन शिल्प कला का गौरव है। भगवान् के

दर्शन बहुत दूर से और गाँव से ही हो जाते हैं। यहाँ शिला लेख बहुत हैं। इस पर्वत पर ६ मंदिर और हैं।

चंद्रगिरि छोटा पहाड़ है चढने को सीढियाँ बनी है। विशाल पत्थर की शिलायें और गुफायें हैं। इस पर दाहिनी तरफ चढ़ाई पर भद्रबाहु स्वामी श्रुतकेवली की गुफा में उनकी चरण पादुका १ हाथ से ज्यादा बड़ी हैं। आगे चलकर बड़ा कोट मिलता है। इस कोट में ५ छत्रियाँ बड़ी २ और बारह मंदिर बने हैं।

भट्टारकजी के मठ में जैन साहित्य के अच्छे २ शास्त्रो का भंडार है जिनमें कई ताड़ पत्रों पर हैं और ये सब कन्नडी भाषा में लिखे हैं। सब मंदिरों के सामने मान स्तंभ हैं। बड़े २ मंदिरों में बेतादाद मूर्तियां हैं।

यहाँ से मूड़बद्री मोटर से जावें। रास्ते मे मैसूर, रंगपट्टम्, वैणूर, हड़वेड़ी आदि स्थान आते हैं।

मैसूर

स्टेशन से १ मील दूर जैन धर्मशाला है और इसके पास ही जैन मंदिर है। यहाँ कनाड़ी भाषा बोली जाती है। और भी तीन चैत्यालय है। मैसूर महाराज की एक ग्रंथमाला निकलती है। कई जैन ग्रंथ प्रकाशित हुये हैं। राजा का महल देखने योग्य है। मैसूर की खुशबूदार अगरबत्ती और चंदन के सामान व वस्तुयें सारे संसार में प्रसिद्ध है। जैनियों के घर अधिक है। रेजीडैन्सी, महाराजा कालेज, वेस्लियन मिशन और हिन्दू मंदिर देखने योग्य है।

श्री रंगपट्टम

हिन्दुओं का तीर्थ स्थान है। हिन्दू मंदिर लाखों की लागत के बने हैं और ड़ी २ सुंदर मूर्तियाँ हैं।

वेणूर

यहां १२ वर्ष में भगवान् का अभिषेक हुआ करता है। यहाँ नदी है, नदी के किनारे एक कोट है। कोट के भीतर चौरस मैदान है। मैदान में गोमट स्वामी की ६० फुट ऊँची प्रतिमा है। कोट के दरवाजे के पास भी दो मंदिर हैं, इनके पीछे एक बड़ा मदिर है जिसमें हजारों प्रतिमायें हैं। चार मदिर और भी हैं। यहाँ कुल ७ मदिर और १ गौमट स्वामी हैं।

हडवेड़ी

यहाँ के लिये सोधे रास्ते से अलग दूसरे रास्ते पर दस मील ाकर वापिस सीधे रास्ते पर लौटना पड़ता है। यहाँ एक मंदिर सबका सब कसौटी के पत्थर का बना हुआ है। रास्ते में और कई ग्राम पड़ते हैं जहाँ जैन मंदिर हैं। यात्रा में पहाड़ी दृश्य और झरने दिखलाई पड़ते हैं। इसके बाद मूड़ बद्री पहुँचते हैं।

श्री मूडबद्री अतिशय क्षेत्र

जैन धर्मशाला सुंदर बनी है। यहाँ पर करोड़ों रुपयों के मंदिर और प्रतिमायें हैं। सब मिलाकर २० मंदिर हैं। इनमें ३१ जगह दर्शन हैं। ७ मंदिरों के सामने वड़े २ मान स्तंभ हैं। यहां का प्रबध १ भट्टारकजी के हाथ में है। सब मंदिर विशाल हैं।

पहिला चंद्रप्रभु का मंदिर ८-९ करोड़ को लागत का बताया जाता है। यह चार मंजिला बना है। पहिली मंजिल में ५ गज ऊँची श्री चन्द्रप्रभु स्वामी की खड्गासन प्रतिमा विराजमान है। यह स्वर्ण की बताई जाती है, इस मंजिल में और भी बहुत सी प्रतिमायें हैं। दूसरी मंजिल में सहस्रकूट चैत्यालय है जिसमें १००८ प्रतिमायें सांचे में ढली हुई विराजमान हैं। तीसरी मंजिल में भी ४ दर्शन हैं, चौथे में हजारों प्रतिमायें पाषाण और स्फटिक की हैं।

दूसरा मंदिर श्री पार्श्वनाथ भगवान का है। इसके चार बड़े परकोटे हैं। इसमें पार्श्वनाथ भगवान की ८ गज ऊँची प्रतिमा है। सभी मंदिरों में अंधेरा रहता है।

यहाँ एक चौबीसी का मंदिर है इस मंदिर में ३५ प्रतिमायें रत्न, सुवर्ण, चांदी, नीलम, पन्ना, हीरा आदि की विराजमान हैं।

यहाँ पर जयधवल और महाधवल आदि सिद्धान्त सूत्र ताड़-पत्र पर लिखे हुये विराजमान हैं।

कारकल अतिशय क्षेत्र

यह प्राचीन तीर्थ मूडबद्री से १० मील दूर है। यहां १३ प्राचीन मंदिर है। मंदिरों में ऊपर और नीचे हजारों प्रतिमायें हैं। यहां पूर्व की दिशा में १ पर्वत है इसकी चढाई केवल एक फर्लांग है। बाहुबली स्वामी की ३० गज ऊँची प्रतिमा कायोत्सर्ग है। इसके सामने पर्वत पर तीन प्रतिमायें खड़ी हैं। मानस्तंभ २० गज ऊँचा मंदिर के सामने है। इस पहाड़ के सामने छोटे पहाड़ पर एक और मंदिर है।

इसके ऊपर एक मंदिर बहुत सुन्दर और बड़ी लागत से बना है। इसके चारों ओर १२ प्रतिमायें ७-७ गज की खड्गासन है। पश्चिम दिशा की ओर ११ मंदिर बहुत बड़े २ हैं। यहाँ से ३४ मील दूर बारंग ग्राम है मोटर से जावें।

बारंग ग्राम

एक छोटा सा गाँव है। एक मंदिर और १ मानस्तंभ है प्रतिमायें सुन्दर हैं। इसीके पास १ तालाब है, तालाब के बीच में एक मंदिर है। मंदिर में १२ प्रतिमा चतुर्मुखी अतिशय युक्त विराजमान हैं। यह स्थान जंगल में है। सुपारी और नारियल के पेड़ बहुत हैं।

कुछ दूर चलकर आगम्बा घाटी आती है, मोटर नहीं जा सकती। बैलगाड़ी से घाटी पार करते हैं। इस घाटी की चढ़ाई उतराई ५ मील है। नीचे उतर कर मोटर मिलती और सिमोगा स्टेशन पहुँचाती है, सिमोगा से हुबली का टिकट लें। सिमोगा से बिरूर गाड़ी बदलेगी फिर सीधे हुबली पहुँचेंगे। स्टेशन से १॥ मील दूर मारवाड़ी बाजार में जैन धर्मशाला है।

हुबली

धर्मशाला में तीन मंदिर हैं इन मंदिरों में १ चांदी की और चौबीसों महाराज की प्रतिमा सुन्दर हैं। पास ही एक नया मंदिर है। कपड़े की मील देखने योग्य है। यहां से बेलगॉव का टिकट लेना चाहिये।

बेलगाँव

स्टेशन से १ मील दूर शहर है। यहाँ से मिरज, कोल्हापुर को लाईन जाती है। दि० जैनियों के करीब २०० घर है। यहाँ पर ३-४ मंदिर हैं। शहर के पास ही एक बहुत बड़ा किला है। बेलगाँव से सीधा टिकट कोल्हापुर का लें। मिरज गाड़ी बदलती हैं। पूना भी उतर सकते हैं।

कोल्हापुर

स्टेशन के पास जैन धर्मशाला और मंदिर हैं। स्व० सेठ माणिकचंद्रजी द्वारा बनवाया हुआ एक बोर्डिंग हाउस है। शहर के अंदर ७ मंदिर हैं। एक मानस्तंभ है बाजार भी अच्छा है।

मिरज

मिरज और सांगली दोनों पास २ हैं। इन दोनों गाँव में दो दो मंदिर हैं, जैनियों के घर मिरज में करीबन १०० और सांगली में २० हैं। यहां से पूना का टिकट लें।

पूना

स्टेशन से २ मील शुक्रवारी बाजार में जैन धर्मशाला है। हितवारी बाजार में ४ मंदिर हैं। यहां तुलसीबाग, कौंसिल हाल, यर्वदा जेल, म्यूजियम आदि देखने योग्य हैं। यहां से बम्बई जाना चाहिये। मोटर से किराया कम लगता है।

बम्बई

हीराबाग धर्मशाला जाना चाहिये या पास ही सुखानंद धर्मशाला है। हीराबाग से तारदेव के रास्ते पर जैन बोर्डिंग व स्कूल

है। इस धर्मशाला में दि० जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी का दफ्तर है। इसीमें ऐलक पन्नालालजी जैन औषधालय भी है। इसी धर्मशाला में व्याख्यान भवन, वाचनालय आदि हैं। यहां सिर्फ दो मंदिर और ४ चैत्यालय हैं। एक मंदिर तेरापंथी का भूलेश्वर में है। दूसरा बीस पंथ के नाम से गुलाल वाड़ी में है।

यह बहुत बड़ा व्यापारिक शहर है। यहां से बहुत सा सामान देश देशांतरों को आता जाता है। यहां का बंदरगाह बहुत बड़ा है। किश्तियों में बैठने का आनंद ताजमहल होटल के पास वाली खाड़ी में आता है।

यहां सूती और रेशमी कपड़े के मिल, अजायबघर, टक्साल, प्रोंगका लाइट हाउस, कुलावे का गिर्जा, चौपाटी, सार्वजनिक पुस्तकालय हाईकोर्ट, रेक्रेटरियट, कौंसिल हाल आदि दर्शनीय हैं। बम्बई के पास ही 'ऐलिफेन्टा' की गुफा देखने योग्य है। अपोलो बंदर से १ मीलका रास्ता है, यहां पहाड़ काटकर मंदिर और मूर्तियां बनाई गई हैं। मारवाड़ी बाजार और कालबादेवी रोड देखने योग्य हैं यहां से नासिक का टिकट लें।

नासिक में हिन्दू धर्मशालायें बहुत हैं हिन्दुओं का तीर्थ है, पीतल के बर्तन मशहूर है। गोदावरी नदी का घाट महा मनोहर है।

यहां से तांगे में ३ मील मुशारूल ग्राम चले जावें। जैन धर्मशाला है यहां से श्री गजपंथा तीर्थ लगभग १ मील है।

श्री गजपंथा सिद्ध क्षेत्र

पहाड़ की चढाई आधा मील है। सीढियां लगी हैं। पर्वत पर २ मंदिर, २ कुंड और २ गुफायें हैं। मंदिरों के शिखर और

प्रतिमायें पर्वत के पत्थर काटकर बनायी हैं। दो स्थानों में चरण पादुका हैं। यहां चढ़ाव और कोट पर सफेदी की हुई है। यहां बलभद्र आदि ८ करोड़ मुनि मोक्ष गये हैं। यहां से नासिक जाकर मनमाड़ जंकशन का टिकट लें।

श्री मांगी तुंगी (सिद्धक्षेत्र)

मनमाड़ जंकशन से ६० मील दूर मांगीतुंगी मोटर से जाना चाहिये। कई धर्मशालायें हैं। विशाल जंगल में पहाड़ के नीचे एक धर्मशाला है उसी में एक मंदिर है। मांगी और तुंगी नाम के दो पहाड़ हैं पहाड़ों की चढाई कठिन है। मांगी पहाड़ की चढाई ३ मील है, इस पर चार गुफायें हैं। पहाड़ में पहाड के पत्थर से बहुत सी प्रतिमायें बनाई हैं। मूल नायक श्री भद्रबाहु की प्रतिमा है। यहां से २ मील दूर तुंगी पहाड़ है, इस पहाड़ पर मूर्तियां कम हैं। यहां भी ३ गुफाएं हैं। इन दोनों पहाड़ों से राम, हनुमान, सुग्रीव आदि ६६ मुनीश्वर मोक्ष पधारे हैं। एक कुंड है, लोग सामग्री धोते हैं। मनमाड़ वापिस लौटना चाहिये।

भुसावल

स्टेशन के पास ही जैन धर्मशाला है, यहां केवल एक ही जैन मंदिर है यहां से सूरत जाना चाहिये।

सूरत

स्टेशन से शहर को मोटर जाती है। यहां भी एक मंदिर है। यहां पास ही चंदावाड़ी में जैन धर्मशाला है। यहां से जैनमित्र,

-दिगम्बर जैन, जैन महिलादर्श पत्र-प्रकाशित होते हैं। यहां कुल ७ मंदिर हैं। रूई व अनाज का व्यापार होता है। यहां जरी का काम बहुत अच्छा होता है। देश-विदेशों में माल जाता है। यहां से बड़ौदा आना चाहिये।

बड़ौदा

स्टेशन से २ मील दूर शहर है, यहां चौक में नई बाजार नई पोल के पास जैन धर्मशाला है। यहां केवल १ मंदिर है। यहां राजा का महल, बाग, कचहरी आदि देखने योग्य हैं। लक्ष्मी विलास महल को महाराज ने २७ लाख की लागत से तैयार कराया है। यहां से गोधरा, आनंद पोलाद; आना चाहिये और सीधा टिकट अहमदाबाद का लेना चाहिये।

अहमदाबाद

यहां एक दि० जैन धर्मशाला और २ प्राचीन जैन मंदिर हैं। मंदिर माणिक चौक में माडवी पोल के पास हैं। यहां कॉच, लोहा, कपड़ा आदि के बहुत से कारखाने हैं। इसके सिवाय जुम्मा मसजिद, सारसीज में बना हुआ तालाब, स्वामी नारायण का मंदिर, तीन दरवाजा काकरिया झील आदि देखने योग्य हैं। हर तरह का व्यापार होता है। यहां कपड़ा बुनने की मिलें बहुत हैं। यहां से भावनगर जावें।

भावनगर

स्टेशन के पास एक धर्मशाला है। यहां गोगडी दर्वाजा हूमड़ों के मुहल्ले में २ जैन मंदिर हैं। शहर अच्छा है। यहां राजमहल,

बाग हौज मिल आदि दर्शनीय हैं। पीतल ताँबे के वर्तन, तेल, कपड़े का व्यापार अधिक होता है। यहां से पाली ताने का टिकट लेना चाहिये, बीच में सिहोर गाड़ी बदलती है, वहां से १ ब्रांच लाइन पालीताने तक जाती है।

पालीताना

स्टेशन से १ मील दूर नदी के पास एक जैन धर्मशाला है, नदी के दूसरी पार एक जैन मंदिर है। यहां से शत्रुंजय पहाड़ की बंदना के लिये जावें। पालीताने से शत्रुंजय पहाड़ तक तांगे, बैलगाड़ी जाती हैं १॥ मील दूर है। एक पानी का कुंड बहुत सुंदर है।

शत्रुंजय पहाड़

पर्वत की चढ़ाई लगभग २ मील है। पर्वत पर दो दि० जैन मंदिर हैं। चढ़ाई के रास्ते में कई कुंड और तालाब है। पर्वत की चढ़ाई में मार्ग में आदिनाथजी के मंदिर के पीछे बहुत सी छोटी कोटरी और आलों में बहुत सी चरण पादुका हैं। श्वेतांबर आम्नाय के बहुत से मंदिर हैं। पालीताना स्टेशन से जूनागढ़ को जावे।

जूनागढ

स्टेशन से एक मील दूर जैन धर्मशाला है। यहाँ का महल, कचहरी, तालाब आदि देखने योग्य हैं। यहां से गिरनार पहाड़ को जाना चाहिये। यह पहाड़ यहाँ से ३ मील दूर है। पर्वतराज की तलहटी में विशाल दि० जैन धर्मशाला है।

गिरनार (ऊर्जयंति)

प्रातः काल स्नान वगैरह से निवृत्त होकर पर्वतराज की वंदना को जाना चाहिये। इस पर्वत पर लगभग ७०२० सीढियाँ हैं, करीव २ मील की चढाई के बाद सोरठ का महल आता है। यहाँ से आगे कोट में दो दिगम्बर जैन मंदिर हैं। प्रतिमायें सुन्दर हैं। यह पहली टोंक है। इसी के पास एक राजुलजी की गुफा है, यहां पर ही राजुलजी ने तप किया था यहा एक चरण पादुका भी है। इसके आगे १ मील चलकर दूसरी तीसरी टोंक है, यहां पर चरण पादुका हैं। इन टोंकों पर नेमिनाथ भगवान ने तप किय था

इस पहाड़ को दिगम्बर, श्वेतांम्बर, हिन्दू, मुसलमान सभी मानते हैं। यहाँ से एक मील की चढाई पर चौथी पांचवी टोंकें हैं। यहां का रास्ता खराब है। चौथी टोंक केवल भगवान् का स्थान है। यहां पर एक गुमटी और चरण पादुका है। पांचवों टोंक पर जाने की सीढियाँ पुरानी हैं, यह सबसे ऊँची है यहाँ से नेमिनाथ भगवान मोक्ष पधारे हैं उनकी चरण पादुकायें हैं। छठी टोंक कालका की है, इस पर कोई नहीं जा सकता। सेसावन में भगवान का दीक्षा स्थान है। इस पर्वत से ७२ करोड़ मुनिराज मोक्ष पधारे हैं। यहाँ की वंदना भाव सहित करनी चाहिये। यहाँ से राज कोट जावें।

राजकोट

शहर बड़ा सुंदर है, यहां के बाजार देखने योग्य हैं। दो जैन मंदिर हैं। यहाँ से तारंगा हिल जावें, बीच में महसाना गाड़ी बदलनी पड़ती है।

तारंगा सिद्ध क्षेत्र

तारंगा हिल स्टेशन से तारंगा ३ मील है। एक मील दूरी पर पहाड़ की तलहटी में जैन धर्मशाला है। धर्मशाला में १३ प्राचीन मंदिर हैं। पहाड़ के चारों तरफ कोट है। यहां से ३॥ करोड़ मुनि मोक्ष पधारे हैं। कार्तिक और चैत्र में मेला होता है। यहां २ पहाड़ हैं, एक कोटशिला और दूसरा सिद्धशिला के नाम से हैं। तारंगा हिल से आबू रोड़ आना चाहिये।

आबूरोड (दिलवाड़ा)

आबूरोड स्टेशन पर एक धर्मशाला और १ मंदिर है। यहां से माउंट आबू १६ मील दूर है। माउन्ट आबू से दिलवाड़ा १॥ मील है। यहां जैन धर्मशाला है। एक बड़ा भारी जैन मंदिर है। यहां ५ श्वेताम्बरी मंदिर प्राचीन हैं। इनके बीच एक दिगम्बर मंदिर भी है। समूह से बाहर सड़क के किनारे एक दि० जैन मंदिर और भी है, इसमें आदिनाथजी की प्रतिमा सुंदर है। यहां से ४ मील दूर अचलगढ़ देखने योग्य है। नीचे एक तालाब है, गढ़ पर एक मूर्ति है, इसमें १४४४ मन सोने की १४ प्रतिमायें और हैं यहां और भी १४ देहरी हैं। इन्हीं मंदिरों में दि० प्रतिमा भी हैं। आबू रोड से नयानगर (ब्यावर) जांवे।

नया नगर

स्टेशन से एक मील दूर नसियां है। यहां कपड़े की तीन मिलें हैं। बनयान बनाने का भी बड़ा कारखाना है। शहर के

चारों तरफ परकोटा और चार दरवाजे हैं। तीन मंदिर शिखरबंद हैं जैनियों के घर अधिक हैं। यहाँ से अजमेर जावें।

अजमेर

स्टेशन से २ फर्लांग दूर जैन धर्मशाला है। यहां मंदिर और २ चैत्यालय हैं, एक नसियां है। नसियां ३ मंजिल ऊँची बनी है। पहिली मंजिल में अयोध्या के समवशरण की सबनकल धातु की बनी हुई रंग बिरंगी है। दूसरी मंजिल में स्फटिक और माणिक से बनी प्रतिमायें हैं। इस जगह तीर्थ क्षेत्रों का नक्शा दीवाल में लिखा हुआ है। तीसरी मंजिल में काठ के हाथी घोड़े आदि रखे हैं। यहां ख्वाजा साहब की दरगाह, गढ़ बिटली; आना सागर आदि दर्शनीय हैं। यहां से ७ मील दूर पुष्कर हिन्दुओं का तीर्थ है। यहां (पुष्कर में) बहुत बड़ा तालाब है, राजाओं के सुंदर मकान बने हैं। अजमेर से नसीराबाद और चित्तौड़गढ़ होकर उदयपुर जावें।

उदयपुर

स्टेशन से १॥ मील दूर सूरजपोल के बाहर राज्य की धर्मशाला है। यहां से बाजार भी पास है। यहां ८ जैन मंदिर और २ चैत्यालय हैं। प्राकृतिक सौन्दर्य, रमणीय प्रासाद और शुद्ध वायु के लिए प्रसिद्ध है। जैनियों का पार्श्वनाथ विद्यालय है। यहाँ का राजमहल, जगनिवास, अजायबघर, एकलिंगजी हल्दी घाटी आदि दर्शनीय हैं।

यहाँ से ४० मील दूर श्री केशरियानाथ जाना पड़ता है, यहां

बैलगाड़ी या तांगे या मोटर से पक्की सड़क से जाते हैं। इस गॉव का धुलेव नाम है, इसे केशरियानाथ क्षेत्र कहते हैं।

केशरियानाथ

यहां चारों तरफ कंगूरेदार कोट बना हुआ है। इसके पास एक नदी, एक तालाब, चार बावड़ी और कई कुंड, चार धर्मशाला और एक विशाल मंदिर है। मंदिर में मूलनायक प्रतिमा श्री आदिनाथजी की है। इस मंदिर में ५२ देहरियां हैं। यहां विशेषतः केसर चढ़ती है। दूध का प्रक्षाल होता है, गुलाल भी चढ़ता है, तीनों काल यहाँ पूजा होती है। मंदिर के सामने फाटक पर हाथी के ऊपर नाभि राजा और मरूदेवी की मूर्ति शोभित है और दोनों ओर चरण बने हैं। मंदिर के अंदर आठ खंभों का दालान है, यहां ७ फुट ऊँची श्यामवर्ण श्री आदिनाथजी की दिगम्बरी प्रतिमा है।

इस मंदिर से एक मील दूर चरण पादुका है इसे पगलियाजी के नाम से कहते हैं। यहां एक चौक, बाग, बावड़ी, और दालान हैं और छत्री में भगवान के चरण हैं। केशरियानाथ के मंदिर की प्रतिमा इसी स्थान से निकली थी। एक धूलिया नामक भील को स्वप्न में प्रतिमा के सम्बन्ध में ज्ञात हुआ, उसने खुदाई कराई, प्रतिमा के साथ बहुतासा धन मिला। इस गाँव का नाम धुलेवा रखा और विशाल मंदिर उसी भील ने बनवाया। यहां से चित्तौरगढ का टिकट लें। रास्ते में करेड़ा (पार्श्वनाथ) भी उतर सकते है। एक विशाल मंदिर दिगम्बरियों का था अब श्वेतांबरियों का हो गया है।

चित्तौरगढ

यहां का किला दुनियां में प्रसिद्ध है। यहां केवल एक चैत्यालय है। राज कचहरी पहाड़ की तलहटी में है, यहां से पास लेकर किले में जाते है। यहां कीर्त्तन स्तंभ, जलस्तंभ, सूर्य फाटक आदि प्राचीन होने से टूटी फूटी अवस्था में हैं। यहां से मन्दसौर का टिकट लें।

मन्दसौर

स्टेशन से शहर १॥ मील है, यहां कोट के पास ही हिन्दू धर्मशाला है। यहां ५ मंदिर शिखर बंद और दो चैत्यालय हैं। यहां से प्रतापगड जाना चाहिये।

प्रतापगढ

यहां दि० जैनियों की संख्या अधिक है। यहां बड़े २ जैन मदिर और ७ चैत्यालय हैं। शहर के बाहर एक मील की दूरी पर शांतिनाथ भगवान् के मंदिर में ६ फुट ऊँची पद्मासन प्रतिमा अतिशय युक्त है। राजमहल, कचहरी, बाजार इत्यादि देखने योग्य हैं। यहां से मन्दसौर लौटकर इंदौर जाना चाहिये। मार्ग में जावरा में ४ मंदिर हैं। रतलाम में ७ मंदिर और १ नसियां है। राजा का महल, चौपड़ बाजार देखने योग्य हैं। बड़ नगर में ३ जैन मंदिर हैं यहां प्रांतिक जैन औषधालय, अनाथालय आदि संस्थायें अच्छा काम कर रही हैं।

इन्दौर

स्टेशन से १ फर्लांग दूर जवेरी बाग में राव राजा स्वरूपचंदजी हुकमचंदजी की नसियां है और धर्मशाला है। यहां से

आधा मील दूर छावनी में दो मंदिर हैं। १ मंदिर तुकोगंज में, १ दीतवारा बाजार में और १ मंदिर मल्हारगंज में है। यहां कुल ६ मंदिर हैं। यहां होल्कर कालेज, डाकखाना, महाराजा थियेटर हाल, विश्रामघर आदि देखने योग्य हैं। सर सेठ हुकमचंदजी का शीशमहल और उसी में जैन मंदिर सुंदर हैं। तुकोगंज में इन्द्रभवन स्थान भी देखने योग्य है। सेठ साहब की कई पारमार्थिक संस्थायें हैं। यहां से थोड़ी ही दूर रेवा नदी है, उसे मोटर द्वारा पार कर सिद्धवर कूट क्षेत्र जाना चाहिये।

सिद्धवर कूट

यहां चारों ओर कोट है, अंदर ८ जैन मंदिर और ४ धर्मशाला हैं। यहां से साढे तीन करोड़ मुनिराज, दो चक्रवर्ती और १ कामदेव मोक्ष पधारे हैं। यहां जंगल में भी एक मंदिर है। यहां से मोटर द्वारा सनावद स्टेशन जावें, स्टेशन से मोटर द्वारा खरगोन जाना चाहिये। वहां से २ मील ऊन (पावागिरि क्षेत्र) जाना चाहिये। यह प्राचीन क्षेत्र पावागिरि के नाम से अभी प्रसिद्ध हुआ है। यहां बहुत से मंदिर और मूर्तियां जमीन से निकली हैं। यहां से सनावद लौटकर मऊ छावनी का टिकट लें।

मऊ छावनी

स्टेशन के पास हिन्दू धर्मशाला है। शहर मे ३ मंदिर और १ चैत्यालय हैं। यहां की छावनी (फौज पलटन के रहने का स्थान) बहुत बडी है। कपड़े का व्यापार अधिक होता है।

बड़वानी

यहां मोटर से आना होता है। यह एक बड़ा सुन्दर व्यापारिक शहर है। यहां एक बड़ा दि० जैन मंदिर है वोर्डिंग है और २ धर्मशालायें हैं। राजमहल, कचहरी आदि दर्शनीय हैं।

यहां से ५ मील दूर श्री बावनगजाजो तीर्थ है इसे चूलगिरि भी कहते हैं। पहाड़ को तलहटो में दो मंदिर और २ धर्मशालायें है। यहां पर एक बावनगजाजी की खड्गासन प्रतिमा मनोहर है। यह प्रतिमा कुंभकर्ण की है और इसी के पास एक ६ गज की प्रतिमा इन्द्रजीत की है। इस जगह से १ मील चढ़ाई है पहाड़पर कुल २० मंदिर है। बड़वानी में पौष में मेला होता है। यहां से बड़वानी, बड़वानी से मऊ और मऊ से उज्जैन जावे।

उज्जैन

स्टेशन से २ मील दूर नमकमंडी में जैन धर्मशाला है। एक मंदिर धर्मशाला के पास है, दूसरा मंदिर नयापुरा में है। यहां कपड़े की ३ मिलें हैं। इस स्थान को हिन्दू लोग पवित्र तीर्थ मानते हैं। यहां आकाशलोचन, भैरवमठ, गोपाल मंदिर आदि दर्शनीय हैं। यहां से मकसी स्टेशन भोपाल ब्रांच लाइन का टिकट लेना चाहिये।

मकसी पारसनाथ

स्टेशन के पास ही जैन धर्मशाला है। यहां से १ मील कल्याणपुरा नाम का कस्बा है, यहां भी एक धर्मशाला है इस धर्मशाला में २ मंदिर दिगंबरी हैं। यहां १ प्राचीन दि० जैन मंदिर

श्री पार्श्वनाथजी का था। पहिले यह दिगंबरी था अब दिगंबर श्वेतांबर दोनों के अधिकार में है। सुबह ६ बजे तक दि० पूजन करते हैं बाद में श्वेतांबर। दर्शन सबही हर समय कर सकते हैं। भगवान पार्श्वनाथकी प्राचीन चतुर्थ काल की प्रतिमा मनोहर है। यहां से भोपाल जाना चाहिये।

भोपाल

चौक बाजार के पास जैन धर्मशाला है। यहां १ मंदिर और १ चैत्यालय है। यहां टकसालघर, तोपखाना, मोती मसजिद, नवाब का महल आदि दर्शनीय हैं। यहां से इटारसी होकर नागपुर का टिकट लें।

नागपुर

स्टेशन से १ मील दूर जैन धर्मशाला है। यहां कुल १२ मंदिर हैं। इसके सिवा कपडे की मिलें, किला, अजायबघर चिडियाघर, यूनिवर्सिटी आदि दर्शनीय हैं। जी. आई. पी. से भुसावल की तरफ मुर्तिजापुर होकर कारंजा जावें।

कारंजा

एक मील दूर जैन धर्मशाला है। यहां ३ भट्टारकों के बनवाये हुए ३ मंदिर हैं तीनों में धर्मशालायें हैं। एक मंदिर में एक चैत्यालय है, इसी मंदिर में १८ प्रतिमा स्फटिक रत्न, सुवर्ण और पुखराज की हैं। रूई का व्यापार अधिक होता है, ब्रह्मचर्याश्रम भी है। यहां से मुर्तिजापुर जाकर एलिचपुर जाना चाहिये।

एलिचपुर

एक जैन-धर्मशाला है, सुलतानपुरा मुहल्ले में एक बड़ा कीमती मंदिर है। यहां से परतवाडा जाना चाहिये।

परतवाडा

यहाँ एक जैन मंदिर है, बाजार अच्छा है। यहां से ८ मील दूर मुक्तागिरि क्षेत्र बैलगाड़ी से जाना चाहिये।

मुक्तागिरि

तलहटी में एक धर्मशाला और एक मंदिर है। वहाँ से २ फर्लांग चढाई है, चढने को सीढियां हैं। अनेक प्रकार के मोतियों की वर्षा हुई थी इसलिये मुक्तागिरि नाम पड़ा। यहां कुल २६ मंदिर हैं। पहाड़ पर एक गुफा में एक मंदिर में २ प्रतिमाएं शांतिनाथजी की हैं। यहां से मुर्तिजापुर जाकर नागपुर आवें और नागपुर से रामटेक जाना चाहिये।

रामटेक

स्टेशन से १॥ मील दूर एक धर्मशाला है। दस बड़े २ मंदिर हैं। दो मदिर बहुत ही कीमती हैं। एक मंदिर में १ प्रतिमा १४ गज की और एक प्रतिमा ४ गज की खड्गासन विराजित है। यहां से लौटकर इतवारी स्टेशन से छिंदवाड़ा का टिकट लें।

छिंदवाडा

शहर से १ मील दूर धर्मशाला है यहां ८ मंदिर हैं। शहर साधारण है यहां से सिवनी जाना चाहिए।

सिवनी

एक मील दूर शहर में धर्मशाला है जैनियों की बहुत सी संस्थायें हैं। यहां २१ मंदिर हैं। यहां सिवनी बंध नामक एक

तालाब है। चांदी का रथ दर्शनीय है। एक श्राविकाश्रम है। परवार जाति के धनीमानी इसी नगर में रहते हैं।

जबलपुर

स्टेशन से एक मील दूर लार्डगंज की धर्मशाला में ठहरे। हनुमान ताल पर २५ मंदिर और शहर में ३१ मंदिर हैं। जैन परवारों के ३०० के लगभग घर हैं। मंगली बजारिया के पास जैन मंदिर में एक लाइब्रेरी है, एक बोर्डिंग भी है। धुंवाधार नामक एक पहाडी झरना भी है। यहां से कुछ दूर नर्मदा बहती है। झरना और नदी के पास संगमरमर की चट्टानों के दृश्य सुन्दर हैं, यहां एक जैन मंदिर भी है। राजा गोकुलदास का महल, कंपनी बाग, हाई स्कूल आदि देखने योग्य हैं। यहां से करेली स्टेशन, वहां से मोटर द्वारा बड़ो देवरी और वहां से ३ मील दूर श्रीबीनाजी अतिशय क्षेत्र है।

श्रीबीनाजी

एक धर्मशाला है और ३ प्राचीन मंदिर हैं। एक शिखर बंद मदिर में शाँतिनाथजी की प्रतिमा १८ फुट और दो प्रतिमा ऊपर नीचे पद्मासन हैं। दिसंबर की छुट्टियों में मेला होता है यहां से देवरी आना चाहिये।

देवरी

यहाँ धर्मशाला है। दो शिखरबंद मंदिर और चार चैत्यालय है, यहां का किला देखें और मोटर से सागर जावें।

सागर

स्टेशन से एक मील दूर जैन धर्मशाला है। यहां १३ मंदिर हैं। वर्णीजी द्वारा संस्थापित विद्यालय और कई संस्थायें हैं। यहां एक तालाब ५–६ मील लंबा है इसीसे यहां का सागर नाम पड़ा। यहां एक सरस्वती भवन है जिसमें सब तरह के ग्रंथों का संग्रह है। यहां से मोटर द्वारा द्रोणागिरि, नैनागिरि, खजराहा को जाना चाहिये।

द्रोणागिरि

इस ग्राम का नाम सेंदप्पा है और पहाड़ का द्रोणागिरि। गॉव के आसपास २ नदियां बहती हैं। यहां एक मंदिर और एक धर्मशाला है, थोड़ी दूर एक फर्लांग की चढ़ाई के पहाड़ पर २४ मंदिर हैं। पास ही एक गुफा भी है।

नैनागिरि

यह पहाड़ नैनागिरि गांव से २ फर्लांग है। पहाड़ पर १५ मंदिर शिखर पर और ६ मंदिर नीचे हैं। यहां भगवान पार्श्वनाथ का समवशरण आया था।

खजराहा

यहॉ प्राचीन २१ जैन मंदिर हैं। शांतिनाथ के मंदिर में ५ गज ऊँची प्रतिमा है। थोड़ी दूर पर १६ मंदिर हिन्दुओं के भी हैं। यहां से सागर जाकर और वहां से बीना- जंकशन जाकर जाखलौन जाना चाहिये।

श्री देवगढ अतिशय क्षेत्र

जाखलौन स्टेशन से ८ मील दूर देवगढ गाँव है वहाँ से १ मील दूर पहाड़ है। गाँव के पास नदी और धर्मशाला भी हैं। पहाड़ के पास वाली बावड़ी में द्रव्य धोकर चढ़ाई शुरू करना चाहिये। पहाड़ पर कोट के भीतर प्राचीन ४५ मंदिर हैं। एक मंदिर में एक गुफा है जिसमें १५ गज ऊँची भगवान् चंद्रप्रभु की प्रतिमा है, सबसे बड़ा है। दो तालाब भी हैं। यहां से जाखलौन जाकर ललितपुर का टिकिट लें।

ललितपुर

स्टेशन से आधी मील दूर जैन धर्मशाला है। यहां एक कोट के भीतर ५ मंदिर हैं। मंदिरों का स्थान पृथ्वी से ८ गज ऊंचा है, प्रतिमायें प्राचीन हैं।

चंदेरी

ललितपुर स्टेशन से २० मील दूर मोटर से जाते हैं। यहां ३ मंदिर हैं। एक मंदिर में वर्तमान चौबीसी के अलग २ शिखर-बंद मंदिर हैं। एक धर्मशाला है। एक मील दूर पहाड़ पर गुफा में कायोत्सर्ग प्रतिमा हैं। हाटकपुरा गांव में १ जैन मंदिर हैं। चंदेरी से १२ मील थोवनजी में १६ जैन मंदिर हैं। १०-१० गज ऊँची कई प्रतिमायें हैं। यहां से वापिस ललितपुर और वहां से ३४ मील दूर टीकमगढ जावें।

पपौरा

टीकमगढ में ठहरने के लिये धर्मशाला है और ७ मंदिर हैं। यहां से ३ मील दूर पपौराजो में ८० मंदिर हैं, जो कि

प्राचीन हैं। यहां कार्तिक सुदी १५ को मेला होता है। यहां एक पाठशाला भी है यहां से ललितपुर लौटकर झांसी जाना चाहिये।

झाँसी

स्टेशन से धर्मशाला ३ मील है। यहां २ मंदिर और १ चैत्यालय है। झांसी की लक्ष्मीबाई का किला और बाजार छावनी वगैरह देखने योग्य हैं। यहां से सोनागिरि जावें।

श्री सोनागिरि सिद्धक्षेत्र

यह पर्वत स्टेशन से तीन मील दूर है लेकिन इस पर बने हुये सुंदर मंदिर स्टेशन से दिखने लगते हैं। स्टेशन पर भी धर्मशाला है, वरना तलहटी में जाकर ठहरना चाहिये। यहां दो धर्मशालायें है। नीचे तलहटी में १६ मंदिर हैं और नीचे ऊपर के कुल मंदिर ७५ है।

सुबह स्नानकर वंदना को जावें। पहिले नीचे के मंदिरों के दर्शन करें फिर ऊपर के। सब मंदिर १ मील के घेरे में हैं। यहां एक पाठशाला भी है। यहां से ग्वालियर जावें।

ग्वालियर

स्टेशन से २ मील दूर चंपाबाग में धर्मशाला है। यहां मंदिर और चैत्यालय कुल २० हैं। लश्कर से ग्वालियर १ मील के फासले पर हैं। रास्ते में पहाड़ पर बड़ी २ गुफाएं हैं। यहां के किले की मूर्तियां देखें किला बहुत पुराना है। यहां राजवाड़ा चौक बड़ा अच्छा स्थान है। इसके सिवाय कपड़े की मिल, अजायबघर, मान मंदिर, मोतीमहल आदि देखने योग्य हैं।

यहां से आगरा जाना चाहिये।

यहां तीर्थ यात्रा समाप्त हो जाती है, इस तीर्थ यात्रा के मार्ग में यह विशेषता है कि एक तरफ से तीर्थ करते हुये परिक्रमा के ढंग से प्रायः सभी तीर्थों की यात्रा हो जाती है। एक ही जगह दुबारा नहीं आना पड़ता।

इस यात्रा सम्बन्धी परिक्रमा में केवल हस्तिनापुर, श्री महावीरजी और पद्मप्रभु तीर्थों की यात्रा छूट जाती है जो कि प्रयत्न करने पर भी इस क्रम में न आ सकीं। उन तीर्थों का हाल अब और पढ़िये।

श्री महावीरजी

यात्रियों को आगरा फोर्ट से श्री महावीरजी का टिकट लेना चाहिये। स्टेशन से ४ मील की पक्की सड़क है। यहां पर कई धर्मशालायें हैं। परकोटे के भीतर विशाल मन्दिर बना हुआ है। यहां श्री महावीरजी की बड़ी ही दिव्य और मनोहर प्रतिमा है। यहां के अतिशय से भारत के सभी जैन परिचित हैं। चैत सुदि १३ से बैसाख बदि १ तक बड़ा भारी मेला लगता है। अभी कुछ वर्ष पूर्व एक विशाल मानस्तंभ भी बन गया है। मन्दिर की सीढियाँ भी विशाल बन रही हैं। यहां से सवाई माधोपुर होते हुये पद्मप्रभु के जाना चाहिये।

चमत्कारजी

सवाई माधोपुर रेलवे स्टेशन से १॥ मील की दूरी पर श्री

* नोटः-पृष्ठ सं. ७६६ की बजाय ७६५ दुबारा भूल से लग गये हैं। अतः पाठक ७७२ के पश्चात ७७७ ठीक समझें।

चमत्कारजी का सुन्दर मन्दिर है। यहां स्फटिक की श्री आदिनाथ भगवान की प्रतिमा है। यहां मन्दिर मुसलमानी जमाने में भी विद्यमान रहा है। इसी मन्दिर के पास श्री भट्टारकजी की नसियां है, वहां के दर्शन करते हुये सवाई माधोपुर शहर में जाना चाहिये शहर में ८ विशाल मन्दिर हैं। मूर्तियां बड़ी ही मनोज्ञ है यहां से वापस स्टेशन आकर श्योदासपुरा (पद्मप्रभु बाड़ा) का टिकट लेना चाहिये।

पद्मपुरा

यहां अभी ७ वर्ष पूर्व एक श्वेत पाषाण की मूर्ति प्रकट हुई है। यह अतिशय संयुक्त मूर्ति है, यहां भूत प्रेत आदि की बाधा भगवान की सेवा-पूजा द्वारा ही दूर हो जाती है। यहां की व्यवस्था जयपुर एवं आस पास की दि० जैन समाज द्वारा निर्वाचित प्रबन्ध कमेटी द्वारा होती है। यहाँ का बडा ही सुन्दर और विशाल मन्दिर बन रहा है, एक बड़ी धर्मशाला बन चुकी है, यात्रियों की सुविधा का पूर्ण प्रबन्ध है। यहां से जयपुर जाना चाहिये।

जयपुर

पद्मपुरा से जयपुर आने के लिये रेल और मोटर बस दोनों से ही मार्ग है। जयपुर में श्री सेठ बनजीलालजी ठोलिया की विशाल धमशाला में ठहरने की सुन्दर व्यवस्था है। एक धर्मशाला मेहंदी वालों के चौक में भी है। एक धर्मशाला मनिहारों के रास्ते में दीवाणजी के मन्दिर के सामने है। इसी रास्ते मे दि० जैन संस्कृत कालेज का भी भवन है। इस शहर में सैकड़ों

जैन मन्दिर हैं। शहर से बाहिर खानिया, दीवानजी की नसियाँ भट्टारकजी की नसियाँ, तीनों नसियाँ, आमेर आदि के मन्दिरों के दर्शन करना चाहिये। यहां से देहली जाना चाहिये।

देहली

देहली स्टेशन के पास भी कई धर्मशालाएं हैं। वैदवाड़ा, धर्मपुरा पहाड़ी धीरज पर जैन धर्मशालाएं हैं। यहां के जैन मन्दिर भी बड़े विशाल हैं। यहां कुतुबमीनार, जंत्र मंत्र, राष्ट्रपति भवन, कौंसिल हाउस, चाँदनी चौक आदि देखने योग्य हैं। यहां से चलकर मेरठ जाना चाहिये। शहर देखकर २२ मील दूर हस्तिनापुर क्षेत्र को जाना चाहिये।

हस्तिनापुर

इस क्षेत्र में मन्दिर और कई धर्मशालाएं हैं। यह पांडवों की राजधानी थी। यह शांतिनाथ, कुन्थुनाथ अरहनाथ भगवान की जन्म भूमि है। तीनों भगवान की तीन नसियाँ हैं। यहां से मथुरा जाना चाहिये।

मथुरा

यह हिन्दुओं का पवित्र स्थान है। यहां से जम्बू स्वामी मोक्ष पधारे हैं। यहां कई धर्मशालायें हैं। शहर से २ मील दूर परकोटे में जम्बू स्वामी का विशाल मन्दिर है। यहाँ ठहरने का भी स्थान है। यहां श्री अजितनाथ भगवान की मनोज्ञ और विशाल प्रतिमा है। यहां ब्रह्मचर्याश्रम और भा० दि० जैन संघ का प्रधान कार्यालय है। यहां यात्रियों को जरूर जाना चाहिये।

॥ इति ॥

|| श्रीः ||

श्री वीर पुस्तक मन्दिर

व्यवस्थापक—"सेठी बन्धु"

श्री महावीरजी (राजस्थान) का

सूचीपत्र

पुराण

११)	हरिवंश पुराण	१०)	आदिनाथ पुराण भाग १
७)	शांतिनाथ पुराण	१०)	आदिनाथ पुराण भाग २
७)	पद्म पुराण	६)	पद्म पुराण (खड़ी बोली)
७)	पांडव पुराण	६)	प्रद्युम्न चरित्र
४)	श्रीपाल पुराण	४)	महावीर पुराण
४।।)	मल्लिनाथ पुराण	४)	वर्द्धमान पुराण
३)	विमल पुराण (शास्त्राकार)	२)	पार्श्वनाथ पुराण
२।)	पार्श्वनाथ पुराण (पुस्तकाकार)	५)	चन्द्र प्रभ पुराण
		४)	आदि पुराण

चरित्र

५) जैन युग निर्माता
१॥) जम्बू स्वामी चरित्र
१।) नागकुमार चरित्र
३॥) श्रेणिक चरित्र
१) चारुदत्त चरित्र
१) सदर्शन चरित्र
१) चन्दनबाला चरित्र
॥) सुदर्शन चरित्र
॥≈ नागश्री चरित्र
२) मनोरमाशील महिमा चरित्र
॥) यशोधर चरित्र

२) श्रीपाल चरित्र
१।) जीवन्धर चरित्र
२॥) श्रेणिक चरित्र
१) धन्यकुमार चरित्र
१) सुकमाल चरित्र
१।) रामबनवास चरित्र
॥≈ सुकौशल चरित्र
॥) सुकमाल चरित्र
॥) अनन्तमती चरित्र
२॥) मनोवती दर्श प्रतिज्ञा चरित्र
१) गौतमस्वामी चरित्र

जैन सिद्धांत ग्रन्थ

१२) जय धवल भाग १
१२) महाबन्ध भाग १
८) समयसार (अंग्रेजी)
६) परमात्म प्रकाश
७) समयसार (कानजी स्वामी)
५) अर्थ प्रकाशिका
३) गोम्मटसार कर्मकांड
३॥) भावदीपिका
३।) सुभाषित रत्न सन्दोह

१२) जय धवल भाग २
१६) तत्त्वार्थ श्रुतसागरी
६) ज्ञानार्णव
६॥) प्रवचन सार
६) समयसार भाग २
६) पंचाध्यायी
३) गोम्मटसार जीवकांड
३) सभाष्य तत्त्वार्थाधिम
७) लाटी संहिता

८) मोक्षमार्ग प्रकाश	३) मोक्ष-मार्ग प्रकाशक
५) रत्नकरण्ड श्रावकाचार	१) भय संग्रह
३) रत्नकरण्ड पुरु.काकार	२) पुरुषार्थ सिद्धपाय
७) रत्नकरण्ड शास्त्राव.ार	९।) पुरुषार्थ सिद्धपाय
१०) कल्याणकारक	।।।) जैन सिद्धांत प्रवेशिका
१) जैन धर्म प्रकाश	२) द्रव्य संग्रह (बड़ा)
१।।) छः ढाला (बडा)	२।।) द्वादशानुप्रेक्षा
२।।) ब्रह्म विलास	८) भगवती आराधना
६) स्याद्वाद मंजरी	३।।) विद्वज्जन बोधक
३) पद्मनन्दी पंचविंशतिका	४) शांतिसुधा सिन्धु
६) प्रशमरति प्रकरण	५) न्यायावतार
३) लब्धिसार	५) त्रिलोकसार
१०) श्रीमद्राजचन्द्र	८) मदन पराजय
२) नियमसार	५) तत्त्वार्थ सूत्र
२।।) तत्त्वार्थ सूत्र [कै. ला.]	२।।) तत्त्वार्थ सूत्र [सूरत]
२) ,, [पन्ना०]	१) ,, [कल०]
१५) न्याय विनिश्चय	२) सभाष्य रत्न मंजूषा
३।।) सभाष्य नाम माला	१।) समयसार नाटक
२) समयसार	५) वसुनन्दी श्रावकाचार
१।।) श्रावक धर्म संग्रह	३।।) अष्ट पाहुड

पूजन-पाठ—

५) सच्चा जिनवाणी संग्रह ३।।) वृहज्जिनवाणी संग्रह
३।।।) जैन पूजा-पाठ संग्रह २) जैन पूजा-पाठ संग्रह सादा जिल्द
कपड़े की जिल्द ५) नवीन महावीर कीर्त्तन ८२५ पृष्ठ

१॥) कल्याण गुटका	२) कल्याण गुटका
३॥) बड़ा जिनवाणी संग्रह	१॥) वृंदा० चौबीसी पाठ
१॥) रामचन्द्र चौबीसी पाठ	१) बख्तावर चौबीसी पाठ
१) वृं० चौबीसी पाठ	॥) जैन भाषा पूजा संग्रह
२) भईया पूजा संग्रह	४) सिद्ध चक्र विधान
४) अढाई द्वीप विधान	२॥) नन्दीश्वर द्वीप विधान
१) चौसठ ऋद्धि विधान	।≈ नवग्रह विधान
॥– कर्म दहन विधान	।– सम्मेद शिखर विधान
॥) पंच कल्याणक विधान	॥ पंच परमेष्ठी विधान
।– ऋषि मण्डल विधान	॥) पंच मेरु विधान
।≈ नन्दीश्वर विधान	≈ कलिकुण्ड पार्श्व० पूजा
१) नित्य और पर्वपूजा	१) सोलह कारण विधान
३) सिद्ध क्षेत्र पूजा संग्रह	॥) दैनिक पूजा
॥≈ नित्य नियम पूजा	१॥) दैनिक पूजा पाठ
।) कर्म दहन पूजा [समुच्चय]	≈ पंच परमेष्ठी [समुच्चय
≈ पंचकल्याणक ,,	१॥) जैन नित्य पाठ संग्रह
२) सत्यार्थ यज्ञ [मनरंग कृत २४ पूजा]	१॥) समव शरण विधान
	५) पूजन रत्नाकर

नाटक—

५) सती मैनासुन्दरी नाटक	४) सती विजयासुंदरी नाटक
४) सती सुरसुन्दरी ,,	
३) भविष्यदत्ततिलका सुन्दरी	॥) अंजना पवनजय ,,
१) शील महिमा नाटक	॥) विश्वास घात ,,

।≈	भारत के सपूत	नाटक	।≈	अन्धेर नगरी	नाटक
।)	आदर्श	,,	१।।)	भाग्य	,,
।।।)	समाज की आग	,,	।।।)	गरीब	,,
।।।)	संन्यासी	,,	।।≈	वीर बालक	,,
।)	सत्पथ	,,	।।।)	महावीर क्षेत्र	,,
।)	पद्मपुरा क्षेत्र	,,	८)	मदन पराजय	,,
।।)	चांदन गांव	,,	२।।)	सुशीला उपन्यास सतीपुष्पलता	,,

उच्चकोटि का सुरुचि पूर्ण साहित्य

४।)	जैन धर्म पं० कैलाशचन्द्रजी	३)	जैन शासन [पं० सुमेरुचंद्रजी]
६)	ज्ञान गंगा	५)	जैन जागरण के अग्रदूत
६)	वर्द्धमान [काव्य]	३)	दो हजार वर्ष पुरानी कहानियां
२।।)	गहरे पानी पैठ		
६)	जातकट्ट कथा	५)	मुक्ति दूत
३।।।)	आधुनिक जैन कवि	३)	हिन्दी जैन साहित्य का इतिहास
२)	पथ चिह्न		
२।।)	मेरे बापू	२)	पंच प्रदीप
२)	केवलज्ञानप्रश्न चूडामणि	६)	भारतीय ज्योतिष
१)	कर लक्खण	८)	शेरो शायरी
८)	शेरो सुखन	४।।)	पाश्चात्य तर्कशास्त्र
२)	कुन्दकुन्द के तीन रत्न	६)	वैदिक साहित्य
	(रेखा चित्र और संस्मरण)	३)	हमारे आराध्य

६) ईश्वर मीमांसा	१।।।) आत्म सम्बोधन
।≈ धर्म बोध भाग १	।।≈ धर्म बोध भाग २
४) वर्णी वाणी	६।) मेरी जीवन गाथा
२।।) अपभ्रंश प्रकाश	१५) वर्णी अभिनन्दन ग्रन्थ
१०) महावीर स्मृति ग्रन्थ	२।।) बृ० कथा कोष भाग १
२।।) बृ० कथा कोष भाग २	।।।) मुक्ति का मार्ग
३) भगवान महावीर	२) भारतीय विचार धारा.
४) मिलन यामिनी	।।।) सुख की झलक
१।) महिला शिक्षा संग्रह	१।) जैन भारती
।– नित्य पाठावली	२।।) सम्यग्दर्शन

कथाएं

।।) दर्शन कथा	।।) शील कथा
।।) दान कथा	≈ सुगन्ध दशमी कथा
≈ रविव्रत कथा	।– पंच कथा संग्रह
।) रक्षा बन्धन	।।) जैन व्रत कथा
१।।) जैन व्रत कथा संग्रह (सूरत)	२) श्रावक व्रत कथा संग्रह
१) व्रतोद्यापन विधि	२) जैन व्रत विधान संग्रह
२।।) पुण्याश्रव कथा कोष	२) आराधनाकथा कोष भाग १
।≈ निशि भोजन कथा	।≡ रात्रि भोजन कथा
≈।। अठाई रासा	१) कथा कहानी संस्मरण
१।) उस दिन	१) आँख मिचौनी

भजन आरती

१।।) महावीर पुष्पांजली	।।।) महावीर भजनमाला

|||) भजन संग्रह ||) मक्खन भजन प्रथम भाग
||) मक्खन भजन द्वितीय भाग =|| कीर्त्तन संग्रह -
=|| दर्शन आरती ||) महावीर पुष्पांजली भाग २
||) भजन आरती |– आरती तीर्थ पुष्पांजली
≡ शिवराम पुष्पांजली अंक १२ ≡ शिवराम पुष्पांजली अंक १३
≡ " " " १४ ≡ " " " १५
≡ " " " १६ ≡ " " " १७
≡ " " " १८ |||) जैन गायन सुधा–
|) तरुण गीत = प्रेम तरंग
|) वीर गुणगायन = संगीत पुष्पांजली भाग १)
=|| संगीत पुष्पांजली भाग २ १||) भव्य प्रमोद मक्खनलालजी
|) भजन संग्रह |) वैराग्यप्रकाश
|) दश लक्षण लावनी ≡ हमारे गीत
|||) पद्म जैन संगीत माला ||) जैन फिल्मी गायन भाग ३
भाग ४ |||) दौलत पद संग्रह
|||) जिनेश्वर पद संग्रह ||) द्यानत पद संग्रह
= सम्मेदाचल गायन = विनती संग्रह

स्कूली पुस्तकें

– शिशु बोध भाग १ = शिशु बोध भाग २
|) शिशु बोध भाग ३ ||) शिशु बोध भाग ४
||) छः ढाला ||) द्रव्य संग्रह
||) रत्नकरण्ड श्रावकाचार = पंच मंगल
= इष्ट छत्तीसी ≡ जैन शतक

१) तत्त्वार्थ सूत्र ≈ भक्तामर

।) तत्त्वार्थ सूत्र भक्तामर आदि)॥ मेरी भावना

॥≈ सरल जैन धर्म (चारों भाग

।– धर्म शिक्षावली भाग १ ।≈ धर्म शिक्षावली भाग २

।≈ ,, ,, ,, ३ ॥≈ ,, ,, ,, ४

।॥) ,, ,, ,, ५

बाल बोध जैन धर्म

१ २ ३ ४

≈ ।) ।≈ ॥≈

।॥) जैन धर्म प्रवेशिका

सरल जैनधर्म प्रवेशिका ४ भाग

१ २ ३ ४

≋ ।) ।– ॥–

॥– रत्नकरण्ड ॥≈ छः ढाला

॥≈ द्रव्य संग्रह ॥≈ जैन धर्म सिद्धान्त

१≈ वीर पाठावली ।॥) जैन तीर्थ और उनकी यात्रा

।॥) नवीनतीर्थ यात्रा ॥) आत्मिक मनो विज्ञान

।) बाल चरितावली ≈ विशाल जैन संघ

१॥) विद्यार्थी जैन धर्म शिक्षा

अन्य उपयोगी पुस्तकें

२) भक्तामर कथा कोष २) कल्याण मन्दिर यंत्र मंत्र साधन विधि सहित

।– अर्हत पासा केवली तथा मंत्र यंत्र ।॥) ऋषि मण्डल यंत्र तंत्र

|||) भक्तामर महाकाव्य	||) शकुनसिद्धांत दर्पण
|≈ महावीर शकुनावली	≈ उपासनातत्व
≈ हम दुखी क्यों हैं	≈ ब्रह्मचर्य रहस्य
|– आदर्श जैन चर्या	|||≈ उपदेश रत्न माला
||) बुधजन सतसई	||) आत्म दर्शन
||) मोक्ष शास्त्र हिन्दी दोहों सहित	१≡ आत्मावलोकन
	||≈ गृह देवी
२) स्वर्णाचल महात्म्य	||) मधुरस
||≈ चांदनी	–|| झंकार
–|| जय महावीर	–| फलफूल
|) जैन नित्यपाठ संग्रह	|||) छन्द शतक
||) सम्राट् खारवेल	||) चांदन गांव लीला
|) घरवाली	१) जैनाचार्य
१) नीतिवाक्य माला	३||) जैन क्रिया कोष
|||) कर्तव्य प्रकाश	||) सम्यक्त्वसार
||) जैन वीरांगनाएं	||) बाल जैन रामायण
||) जैन विवाह विधि	≈ चालीसा संग्रह
≈ चांदनपुर महावीर पूजा	≈ अनन्तमती कथा

रंगीन चित्र "१५×२०"

१५) जैन चित्रावली-२८ चित्र |||) सम्मेद शिखर ||) गिरनारजी ||) पावापुर ||) चम्पापुर ||) राजगृही ||) पावागिर ||) सिद्धवरकूट ||) बडवानी ||) समवशरण ||) पंचपरमेष्ठीदर्शन ||) बाहुबलीजी

।।) रक्षाबन्धन ।।) कमठ का उपसर्ग ।।) नेमिनाथजी का विवाह ।।) माता के १६ स्वप्न ।।) भरत के स्वप्न ।।) चन्द्रगुप्त के स्वप्न ।।) सीता की अग्नि परीक्षा ।।) संसार दर्शन ।।) पटलेश्यादर्शन ।।) अनादिनिधन मंत्र ।।) चांदनपुर महावीरजी ।।) शांति सागरजी १।।) पंच कल्याणक सैट, ५) तीर्थंकर चित्रावली २४ चित्र, ।) पार्श्वनाथजी का वन विहार ।) महावीर वेदी ।) आहारदान ।) ध्यानस्थ मुनि ।) ग्रीष्म परिषह ।

"६×७" के २२ प्रकार के चित्र प्रत्येक ≈ आना के व आर्ट बोर्ड पर ।

अकलंकनिकलंक बलिदान. पांडवों पर उपसर्ग, मानतुंगाचार्य, सतीत्त्व का प्रभाव, प्रद्युम्नकुमार, ध्यानस्थ मुनि, श्रत सारका उपसर्ग, महावीर स्वामी का वैराग्य, महावीर स्वामी, सेठ सुदर्शन, समन्तभद्र का प्रभाव, सुकुमाल, अंजनचोर, सती चन्दन बाला, बाहूबली, चन्द्रगुप्त के स्वप्न, संसार दर्शन, मुनि का सिंह को उपदेश, चम्पापुर, महावीर स्वामी पर उपसर्ग, महावीरस्वामी के आहारदान, नेमिनाथ का वैराग्य ।

तीर्थों के २३ प्रकार के तिरंगे चित्रों में बढिया कागज पर भी कुछ चित्र मिलते हैं । प्रत्येक की कीमत ।।।)

केमरे के चित्र

६"×८ सभी प्रकार के ३) दर्जन

६"×४ १।।) दर्जन   ८×१० ।।) प्रत्येक

१०×१२ ।।।) प्रत्येक   ३×४ ।।।) दर्जन.

चांदनगांव महावीर चित्र

अब तक के निकले हुये सभी चित्रों से सुन्दर, आकर्षक एवं प्रामाणिक चित्र है। गत १।। वर्ष में ही हजारों की संख्या में बिक चुका है। मू० १)

हाथ के चित्र

हाथ के बने हुये अत्यन्त सुन्दर बड़े आकार के चित्र भी हमारे यहां मिलेंगे जिनमें मुख्य ये हैं:—

सुकुमाल मुनि, गजकुमार मुनि, सुकौशल मुनि, महावीर स्वामी, पद्मप्रभ स्वामी, पार्श्वनाथ भगवान, सुलोचनासती, अंजना सती, श्रेणिक द्वारा मुनिराज पर उपसर्ग, समन्त भद्र का प्रभाव आदि। मू० प्रत्येक ५)

पीतल के अक्षरों में

।।।≈ जयजिनेंद्र १।≈ महावीर स्वामी की जय, १।।) पार्श्वनाथ भगवान, १।।) पद्मप्रभु भगवान की जय, ।।।) वीतरागाय नमः ।।।) श्री महावीरायनमः।

इन स्थायी अक्षरों से अपने घर और दुकान की शोभा बढाइये।

हमारा पता:— "सेठी बन्धु"

श्री वीर पुस्तक मंदिर

मु० पो० श्री महावीरजी (हिण्डोन) राजस्थान

(परिशिष्ट)

—घरेलू औषधियाँ—

१ अमृतधारा

सत अजवायन १ तोला, सत पीपर मेंट १ तोला कपूर २ तोला मिलाकर एक शीशी में बन्द कर धूप में रख दें। अनेक रोगों की एक दवा है।

२ दंत मंजन

छाल मौलश्री १० तोला कोयला कीकर ५ तोला नमक सेंधा ६ माशा माजू १ तोला इन सब को कूट छान कर शीशी में भरले लाभ कारी मंजन है।

३ बिच्छू के काटे पर

इन्द्रायन की जड घिस कर लेप कर देना चाहिये और ठंडा पानी पीना चाहिये।

४ पेट दर्द

अमृतधारा ४ बूंद पानी में डाल कर पीना चाहिये या सोंफ सनाय, हरड़ बड़ी सैंधानमक दो दो माशा लेकर कूट कर गर्म पानी के साथ फंकी लेना चाहिये। अर्क पौदीना, अर्क सोंफ तीन तीन तोले लेकर गर्मकर पीना चाहिये।

५ दन्त रोग

रोज दांतौन करना चाहिये, इससे रोग होता ही नहीं। हरडे, बहेडा, आमला तीनों प्रकार के नमक और माजूफल इन सब को कूट पीस कर छान ले और दांतुन करें। मसूडे फूलनें पर नमक में कडवा तैल मिलाकर रगडना चाहिये।

६ नमक सुलेमानी

नमक सैंधा, नमक सांभरा, नमक काला हर एक ५ पांच तोला आध पाव नीबू के रस में खरल कर छाया में सुखालें फिर नौसादर ६ तोला मूलीखार १० तोला पोदीना १० तोला काली मिर्च ४ तोला जीरा ४ तोला दाल चीनी १ तोला, भुना सुहागा २ तोला पीपल २ तोला सोंठ ३ तोला इन सब को अच्छी तरह पीस कर ऊपर वाली चीजों में मिलालें। यह चूर्ण पेट दर्द का चलना, बदहजमी आदि सभी पेट के रोगों में रामबाण है।

७ खांसी

६ माशे काकडा सींगी बारीक कूट कर मिश्री की चासनी में मिला कर कुछ देर चाटना चाहिये।

८ नक़सीर

रसोंत फूंक कर सूंघना चाहिये या चिकनी मिट्टी पानी से तर कर सूंघनी चाहिये।

९ जुक़ाम व नज़ला

बनफशा, मुलहटी, उन्नाव, लिसोडा, खतमी, दसतैखदूस, गावजवां तीन तीन माशे लेकर पाव भर पानी में अच्छी तरह पका कर दो तोला मिश्री मिला रात को और सुवह को दोनों समय सेवन करे।

१० जल जाने पर

गोले के तेल को चूने के पानी के साथ खूब फेंट कर लगाना चाहिये या सरसों का तैल लगाकर ऊपर से पिसी हुई मैंहदी बुरक देना चाहिये।

११ आंख दुखनेपर

एक छटांक गुलाब जल में १ मांशा फिटकरी पीस कर डाल दें और फिर दिन में ३-४ बार डालें।

१२ आंख दुखने की पोटली

पठानी लौध ६ माशे पिसी हल्दी ६ माशे अफीम १ रत्ती इनको साफ पत्थर पर घिस कर कपड़ छान करलो। मिट्टी के कोरेबर्तन में पानी में कपडे की पोटली बनाकर रखदो पोटली को बार-बार दुखती हुई आँख पर लगाओ।

१३ गला पडना

गर्मी की मौसम में या ज्यादा बोलने से गला पड जाये तो धांनियां मिश्री को चटाने से गला ठीक हो जाता है।

१४ मुंह के छाले

(१) सरद चिनी, पपडिया कत्था, छोटी इलायची, वंशलोचन समुद्री भाग इनको बारीक पीस कर मुंह में जहां छाले पडे हों भुरके और मुंह नीचे करके लार टपका देवे।

(२) अमृतधारा का फोवा छाले पर लगा कर लार टपका देवे।

(३) सौंफ आँवले जीरे का ज्यादा प्रयोग करे। खटाई तेल गुड़ मिरच से जितना बच सके बचे। घी, बादाम की चटनी को ज्यादा काम में लें।

१५ बाय का दर्द

एक पक्का नीले रंग का बैंगन लेवें उसके चारों तरफ लोंग की डंठल गड़दे फूल बाहर रह जाये आधा सेर सरसों का तेल लोहे की कड़ाई में पकने रखदे। पकते तेल में बैगन को छोडदे चम्मच वगैरह से बैंगन को चलाता रहे। जब बैंगन काला पड जाये सूख जाये तब कडाई को नीचे उतार लेवे। लोहे की मूसली से बैगन को कढाई में ही तेल में रगड दे फिर उसे शीशी में या टीन के डिब्बे में भर कर रखदे। बाय के रोगी को जहाँ बाय हो तेल वाली दवा जरा गरम कर लगावे

मामूली सेके रुई रख कर पट्टी बांध देवे हवा न लगने दे। सर्दी से पैदा हुआ वाय का दर्द अच्छा हो जायेगा।

१६ बुखार खांसी नाशक दवा

३ रत्ती दाल चीनी ३ रत्ती लोंग ३ रत्ती तुलसा की पत्ती छोटी इलायची के दाने ३ आधा पाव औटते (गर्म) पानी में ये सब डाल कर दो छटांक दूध मिलाकर चीनी गेर कर पीवे कपडा ओढ कर लेट जावे तीन दिन ऐसा करने से बुखार खांसी मलेरिया प्यास वमन आदि शान्ति हो जाते हैं।

पसली चलना १७

छोटे बच्चों को सर्दी लगने से पसली चलने लगती है। यह दवा अक्सीर है। १ छटॉक सरसों के तेल में ८-१० दाने मेथी आधी गांठ सूंठ ४-५ लोंग कूट कर गेरे. फिर तेल को गरम करै एक उबाल सा आने पर उतार ले ठंडा होने पर शीशी में भर कर रखले। जरूरत होने पर हलके हाथों से छाती तथा कमर पर पैरों के तलवे में लगावे। आवश्यकता समझे तो रुई से हलका २ सेक करै, हवा से बचावे।

१८ स्वादिष्ट हाज़िम चूर्ण

पोदीना सूखा २ तोला सूंठ २ तोला सफेद मिरच २ तोला बडी पीपल २ तोला हिंगडा आधा तोला बडी इलायची के बीज २ तोला पीपलमेंट ३ माशा नींबू का सत ६ माशा काला नमक ७ तोला अजवान देशी ३ तोला पतरज १ तोला जीरा सफेद ३ तोला सुहागा बरसान २ तोला, कलमी सोरा १ तोला नोसादर ५ तोला।

विधि—इन १५ चीजों में हींगडे को घी मे भूने तथा सब को खूब बारीक कूटे कपड छान करले पेट दर्द, जी मिचलाना, अजीर्ण अवस्था में थोडा सा खावे। भोजन के बाद जरा सा खावे।